ओ३म्

चतुर्वेद-मन्त्रानुक्रम-सूची

सा च

निरुक्त-आरण्यक-आर्षेयादिब्राह्मण-काण्वादिसंहितासु,
महर्षि-दयानन्द-विरचित-समस्तग्रन्थेषु च
व्याख्यातमन्त्र-संकेतैः संयोजिता

सम्पादक:
आचार्य अर्जुनदेव वर्णी

प्रकाशक:
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
४५५ खारी बावली, दिल्ली–६

प्रथम संस्करण अप्रैल १९८३

चतुर्वेद-मन्त्रानुक्रम-सूची

सम्पादक

आचार्य अर्जुनदेव वर्णी

प्रकाशक

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
४५५, खारी बावली, दिल्ली-६
शाखा—२ एफ, कमला नगर, दिल्ली-७

दूरभाष—२३८३६०, २३३११२

मुद्रक

सैण्ट्रल इलैक्ट्रिक प्रेस
आर० के० प्रेस
८० डी, कमला नगर, दिल्ली-७

मूल्य : साधारण संस्करण आठ रुपये
विशेष संस्करण दस रुपये

दयानन्दाब्द १५९
वि० संवत् २०४०
सृष्टि-संवत् १,९६,०८,५३,०८४

ओ३म्

प्राक्कथन

समस्त वैदिक वाङ्मय का मौलिक स्रोत वेद है। वेद ईश्वरोक्त होने से निर्भ्रान्त स्वतः प्रमाण ग्रन्थ है। भगवान् मनु ने 'वेदश्चक्षुः सनातनम्' कहकर वेद को शाश्वत सार्वभौम प्रकाश कहा है। वेद का ही आश्रय करके विश्व का समस्त ज्ञान-विज्ञान विकसित एवं उन्नत हुआ। महर्षि पतञ्जलि ने 'स एष पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात् (यो० १।२६) कहकर वेदों का उपदेष्टा होने से परमेश्वर को ही आदि गुरु माना है। व्याकरण महाभाष्य में ईश्वरोक्त वेद के पठन-पाठन से ही मानव का परमश्रेय मानकर लिखा है—'ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्चेति' अर्थात् ब्रह्म=परमात्मा को जानने वाले विद्वानों को छः अङ्गों सहित वेदों को फल की इच्छा न रखते हुए पढ़ना तथा जानना चाहिए। आधुनिक युग में वेदों के पुनरुद्धारक महर्षि दयानन्द ने समस्त अज्ञान व भ्रान्तियों का निवारण तथा सत्यज्ञान की प्राप्ति वेदों से ही मानकर यह लिखा है—"वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है"।

ऐसे सत्य-ज्ञान के सूर्य एवं शाश्वत शक्ति के स्रोत आध्यात्मिक ज्ञान के मूलकारण वेदों का पठन-पाठन आदिसृष्टि से महाभारत पर्यन्त अनवरत निर्बाधगति से होता रहा, इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है। आदि सृष्टि में वेदों को कण्ठस्थ करने की परम्परा होने से वेदों को 'श्रुति' नाम से कहा जाता था। कालान्तर में जब वेदों को कण्ठस्थ करने की स्मृति का ह्रास होने लगा, तब वेदों की सुरक्षा के लिये वेदों को पुस्तकरूप में ग्रथित किया गया। इसी प्रकार जब मानव-जीवन इतना व्यस्त हो गया कि वेदों को कण्ठस्थ करना तो दूर, प्रत्युत वेदों के पठन-पाठन भी ह्रासोन्मुखी हो गया, उस समय कौन-सा मन्त्र किस वेद का है और इसकी कहाँ-कहाँ ऋषियों ने व्याख्या की है, इसकी स्मृति कैसे सम्भव है! एतदर्थ ही मन्त्रानुक्रम सूची जैसे ग्रन्थों की परमावश्यकता प्रतीत होने लगी। इन सूचियों की सहायता से पाठक अथवा अन्वेषक अतीव सरलता से मन्त्र के पते एवं उसकी व्याख्या को देखने में समर्थ हो जाता है।

प्रस्तुत मन्त्रानुक्रम-सूची को इससे पूर्वप्रकाशित विभिन्न मन्त्र-सूचियों से मिलान करके तथा यथा स्थान संशोधन करके प्रकाशित किया गया है। अथर्ववेद की तो एक हस्तलिखित प्रति नेपाल राज्य से उपलब्ध हुई है, उससे भी मिलान करके इसे शोधा गया है। और इस मन्त्र-सूची को विशुद्ध बनाने के लिये विशेष प्रयास किया गया है। वेदमन्त्रों के जो प्राचीन व्याख्यान-ग्रन्थ ऋषि-मुनियों के द्वारा रचित हैं, उन शतपथादि ब्राह्मण

ग्रन्थों, काण्वादि संहिताओं, आरण्यकों, उपनिषदों तथा निरुक्तादि ग्रन्थों से मिलान करके इस आर्ष मन्त्रानुक्रम सूची को तैयार किया गया है। और मध्यवर्ती वाममार्ग से प्रभावित महीधरादि एवं पौराणिक वेदभाष्यों के कारण जो वेदों के विषय में भ्रान्त धारणायें फैल गई थीं, उन दूषित घटाओं को निवारण करके वेदों के सत्यार्थ को प्रतिपादित करनेवाले महर्षि दयानन्दकृत मन्त्र-व्याख्याओं को भी वेद के अन्वेषण कराने वाले तथा स्वाध्यायशील पाठक अवश्य देखना चाहते हैं, उनके सौकर्य के लिये इस मन्त्रसूची में यथास्थान महर्षि दयानन्दकृत ग्रन्थों के भी पते दिये गये हैं, जिससे इस सूची की अपूर्णता एवं उपयोगिता और अधिक बढ़ गई है। वेदों की तुलानात्मक गवेषणा करने वालों के लिये तो यह परम सहायक सिद्ध होगी।

और इस मन्त्रानुक्रम-सूची में चारों वेदों तथा ऋषि-मुनियों के बनाये व्याख्याग्रन्थों के ही पते संगृहीत किये गये हैं। क्योंकि 'ऋषयो हि मन्त्रद्रष्टारः' अथवा 'साक्षत्कृतधर्माणो हि ऋषयः' वेदमन्त्रों के अर्थों का साक्षात्कार ऋषियों को ही होता है। इसीलिये जो ऋषि नहीं हैं, उनका ज्ञान भ्रान्त होने से यथार्थ नहीं होता। ऐसे अनृषि लोगों के बनाये महा-नारायणादि उपनिषदों अद्भुतादि ब्राह्मण ग्रन्थों मानवादि गृह्यसूत्रों, शांखायनादि श्रौत-सूत्रों तथा बोधायनादि धर्मसूत्रों, आदि के पते इस सूची में नहीं रक्खे गये हैं। यद्यपि इन ग्रन्थों में भी मन्त्रों की व्याख्यायें मिलती हैं किन्तु इनमें सत्यांश के साथ असत्यांश भी मिश्रित होने से विषसम्पृक्तान्नवत् त्याज्य समझकर इन ग्रन्थों को छोड़ ही दिया है। इस विषय में महर्षि दयानन्द के इस आदेश का पूर्णतः पालन किया गया है—

(क) जो कोई इन मिथ्या ग्रन्थों में सत्य का ग्रहण करना चाहे तो मिथ्या भी उसके गले लिपट जावे। इसलिये 'असत्यमिश्रं सत्यं दूरतस्त्याज्यमिति' असत्य से युक्त ग्रन्थस्थ सत्य को भी वैसे छोड़ देना चाहिये, जैसे विषयुक्त अन्न को'। (स० प्र० तृतीय समु०)

(ख) 'महर्षि लोगों का आशय, जहाँ तक हो सके, वहाँ तक सुगम और जिसके ग्रहण में समय थोड़ा लगे, इस प्रकार का होता है। और क्षुद्राशय लोगों की मनसा ऐसी होती है कि जहाँ तक बने वहाँ तक कठिन रचना करनी। जिसको बड़े परिश्रम से पढ़के अल्प लाभ उठा सकें, जैसे पहाड़ का खोदना कौड़ी का लाभ होना। और आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है कि जैसे एक गोता लगाना बहुमूल्य मोतियों का पाना'। (स० प्र० तृतीय)

मन्त्रानुक्रम-सूची में आवश्यक बातें—

(१) इस सूची में वेद-मन्त्रों के अकारादिक्रम से पते दिये गये हैं। साथ ही पाणिनीय वर्णोच्चारण शिक्षा के अनुसार तथा विसर्गों से युक्त अक्षरों को स्वरों के पश्चात् रखा गया है। प्रायः वर्त्तमान काल में अनुक्रम-सूचियों में पाणिनीय शिक्षा के विपरीत अनुस्वार व विसर्गयुक्त अक्षरों को सर्वप्रथम दिया जाता है। हमने इस अशास्त्रीय पद्धति को छोड़ कर शास्त्रीय पद्धति को ही अपनाया है।

प्र का श की य

वैदिक वाङ्मय के अध्येता, अन्वेषक एवं वेदभक्त स्वाध्यायशील आर्यपुरुषों के हाथों में 'आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट' द्वारा प्रकाशित 'चतुर्वेद मन्त्रानुक्रमणिका' का उपहार समर्पित करते हुए हमें अत्यधिक हर्ष हो रहा है। वेद भारतीय संस्कृति के प्राण हैं, चाहे वेद को मानने वालों की कितनी भी शाखा-प्रशाखायें हो गई हैं, जिनमें परस्पर पर्याप्त मतभेद भी हैं, पुनरपि उन सबका मूलाधार वेद ही होने से वे वेदों के प्रति अनास्था-भाव नहीं रख सकते। क्योंकि विभिन्न मतमतान्तरों में अनेकता में भी एकता की झलक स्पष्ट रूप में दिखाई देती है। आज के गवेषक विदेशी विद्वानों को भी विश्व के पुस्तकालय की प्राचीनतम पुस्तक वेद को ही मानना पड़ा है। प्राचीन समस्त ऋषि-मुनियों ने वेदों को अपौरुषेय स्वतः प्रमाण माना है। धर्मशास्त्र के प्रथम रचयिता महर्षि मनु ने तो स्पष्ट घोषणा की है—

धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः ॥

अर्थात् धर्म जानने की इच्छा रखने वालों के लिये वेद ही परम प्रमाण है. परन्तु ऐसे परम पवित्र वेदों को भी वाममार्ग से प्रभावित कलुषित वृत्ति वालों तथा स्वार्थी लोगों ने काल्पनिक मिथ्या बातों को वैदिक बताकर निन्दित करने में कोई कम प्रयास नहीं किया। मानों वेद के भानु को घोर काली घटाओं से ऐसा आच्छन्न कर दिया कि लोग वेदों के सत्यज्ञान को भूलकर मिथ्या बातों को मानने लगे। धन्य हैं वे महर्षि दयानन्द, जिन्होंने जन्मजन्मान्तरों के सञ्चित सुसंस्कारों के कारण अथवा मोक्ष से पुनरावृत्त होने के कारण असत्यान्धकार में भी सत्य के प्रकाश को स्वयं प्राप्त किया और उस दिव्य प्रकाश से समस्त अविद्या को दूर करके वैदिक ज्योत्स्ना को फिर से प्राप्त कराया और स्पष्ट घोषणा की—

'वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।'

प्रस्तुत 'चतुर्वेद-मन्त्रानुक्रमणिका' से जहाँ वेदों का अध्ययन करने वाले पाठकों को वेद-मन्त्रों के संकेतों का बोध सौकर्य से हो सकेगा, वहाँ प्राचीन ऋषि-

मुनियों द्वारा व्याख्यात ब्राह्मणादि ग्रन्थों के पतों का भी बोध होने से मन्त्रों के अर्थों का भी वे मनन कर सकेंगे। और साथ ही आधुनिक युग के महान् वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य की सत्यार्थता को भी भलीभांति समझ सकेंगे। क्योंकि महर्षि दयानन्द का वेदभाष्य प्राचीन ऋषियों द्वारा किये भाष्यों का अनुसरण करता है तथा प्राचीन शास्त्रीय पद्धति व सिद्धान्तों के अनुकूल किया गया है। इस वेदानुशीलन के द्वारा पाठकों को यह भी लाभ मिल सकेगा कि जो मध्यकालीन पौराणिक सायणादि आचार्यों के किये वेदभाष्य मिलते हैं, और उन्हीं का अनुसरण करके पाश्चात्य विद्वानों ने जो वेदों पर मिथ्याक्षेप आरोपित किये हैं, उनकी निस्सारता का भी सत्यप्रकाश के समक्ष सहजता से परिज्ञान हो सकेगा। तुलनात्मक-पद्धति से अध्ययन तथा गवेषणा करने वालों के लिये यह ग्रन्थ परम सहायक सिद्ध हो सकेगा। एतदर्थ ही इस ग्रन्थ में महर्षि दयानन्द द्वारा व्याख्यात मन्त्रों के संकेत भी दिये गये हैं।

इस ग्रन्थ के सम्पादन में श्री आचार्य अर्जनदेव वर्णी का मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने इसे अपना अमूल्य समय देकर तथा बहुत ही मनोयोग से तैयार किया है और उपलब्ध दूसरी मन्त्रानुक्रमणिकाओं से मिलान करके इसको परिशुद्ध बनाने का विशेष प्रयत्न किया है। आशा है कि श्रद्धालु वेदभक्त, विद्वान् एवं अनुसन्धानकर्ता इससे अवश्य लाभान्वित होंगे।

आर्ष-भक्त

धर्मपाल आर्य

मन्त्री

दिनांक ३-४-१९८३ ई०

(२) ऋग्वेद में मण्डल, सूक्त, मन्त्र, यजुर्वेद में अध्याय, मन्त्र, सामवेद में मन्त्र-संख्या, तथा अथर्ववेद में काण्ड, सूक्त, मन्त्र के क्रम से संख्यायें दी गई हैं।

(३) शतपथादि ग्रन्थों के पतों में क्रमशः संख्यायें ही दी हैं। जैसे शतपथ में काण्डादि न लिखकर, उपनिषदों में वल्ली आदि न देकर क्रमशः पतों की संख्यायें ही दी गई हैं। अन्यथा बार बार काण्डादि लिखने से सूची का कलेवर बढ़ जाता।

(४) महर्षि दयानन्द-कृत ग्रन्थों के अपने अपने पते दिये हैं। किन्तु आर्याभिविनय में प्रथम तथा द्वितीय प्रकाशानुसार सख्या तथा लघुग्रन्थ संग्रह की पृष्ठ-संख्या 'आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट' द्वारा प्रकाशित प्रथम संस्करण के अनुसार दी गई है।

(५) निरुक्त की संख्या अध्याय तथा खण्डानुसार दी गई है।

आभार प्रदर्शन—इस चतुर्वेदमन्त्रानुक्रम-सूची के तैयार करने के लिये प्रेरणा, अनेक महत्त्वपूर्ण सुझाव, तथा विविध ग्रन्थों को सुलभ कराकर सहयोग करने वाले स्व० ला० दीपचन्द आर्य का मैं किन शब्दों से धन्यवाद करूँ, जिन्होंने सर्वथा मुझे इस कार्य के लिये उत्साहित किया। उनकी वेदों तथा ऋषियों के प्रति अनन्यआस्था, आर्ष साहित्य के प्रचार की धुन एवं इस महंगाई के युग में ऐसे ग्रन्थों का प्रकाशन कर दानवीरता का गुण अन्यत्र सुलभ नहीं है। मैं उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। और इस सूची के तैयार करने में परम सहयोगी ब्र० आनन्द प्रकाश जी व्याकरणाचार्य का इसके प्रकाशन कार्य में कम्पोज करने वाले श्री रामहौसला मिश्र जी का तथा शुद्धाशुद्धि का विशेष ध्यान कर इसके शुद्ध प्रकाशन में अतिशय सहयोगी प्रूफरीडर श्री कर्मवीर जी शर्मा का मैं अत्यन्त हृदय से कृतज्ञ हूँ। पुनरपि सावधानी बर्तते हुए भी यदि कहीं इस सूची में दोष दृष्टिगोचर हों तो विद्वद्वर्ग से भी हार्दिक प्रार्थना करता हूँ कि वे उन दोषों को कृपाभाव रखतेहुए अवश्य ही दर्शाने की कृपा करें, मैं उनका स्वच्छ हृदय से सदा स्वागत ही करूँगा और भविष्य में छपने वाले संस्करणों में उनको अवश्य दूर भी किया जायेगा।

इत्यलं विस्तरेण बुद्धिमद्वर्येषु
विदुषामनुचरः—

आचार्य अर्जुनदेव वर्मा

स्थानम्
२ एफ, कमला नगर, दिल्ली-७
फाल्गुन (अधिक) पूर्णिमा, सं० २०३९ वि०
दि० २७ फरवरी १९८३ ई०

ग्रन्थ-संकेत-विवरणम्

प्रतीकानि	विवरणम्
ई० उ०	ईशोपनिषद्
ऋ०	ऋग्वेदः (मण्डलम्-सूक्तम्-मन्त्रः)
य०	यजुर्वेदः (अध्याय -मन्त्रः)
सा०	सामवेदः (मन्त्र-संख्या)
अ०	अथर्ववेदः (काण्डम्-सूक्तम्-मन्त्रः)
आ० ब्रा०	आर्षेय-ब्राह्मणम् (अध्यायः-पर्वः-खण्डः-खण्डांशः)
ऐ० ब्रा०	ऐतरेय ब्राह्मणम् (अध्यायः-खण्डः खण्डांशः)
कौ० ब्रा०	कौषीतकि ब्राह्मणाख्यक विषयकोषः
गो० ब्रा०	गोपथ ब्राह्मणम् (प्रपाठकः-कण्डिका)
जै० उ० ब्रा० जै० ब्रा०	जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मणम् (अष्टकः-अनुवाकः-खण्डः-खण्डांशः)
ताण्ड्य० ब्रा तां० ब्रा०	ताण्ड्य-ब्राह्मणम्
तै० ब्रा०	तैत्तिरीय-ब्राह्मणम्
दे० ब्रा०	देवताध्याय-ब्राह्मणम् (खण्डः-खण्डांशः)
बृ० दे०	बृहद्देवता ब्राह्मण
प० ब्रा० प० वि० ब्रा०	पञ्चविंश-ब्राह्मणम्
श० ब्रा०	शतपथ ब्राह्मणम् (काण्डम्-अध्यायः-ब्राह्मणम्-खण्डः)
ष० ब्रा० पू० उ०	षड्विंश ब्राह्मणम् (पूर्वार्चिकः-उत्तरार्चिकः) अध्यायः-खण्डः-खण्डांशः
सं० ब्रा०	संहितोपनिषद् ब्राह्मणम् (खण्डांशः)
साम० ब्रा० साम०	साममन्त्र-ब्राह्मणम्
सा० ब्रा० सा. वि. ब्रा.	सामविधान ब्राह्मणम् (प्रपाठकः-खण्डः-खण्डांशः)
ऐ० आ०	ऐतरेय-आरण्यकः
तै० आ०	तैत्तिरीयारण्यकः
मा० उ०	माण्डूक्योपनिषद्
बृ० उ०	बृहदारण्यकोपनिषद्
नि०	निरुक्तम् (अध्यायः-खण्डः)
कपि०	कपिष्ठलकठसंहिता (अष्टकः-खण्डः)
का० सं०	काण्वसंहिता

काठ० सं०	काठक सहिता (अध्याय:-मण्डलम्)
जै० सं०	जैमिनीय संहिता
तै० सं०	तैत्तिरीय संहिता (काण्डम्-प्रपाठक:-आनुवाक:-खण्ड:)
पै० सं०	पैप्पलाद संहिता (काण्डम्-सूक्तम्-मन्त्र:)
मै० सं०	मैत्रायणी संहिता (काण्डम्-प्रपाठक:-अनुवाक:)
आर्याभि०	आर्याभिविनय: (प्रथम:, द्वितीय: प्रकाशो वा)
ऋ० भू०	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (विषय:)
का० शा०	काशी-शास्त्रार्थ:
जी० दे०	महर्षि दयानन्द जीवन चरित्रम् लेखक: देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय: भाग:—१-२, प्रकाशक: आर्यसाहित्य मण्डल लिमिटेड अजमेर: ।
जी० ले०	लेखरामकृत हिन्दी अनुवाद जीवन-चरित्रम् प्रकाशक: आर्यसमाज नया बांस दिल्ली—६
द० शा०	दयानन्द शास्त्रार्थ-संग्रह:, प्रकाशक: आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
पत्र० वि०	पत्रविज्ञापनम् स्वामी दयानन्दानाम् (पृष्ठ-संख्या)
ल०	दयानन्द-लघुग्रन्थ-सग्रह: प्रकाशक: आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
ल० प० वि०	लघु-ग्रन्थसग्रह-पञ्चमहायज्ञ विधि: (पृ० सं०)
ल० भ्र०	,, (भ्रमोच्छेदन:) ,,
ल० भ्रा० नि०	,, (भ्रान्तिनिवारणम्) ,,
ल० वे. ख. ल. वे. नि.	,, (वेदान्तिध्वान्ति खण्डनम्) ,,
ल० वेदाङ्क	,, (वेदभाष्य नमूने का अंक) ,,
ल० वे० वि०	,, (वेदविरुद्धमत खण्डनम्) ,,
ल० शि० नि०	,, (शिक्षापत्री ध्वान्त-निवारणम्) ,,
स० प्र०	,, (सत्यार्थ-प्रकाश: समुल्लास:) ,,
सं० वि०	,, (संस्कारविधि:) ,,

ओ३म्
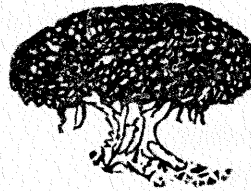
चतुर्वेद-मन्त्रानुक्रम-सूची

अकर्म ते स्वपसो ऋ० ४.२.१६, अ० १८.३.२४।

अकर्मा दस्युरभि ऋ० १०.२२.८।

अकामो धीरो अ० १०.८.४४।

अकारि त इन्द्र ऋ० १.६३.६।

अकारि ब्रह्म ऋ० ४.६.११।

अकारि वामन्धसो ऋ० ६.६३.३।

अकुप्यन्तः कुपा अ० २०.१३०.८।

अक्रन्कर्म कर्मकृतः य० ३.४७, का० सं० ६.१२, श० ब्रा० २.५.२.२६, मै० सं० १.१०.७, तै० सं० १.८.३.५, कपि० ८.७।

अक्रन्ददग्निस्तनयन् ऋ० १०.४५.४, य० १२.६, १२.३३, तै० सं० १.३.१४.५, ४.२.१.५, ५.२.१.२, २.३, ५.२.४, का० सं० १६.८७, १६.११,१२, १०२.११२, ऐ० ब्रा० ७.२.८, मै० सं० २.७.६,१०, २.७.८, ६६, ११३, १२०, ३.२.२, ४.१०.२, श० ब्रा० ६.७.३.२, २१.३३, ८.१.११, का० सं० १३.७,२२,३४, कपि० २५.१, ३२.१,२, ४१.३।

अक्रविहस्ता सुकृते ऋ० ५.२६.२।

अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे ऋ० ६.६७.४०, सा० ५२६, १२५३, नि० १४.८, १६, ता० ब्रा० १५.१, सा० वि० ब्रा० १.४.२०, ६.३, आ० ब्रा० ६.३.५.६, सं० ब्रा० ३.८, सा० ब्रा० १.४.२१।

अक्रो न बभ्रिः ऋ० ३.१.१२, नि० ६.१७, १.८।

अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः ऋ० १०.७१.७, नि० १.६।

अक्षद्रुग्धो राजन्यः अ० ५.१८.२, पै० सं० ६.१७.२।

अक्षन्नमीमदन्त ह्यव ऋ० १.८२.२, य० ३.५१, सा० ४१५, अ० १८.४.६१, तै० सं० १.८.५.७, जै० सं० १.४०.७, का० सं० ३.५६, कपि० ८.१०, मै० सं० १.१०.१७, काठ० सं० ६. २२, श० ब्रा० २.६.१.३८, तै० ब्रा० १.६.६.६, सा० वि० ब्रा० १.४.२०।

अक्षराजाय कितवं य० ३०.१८, काठ० सं० २४.१८, का० सं० २४.१८।

अक्षानहो नह्यतनोत ऋ० १०.५३.७, ऐ० ब्रा० ७.२.८।

अक्षास इदं कुशिनः ऋ० १०.३४.७।

अक्षाः फलवतीं अ० ७.५०.६, पै० सं० १.५०.२।

अक्षितास्त उपसदो० अ० ६.१४२.३।

अक्षितिं भूयसीम् अ० १८.४.२७।

अक्षितोतिः सनेदिमं ऋ० १.५.६, अ० २०.६६.७।

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां ऋ० १०.१६३.१, अ० २.३३.१, २०.६६.१७, बृ० दे० ८.६६।

अक्षुमोपशं विततं अ० ६.३.८, पै० सं० १६.४५.८।

अक्षेत्रवित्क्षेत्रविदं ऋ० १०.३२.७ ।

अक्षैर्मा दीव्यः ऋ० १०.३४.१३, बृ० दे० १.५२ ।

अक्षोदयच्छवसा क्षाम ऋ० ४.१९.४, तै० ब्रा० २.४.५.२ ।

अक्षो न चक्रयोः ऋ० ६.२४.३, नि० १.४ ।

अक्षरणश्चिद्गातुवित्तरा ऋ० ८.२५.९ ।

अक्ष्यौ च ते अ० ४.३.३, पैं० सं० २.८.३ ।

अक्ष्यौनि विध्य अ० ५.२९.४, पैं० सं० १३.९.५ ।

अक्ष्यौ नौ मधु० अ० ७.३६.१, पैं० सं० १.५५.३ ।

अगच्छतं कृपमाणं ऋ० १.११९.८ ।

अगच्छदु विप्रतमः ऋ० ३.३१.७ ।

अगन्निन्द्र श्रवो ऋ० ३.३७.१०, अ० २०.२०.३, २०.५७.६ ।

अगन्म महा ऋ० ७. १२. १, सा० १३०४, तै० ब्रा० ३.११.६.२, जै० सं० ३.५४.४, मै० स० २.१३.१९, काठ० सं० ३९.४३, ऐ० ब्रा० ५.४.१, कौ० ब्रा० २६.१४, ता० ब्रा० १५.२.१ ।

अगन्म वृत्रहन्तमं सा० ८९ ।

अगन्म स्वः स्वरगन्म अ० १६.९.३, पैं० सं० १८.२९.४ ।

अगव्यूति क्षेत्रमागन्म ऋ० ६.४७.२० द्र० बृ० दे० ५.१११ ।

अगस्त्यः खनमानः ऋ० १.१७९.६ ।

अगस्त्यस्य नद्भ्यः ऋ० १०.६०.६, द्र० बृ० दे० ७.९७ ।

अगोरुधाय गविषे ऋ० ८.२४.२०, अ० २०.६५.२ ।

अग्न आ याहि ऋ० ६.१६.१०, य० ११.४६, सा० १, ६६०, तै० सं० २.५.७.१०, ८.१, ५.१.५.२६, तै० ब्रा० ३.५.२.१, जै० सं० ४.१७.८, १.१.१, ३.२.१, मै० सं० २.७.४, ३.१.६, ४.१०.२, काठ० सं० २०.३४, ऐ० ब्रा० ७.२.१,५, कौ० ब्रा० १.४, गो० ब्रा० १.१.२९, तां० ब्रा० ११.२.३, २५.११.३३, श० ब्रा० १.४.१.७, ८,२२,२४, ३.३, ६.४. ४.९, सा० वि० ब्रा० २.६.९,१०,३.७.२, आ० ब्रा० ६.१.६.१६, सा० ब्रा० ३.१.३.३, २.६.१०, सं० ब्रा० २.१ ऋ० भू० गणितविषय, सं० वि० सामान्य प्रकरण ।

अग्न आ याह्यग्निभिः ऋ० ८.६०.१, सा० १५५२, अ० २०.१०३.२, जै० सं० ४.२५.४, काठ० सं० ३९.१०८ ।

अग्न आयूंषि ऋ० ९.६६.१९, य० १९.३८, ३५.१६, सा० ६२७, १४६४, १५१८, तै० ब्रा० १.४.६.७, २.६.३.४; तै० सं० १.३.१४.७, २३, ४.२९.१, ५.५.१, ६.६.२,९, जै० सं० २.६.२, ४.२९, १२.६, का० सं० ८.१९, २१–४०, २९.३७, ३५.४८, कपि० ३.९, ८.५, २९.४, ३४.५, ३८.१६, मै० सं० १.३.३१, ८६, १.५.१, ८, ६.१५, ६.१, ७.४, ३.११.९, ४०, ४.१०.१, २, २५, १२.४, ९६, काठ० सं० ४.६३, ११.५२, १७.५२, ३४.५, ३८.१६, कौ० ब्रा० १.४, तां० ब्रा० ६.१०.१, ९.८.१२, श० ब्रा० २.२.३.२२, १३.८.४.८, आ० ब्रा० ६.४.१.४, सा० ब्रा० ३.२.१.६, सं० वि० सामान्यप्रकरण ।

अग्न इन्द्र वरुण ऋ० ५.४६.२, य० ३३.४८, का० सं० ३२.४८, ४.५ ।

अग्न इन्द्रश्च अ० ७.११०.१ ।

अग्न इन्द्रश्च दाशुषे ऋ० ३.२५.४, अ० १.११५.१, मै० सं० ४.१२.६, ऐ० ब्रा० २.५.५, कौ० ब्रा० १४.२, बृ० दे० ४.१०३ ।

अग्न इळा ऋ० ३.२४.२, आ० श्रौ० ४.१३.७।

अग्न ओजिष्ठमा ऋ० ५.१०.१, सा० ८१, जै० सं० १.९.१, कौ० ब्रा० २१.३।

अग्नयेऽनीकवते य० २४.१६, २९.५९, काठ० सं० ९.१३, तै० सं० १.८.४.१, ५.५.२४.१, का० सं० २६.१७, ३१.५७, कपि० ८.७.८।

अग्नये कव्यवाहनाय य० २.२९, अ० १८.४.७१, श० ब्रा० २.४.२.१३, कपि० ८.६।

अग्नये कूटरून् य० २४.२३, मै० सं० ३.१४.४, का० सं० २६.२७।

अग्नये गायत्राय य० २९.६०, मै० सं० ३.१५.१०, तै० सं० ७.५.१४.१।

अग्नये गृहपतये य० १०.२३, काठ० सं० १५.२४, श० ब्रा० ५.४.३.१५–१८, २१, तै० सं० १.८.१०.१, ८.१५.१४, १६.२३।

अग्नये त्वा मह्यं य० ७.४७, श० ब्रा० ४.३.४.२८-३१, मै० सं० १.९.९, कपि० ८.१३।

अग्नये पीवानं य० ३०.२१, का० सं० ३४.३१।

अग्नये ब्रह्म ऋ० १०.८०.७।

अग्नये स्वाहा य० २२.६, २७, श० ब्रा० १३.१३.३, मै० सं० २.६.२९, ३७, ३.१२.४९, सं० वि० सामान्य प्रकरण, का० सं० २४.९; २९।

अग्ना इ पत्नीन्त्सजूः य० ८.१०, श० ब्रा० ४.४.२.१५, १६.१८, कपि० ३.९, ४४.८।

अग्ना यो मर्त्यो ऋ० ६.१४.१, मै० सं० ४.१०.४४, काठ० सं० २०.३९।

अग्नावग्निश्चरति य० ५.४, अ० ४.३९.९, का० सं० ३.२०, तै० सं० १.३.७.१४, श० ब्रा० ३.४.१.२६, कपि० २.११, २.२, ३, ३२.२, पै० सं० १३.९.१।

अग्नाविष्णू महि तद् अ० ७ २९.१, पै० सं० २०.७.२, काठ० सं० ४.११२, मै० सं० ४.११.५९, तै० सं० १.८.२२.१।

अग्नाविष्णू महि धाम अ० ७.२९.२, पै० सं० २०.७.१, काठ० सं० ४.११३, तै० सं० १.८.२२.२।

अग्निनाग्निः समिध्यते ऋ० १.१२.६, सा० ८४४, जै० सं० ३.१८.१, तै० सं० १४.४६, ११, ३.५.११.२८, ५.५.६.१, मै० सं० ४.१०.२, काठ० सं० १५.६१, ३४.३१, ऐ० ब्रा० १.३.५, ७.२.५, कौ० ब्रा० १.४, ८.१, तां० ब्रा० १२.२.१, तै० ब्रा० २.७.१२.३, श० ब्रा० १२.४.३.५, मै० सं० ४.१०.२, ३, बृ० दे० २. १४५।

अग्निना तुर्वशं यदुं ऋ० १. ३८. १८।

अग्निना रयिमश्नवत् ऋ० १.१.३, तै० सं० ३.१.११.१, ३.४. १३.१५, मै० सं० ४.१०४, ४.१६, श० ब्रा० ११.४.३.१९, आर्याभि० १.३, ल० वेदाङ्क १४०।

अग्निनेन्द्रेण वरुणेन ऋ० ८.३५.१, नि० ५.५।

अग्नेनेमिर रां इव ऋ० ५.१३.६, तै० सं० २.५.९.३।

अग्निमग्निं वः समिधा ऋ० ६.१५.६।

अग्निमग्निं वो अध्रिगुं ऋ० ८.६०.१३।

अग्निमग्निं हवीमभिः ऋ० १.१२.२, सा० ७९१, अ० २०.१०१.२, तै० स० ४.३.१३.२६, जै० सं० ३.१४.२, मै० सं० ४.१०.२७।

अग्निमच्छा देवयतां ऋ० ५.१.४।

अग्निमद्य होतारम् य० २१.५९, २८.२३, ४६, मै० सं० ४.१३.९ का० सं० २३.२६, ३०.२३, ४६।

अग्निमन्तश्च्छादयसि अ० ९.३.१४।

अग्निमस्तोऽयृग्मियं ऋ० ८.३९.१, नि० ५.२३ ।

अग्निमिन्धानो ऋ० ८.१०२.२२, सा० १९, जै० सं० १.२.६, सा० ब्रा० ३.१.४.२

अग्निमिन्धानो मनसा० ऋ० ८.१०२.२२, सा० १९ ।

अग्निमीळिष्वावसे ऋ० ८.७१.१४, सा० ४९, अ० २०.१०३.१, जै० सं० १.५.५, ४.१४.८ ।

अग्निमीळे न्यं कवि ऋ० ५.१४.५ ।

अग्निमीळे पुरोहितं ऋ० १.१.१, सा० ६०५, तै० सं० ४.३.१३.३, ८, नि० ७.१५, जै० सं० २.१.४०, आ० ब्रा० ६.३.२.३, ६.३.७.३ मै० सं० ४.१०.१२० काठ० सं० २.८८, गो० ब्रा० पू० १.२९, उ० १.४ सं० वि० स्वस्तिवाचन, आर्याभि० १.२, ल० आ० नि० १६७, १८६, १९०, ल वेदाङ्क १२४, १४५ ।

अग्नि मीळे भुजां ऋ० १०.२०.२ ।

अग्निमुक्थैर्ऋषयः ऋ० १०.८०.५ ।

अग्निमुष समसविना ऋ० ३.२०.१, बृ० दे० ४ १०२ ।

अग्निरत्रि भरद्वाजं ऋ० १०.१५०.५ ।

अग्निरप्सा मृतीषहं ऋ० ६.१४.४ ।

अग्निरश्मि जन्मना ऋ० ३.२६.७, य० १८.६६, सा० ६१६, नि० १४.२, जै० सं० २.२.७, मै० सं० ४.१२.५, १३२, अ० ब्रा० ६.३.५.१, ३.७.३, सा० ब्रा० ३.२.१.८, कपि० ३.१ ।

अग्निराग्नीध्रात् अ० २०.२.२ ।

अग्निरातीन उत्थितो अ० ९.७.१९ ।

अग्निरिद्धि प्रचेता ऋ० ६.१४.२ ।

अग्निरिन्द्राय पवते सा० १८२५ ।

अग्निरिन्द्रो वरुणो ऋ० १०.६५.१, कौ० ब्रा० २१.२, ४९.९, ।

अग्निरिव मन्यो ऋ० १०.८४.२, अ० ४.३१.२, नि० १.४.१७, पै० सं० ४.१२.२ ।

अग्निरिवैतु प्रतिकूलं अ० ५.१४.१३, पै० सं० २.७.१.५ ।

अग्निरिषां सख्ये ददातु ऋ० ८.७१.१३ ।

अग्निरीशे बृहतः ऋ० ४.१२.३ ।

अग्निरीशे बृहतो अध्वरस्य ऋ० ७.११.४ ।

अग्निरीशे वसव्यस्य ऋ० ४.५५.८, काठ० सं० ७.९५ ।

अग्निरुक्थे पुरोहितः ऋ० ८.२७.१, सा० ४८, जै० स० १.५.४, मै० सं० ४. १२.१७ काठ० सं० १०.४६ बृ० दे० ६.६८ ।

अग्निर्ऋषिः पवमानः ऋ० ९.६६.२०, य० २६.९, सा० १५१९, जै० सं० ४.४.१, १२.८, का० सं० २८. १२, २९.३९, मै० सं० १.५.९, ६.१, १०.१, ऐ० ब्रा० २.५.५, तै० आ० २.५.२, सं० वि० सामान्य प्रकरण, कपि० ३.१ ।

अग्निरेकाक्षरेण प्राणम् य० ९.३१, श० ब्रा० ५.२.२.१७, तै० सं० १.७.११.१ ।

अग्निरेनं क्रव्यात् अ० १२.११.११ ।

अग्निर्जज्ञे जुह्वा रेजमानः ऋ० ३.३१.३ ।

अग्निर्जागारः तं ऋचः ऋ० ५.४४.१५, सा० १८२७ ।

अग्निर्जाता देवानां ऋ० ८.३९.६ ।

अग्निर्जातो अथर्वणः ऋ० १०.२१.५, कौ० ब्रा० २२.६ ।

अग्निर्जातो अरोचतः ऋ० ५.१४.४, मै० सं० ४. ०.४७ ।

अग्निर्जुषत नो गिर ऋ० ५.१३.३, ७.१५.६, सा० १४०६, जै० सं० ३.२८.२ ।

अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः य० ३.९, सा० १८३१, श० ब्रा० २.३.१.३०, ३३.३५,

मै० सं० १.६.५१ काठ सं० ४० ६, ऋ० भू० पंचमहायज्ञ विषय, ल० प० वि० पृ० २१४।

अग्निर्ज्योतिषा ज्योतिष्मान् य० १३.४०, काठ० स० १६.१६, श० ब्रा० ७.५.२. १२, १३।

अग्निर्ददाति सत्पतिं ऋ० ५.२५.६, मै० सं० ४.११.६, ४.१४.१६, काठ० सं० २.१५।

अग्निर्दाद् द्रविणं ऋ० १०.८०.४, तै० सं० २.२.१२.६, २२।

अग्निर्दिव आ तपति अ० १२.१.२०, पै० सं० १७.३.१।

अग्निर्देवता वातो य० १४.२०, काठ सं० ७.२, १५.७, ऋ० भू० वेद० विचार० ल० भा० नि० पृ० १७०, प० वि० १३, तै० सं० ४.३.७.२५, श० ब्रा० ७ ४.१. ४१, ४२, १३.४.१.१३, स० प्र० एका० समु०।

अग्निर्देवेभिर्मनुषश्च ऋ० ३.३.६।

अग्निर्देवेषु राजति ऋ० ५.२५.४।

अग्निर्देवेषु संवसु ऋ० ८.३९.७।

अग्निर्देवो देवानामभवत् ऋ० २.२.८, १०. १५०.४।

अग्निर्द्यावापृथिवी ऋ० ३.२५.३।

अग्निर्धिया सचेतति ऋ० ३.११.३।

अग्निर्नये भ्राजसा ऋ० १०.७८.२, नि० ३.१५।

अग्निर्न यो वन ऋ० ६.८८.५।

अग्निर्नः शत्रून् अ० ३.१.१।

अग्निर्नः शुष्कं वनं ऋ० ६.१८.१०।

अग्निर्नेता भग इव ऋ० ३.२०.४, कौ० ब्रा० १५.२, ऐ० ब्रा० ३.२.७, ५.१.१, २.१, ७, ३.१, ३, ४.१।

अग्निर्नो दूतः प्रत्येतु अ० ३.२.१।

अग्निर्नो यज्ञमुपवेतु ऋ० ५.११.४।

अग्निर्भूम्यामोषधीषु अ० १२.१.१९; पै० सं० १७.२.१०।

अग्निर्मा गोप्ता अ० १७.१.३०, पै० सं० १८.३२.१३।

अग्निर्माग्निनावतु अ० १९.४५.६, पै० सं० १५.४.६।

अग्निर्मा पातु अ० १९.१७.१, ७.१६.१।

अग्निर्मूर्धा दिवः ऋ० ८.४४.१६, य० ३. १२, १३.१४, १५.२०, सा० २७, १५३२, जै० सं० १.३.७, तै० सं० १. ५.५.३, ५.११.४, ४.१.१ ४.१.११.३, ७.४.११.१३, ४.४.४.१, तै० ब्रा० १.२. ३.४, ३.१.३.३, ५.७.१, का सं० ३.१८, १६.४१, मै० सं० १.५.२, ४.१०.३, श० ब्रा० २.३.४.११, ७.४.१.४१, १४ ४ १. १३, ष० ब्रा० ४.२.२४, आ० ब्रा० ६ १. ३.५, ४.१.१, कठ० सं० ६.२०, ७.५, १२.१४, ४३, २०.१४, ३९.१४, ४०. १४, १३०, कपि० ४.८, ५.३, ८.५, २६.२, ३२.१२, सा० वि० १.७. ११, सा० ब्रा० ३.१.७.११, २.१.६।

अग्निर्यव इन्द्रो यवः अ० ९.२.१३, पै० सं० १६.७७.३।

अग्निर्वग्ने सुवीर्यम् ऋ० १.३७.१७।

अग्निर्वृत्राणि जङ्घनत् ऋ० ६.१६.३४, य० ३३.९, सा० ४, १३९६, तै० सं० ४.३.१३.१, ५.५.६१, तै० ब्रा० ३.५. ६.१, का० सं० ३२.९, जै० सं० १.१.४, ३.२२.१, मै० सं० ४. १०.१, १४०, ११.४०, १३ ३५, काठ० सं० २०.३६, ऐ० ब्रा० १.१.४, ४.८, कौ० ब्रा० १.४, सा० वि० ब्रा० २.६.१४, ष० ब्रा० ४.२.४, सा० ब्रा० ३.२.६.१६।

अग्निर्वनस्पतीनां अ० ५.२४.२, पै० स० १५.७.८।

अग्निर्वै न पदवायः अ० ५.१८.१४, पै० सं० ६.१७.६।

अग्निर्हत्यं जरतः ऋ० १०.८०.३।

अग्नि र्ह नामधायि ऋ० १०.११५.२।

अग्निर्हि जानि पूर्व्य ऋ० ८.७.३६।

अग्निर्हि वाजिनं ऋ० ५.६.३, सा० १७३८, तै० ब्रा० ३.११.६.४, कौ० ब्रा० ३६. १३, मै० सं० ३६.८६, काठ० सं० ३६.८६।

अग्निर्हि विद्मना ऋ० ६.१४.५।

अग्निर्होता कविक्रतुः ऋ० १.१.५, आर्याभि० १.५, ल० आ० नि० १६७, १८६, १६०, ल० वेदांक० १२४,१४५।

अग्निर्होता गृहपति ऋ० ६.१५.१३, तै० ब्रा० ३.५.१२.१, मै० सं० ४.१३.७७, ऐ० ब्रा० ४.२.१, ५.२.३, कौ० ब्रा० २३.३।

अग्निर्होता दास्वतः ऋ० ५.२.६।

अग्निर्होताध्वर्युष्टे अ० १८ ४.१५।

अग्निर्होता नो अध्वरे ऋ० ४.१५.१, तै० ब्रा० ३.६.४.१, मै० सं० ४.१३.२२, काठ० सं १६.२४०, ३८.१३७, ऐ० ब्रा० २.१.५, कौ ब्रा० २८.२।

अग्निर्होतान्सीदत् ऋ० ५.१.६, तै० ब्रा० १.३.१४.१, मै० सं० ४ १३.२६, काठ० सं० २.१५, ७.१६, ऐ० ब्रा० ७.२.८।

अग्निर्होता पुरोहितो ऋ० ३.११ १, काठ० सं० २ १७, कौ० ब्रा० २६.१७।

अग्निवासाः पृथिवी अ० १२.१.२१, गो० ब्रा० पू० २.६।

अग्निश्च पृथिवी च य० २६.१, काठ सं० २८.१।

अग्निश्च म आपश्च य० १८ १४ काठ सं० १८.१०, ११, तै० स० ५.४.८.८, कपि० २८.१०।

अग्निश्च म इन्द्रश्च य० १८.१६, कपि० २८.१०।

अग्निश्च मे घर्मश्च य० १८.२२, श० ब्रा० ६.३.३.१, तै० सं० ४.७.६.१, ५.४.८.१२, कपि० २८.११।

अग्निश्च यन्मरुतो ऋ० ५.६०.७।

अग्निश्रियो मरुतो ऋ० ३.२६.५, तै० ब्रा० २.७.१२.३।

अग्निष्टे नि शमयतु अ० ६.१११.२, पै० सं० ५.१७.७।

अग्निष्वात्ता ऋतुमतो य० १६.६१, काठ० सं० ६१.६८, का० सं० २१.६३, ऋ० भू० पितृयज्ञविषय।

अग्निष्वात्ताः पितरः ऋ० १०.५०.११, य० १६.५६, अ० १८.३.४४, तै० सं० २.६. १२.२, ५, का० सं० २१.५८, मै० सं० ४.१०.१४२, काठ० सं० २१.१४, २१. ६०, ६६, २८ १, तै० ब्रा० २.६.१६.१, ऋ० भू० पितृयज्ञविषय।

अग्निस्तक्मानमप अ० ५.२२.१, पै० सं० १३.११।

अग्निस्तिग्मेन शोचिषा ऋ० ६.१६.२८, य० १७.१६, सा० २२, अ० ६.३४.२, तै० सं० ४.६.१.५, काठ० सं० १८.१६, मै० सं० २.१०.१४, जै० सं० १.३.२, ४.६.८, कपि० २८.२, काठ० सं० १८.१, श० ब्रा० ६.२.२.५, तै० ब्रा० १.५.५.१, ३.४.७, सा० त्रि० ब्रा० १.७.३, ८.१६, सा० ब्रा० ३ १ ७.३, ३.१.७.१६।

अग्निस्तुविश्रवस्तमं ऋ० ५.२५.५, मै० स० ४.११.७, काठ० सं० २.१५,।

अग्निस्त्रीणि त्रिधातूनि ऋ० ८.३६.६, तै० सं० ३.२.११.७।

अग्निहोत्रं च श्रद्धा अ० ११.७.६, पै० सं० १६ ८२.६।

अग्निं घृतेन ऋ० ५.१४.६।

अग्निं त मन्ये ऋ० ५.६.१, य० १५.४१,

सा० ४२५, १७३७, का० सं० १६.६३, मै० सं० २.१३.७, काठ० सं० ३९.१०३, कौ० ब्रा० २३.१, श० ब्रा० १३.५.१.८ ।
अग्नि ते वसुवन्तः अ० १९.१८.१, पै० सं० ७.१७.१ ।
अग्निं दूतं पुरो ऋ० ८.४४.३, य० २२.१७, काठ० सं० २.१०.६, १९.३५, ऋ० वि० २.२५.५, का० सं० २४.१७, २२, २. ११६, १९.३५, सं० वि० चुडाकर्म संस्कार, अन्त्येष्टि संस्कार ।
अग्निं दूतं प्रति ऋ० १.१६१.१ ।
अग्निं दूतं वृणीमहे ऋ० १.१२.१, सा० ३, ७९०, अ० २०.१०१.१, तै० सं० २.५. ८.५, ५.५.६.१, तै० ब्रा० ३.५.५.३, जै० सं० १.१.३, ३.१४.१, मै० सं० ४.१०.२, काठ० सं० २०.३५, ऐ० ब्रा० १.१.२; ४. ५.३, कौ० ब्रा० १.४, २२.२, गो० ब्रा० पू० २.२३, उ० ३.१२, तां० ब्रा० ११. ७.३, ष० ब्रा० ६.१.४, ७.३, अ० द० ब्रा० १.७, श० ब्रा० १.४.१.३४, ३५, स० ब्रा० २.१५, बृ० दे० २.१४५, ष० ब्रा० पू० ६.१.४, उ० ६.७.३ ।
अग्निं देवासो ऋ० ६.१६.४८ ।
अग्निं देवासो मानुषिषु ऋ० २.४.३ ।
अग्निं द्वेषो ऋ० ८.७१.१५, जै० सं० ४. १४.९ ।
अग्निं धीभिर्मनीषिणः ऋ० ८.४३.१९ ।
अग्निं न मामथितं ऋ० ८.४८.६ ।
अग्निं ब्रूमो वनस्पतीन् अ० ११.६.१, पै० सं० १७.३.१ ।
अग्निं नरो ऋ० ७.१.१, सा० ७२, १३७३, नि० ५.१०, जै० सं० १.७.१०, ३.५९. १५, काठ० सं० ३४.३०, ३९.१०४, ऐ० ब्रा० ५.१.५, कौ० ब्रा० २२.७, २५.११, बृ० हा० सं० ५.१३०, ४०७ सा० वि० ब्रा० ३.७.९, सा० ब्रा० ३.१.४.७, ३.३. ७.९,१० ।
अग्निं मन्द्रं पुरुप्रियं ऋ० ८.४३.३१ ।
अग्निं मन्ये ऋ० १०.७.३, ऐ० ब्रा० ४.२.१, कौ० ब्रा० २५.१० ।
अग्निं यन्तुरम् ऋ० ३.२७.११ ।
अग्निं युनज्मि य० १८.५१, काठ० सं० १८.७६, श० ब्रा० ९.४.३.१६, ४.४.३, मै० सं० २.१२.९, तै० सं० ४.७.१३.७, ५.४.१०.२, कपि० २९.४, ४८.३ ।
अग्निं वर्धन्तु ऋ० ३.१०.६ ।
अग्निं वः पूर्व्यं गिरा ऋ० ८.३१.१४, तै० सं० १.८.२२.१०, मै० सं० २.१३, ४१; काठ० सं० ११.१२, बृ० दे० ६.७५ ।
अग्निं वः पूर्व्यं हुवे ऋ० ८.२३.७ ।
अग्निं विश ईळते ऋ० १०.८०.६ ।
अग्निं विश्वा ऋ० १.७१. ७ ।
अग्निं विश्वायु वेपसं ऋ० ८.४३.२५ ।
अग्निं वो अध्रिगुं ऋ० ८.६०.१७, ।
अग्निं वो देवमग्निभिः ऋ० ७.३.१, सा० १२१९, जै० सं० ३.४६.४, काठ० सं० ३५.७, ऐ० ब्रा० ५.३.३, कौ० ब्रा० २६. ११, तां० ब्रा० १४.८.१ ।
अग्निं वो देवयज्यया ऋ० ८.७१.१२ ।
अग्निं वो वृधन्तं ऋ० ८.१०२.७, सा० २१, ९४६, तां० ब्रा० १२.१२.१, सं० ब्रा० २.११ ।
अग्निं सुदीतिं ऋ० ३.१७.४, तै० ब्रा० ३. ६.९.१, जै० सं० १.३.१, ३.२४.१२, मै० सं० ४.१३.४४, काठ० सं० १८.२१ ।
अग्निं सुम्नाय ऋ० ३.२.५, १०.१४०.६, य० १२.१११, सा० २, ११७१, का० सं० १३.११०, तै० सं० ४.२.७.३, मै० सं० २.७.१४, काठ० सं० १६.१४, श० ब्रा० ७.३.१.३४ ।

अग्निं सूनुं सनश्रुतं ऋ० ३.११.४।

अग्निं सूनुं सहसो ऋ० ८.७१.११, सा० १५५५, जै० सं ४.१४.७।

अग्निं स्तोमेन ऋ० ५.१४.१, य० २२.१५, तै० सं० ४.१.११.४, १६, का० सं० १६.१४, ३७, २०.१४, २४.१८, श० ब्रा० २.२.३.२१, मै० सं० ४.१०.१, २, ३०, कौ० ब्रा० १.४।

अग्निं हिन्वन्तु ऋ० १०.१५६.१, सा० १५२७, बृ० दे० ८.६१।

अग्निं हृदयेन य० ३६.८, तै०सं० १.४.३६.५, का० सं० ३६.६।

अग्निं होतारं प्रवणे ऋ० ३.१६.१।

अग्निं होतारं मन्ये ऋ० १.१२७.१, य० १५.४७, सा० ४६५, १८१३, अ० २०.६७.३, सा० वि० ब्रा० २.३.२, बृ० दे० ४.४, गो० ब्रा० उ० ६.१०, तै० सं० ४.४.४, २६, नि० ६.८, जै० सं० १.४८.१०, मै० सं० ३.१३.५५, २.१३.५, काठ० सं० १६.६८, २०.१४, २६.३८, ष० ब्रा० ३.४.२०, सा० ब्रा० ३.२.३.२।

अग्निं होतारमीडते ऋ० १.१२८.८।

अग्निः क्रव्यात् अ० १२.५.३, पै० सं० १६.१४५.३।

अग्निः पचन् अ० १२.३.२४, पै० सं० १७.३८.४।

अग्निः परेषु अ० ६.३६.३।

अग्निः पशुरासीत् य० २३.१७, श० ब्रा १३.२.७, १३-१५, तै० सं० ५.७, २६.१, का० सं० २५.१६।

अग्निः पूर्व आरभतां अ० १.७.४।

अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिः ऋ० १.१.२, नि० ७.१६, आर्याभि० १.४, ल० भ्रा० नि० १८४, ल० वेदाङ्क १३७।

अग्निः पृथुर्धर्मणस्पतिः य० १०.२६, श० ब्रा० ५.४.४.१७, १८।

अग्निः प्रत्नेन ऋ० ८.४४.१२, सा० १७११, मै० सं० ४.१०.१६, ११६, काठ० सं० २.७६; ऐ० ब्रा० १.१.४, तै० ब्रा० ३.५.६.१।

अग्निः प्राणान्त्सं अ० ३.३१.६।

अग्निः प्रातः सवने अ० ६.४७.१, पै० सं० १६.४३.१०।

अग्निः प्रियेषु य० १२.११७, सा० १७१०, श० ब्रा० ७.३.२.८।

अग्निः शुचि ऋ० ८.४४.२१, तै० सं० १.३.१४.२७, ५.५.११, मै० सं० १.५.१३, जै० सं० ४.१२.१२, काठ० सं० १६.३३, ऐ० ब्रा० ७.२.६, श० ब्रा० १२.४.४.५,

अग्निः सनोति ऋ० ३.२५.२।

अग्निः सप्तिम् ऋ० १०.८०.१।

अग्निः सूर्य अ० ५.२८.२।

अग्निः स्रुचो अ० ५.२७.५।

अग्नीपर्जन्यावतं ऋ० ६.५२.१६।

अग्नी रक्षस्तपतु अ० १२.३.४३।

अग्नी रक्षांसि सेधति ऋ० १.७६.१२, ७.१५.१०, अ० ८.३.२६, तै० ब्रा० २.४.१.६, मै० सं० ४.११.१२५, काठ० सं० २.१४, ८३; १५.१२, तै० ब्रा० २.४.१.६, पै० सं० १६.८.४।

अग्नीषोमाचेतितद् ऋ० १.९३.४, तै० ब्रा० २.८.७.१०।

अग्नीषोमा पथिकृता अ० १८.२.५३।

अग्नीषोमा पिपृतम् ऋ० १.९३.१२।

अग्नीषोमाभ्यां कामाय अ० १२.४.२६, पै० सं० १७.१८.६, काठ० सं० ५.१, ५३२.१, तै० सं० १.१.४.१०।

अग्नीषोमाय आहुतिं ऋ० १.९३.३, तै० ब्रा० २.८.७.१०, मै० सं० ४.१४.२७१।

अग्नीषोमा यो अद्यवां ऋ० १.९३.२, तै०

ब्रा० २.८.७.६, मै० सं० ४.१४.२६६ ।
अग्नीषोमायोरुज्जितिम् य० २.१५, श० ब्रा० १.८.३.१, ३, मै० सं० १.११.१७, तै० सं० १.६.४.७, कपि० १.१२, ४.८, ४७.११ ।
अग्नीषोमावदधुर्या अ० ८.६.१४, गो० ब्रा० उ० २.६, पै० सं० १६.१६.४ ।
अग्नीषोमा वनेन ऋ० १.९३.१० ।
अग्नीषोमा विमं ऋ० १.९३.१, तै० सं० २.३.१४.२, ६; मै० सं० १.५.१, काठ० सं० ४.१६, तै० ब्रा० २.८.७.१०, मै० सं० ४.११. २, १४.१८, बृ० हा० सं० ५.३७१, बृ० दे० ३. १२४ ।
अग्नीषोमा विमानिनो ऋ० १.९३.११ ।
अग्नीषोमा वृषणा ऋ० १०.६६.७ ।
अग्नीषोमा सवेदसा ऋ० १.९३.९, तै० सं० २.३.१४.१, तै० ब्रा० ३.५.७.२, ७, मै० सं० ४.१०.३५, काठ० सं० ४.१६, तै० ब्रा० ३.५.७.२ ।
अग्नीषोमा हविषः ऋ० १.९३.७, तै० सं० २.३.१४.२, मै० सं० ४.१४.२७२, तै० ब्रा० २.८.७.१०, ऐ० ब्रा० २.१.१० ।
अग्ने अक्रव्यादग्निः अ० १२.२.४२, पै० सं० १७.३४.३ ।
अग्ने अच्छा ऋ० १० १४१.१, य० ९.२८, अ० ३.२०.२, तै० सं० १.७.१०.२, ४, का० सं १०.३५, मै० सं० १.११.१७, काठ० सं १४.२,१०, श० ब्रा० ५.२.२. १०, बृ० दे० ८.५३, पै० सं० ३.३४.३ ।
अग्ने अपां समिध्यसे ऋ० ३.२५.५ ।
अग्ने अङ्गिरः य० १२.८, काठ० सं० १६. ८९, श० ब्रा० ६.७.३.६, तै० सं० ४.२. १.७, कपि० ३२.१.३५.६ ।
अग्नेऽजनिष्ठा अ० ११.१.३, पै० सं० १६. ८९.३ ।
अग्नेऽभ्यावर्त्तिन्नभि य० १२.७, काठ० सं० १६.८८, कपि० ३२.१, ३५.६, श० ब्रा० ६.७.३.६ ।
अग्नेऽदब्धायो य० २.२०, काठ० सं० १५०, ३१.३०, श० ब्रा० १.९.२.२०, २१, २२, तै० सं० १.१.१३.१७, कपि० १.१२ ।
अग्ने इळा समिध्यसे ऋ० ३.२४.२ ।
अग्ने कदा त आनुषक् ऋ० ४.७.२ ।
अग्ने कविर्वेधा असि ऋ० ८.६०.३, जै० सं० ४.२८.८ ।
अग्ने केतुर्विशामसि ऋ० १०.१५६.५, सा० १५३१ ।
अग्ने गृहपते य० २.२७, काठ० सं ७.६२, श० ब्रा० १.९.३, १९-२०, मै० सं० १. ५.७.४, तै० सं० १.५.६.१६, ६.६.११, कपि० ५.२ ।
अग्ने घृतस्य ऋ० ८.१०२.१६ ।
अग्ने चरुर्यज्ञियः अ० ११.१.१६, पै० सं० १६.९०.६ ।
अग्ने चिकिध्यस्य ऋ० ५.२२.४ ।
अग्नेजरस्व स्वपत्य ऋ० ३.३.७ ।
अग्नेजरितर् विश्पतिः ऋ० ८.६०.१९, सा० ३९, जै० सं० १.४.५ ।
अग्ने जातान् प्रणुदा य० १५.१, काठ० सं० १७.१५, २१.४, श० ब्रा० ८.५.१.८, मै० सं० २.८.१५, तै० सं० ४.३.१२.१, ५.३. ५.१, कपि० २६.५, ३२.१७ ।
अग्ने जायस्वादितिः अ० ११.१.१, पै० सं० १६.८९.१ ।
अग्ने जुषस्व नो हविः ऋ० १.१४४.७, ऐ० ब्रा० १.५.४, कौ० ब्रा० ९.५ ।
अग्ने तपस्तप्यामह अ० ७.६१.२ ।
अग्ने तमद्याश्वं ऋ० ४.१०.१, य० १५.४४, १७.७७, सा० ४३४, १७७७, तै० सं० ४. ४.४.७, २२, का० सं० १६.६६, १८.७७, मै० सं० १.१०.३, २.१३.५२, कौ० ब्रा०

२७.२, श० ब्रा० ७.३.१.२६, ६.२.३.४१, तै० सं० ५.७.४.१, मै० सं० २.१०. ६, ३.३.६, ४.१०.२, कपि० २५.५, ३२.६ ।

अग्ने तवत्यदुक्थ्यम् ऋ० १.१०५.१३ ।

अग्ने तवत्ये अजर ऋ० ८.२३.११ ।

अग्ने तव श्रवो ऋ० १०.१४०.१, य० १२.१०६, सा० १८१६, तै० सं० ४.२.७.२, ५, ५.२.६.१, का० सं० १३.१०५, मै० सं० २.७.१८६, ३.२.५, २२.६, काठ० सं० १६.१७४, श० ब्रा० ७.३.१.२६, बृ० दे० ८.५३ ।

अग्ने तृतीयो सवने ऋ० ३.२८.५ ।

अग्ने त्रीते ऋ० ३.२०.२, तै० सं० ३.२.११.४, ४.११.३, मै० सं० २.४.४, ४.१२.५, काठ० सं० ६.८०, १२.१४।

अग्ने त्वचं ऋ० १०.८७.५, अ० ८.३.४, पै० सं० १६.६.४ ।

अग्ने त्वन्नो अन्तम ऋ० ५.२४.१, य० ३.२५, १५.४८, २५.४७, सा० ४४८, ११०७, तै० सं० १.५.६.२, ८, ४.४.४.८, २७, का० सं० ३.३३, १६.७०, २७.४५, ४७, जै० सं० १.४७.२, ३.३४.१५, मै० सं० १.५.२८, काठ० सं० ७.६, पं० वि० १३.२.५, श० ब्रा० २.३.४.३१, सा० वि० १.८.१३, कपि० ५.१.५, तां० ब्रा० १३.२.५, सं० ब्रा० २.२, सा० ब्रा० ३.१.८.१३ ।

अग्ने त्वमस्मद्युयोधि ऋ० १.१८६.३, तै० ब्रा० २.८.२.४, मै० सं० ४.१४.३७ ।

अग्ने त्वं पारया ऋ० १.१८६.२, तै० सं० १.१.१४.१२, तै० ब्रा० २.८.२.५, तै० आ० १०.२.१, मै० सं० ४.१०. १२ ।

अग्ने त्वं पुरीष्यो य० १२.५६, काठ० सं० १६.१३५, श० ब्रा० ७.१.१.३८, कपि० २५.२ ।

अग्ने त्वं यशा ऋ० ८.२३.२० ।

अग्ने त्वं सुजागृहि य० ४.१४, श० ब्रा० ३.२.२.२२, काठ० सं० २.१६, कपि० १.१६, ३६.२ ।

अग्नेऽदब्धायोऽशीतम य० २.२० ।

अग्ने दा दाशुषे ऋ० ३.२४.५, तै० सं० २.२.१२.६, २०, जै० सं० ४.२४.१०, मै० सं० ४.१२.३०, ४.१४.१६, का० सं० ६.३५ ।

अग्नेदिवः सूनुरसि ऋ० ३.२५.१ ।

अग्नेदिवो अर्णमच्छा ऋ० ३.२२.३, य० १२.४६, तै० सं० ४.२.४.६, का० सं० १३.५०, मै० सं० २.४.१३४, का० स० १६.१२७, श० ब्रा० ७.१.१.२४, कपि० २५.२ ।

अग्नेदेवाँ इहा वह जज्ञानः ऋ० १.१२.३, सा० ७६२, अ० २०.१०१.३, तै० ब्रा० ३.११.६.२, काठ० सं० ३६.७५, ८५ ।

अग्ने देवाँ इहा वह सादया ऋ० १.१५.४, जै० सं० ३.१४.३, काठ० सं० ३६.८५, तै० ब्रा० ३.११.६.२ ।

अग्ने द्युम्नेन जागृवे ऋ० ३.२४.३ ।

अग्ने धृत व्रताय ते ऋ० ८.४४.२५ ।

अग्ने नक्षत्रमजरं ऋ० १०.५६.४, सा० १५३०, काठ० सं० २.७७, का० सं० ६.१६ ।

अग्ने नय सुपथा ऋ० १.१८६.१, य० ५.३६, ७.४३, ४०.१६, तै० सं० १.१.१४.३, ४.४३.१, ३, तै० ब्रा० २.८.२.३, ४.२.११.३, श० ब्रा० १४. ८.३.१, का० सं० ५.४५; ६.८, ४०.१८, मै० सं० १.२.८७, ४.१०.२, ५८, ११.४, १४.३, ३३, काठ० सं० ३४.६.३०, ऐ० ब्रा० १.२.३, श० ब्रा० ३.६.३.११, ४.३. ४.१२, १४.८.३.१, बृ० दे० ४.६२, सं० वि० ई० प्रार्थनोपासना, गृहाश्रम, अन्त्येष्टि संस्कार० स० प्र० ७. समु० कपि० २.८ ।

अग्ने निपाहि नस्त्वं ऋ० ८.४४.११ ।

अग्ने नेमिर रा इव ऋ० ५.१३.६, तै० सं० २.५.६.६ ।

अग्ने पक्षतिर्वायोः य० २५.४, तै० सं० ५.७.२१.१, का० सं० २७.८ ।

अग्ने पत्नी रिहावत ऋ० १.२२.६, य० २६.

२०, ऐ० ब्रा० ६.३.२, कौ० ब्रा० २८.३।

अग्ने पवस्व स्वपाः ऋ० ९.६६.२१, य० ८.३८, सा० १५२०, तै० सं० १.३.१४.२४, ५.५.८, ६.६.१०, तै० ब्रा० २.६.३.४, का० सं० ८.२०, २९.३८, जै० सं० ४.३०.१०, १२.७, कपि० ३.१.६, ४१.८, काठ० सं० २.८९, ७.८६, १६. १४, श० ब्रा० ४.५.४.६, मै० सं० १.५.१०, तै० श्रा० २.५१ सं० वि० सामान्यप्रकरण।

अग्ने पावक रोचिषा ऋ० ५.२६.१, य० १७.८, सा० १५२१, तै० सं० १.३.१४.२५, ५.५.६, ४.६.१.२, का० सं० १८.६, जै० सं० ४.१२.६, कपि० ३.६, २८.१, ४१.८, मै० सं० १.५.११, २.१०.६, ४.१०.२८, काठ० सं० १७.१७, ७६, १६. १४, श० ब्रा० ६.१.२.३०,।

अग्ने पूर्वा अनुषसो ऋ० १.४४.१०।

अग्ने पृतनाषाट् अ० ५.१४.८; पै० सं० ७.१.३।

अग्नेः प्रजातं प्रति अ० १६.२६.१।

अग्नेः प्रेहि अ० ४.१४.५; काठ० सं० १८.३७; श० ब्रा० ६.२.३.२७, २८; मै० सं० २.१०.५८; तै० सं० ४.६.५.५, ५.४.७.५; कपि० २८.४; पै० सं० ३.३८.३।

अग्ने ब्रह्म गृभ्णीष्व य० १.१८; श० ब्रा० १.२.१.६—१३; कपि० १.७, ४७.६।

अग्ने बाधस्व ऋ० १०.९८.१२; तै० ब्रा० २.५.८.११; मै० स० ४.११.७४; का० सं० २.५।

अग्नेभव सुषमिधा ऋ० ७.१७.१।

अग्ने भूरीणि तव ऋ० ३.२०.३; तै० सं० ३.१.११.२६; आप० श्रौ० १६. ३५.२।

अग्नेऽभ्यावर्त्तिन्नभि य० १२.७।

अग्नेभ्रातः सहस्कृत ऋ० ८.४३.१६; जै० सं० ३.४६.३।

अग्ने मन्मानि तुभ्यकं ऋ० ८.३९.३।

अग्नेमन्युं प्रतिनुदन ऋ० १०.१२८.६; अ० ५.३.२; तै० सं० ४.७.१४.२; पै० सं० ५.४.२।

अग्नेमरुद्भिः ऋ० ५.६०.८; ऐ० ब्रा० ३.३.१४; कौ० ब्रा० १६.६।

अग्ने माकिष्टे ऋ० ८.७१.८।

अग्ने मळ महाँ ऋ० ४.९.१; सा० २३; जै० सं० १.३.३; काठ० सं० ४०.१४, १२३; ऐ० ब्रा० ५.३.४; कौ० ब्रा० २६.१३; साम० वि० २ ६.१४; सा० ब्रा० ३.२.६.१६।

अग्ने यजस्व ऋ० २.९.४।

अग्ने यजिष्ठो ऋ० ३.१०.७; सा० १००; जै० सं० १.११.४।

अग्ने यत्ते तपस्तेन अ० २.१९.१; पै० सं० २.४८.१।

अग्ने यत्ते तेजस्तेन अ० २.१९.५।

अग्ने यत्ते दिवि ऋ० ३.२२.२; य० १२.४८; अ० २.१९.१; तै० सं० ४.२.४.२; ७.३; का० सं० १३.४९; मै० सं० २.७.१३५; काठ० सं० १६.१२८; श० ब्रा० ७.१.१.२३; कपि० २५.२।

अग्ने यत्तेर्ऽचिस्तेन अ० २.१९.३; पै० सं० २.४८.४।

अग्ने यत्ते शुक्र य० १२.१०४; काठ० सं० १६.१७२; श० ब्रा० ७.३.१.२२, २३; तै० सं० ४.२.७.३; कपि० २५.५।

अग्ने यत्ते शोचिस्तेन अ० २.१९.४; पै० सं० २.४८.३।

अग्ने यत्ते हरस्तेन अ० २.१९.२; पै० सं० २.४८.२।

अग्ने यदद्य ऋ० ६.१५.१४; तै० सं० ४.३.१३.१४; तै० ब्रा० ३.५.७.६; ६.१२.२; मै० सं० ४.१०.५; श० ब्रा० १.७.३.१६;

अग्ने यं यज्ञमध्वरं ऋ० १.१.४; तै० सं० ४.१.११.१; मै० सं० ४.१०.७६; काठ० सं० २.६८; ल० वेदाङ्क १४३।

अग्ने याहि दूत्यं ऋ० ७.९.५; तै० ब्रा० २.८.६.४; मै० सं० ४.१४.११; मै० ४.१४.१५२।

अग्ने याहि सुशस्तिभिः ऋ० ८.२३.६; य० ११.४१; तै० सं० ४.१.४.१ मै० सं० २.७.४; काठ० सं० १६.४; श० ब्रा० ६.४.३.९।

अग्ने युङ्क्ष्वा हि ये ऋ० ६.१६.४३; य० १३.३६; सा० २५; १३८३; तै० सं० ४.२.९.५, १६; ५.५.३; का० सं० १४.३८; मै० सं० २.७.१७; ३.४.५; जै० सं० १.३.५; कपि० ३.४; काठ० सं० २२.५,६; प० वि० ४.२.१९; श० ब्रा० ७.५१.३३; आ० ब्रा० ६.२.३.४।

अग्ने रक्षाणो ऋ० ७.१५.१३; सा० २४; तै० ब्रा० २.४.१.६; जै० सं० १.३.४; मै० सं० ४.१०.१; काठ० सं० २.७६;

अग्नेरनीकमप आ० य० ८.२४; का० सं० ४.८०; मै० सं १.३.१.११६; श० ब्रा० ४.४.५.१२; तै० सं० १.४.४५.४; कपि० ३.११।

अग्नेरप्नसः समिदस्तु ऋ० १०.८०.२।

अग्नेरिन्द्रस्य सोमस्य ऋ० २.८.६।

अग्नेरिवास्य दहत अ० ६.२०.१; ७.४५.२; पै० सं० २०.१३.४।

अग्नेरेनं क्रव्यात् अ० १२.५.७२।

अग्नेर्गात्रायत्र्यभवत् ऋ० १०.१३०.४; ऐ० ब्रा० ८.२.२।

अग्नेर्घासो अपां अ० ८.७.८; पै० सं० १६.१२.८।

अग्नेर्जनित्रमसि य० ५.२; मै० सं० १.२.४८; श० ब्रा० ३.४.१.२०—२३; तै० सं० १.३.७.४; ६.३.५.५; कपि० ४१.५।

अग्नेर्भागस्थ अ० १०.५.७; पै० सं० १६.१२८.१।

अग्नेर्भागोऽसि दीक्षाया य० १४.२४; मै० सं० २.८.१३; श० ब्रा० ८.४.२.३—६; कपि० २६.३; ३२.१४, १६।

अग्नेर्भूरीणि तव ऋ० ३.२०.३; तै० सं० ३.१.११.६।

अग्नेर्मन्वे प्रथम अ० ४.२३.१; पै० सं० ४.३३.१; काठ० सं० २२.५२।

अग्नेर्वर्म परिगोभिः ऋ० १०.१६.७; अ० १८.२.५८ तै० आ० ६.१.४।

अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां ऋ० १.२४.२; ऐ० ब्रा० ७.३.४; प० वि० ३४७; द० शा० २५४ स० प्र० ६ समु०।

अग्नेर्वोऽ पन्नगृहस्य य० ६.२४; काठ० सं० ३.३२; मै० सं० १.३.२; श० ब्रा० ३.९.२.१३—१६, तै० सं० १.३.१२.२; कपि० २.१६; ४५.४।

अग्ने वाजस्य गोमतः ऋ० १.७९.४; य० १५.३५; सा० ९९, १५६१; तै० सं० ४.४.४.५, १६; का० सं० १६.५७; जै० सं० १.११.३; ४.१५.४; मै० सं० २.१३.८;

४.१२.५; काठ० सं० १२.१४; ३६.११०; नि० ८.२।

अग्ने विवस्वदा सा० १०।

अग्ने विवस्वदुषसः ऋ० १.४४.१; सा० ४०, १७८०; का० सं० १६.५७; जै० सं० १.४.६; ४.११.८; पं० वि० ९.३.४; श० ब्रा० ६.७.३; ताण्ड्य०ब्रा० ९.३.४; सा० ब्रा० ३.३.३.२।

अग्ने विश्वानि ऋ० ३.११.९।

अग्ने विश्वेभिः ऋ० ३.२४.४; सा० १५०३; जै० सं० ४.२४.९।

अग्ने विश्वेभिरा ऋ० ५.२६.४।

अग्ने विश्वेभिः स्वनीक ऋ० ६.१५.१६; तै० सं० ३.५.११.२, ५; मै० सं ४.१०.४; काठ० सं० १५.४७; ऐ० ब्रा० १.५.२; कौ० ब्रा० ९.२; शां० श्रौ० ३.१४.१२।

अग्ने वीहि ऋ० ३.२८.३।

अग्ने वीहि हविषा ऋ० ७.१७.३।

अग्ने वृधान ऋ० ३.२८.६।

अग्ने वेर्होत्रं य० २.९; मै० सं० १.१०.२; श० ब्रा० १.४.५.४—७; कपि० १.२; ८.८; ४७.११।

अग्ने वैश्वानर अ० २.१६.४।

अग्ने व्रतपते य० १.५; २.२८; काठ० सं० ५.३६; श० ब्रा० १.१.१.१.,६; १.९.३.२१; मै० सं० १.४.२; ८.९.२३१, २३६; ऋ० भू० वेदोक्त०, आर्याभि २.४७; कपि० ४.५।

अग्ने व्रतपास्त्वे य० ५.६, ४०; श० ब्रा० ३.४.३.९; ३६.३.२१; कपि० १.२.२.३; ३२.२; ४०.३।

अग्ने शकेम ते वयं ऋ० ३.२७.३, तै० ब्रा० २.४.२.५; जै० सं० ४.१.९; मै० सं० ४.११.३७; काठ० सं० ४०.१०६।

अग्नेशर्धन्तमा गणं ऋ० ५.५६.१।

अग्नेशर्ध महते ऋ० ५.२८.३; य० ३३.१२; अ० ७.७३.१०; तै० ब्रा० २.४.१.१; ५.२.४; का० सं० ३२.१२; मै० सं० ४.११.३; काठ० सं० २.९१; पै० सं० २०.८.७।

अग्ने शुक्रेण ऋ० १.१२.१२; ८.४४.१४।

अग्ने शुक्रेण शोचिषोरु ऋ० १०.२१.८।

अग्नेष्टे प्राणममृतात् अ० ८.२.१३; पै० सं० १६.४.३।

अग्ने स क्षेषदृतपा ऋ० ६.३.१; मै० सं० ४.१४.२११;

अग्ने सपत्नानधरान् अ० १३.१.३१; पै० सं० २०.८.८।

अग्ने समिधमाहर्ष अ० १९.६४.१।

अग्ने सहन्तमा ऋ० ५.२३.१; तै० सं० १.३.१४.१९।

अग्ने सहस्राक्ष य० १७.७१; काठ० सं० ७.२३; २८.३९; मै० सं० १.५.६०, ७१; श० ब्रा० ९.२.३.३२; तै० सं० ४.६.५.७; कपि० ५.२; ६.१; २८.४।

अग्ने सहस्व ऋ० ३.२४.१; य० ९.३७; जै० सं० ४.२५.१; का० सं० ११.३; श० ब्रा० ५.२.४.१६।

अग्ने सहस्वानभिभूः अ० ११.१.६; पै० सं० ६.८९.६।

अग्ने सुखतमे ऋ० १.१३.४; सा० १३५०; जै० सं० ३.५७.४।

अग्ने सुतस्य ऋ० ५.५१.१;।

अग्नेस्तनूरसि वाचो य० १.१५; तै० सं० १.१.५.९; श० ब्रा० १.१.४.८—११; ३.४.१.९—१३; कपि० १.५ ४७.४;।

अग्नेस्तनूरसि विष्णवे य० ५.१; काठ० सं० २.४५; कपि० २.२.३८.१ ।

अग्नेस्तोमं जुषस्व ऋ० ८.४४.२ ।

अग्नेस्तोमं मनामहे ऋ० ५.१३.२; सा० १४०५; जै० सं० ३.२८.१; तै० सं० ५.५.६.१; मै० सं० ४.१०.४३; काठ० सं० २०.४०; कौ० ब्रा० १.४; ।

अग्ने स्वाहा य० २७.२२; अ० ५.२७.१२; काठ० सं० १८.१०३; मै० सं० २.१२.४६; का० सं० २२.२; कपि० २९.५; तै० सं० ४.१.८.१२ ।

अग्ने हंसि ऋ० १०.११८.१; तै० ब्रा० २.४.१.७; ऐ० ब्रा० १.३.५; ।

अग्नेः पक्षतिर्वायोनिपक्षतिः य० ५.४ ।

अग्नेः पूर्वे भ्रातरो ऋ० १०.५१.६ ।

अग्नेः प्रजातं अ० १९.२६.१ ।

अग्नेः शरीरमसि अ० ८.२.२८ ।

अग्नेः सान्तपनस्याहं अ० ६.७६.२; पै० सं० १९.१५.१३ ।

अग्नौ तुषाना वप अ० ११.१.२९; पै० सं० १६.९१.९ ।

अग्नौ सूर्ये अ० ११.५.१३; पै० सं० १६.१५४.४ ।

अग्न्याधेयमथो अ० ११.७.८; पै० सं० १६, ८२.८ ।

अग्रमेष्योषधीनां अ० ४.१९.३; पै० सं० ५.२५.३ ।

अग्रं पिबा मधूनां ऋ० ४.४६.१; ऐ० ब्रा० २.४.२ ।

अग्रेगो राजाप्यस्त ऋ० ९.८६.४५; सा० १६१६ ।

अग्रेणीरसि स्वावेश य० ६.२; श० ब्रा० ३.७.१.९–१२, १४; कपि० २.१०; ४१.३ ।

अग्रे बृहन्नुष सामूर्ध्वो ऋ० १०.१.१; य० १२.१३; तै० सं० ४.२.१.४; ५.२.१.४; का० सं० १३.१४; मै० सं० २.७.१०२; ४.१०.२, ४८; जै० सं० ४.२०.९; काठ० सं० १६.९; १९.६४; १६.८; १९.११; श० ब्रा० ६.७.३.१०; कपि० ३२.२ ।

अग्रे सिन्धूनां पवमानः ऋ० ९.८६.१२; सा० १०३३; जै० सं० ३.३१.३ ।

अघद्विष्टा देवजाता अ० २.७.१; पै० सं० १९.१५.११ ।

अघमस्त्वघकृते अ० १०.१.५; पै० सं० ७.१.५ ।

अघ विषा निपतन्ती अ० १२.५.२६ ।

अघशंसदुःशंसाभ्यां अ० १२.२.२; पै० सं० १७.३०.२ ।

अघं पच्यमाना अ० १२.५.३२ ।

अघायतामपि नह्या अ० १०.९.१; पै० सं० १६.१३६.१ ।

अघाऽवस्येदं भेषजं अ० १०.४.१०; पै० सं० १६.१५.१० ।

अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधिः ऋ० १०.८५.४४; अ० १४.२.१७; साम० ब्रा० १.२.१७; सं० वि० विवाह० सं०; पै० सं० १८.८.८ ।

अघ्नते विष्णवे वयं ऋ० ८.२५.१२ ।

अघ्न्य प्र शिरो अ० १२.५.६० ।

अघ्न्ये पदवीर्भव अ० १२.५.५८ ।

अङ्ग भेदमङ्गज्वरं अ० ९.८.५ ।

अङ्ग भेदो अङ्गज्वरो अ० ५.३०.९,

अङ्गादङ्गात् प्र च्यावय अ० १०.४.२५; पै० सं० १६.१७.३ ।

अङ्गादङ्गात् वयमस्या अ० १४.२.६६ ।

अङ्गादङ्गाल्लोम्नो लोम्नः ऋ० १०.१६३.६; अ० २.३३.७; २०.९६.२२ ।

अङ्गान्यात्मन् भिषजा य० १६.९३; काठ० सं० ३८.४०; का० सं० २१.९३ ।

अङ्गिरसामयनं पूर्वो अ० १८.४.८ ।

अङ्गिरसो नः पितरः ऋ० १०.१४.६; य० १६.५०; अ० १८.१.५८; तै० सं० २.६.१२.१७; नि० ११.१६; ऋ०भू० पञ्चमहायज्ञविषय ।

अङ्गिरस्वन्ता उत विष्णु ऋ० ८.३५.१४

अङ्गिरोभिरा गहि ऋ० १०.१४.५; अ० १८.१.५९; तै० सं० २.६.१२.६; नि० ११.१६; मै० सं० ४.१४.२३१; सं० वि० अन्त्येष्टि संस्कार ।

अङ्गिरोभिर्यज्ञियैः ऋ० १०.१४.५ अ० १८.१.५९ ।

अङ्गे अङ्गे लोम्नि लोम्नि ऋ० १०.१६३.६; अ० २.३३.७; २०.९६.२३ ।

अङ्गे अङ्गे शोचिषा अ० १.१२.२; पै० सं० १.१७.२ ।

अङ्गेभ्यस्त उदराय अ० ११.२.६; पै० सं० १६.१०४.६ ।

अचिकित्वाञ्चिकितुषः ऋ० १.१६४.६; अ० ९.९.७; पै० सं० १६.६६.६ ।

अचिक्रदत् स्वपा अ० ३.३.१; पै० सं० २.७४.१ ।

अचिक्रदत् वृषा हरिः ऋ० ९.२.६; य० ३८.२२; सा० ४९७, १०४२; का० सं० ३८.२२; जै० सं० १.५२.१; ३.३१.१२; तै० आ० ४.११.६; आ० ब्रा० ६.२.५.२ ।

अचित्ती यच्चकृमा ऋ० ४.५४.३; तै० सं० ४.१.११.८; मै० सं० ४.१०.७८; ।

अचेति दस्रा व्युना ऋ० १.१३९.४; ऐ० ब्रा० ५.२.७ ।

अचेति दिवो दुहिता ऋ० ७.७८.४ ।

अचेत्यग्निश्चिकितिः सा० ४४७ ।

अचेत्यग्निश्चिकितुः ऋ० ८.५६.४; काठ० सं० ३९.१५ ।

अचोदसो नो धन्वन्तु ऋ० ९.७९.१; सा० ५५५; जै० सं० १.४७.१; १.५७.२ साम० वि० २.३.९; सा० ब्रा० ३.३.३.९ ।

अच्छ ऋषे मारुतं ऋ० ५.५२.१४ ।

अच्छ त्वा यन्तु अ० ३.४.३; पै० सं० ३.१.३ ।

अच्छा कविं ऋ० ४.१६.९ ।

अच्छा कोशं मधुः ऋ० ९.६६.११; सा० ६५८, जै० सं० ३.१.१०; ५३.७ ।

अच्छा गिरो ऋ० ७.१०.३, तै० ब्रा० २.८.२.४; मै० सं० ४.१४.३६ ।

अच्छा च त्वैना ऋ० ८.२१.६ ।

अच्छा न इन्द्रं मतयः अ० २०.१७.१ ।

अच्छा न इन्द्र यशसं अ० ६.३९.२; गो० ब्रा० ३.४.१६ ।

अच्छा नः शीर ऋ० ८.७१.१०; सा० १५५४ ।

अच्छा नृचक्षा ऋ० ९.९२.२ ।

अच्छा नो अङ्गिरस्तमं ऋ० ८.२३.१० ।

अच्छा नो मित्रमहो ऋ० ६.२.११ ।

अच्छा नो मित्रमहोदेव ऋ० ६.१४.६ ।

अच्छा नो याह्या ऋ० ६.१६.४४, सा० १३८४ ।

अच्छा म इन्द्रं ऋ० १०.४३.१; अ० २०.

अजैषं त्वा संलिखितं अ० ७.५०.५; पै० सं० १६.६.७।

अजैष्माद्यासना च ऋ० ८.४७.१८; १०.१६४.५; अ० १६.६.१।

अजो अग्निरजमु अ० ६.५.७।

अजो नक्षां दाधार ऋ० १.६७.५।

अजो भागस्तपसा ऋ० १०.१६.४; अ० १८.२.८; तै० आ० ६.१.४; सं० वि० अन्त्येष्टि संस्कार।

अजो वा इदमग्रे अ० ६.५.२०।

अजोऽस्यज स्वर्गोऽसि अ० ६.५.१६; पै० सं० ३.३८.६, १६.६८.७।

अजोहवदीश्विना तौग्र्यो ऋ० १.११७.१५।

अजोहवीदश्विना वर्त्तिका ऋ० १.११७.१६; नि० ५.२१।

अजोहवीन्ना करा ऋ० १.११६.१३।

अज(ह्यग्नेसनिष्ट अ० ४.१४.१, ६.५.१३; पै० सं० ३.३८.१, १६.६८.३; काठ० सं० १६.२२२।

अजो ह्यग्नेरजनिष्ट य० १३.५१; श० ब्रा० ७.५.२.३६; कपि० २५.८।

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास ऋ० ५.६०.५।

अत्रे चिदस्मै कृणुथा ऋ० ८.२७.१८।

अञ्जते व्यञ्जते ऋ० ८.८६.४३; सा० ५६४, १६१४; अ० १८.३.१८।

अञ्जन्ति त्वामध्वरे ऋ० ८.३.१; तै० ब्रा० ३.६.१.१; नि० ८.१८; मै० सं० ४.१३.२५; का० सं० १५.५०; तै० ब्रा० ३.६.१.१; ऐ० ब्रा० २.१.२; कौ० ब्रा० १०.२।

अञ्जन्ति यं प्रथयन्तो ऋ० ५.४३.७; तै० आ० ४.५.२; मै० सं० ४.७.५४; कौ० ब्रा० ८.४; श० ब्रा० १४.१.३.१३।

अञ्जन्त्येनं मध्वो ऋ० ६.१०६.२०।

अत उत्वा पितुभृतः ऋ० १०.१.४।

अतन्द्रो यास्यन अ० १३.२.२८; पै० सं० १८.२३.५।

अतप्यमाने अवसावन्ती ऋ० १.१८५.४।

अतश्चिदिन्द्र ण उपा ऋ० ८.६२.१०; सा० २१५; शां० श्रौ० ११.८.३।

अतश्चिदिन्द्र न ऋ० ८.६२.१०; सा० २१५, सा० ब्रा० ३.१.४.५।

अतस्त्वारयिमत्रि० ऋ० ६.४८.३; सा० ८३८।

अतः परिज्मन्नागहि ऋ० १.६.६; अ० २०.७०.५।

अतः समुद्रमुद्वतः ऋ० ८.६.३६।

अतः सहस्त्र ऋ० ८.८.११।

अतिथिं मानुषाणां ऋ० ८.२३.२५।

अतिथीन् प्रति अ० ६.६.८; पै० सं० १६.१०३.४।

अतिद्रव श्वानौ अ० १८.२.११।

अतिद्रव सारमेयौ ऋ० १०.१४.१०; अ० १८.२.२१; तै० आ० ६.३.१।

अति धन्वान्यत्यपः अ० ७.४१.१; पै० सं० २०.१०.१।

अति धावतातिसरा अ० ५.८.४; पै० स० ७.१८.४।

अति निहो अति स्रिधो य० २७.६; अ० २.६.५; मै० सं० ८.१२.३०; तै० सं० ४.१.४.६; ७.६ का० सं० १८.८६; २६.६;

कपि० २६.४; पै० सं० ३.३३.६ ।

अति नो विषिता ऋ० ८.८३.३ ।

अतिमात्रमवर्धन्त अ० ५.१६.१ ।

अति वायो मरुतो ऋ० ६.५२.२; अ० २. १२.६ ।

अति वायो ससतो ऋ० १.१३५.७ ।

अति वारान्पवमानो ऋ० ९.६०.३ ।

अति विद्धा विथुरेणा ऋ० ८.९६.२; मै० सं० ३.८.८, ४.१२.५; काठ० सं० ६.८३ ।

अति विश्वान्यरुहद् अ० १६.४६.२ ।

अति विश्वाः ऋ० १०.६७.१०; य० १२. ८४; तै० सं० ४.२.६.३; मै० सं० २.७. १७६; का० सं० १३.८५; काठ० सं० १६. १६०; तै० ब्रा० २.८.४.८; क० पि० २५.४ ।

अतिश्रिती तिरश्चता ऋ० ६.१४.६ ।

अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां ऋ० १.३२.१०; नि० २.१६; २.५–१६; ऋ० भू० ग्रन्थ-प्रामाण्यविषय ।

अति सृष्टो अपां अ० १६.१.१; पै० सं० १८.२८.१ ।

अतीदु शक्र ओहत ऋ० ८.६९.१४; अ० २०. ६२.११ ।

अतीयाम निदस्तिरः ऋ० ५.५३.१४ ।

अतीव यो मरुतो ऋ० ६.५२.२; अ० २. १२.६; पै० सं० २.५.६ ।

अतीहि मन्युषाविणं ऋ० ८.३२.२१; सा० २२३ ।

अतृष्णुवन्तं वियतम ऋ० ४.१९.३ ।

अतो देवा ऋ० १.२२.१६; सा० १६७४ ।

अतो न आ नॄनतिथी ऋ० ५.५०.३ ।

अतो वयमन्तमोभि ऋ० १.१६५.५; मै० सं० ४.११.८३; काठ० सं० ९.५७ ।

अतो विश्वान्यद्भुता ऋ० १.२५.११ ।

अतो वै बृहस्पतिमेव अ० १५.१०.५ ।

अतो वै ब्रह्म च क्षत्रं अ० १५.१०.३ ।

अत्त्रिवद् वः क्रिमयो अ० २.३२.३; ५.२३.१० ।

अत्यन्यां अगां य० ५.४२; मै० सं० १.२.८८; श० ब्रा० ३.६.४.५–१०; कपि० १.३; २.६, ४१.३ ।

अत्यर्धर्च परस्वतः अ० २०.१३१.१६ ।

अत्यं मृजन्ति ऋ० ९.८५.७ ।

अत्यं हविः ऋ० ५.४४.३ ।

अत्यायातमश्विना ऋ० ५.७५.२; सा० १७४४ ।

अत्यावृधस्नूरोहिता ऋ० ४.२.३ ।

अत्यासो न ये ऋ० ७.५६.१६; तै० सं० ४. ३.१३.२३; मै० सं० ४.१०.१२३; काठ० सं० २१.५५ ।

अत्याहियाना ऋ० ९.१३.६; सा० ११६१ ।

अत्यू पवित्रम् ऋ० ९.४५.४ ।

अत्यूर्मिर्मत्सरो मदः ऋ० ९.१७.३ ।

अत्यो न हियानो ऋ० ९.८६.३ ।

अत्यो नाज्मन्त्सर्ग ऋ० १.६५.६ ।

अत्र पितरो मादयध्वं य० २.३१; मै० सं० १.१०.१०; श० ब्रा० २.४.२.२०—२२; २.६.१.३६, ४०; कपि० ८.६; ऋ० भू० सृष्टिविषय ।

अत्रा ते रूपं ऋ० १.१६३.७; य० २६.१८;

तै० सं० ४.६.७.३; नि० ६.८; का० सं० ३१.३०।

अत्र वि नेमिरेषां ऋ० ८.३४.३; सा० १८०८।

अत्राह गोरमन्वत ऋ० १.८४.१५; सा० १४७, ६१५; अ० २०.४१.३; तै० ब्रा० १.५. ८.१; नि० २.६; ४.२५; मै० सं० २.१३. २४; काठ० सं० ३६.७२; आ० ब्रा० ६.२४.२; सा० ब्रा० ३.२. १.६।

अत्राह तद्वहेथे ऋ० १.१३५.८।

अत्राह ते हरिवः ऋ० ४.२२.७।

अत्रिमनुस्वराज्यं ऋ० २.८.५।

अत्रिर्य दवामरोहन ऋ० ५.७८.४।

अत्रिवद् वः क्रिमयः अ० २.३२.३; ५.२३. १०; पै० सं० २,१४.५।

अत्रीणा स्तोममद्रिवो ऋ० ८.३६.६।

अत्रेदु मे मंससे ऋ० १०.२७.१०।

अत्रेरिव शृणुतं ऋ० ८.३५.१६।

अत्रैनानिन्द्र वृत्रहन् अ० ५.८.६।

अत्रैव वोपि ऋ० १०.१६६.३।

अथ य एवं अ० १५.१२.८।

अथ यस्या अ० १५.१३.११।

अथर्वाणं पितरं अ० ७.२.१।

अथर्वाणो अबध्नत अ० १०.६.२०; पै० सं० १६.४४.३।

अथर्वा पूर्णं अ० १८.३.५४।

अथा ते अङ्गिरस्तमः ऋ० १.७५.२।

अथा ते अन्तमानाम् ऋ० १.४.३; सा० १०८६, अ० २०.५७.३; ६८.३।

अथा न उभयेषां ऋ० १.२६.६।

अथै तानष्टौ विरूपाना य० ३०.२२; का० सं० ३४.२२।

अथो इयन्निति अ० २०.१३०.१८।

अर्थ इयन्नियन्निति अ० २०.१३०. १७।

अथोपदान भगवो अ० १६.३४.८।

अथो यानि अ० १६.४८.१; पै० सं० ६. २१.१।

अथो श्वा अस्थिरो अ० २०.१३०.१६।

अथो सर्वं श्वापदं अ० ११.६.१०।

अदङ्गा कुविदङ्गा अ० २.३.२।

अदत्रया दयते ऋ० ५.४६.३।

अददा अर्भां ऋ० १.५१.१३।

अदन्ति त्वा पिपीलिका अ० ७.५६.७; पै० सं० ४.२१.२।

अदब्ध इन्दो ऋ० ६.८५.३।

अदब्धस्य स्वधावतः ऋ० ८.४४.२०; काठ० सं० ४.१३४।

अदब्धेभिस्तव गोपाभिः ऋ० ६.८.७।

अदब्धेभिः सवितः ऋ० ६.७१.३; य० ३३. ६६, ८४; तै० सं० १.४.२४.१; तै० ब्रा० २.४.४.७; का० सं० ३२.६६, ८४; कपि० ३.८; मै० सं० १.३.१६; काठ० सं० ४.६०।

अदब्धो दिवि अ० १७.१.१२; पै० सं० १८. ३१.७।

अदर्दरुत्सम सृजा वि खानि ऋ० ५.३२.१; सा० ३१५; नि० १०.६; सा० म० वि० १.४.१८; सा० ब्रा० ३.१.४.१६।

अदर्शि गातुरुरवे ऋ० १.१३६.२।

अदर्शि गातुवित्तमः ऋ० ८.१०३.१; सा० ४७, १५१५; पं० वि० ब्रा० १७.१.११।

अदान्मे पौरुकुत्स्यः ऋ० ८.१९.३६।

अदान्यान्त्सोमपान् अ० २.३५.३ .

अदाभ्यपुर एता ऋ० ३.११.५; सा० १५५६; तै० ब्रा० २.४.८.१।

अदाभ्येन शोचिषा ऋ० १०.११८.७; ऐ० ब्रा० १.३.५;।

अदाभ्यो भुवनानि ऋ० ४.५३.४।

अदारसृद् भवतु अ० १.२०.१; पै० सं० १९.१६.५।

अदितिर्द्यावा पृथिवी ऋ०१०.६६.४।

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षं ऋ० १.८९.१०; य० २५.२३; अ० ७.६.१; तै० अ० १.१३.२; ३.१.६; ५.१८.१२; नि० १.१५; ४.२३; का० सं० २७.२७; मै० सं० ४.१४.५७; ऐ० ब्रा० ३.३.७; जै० उ० ब्रा० १.४१.४; पै० सं० २०.१५; ऋ० भू० अलंकारभेदविषय, अर्याभि० १.१७।

अदितिर्न उरुष्यतु ऋ० ८.४७.९; तै० सं० १.५.११.५ ।

अदितिर्नो दिवा ऋ० ८.१८.६।

अदितिर्मादित्यैः अ० १८.३.२७।

अदितिर्ह्यजनिष्ट ऋ० १०.७२.५;।

अदितिष्ट्वा देवी य० ११.६१; मै० सं० ४.९.२८; श० ब्रा० ६.५.४.३—८; कपि० ३०.५।

अदितिः श्मश्रु अ० ६.६८.२; पै० सं० १९.१७.१५; सं० वि० चूडा० संस्कार।

अदिते मित्र ऋ० २.२७.१४।

अदितेर्हस्तां स्रुचमेतां अ० ११.१.२४; पै० सं० १६.९१.४।

अदित्यास्त्वगस्यदित्यै य० ४.३०; श० ब्रा० ३.३.४.१—५ ।

अदित्यास्त्वा पृष्ठे य० १४.५; मै० सं० २.७.७; श० ब्रा० ८.२.१७—१५ कपि० १.१९; २.१; २५.१०; ३२.१२; ४०.५; ४७.७।

अदित्यास्त्वा मूर्धन्या य० ४.२२; श० ब्रा० ३.३.१.४—६, ११; कपि० ३७.५; १.१७।

अदित्यै रास्नासि य० १.३०; ११.५९; ३८.३ काठ० सं० १.८; श० ब्रा० १.३.१.१९; ६.५.२. १३—२१, १४.२.१.८—१०; तै० सं० १.१. २.१२, ४.१.५.१७; का० सं० ३८.३; कपि० १.१०; ३०.४।

अदित्यै व्युन्दनमसि य० २.२; श० ब्रा० १.३.३.५, ११, १७; कपि० १.११.३९.५, ४८.९।

अदित्सन्तं चिदाघृणे ऋ० ६.५३.३।

अदिद्युतत्स्वपाको ऋ० ६.११.४; अ० ३.३.१।

अदुहमित्यां पूषकं अ० २०.१३१.१८।

अदृश्रमस्य केतवः ऋ० १.५०३; य० ८.४०; सा० ६३४; अ० १३.२.१८, २०.४७.१५; का० सं० ८.२२; मै० सं० १.३.६०; काठ० सं० ४.६७; श० ब्रा० ४.५.४.११; का० श्रौ० १२.३.२; कपि० ३.१, ९; ४१.८; नि० ३.१५; पै० सं० १८.२.१०, ३.२२।

अदृष्टान्हन्त्यायती ऋ० १.१९१.२।

अदेदिष्ट वृत्रहा ऋ० ३.३१.२१।

अदेवाद्देवः प्रचता ऋ० १०.१२४.२ ।

अदेवृघ्न्यपतिघ्नी अ० १४.२.१८; पै० सं० १८.८.६; स० प्र० ४ समु०; ऋ० भू० नियोगविषय।

अदेवेन मनसा ऋ० २.२३.१२; काठ० सं० ४.१३३ ।

अदोयत् ते हृदि अ० ६.१८.३ ।

अदो यदवधावति अ० २.३.१ ।

अदो यदवरोचते अ० ३.७.३; पै० सं० ३. २.३ ।

अदो यद्दारुप्लवते ऋ० १०.११५.३ ।

अदो यद्देवि प्रथमा अ० १२.१.५५ ।

अद्धीदिन्द्र प्रस्थितेमा ऋ० १०.११६.८; नि० ६.१६ ।

अद्भिरन्नादिभिः अ० १५.१४.६ ।

अद्भिः सोम० ऋ० ९.७४.९ ।

अद्भ्यस्त्वा राजा अ० ३.३.३; पै० सं० २. ७४.३ ।

अद्भ्यः क्षीरं य० १९.७३; काठ० सं० ३८. ३; मै० सं० ३.११.४०; का० सं० २१. ७५ ।

अद्भ्यः सम्भृतः य० ३१.१७; काठ० सं० ३९.२१; मै० सं० २७.१९९; सं० वि० पु० संस्कार ३५.१७ ।

अद्भ्यः स्वाहा य० २२.२५; का० सं० २४. २७ ।

अद्य ते विश्वमनु ऋ० १.५७.२; अ० २०. १५.२ ।

अद्याग्ने अद्य अ० ४.४.६; ऋ० ७.१०४.१५ ।

अद्या चिन्नू चित्तदपो ऋ० ६.३०.३; नि० ४.१७ ।

अद्या दूतं वृणीमहे ऋ० १.४४.३ ।

अद्या देवा उदिता ऋ० १.११५.६; य० ३३. ४२; तै० ब्रा० २.८.७.२; का० सं० ३२. ४२; मै० सं० ४.१४.५५ ।

अद्याद्याश्वः श्व ऋ० ८.६१.१७; सा० १४५८; पं० वि० ब्रा० ४.७.७ ।

अद्या नो देव ऋ० ५.८२.४; सा० १४१; तै० ब्रा० २.४.६.३; २.१४.६.३; तै० आ० १०. १०.२; ४६.१; ऐ० ब्रा० ४.५.२; ५.१.२; २.३; ३.२; ४.२; कौ० ब्रा० १९.९; २०. २; २५.६; ऐ० आ० १.५.३.१; सा० ब्रा०३.१.८.७ ।

अद्या मुरीय ऋ० ७.१०४.१५; अ० ८.४.१५; नि० ७.३ ।

अद्येदु प्राणीदयमन्निमा ऋ० १०.३२.८ ।

अद्रिणा ते मन्दिनः ऋ० १०.२८.३ ।

अद्रिभिः सुतः ऋ० ९.७१.३ ।

अद्रिभिः सुतः पवसे ऋ० ९.८६.२३ ।

अद्रिभिः सुतो मतिभिः ऋ० ९.७५.४ ।

अद्रोघमा वहोशतो ऋ० ८.६०.४ ।

अद्रोघ सत्यं तव ऋ० ३.३२.९ ।

अद्रौ चिदस्मा ऋ० १.७०.४ ।

अद्वेषो अद्य ऋ० १०.३५.६ ।

अद्वेषो अद्य बर्हिषः ऋ० १०.३५.६ ।

अद्वेषो नो मरुतो ऋ० ५.८७.८ ।

अध क्त्वा मघवन् ऋ० ५.२९.५ ।

अधक्षपा परिष्कृतः ऋ० ९.९९.२; सा० १६३१; पं० वि० ब्रा० १८.८.१६ ।

अधग्मन्ता नहुषो ऋ० १.१२२.११ ।

अधग्मन्तोशना पृच्छते वां ऋ० १०.२२.६ ।

अध जिह्वा ऋ० ६.६.५; नि० ४.१७।
अध ज्यो अध ऋ० ८.१.१८; सा० ५२।
अध ते विश्वमनु ऋ० १. ७.२; अ० २०. १५.२।
अध त्यं द्रप्सं ऋ० १०.११.४; अ० १८. १.२१।
अधत्वमिन्द्र ऋ० १०.६१.२२।
अध त्वष्टा ते ऋ० ६.१७.१०।
अध त्वा विश्वे ऋ० ६.१७.८।
अध त्विषीमां ऋ० २.२२.२; सा० १४८८।
अध द्युतानः ऋ० ४.५.१०।
अध द्यौश्चित्ते ऋ० ६.१७.६।
अध द्रप्सो अंशु ऋ० ८.९६.१५; अ० २०. १३७.९।
अध धारया ऋ० ९.९७.११; सा० १०२०।
अध प्र जज्ञे ऋ० १.१२१.६।
अध प्रियमिषिराय ऋ० ८.४६.२९।
अध प्लायो गिरति ऋ० ८.१.३३।
अध यच्चारथे ऋ० ८.४६.३१।
अध यदिमे ऋ० ९.११०.९; सा० १४९६।
अध यद्राजाना ऋ० १०.६१.२३।
अधराञ्चं प्र हिणोमि अ० ५.२२.४; पै० सं० १३.१.५।
अध रात्रि तृष्ट अ० १०.४७.८; ५०.१।
अधरोऽधर उत्तरेभ्यो अ० ६.१३४.२।
अधश्रुतं कवषं ऋ० ७.१८.२२।
अधश्वेतं ऋ० ९.७४.८।
अध श्वेतं कलशं ऋ० ४.२७.५।
अध स्म यस्यार्चय ऋ० ५.९.५।
अध स्मा ते ऋ० ६.२५.७; पै० सं० २.७. २२७; काठ० सं० १७.१००।
अधस्मा न ऋ० २.३१.२।
अध स्मा नो वृधे ऋ० ६.४६.११।
अध स्मास्य ऋ० ६.१२.५।
अध स्या योषणा ऋ० ८.४६.३३।
अध स्वनादुत ऋ० १.९४.११।
अध स्ववान्मरुतां ऋ० १.३८.१०।
अध स्वप्नस्य ऋ० १.१२०.१२।
अधः पश्यस्व ऋ० ८.३३.१९।
अधाकृणोः पृथिवीं ऋ० २.१३.५।
अधा कृणोः प्रथमं वीर्यं ऋ० २.१७.३।
अधा गाव उपमातिं ऋ० १०.६१.२१।
अधा चिन्नु ऋ० १०.१३२.३।
अधा ते अप्रतिष्कुतं ऋ० ८.९३.१२।
अधा त्वं हि नस्करः ऋ० ८.८४.६; सा० १५५१।
अधा नरो न्योहते ऋ० ५.५२.११।
अधा नो विश्वसोभग ऋ० १.४२.६।
अधान्वस्य जेन्यस्य ऋ० १०.६१.२४।
अधान्वस्य सन्दृशं ऋ० ७.८८.२।
अधा मन्ये बृहदसुर्यम् ऋ० ६.३०.२।
अधा मन्ये श्रत्ते ऋ० १.१०४.७।
अधा महीन ऋ० ७.१५.१४।
अधा मातुरुषसः ऋ० ४.२.१५; मै० सं० २. ४.५।
अधा यथा नः ऋ० ४.२.१६; य० १९.६९; अ० १८.३.२१; तै० सं० २.६.१२.४, ११; ऐ० ब्रा० ७.२.५।
अधाय धातिरससृग्रं ऋ० १०.३१.३।
अधा यो विश्वा ऋ० २.१७.४।

अध्वर्यवो॒ अद्रिभिः य० २०.३१ ।

अध्वर्यवोऽप इता ऋ० १०.३०.३ ।

अध्वर्यवो भरतेन्द्राय ऋ० २.१४.१; नि० ५.१ ।

अध्वर्यवो य उरणं ऋ० २.१४.४ ।

अध्वर्यवो यं नरः ऋ० २.१४.८ ।

अध्वर्यवो यः शतं ऋ० २.१४.७ ।

अध्वर्यवो यः शतं शम्बरस्य ऋ० २.१४.६ ।

अध्वर्यवो यः स्वश्नं ऋ० २.१४.५ ।

अध्वर्यवो यो अपो ऋ० २.१४.२ ।

अध्वर्यवो यो दिव्यस्य ऋ० २.१४.११; नि० ३.२० ।

अध्वर्यवो यो दृभीकम् ऋ० २.१४.३; मै० सं० ४.१४.६६ ।

अध्वर्यवोऽरुणं दुग्धमंशु ऋ० ७.९८.१; अ० २०.८७.१; मै० सं० ४.१४.५९ ।

अध्वर्यवो हविष्मन्तो ऋ० १०.३०.२ ।

अध्वर्युभिः पञ्चभिः ऋ० ३.७.७ ।

अध्वर्युं वा मधुपाणिं ऋ० १०.४१.३ ।

अध्वर्यो अद्रिभिः ऋ० ९.५१.१; य० २०.३१; सा० ४९९, १२२५; ताण्ड्य ब्रा० १४.९.१; का० सं० २२;१९ ।

अध्वर्यो द्रावया ऋ० ८-४.११; सा० ३०८ ।

अध्वर्यो वीर ऋ० ६.४४.१३ ।

अनच्छये तुरगातु ऋ० १.१६४.३०; अ० ९.१०.८; पै० सं० १६.६८.९ ।

अनडुद्भ्यस्त्वं प्रथमं अ० ६.५९.१; पै० सं० १९.१४.१० ।

अनड्वानिन्द्रः स पशुभ्यो अ० ४.११.२; पै० सं० ३.२५.३ ।

अनड्वान् दाधार अ० ४.११.१; पै० सं० ३.२५.१ ।

अनड्वान् दुहे अ० ४.११.१; पै० सं० ३.५२.२ ।

अनड्वान्वयः पङ्क्ति य० १४.१०; श० ब्रा० ८.२.४.८—१४; तै० सं० ४.३.५.१०; कपि० २६.१ ।

अनड्वाहमन्वारभामहे य० ३५.१३; का० सं० ३५.४६ ।

अनड्वाहं प्लवमन्वा अ० १२.२.४८; पै० सं० १७.३५.५ ।

अनन्तं विततं अ० १०.८.१२; पै० सं० १६.१०१.८ ।

अनपत्यमल्पपशुं अ० १२.४.२५; पै० सं० १७.१८.५ ।

अनप्तमप्सु दुष्टरं ऋ० ६.१६.३ ।

अनभ्रयः स्वनमाना अ० १९.२.३; पै० सं० ८.८.९ ।

अनमित्रं नो अधराद् अ० ६.४०.३ ।

अनमीवा उषस ऋ० १०.३५.६ ।

अनमीवास इडया ऋ० ३.५९.३; तै० सं० २.८.७.५; मै० ४.१०.५३ ।

अनयाहमोषध्या अ० ४.१८.५; १०.१.४; पै० सं० ५.२४.६ ।

अनर्वाणं वृषभं ऋ० १.१९०.१; नि० ६.२३ ।

अनर्वाणो ह्येषां ऋ० ८.१८.२ ।

अनर्शरातिं वसुदामुप ऋ० ८.९९.४; अ० २०.५८.२; नि० ६.२३ ।

अनवद्याभिः समुजग्म अ० २.२.३; पै० सं० १.७.३ ।

अनवद्यैरभिद्युभिः ऋ० १.६.८; अ० २०, ४०.२; ७०.४ ।

अनवस्ते रथमश्वाय ऋ० ५.३१.४; सा०

४४०; तै० सं० १.६.१२.६, १८; मै० ४.१२.४७; काठ० सं० ८.५० ।

अनश्वो जातो अग ऋ० १.१५२.५ ।

अनश्वो जातो अन ऋ० ४.३६.१; ऐ० ब्रा० ५.१.२; ऐ० आ० १.५.३ ।

अनस्थाः पूताः अ० ४.३४.२ ।

अनस्वन्ता सत्पतिर्मामहेमं ऋ० ५.२७.१ ।

अनागनिष्यतो अ० १६.६.१० ।

अनागसो अदितये ऋ० ५.८२.६; ऐ० ब्रा० ४.५,२ ।

अनागोहत्या वै भीमा अ० १०.१.२६; पै० सं० १६.३७.१० ।

अनाधृष्टानि धृषितः ऋ० १०.१३८.४ ।

अनाधृष्टा पुरस्तात् य० ३७.१२; मै० सं० ४.६.५५; श० ब्रा० १४.१.३.१६—२५ ।

अनाधृष्यो जातवेदाः य० २७.७; अ० ७.८४.१; का० सं० १८.८७; मै० सं० २.१२.३१; तै० सं० ४.१.७.७; का० सं० २६.७; कपि० २६.४; पै० सं० ३.३३.७ ।

अनानुदो वृषभो ऋ० २.२३.११ ।

अनानुदो वृषभो दोधतः ऋ० २.२१.४ ।

अनाप्ता ये वः अ० ४.७.७; ५.६.२; पै० सं० ६.११.२ ।

अनामयोपजिह्विका अ० २०.१२६.२० ।

अनायतो अनिबद्ध ऋ० ४.१३.५; १४.५ ।

अनारम्भणे तदवीरयेथा ऋ० १.११६.५; ऋ० भू० नौविमानविषय ।

अनास्माकस्तद् अ० १६.५७.५ ।

अनिरेण वचसा ऋ० ४.५.१४ ।

अनुकामं तर्पयेथां ऋ० १.१७.३ ।

अनु कृष्णे वसुधिती ऋ० ३.३१.१७ ।

अनु कृष्णे वसुधिती येमाते ऋ० ४.४८.३ ।

अनुगच्छन्ती प्राणानुप अ० १२.५.२७; पै० सं० १६.१४३.७ ।

अनुच्छ्य श्यामेन अ० ६.५.४ ।

अनु जिघ्रं प्रमृशन्तं अ० ८.६.६ पै० सं० १६.७६.६ ।

अनु तदुर्वीरोदसी ऋ० ७.३४.२४ ।

अनु तन्नो जास्पतिः ऋ० ७.३८.६ ।

अनु ते दायि ऋ० ६.२५.८; तै० सं० १.६.१२.१४; तै० ब्रा० २.८.५.७; मै० सं० ४.१२.४६; काठ० सं० ८.३६ ।

अनु ते शुष्मं ऋ० ८.६६.६; य० ३३.६७; सा० १६३८; अ० २०.१०५.२; का० सं० ३२.६७ ।

अनुत्तमा ते मघवन् ऋ० १.१६५.६; य० ३३.७६; मै० ४.११.८७; काठ० सं० ६.६१; का० सं० ३२.६६ ।

अनु त्रितस्य युध्यतः ऋ० ८.७.२४ ।

अनु त्वाग्निः प्राविशदनु अ० १०.१०.७; पै० सं० १६.१०७.७ ।

अनु त्वा मही ऋ० १.१२१.११ ।

अनु त्वा माता य० ४.२०; श० ब्रा० ३.२.४.२०; कपि० १.१७; २.१२; ३७.४ ।

अनु त्वा रथो ऋ० १.१६३.८; य० २६.१६; तै० सं० ४.६.७.३, ८; का० सं० ३१.३१ ।

अनु त्वा रोदसी ऋ० ८.७६.११; सा० ६८६; अ० २०.४२.२ ।

अनु त्वा रोदसी ऋ० ८.६.३८ ।

अनु त्वा हरिणो अ० ३.७.२; पै० सं० ३.२.२ ।

अनु त्वाहिघ्ने ऋ० ६.१८.१४; मै० ४.१२.

५३; काठ० सं० ८.५२।

अनु द्यावापृथिवी ऋ० ६.१८.१५; मै० सं० ४.१२.५४।

अनु द्रप्सास इन्दव ऋ० ९.६.४।

अनु द्वा जहिता ऋ० ४.३०.१९।

अनु नोऽद्यानुमतिः य० ३४.९।

अनु पूर्ववत्सां धेनुम् अ० ९.५.२९।

अनु पूर्वाण्योक्या ऋ० ८.२५.१७।

अनु प्रत्नस्यौकसः ऋ० ८.६९.१८।

अनु प्रत्नस्यौक सः हुवे ऋ० १.३०.९; सा० ७४४; अ० २०.२६.३; ९२.१५।

अनु प्रत्नास आयवः ऋ० ९.२३.२; ५०२।

अनु प्र येजे ऋ० ६.३६.२

अनुमतिः सर्वमिदं अ० ७.२०.६; पै० सं० २०.४.४।

अनुमतेऽन्विदं अ० ६.१३१.२।

अनु मन्यतामनु अ० ७.२०.३; पै० सं० २०.४.१।

अनु यदीं मरुतो ऋ० ५.२९.२।

अनु विदनुमते त्वं अ० ७.२०.२।

अनु वीरैरनु य० २६.१९; का० सं० २८.१४।

अनुव्रतः पितुः अ० ३.३०.२; पै० सं० ५.१९.२; सं० वि० गृहा० संस्कार।

अनुव्रताय रन्धयन् ऋ० १.५१.९।

अनुव्रता रोहिणी अ० १३.१.२२; पै० सं० १८.१७.२।

अनु श्रुताममतिं वर्धत् ऋ० ५.६२.५।

अनु सूर्यमुदयतां अ० १,२२,१; पै० सं० १.२८.१।

अनु स्पष्टो ऋ० १०.१६०.४; अ० २०.९६.४।

अनु स्वधामक्षरन्नापो ऋ० १.३३.११; तै० ब्रा० २.८.३.४।

अनु ह्वं परिह्वं अ० १९.८.४।

अनु हि त्वा सुतं ऋ० ९.११०.२; सा० ४३२, १३६६; ऐ० ब्रा० ८.२.७; सा० ब्रा० ३.१.६.९।

अनुहूतः पुनरेहि अ० ५.३०.७; पै० सं० ९.१३.७।

अनूनोदत्र हस्तयतो ऋ० ५.४५.७।

अनूपे गोमान् ऋ० ९.१०७.९; सा० ९९८; नि० ५.३।

अनक्षरा ऋजवः ऋ० १०.८५.२३; अ० १४.१.३४; पै० सं० १८.४.३।

अनृणा अस्मिन्ननृणा अ० ६.११७.३।

अनेजदेकं मनसो य० ४०.४; का० सं० ४०.४।

अनेनेन्द्रो मणिना अ० ८.५.३; पै० सं० १६.२७.३।

अनेनो वो मरुतः ऋ० ६.६६.७।

अनेहसं प्रतरणं ऋ० ८.४९.४।

अनेहसं वो हवमान ऋ० ८.५०.४।

अनेहो दात्रमदितेः ऋ० १.१८५.३।

अनेहो न उरुव्रजे ऋ० ८.६७.१२।

अनेहो मित्रार्यमन् ऋ० ८.१८.२१।

अन्तकाय मृत्यवे अ० ८.१.१; पै० सं० १६.१.१।

अन्तकोऽसि मृत्युः अ० १६.५.२, ९।

अन्तरग्ने रुचा य० १२.१६; काठ० सं० १६.९७; श० ब्रा० ६.७.३.१५; मै० सं०

२.७.१०६; तै० सं० ४.१.६.१५; २.१.१४; कपि० ३२.१ ।

अन्तरा द्यां च पृथिवीं अ० ६.३.१५; पै० सं० १६.४०.५; सं० वि० गृहा० संस्कार ।

अन्तरा मित्रा य० २६.६; मै० सं० २.१६.२२; तै० सं० ५.१.११.१६; का० सं० ३१.६ ।

अन्तरिक्ष आसां अ० १,३२.२ ।

अन्तरिक्षप्रां रजसो ऋ० १०.६५.१७ ।

अन्तरिक्षं जालम् अ० ८.८.५ ।

अन्तरिक्षं दिवं अ० १०.६.१० ।

अन्तरिक्षं धेनुः अ० ४.३६.४ ।

अन्तरिक्षाय स्वाहा अ० ५.६.३, ४; पै० सं० ६.१३.११; तै० सं० १.८.१३.३३; ७.१.१५.२; १७.२.५.११. २ ।

अन्तरिक्षेण पतति ऋ० १०.१३६.४; अ० ६.८०.१; पै० सं० १६.१६.१२ ।

अन्तरिक्षेण सह अ० ४.३८.६, ७ ।

अन्तरिक्षे पथिभिः ऋ० १०.१६८.३ ।

अन्तरिक्षे वायवे अ० ४.३६.३ ।

अन्तरिच्छन्ति तं जने ऋ० ८.७२.३ ।

अन्तरेमे नभसी अ० ५.२०.७; पै० सं० ६.२४.८ ।

अन्तरैश्चक्रैस्तनयाय ऋ० ६.६२.१० ।

अन्तर्गर्भश्चरति अ० ११.४.२०; पै० सं० १६.२२.१० ।

अन्तर्दधे द्यावापृथिवी अ० ८.५.६ ।

अन्तर्दावे जुहुता अ० ६.३२.१; पै० सं० १६.११.६ ।

अन्तर्दूतो रोदसी ऋ० ३.३.२ ।

अन्तर्देशा अबध्नत अ० १०.६.१६; पै० सं० १६.४४.१ ।

अन्तर्धिर्देवानां अ० १२.२.४४; पै० सं० १७.३४.५ ।

अन्तर्धेहि जातवेद अ० ११.१०.४ ।

अन्तर्यच्छ जिघांसतः ऋ० १०.१०२.३; काठ० सं० ४.३ ।

अन्तर्ह्यग्न ईयसे ऋ० २.६.७ ।

अन्तश्च प्रागा ऋ० ८.४८.२; ऐ० ब्रा० १.५.४ ।

अन्तश्चरति रोचना ऋ० १०.१८६.३; य० ३.७; सा० ६३१, १३७७; अ० ६.३१.२; २०.४८.५; तै० सं० १.५.३.१; कपि० ६.२; श्रा० ब्रा० ६.४.२.५; ।

अन्तस्ते द्यावा पृथिवी य० ७.५; श० ब्रा० ४.१.२.१६; कपि० ३.१ ।

अन्तिचित् संतमह ऋ० ८.११.४ ।

अन्तिवामा दूरे ऋ० ७.७७.४ ।

अन्ति सन्तं अ० १०.८.३२ ।

अन्धन्तमः प्रविशन्ति य० ४०.६, १२; स० प्र० ११ समु० द० शा० १३५; जी० ले० ४२६; जी० दे० १, ३६६; २—१२२; का० सं० ४०.६, १२ ।

अन्धस्थान्धो य० ३.२० ।

अन्धा अमित्रा सा० १८७१ ।

अन्नपतेऽन्नस्य य० ११.८३; काठ. सं० १६.११३; मै० सं० २.१०.१०; सं० वि० अन्न प्रा०; तै० सं० ४.२.३.१; ५.२.२.१; कपि० ३२.२; २५.१ ।

अन्नं पूर्वा रासतां अ० १६.७.४ ।

अन्नात्परिस्रुतो य० १६.७५; का० सं० ३८.४; मै० स० ३.११.४२; ऋ० भू० ग्रन्थ-प्रामाण्याप्रमाण्यविषय; का० सं० २१.७६ ।

अन्नाद्येन यशसा अ० १३.४.४९; ४.५६; ऋ० भू०उपा० विषय।

अन्यक्षेत्रे न रमसे अ० ५.२२.९; पै० सं० ५.२१.७; १३.१.१४।

अन्यत्रास्मनुच्यतु अ० ६.२६.३; पै० सं० १९.१९.२।

अन्यदद्य कर्वरमन्यदु ऋ० ६.२४.५।

अन्यदेवाहुर्विद्याया य० ४०.१३; का० सं० ४०.१०।

अन्यदेवाहुःसम्भवाद् य० ४०.१०; का० सं० ४०.१३।

अन्यमस्मद्भिया इयम् ऋ० ८.७५.१३; तै० सं० २.६.११.३; मै० सं० ४.११.१४१; का० सं० २६.३८।

अन्यमूषु त्वं ऋ० १०.१०.१४; अ० १८.१.१६; नि० ११.३४।

अन्यवापोऽर्धमासा य० २४.३७; मै० सं० ३.१४.१८; तै० सं० ५.५.१७.३।

अन्यव्रतममानुषं ऋ० ८.७०.११।

अन्यस्या वत्सं ऋ० ३.५५,१३।

अन्या वो अन्याम ऋ० १०.९७.१४; य० १२.८८; तै० सं० ४.२.६.३,६; मै० सं० २.७.११९; कपि० २५.४; का० १६.१६५।

अन्ये जायां परिमृशन्त्यस्य ऋ० १०.३४.४।

अन्येभ्यस्त्वा पुरुषेभ्यो अ० १२.२.१६।

अन्योऽन्यमनु गृभ्णाति ऋ० ७.१०३.४।

अन्वग्निरुषसामग्र य० ११.१७; अ० ७.८२.४; १८.१.२७; श० ब्रा० ६.३.३.६; मै० सं० १.८.५५; २.७.१९; ३.१.४; तै० सं० ४.१.२ १०; ५.१.२.१६; कपि० ३०.१।

अन्वद्य नोऽनुमतिः अ० ७.२०.१; पै० सं० २०.३९; मै० सं० ३.१६.६२; ४.१२.१५२।

अन्वपां खान्यतृन्तम् ऋ० ७.८२.३।

अन्वस्य स्थूरं ऋ० ८.१.३४।

अन्वह मासा अन्विद्वनानि ऋ० १०.८९.१३; तै० सं० १.७.१३.१।

अन्वान्त्र्यं शीर्षण्यमथो अ० २.३१.४; पै० सं० २.१५.४।

अन्वारेभथामनु अ० ६.१२२.३; पै० सं० १६.५१.७।

अन्विदनुमते त्वं य० ३४.८; अ० ७.२१.२; काठ० सं० १३.८५; मै० सं० ३.१६.६३;। तै० सं० ३.३.११. का० सं० ३३.३।

अन्वेको वदति ऋ० २.१३.३।

अपकामं स्यन्दमाना अ० ३.१३.३; पै० सं० ३.४.३; काठ० सं० ३९.११; मै० सं० २.१३.९; तै० सं० ५.६.१.७।

अपक्रामति सूनृता अ० १२.५.६।

अपक्रामनानदती अ० १०.१.१४; मै० सं० १६.३६.४।

अपक्रामन् पौरुषेयाद् अ० ७.१०५.१; पै० सं० १३.४.१२।

अपक्रीताः सहीयसी अ० ८.७.११।

अपघ्नन्तो अराव्णः ऋ० ९.१३.९; सा० ११९५।

अपघ्नन्त्सोम रक्षसः ऋ० ९.६३.२९।

अपघ्नन्नेषि पवमान ऋ० ९.९६.२३।

अपघ्नन्पवते मृधः ऋ० ९.६१.२५; सा० ५१०, १२१३; प० ब्रा० ४.५.८।

अपघ्नन्पवसे मृधः ऋ० ९.६३.२४; सा० ४९२, १२३७।

अपचितः प्र पतत अ० ६.८३.१; पै० सं० १.२१.२।

१३ १३.१ ।

अपातामश्विना घर्मम् य० ३८.१३; श० ब्रा० १४.२.२.२५,२६; का सं० ३८.१३ ।

अपादग्रे समभवत् अ० १०.८.२१; पै० सं० १६.१०२.८ ।

अपादहस्तो अपृतन्यत् ऋ० १.३२.७; ऋ० भू० ग्रन्थप्रामाण्याप्रामाण्यविषय ।

अपादित उदु नश्चित्र ऋ० ६.३८.१ ।

अपादिन्द्रो अपादग्निः ऋ० ८.६६.११; अ० २०.६२.८ ।

अपादुशिस्ययन्धसः ऋ० ८.६२.४; सा० १४५ ।

अपादेति प्रथमा ऋ० १.१५२.३; अ० ६.१०.२३ ।

अपाद्धोत्रादुत पोत्रादमत्त ऋ० २.३७.४ ।

अपाधमदभिशस्तीः ऋ० ८.८६.२; य० ३३.६५; ऐ० ब्रा० ४.५.३ ।

अपानति प्राणति अ० ११.४.१४ पै० सं० १६.२२.४ ।

अपानाय व्यानाय अ० ६.४१.२ ।

अपान्यदेत्यभ्यन्यदे ऋ० १.१२३.७ ।

अपामग्निस्तनूभिः अ० ४.१५.१०; पै० सं० ५.७.८ ।

अपामग्रमसि समुद्रं अ० १६.१.६ ।

अपामतिष्ठद्धरुण ह्वरं ऋ० १.५४.१० ।

अपाम सोम ऋ० ८.४८.३; तै० सं० ३.२.५.४; १०; ऐ० ब्रा० ८.४.६ ।

अपामस्मै वज्रं अ० १०.५.५० ।

अपामह दिव्यानां अ० १६.२.४ ।

अपामार्ग ओषधीनां अ० ४.१७.८; पै० सं० २.२६.५ ।

अपामार्गोऽपमार्ष्टु अ० ४.१८.७ ।

अपामिदं न्ययनं ऋ० १०.१४२.७; य० १७.७; अ० ६.१०६.२ तै० सं० ४.६.१३; ११; मै०सं० २.१०.५; कपि० २८.१; काठ०सं० १७.७५; पै० सं० ५.२४.७ ।

अपामिवेदूर्मयः ऋ० ६.६५.३; सा० ५४४ ।

अपामीवामपविश्वा० ऋ० १०.६३.१२; सं० वि० स्वस्ति० ।

अपामीवामपस्त्रिध ऋ० ८.१८.१०; सा० ३६७ ।

अपामीवां सविता ऋ० १०.१००.८ ।

अपामुपस्थे महिषा ऋ० ६.८.४. नि० ७.२६ ।

अपामूर्ज ओजसो अ० १६.४५.३ ।

अपामूर्मिमदन्निव ऋ० ८.१४.१०; अ० २०.२८.४; ३६.५ ।

अपाय्यस्यान्धसः ऋ० २.१६.१ ।

अपाररु पृथिव्यै य० १.२६; श० ब्रा० १.२.४–१७–१६; कपि० २.१५; १६; ४७.८ ।

अपारो वो महिमा ऋ० ५.८७.६; य० ४.२६; तै० सं० १.२.६.१ ।

अपावृत्य गार्हपत्यात् अ० १२.२.३४; पै० सं० १७.३३.५ ।

अपास्मत्तम उच्छतु अ० १४.२.४८; पै० सं० १८.११.८ ।

अपां गम्भन्त्सीद य० १३.३०; काठ० सं० ३६.३१; श० ब्रा० ७.५.१.८ ।

अपां गर्भं दर्शतम् ऋ० ३.१.१३ ।

अपां तेजो ज्योतिः अ० १.३५.३ ।

अपां त्वेमन्त्सादयामि य० १३.५३; काठ० सं० १६.२२५; श० ब्रा० ७.५.२.४६-६१ ।

उ० ६.४; १२; पै० सं० १९.१६.८।

अपेमं जीवा अ० १८.२.२७; सं० वि० अन्त्ये० संस्कार।

अपेमां मात्रां अ० १८.२.४०।

अपेयं रात्र्युच्छतु अ० २.८.२।

अपेहि मनसस्पते ऋ० १०.१६४.१; अ० २०.९६.२४; नि० १.१७; पै० सं० १९.३६.४।

अपेह्यरिरस्यरिर्वा अ० ७.८८.१; पै० सं० २०.३२.७।

अपैतेनारात्सरितौ अ० ५.६.७; पै० सं० ६.११.९।

अपो अद्यान्वचारिषं य० २०.२२; श० ब्रा० १२.९.२–९; काठ० सं० ४.८७; ३८.६८; का० सं० २२.९; कपि० ३.१२।

अपो दिव्या अचायिषं अ० ७.८९.१; १०.५.४६।

अपो देवा मधुमतीः य० १०.१; काठ० सं० १५.९; श० ब्रा० ५.३.४.३; मै० सं० २.६.१९।

अपो देवीरुपसृज य० ११.३८; काठ० सं० १६.३५; १९.९; श० ब्रा० ६.४.३.२; मै० सं० २.७.४५; तै० सं० ४.१.२.१६; कपि० ३०.३।

अपो देवीरुपह्वये ऋ० १.२३.१८; अ० १.४.३; ऐ० ब्रा० २.३.२; काठ० सं० १६.३५; १९.९।

अपो देवीर्मधुमतीः अ० १०.९.२७; पै० सं० १४.१.७; काठ० सं० १५.९।

अपो निषिञ्चन्नसुरः अ० ४.१५.१२।

अपो महीरभिशस्तः ऋ० १०.१०४.९।

अपो यदद्रि ऋ० ४.१६.८; अ० २०.७७.८।

अपो वसानः ऋ० ९.१०७.२६।

अपो वामदेव्यं अ० ८.१०.१०; पै० सं० १६.११३.११।

अपो वामदेव्येन अ० ८.१०.८।

अपो वृत्रं वव्रिवान्सं ऋ० ४.१६.७; अ० २०.७७.७।

अपोषा अनसः ऋ० ४.३०.१०; नि० ११.४७।

अपोषुण इयं ऋ० ८.६७.१५।

अपो सुम्यक्ष ऋ० २.२८.६; नि० १३.१; मै० सं० ४.१४.१२।

अपो ह्य॑षामजुषन्त ऋ० ४.३३.९।

अप्तूर्ये मरुत ऋ० ३.५१.९।

अप्नस्वतीमश्विना ऋ० १.११२.२४; य० ३४.२९; का० सं० ३३.२३।

अप्रक्षितं वसु बिभर्षि ऋ० १.५५.८।

अप्रजास्त्वं मार्त अ० ८.६.२६।

अप्रतीतो जयति ऋ० ४.५०.९।

अप्रापाण च वेशन्ता अ० २०.१२८.८।

अप्रयुच्छन्न प्रयुच्छद्‌भिः ऋ० १.१४३.८।

अप्राणैति प्राणेन अ० ८.९.९।

अप्रामिसत्य मघवन् ऋ० ८.६१.४।

अप्सरसः सधमादं अ० ७.१०९,३; १४.२.३४।

अप्सरसां गन्धर्वाणां ऋ० १०.१३६.६।

अपसरा जारमुप ऋ० १०.१२३.५।

अप्सा इन्द्राय ऋ० ९.६५.२०; सा० ९९५।

अप्सु ते जन्म अ० ६.८०.३; पै० सं० १९.१६.१३।

अप्सु ते राजन् अ० ७.८३.१।

अप्सु त्वा मधु ऋ० ९.३०.५ ।

अप्सु धूतस्य हरिवः ऋ० १०.१०४.२; अ० २०.३३.१; पैं० सं० २०.३२.४ ।

अप्सु मे सोमो ऋ० १.२३.२०; १०.९.६; अ० १.६.२; तै० ब्रा० २.५.८.६; काठ० सं० २.८.२ ।

अप्सु रेतः शिश्रिये सा० १८४४ ।

अप्सु स्तीमासु अ० ११.८.३४ ।

अप्स्वग्ने सधिष्टव ऋ० ८.४३.९; य० १२.३६; तै० सं० ४.२.३.७; ११.३५; काठ० सं० २.८१; १६.११७; ३५.७२; कपि० २५.१; ४८.१३; ऐ० ब्रा० ७.२.६; श० ब्रा० १२.४.४.४; मै० २.७.१२४ ।

अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजं ऋ० १.२३.१९; य० ९.६; अ० १.४.४; तै० सं० १.७.७.१, ४; मै० सं० १.११.३; काठ० सं० १३.४६; श० ब्रा० ५.१.४.६, ८ ।

अप्स्वासीन्मातरिश्वा अ० १०.८.४० ।

अबुध्ने राजा ऋ० १.२४.७ ।

अबुध्रमु त्य इन्द्रवन्तः ऋ० १०.३५.१ ।

अबोधि जार ऋ० ७.९.१ ।

अबोधि होता ऋ० ५,१.२; सा० १७४७; नि० ६.१३; मै० २.१३.३६ ।

अबोध्यग्निर्ज्म उदेति ऋ० १.१५७.१; सा० १७५८ ।

अबोध्यग्निः समिधा ऋ० ५.१.१; य० १५.२४; सा० ७३, १७४६; अ० १३.२.४६; तै० सं० ४.४.४.५; ऐ० ब्रा० १.१.१; मै० सं० २.१३.३४; सा० ब्रा० ३.१.४.७; ३.२.१.५ ।

अब्जामुक्थैरहिं ऋ० ७.३४.१६; नि० १०.४४ ।

अभयं द्यावापृथिवी अ० ६.४०.१; पैं० सं० १.२७.२ ।

अभयं नः करत्यन्तरिक्षम् अ० १९.१५.५ पैं० सं० ३.३५.५; सं० वि० शान्तिकरण ।

अभयं मित्रादभयं अ० १९.१५.६; पैं० सं० ३.३५.५; सं० वि० शान्तिकरण ।

अभयं मित्रावरुणा अ० ६.३२.३ ।

अभागः सन्नप ऋ० १०.८३.५; अ० ४.३२.५; पैं० सं० ४.३२.५ ।

अभि कण्वा अनूषत ऋ० ८.६.३४ ।

अभि क्रत्वेन्द्र भूरध ऋ० ७.२१.६ तै० सं० ७.४.१५.४ ।

अभि क्रन्दन्कलशं ऋ० ९.८६.११ सा० १०३२ ।

अभि क्रन्दन् स्तनयन्नः अ० ११.५.१२; पैं० सं० ११.१.१०; काठ० सं० ११.५८ ।

अभि क्रन्दस्तनय ऋ० ५.८३.७; अ० ४.१५.६; तै० सं० ३.१.११.२४; काठ० सं० ११.४८ पैं० सं० ५.७. ३ ।

अभि क्षिपः समग्मत ऋ० ९.१४.७ ।

अभिख्या नो मघवन् ऋ० १०.११२.१० ।

अभिगन्धर्वमतृणत् ऋ० ८.७७.५ ।

अभि गव्यानि वीतये ऋ० ९.६२.२३; सा० १०६२ ।

अभि गावो अधन्विषु ऋ० ९.२४.२; सा० ९६२ ।

अभि गावो अनूषत ऋ० ९.३२.५ ।

अभि गोत्राणि सहसा ऋ० १०.१०३.७; य० १७.३९; सा० १८५५, अ० १९.१३.७; तै० सं० ४.६.४.२, ७; मै० सं० २.१०३८; काठ० सं० १८.५१; कपि०

२८.५ ।

अभि जैत्रीरसचन्त ऋ० ३.३१.४ ।

अभि तष्टेव दीधया ऋ० ३.३८-१; ऐ० ब्रा० ६.४.२; ४ ।

अभि तं निर्ऋति अ० ४.३६.१० ।

अभि तिष्ठामि ते अ० ६.४२.३; पै० सं० १६.८.१२ ।

अभि तेऽधां सहमाना अ० ३.१८.६ ।

अभि ते मधुना ऋ० ६.११.२; सा० ६५२; ष० ब्रा० २.१.६ ।

अभि त्यं गावः ऋ० ६.८४.५ ।

अभि त्यं देवं सवितारं य० ४.२५; सा० ४६४; अ० ७.१४.१; काठ० सं० २.२७; श० ब्रा० ३.३.२.१२; १८-१६; १३.५.१.११; ऐ० ब्रा० ५.२.८; मै० सं० १.२.३४; तै० सं० १.२.६.२; ६.१.६.६; कपि० १.१६; ष० ब्रा० पू० ६. १.४; ६६.३. नि० ६.१३ ।

अभि त्यं पूर्व्यं ऋ० ६.६.३ ।

अभि त्यं मद्यं ऋ० ६.६.२ ।

अभि त्यं मेषं ऋ० १.५१.१; सा० ३७६; ऐ० ब्रा० ५.३.२; ष० ब्रा० ६.१.४; सा० ब्रा० ३.१.७.१३ ।

अभि त्यं वीरं ऋ० ६.५०.६ ।

अभि त्रिपृष्ठं वृषणं ऋ० ६.६०.२; सा० ५२८; १४०८; सा० ब्रा० ३.१.४.१०; २१ ।

अभि त्वा गोतमा ऋ० १.७८.१ ।

अभि त्वा गोतमा गिरानूषत ऋ० ४.३२.६ ।

अभि त्वा जरिमाहित अ० ३.११.८; पै० सं० १.६१.२ ।

अभित्वा देवः ऋ० १.२४.३; तै० सं० ३.५.११.६; १.३.५; १.४.५; ५.३.२; ७.३.४; श० ब्रा० १३.५.१.११; मै० १०.६३; काठ० सं० १५.५६ ।

अभि त्वा देवः सविताभिः ऋ० १०.१७४.३; अ० १.२६.३; पै० सं० १.११.३; काठ० सं० १५.५६; तै० सं० ३.५.११.६ ।

अभि त्वा नक्तीरुषसः ऋ० २.२.१, २ ।

अभि त्वा पाजो ऋ० ६ २१.७ ।

अभि त्वा पूर्वपीतये ऋ० ८.३.७; सा० २५६; १५७३, अ० २०.६६.१; ऐ० ब्रा० ४.५.१; ५.३.३; ऐ० आ० ५.२.१; नि० १०.३७; आ० ब्रा० ६.१.१.४; सा० ब्रा० ३.३.६.८; पै० सं० ६.१७.६ ।

अभि त्वा पूर्वपीतये सृजामि ऋ० १.१६.६; नि० १०.३७ ।

अभित वा बृषभा ऋ० ८.४५.२२; सा० १६१; ७३१; ७३८; तां० ब्रा० ६.१५; २१.६.१६; आ० ब्रा० ६.१.२.३ ।

अभि त्वा मनुजातेन अ० ७.३७.१ ।

अभि त्वा योषणो ऋ० ६.५६.३ ।

अभि त्वा वर्चसा अ० २०.४८.१; पै० सं० ४.२.७; ८.१०.१०; काठ० सं० ३६.४२; ३७.२० ।

अभि त्वा वर्चसा गिरः अ० २०.४८.१ ।

अभित्वा वर्चसा सिच अ० ४.८.६ ।

अभित्वा वृषभा सुते ऋ० ८.४५.२२; सा० १६१; ७३१, ७३८ अ० २०.२२.१ ऐ० ब्रा० ८.४.६ ।

अभित्वाशूर ऋ० ७.३२.२२, य० २७.३५; सा० २३३; ६८०; अ० २०.१२१.१; तै० सं० २.४.१४.६; मै० सं० २.१३.६२; ऐ० ब्रा० ४.२.४; ४.५; १.५.१.१; ५.२.२; ५.३.३; ५.४.१; ऐ० आ० ५.२.१; काठ० सं० १२.५६; ३६.७६; नि० १.३; ताण्डय० ब्रा० १.४.१ का० सं० २६.४१; ऋ० भू० वे० विषय; गणित विषय; ता०

ब्रा० ६.१.६.१२; ३.३.१; ३.४.४; ३.५.४; सा० ब्रा० ३.१.१.१३; ३.६.११; कपि २६.४१।

अभि त्वा सिन्धो ऋ० १०.७५,४।

अभि त्वेन्द्र वरिमतः अ० ६.६६.१; पैं० सं० १६.१३.१।

अभि त्वोर्णोमि० अ० १८.२.५२।

अभि द्यां महिना ऋ० १०.११६.८।

अभि द्युम्नं बृहद्यशः ऋ० ६.१०८.६; सा० ५७६; १०११ तां० ब्रा० १४.११.२; १३.५,२।

अभि द्युम्नानि वनिनः ऋ० ३.४०.७; अ० २०.६.७।

अभि द्रोणानि बभ्रवः ऋ० ६.३३.२; सा० ७३५; ताँ ब्रा० ११.३.१।

अभि द्विजन्मा त्रिवृद् ऋ० १.१४०.२।

अभि द्विजन्मा त्री रोचनानि ऋ० १.१४६.४; सा० १७७५।

अभिधा असि भुवनम् य० २२.३; श० ब्रा० १३.१.२.३; मैं० सं० ३.१२.२; तै० सं० ७.१.११.३; का० सं० २४.४।

अभि न इडा ऋ० ५.४१.१६. नि० ११.४५; ११.४६।

अभि नक्षन्तो ऋ० २.२४.६।

अभि नवन्ते अद्रुहः ऋ० सा० ६१६।

अभि नो देवी ऋ० १.२२.११।

अभि नो नर्यं ऋ० ६.५३.२।

अभि नो वाजसातमं ऋ० ६.६८.१ सा० ५४६, १२३८।

अभि प्रगोपतिं ऋ० ६.६६.४; सा० १६८; १४८६; अ० २०.२२.४; ६२.१।

अभि प्रदद्रुर्जनयो ऋ० ४.१६.५।

अभि प्रभरधृषता ऋ० ८.८६.४; मैं० ४.१२ ५५; ऐ० ब्रा० ४.५.१; काठ० सं० ८.४.८।

अभि प्रयांसि वाहसा ऋ० ३.११.७; सा० १५५७।

अभि प्रयांसि सुधितानि ऋ० ६,१५.१.५।

अभि प्रवन्त समनेव ऋ० ४.५८.८; य० १७.६६; नि० ७.१७; काठ० सं० ४०.४६।

अभि प्रवः सुराधसः ऋ० ८.४६.१; सा० २३५, ८११; अ० २०.५१.१; नि० ८.१७; सा० ब्रा० ३.२.७.१ गो० ब्रा० उ० ६.७।

अभि प्रस्थाताहेव ऋ० ७.३४.५।

अभि प्रियं दिवस्पदं सा० ११२७।

अभि प्रियाणि काव्या ऋ० ६.५७.२, सा० १७६२।

अभि प्रियाणि पवते ऋ० ६.७५.१ सा० ५५४; ७००।

अभि प्रियाणि पवतेतु पुनानः ऋ० ६.६७.१२; सा० ५५४; तां० ब्रा ११.५.१।

अभि प्रिया दिवः ऋ० ६.१२.८; सा० १२०४।

अभि प्रिया दिवस्पदं ऋ० ६.१०.६; सा० १२२७।

अभि प्रिया दिवस्पदा ऋ० ६.१२.८; सा० १२०४।

अभि प्रिया मरुतो ऋ० ८.२७.६।

अभि प्रेहि दक्षिणतः ऋ० १०.८३.७; अ० ४.३२.७; काठ० सं० ३७.३२; पैं० सं० ४.३२.७।

अभि प्रेहि माप अ० ४.८.२।

अभि ब्रह्मरीनूषत ऋ० ६.३३.५; सा० ८७०।

अभि भुवेऽभि भंगाय ऋ० २.२१.२।

अभिभूरस्येतास्ते य० १०.२८; श० ब्रा० ५.४.४.६–९; ११–१५।

अभिभूरहमागमं ऋ० १०.१६६.४।

अभिभूर्यज्ञो अभिभूः अ० ६.९७.१; पै० सं० १९.१२.७।

अभि यज्ञं गृणीहि ऋ० १.१५.३; य० १६ २१।

अभि यं देवी ऋ० ७.३७.७।

अभि यं देव्यदितिः ऋ० ७.३८.४।

अभि ये त्वा ऋ० ५.७९.४।

अभि ये मिथो ऋ० ७.३८.५।

अभि यो महिमा ऋ० ३.५९.७; य० ३८. १७; तै० सं० ४.१.६.३; तै० ब्रा० ४.३.१।

अभिवर्धतां पयसाभि अ० ६.७८.२; पै० सं० १९.१६.१०।

अभि वस्त्रा सुवसनान्० ऋ० ९.९७.५०; सा० १४२७।

अभि वह्नय ऊतये ऋ० ८.१२.१५।

अभि वह्निरमर्त्यः ऋ० ९.९.६।

अभि वाजी विश्वरूपो सा० १८४३।

अभि वायुं ऋ० ९.९७.४५; सा० १४२६।

अभि वां नूनमश्विना ऋ० ७.६७.३।

अभि विप्रा अनूषत गावः ऋ० ९.१२.२; सा० ११९७।

अभि विप्रा अनूषत मूर्धन् ऋ० ९.१७.६।

अभि विश्वानि ऋ० ९.४.२.५।

अभि वृत्य सपत्नान् ऋ० १०.१७४.२; अ० १.२९.२।

अभिवृष्टा ओषधयः अ० ११.४.६; पै० सं० १६.२१.६।

अभि वेना अनूषत ऋ० ९.६४.२१।

अभि वो अर्चे ऋ० ५.४१.८।

अभि वो देवीं ऋ ७.३४.९।

अभि वो वीरमन्धसो ऋ० ८.४६ १४; सा० २६५।

अभि व्ययस्य खदिरस्य ऋ० ३.५३. १९।

अभि व्रजं न तन्तिषे ऋ० ८.६.२५।

अभि व्रतानि पवते सा० १०२१।

अभिव्लग्या चिदद्रिवः ऋ० १.१३३.२।

अभि श्यावं न कृशनेभि ऋ० १०.६८.११; २०.१६.११।

अभिष्टने ते अद्रिवः ऋ० १.८०.१४।

अभिष्टये सदावृधं ऋ० ८.६८.५; ऐ० ब्रा० ४.५.३।

अभि सिध्मो अजिगात ऋ० १.३३.१३; नि० ६.१६; तै० ब्रा० २.८.४.४ मै० ४.१४.१९१।

अभि सुवानास इन्दवः ऋ० ९.१७.२।

अभि सूयवसं नय ऋ० १.४२.८।

अभि सोमास आयवः पवन्ते ऋ० ९. २३.४।

अभि सोमास आयव पवन्ते मद्य ऋ० ९. १०७ १४; सा० ५२८; ८५६; तां० ब्रा० १४.९.३; ष० ब्रा० ४.१.११।

अभि स्वपूभिर्मिथः ऋ० ७.५६.३।

अभि स्वरन्तु ये ऋ० ८.१३.२८।

अभि स्ववृष्टिं मदे ऋ० १.५२.५; मै० ४.१२.६९; ४.१४.७२।

अभ्यन्यदेति पर्यन्य श० १३.२.४३ ।

अभ्यभि हि श्रवसा ऋ० ९.११०.५; सा० १५०७; नि० ५.४ ।

अभ्यर्च नभाकवत् ऋ० ८.४०.४ ।

अभ्यर्षत सुष्टुतिं ऋ० ४.५८.१०; य० १७.९८; अ० ७.८२.१; काठ० सं० ४०.५१; पै० सं० १.३.१; काठ० सं० ४०.५१ ।

अभ्यर्ष बृहद्यशः ऋ० ९.२०.४; सा० ९७१ ।

अभ्यर्ष महानां ऋ० ९.१.४ ।

अभ्यर्ष विचक्षण ऋ० ९.५१.५ ।

अभ्यर्ष सहस्रिणं ऋ० ९.६३.१२ ।

अभ्यर्ष स्वायुध ऋ० ९.४.७; सा० १०५३ ।

अभ्य३र्षानि पच्युतः ऋ० ९.४.८; सा० १०५४ ।

अभ्यवस्थाः प्रजायन्ते ऋ० ५.१९.१ ।

अभ्यादधामि य० २०.२४; स० प्र० प्र० समु०; सं० वि० वान प्र० सं०; कां० सं० २२.१२ ।

अभ्यारमिदद्रयः ऋ० ८.७२.११; सा० १६०३ ।

अभ्यावर्तस्व पशुभिः अ० ११.१.२२; पै० सं० १५.२.६ ।

अभ्यावर्त्तस्व पृथिवि य० १२.१०३; काठ० सं० १६.१७१; श० ब्रा० ७.३.१.२१; तै० सं० ४.२.७.२; कपि० २५.५ ।

अभ्यूर्णोति यन्नग्नं ऋ० ८.७९.२ ।

अभ्रप्रुषो न वाचा ऋ० १०.७७.१ ।

अभ्रं पीबो मज्जा अ० ९.७.१८; पै० सं० १६.१३९.४० ।

अभ्राजि शर्धो ऋ० ५.५४.६; नि० ६.४ ।

अभ्रातरो न योषणः ऋ० ४.५.५ ।

अभ्रातृघ्नीं वरुणा अ० १४.१.६२ ।

अभ्रातृव्यो अनात्वं ऋ० ८.२१.१३; सा० ३९९, १३८९; अ० २०.११४.१; आ० ब्रा० ६.१.१.६; सा० ब्रा० ३.१.८.४; ३.५.२ ।

अभ्रातेव पुंस ऋ० १.१२४.७; नि० ३.५ ।

अभ्रिये दिद्युन्नक्षत्रिये अ० २.२.४; पै० सं० १.७.४ ।

अभ्रिरसि नार्यसि य० ११.१०; मै० सं० ४.९.३; श० ब्रा० ६.३.१.३९ ।

अमन्थिष्टां भारता ऋ० ३.२३.२ ।

अमन्दन्मा मरुत ऋ० १.१६५.११; मै० ४.११.८९; काठ० सं० ९.६३ ।

अमन्दान्त्स्तोमान्प्रभरेम ऋ० १.१२६.१; नि० ९.१० ।

अमन्महीदनाशवः ऋ० ८.१.१४; अ० २०.११६.२; तां ब्रा० ९.१०.१ ।

अमा कृत्वा पाप्मानं अ० ४.१८.३; पै० सं० ५.२४.३ ।

अमा घृतं कृणुते अ० ११.५.१५; पै० सं० १६.१५४.५ ।

अमाजुरश्चिद् भवथो ऋ० १०.३९.३ ।

अमाजूरिव पित्रोः ऋ० २.१७.७ ।

अमादेषां भियसा ऋ० ५.५९.२ ।

अमाय वो मरुतः ऋ० ८.२०.६ ।

अमावास्या च पौर्णमासी अ० १५.२.१४ ।

अमावास्ये न त्वदेता अ० ७.७९.४ ।

अमासि मात्रां अ० १८.२.४५ ।

अमित्र सेनां सा० १८६५; अ० ३.१.३; पै० सं० ३.६.३ ।

अमित्रहा विचर्षणिः ऋ० ९.११.७; सा०

अयमग्निर्गृहपतिः य० ३.३९; कपि० ५.२; ४; ४.८।

अयमग्निर्वध्र्यश्वस्य ऋ० १०.६९. १२।

अयमग्निर्वीरतमो य० १५.५२; काठ० सं० १८.१०७; मै० सं० २.१२.१६; श० ब्रा० ८.६.३.२१ तै० सं० ४.७.१३.८; कपि० २९.६।

अयमग्नि सहस्रिणः ऋ० ८.७५.४; य० १५.२१; तै० सं० २.६.११.४; ४.४.३।

अयमग्नि पुरीष्यो य० ३.४०;: श० ब्रा० २.४.१.६।

अयमग्निः सत्पतिः अ० ७.६२.१ पै० सं० २०.८.६।

अयमग्निः सहस्रिणो ऋ० ८.७५.४; य० १५.२१; काठ० सं० ७.१०६; १६.१६५; तै० सं० २.६.११.४; ४.४.४.३।

अयमग्निः सुवीर्यस्येशे ऋ० ३.१६.१; सा० ६०; सा० ब्रा० ३.३.४.४; ३.२.८.२।

अयमग्ने जरिता ऋ० १०.१४२.१।

अयमग्ने त्वे अपि ऋ० ८.४४.२८।

अयतस्तु धनपतिः अ० ४.२२.३; पै० सं० ३.२१.२।

अयमस्मान्वनस्पतिः ऋ० ३.५३.२०।

अयमस्मासु काव्य ऋ० १०.१४४.२।

अयमस्मि जरितः ऋ० ८.१००.४।

अयमा यात्यर्यमा अ० ६.६०१; पै० सं० १९.१४.४।

अयमिद् वै प्रतीवर्त अ० ८.५.१६; पै० सं० १६.२८.६।

अयमिन्द्र वृषाकपिः ऋ० १०.८६.१८; अ० २०.१२६.१८।

अयमिन्द्रो मरुत्सखा ऋ० ८.७६.२।

अयमिह प्रथमो धायि ऋ० ४.७.१; य० ३.१५; १५.२६; ३३.६; तै० सं० १.५.५.४;७.५; मै० सं० १.५.४; १.४.७; २.७.४.२; २.१३.२०; ऐ० ब्रा० १.५.२; काठ० सं० ६.२२; ३२.६; कपि० ४.८; ५.३।

अयमु ते समतसि ऋ० १.३०.४; सा० १८३; १५६६; अ० २०.४५.१; नि० १.१०।

अयमुते सरस्वति ऋ० ७.९५.६; मै०४.१४.१०२; ऐ० ब्रा० ५.३.३।

अयमुत्तरात्संयद् य० १५.१८; श० ब्रा० ८.६.१६; तै० सं० ४.४.३.४; कपि० २६.८।

अयमुत्वा विचर्षणे ऋ० ८.१७.७; अ० २.५.१; गो ब्रा० उ० ३.१४।

अयमुपर्यर्वाग्वसुस्तस्य य० १५.१६ श० ब्रा० ८.६.१.२०; तै० सं० ४.४.३.५; कपि० ४.८;२६.८।

अयमु वां पुरुतमो ऋ० ३.६२.२।

अयमुशानः पर्यद्रि ऋ० ६.३९.२।

अयमुष्य प्रदेवयुः ऋ० १०.१७६.३; तै० सं० ३.५.११.२; ऐ० ब्रा० १.५.२; मै० ४.१०.९२; काठ० सं० १५.४४।

अयमुष्य सुमहाँ ऋ० ७.८.२।

अयमेक इत्था ऋ० ८.२४.१९।

अयमेमि विचाकशत् ऋ० १०.८६.१९; अ० २०.१२६.१९।

अयमौदुम्बरो मणिर्वीरो अ० १९.३१.१४।

अयस्मये द्रुपदे अ० ६.६३.३; ८४.४०; पै० सं० १९.११.३।

अयं कविरकविषु ऋ० ७.४.४।

अयं क्रतुरगृभीतः ऋ० ८.७९.१; तै० ब्रा० २.४.७.६।

अयं ग्रावा पृथु० अ० १२.३.१४; पै० सं० १७.३७.४।

अयं घ स तुरो ऋ० १०.२५.१०।

अयं चक्रमिषणत् ऋ० ४.१७.१४।

अयं जायत मनुषो ऋ० १.१२८.१; ऐ० ब्रा० ५.२.७।

अयं जीवतु मा० ८.२.५; पै० सं० १६.३.५।

अयं त आघृणे ऋ० ९.६७.१२।

अयं त इन्द्र ऋ० ८.१७.११; सा० १५९, ७२५; अ० २०.५.५; तां० ब्रा० ९.२.८।

अयं त एमि ऋ० ८.१००.१।

अयं ते अस्तु ऋ० ३.४४.१; ऐ० ब्रा० ४.१.३; ऐ० आ० ५.२.४।

अयं ते अस्म्युपमेह्यर्वाङ् ऋ० १०.८३.६; अ० ४.३२.६।

अयं ते कृत्यां अ० १०.३.४; पै० सं० १६. ६२.४।

अयं ते मानुषे ऋ० ८.६४.१०।

अयं ते योनिर्ऋत्वियः ऋ० ३.२९.१०; य० ३.१४; १२.५२; १५.५६, अ० ३.२०.१; तै० ब्रा० १.२.१.१६; २.५.८.८.; तै० सं० १.५.५.६; ४.२.४.३; ७.१३.५; मै० सं० १.५.६; १.६.५; २.७.४४, १३८; २.१२.२४; काठ० सं० २.२०; ६.२३; १६.१३१; १८.१११; कपि० १.१६; ४.८; ५.३, ४; २५.२; २९.६; श० ब्रा० २.३.४.१३; ७.१.१.१.२७; २८; गो० ब्रा० उ० ४।

अयं ते शर्यणावति ऋ० ८.६४.११।

अयं ते स्तोमो ऋ० १.१६.७।

अयं दक्षाय ऋ० ९.१०५.३; सा० ११००

अयं दक्षिणा विश्वकर्मा य० १३.५५; १५. १६; श० ब्रा० ८.१.१.७–९; ८.६.१.१७; तै० सं० ४.३.२.२; ४.३.२; कपि० १.१६; ४०८; ५.३; २५.२; २९.६; २५.६; २६.८।

अयं दर्भो विमन्युकः अ० ६.४३.१; पै० सं० १९.३३.७।

अयं दशस्यन्नर्येभिः ऋ० १०.९९.१०।

अयं दिव इयर्ति ऋ० ९.६८.९।

अयं दीर्घाय चक्षसे ऋ० ८.१३.३०।

अयं देवः सहसा ऋ० ६.४४.२२।

अयं देवा इहैवास्त्वयं अ० ८.१.१८; पै० सं० १६.२.७।

अयं देवानामपसामपस्त ऋ० १.१६०.४।

अयं देवानामसुरो अ० १.१०.१; पै० सं० १.९.१।

अयं देवाय ऋ० १.२०.१; ऐ० ब्रा० ५ ३.२।

अयं देवेषु जागृविः ऋ० ९.४४.३।

अयं द्यावापृथिवी ऋ० ६.४४.२४।

अयं द्योतयदद्युतः ऋ० ६.३९.३।

अयं नाभा वदति ऋ० १०.६२.४।

अयं निधिः ऋ० १०.१०८.७।

अयं नो अग्निः य० ५.३७; ७.४४; काठ० सं० ४.४०; ६.४२; श० ब्रा० ३.६.३.१२; ४.३.४.१३; मै० सं० १.३.१०४; तै० सं० १.३.४.३; ४.४६.१०; कपि० ३.७।

अयं नो नभस्पती अ० ६.७९.१; गो० ब्रा० उ० ४.९; पै० सं० १९.१९.१७।

अयं नो विद्वान् ऋ० ९ ७७.४।

अयं पन्था अनुवित्ताः ऋ० ४.१८.१।

५.२.७।

अयं हि ते अमर्त्यः ऋ० १०.१४४.१।

अयं हि नेता वरुणः ऋ० ७.४०.४।

अयं होता प्रथमः ६.६.४।

अया चित्तो विपानया ऋ० ६.६५.१२; सा० ८०५।

अया ते अग्ने ऋ० २.६.२; ऐ० ब्रा० १.४.८।

अया ते अग्ने समिधा ऋ० ४.४.१५; नि० ३.२१, तै० सं० १.२.१४.१५; काठ० सं० ६.५५; मै० ४.११.१२४।

अया धिया च गव्यया ऋ० ८.६३.१७; सा० १८८।

अया निजदिनरोजसा ऋ० ६.५३.२; सा० १७१५।

अया पवस्व देवयुः ऋ० ६.१०६.१४; सा० ७७२; तां० ब्रा० ११.५१।

अया पवस्व धारया ऋ० ६.६३.७ सा० ४६३; १२१६।

अया पवा पवस्वैना ऋ० ६.६७.५२; सा० ५४१; ११०४; तां ब्रा० १३.१.७।

अयामधीवतो धियः ऋ० ८.६२.११।

अयामि घोष इन्द्र ऋ० ७.२३.२; अ० १०.१२.२।

अयामि ते नम उक्ति ऋ० ३.१४.२।

अया रुचा हरिण्या ऋ० ६.१११.१; सा० ४६३; १५६०; तां० ब्रा० १६.१६.८ श्रा० ब्रा० ६.१.६.६; ४.१.२; सं० ब्रा० २.२।

अया वाजं ऋ० ६.१७.१५; सा० ४५४; अ० १६.१२.१; २०.६३.३; १२४.६।

अया विष्ठा अ० ७.३.१; पै० सं० २.२.१; मै० सं० १.१०.१६।

अया वीति परिस्रव ऋ० ६.६१.१; सा० ४६५; १२१०।

अया सोमः ऋ० ६.४७.१; सा० ५०७।

अया ह त्यं मायया ऋ० ६.२२.६; अ० २०.३६.६।

अयां समग्रे सुक्षितिं ऋ० २.३५.१५।

अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः ऋ० १.५०.६; सा० ६३६; अ० १३.२.२४; २०.४७.२१; तै० ब्रा० २.४.५.४; काठ० सं० ७.७३; पै० सं० १८.२२.६।

अयुक्तं सप्त हरितः ऋ० ७.६०.३।

अतुक्त सूर एतशं ऋ० ६.६३.८; सा० १२१७।

अयुजो असमो ऋ० ८.६२.२।

अयुञ्जन्त इन्द्र ऋ० २.१६६.२।

अयुतोऽहमयुतो अ० १६.५१.१।

अयुद्ध इद्युद्धा ऋ०८.४५.३; सा० १३४०।

अयुद्धसेनो विभ्वा ऋ० १०.१३८.५।

अयुयुत्सन्ननवद्यस्य ऋ० १.३३.६।

अयोजाला असुरा अ० १६.६६.१; पै० सं० १६.१५०.५।

अयो दंष्ट्रो अर्चिषा ऋ० १०.८७.२; अ० ८.३.२; पै० सं० १६.६.२।

अयोद्धेव दुर्मद० ऋ० १.३२.६; नि० ६.४; तै० ब्रा० २.५.४.३।

अयोमुखा सूचीमुखाः अ० ११.१०.३।

अरण्यान्यरण्यानि ऋ० १०.१४६.१; नि० ६.२८; तै० ब्रा० २.५.५.६।

अरण्योर्निहितो जातवेदाः ऋ० ३.२६.२; सा० ७६।

अरदुपरम अ० २०.१३१.१५।

अरमतिरनर्वणो ऋ० ८.३१.१२।

अरममाणो अत्येति ऋ० ६.७२.३।

अरमयः सरपसः ऋ० २.१३.१२।

अरमश्वाय गायति ऋ० ८.९२.२५; सा० ११८।

अरश्मानो येऽरथा ऋ० ६.६७.२०।

अरसस्त इषो अ० ४.६.६; पैं० सं० ५.८.५।

अरसस्य शर्कोटस्य अ० ७.५६.५; पैं० सं० १.४८.१।

अरसं कृत्रिमं नाडं अ० १६.३४.३; पैं० सं० ११.३.३।

अरसं प्राच्यं अ० ४.७.२; पैं० सं० २.१.१।

अरसास इहाहयो अ० १०.४.६; पैं० सं० १६.१५.६।

अरं कामाय हरयः ऋ० १०.९६.७; अ० २०.३१.२।

अरं कृण्वन्तु वेदिं ऋ० १.१७०.४।

अरं क्षयाय नो महे ऋ० ८.१५.१३।

अरंगरो वावदीति अ० २०.१३५.३।

अरंघुषो निमज्य अ० १०.४.४।

अरं त इन्द्र ऋ० ८.९२.२४, सा० १६६२।

अरं त इन्द्र श्रवसे सा० २०६।

अरं दासो न मीढुषे ऋ० ७.८६.७।

अरं म उस्रयाम्णे ऋ० ४.३२.२४।

अरं मे गन्तं ऋ० ६.६३.२।

अरं हि ष्मा सुतेषु ऋ० ८.९२.२६।

अरा इवेदचरमा ऋ० ५.५८.५; तै० ब्रा० २.८.५.७; ऐ० ब्रा० ७.२.८; मै० सं० ४.१४. २६७।

अरातीयोर्भ्रातृव्यस्य अ० १०.६.१; पैं० सं० १६.४२.१।

अरात्यास्त्वा निर्ऋत्या अ० १०.३.७।

अराधि होता निषदा ऋ० १०.५३.२।

अराधि होता स्वर् ऋ० १.७०.८।

अरायक्षयणमसि अ० २.१८.३।

अरायमसृक्पावानं अ० २.२५.३।

अरायान् ब्रूमो अ० ११.६.१६।

अरायि काणेविकटे ऋ० १०.१५५.१; नि० ६.३०।

अरावी दंशुः सचमानः ऋ० ६.७४.५।

अरित्रं वां दिवस्पृथु ऋ० १.४६.८; ऋ० भू० नौविमानविषय।

अरिप्रा आपो अ० १०.५.२४; १६.१.१०; पैं० सं० १६.१३०.२।

अरिष्टः स मर्त्तो ऋ० १०.६३.१३; सं० वि० स्वस्तिवाचन।

अरिष्टोऽहमरिष्टगुः अ० १०.३.१०; पैं० सं० १६.६२.१०।

अरुणप्सुरुषा अभूत् ऋ० ८.७३.१६।

अरुणो मा सकृद् ऋ० १.१०५.१८; नि० ५.२१।

अरुषस्य दुहितरा ऋ० ६.४९.३।

अरुषो जनयन्गिरो ऋ० ६.२५.५।

अरुस्राणमिदं महत् अ० २.३.५।

अरूरुचदुषसः पृश्निः ऋ० ६.८३.३; सा० ५६६, ८७७; ऐ० ब्रा० १.४.४; श्रा० ब्रा० ६.२.३.५; सा० ब्रा० ३.१.१.१३।

अरोरवीद् वृष्णो ऋ० २.११.१०।

अर्चत प्रार्चत ऋ० ८.६९.८; सा० ३६२; अ० २०.९२.५; ऐ० ब्रा० ४.१.४; स० प्र० एकादश समु०।

अर्चद् वृषा वृषभिः ऋ० १.१७३.२।

अर्चन्त एके महि ऋ० ८.२६.१० ।

अर्चन्तस्त्वा हवामहे ऋ० ५.१३.१ ।

अर्चन्ति नारीरपसो ऋ० १.९२.३; सा० १७५७ ।

अर्चन्त्यर्कं मरुतः सा० ४४५, १११४ ।

अर्चा दिवे बृहते ऋ० १.५४.३; नि० ६.१८

अर्चामि ते सुमतिं ऋ० ४.४.८; तै० सं० १.२.१४.८; मै० सं० ४.११.११७; काठ० सं० ६.४८ ।

अर्चामि वां वर्धायापो ऋ० १०.१२.४; अ० १८.१.३१ ।

अर्चा शक्राय शाकिने ऋ० १.५४.२ ।

अर्जुनि पुनर्वो अ० २.२४.७; पै० सं० २.४२.७ ।

अर्णांसि चित्पप्रथाना ऋ० ७.१८.५ ।

अर्थमिद्वा उ अर्थिन ऋ० १.१०५.२ ।

अर्थिनो यन्ति ऋ० ८.७९.५ ।

अर्थेत स्थ राष्ट्रदा य० १०.३; श० ब्रा० ५.३.४.७–११ ।

अर्धं ऋचैरुक्थानां य० १९.२५; का० सं० २१.२७ ।

अर्धमर्धेन पयसा अ० ५.१.६; पै० सं० ६.२.८ ।

अर्धमासाः परूंषि य० २३.४१; तै० सं० ५.२.१२.४; का० सं० २५.४६ ।

अर्धमासाश्च मासाश्च अ० ११.७.२०; पै० सं० १६.८३.१० ।

अर्धं वीरस्य ऋ० ७.१८.१६ ।

अर्बुदिर्नाम यो देव अ० ११.९.४ ।

अर्बुदिश्च त्रिषन्धिः अ० ११.९.२३ ।

अर्भको न कुमारकः ऋ० ८.६९.१५; अ० २०.९२.१२ ।

अर्मेभ्यो हस्तिपं य० ३०.११; का० सं० ३४.११ ।

अर्यमणं बृहस्पतिं ऋ० १०.१४१.५; य० ९.२७; अ० ३.२०.७; तै० सं० १.७.१०.२, ६; मै० सं० १.११.१९; श० ब्रा० ५.२.२.१०; पै० सं० ३.३४.५ ।

अर्यमणं यजामहे अ० १४.१.१७; पै० सं० १८.२.७ ।

अर्यमणं वरुणं ऋ० ४.२.४ ।

अर्यमा णो अदितिः ऋ० ३.५४.१८ ।

अर्यम्यं वरुण मित्र्यं ऋ० ५.८५.७ ।

अर्यो वा गिरो ऋ० १०.१४८.३ ।

अर्यो विशां गातु ऋ० १०.२०.४ ।

अर्वद्भिरग्ने अर्वतो ऋ० १.७३.९ ।

अर्वन्तो न श्रवसो ऋ० ७.९०.७; ९१.७ ।

अर्वागन्य इतो अ० ११.५.११ ।

अर्वागन्यः परो अ० ११.५.१० ।

अर्वाग्रथं विश्ववारं ऋ० ६.३७.१ ।

अर्वाग्रथं नियच्छतं ऋ० ८.३५.२२ ।

अर्वाङ् त्रिचक्रो ऋ० १.१५७.३; सा० १७६० ।

अर्वाङ्नरा दैव्येनावसा ऋ० ७.८२.८ ।

अर्वाङ् परस्तात् अ० १३.२.३१; पै० सं० २८.२३.७ ।

अर्वाङ् हि सोमकामं ऋ० १.१०४.९; अ० २०.८.२; ऐ० ब्रा० ६.३.३; गो० ब्रा० उ० २.२१; पै० सं० २०.६०.१० ।

अर्वाचीनं सु ते ऋ० ३.३७.२; अ० २०.१९.२ ।

अर्वाचीनो वसो ऋ० ४.३२.१४ ।

अर्वाची सुभगे ऋ० ४.५७.६; अ० ३.१७.८; तै० ब्रा० ६.६.२ ।

अर्वाञ्चं त्वा पुरुष्टुत ऋ० ८.६.४५; ३२.३० ।

अर्वाञ्चं त्वा सुरवे ऋ० ३.४१.६; अ० २०.२३.६ ।

अर्वाञ्चं दैव्यं ऋ० १.४५.१० ।

अर्वाञ्चमद्य यय्यं ऋ० २.३७.५ ।

अर्वाञ्चमिन्द्रममुतो अ० ५.३.११; काठ० सं० ४०.८०; तै० सं० ४.७.१४.१० ।

अर्वाञ्चा वां सप्तयो ऋ० १.४७.८ ।

अर्वाञ्च्यो अद्या ऋ० २.२६.६; य० ३३.५१; मै० ४.१२.१४७; का० सं० ३२.५१ ।

अर्वावतो न आ गहि परावतश्च ऋ० ३.४०.८; अ० २०.६.८ ।

अर्वावतो न आ गह्यथो ऋ० ३.३७.११; अ० २०.२०.४; ५७.७; मै० सं० ४.१२.६३ ।

अर्वां इव श्रवसे ऋ० ६.६७.२५ ।

अर्षा णः सोम ऋ० ६.६१.१५; सा० १३३७; ष० ब्रा० ४.२.१५ ।

अर्षा सोम द्युमत्तमो ऋ० ६.६५.१६; सा० ५०३, ६६४; तां ब्रा० १३.३.१ ।

अर्हन्तो ये सुदानवः ऋ० ५.५२.५ ।

अर्हन्बिभर्षि सायकानि ऋ० २.३३.१०; तै० आ० ४.५.७ ।

अर्लर्षि रातिं वसुदा ऋ० ८.६६.४; सा० १३२०; अ० २०.५८.२ ।

अलसालासि पूर्वा अ० ६.१६.४ ।

अलातृणो वल इन्द्र ऋ० ३.३०.१०; नि० ६.२ ।

अला बुकं निखातकम् अ० २०.१३२.२ ।

अलाबूनि पृषातकानि अ० २०.१३५.३ ।

अलाय्यस्य परशुर्न ऋ० ६.६७.२० ।

अलिक्लवा जाष्कमदा अ० ११.६.६ ।

अलगण्डून् हन्मि अ० २.३१.३ ।

अवकादानभिशोचा० अ० ४.३७.१० पै० सं० १३.४.१७ ।

अवकोल्वा उदकात्मानः अ० ८.७.६; पै० सं० १६.१२.६ ।

अवक्रक्षिणं वृषभं ऋ० ८.१.२; सा० १३६१; अ० २०.८५.२ ।

अवक्रन्द दक्षिणतो ऋ० २.४२.३ ।

अवक्षिप दिवो ऋ० २.३०.५ ।

अवचष्ट ऋचीषमो ऋ० ८.६२.६ ।

अवजहि यातुधानानव अ० ५.१४.२ ।

अव ज्यामिव धन्वनो अ० ६.४२.१; पै० सं० ४.२१.३; १६.८.१० ।

अवतत्य धनुष्ट्वं य० १६.१३; काठ० सं० १७.४६; मै० सं० २.६.२२; कपि० २७.१ ।

अव ते हेडो ऋ० १.२४.१४; तै० सं० १.५.११.६; मै० सं० ४.१०.१०७; १४.४१; २५५; काठ० सं० ४०.६० ।

अवत्मना भरते ऋ० १.१०४.३ ।

अवत्या बृहतीरिषो ऋ० १०.१३४.३ ।

अवत्वे इन्द्रं ऋ० ६.४७.१४ ।

अद दिवस्तारयन्ति अ० ७.१०७.१ ।

अवद्यमिव मन्यमाना ऋ० ४.१८.५ ।

अव द्युतानः कलशां ऋ० ६.७५.३; सा० ७०२ ।

अव द्रप्सो अंशु० ऋ० ८.६६.१३; सा० ३२३;अ० २०.१३७.७; तै० आ० १.६.३; ऐ० ब्रा० ६.५.६; काठ० सं २८.१३; गो० ब्रा० उ० १.१६ ।

अवद्रुग्धानि पित्र्या ऋ० ७.८६.५ ।

अवद्रके अवत्रिका ऋ० १०.५९.९ ।

अवधीत् कामो अ० ९.२.११; पै० सं० १६.७६.१० ।

अव नो वृजिना ऋ० १०.१०५.८ ।

अवन्तमत्रये गृहं ऋ० ८.७३.७ ।

अवन्तु नः पितरः ऋ० १.१०६.३ ।

अवन्तु मामुषसो ऋ० ६.५२.४ ।

अवपतन्तीखदत् ऋ० १०.९७.१७; य० १२.९१; तै० सं० ४.२.६.१७; मै० सं० २.७.१८१; काठ० सं० १६.१६६; कपि० २५.४ ।

अव पद्यन्तामेषाम् अ० ८.८.२०; पै० सं० १६.३०.१० ।

अव बाधे द्विषन्तं अ० ४.३५.७ ।

अवभृथ निचुम्पुण य० ३.४८; ८.२७; मै० सं० १.३.११९; श० ब्रा० २.५२.४७; ४.४.५.२२; २३; कपि० ३.११; ४५.४ ।

अव मन्युखायताव अ० ६.६५.१; पै० सं० १९.११.११ ।

अव मा पाप्मन् अ० ६.२६.१; पै० सं० १९.१९.१ ।

अव यच्छ्येनो अस्वनीद् ऋ० ४.२७.३ ।

अव यत्त्वं शतक्रतव ऋ० १०.१३४.४ ।

अव यस्त्वे सदस्थे ऋ० ८.७९.९ ।

अव रुद्रमदीमह्यव य० ३.५८; श० ब्रा० २.६.२.११; कपि० ८.११ ।

अवर्तिरश्यमाना अ० १२.५.३७; पै० सं० १६.१४४.९ ।

अवर्त्या शुन आन्त्राणि ऋ० ४.१८.१३ ।

अवर्धयन् सुभगं ऋ० ३.१.४ ।

अवर्मह इन्द्र ऋ० १.१३३.६; ऐ० ब्रा० ५.२.७ ।

अवर्षावर्षमुदु ऋ० ५.८३.१० ।

अवविद्धं तौग्र्यमप्सु ऋ० १.१८२.६ ।

अववेदि होत्राभिः ऋ० ७.६०.९ ।

अवशसा निःशसा अ० ६.४५.२; पै० सं० १९.३६.५ ।

अवश्लक्ष्णमिव अ० २०.१३३.६ ।

अवश्वेत पदा अ० १०.४.३; पै० सं० १६.१५.४ ।

अव सिन्धुं वरुणो ऋ० ७.८७.६ ।

अव सृजन्नुपत्मना ऋ० १.१४२.११ ।

अवसृज पुनरग्ने ऋ० १०.१६.५; अ० १८.२.१०; तै० आ० ६.४.२; सं० वि० अन्त्ये० संस्कार ।

अवसृजा वनस्पते ऋ० १.१३.११ ।

अवसृष्टा परापत ऋ० ६.७५.१६; य० १७.४५; सा १८६३; अ० ३.१९.८; तै० सं० ४ ६.४.४, १३; तै० ब्रा० ३.७.६.२३; पै० सं० १.५६.४ ।

अव स्पृधि पितरं ऋ० ५.३.९ ।

अवस्म दुर्हणायतः ऋ० १०.१३४.२; सा० १०९२ ।

अवस्म यस्य वेषणे ऋ० ५.७.५ ।

अवस्यते स्तुवते ऋ० १.११६.२३ ।

अवस्य शूरा ध्वनो ऋ० ४.१६.२; अ० २०.७७.२ ।

अव स्यूमेव चिन्वती ऋ० ३.६१.४ ।

अव स्वयुक्ता दिव ऋ० १.१६८.४ ।

अव स्वराति गर्गरो ऋ० ८.६९.९; अ० २०.९२.६ ।

अव स्वेदा इवमितो ऋ० १०.१३४.५ ।

अश्वस्य त्वा वृष्णः य० ३७.६, श० ब्रा० १४.१.२.२०, २१; का० सं० ३७.६ ।

अश्वस्य वारो अ० २०.१२६.१८ ।

अश्वस्यात्र जनिमास्य ऋ० २.३५.६; सं० वि० विवाह संस्कार ।

अश्वस्याश्वतरस्य अ० ४.४.८ ।

अश्वस्यास्नः सम्पतिता अ० ५.५.६; पै० सं० ६.४.६ ।

अश्वं न गीर्भी ऋ० ८.१०३.७; सा० १५८४ ।

अश्वं न गूढहमश्विना ऋ० १.११७.४ ।

अश्वं न त्वा वारवन्तं ऋ० १.२७.१; सा० १७, १६३४; नि० १.२०; सं० ब्रा० २६; सा० ब्रा० ३.१.४.३ ।

अश्वा इवेदरुषासः ऋ० ५.५६.५ ।

अश्वादियायति तद्वदन्ति ऋ० १०.७३.१० ।

अश्वा न या वाजिना ऋ० ६.६७.४ ।

अश्वायन्तो गव्यन्तो ऋ० १०.१६०.५; अ० २०.९६.५; तै० ब्रा० २.५.८.१२ ।

अश्वावति प्रथमो ऋ० १.८३.१; अ० २०.२५.१ ।

अश्वावतीर्गोमतीर्न ऋ० ७.४१.७; ८०.३; य० ३४.४०; अ० ३.१६.७; तै० ब्रा० २.८.९.६; पै० सं० ११.६.१० ।

अश्वावतीर्गोमतीर्विश्व ऋ० १.१२३.१२ ।

अश्वावतीर्गोमतीर्विश्वसुविदो ऋ० १.४८.२ ।

अश्वावतीं प्रतर अ० १८.२.३१ ।

अश्वावतीं सोमावती ऋ० १०.९७.७; य० १२.८१; तै० सं० ४.२.६.१४; काठ० सं० १६.१५७; कपि० २५.४; मै० सं० २.७.१७३ ।

अश्वावन्तं रथिनं ऋ० १०.४७.५ ।

अश्वासो न ये ऋ० १०.७८.५ ।

अश्वासो ये वामुप ऋ० ७.७४.४ ।

अश्वाः कणा गावः अ० ११.३.५ ।

अश्विनकृतस्य ते य० २०.३५; का० सं० २२.२३ ।

अश्विना गोभिः य० २०.७३; काठ० सं० ३८.१०४; मै० सं० ३.११.३३ का० सं० २२.६१ ।

अश्विना घर्मं य० ३८.१२; श० ब्रा० १४.२.२.२०–२३; मै० सं० ४.९.१३३; का० सं० ३८.१२ ।

अश्विना तेजसा य० २०.८०; का० सं० २२.६८ ।

अश्विना त्वाग्रे अ० ३.४.४; पै० सं० ३.१.४ ।

अश्विना नमुचेः य० २०.५९; काठ० सं० ३८.९२; मै० सं० ३.११.१६; का० सं० २.२.४७ ।

अश्विना परिवामिषः ऋ० ३.५८.८ ।

अश्विना पिबतं ऋ० १.१५.११; तै० ब्रा० २.७.१२.१ ।

अश्विना पिबतां मधु० य० २०.९०; का० सं० २२.७८ ।

अश्विना पुरुदंससा ऋ० १.३.२; ऐ० ब्रा० ३.२.१ ।

अश्विना ब्रह्मणा अ० ५.२६.१२ ।

अश्विना भेषजं य० २०.६४; काठ० सं० ३८.९०; मै० सं० ३.११.२१ का० सं० २२.५२ ।

अश्विना मधुमत्तमं ऋ० १.४७.३ ।

अश्विना मधुषुत्तमो ऋ० ३.५८.९ ।

अश्विना यज्वरीरिषः ऋ० १.३.१ ऐ० ब्रा० १.१.४ ३.१.१; ।

अश्विना यद्ध कर्हिचित् ऋ० ५.७४.१० ।

अश्विना याम हूतमा ऋ० ७.७३.६ ।

अश्विना वर्तिरस्मदा ऋ० १.९२.१६ सा० १७३४; ऐ० ब्रा० ७.२.८ ।

अश्विना वाजिनीवसु ऋ० ५.७८.३ ।

अश्विना वायुना ऋ० ३.५८.७; ऐ० ब्रा० ४.२.५ ।

अश्विनावेह गच्छतं ऋ० ५.७५.७; नि० ३.२०; ऐ० ब्रा० ५.१.१ ।

अश्विनावेह गच्छतं नासत्या ऋ० ५.७८ १ ।

अश्विना सारघेण अ० ६.६९.२; ९.१.१९; पै० सं० १६.३३.६; १६ ३२.१४ ।

अश्विना सु विचाकशत् ऋ० ८.७३.१७ ।

अश्विना स्वृषे स्तुहि ऋ० ८.२६.१० ।

अश्विना हरिणाविव ऋ० ५.७८.२ ।

अश्विना हविरिन्द्रियं य० २०.६७; काठ० सं० ३८.९८; मै० सं० ३.११.२४; का० सं० २२.५५; ।

अश्विनोरसनं रथं ऋ० १.१२०.१० ।

अश्विभ्यां चक्षुरमृतं य० १९.८९; मै० सं० ३.११.८१; का० सं० २१.८९ ।

अश्विभ्यां पच्यस्व य० १०.३१; श० ब्रा० ५.३.३.२०—२२; कपि० सं० २.१० ।

अश्विभ्यां पिन्वस्व य० ३८.४; श० ब्रा० १४.२.१.११—१४; मै० सं० ४.९.११०; का० सं० ३८.४ ।

अश्विभ्यां प्रातः सवनम् य० १९.२६; का० सं० २१.२८ ।

अश्वी रथी सुरूप ऋ० ९.४.९; सा० २७७; सा० ब्रा० ३.१.८.१५ ।

अश्वी रथौ सुरूप सा० २७७ ।

अश्वेव चित्रारुषी ऋ० ४.५२.२ सा० १७२६ ।

अश्वो घृतेन त्मन्या य० २९.१०; तै० सं० ५.१.११.१०; का० सं० ३१.१० ।

अश्वो न क्रन्दन्जनिभिः ऋ० ३.२६.३ ।

अश्वो न क्रदो ऋ० ९.९७.२८ ।

अश्वो न चक्रदो ऋ० ९.६४.३; सा० ७८३ ।

अश्वो वोळहा ऋ० ९.११२.४; नि० ९.२ ।

अश्व्यो वारो ऋ० १.३२.१२ ।

अषाढं युत्सु ऋ० १.९१.२१; य० ३४.२०; तै० ब्रा० २.४.३.८; ७.४.१; मै० सं० ४.१२.२; का० सं० ३३.१४ ।

अषाढा सि सहमाना य० १३.२६; श० ब्रा० ७.४.२.३९; मै० सं० २.७.२१९; तै० सं० ४.२.९.५ ।

अषाळहं युत्सु ऋ० १.९१.२१; य० ३४. २०; तै० ब्रा० २.४.३.८; ७.४.१ ।

अषाळहमुग्रं पृतनासु ऋ० ८.७०.४; सा० ११५६; अ० २०.९२.१९ ।

अषाळहो अग्ने ऋ० ३.१५.४ ।

अष्ट च मेऽशीतिश्च अ० ५.१५.८; पै० सं० ८.५.८ ।

अष्ट जाता भूता अ० ८.९.२१ ।

अष्टधा युक्तो अ० १३.३.१९ ।

अष्टर्चेभ्यः स्वाहा० अ० १९.२३.५ ।

अष्टाचक्रं वर्तत अ० ११.४.२२ ।

अष्टाचक्रा नवद्वारा अ० १०.२.३१; पै० सं० १६.६२.३ ।

अष्टादशर्चेभ्यः स्वाहा अ० १०.२३.१५ ।

अष्टापदी चतुरक्षी अ० ५.१९.७; पै० सं० ९.१८.१० ।

अष्टामहो दिवो ऋ० १.१२१.८ ।

अष्टाविंशानि शिवानि अ० १९.८.२; ऋ०

असावन्यो असुर ऋ० १०.१३२.४ ।

असावि ते जुजुषाणाय ऋ० ५.४३.५ ।

असावि देवं गो ऋ० ७.२१.१; सा० ३१३; ऐ० ब्रा० ६.३.३; आ० ब्रा० ६.२.५.५ ।

असावि सोम ऋ० १.८४.१; सा० ३४७, १०२८; तै० सं० १.४.३६.१; तां० ब्रा० १२.१३.१७; १३.६.५ ।

असावि सोमः पुरुहूत ऋ० १०.१०४.१ ।

असावि सोमो अरुषो ऋ० ६.८२.१; सा० ५६२, १३१६ ।

असाव्यं शुर्मदायाप्सु ऋ० ६.६२.४; सा० ४७३, १००८; तां० ब्रा० १३.५.१; आ० ब्रा० ६.१.४.४ ।

असिक्न्यां यजमानो ऋ० ४.१७.१५ ।

असितस्य ते ब्रह्मणा अ० १.१४.४ ।

असितस्य तैमातस्य अ० ५.१.६; पै० सं० १.४४.१; ८.२.४ ।

असितं ते प्रलयनं अ० १.२३.३; पै० सं० १.१६.३ ।

असि यमो अस्यादित्यः ऋ० १.१६३.३; य० २६.१४; तै० सं० ४.६.७.१; काठ० सं० ४०.३७; काठ० सं० ३१.२६ ।

असि हि वीर ऋ० १.८१.२; सा० १००३; अ० २०.५६.२ ।

असुनीते पुनरस्मासु ऋ० १०.५६.६; ऋ० भू० पुनर्जन्मविषय ।

असुनीते मनो ऋ० १०.५६.५; नि० १०.३८ ।

असुन्वन्तमयजमानम् य० १२.६२; काठ० सं० १६.१३६; श० ब्रा० ७.२.१.६; मै० सं० २.७.१४५; तै० सं० ४.२.५.१०; कपि० २५.३ ।

असुन्वन्तं समंजहि ऋ० १.१७६.४; मै० सं० २.७.१४५ ।

असुन्वामिन्द्र संसदं ऋ० ८.१४.१५; अ० २०.२६.५ ।

असुराणां दुहितासि अ० ६.१००.३; पै० सं० १६.१३.६ ।

असुरास्त्वा न्यखनन् अ० ६.१०६.३; पै० सं० १६.२७.१० ।

असूत पूर्वो वृषभो ऋ० ३.३८.५ ।

असूत पृश्निर्महते ऋ० १.१६८.६ ।

असूतिका रामाय अ० ६.८३.३; पै० सं० १.२१.४ ।

असूर्या नाम ते य० ४०.३; ल० ग्र० भ्रान्ति० पृष्ठ ३०७; ऋ० भू० भाष्यकरणशंका-समाधानविषय; जी० दे० २.२६; द० शा० ६६; का० सं० ४०.३ ।

असृक्षत प्र वाजिनो ऋ० ६.६४.४; सा० ४८२, १०३४; तां० ब्रा० १३.७.५ ।

असृग्रं देववीतये सा० १८१२ ।

असृग्रन्देववीतये ऋ० ६.४६.१ ।

असृग्रन्देववीतये वाजयन्तो ऋ० ६.६७.१७; सा० १८१२ ।

असृग्रमिन्द्र ते गिरः ऋ० १.६.४; सा० २०५; अ० २०.७१.१० ।

असृग्रमिन्दवः पथा ऋ० ६.७.१; सा० ११२८ ।

असेन्या वः पणयो ऋ० १०.१०८.६ ।

असौ च या न ऋ० ८.६१.६ ।

असौ मे स्मरतादिति अ० ६.१३०.२ ।

असौ य एषि ऋ० ८.६१.२ ।

असौ यस्ताम्रो अरुण य० १६.३; काठ० सं० १७.३८; मै० सं० २.६.१६; तै० सं० ५.१.७; कपि० २७.१ ।

असौ यः पन्था ऋ० १.१०५.१६ ।

असौ या सेना य० १७.४७ ।

असौ य सेना मरुतः सा० १८६०; अ० ३.२.६; पै० सं० ३.५.६ ।

असौ यो अधराद् अ० २.१४.३ ।

असौ योऽवसर्पति य० १६.७; काठ० सं० १७.३६; मै० सं० २.६.२०; तै० सं० ४.५.१.८; कपि० २७.१ ।

असौ हा इह ते अ० १८.४.६६; पै० सं० २०.६०.६ ।

अस्कन्नमद्य देवेभ्यः य० २.८; श० ब्रा० १.४.५.१–३; कपि० १.१२; ४७.११ ।

अस्तभ्नाद्द्यामसुरो ऋ० ८.४२.१; य० ४.३०; तै० सं० १.२.८; ५; ऐ० ब्रा० १.२.४ मै० सं० १.२.३६; ३.७.१३ ।

अस्तन्यते नमोऽस्त अ० १७.१.२३; पै० सं० १८.३२.७ ।

अस्तावि मन्म पूर्व्यं ऋ० ८.५२.६; सा० १६७७; अ० २०.११६.१ ।

अस्ताव्यग्निर्नरां सुशेवो ऋ० १०.४५.१२; य० १२.२६; मै० सं० २.७.११७; कपि० ३२.१ ।

अस्ताव्यग्निः शिमीवद्भिः ऋ० १.१४१.१३; मै० २.७.११७ ।

अस्ति देवा अंहोरुः ऋ० ८.६७.७ ।

अस्ति सोमो अयं ऋ० ८.६४.४; सा० १७४, १७८५; तां० ब्रा० ६.७.१ ।

अस्ति हि वः सजात्यं ऋ० ८.२७.१०; नि० ६.१४ ।

अस्ति हि वामिह ऋ० ५.७४.६ ।

अस्ति हि ष्मा ऋ० १.३७.१५ ।

अस्तीदमधिमन्थनं ऋ० ३.२६.१ ।

अस्तु श्रौषद् ऋ० १.१३६ १; सा० ४६१; मै० १.४.५०; ४.१.६८; ४.६.१३१; ऐ० ब्रा० ५.२.७ ।

अस्तेव सु प्रतरं ऋ० १०.४२.१; अ० २०.८९.१ ।

अस्तोढ्वं स्तोभ्या ऋ० १.१२४.१३ ।

अस्त्रा नीलशिखण्डेन अ० ११.२.७ ।

अस्थाद् द्यौरस्थात् अ० ६.४४.१; ७७.१; पै० सं० ३.४०.५; ६.१०.११; १६.१६.१; २०.५६.३ ।

अस्थि कृत्वा समिधं अ० ११.८.२६; पै० सं० १६.८७.१० ।

अस्थिजस्य किलासस्य अ० १.२३.४ ।

अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः अ० २.३३.६; २०.९६.२२. पै० सं० ४.७.५ ।

अस्थिस्रंसं परुस्रंसम् अ० ६.१४.१; पै० सं १६.१३.७ ;

अस्थीन्यस्य पीडय अ० १२.५.७० ।

अस्थुरु चित्रा ऋ० ४.५१.२ ।

अस्मभ्यमिन्दविन्द्रयुः ऋ० ६.२.६; सा० १०४६ ।

अस्मभ्यं गातुवित्तमः ऋ० ६.१०६.६ ।

अस्मभ्यं तद्दिवो ऋ० २.३८.११; काठ० सं० १७.१०६ ।

अस्मभ्यं तद्वसो ऋ० २.१३.२३; १४.१२ ।

अस्मभ्यं ताँ अपा ऋ० ४.३१.१३ ।

अस्मभ्यं त्वा वसुविद् ऋ० ६.१०४.४; सा० ५७५ ।

अस्मभ्यं रोदसी ऋ० ६.७.६ सा० ११३६ ।

अस्मभ्यं सुत्वमिन्द्रता ऋ० १०.१३३.७ ।

अस्मभ्यं सुवृषरावसु ऋ० ८.२६.१५ ।

अस्मा अस्मा इदन्धसो ऋ० ६.४२.४; सा० १४४३।

अस्मा इत्काव्यं ऋ० ५.३९.५।

अस्मा इदुग्नाश्चित् ऋ० १.६१.१८; अ० २०.३५.८।

अस्मा इदुत्यदनु ऋ० १.६१.१५; अ० २०.३५.१५।

अस्मा इदु त्यमुपमं ऋ० १.६१.३; अ० २०.३५.३।

अस्मा इदु त्वष्टा ऋ० १.६१.६; अ० २०.३५.६।

अस्मा इदु प्रतवसे ऋ० १.६१.१; अ० २०.३५.१; नि० ५.११; ६.१२; ऐ० ब्रा० ६.४.२; गो० ब्रा० उ० ५.१५।

अस्मा इदु प्रभरा ऋ० १.६१.१२; अ० २०.३५.१२; नि० ६.२१; मै० सं० ४.१२.५६; काठ० सं० ८.५५।

अस्मा इदु प्रय ऋ० १.६१.२; अ० २०.३५.२।

अस्मा इदु सप्तिमिव ऋ० १.६१.५; अ० २०.३५.५।

अस्मा इदु स्तोमं ऋ० १.६१.४; अ० २०.३५.४।

अस्मा उक्थाय ऋ० ५.४५.३।

अस्मा उ ते महि ऋ० ६.१.१०; तै० ब्रा० ३.६.१०.४; ऐ० ब्रा० २.१.१०; मै० सं० ४.१३.५६; काठ० सं० १८.१२३।

अस्मा उषास ऋ० ८.९६.१।

अस्मा ऊषु प्रभूतये ऋ० ८.४१.१।

अस्मा एतद्दिव्य चेंव ६.३४.४।

अस्मा एतन्मह्यांगूषं ऋ० ६.३४.५।

अस्माकमग्ने अध्वरं ऋ० ५.४.८।

अस्माकमग्ने मघवत्सु ऋ० १.१४०.१०; मै० सं० ४.११.२१।

अस्माकमग्ने मघवत्सु धारया ऋ० ६.८.६; तै० सं० १.५.११.७।

अस्माकमत्र पितरः ऋ० ४.४२.८; श० ब्रा० १३.५.४.५।

अस्माकमत्र पितरो मनुष्या ऋ० ४.१.१३।

अस्माकमद्य वामयं ऋ० ८.५.१८।

अस्माकमद्यान्तमं ऋ० ८.३३.१५।

अस्माकमायुर्वर्धय ऋ० ३.६२.१५; ऐ०ब्रा० १.५.४।

अस्माकमित्सु शृणुहि ऋ० ४.२२.१०।

अस्माकमिन्द्र दुष्टरं ऋ० ५.३५.७।

अस्माकमिन्द्र भूतु ते ऋ० ६.४५.३०।

अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ऋ० १०.१०३.११; य० १७.४३; सा० १८५९; अ० १९.१३.११; काठ० सं० १८.५४ तै० सं० ४.६.४.३; १०; कपि० २८.५; मै० सं० २.१०.४३; ४.१४.१९७।

अस्माकमिन्द्रा वरुणा ७.८२.९।

अस्माकमिन्द्रेहि नो ऋ० ५.३५.८।

अस्माकमुत्तमं कृधि ऋ० ४.३१.१५।

अस्माकमूर्जा रथं ऋ० १०.२६.९।

अस्माकं जोष्यध्वरं ऋ० ४.९.७।

अस्माकं त्वा मतीनां ऋ० ४.३२.१५।

अस्माकं त्वा सुतां ऋ० ८.६.४२।

अस्माकं देवा ऋ० १०.३७.११।

अस्माकं धृष्णुया ऋ० ४.३१.१४।

अस्माकं मित्रावरुणा ऋ० २.३१.१।

अस्माकं व इन्द्रमुश्मसि ऋ० १.१२९.४।

अस्माकं शिप्रिणीनां ऋ० १.३०.११।

अस्माकं सु रथं ऋ० ८.४५.६ ।
अस्माकेभिः सत्वभिः ऋ० २.३०.१० ।
अस्मात्त्वमधि जातो य० ३५.२२; का० सं० ३५.५५ ।
अस्मादहं तविषादीषमाणः ऋ० १.१७१.४ ।
अस्मान्त्समर्ये पवमान ऋ० ६.८५.२ ।
अस्मान्त्सु तत्र चोदय ऋ० १.६.६; अ० २०.७१.१२ ।
अस्माँ अवन्तु ते ऋ० ४.३१.१० ।
अस्माँ अविड्ढि ऋ० ४.३१.१२ ।
अस्मा इहा वृणीष्व ऋ० ४.३१.११ ।
अस्मिन्त्समुद्रे अध्युत्तर ऋ० १०.६८.६ ।
अस्मिन्त्स्वे[3] तच्छकपूत ऋ० १०.१३२.५ ।
अस्मिन्न इन्द्र ऋ० १०.३८.१ ।
अस्मिन्निन्द्रो नि दधातु अ० ८.५.२१; पै० सं० १६.२८.१० ।
अस्मिन्पदे परमे ऋ० २.३५.१४ ।
अस्मिन् मणावेकशतं अ० १६.४६.५; पै० सं० ४.२३.४ ।
अस्मिन् महत्यर्णवे य० १६.५५; श० ब्रा० ६.१.१.२६; तै० सं० ४.५.११.२; कपि० २७.६ ।
अस्मिन्यजे अदाभ्या ऋ० ५.७५.८; ऐ० ब्रा० ५.१.१ ।
अस्मिन् वयं सङ्कसुके अ० १६.२.१३; पै० सं० १७.३१.३ ।
अस्मिन् वसु वसवो अ० १.६.१; पै० सं० १.१६.१ ।
अस्मे आ वहतं ऋ० ८.५.१५ ।
अस्मे इन्द्र सचा ऋ० ८.६७.८ ।
अस्मे इन्द्रा बृहस्पती ऋ० ४.४६.४; तै० सं० ३.३.११.३ मै० ४.१२.१२; काठ० सं० १०.५० ।
अस्मे इन्द्रा वरुणा ऋ० ७.८४.४ ।
अस्मे इन्द्रो वरुणो ऋ० ७.८२.१०; ८३.१० ।
अस्मे ऊ षु वृषणा ऋ० १.१८४.२ ।
अस्मे तदिन्द्रावरुणा ऋ० ३.६२.३ ।
अस्मे ता त इन्द्र ऋ० १०.२२.१३ ।
अस्मे धेहि द्युमतीं ऋ० १०.६८.३ ।
अस्मे धेहि द्युमद्यशो ऋ० ६.३२.६ ।
अस्मे धेहि श्रवो ऋ० १.६.८; अ० २०.७१.१४ ।
अस्मे प्र यन्धि ऋ० ३.३६.१०; नि० ६.७; सं० वि० जात० निष्क्र० संस्कार ।
अस्मे रयिं न ऋ० १.१४१.११ ।
अस्मे रायो दिवेदिवे ऋ० ४.८.७ ।
अस्मे रुद्रा मेहना ऋ० ८.६३.१२; य० ३३.५०; का० सं० ३२.५० ।
अस्मे वत्सं परिषन्तं ऋ० १.७२.२ ।
अस्मे वर्षिष्ठा ऋ० ४.२२.६ ।
अस्मे वसूनि ऋ० ६.६३.३० ।
अस्मे वीरो मरुतः ऋ० ७.५६.२४ ।
अस्मे वो अस्त्विन्द्रियम् य० ६.२२; श० ब्रा० ५.२.१.१५; १८, २५; कपि० ४५.४ ।
अस्मे श्रेष्ठेभिः ऋ० ७.७७.५ ।
अस्मे सा वां माध्वी ऋ० १.१८४.४ ।
अस्मे सोम श्रियम् ऋ० १.४३.७ ।
अस्मै क्षत्रमग्नीषोमा अ० ६.५४.२ ।
अस्मै क्षत्राणि धारयन्तं अ० ७.७८.२ ।
अस्मै ग्रामाय अ० ६.४०.२; पै० सं० १.२७.४ ।
अस्मै तिस्रो ऋ० २.३५.५; सं० वि० विवाह संस्कार ।

४.३०.८।

अहमेव स्वयमिदं ऋ० १०.१२५.५; अ० ४.३०.३।

अहमेवास्यमावास्या अ० ७.८४.२।

अहरहरप्रयावं य० ११.७५; श० ब्रा० ६.६.३.६–८; कपि० ३०.८।

अहरहर्बलिमित्ते अ० १६.५५.७; पै० सं० २०.४७.१० ऋ० भू० बलिवै० विषय, ल० प० वि० पृ० २५७।

अहल कुश वर्त्तक अ० २०.१३१.६।

अहश्च कृष्णमहरर्जुनं ऋ० ६.६.१; नि० २.२१ ऐ० ब्रा० ५.२.१०।

अहश्च रात्री च अ० १५.२.२०।

अहस्ता यदपदी ऋ० १०.२२.१४।

अहं केतुना जुषतां य० ३७.२१; श० ब्रा० १४.२ १.१; मै० सं० ४६.१२६; का० सं० ३२.२१।

अहं केतुरहं मूर्धा ऋ० १०.१५६.२।

अहं गर्भमदधां ऋ० १०.१८३.३; ऐ० ब्रा० १.४.४।

अहं गुङ्गुभ्यो अतिथिग्वं ऋ० १०.४८.८।

अहं गृभ्णामि अ० ३.८.६; ६.६४.२।

अहं च त्वं च ऋ० ८.६२. ११; नि० १.४; तै० स० ७.४.१५.१।

अहं चन तत्सूरिभिः ऋ० ६.२६.७।

अहं जजान पृथिवी अ० ६.६१.३।

अहं तदासु धारयं ऋ० १०.४६.१०।

अहं तष्टेव ऋ० १०.११६.५।

अहं ता विश्वा ऋ० ४.४२.६।

अहं दां गृणते ऋ० १०.४६.१।

अहं पचाम्यहं अ० १२.३.४७।

अहं पशूनामधिपा अ० १६.३१.६।

अहं पितेव वेतसूं ऋ० १०.४६.४।

अहं पुरो मन्द० ऋ० ४.२६.३।

अहं प्रत्नेन मन्मना ऋ० ८.६.११; सा० १५०१; अ० २०.११५.२।

अहं भुवं वसुनः ऋ० १०.४८.१; स० प्र० ७ समु० ऐ० ब्रा० ५.४.२।

अहं भूमिमददामार्याय ऋ० ४.२६.२।

अहं मनुरभवं ऋ० ४.२६.१।

अहं रन्धयं मृगयं ऋ० १०.४६.५।

अहं राजा वरुणो ऋ० ४.४२.२।

अहं राष्ट्री संगमनी ऋ० १०.१२५.३; अ० ४.३०.२।

अहं रुद्राय धनुरा ऋ० १०.१२५.६; अ० ४.३०.५।

अहं रुद्रेभिर्वसुभिः १०.१२५.१; अ० ४.३०.१।

अहं वदामि नेत्त्वं अ० ७.३८.४।

अहं विवेच पृथिवी० अ० ६.६१.२; सं० वि० विवाह संस्कार।

अहं विष्यामि मयि अ० १४.१.५७।

अहं सप्त स्रवतो ऋ० १०.४६.६।

अहं सप्तहा नहुषो ऋ० १०.४६.८।

अहं स यो नववास्त्वं ऋ० १०.४६.६।

अहं सुवे पितरमस्य ऋ० १०.१२५.७; अ० ४.३०.७।

अहं सूर्यस्य परि ऋ० १०.४६.७।

अहं सो अस्मि ऋ० १.१०५.७।

अहं सोममाहनसं ऋ० १०.१२५.२; अ० ४.३०.६।

अहं हि ते हरिवो ऋ० ८.५३.८।

अहं हुवान आर्क्षे ऋ० ६.७४.१३।

अहं होता न्यसीदं ऋ० १०.५२.२।

१९.२४.८।

आकूत्यै प्रयुजेऽग्नये य० ४.७; काठ० सं० २.५; तै० सं० १.२.२.१; ६.१.२.३; श० ब्रा० ३.१.४.६–९; १५; मै० सं० १.२. ११; ३.६.६; कपि० १.१४; ३५.८।

आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो य० ३३.४३; ३४.३१; मै० ४.१२.१७०; ४.१४.८३।

आकृष्णेन रजसा ऋ० १.३५.२; य० ३३. ४३; ३४.३१; तै० सं० ३.४.११.२; काठ० सं० ३२.४३; मै० सं० ४.१२. १७०; ४.१४.८३; स० प्र० अष्ट० समु०; नवम समु०; ऋ० भू० आकर्षणानुकर्षण विषय।

आकेनिपासो अहभिः ऋ० ४.४५.६।

आ क्रन्दय धनपते अ० २.३६.६; पै० सं० १९.४१.१३।

आ क्रन्दय बलम् ऋ० ६.४७.३०; य० २९. ५६; अ० ६.१२६.२; तै० सं० ४.६.७.७; मै० ३.१६.४८; पै० सं० १५.११.१०।

आ क्रम्य वाजिन् य० ११.१९; काठ० सं० १६.१२; श० ब्रा० ६.३.३.११; मै० सं० २.७.२१; तै० सं० ४.१.२.१२; कपि० ३.१।

आ श्रावयेति य० १९.२४।

आक्षित्पूर्वास्वपरा ऋ० ३.५५.५।

आ क्षोदो महि ऋ० ६.१७.१२।

आक्षणयावानो वहन्ति ऋ० ८.७.३५।

आक्ष्वैकं मणिमेकं अ० १९.४५.५; पै० सं० १५.४.५।

आगच्छत आगतस्य अ० ६.८२.१; पै० सं० १९.१७.४।

आगत्य वाज्यध्वानं य० ११.१८; काठ० सं० १६.११; श० ब्रा० ६.३.३.८; मै० सं० २.७.२०; तै० सं० ५.१.२.१७; कपि० ३०.१।

आगधिता परिगधिता ऋ० १.१२६.६; नि० ५.१५।

आ गन्ता मा रिषण्यत ऋ० ८.२०.१; सा० ४०१।

आगन्देव ऋतुभिर्वर्धतु ऋ० ४.५३.७; ऐ० ब्रा० १.३.२।

आगन्नृभूणामिह ऋ० ४.३५.२।

आगन्म विश्ववेदसम् य० ३.३८; श० ब्रा० २.४.१.८।

आगन्म वृत्रहन्तमं ऋ० ८.७४.४; सा० ८९; जैमि० १.९. ९; ऐ० ब्रा० १.१.१।

आगन् रात्री संगमनी अ० ७.७९.३; पै० सं० १.१०३.१

आगादुदगादयं अ० २.९.२; पै० सं० २.१०. ४।

आ गावो अग्मन् ऋ० ६.२८.१; अ० ४. २१.१; तै० ब्रा० २.८.८.११।

आ गृहणीतं सं बृहतं अ० ११.९.११।

आ गोमता नासत्या ऋ० ७.७२.१; ऐ० ब्रा० ५.३.१; ७.२.८।

आग्ना अग्न ऋ० १.२२.१०।

अग्निरगामि भारतो ऋ० ६.१६.१९; काठ० सं० २०.३१।

अग्नि न स्ववृक्तिभिः ऋ० १०.२१.१; सा० ४२०; ऐ० ब्रा० ५.१.४; ऐ० आ० ५. ३.२।

आग्ने गिरो दिव ऋ० ७.३९.५।

आग्नेयः कृष्णग्रीवः य० २९.५८; तै० सं० ५.५.२२.१; का० सं० ३१.५९।

आग्ने याहि ऋ० ८.१०३.१४।

आग्ने वह वरुणं ऋ० १०.७०.११ ।

आग्ने वह हविः ऋ० ७.११.५ ।

आग्ने स्थूरं रयिं ऋ० १०.१५६.३; सा० १५२९ ।

आग्मन्नाप उशतीर्बर्हिः ऋ० १०.३०.१५ ।

आग्रयणश्च मे य० १८.२०; कपि० २८.११ ।

आग्रवभिरहन्येभिः ऋ० ५.४८.३ ।

आ घा गमद्यदि श्रवत् ऋ० १.३०.८; सा० ७४५; अ० २०.२६.२ ।

आ घा ता गच्छानुत्तरा ऋ० १०.१०.१०; अ० १८.१.११; नि० ४.२० ।

आ घा त्वावान् ऋ० १.३०.१४; सा० १०८५; अ० २०.१२२.२ ।

आ घा ये अग्निम् ऋ० ८.४५.१; य० ७.३२; सा० १३३, १३३८; नि० ६.१४; तै० ब्रा० २.४.५.७; ऐ० ब्रा० ५.२.४; मै० ४.१२.१४९; कपि० ३.१; ४१.८; काठ० स० १३.६० ।

आ घा योषेव ऋ० १.४८.५ ।

आङ्गिरसानामाद्यैः अ० १९.२२.१ ।

आ च त्वामेता ऋ० ३.४३.४ ।

आ च न त्वा चिकित्सामो ऋ० ८.९१.३ ।

आ च नो बर्हिः ऋ० ७.५९.६ ।

आ चर्षणिप्रा वृषभो ऋ० १.१७७.१; तै० ब्रा० २.४.३.११; मै० ४.१४.२७३; काठ० सं० ३८.८२ ।

आ च वहासि तां ऋ० १.७४.६ ।

आ चष्ट आसां ऋ० ७.३४.१०; नि० ६.७ ।

आचार्य उपनयमानो अ० ११.५.३ पै० सं० १६.१५३.२; सं प्र०— एका० समु०; ऋ० भू० शंकासमाधान; सं० वि० वेदारम्भ-संस्कार ।

आचार्यस्ततक्ष अ० ११.५.८ ।

आचार्यो ब्रह्मचारी अ० ११.५.१६; गो० ब्रा० पू० २.५; पै० सं० १६.१५४.६; स० प्र० दशमसमु० ।

आचार्यो मृत्युर्वरुणः अ० ११.५.१४ ।

आ चिकितान सुक्रतू ऋ० ५.६६.१; ऐ० ब्रा० ५.१.४ ।

आच्छच्छन्दः प्रच्छच्छन्दः य० १५.५; श० ब्रा० ८.५.२.४–६; कपि० २६.५ ।

आच्छद्विधानैर्गुपितः ऋ० १०.८५.४; अ० १४.१.५; पै० सं० १८.१.५ ।

आच्या जानु दक्षिणतो ऋ० १०.१५.६; य० १९.६२; अ० १८.१.५२; का० सं० २१.६४ ।

आ जनं त्वेष संदृशं ऋ० १०.६०.१ ।

आ जनाय द्रुह्वणे ऋ० ६.२२.८; अ० २०.३६.८ ।

आ जङ्घन्ति सान्वेषां ऋ० ६.७५.१३; य० २९.५०; तै० सं० ४.६.६.१३; नि० ९.२०; मै० ३.१६.४६; का० सं० ३१.२२ ।

आ जागृविर्विप्र ऋतं ऋ० ९.९७.३७; सा० १३५७; तां० ब्रा० १५.९.३ ।

आ जातं जातवेदसि ऋ० ६.१६.४२; तै० सं० ३.५.११.४; ऐ० ब्रा० १.३.५; मै० ४.१०.६८ ।

आजामि त्वाजन्या अ० ३.२५.५ ।

आजामिरत्के अव्यत ऋ० ९.१०१.१४; सा० १३८७ ।

आजासः पूषणं ऋ० ६.५५.६; नि० ६.४ ।

आ जिघ्र कलशं य० ८.४२; तै० सं० ७.६६.१० ।

आ जितुरं सत्पतिं ऋ० ८.५३.६; ऐ० ब्रा० ४.५.१ ।

आजिपते ऋ० ८.५४.६ ।

आ जुहोता दुवस्यता ऋ० ५.२८.६; तै० ब्रा० ३.५.२.३; श० ब्रा० १.४.१.३८; ३९ ।

आ जुहोता स्वध्वरं ऋ० ३.९.८; नि० ४.१४ ।

आ जुहोता हविषा सा० ६३; सा० ब्रा० ३.१४.६ ।

आ जुह्वान ईड्यो अ० ५.५२.३ ।

आ जुह्वान ईड्यो वन्द्य ऋ० १०.११०.३; य० २९..२८; अ० ५.५२.३; नि० ८.८; तै० ब्रा० ३.६.३२; काठ० सं० १६.२३१; नि० ८.८; मै० सं० ४.१३.१४; का० सं० २१.४० ।

आ जुह्वानः सुप्रतीकः य० १७.७३; काठ० सं० १८.४०; श० ब्रा० ९.२.३.३५; मै० सं० २.१०.६३; तै० सं० ४.६.५.१०, कपि० २८.४ ।

आजुह्वाना सरस्वती य० २०.५८; काठ० सं० ३८.९१; मै० सं० ३.११.१५; का० सं० २२.४६ ।

अजुह्वानो न ईड्यो ऋ० १.१८८.३ ।

आज्यस्य परमेष्ठिन् अ० १.७.२; पै० सं० ४.४.२ ।

आज्यं बिभर्ति अ० ९.४.७ ।

आञ्जनगन्धिं सुरभिं ऋ० १०.१४६.६; तै० ब्रा० २.५.५.७ ।

आञ्जनस्य मदुघस्य अ० ६.१०२.३; पै० सं० २.७७.२; १९.१४.३ ।

आञ्जनं पृथिव्यां अ० १९.४४.३; पै० सं० १५.३.३ ।

आ त इन्द्र ऋ० ८.६५.४ ।

आ त इन्द्रोमदाय ऋ० ९.६२.२० ।

आ त एता ऋ० ८.४५.३९ ।

आ त एतु मनः ऋ० १०.५७.४; य० ३.५४; तै० सं० १.८.५.२ ।

आ तक्षत सातिमस्मभ्यं ऋ० १.१११.३ ।

आ तत्त इन्द्रायवः ऋ० १०.७४.४; य० ३३.२८ ।

आ तत्ते दस्रमतुमः १.४२.५ ।

आ तन्वाना आयच्छान्तो अ० ६.६६.२; पै० सं० १९.११.१२ ।

आ तं भज सौश्रवेषु ऋ० १०.४५.१०; य० १२.२७; तै० सं० ४.२.२.९; काठ० सं० १६.१०७; मै० सं० २.७.११५; १६.१०७ ।

आतिथ्यरूपं मासरं य० १९.१४; का० सं० २१.१६ ।

अतिष्ठतं सुवृतं ऋ० १.१८३.३ ।

आतिष्ठन्तं परि विश्वे ऋ० ३.३८.४; य० ३३.२२; अ० ४.८.३; तै० ब्रा० २.७.८.१; काठ० सं ३७.२४; श० ब्रा० १५.५.२.१५; का० सं ३३.२२; पै० सं० ४.२.३ ।

आतिष्ठ रथं वृषणं ऋ० १.१७७.३ ।

आतिष्ठ वृत्रहन् ऋ० १.८४.३; य० ८.३३; सा० १०२९; तै० सं० १.४.३७.१; काठ० सं० ३७.२३; श० ब्रा० ४.५.४.९ ।

आ तू गाहि ऋ० ८.१३.१४ ।

आ तू न इन्दो ऋ० ९.७२.९; ऐ० आ० ५.२,४ ।

आ तू न इन्द्र कौशिक ऋ० १.१०.११ ।

आ तू इन्द्र क्षुमन्तं ऋ० ८.८१.१; सा० १६७; ७२८; तां ब्रा० ६.२.१३ सा० ब्रा० ३.१.४.१६ ।

आ तू न इन्द्र मद्र्यक ऋ० ३.४१.१; अ० २०.२३.१; काठ० सं० ६.३१; मै० सं० ४.११.६७ ।

आ तू न इन्द्र वृत्रहन् ऋ० ४.३२.१; य० ३३.६५; सा० १८१; मै० सं० ४.११.६७; काठ० सं० ६.३१; का० सं० ३२.६५; श० ब्रा० ६.३.१.२; सा० ब्रा० २.१.४.२।

आ तू भरमाकिरेत ऋ० ३.३६.६; तै० सं० १.७.१३.३; ८; काठ० सं० ६.३८ ।

आ तू षिञ्च कण्वमतं ऋ० ८.२.२२ ।

आ तू षिञ्च हरिमिन्द्रो ऋ० १०.१०१.१०; नि० ४.१६ ।

आ तू सुशिप्र ऋ० ८.६६.१६; अ० २०. ६२.१३ ।

आ ते अग्न इधीमहि ऋ० ५.६.४; सा० ४१६; १०२२; अ० १८.४.८८; तै ब्रा० ४.४.४.६; काठ० सं० २.२७; ३६.१०१; ६.२७ ।

आ ते अग्न ऋचा ऋ०६.१६.४७; काठ० सं० ३६.१०२ ।

आ ते अग्न ऋचा हविः ऋ० ५.६.५; सा० १०२३; तै० सं० ४.४.४.६; २०; मै० २.१३.४३ ।

आ ते कारो ऋ० ३.३३ १०; नि० २.२७ ।

आ ते तस्थुः पृषतीषु ऋ० ५.६०.२ ।

आ ते दक्षं मयोभुवं ऋ० ६.६५. २८, सा० ४६८; ११३७ ।

आ ते दक्षं विरोचना ऋ० ८.६३.२६ ।

आ ते ददे वक्षणाभ्यः अ० ७.११४.१; पै० सं० २०.१६.३ ।

आ ते दधामीन्द्रियं ऋ० ८.६३.२७ ।

आ ते नयतु सविता अ० २.३६.८; पै० सं० २०.२४.५ ।

आ तेन यातं मनसो ऋ० १०.३६.१२; ऐ० आ० २.३.८ ।

आ ते पितर्मरुतां ऋ० २.३३.१; तै० ब्रा० २.८.६.६; ऐ ब्रा० ३.३.१० ।

आ ते प्राणं सुवामसि अ० ७.५३.६ ।

आ ते मह इन्द्रोत्युग्र ऋ० ७-२५.१; तै० सं० १.७.१३.२; ६; ऐ० आ० ५.२.२; मै० ४.१२.७७; काठ० सं० ८.४३ ।

आ ते योनिं गर्भ अ० ३.२३.२ ।

आ ते रथस्य पूषन् ऋ० १०.२६.८ ।

आ ते राष्ट्रम् अ० १३.१.५; पै० सं० १८. १५.५ ।

आ ते रुचः पवमानस्य ऋ० ६.६६.२४ ।

आ ते वत्सो मनो ऋ० ८.११.७; य० १२.११५; सा० ८; ११६६; कपि० ४१.८; ताण्डय ब्रा० १४.६.१; श० ब्रा० ७.३.२.८; सा० ब्रा० ३.२.६.१५ ।

आ ते वृषन् वृषणो ऋ० ६.४४.२० ।

आ तेऽवो वरेण्यं ऋ० ५.३५.३ ।

आ ते शुष्मो वृषभ ऋ० ६.१६.६; तै० ब्रा० २.५.८.१; ८.५.६; काठ० सं० ६.६.६ ।

आ सपर्यू जवसे ऋ० ३.५०.२ ।

आ ते सिञ्चामि अ० २०.४.२ ।

आ ते सिञ्चामि कुक्ष्योः ऋ० ८.१७.५; अ० २०.४.२ ।

आ ते सुपर्णा अभिनन्त ऋ० १.७६.२ तै० सं० ३.१.११.२१; काठ० सं० ११.४६.

आ ते स्तोत्राणि अ० ५.११.६ ।

आ ते स्वस्तिमीमह ऋ० ६.५६.६।

आ ते हनू हरिवः ऋ० ५.३६.२।

आतोदिनौ नितोदिनौ अ० ७.९५.३।

आत्मने वर्चोदा य० ७.२८।

आत्मन्नुपस्थे न वृकस्य य० १९.९२; काठ० सं० ३८.३९; मै० सं० ३.११.८४; का० सं०२१.९२।

आत्मन्वत्युर्वरा अ० १४.२.१४।

आत्मवन्नभो दुह्यते ऋ० ९.७४.४; काठ० सं० ३५.३८; ऐ० ब्रा० १.४.५।

आत्मा ते वातो ऋ० ७.८७.२।

आत्मा देवानां भुवनस्य ऋ० १०.१६८.४; जै० ब्रा० ३.२.४।

आत्मनं ते मनसा ऋ० १.१६३.६; य० २९.१७; तै० सं० ४.६.७.२; ६; श० ब्रा० ४.५.६.३; का० सं ३१.२६।

आत्मानं पितरं अ० ९.५.३०।

आत्मा पितुस्तनूर्वासः ऋ० ८.३.२४।

आत्मा यज्ञस्य रंह्या ऋ० ९.६.८; काठ० सं० ३५.३६।

आत्व'द्य सधस्तुति ऋ० ८.१.१६

आ त्व'द्य सबर्दुघां ऋ० ८.१.१०; सा० २९५।

आ त्वशत्रवा गहि ऋ० ८.८२.४।

आ त्वा कण्वा ऋ० १.१४.२।

आ त्वा कण्वा इहावसे ऋ० ८.३४.४।

आ त्वा गन् राष्ट्रं अ० ३.४.१।

आ त्वागमं शान्तातिभिः ऋ० १०.१३७.४; अ० ४.१३.५; पै० सं० ५.१८.२।

आ त्वा गिरो रथीरिवास्थुः ऋ० ८.९५.१; सा० ३४९।

आ त्वा गीर्भिः ऋ० ८.६५.३।

आ त्वा गोभिरिव ऋ० ८.२४.६।

आ त्वामग्न इधीमहि ऋ० ५.६.४; सा० ४१९; १०२२; अ० १८.४.८८।

आ त्वा ग्रावा ऋ० ८.३४.२, सा० १८०६।

आ त्वा चृतत्वर्यमा अ० ५.२८.१२।

आ त्वा जिघर्मि य० ११.२३; काठ० सं० १६.१७; तै० सं० ४.१२.१८; ५.१.३.९; श० ब्रा० ६.३.३.१९; मै० सं० २.७.२५; कपि० ३०.१।

आ त्वा जिघर्मि य० ११.२३; तै० सं० ४.१२.१८; ५.१३.९; श० ब्रा० ६.३.३.१९; मै० सं० २.७.२५; कपि० ३०.१।

आ त्वा जुवो ऋ० १.१३४.१।

आ त्वा३द्य सबर्दुघां सा० २९५।

आ त्वा बृहन्तो ऋ० ३.४३.६; मै० सं० २.९.१।

आ त्वा ब्रह्मयुजा ऋ० ८.१७.२; सा० ६६७; अ० २०.३.२; ३८.२; ४७.८; मै० सं० २.१३.६०।

आ त्वा मदच्युता ऋ० ८.३४.९।

आ त्वा रथं यथोतये ऋ० ८.६८.१; सा० ३५४, १७७१; ऐ० ब्रा० ४.५.१; ३.२.४; ५.३.१; ८.१.१; ऐ० आ० ८.३.१; नि० ५.३।

आ त्वा रथे हिरण्यये ऋ० ८.१.२५; सा० १३९२।

आ त्वा रम्भं ऋ० ८.४५.२०; नि० ३.२१।

आ त्वा रुरोह अ० १३.१.१५; पै० सं० १८.१६.५।

आ त्वा वहन्तु ऋ० १.१६.१; ऐ० ब्रा० ४.१.३; ६.३.१।

आ त्वा विप्रा ऋ० १.४५.८ ।

आ त्वा विशन्तु अ० २.५.४; पैं० सं० २.७.२; १९.१.६

आ त्वा विशन्त्वाशवः ऋ० १.५.७; अ० २०.६९.५ ।

आ त्वा विशन्त्विन्दवः ऋ० ८.९२.२२; सा० १९७, १६६०; सा० ब्रा० ३.३.१.५ ।

आ त्वा शुक्रा ऋ० ८.९५.२ ।

आ त्वा सखायः सा० ३४०; अ० १८.१.१ ।

आ त्वा सहस्रमा ऋ० ८.१.२४; सा० २४५, १३९१; आ० ब्रा० ६.१.२.६ ।

आ त्वा सुतास ऋ० ८.४९.३ ।

आ त्वा सोमस्य सा० ३०७ ।

आ त्वा हरयो ऋ० ६.४४.१९ ।

आ त्वा हर्यन्तं ऋ० १०.९६.१२; अ० २०.३२.२ ।

आ त्वा हार्षमन् अ० ६.८७.१; तै० सं० ४.२.१.११; तै० ब्रा० २.४.२.८; श० ब्रा० ६.७.३.७; मै० सं० २.७.१०१; कपि० ३२.१; पैं० सं० १९.६.५ ।

आ त्वाऽहार्षमन्तरभूः य० १२.११ ।

आ त्वाहार्षमन्तरेधि ऋ० १०.१७३.१; य० १२.११; अ० ६.८७.१; तै० सं० ४.२.१.४.११; तै० ब्रा० २.४.२.८; मै० सं० २.७.१०१; काठ० सं० १६.९२; ३५.४३; कपि० ३२.१ ।

आ त्वा होता ऋ० ८.३४.८ ।

आ त्वेता नि षीदते ऋ० १.५.१; सा० १६४, ७४०; अ० २०.६८.११. तां० ब्रा० ९.२.८ ।

आत्सोम इन्द्रियो ऋ० ९.४७.३ ।

आथर्वणानां चतुः अ० १९.२३.१ ।

आथर्वणायाश्विना ऋ० १.११७.२२; श० ब्रा० १४.५.५.१७ ।

आथर्वणीराङ्गिरसीः अ० ११.४.१६; पैं० सं० १६.२२.६ ।

आ दक्षिणाः सृजते ऋ० ६.७१.१ ।

आदङ्गा कुविदङ्गा शतं अ० २.३.२ ।

आदङ्गिराः प्रथमं दधिरे ऋ० १.८३.४; अ० २०.२५.४ ।

आ दत्से जिनतां अ० १२.५.५६; पैं० सं० १६.१४६.६ ।

आददानमाङ्गिरसि अ० १२.५.५२; पैं० सं० १६.१४६.२ ।

आ दधामि ते अ० २.१२.८; पैं० सं० २.५.७ ।

आ दधिक्राः शवसा ऋ० ४.३८.१०; तै० सं० १.५.११.१२; नि० १०.३२; ऐ० ब्रा० १.४.५; ७.५.७ ।

आदला बुकमेककम् अ० २०.१३२.१ ।

आ दशभिर्विवस्वत ऋ० ८.७२.८ ।

आदस्य ते ध्वसयन्तो ऋ० १.१४०.५ ।

आदस्य शुष्मिणो ऋ० ९.१४.३ ।

आ दस्युघ्ना मनसा ऋ० ४.१६.१० ।

आदह स्वधामनु ऋ० १.६.४; सा० ८५१; अ० २०.४०.३; ६९.१२ ।

आदानेन सन्दानेन अ० ६.१०४.१; पैं० सं० १९.४९.१४ ।

आदाय जीतं जीताय अ० १२.५.५७; पैं० सं० १६.१४६.७ ।

आदाय श्येनो अभरत् ऋ० ४.२६.७; नि० ११.१ ।

आदारो वां मतीनां ऋ० १.४६.५ ।

आदित्ते अस्य वीर्यस्य ऋ० १.१३१.५; अ० २०.७५.३ ।

आदित्ते विश्वे क्रतुं ऋ० १.६८.३ ।

आदित्पश्चा बुबुधाना ऋ० ४.१.१८ ।

आदित् पश्याम्युत अ० ३.१३.६; काठ० सं० ३५.१५; मै० सं० २.१३.११ ।

आदित्प्रत्नस्य रेतसो ऋ० ८.६.३०; सा० २०; ऐ० आ० ३.२.४; काठ० सं० २.७८; सा० ब्रा० ३.१.४.३ ।

आदित्य चक्षुरादत्स्व अ० ५.२१.१० ।

आदित्य नावमारुक्षः अ० १७.१.२५ ।

आदित्यं गर्भं य० १३.४१; तै० सं० ४.२.१०.१; श० ब्रा० ७.५.२.१७; मै० सं० २.७.२३६; स० वि० गर्भाधान संस्कार; कपि० २५.८ ।

आदित्या अव हि ऋ० ८.४७.११ ।

आदित्यानां वसूनां ऋ० १०.४८.११ ।

आदित्यानामवसा ऋ० ७.५१.१; तै० सं० २.१.११.६, २०; मै० सं० ४.१४.१९८ ।

आदित्या रुद्रा वसवो अ० ११.६.१३; १९.११.४; २०.१३५.९; ऐ० ब्रा० ६.५.९; गो० ब्रा० उ० ६.१४ ।

आदित्या रुद्रा वसवः ऋ० ३.८.८ ।

आदित्या रुद्रा वसवो ऋ० ७.३५.१४; अ० १९.११.४; गो० ब्रा० उ० ६.१४ ।

आदित्या विश्वेमरुतश्च ऋ० ७.५१.३ ।

आदित्यासो अति स्रिधो ऋ० १०.१२६.५ ।

आदित्यासो अदितयः ऋ० ७.५२.१; काठ० सं० ११.४८ ।

आदित्यासो अदितिः ऋ० ७.५१.२; ऐ० ब्रा० ३.३.५ ।

आदित्या ह जरितः अ० २०.१३५.६; गो० ब्रा० उ० ६.१४ ।

आदित्येभ्यो आङ्गिरोभ्यो अ० १२.३.४४; पै० सं० १७.४०.४; काठ० सं० ११.११; तै० सं० १.१.१३.५ ।

आदित्यैरिन्द्रः सगणो ऋ० १०.१५७.३; सा० १११२; अ० २०.६३.२; १२४.५; तै० आ० १.२७.१ ।

आदित्यैर्नो भारती य० २९.८; मै० सं० ३.१६.२४; का० सं० ३१.८ ।

आदित्साप्तस्य चर्किरन् ऋ० ८.५५.५ ।

आदिद्ध नेम इन्द्रियं ऋ० ४.२४.५ ।

आदिद्धोतारं वृणते ऋ० १.१४१.६ ।

आदिनवं प्रतिदीव्ने अ० ७.१०९.४; पै० स० ४.९.७ ।

आदिन्द्रः सत्रा तविषीर् ऋ० १०.११३.५ ।

आदिन्मातॄराविशद् ऋ० १.१४१.५ ।

आ दिवस्पृष्ठतश्वयुः ऋ० ९.३६.६ ।

आदीमश्वं न हेतारो ऋ० ९.६२.६; सा० १०१० ।

आदीं के चित्पश्य ऋ० ९.११०.६; सा० १४९५ ।

आदीं त्रितस्य ऋ० ९.३२.२; सा० ७७१ ।

आदीं शवस्यब्रवीद् ऋ० ८.७७.२ ।

आदीं हंसो यथा गणम् ऋ० ९.३२.३; सा० ७७० ।

आदू नु ते अनु ऋ० ८.६३.५ ।

आदू मे निवरो ऋ० ८.९३.१५ ।

आदृध्नोति हविष्कृतिं ऋ० १.१८.८ ।

आ देवानामग्रयावेह ऋ० १०.७०.२ ।

आ देवानामपि पन्थां ऋ० १०.२.३; अ० १९.५९.३ तै० सं० १.१.१४.३; १०; ऐ०

ब्रा० १.२३; ७.२७; काठ० सं० २.११२ ।
आ देवानामभवः केतु ऋ० ३.१.१७ ।
आ देवेषु वृश्चते अ० १५.१२.१० ।
आदेवो ददे बुध्न्या ऋ० ७.६.७ ।
आ देवो दूतो ऋ० १०.६८.२ ।
आ देवो यातु ऋ० ७.४५.१ तै० ब्रा० २.८.६.१; ऐ० ब्रा० ५.१.५; मै० सं० ४.१४.८०; काठ० सं० १७.१०५ ।
आ दैव्यानि पार्थिवानि ऋ० ५.४१.१४ ।
आ दैव्या वृणीमहे ऋ० ७.६७.२ ।
आ दैव्यानि व्रता ऋ० १.७०.२ ।
आद्य रथं भानुमो ऋ० ५.१.११ ।
आद्यां तनोषि ऋ० ४.५२.७ ।
आद्रोदसी वितरं ऋ० ५.२६.४ ।
आ द्वभ्यां हरिभ्यां ऋ० २.१८.३; नि० ७.६ ।
आ द्विबर्हा अमिनो ऋ० १०.११६.४ ।
आधत्त पितरो य० २.३३; ऋ० भू० पितृयज्ञ विषय ।
आ धर्णसिर्बृहद्दिवो ऋ० ५.४३.१३; ऐ० ब्रा० ५.४.१ ।
आ धावता सुहस्त्यः ऋ० ६.४६.४; नि० २.५ ।
आधीवर्णां कामशल्याम् अ० ३.२५.२ ।
आधीषमाणायाः पतिः ऋ० १०.२६.६ ।
आ धूर्ष्वस्मै दधाता ऋ० ७.३४.४; ऐ० ब्रा० ५.२.२ ।
आ धेनवः पयसा ऋ० ५.४३.१; ऐ० ब्रा० २.३.२ ।
आ नवो धुन० ऋ० ३.५५.१६; स० प्र० चतुर्थसमु० ।
आ धेनवो मामतेयं ऋ० १.१५२.६ ।
आध्रेण चित्तद्वेकं ऋ० ७.१८.१७ ।
आ न इडाभिर्विदथे ऋ० १.१८६.१ य० ३३.३४ का० सं० ३२.३४; ।
आ न इन्दो महीमिषं ऋ० ६.६५.१३ ।
आ न इन्दो शतग्विनं ऋ० ६.६७.६ ।
आ न इन्दो शतग्विनं ऋ० ६.६५.१७; सा० ८३५ ।
आ न इन्द्र महीमिषं ऋ० ८.६.२३ ।
आ न इन्द्र वृक्षसे ऋ० १०.२२.७ ।
आ न इन्द्राबृहस्पती ऋ० ४.४६.३ ।
आ न इन्द्रो दूरादा ऋ० ४.२०१; य० २०.४८; ऐ० ब्रा० ४.५.२; ऐ० ब्रा० ५.२.२; का० सं० २२.२६ ।
आ न इन्द्रो हरिभिर्या ऋ० ४.२०.२; य० २०.४६; का० सं० २२.३७ ।
आ न इडाभिर्विदथे ऋ० १.१८६.१; य० ३३.३४, ४७ ।
आ न ऊर्जं वहतमश्विना ऋ० १.१५७.४ ।
आ न एतु मनः य० ३.५४; काठ० सं० ६.५; तै० सं० १.८.५.११; श० ब्रा० २.६.१.३६; मै० सं० १.१०.१६; कपि० ८.१० ।
आनन्दा मोदाः प्रमुदो अ० ११.७.२६; ८.२४ ।
आ नपातः शवसो ऋ० ४.३४.६ ।
आ नयैतमा रभस्व अ० ६.५.१; पै० सं० १६.६७.१; सं० वि० वानप्रस्थसंस्कार ।
आ नस्तुजं रयिं ऋ० ३.४५.४ ।
आ नस्ते गन्तु मत्सरः ऋ० १.१७५.२; सा० १४३३ ।
आ न पवस्व धारया ऋ० ६.३५.१ ।
आ न पवस्व वसुमद् ऋ० ६.६६.८ ।

आ न पूषा पवमानः ऋ० ९.८१.४।

आ नः प्रजां जनयन्तु ऋ० १०.८५.४३; मै० सं० २.१३.११७; काठ० सं० १३.७२; ४०.८; सं० वि० विवाहसंस्कार।

आ नः शुष्मं नृषाह्यं ऋ० ९.३०.३।

आ नः सहस्रशो भर ऋ० ८.३४.१५।

आ न सुतास इन्दवः ऋ० ९.१०६.९; सा० १३२८।

आ नः सोम पवमानः ऋ० ९.८१.३।

आ नः सोम सहो ऋ० ९.६५.१८; सा० ८३४।

आ नः सोम संयतं ऋ० ९.८६.१८; सा० ११५४।

आ नः सोमं पवित्र ऋ० ९.६२.२१।

आन न सोमे स्वध्वर ऋ० ८.५०.५।

आ नः स्तुत उप वाजेभिः ऋ० ४.२९.१।

आ नः स्तोममुप द्रवत् ऋ० ८.५.७।

आ न स्तोममुप द्रविध्यानो ऋ० ८.४९.५।

आ नामभिर्मरुतो वक्षि ऋ० ५.४३.१०।

आ नार्यस्य दक्षिणा ऋ० ८.२४.२९।

आ नासत्या गच्छतं ऋ० १.३४.१०।

आ नासत्या त्रिभिः ऋ० १.३४.११; य० ३४.४७; का० सं० ३३.३५।

आ निरेकमुत प्रियं ऋ० ८.२४.४।

आ निवर्तन वर्तय ऋ० १०.१९.८; तै० सं० ३.३.१०.१।

आ निवर्त नि वर्तय पुनः ऋ० १०.१९.६।

आ नूनमश्विना युवं ऋ० ८.९.१; अ० २०.१३९.१।

आ नूनमश्विनोर्ऋषिः ऋ० ८.९.७; अ० २०.१४०.२।

आ नूनं यातमश्विना रथेन ऋ० ८.८.२; अ० २०.१४१.४।

आ नूनं यातमश्विनाश्वभिः ऋ० ८.८७.५।

आ नूनं यातमश्विनेमा ऋ० ८.९.१४; अ० २०.१४१.४।

आ नूनं रघुवर्तनिं ऋ० ८.९.८; अ० २०.१४०.३; ऐ० ब्रा० १.४.५।

आनृत्यतः शिखण्डिनो अ० ४.३७.७।

आ नो अग्ने रयिं ऋ० १.७९.८; सा० १५२५ मै० सं० ४.१२.१०६; काठ० सं० १०.२८।

आ नो अग्ने वयोवृधं ऋ० ८.६०.११; सा० ४३।

आ नो अग्ने सुचेतना ऋ० १.७९.९; सा० १५२६ तै० ब्रा २.४.५.३; मै० सं० ४. १०.१३१; ४.१२.१०५; काठ० सं० २.७२।

आ नो अग्ने सुमतिं अ० २.३६.१; पै० स० २.२१.१।

आ नो अद्य समनसो ऋ० ८.२७.५।

आ नो अस्वावदश्विना ऋ० ८.२२.१७।

आ नो अश्विना त्रिवृता ऋ० १.३४.१२।

आनो गन्तं मयो ऋ० ८.८.१९।

आ नो गन्तं रिशादसा ऋ० ५.७१.१।

आ नो गन्तं रिशादसेमां ऋ० ८.८.१७।

आ नो गव्यान्यश्व्या ऋ० ८.३४.१४।

आ नो गव्येभिरश्व्यैः ऋ० ८.७३.१४।

आ नो गव्येभिरश्व्यैर्वसव्यैः ऋ० ६.६०.१४

आ नो गहि सख्येभिः ऋ० ३.१.१९; मै० सं० ४.१४.२२५।

आ नो गोत्रा दर्द्दहि गोपते ऋ० ३.३०.२१।

आ नो गोमन्तमश्विना ऋ० ८.५.१० ।

आ नो दधिक्राः पथ्यां ऋ० ७.४४.५ ।

आ नो दिव आ पृथिव्या ऋ० ७.२४.३; मै० स० ४.११.६२; ४.१४.४३ ।

आ नो दिवो बृहतः ऋ० ५.४३.११; तै० सं० १८.२२.४; ऐ० ब्रा० ५.४.१; मै० सं० ४.१०.१६; काठ० सं० ४.१२१ ।

आ नो देव शवसा ऋ० ७.३०.१; ऐ० ब्र ० ५.३.१ ।

आ नो देवः सविता त्रायमाणो ऋ० ६.५०.८

आ नो देवः सविता साविशद् ऋ० १०.१००.३ ।

आ नो देवानामुप वेतु ऋ० १०.३१.१ ।

आ नो देवेभिरुपदेवहूतिं ऋ० ७.१४.३ ।

आ नो देवेभिरुप यातं ऋ० ७.७२.२; ऐ० ब्रा० ५.३.१ ।

आ नो द्युम्नैरा श्रवोभिः ऋ० ८.५.३२ ।

आ नो द्रप्सा मधुमन्तो ऋ० १०.९८.४ ।

आ नो नावा मतीनां ऋ० १.४६.७; ऋ० भू० नौविमानविषय ।

आ नो नियुद्भिः शतिनी ऋ० ७.९२.५; य०२७.२८; मै० सं० ४.१४.२६; तै० ब्रा० २.८.१.२; का० सं० २९.३१ ।

आ नो नियुद्भिः शतिनीभिः ऋ० १.१३५.३; ७.९२.५; य० २७.२८; ऐ० ब्रा० ५.२.७; तै० ब्रा० २.८.१.२ ।

आ नो बर्हिः सधमादे ऋ० १०.३५.१० ।

आ नो बर्हीं रिशादसो ऋ० १.२६.४ ।

आ नो बृहन्ता बृहतीभिः ४.४१.११ ।

आ नो ब्रह्माणि मरुतः ऋ० २.३४.६ ।

आ नो भज परमेषु ऋ० १.२७.५; सा० १४९९ ।

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु ऋ० १.८९.१; य० २५.१४; नि० ४.१९; ऐ० ब्रा० १.५.३; ५.३.२; काठ० सं० २६.२३; नि० ४.१९; का० सं० २७.१८; सं० वि० स्वस्तिवाचन ।

आ नो भर दक्षिणेनाभि ऋ० ८.८१.६ ।

आ नो भर भगमिन्द्र ऋ० ३.३०.१९; तै० ब्रा० २.५.४.१; नि० ६.७ ।

आ नो भर मा परि ष्ठा अ० ५.७.१ ।

आ नो भर वृषणं ऋ० ६.१९.८ ।

आ नो भर व्यंजनं ऋ० ८.७८.२ ।

आ नो मखस्य दावने ऋ० ८.७.२७ ।

आ नो महीमरमतिं ऋ० ५.४३.६ ।

आ नो मित्र सुदीतिभिः ऋ० ५.६४.५ ।

आ नो मित्रावरुणा घृतैः ऋ० ३.६२.१६; य० २१.८; सा० २२०, ६६३; तै० स० १.५.१२.२०; १.८.२२.३; १.८.२२.८; मै० सं० ४.११.६५; ४.१४.१६६; का० सं० २३.८; का० सं० ४.१२६; १२.३७; २६.३४; ता० ब्रा० ११. २.३; सा० ब्रा० ३.१.४.५ ।

आ नो मित्रावरुणा हव्यजुष्टिं ऋ० ७.६५.४; तै० ब्रा० २.८.६.७ ।

आ नो यज्ञं दिविस्पृशं ऋ० ८.१०१.९; य० ३३.८५; ऐ० ब्रा० ५.२.१ ।

आ नो यज्ञं नमोवृधं ऋ० ३.४३.३ ।

आ नो यज्ञं भारती ऋ० १०.११०.८; य० २९.३३; अ० ५.१२.८; तै० ब्रा० ३.६.३.४; नि० ८.१३; मै० सं० ४.१३.१९; काठ० सं० १६.२३६; का० सं० ३१.४५ ।

आ नो यज्ञाय तक्षत ऋ० १.१११.२ ।

आ नो यातमुपश्रुति ऋ० ८.८.५ ।

आ नो यातं दिवस्परि ऋ० ८.८.४; अ० २०.१४३.५ ।

आ नो यातं दिवो अच्छा ऋ० ४.४४.५; अ० २०.१४३.५ ।

आ नो याहि परावत ऋ० ८.६.३६ ।

आ नो याहि महेमते ऋ० ८.३४.७ ।

आ नो याहि सुतावतो ऋ० ८.१७.४; अ० २०.४.१ ।

आ नो याह्युपश्रुति ऋ० ८.३४.११ ।

आ नो रत्नानि बिभ्रता ऋ० ५.७५.३; सा० १७४५ ।

आ नो रयिं मदच्युतं ऋ० ८.७.१३ ।

आ नो राधांसि सवित ऋ० ७.३७.८ ।

आ नो रुद्रस्य सूनवो ऋ० ६.५०.४ ।

आ नो वयो वयः सा० ३५३ ।

आ नो वायो महे तने ऋ० ८.४६.२५, मै० सं० ४.१४.२१; ऐ० ब्रा० ५.२.१ ।

आ नो विश्व आस्क्रा ऋ० १.१८६.२; तै० ब्रा० २.८.६.३; मै० सं० ४.१४.१४५ ।

आ नो विश्वान्यश्विना ऋ० ८.८.१३ ।

आ नो विश्वाभिरूतिभिरश्विना ऋ० ८.८.१ ।

आ नो विश्वाभिरूतिभिः सजोषा ऋ० ७.२४.४; तै० ब्रा० २.४.३.६; ७.१३.४; ऐ० ब्रा० ५.१.४; काठ० सं० ८.७५ ।

आ नो विश्वासु हव्य ऋ० ८.९०.१; सा० २६६; १४६२; अ० २०.१०४.३; ऐ० ब्रा० ५.२.४; सा० ब्रा० २.१.४.२० ।

आ नो विश्वेषां रसं ऋ० ८.५३.३ ।

आ नो विश्वे सजोषसो ऋ० ८.५४.३ ।

आ नोऽवोभिर्मरुतो ऋ० १.१६७.२ ।

आन्त्राणि जन्तवो अ० ११.३.१० ।

आन्त्राणि स्थालीर्मधु य० १९.८६; का० सं० २१.४६; मै० सं० ३.११.७८ ।

आन्त्रेभ्यस्ते ऋ० १०.१६३.३; अ० २.३३.४; २०.९६.२० ।

आन्यं दिवो मातरिश्वा ऋ० १.९३.६; तै० सं० २.३.१४.२; ऐ० ब्रा० २.१.६; मै० सं० ४.१४.२२७; काठ० सं० ४.१३३ ।

आप इद्वा उ भेषजी ऋ० १०.१३७.६; अ० ३.७.५; ६.९१.३; पै० सं० ३.२.७; ५.१८.९ ।

आ पक्थासो भलानसो ऋ० ७.१८.७ ।

आपतये त्वा परि य० ५.५; कपि० २.३; ३५.१; श० ब्रा० ३.४.२.१०–१२, १४; गो० ब्रा० उ० २.३.३७६; मै० सं० १.२.५३ ।

आपथयो विपथयो ऋ० ५.५२.१० ।

आ पप्राथ महिना ऋ० ८.७०.६; सा० ८६३; अ० २०.८१.२; ९२.२१; ऐ० ब्रा० ५.१.१; मै० सं० ४.१२.१०१ ।

आपप्रुषी पार्थिवान्युरु ऋ० ६.६१.११; ऐ० ब्रा० ५.१.१ ।

आपप्रुषी विभावरि ऋ० ४.५२.६ ।

आ पप्रौ पार्थिवं ऋ० १.८१.५ ।

आपये स्वाहा स्वापये य० ९.२०; श० ब्रा० ५.२.१.२; कपि० ४८.९ ।

आ परमाभिरुत ऋ० ६.६२.११ ।

आ पर्जन्यस्य अ० ३.३१.११ ।

आ पर्वतस्य मरुतां ऋ० ४.५५.५ ।

आ पवमान धारय ऋ० ९.१२.९; सा० १२०३ ।

आ पवमान नो भरायो ऋ० ९.२३.३ ।

आ पवमान सुष्टुतिं ऋ० ९.६५.३; सा० ९०६ ।

आ पवस्व गविष्टये ऋ० ९.६६.१५ ।

आ पवस्व दिशां पत ऋ० ९.११३.२; सं० वि० संन्यास संस्कार ।

आ पवस्व मदिन्तम ऋ० ९.२५.६; ५०.४; सा० १२०८ ।

आ पवस्व महीमिषं ऋ० ९.४१.४; सा० ८६५ ।

आ पवस्व सहस्रिणं रयिं गोमन्तं ऋ० ९.६२.१२ ।

आ पवस्व सहस्रिणं रयिं सोम ऋ० ९.६३.१; सा० ५०१; दे० ब्रा० ५.१.१३ ।

आ पवस्व सुवीर्यं ऋ० ९.६५.५; सा० ७८६ ।

आ पवस्व हिरण्यवद् ऋ० ९.६३.१८; य० ८.६३ ।

आ पशुं गासि पृथिवीं ऋ० ८.२७.२ ।

आ पश्चातान्नासत्या ऋ० ७.७२.५; ७३.५ ।

आपश्चित्पिप्यु स्तर्यो ऋ० ७.२३.४; य० ३३.१८; अ० २०.१२.४; काठ० सं० ३२.१८ ।

आपश्चिदस्मै पिन्वन्त ऋ० ७.३४.३ ।

आपश्चिद्धि स्वयशसः ऋ० ७.८५.३ ।

आ पश्यति प्रति अ० ४.२०.१; पै० सं० ८.६.१ ।

आपस्पुत्रासो अभि अ० १२.३.४ ।

आपः पृणीत भेषजं ऋ० १.२३.२१; १०.९.७; अ० १.६.३; काठ० सं० १२.६५ ।

आपानासो विवस्वतो ऋ० ९.१०.५; सा० ११२३ ।

आपान्तमन्युस्तृपलप्रभर्मा ऋ० १०.८९.५; तै० सं० २.२.१२.३; तै० आ० १०.१.९; नि० ५.१२ ।

आपो वो अस्मे पितरेव ऋ० १०.१०६.४ ।

आ पुत्रासो न मातरं ऋ० ७.४३.३; ऐ० ब्रा० ५.३.१ ।

आ पूर्णो अस्य कलशः ऋ० ३.३२.१५; अ० २०.८.३; ऐ० ब्रा० ६.३.३; गो० ब्रा० उ० २.२१ ।

आ पूषञ्चित्रबर्हिषं ऋ० १.२३.१३ ।

आपो अग्निं प्र हिणुत अ० १८.४.४० ।

आपो अगं दिव्या अ० ८.७.३; तै० सं० १६.१२.३ ।

आपो अग्रे विश्वमानम् अ० ४.२.६ ।

आपो अद्यान्वचारिषं ऋ० १.२३.२३; १०.९.९; य० २०.२२; तै० सं० १.४.४५.१३; ४६.८; तै० २.६.६.५; तै० ब्रा० २.६.६.५ ।

आपो अस्मान्मातरः ऋ० १०.१७.१०; य० ४.२; अ० ६.५१.२; तै० सं० १.२.१.६; काठ० सं० २.३; श० ब्रा० ३.१.२.११; २०, २१; मै० सं० १.२.५; कपि० १.१३ ।

आपो देवीः प्रति गृभ्णीत य० १२.३५; काठ० सं० १६.११६; तै० सं० ४.२.३.६; श० ब्रा० ६.८.२.३ मै० सं० २.७.१२३; कपि० २५.१; ३२.२ ।

आपो न देवीरुप यन्ति ऋ० १.८३.२; अ० २०.२५.२ ।

आपो न सिन्धुमभि यत् ऋ० १०.४३.७; अ० २०.१७.७ ।

आपो भद्रा घृतम् अ० ३.१३.५; तै० सं० ५.६.१.९ ।

आपो भूयिष्ठा इत्येको ऋ० १.१६१.९ ।

आपो मौषधीमतीः अ० १९.१७.६; पै० सं० ७.१६.६ ।

आपो यद् व शोचिस्तेन अ० २.२३.४ ।

आपो यद् वस्तपस्तेन अ० २.२३.१ ।

आपो यद् वस्तेजस्तेन अ० २.२३.५ ।

आपो यद् वोर्श्चिस्तेन अ० २.२३.३ ।

आपो यद् वो हरस्तेन अ० २.२३.२ ।

आपो यं वः प्रथमं ऋ० ७.४७.१ ।

आपो रेवतीः क्षयथा ऋ० १०.३०.१२; काठ० सं० १२.६४; ३६.७; ऐ० ब्रा० २.२.६ ।

आपो वत्सं जनयन्तीः अ० ४.२.८; गो० ब्रा० पू० १.२; १.३६ ।

आपो विद्युदभ्रं अ० ४.१५.६ ।

आपो ह यद् बृहतीर्विश्व ऋ० १०.१२१.७; य० २७.२५; ३२.७; अ० ४.२.६; तै० सं० २.२.१२.२; ४.१.८.५; ७.४.१६.१६; ४.१.८. ५; ६, ५.६.१११; ४.१.५.२; तै० आ० १.२३.८; १०.१.११; का० सं० २६.३५; ३६.१५; मै० सं० २.७.५६; २. १३.१३; ४.६.२४६; नि० ६.२७ ।

आपो हि ष्ठा मयोभुवः ऋ० १०.९.१; य० ११.५०; ३६.१४; सा० १८३७; अ० १. ५.१; तै० सं० ४.१.५.२; ५.६.१.१२; ७.४.१६.१६; तै० आ० ४.४२.४; १०.१. ११; नि० ६.२७; ऐ० ब्रा० ३.३.१२; मै० सं० २.७.५६; २.१३.१३; ४.६.२४६; काठ० स० १६.४६; १६.५६; ३५.१७; कपि० ३०.३; ४८.४; सा० ब्रा० ३.१.२. ७; पै० सं० १६.४५.८ ।

आप्नोतीमं लोकम् अ० ६.६.१३ ।

आ प्यायस्व मदिन्तम ऋ० १.९१.१७; य० १२.११४; तै० सं० १.४.३२.१; तै० आ० ३.१७.१; काठ० सं ३५.७१; कपि० ४८.१३ ।

आ प्यायस्व समेतु ऋ० १.९१.१६; ६.३१. ४; य० १२.११२; तै० सं० ३.२.५.८; ४.२.७.१२; तां ब्रा० १.५.८; कपि० २५. ५; ४८.१३; काठ० सं० १६.१८०; श० ब्रा० ७.३.१; मै० सं० २.७.१९५; कपि० २५.५; ४८.१३ ।

आ प्रच्यवेथामप अ० १८.४.४९ ।

आ प्रत्यञ्चं दाशुषे अ० ७.४०.२ ।

आ प्रद्रव परमस्याः अ० ३.४.५ ।

आ प्र द्रव परावतो ऋ० ८.८२.१ ।

आ प्र द्रव हरिवो ऋ० ५.३१.२; नि० ३.२१ ।

आ प्र यात मरुतो ऋ० ऋ० ८.२७.८ ।

आ प्रागाद् भद्रा सा० ६०८; आ० ब्रा० ६. ३.३.३ ।

आ प्रा रजांसि दिव्यानि ऋ० ४.५३.३ ।

आप्रुषायन्मधुन ऋ० १०.६८.४; अ० २०. १६.४ ।

आबयो अनाबयो अ० ६.१६.१ ।

आ बुन्दं वृत्रहा ऋ० ८.४५.४; सा० २१६; सा० ब्रा० ३.१.४.५ ।

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो य० २२.२२; तै० सं० ७.५.१८.१; श० ब्रा० १३.१.६.१–१०; मै० सं० ३.१२.८; का० सं० २४.२४ ।

आ भन्दमाने उपाके ऋ० १.१४२.७ ।

आ भन्दमाने उषसा ऋ० ३.४.६ ।

आ भरतं शिक्षतं वज्रबाहू ऋ० १.१०९.७; तै० ब्रा० ३.६.११.१ ।

आ भात्यग्निरुषसां ऋ० ५.७६.१; सा० १७५२; ऐ० ब्रा० १.४.४ ।

आ भानुना पार्थिवानि ऋ० ६.६.६ ।

आ भारती भारतीभिः ऋ० ३.४.८; ७.२.८ ।

आभिर्विधे माग्नये ऋ० ८.२३.२३ ।

आभिष्ट्वमभिष्टिभिः सा० ६४२, सा० ब्रा० ३.१.४.१३ ।

आभिष्टे अद्य गीर्भिः ऋ० ४.१०.४; तै० सं० ४.४.४.२७; मै० सं० २.१३.५४ ।

आभिः स्पृधो मिथतीः ऋ० ६.२५.२; तै० ब्रा० २.८.३.३ ।

आभूत्या सहजा वज्र ऋ० १०.८४.६; अ० ४.३१.६ ।

आभूषेण्यं वो मरुतो ऋ० ५.५५.४ ।

आभोगयं प्र ऋ० १.११०.२ ।

आमणको मणत्सकः अ० २०.१३०.६ ।

आ मध्वो अस्मा असिचन् ऋ० १०.२९.७; अ० २०.७६.७ ।

आ मनीषामन्तरिक्षस्य ऋ० १.११०.६ ।

आ मन्द्रमा वरेण्यं ऋ० ६.६५.२६; सा० ११३८ ।

आ मन्द्रस्य सनिष्यंतो ऋ० ३.२.४ ।

आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिः ऋ० ३.४५.१; य० २०.५३; सा० २४६, १७१८; अ० ७, ११७.१; तै० आ० १.१२.२; का० सं० २२.४१; सा० वि० ब्रा० ३.१.४.२० ।

आ मन्येथामा गतं ऋ० ३.५८.४ ।

आ मा पुष्टे च पोष अ० ३.१०.७ ।

आ मा पूषन्नुप द्रव ऋ० ६.४८.१६ ।

आ मारुक्षत् पर्णमणिः अ० ३.५.५; पै० सं० ३.१३.५ ।

आ मारुक्षद् देवमणि अ० ८.५.२० ।

आ मा वाजस्य प्रसवो य० ९. १९; तै० सं० १.७.८.१६, श० ब्रा० ५.१.५.२६, २७, मै० सं० १.११.१५, कपि० २६.१ ।

आमासु पक्वमैरय ऋ० ८. ८९. ७, सा० १४३१, तै० सं० १.६.१२.६; नि० ६. १४ ।

आ मां मित्रावरुणेह ऋ० ७.५०.१ ।

आ मित्रा वरुणा भगं ऋ० ६.७.८ ।

आ मित्रे वरुणे भगे सा० ११३५ ।

आ मित्रे वरुणे वयं ऋ० ५.७२.१; ऐ० ब्रा० ५.१.१ ।

आमिनोनिति भद्यते अ० २०.१३१.१ ।

आमूरज प्रत्यावर्तये ऋ० ६. ४७. ३१, य० २९. ५७, अ० ६. १२६. ३; मै० सं० २. १६. ५६, तै० सं० ४. ६. ६. २०; कपि० ६.२ ।

आ मे अस्य प्रतीव्यं ऋ० ८.२६.८ ।

आ मे धनं सरस्वती अ० १९. ३१. १०; पै० सं० १०. ५. १० ।

आ मे महच्छतभिषग् अ० १९.७.५ ।

आ मे वचांस्युद्यता ऋ० ८.१०१.७ ।

आभे सुपक्वे शबले अ० ५.२९.६; पै० सं० १३.९.९ ।

आ मे हवं नासत्याश्विना ऋ० ८.८५.१ ।

आयजी वाजसातमा ऋ० १. २८.७, नि० ९४.३६; ऐ ब्रा० ७.३.५ ।

आ यज्ञैर्देव मर्त्य ऋ० ५.१७.१ ।

आ यत्पतन्त्येन्यः ऋ० ८.६९.१०, अ० २०.९२.७ ।

आ यत्साकं यशसो ऋ० ७.३६.६ ।

आ यदश्वान्वनन्वतः ऋ० ८.१.३१ ।

आ यदिन्द्रश्च दद्वहे ऋ० ८.३४.१६ ।

आ यदिषे नृपतिं ऋ० १. ७१. ८, य० ३३. ११, तै० सं० १. ३. १४. १७; मै० सं० ४. १४. २१३. का० सं० ३२. ११ ।

आ यद् दुवस्याद् दुवसे ऋ० १. १६५. १४; मै० सं० ४. ११. ९२ ।

आ यद् दुवः शतक्रत० ऋ० १. ३०. १५, सा० १०८६, अ० २०. १२२. ३ ।

आ यद्धरी इन्द्र विव्रता ऋ० १. ६३. २ ।

आ यद्योनिं हिरण्ययं आशुः ऋ० ६. ६४. २० ।

आ यद्योनिं हिरण्ययं वरुण ऋ० ५.६७.२ ।

आ यद्रुहाव वरुणश्च ऋ० ७.८८.३ ।

आ यद्वज्रं इन्द्र धत्से ऋ० ८.६६.५ ।

आ तद्वामीय चक्षसा ऋ० ५.६६.६ ।

आ यद्वां योषणा ऋ० ८.८.१० ।

आ यद्वां सूर्या ऋ० ५.७३.५ ।

आयने ते परायणे ऋ० १०. १४२. ८, अ० ६.१०६.१; पै० सं० १६.३३.५ ।

आयन्तारं महि स्थिरं ऋ० ८. ३२. १४ ।

आ यन्ति दिवः पृथिवीं अ० १२. ३. २६; पै० सं० १७. ३८. ५ ।

आ यन्तु नः पितरः य० १६. ५८ का० सं० २१. ६१; ऋ० भू० पञ्चमहायज्ञविषय जी० ले० ३७८ ।

आ यन्नः पत्नीर्गमन् ऋ० ७.३४.२० ।

आ यन्मा वेना अरुहन् ऋ० ८.१००.५ ।

आ यन्मे अभ्वं ऋ० २.४.५, नि० ६.१७ ।

आयमगन्त्संवत्सरः ३. १०. ८, पै० सं० १. १०६.१ ।

आयमगन् पर्णमणिः अ० ३. ५.१; पै० सं० ३.१३.१ ।

आयमगन् युवा अ० १०. ४. १५; पै सं० १६.३१.८ ।

आयमगन्सविता क्षुरेण अ० ६. ६८. १; पै० सं० १६. १७. १३, सं० वि० चूडाकर्म-संस्कार ।

आयमद्य सुकृतं प्रातरिच्छ ऋ० १.१२५.३ ।

आ ययाम सं बबर्ह अ० ६. ३.३; पै० सं० १६ ३६.३ ।

आ ययोस्त्रिंशतं तना ऋ० ८. ५८.४, सां० १०६० ।

आय वेननती जनी अ० २०.१३१.८ ।

आ यस्ततन्थ रोदसी ऋ० ६. १. ११, तै० ब्रा० ३. ६. १०. ५; ऐ० ब्रा० २. १. १०; मै० सं० ४. १३. ५७; काठ० सं० १८. १२४ ।

आ० यस्तस्थौ भुवनानि ऋ० ६.८४.२ ।

आ यस्ते अग्न इधते ऋ० ७.१.८ ।

आ यस्ते सर्पिरासुते ऋ० ५.७.६ ।

आ यस्मिन्त्से स्वपाके ऋ० ६.१२.२ ।

आ यस्मिन्त्सपत ऋ० २.५.२ ।

आ यस्मिन्हस्ते नर्या ऋ० ६.२६.२ ।

आ यस्य ते महिमानं ऋ० ८. ४६. ३ ।

आयं गौः पृश्नीरक्रमीत् ऋ० १०. १८६, १, य० ३. ६, सा ६३०, १३७६, अ० ६. ३१. १, २०. ४८. ४, तै० सं० १. ५. ३. २; ऐ० ब्रा० ५. ४.४; मै० सं० १. ६. ६; का० सं० ७. ६१; स० प्र० ८ समु०, ऋ० भू० पृथिव्यादि०, श० ब्रा० ६.४.२.४ ।

आयं जना अभिचक्षे ऋ० ५.३१.१२ ।

आ यं नरः सदानवो ऋ ५. ५३. ६, तै० सं० २. ४. ८. ५; मै० सं० २. ४. ३० ।

आ यं पृणन्ति दिवि ऋ० १.५२.४ ।

आ यं विशन्तीन्दवो अ० ६.२.२ ।

आ यं हस्ते न खादिनं ऋ० ६. १६. ४०, तै० सं० ३. ५. ११. १५, ऐ० ब्रा० १. ३. ५, मै० सं० ४. १०. ६६ ।

आ यः पप्रौ जायमान ऋ० ६.१०.४ ।

आ यः पप्रौ भानुना ऋ० ६.४८.६ ।

आ वात वाहि भेषजं ऋ० १०. १३७. ३, अ० ४. १३. ३, तै० ब्रा० २. ४. १. ७, तै० आ० ४. ४२. १; गो० ब्रा० पू० ३. १३.; पै० सं० ५. १८. ४।

आ वातस्य ध्रजतो ऋ० ७. ३६. ३।

आ वामगन्त्सुमतिर्वा ऋ० १०. ४०. १२, अ० १४. २. ५; पै० सं० १८. ७. ५।

आ वामश्वासः सुचयः ऋ० १. १८१. २।

आ वामश्वासः सुयुजो ऋ० ५. ६२. ४।

आ वामश्वासो अभिमातिषाह ऋ० ६. ६९. ४।

आ वामुपस्थमद्रुहा ऋ० २. ४१. २१, नि० ९. ३६; ऐ० ब्रा० १. ५. ३।

आ वामृताय केशिनीरनुष ऋ० १. १५१. ६।

आ वायो भूष शुचिपा ऋ० ७. ९२. १, य० ७. ७, तै० सं० १. ४. ४. १, ३.४.२.१; ऐ० ब्रा० ५. ३. १; मै० सं० १. ३. २०; काठ० सं० ४. ५. १३. ३४, कपि० ३. २, ऐ० ब्रा० ९ ४. १. ३. १८।

आ वां ग्रावाणो ऋ० ८. ४२. ४।

आ वां दानाय ऋ० १. १८०. ५।

आ वां धियो ववृत्यु ऋ० १. १३५. ५; ऐ० ब्रा० ५. २. ७।

आ वां नरा मनोयुजो ऋ० ५. ७५. ६।

आ वां प्रजां जनयतु अ० १४. २. ४०; पै० सं० १८. १०. ८।

आ वां भूषन्क्षितयो ऋ० १. १५१. ३।

आ वां मित्रावरुणा ऋ० १. १५२. ७, तै० ब्रा० २. ८. ६. ५।

आ वां येष्ठाश्विना ऋ० ५. ४१. ३।

आ वां रथमवस्यां ऋ० ७. ७१. ३।

आ वां रथं दुहिता ऋ० १. ११६. १७।

आ वां रथं पुरुमायं ऋ० १. ११९. १।

आ वां रथं युवतिः ऋ० १. ११८. ५।

आ वां रथो अश्विना ऋ० १. ११८. १।

आ वां रथो नियुत्वान्वक्षद ऋ० १. १३५. ४; ऐ० ब्रा० ५. २. ७।

आ वां रथो रथानां ऋ० ५. ७४. ८।

आ वां रथो रोदसी ऋ० ७. ६९. १, तै० ब्रा० २. ८. ७. ६; मै० सं० ३. ५१।

आ वां रथोऽवनिर्न ऋ० १. १८१. ३।

आ वां राजानावध्वरे ऋ० ७. ८४. १।

आ वां वयोऽश्वासो ऋ० ६. ६३. ७।

आ वां वहिष्ठा इह ते ऋ० ४. १४. ४।

आ वां वाहिष्ठो अश्विना ऋ० ८. २६. ४।

आ वां विप्र इहावसे ऋ० ८. ८. ९।

आ वां विश्वाभिरूतिभिः ऋ० ८. ८७. ३, ८. ८.१८।

आ वां श्येनासो अश्विना वह ऋ० १.११८. ४।

आ वां सहस्रं हरय ऋ० ४. ४६. ३।

आ वां सुम्ने वरिमन् ऋ० ६. ६३. ११।

आ वां सुम्नैः शंयू इव ऋ० १०. १४३. ६।

आ विद्युन्मद्भिर्मरुतः ऋ० १. ८८. १, नि ११. ११।

आ विबाध्या परिरापः ऋ० २. २३. ३।

आविरभून्महि माघोनं ऋ० १०. १०७.१।

आविरात्मानं कृणुते अ० १२. ४. ३०; पै० सं० १७. १८. १०।

आविरामिव मामयं अ० २०. १२६. ९।

आविर्मर्या आ वाजं सा० ४३५।

आविर्मर्या आवित्तो य० १०. ९.; श० ब्रा० ५. ३. ५. ३१–३७।

आ विवासन्परावतो ऋ० ६. ३९. ५. सा० ९०२।

आशिषश्च प्रशिषश्च अ० ११. ८. २७; पैं० सं० १६.८७. ७।

आशीत्या नवत्याया ऋ० २. १८. ६।

आशीर्ण ऊर्जमुत अ० २. २९. ३; पैं० सं० १९. १७. १२; काठ० सं० ५. ६, मैं० सं० ४. १२. ७४।

आशुभिश्चिद्यान्वि ऋ० २. ३८. ६।

आ शुभ्रा यातमश्विना ऋ० ७. ६८. १।

आशुरर्ष बृहन्मते ऋ० ९. ३९. १, सा० ८९८।

आशुस्त्रिवृद्भान्तः य० १४. २३; काठ० सं० १७. १३; श० ब्रा० ८. ४. १. ९—२६; मैं० सं० २. ८. १२, कपि० २६.३;३२. १४।

आशुं दधिक्रां तमु नु ष्ट ऋ० ४. ३९. १।

आशुं दूतं विवस्वतो ऋ० ४. ७. ४।

आशुः शिशानो वृषभो ऋ० १०. १०३. १. य० १७. ३३, सा० १८४९, अ० १९. १३. २, तैं० सं० ४. ६. ४. १, नि० १. १५, ऐ० ब्रा० ८. २. ६; मैं० सं० २. १०. ३४, काठ० सं० १८. ४५, पैं० सं० ७. ४. २, कपि० २५. २; २८. ५।

आश्रृण्वते अदृपिता ऋ० ४. ३. ३।

आश्रृण्वन्तं यवं देवं अ० ६. १४२. २।

आश्रुत्कर्ण श्रुधी हवं ऋ० १. १०. ९, नि० ७.२६।

आ श्येनस्य जवसा ऋ० १.११८.११, नि० ६.७।

आश्रवयेति य० १९. २४., तैं० सं० १. ६. ११. २; का० सं० २१. २६।

आश्विनावश्वावत्येषा ऋ० १. ३०. १७; ऐ० ब्रा० ७. ३. ४।

आ श्वैत्रेयस्य जन्तवो ऋ० ५. १९. ३।

आ स एतु य ईवदा ऋ० ८. ४६. २१।

आ सखायः सबर्दुघां ऋ० ६. ४८. ११।

आ सत्यो यातु मघवाँ ऋ० ४. १६. १, अ० २०. ७७. १; ऐ० ब्रा० ५ ४. २; ६. ४. २; गो० ब्रा० उ० ५. १५।

आसन्दी रूपं राजा य० १९. १६, का० सं० २१. १८।

आ सवं सवितुर्यथा ऋ० ८. १०२. ६, तै० सं० ३. १. ११. ८; मैं० सं० ४. ११. ६८; काठ सं० ४०.१२६।

आसस्राणासः शवसानं ऋ० ६. ३७. ३,।

आ सहस्रं पथिभिरिन्द्र ६. १८. ११।

आसंयतमिन्द्र णः अ० २०. २६. १०. ऋ० ६. २२. १०, अ० २०. ३६. १०।

आसां पूर्वासामहसु ऋ० १. १२४. ९।

आसीनासो अरुणीनां ऋ० १०. १५. ७, य० १९. ६३, अ० १८. ३. ४३; का० सं० २१. ६५;।

आसीमरोहत्सुयमा ऋ० ३. ७. ३।

आ सुग्म्याय सुग्म्यं ऋ० ८. २२. १५।

आ सुते सिञ्चत ऋ० ८. ७२. १३, य० ३३. २१,सा० १४८०; ऐ० ब्रा० १. ४. ५. का० सं० ३२. २१।

आसुरी चक्रे प्रथमेदं ऋ० १. २४.२।

आ सुष्ठुती नमसा ऋ० ५. ४३. २।

आसु ष्मा णो मघवन् ऋ० ६. ४४. १८।

आ सुष्वयन्ती यजते ऋ० १०. ११०. ६, य० २९. ३१, अ० ५. १२. ६, तै० ब्रा० ३. ६. ३. ३; नि० ८. ११; मैं० सं० ४. १३. १७; काठ० सं० १६. २३४ काठ० सं० १६. २३४; २१. ४३।

असुस्त्रसः सुत्रसो अ० ७. ७६. १।

आ सूर्यो अरुहच्छुक्रं ऋ० ५.४५. १०.।

आ सूर्यो न भानुमाद्भिः ऋ० ६. ४. ६।

आ सूर्यो न रश्मयो ऋ० १. ५९. ३।
आ सूर्यो यातु सप्ताश्वः ऋ० ५. ४५. ९।
आ सोता परिषिञ्चता ऋ० ९. १०८. ७, सा० ५८०, १३९४; तां ब्रा० १२. ५. ३।
आसो बलासो अ० ६. ८. १०; पै सं० १६. ७४. १०।
आ सोम स्वानो अद्रिभिः सा० ५१३, १६८९।
आ सोम सुवानो ऋ० ९. १०७. १०।
आ स्तुतासो मरुतो ऋ० ७. ५७. ७।
आस्थापयन्त युवतिं ऋ० १. १६७. ६।
आस्नस्ते गाथा अभवन् अ० १०. १० २०।
आस्नेयीश्च वा स्तेवीश्च अ० ११. ८. २८।
आस्नो वृकस्य वर्तिका ऋ० १. ११६. १४।
आ स्मा रथं वृषपाणेषु ऋ० १. ५१. १२।
आस्मिन्पिशङ्गमिन्दवो ऋ० ९. २१. ५।
आस्यं ब्राह्मणः अ० १४. १. ३९।
आ स्वमद्म युवमानो ऋ० १. ५८. २।
आ हतस्याभिहुतः ६. १३३. २।
आ हरयः ससृज्रिरे ऋ० ८. ६९. ५, सा० १४६०, अ० २०. २२. ५, ९२. २।
आ हरामि गवां अ० २. २६. ५; पै० सं० २. १२. ५।
आ हर्यताय धृष्णवे ऋ० ९. ९९. १, सा० ५५१; सा० ब्रा० ३. ३. १. २।
आ हर्यतो अर्जुने ऋ० ९. १०७. १३, सा० ७६८।
आहवनीयस्य च अ० १५. ६. १५।
आहं खिदामि ते मनः अ० ६. १०२. २।
आहं तनोमित्ते अ० ४.४.७, ६. १०१ ३।
आहं पितॄन्सुविदत्राँ ऋ० १०. १५. ३, य० १९. ५६, अ० १८. १. ४५, तै० सं० २. ६. १२. ७; ऐ० ब्रा० ३. ३. १३; मै० सं० ४. १०. १३८; काठ सं० २१. ६४; का० सं० २१. ५९, ऋ० भू० पञ्चमहायज्ञविषय।
आहं सरस्वतीवतोः ऋ० ८. ३८. १०; ऐ० ब्रा० ६. ४. ७।
आहार्षमविदं त्वा ऋ० १०. १६१. ५, अ० ८. १. २०, २०. ९६. १०, पै० सं० १६. २. ६।
आ हि द्यावापृथिवी ऋ० १०. १. ७।
आ हि रुहतमाश्विना ऋ० ८. २२. ९।
आ हि ष्मा याति ऋ० ४. २९. २।
आ हि ष्मा सूनवे ऋ० १. २६. ३।
आहुतास्यभिहुतः अ० ६. १३३. २।
आहुत्यान्नाद्यान्न अ० १५. १४. ८।
आ होता मन्द्रो ऋ० ३. १४. १।
इच्छन्त रेतो मिथस्तनूषु ऋ० १. ६८. ८।
इच्छन्ति त्वा सोम्यासः ऋ० ३. ३०. १, य० ३४. १८; ऐ० ब्रा० ६. ४. २।
इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं ऋ० ८. २. १८, सा० ७२१, अ० २०. १८. ३।
इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः ऋ० १. ८४. १४, सा० ९.१४, अ० २०. ४१. २, तै० ब्रा० १. ५. ८. १, काठ० सं० ३९. ७१; मै० सं० २. १३. २५।
इटस्य ते वि चृतामि अ० ६. ३. १८; पै० सं० १६. ४०. ९।
इड एह्यदित एहि य० ३. २७, ३८ २; श० ब्रा० २. ३. ४. ३४; १४. २. १. ७, का० सं० ३८. २।
इडया जुह्वतो वयं अ० ३. १०. ११।
इडाभिरग्निरीड्यः २१. १४; मै० सं० ३. ११. ११५; का० २३. १५।

आ० १. २६. १; काठ० सं० २०. ४४।

इदं वचः शतसाः ऋ० ७. ८. ६।

इदं वपुर्निवचनं ऋ० ५. ४७. ५।

इदं वर्चो अग्निना अ० १६. ३७. १।

इदं वसो सुतमन्धः ऋ० ८. २. १, सा० १२४, ७३४, ऐ० ब्रा० ३. २. ४; ४. १. ६; ४. १. ५; ८. १. १; ५. १. ४; ५. ३. १; श० ब्रा० १३. ५. १. ६; तां० ब्रा० ६. २. १६।

इदं वा मदिरं मधु ऋ० ८. ३८, ३; सा० १०७५।

इदं वामास्ये हविः ऋ० ४. ४६. १, तै० सं० ३. ३. ११. १।

इदं विद्वानाञ्जन अ० ४. ६. ७।

इदं विष्कन्धं संहत अ० १. १६. ३।

इदं विष्णुर्विचक्रमे ऋ० १. २२. १७, य० ५. १५, सा० २२२. १६६६, अ० ७. २६. ४, तै० सं० १.२. १३. ४, नि० १२. १६, ऐ० ब्रा० १. ३. ६, १. ४. ८; श० ब्रा० ३. ५. ३. १८; १२. ४. १. ४, काठ० सं० २.५३, कपि० २. ४, मै० सं० १. २६३, २७. २२६, तां० ब्रा०२०.३.२ ष० ब्रा०५. १. ६. ८; उ० ६. १. ४, १०. ३; ४. १. ७४; १२.२१; ऋ० भू० पञ्चमहायज्ञ विषय, जी० ले० ४७७; ५४५; द० शा० १६८; सा० ब्रा० ३. १. ४. १८।

इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ऋ० १. ११३. १, सा०१७४६, नि० २. १६।

इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरुत्तमं ऋ० १०. १७०. ३, सा० १४५५, ऐ० ब्रा० ७. ४. २. नि० २. १६।

इदं सदो रोहिणी अ० १३. १. २३।

इदं सवितर्वि जानीहि अ० १०. ८. ५।

इदं सु मे जरितः ऋ० १०. २८. ४, नि० ५. ३।

इदं सु मे नरः शृणुत अ० १४. २. ६।

इदं स्वरिदमिद ऋ० १०. १२४. ६।

इदं ह नूनमेषां ऋ० ८. १८. १।

इदं हविर्मघवन् ऋ० १०.११६.७, नि० ७.६, का० सं० ३८.२६।

इदं हविर्यातुधानान् अ० १. ८. १।

इदं हविः प्रजननं य० १६. ४८; श० ब्रा० १२. ८. १. २२; मै० सं० ३. ११. १०३; ३८. २६।

इदं हिरण्यं गुल्गुल्वयम् अ० २. ३६. ७।

इदं हिरण्यं बिभृहि अ० १८. ४. ५६।

इदं हि वां प्रदिवि ऋ० ५. ७६. ४; ऐ० ब्रा० १. ४. ४।

इदं ह्यन्वोजसा ऋ० ३. ५१. १०, सा० १६५, ७३७; तां० ब्रा० ६. २. १७; गो० ब्रा० उ० ५. ३. ५५६; सा० ब्रा० ३. १. ४. १५।

इदावत्सराय परि० अ० ६. ५५. ३।

इदाहनः पीतिं ऋ० ४. ३३. ११।

इदा हि त उषो ऋ० ६. ६५. ५।

इदाहि ते वेविषतः ऋ० ६. २१. ५।

इदा हि व उपस्तुतिं ऋ० ८. २७. ११।

इदा हि वो विधते ऋ० ६. ६५. ४।

इध्मं यस्ते जभर ऋ० ४. १२. २।

इध्मेन त्वा जातवेदाः अ० १६. ६४. २।

इध्मेनाग्न इच्छमानो ऋ० ३. १८. ३, अ० ३. १५. ३।

इनोत पृच्छ ऋ० ६.३८.२।

इनो राजन्नरतिः ऋ० १०.३.१, सा० १५४६।

इनो वाजानां ऋ० १०.२६.७।

इन्दविन्द्राय बृहते ऋ० ७.६७.१०।

इन्दुरत्यो न वाजसृत् ऋ० ७.४३.५।

इन्दुरिन्द्राय तोशते ऋ ७.१०६.२२।

इन्दुरिन्द्राय पवते ऋ० ७.१०१.५, सा० ८७३, अ० २०.१३७.५।

इन्दुर्दक्षः श्येन य० १८.५३; काठ सं० १८.७८; श० ब्रा० ७.४.४.५; मैं० सं० २.१२.११; ४.६.१८५, कपि० २.३।

इन्दुर्देवानामुपसख्यं ऋ० ६.६७.५।

इन्दुर्वाजी पवते ऋ० ६.६७.१०, सा० ५४०,१०१६; तां० ब्रा० १३.५.६।

इन्दुर्हिन्वानो अर्षति ऋ० ६.६७.४।

इन्दुर्हियानः सोतृभिः ऋ० ६.३०.२।

इन्दुं रिहन्ति महिषा ऋ० ६.६७.५७।

इन्दुः पविष्ट चारुर्मदाय ऋ० ६.१०६.१३, सा० ४३१।

इन्दुः पविष्ट चेतनः ऋ० ६.६४.१०, सा० ४८१।

इन्दुः पुनानः प्रजां ऋ० ६.१०६.६।

इन्दुः पुनानो अति ऋ० ६.६८.२६।

इन्दो यथा तव ऋ० ६.५५.२, सा० ६७६।

इन्दो यदद्रिभिः सुतः ऋ० ६.२४.५, सा० ६६४।

इन्दो व्यव्यमर्षसि ऋ० ६.६७.५।

इन्दो समुद्रमींखय ऋ० ६.३५.२।

इन्द्रआशाभ्यस्परि ऋ० २.४१.१२, अ० २०.२०.७,५७.१०, तै० ब्रा० २.५.३.१, नि० ६.१; तै०स० ४.६.४.८।

इन्द्र आसां नेता ऋ० १०.१०३.८, य० १७.४०, सा० १८५६, अ० १६.१३.६, तै सं० ४.६.४.८; काठ० सं० १८.५२; कपि० २८.५; पै० सं० ७.४.६।

इन्द्र इत्सोमपा ऋ० ८.२.४; ऐ०ब्रा० ४.५.३;५.२.१; ऐ०ब्रा० ५.२.४।

इन्द्रइद्धर्योः ऋ० १.७.२, सा० ५६७, ७६७, अ० २०.३८.५, ४७.५, ७०८, तै०ब्रा० १.५.८.२; काठ सं० ३६.७७।

इन्द्र इन्नो महानां ऋ० ८.६२.३, सा० ७१५।

इन्द्र इषे ददातु नः ऋ. ८.६३.३४, सा० १६६, ऐ०ब्रा० ५.४.२।

इन्द्र उक्थामदानि अ० ५.२६.३; पै०सं० ६.२.३।

इन्द्र उक्थेन शवसा ऋ० १०.१००.५।

इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठो सा० २२६।

इन्द्र ऋभुभिर्वाजवद्भिः ऋ० ३.६०.५।

इन्द्र ऋभुभिर्वाजिभिः ऋ० ३.६०.७।

इन्द्र ऋभुमान्वाजवान् ऋ० ३.६०.६।

इन्द्र एतमदीधरद् अ० ६.८७.३; पै०सं० १६.६.७।

इन्द्र एतां ससृजे अ० २.२६.७; पै०सं० १.१३.४।

इन्द्र ओषधीरस० ऋ० ३.३४.१०, अ० २०.११.१०।

इन्द्र क्रतुं न आ भर ऋ० ७.३२.२६, सा० २५६, १४५६, अ० १८.३.६७,२०.७६.१ तै०सं० ७.५.७.१३, १४; काठ०सं० ८.४८; ३३.१५।

इन्द क्रतुविदं सुतं ऋ. ३.४०.२, अ० २०.६.२; ७.४; गो० ब्रा० उ० ३.१४।

इन्द्र क्षत्रमभि ऋ० १०.१८०,३, अ. ७.८४.२ तै० सं० १.६.१२.४; पै० सं० १.७७.१।

इन्द्र क्षत्रासमातिषु ऋ. १०.६०.५।

इन्द्र गृणीष उ स्तुषे ऋ० ८.६५.५।

इन्द्र गोमन्निहा य० २६.४; का०सं० २८.६; कपि० ३.१।

इन्द्रघोषस्त्वा वसुभिः य० ५.११; श०ब्रा०

३.५.२.४—८; काठ०सं० २.४६; कपि० २.३ ।

इन्द्र चित्तानि अ० ३.२.३; मै०सं० ३.५.३ ।

इन्द्र जहरं नव्यं सा० ६५३, अ० २.५.२; पै०सं० २.७.३ ।

इन्द्र जहि पुमांसं ऋ० ७.१०४.२४, अ० ८.४.२४; पै०सं० १६.११.४ ।

इन्द्र जामय उत ये ऋ० ६.२५.३ ।

इन्द्र जीव सूर्य अ० १६.७०.१; गो०ब्रा०पू० १.१६ ।

इन्द्र जुषस्व प्र वहा सा० ६५२, अ० २.५.१ ।

इन्द्र ज्येष्ठं न आ भरं ऋ० ६.४६.५, सा० ५८६. अ० २०.८०.१; आ०ब्रा० ६.१.२.८ ।

इन्द्रज्येष्ठान्बृहद्भ्यः ऋ० ४.५४.५ ।

इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा ऋ० १.२३.८,२.४ १.१५ ।

इन्द्रतमा हि धिष्ण्या ऋ०१.१८२.२ ।

इन्द्रतुभ्यमिदद्रिवो ऋ० १.८०.७, सा० ४१२ ।

इन्द्र तुभ्यमिन्मघवन् ऋ० ६.४४.१० ।

इन्द्र त्रिधातु शरणं ऋ० ३.४६.६, सा० २६६, अ० २०.८३.१; काठ सं० ६.८२; ऐ०ब्रा० ५.१.१; ४.१; सा०मा० ३.२.२.२

इन्द्र त्वमवितेदसी ऋ० ८.१३.२६ ।

इन्द्र त्वा वृषभं वयं ऋ० ३.४०.१, अ० २०.११, ६.१; ऐ०ब्रा० ६.३.२, गो०ब्रा० उ० २.२० ।

इन्द्र त्वोतास आ वयं ऋ० १.८.३, अ० २०.७०.१६ ।

इन्द्र दृह्य मघवन् ऋ० १०.१००.१ ।

इन्द्र दृह्य यामकोशा अ० ३.३०.१५ ।

इन्द्र दृह्यस्व पूरसि ऋ० ८.८०.७ ।

इन्द्र नेदीय एदिहि ऋ० ८.५३.५ सा० २८२,

ऐ०ब्रा० ३.२.४; ४.५.१; ४.५.३; ५.२.७; ५.१.१; ५.१.४; ५.२.१; ५.३.३; ५.४.१ ऐ०आ० १.२.१ ।

इन्द्र पिब तुभ्य सुतो ऋ० ६.४०.१; ऐ०ब्रा० ५.२.१ ।

इन्द्र पिब प्रतिकामं ऋ० १०.११२.१ ।

इन्द्र पिब वृषधूतस्य ऋ० ३.४३.७ ।

इन्द्र पिब स्वधया ऋ० ३.३५.१० ।

इन्द्र पुत्रे सोमपुत्रे अ० ३.१०.१३ ।

इन्द्र प्रणः पुर एतेव ऋ० ६.४७.७ ।

इन्द्र प्र णो धितावानं ऋ० ३.४०.३, अ० २०.६ ३ ।

इन्द्र प्र णो रथमव ऋ० ८.८०.४ ।

इन्द्र प्रसूता ऋ० १०.६६.२

इन्द्र प्रेहि पुरस्त्वं अ० ८.१७.६, अ० २०.५.३ ।

इन्द्र ब्रह्म क्रियमाणा ऋ० ५.२६.१५

इन्द्रमग्निं कविच्छदा ऋ० ३.१२.३, सा० ६७१ ।

इन्द्रमच्छ सुता इमे ऋ० ६.१०६.१, सा० ५६६,६६४; ष०ब्रा० ४.२.१५ ।

इन्द्रमरुत्व इह ऋ० ३.५१.७ य० ७.३५, तै०सं० १४.१८.१; मै०सं० १.३.५५; काठ० सं० ४.३६; ऐ०ब्रा० ५.२.७; श० ब्रा० ४.३.३.६; कपि० ३.१६, ४१.८ ।

इन्द्रमहं वणिजं अ० ३.१५.१ ।

इन्द्रमित्केशिना हरी ऋ० ८.१४.१२, अ० २०.२६.२ ।

इन्द्रमित्था गिरो ऋ० ३.४२.३, ऋ० २०.२४ ३ ।

इन्द्र मिद्गाथिनो बृहत् ऋ० १.७.१, सा० १६८,७६६, अ० २०.३८.४, ४७.४,७०.७, तै०सं० १.६.१२.२,७; तै०ब्रा० १.५.८.१,

नि० ७.२; ऐ०ब्रा० १.५.२, ५.२.१, ३.१, काठ सं० ८.४०; ३९.७६, श्रा०ब्रा० ६.२.४.१; सा०ब्रा० ३.२.७.५,८।

इन्द्रमिद्देवतातय ऋ० ८.३.५, सा० २४९, १५८७, अ० २०.११८.३; ऐ०ब्रा० ५.२.७; सा०ब्रा० ३.२.४.८।

इन्द्रमिद्धरी वहतो ऋ० १.८४.२, य० ८.३५, सा० १०.३०, तै०सं० १.४.३८.१, काठ० सं० ४.६९ मै० सं० १.३.९२; कपि० ३.९,४१.८।

इन्द्रमिद्विमहीनां ऋ० ८.६.४४।

इन्द्रमिवेदुभये ऋ० ४.३९.५।

इन्द्रमीशानमोजसाभि ऋ० १.११.८, सा० १२५२।

इन्द्रमुक्थानि बावृधुः ऋ० ८.६.३५।

इन्द्रमृळ मह्यं ऋ ६.४७.१०।

इन्द्रमेव धिषणा ऋ० ६.१९.२।

इन्द्र य उ नु ऋ० ८.८१.८।

इन्द्र यथा ह्यस्ति ऋ० ८.२४.९।

इन्द्र यस्ते नवीयसीं ऋ० ८.९५.५।

इन्द्र वाजेषु नोऽव ऋ० १.७.४, सा० ५९८, ७९८, अ० २०.७०.१०, तै०ब्रा० १.५.८.२; मै०सं० २.१३.२९; काठ० सं० ३९.७८।

इन्द्रवायू अयं सुतः ऋ. ४.४६.६; य० ३३.८६; ऐ०ब्रा० ५.२.१; पै०सं० ३.३.४.७।

इन्द्रवायू इमे सुता ऋ० १.२.४, य० ७.८, ३३.५६, तै०सं० १.४.४.२, मै०सं० १.३.२२, काठ सं० ४.७,७.७; ३२.५६; ऐ०ब्रा० २.४.२; ३.१.१; ऐ० आ० १.१.४, का० सं० ३२.५६, कपि० ३.१,२, ४१.८।

इन्द्रवायू उभाविह अ० ३.२०.६।

इन्द्रवायू बृहस्पतिं मित्राग्निम् ऋ० १.१४.३ ३३.४५; का०सं० ३२.४५;।

इन्द्रवायू बृसस्पति सुहवहे ऋ० १०.१४१.४, य० ३३.८६, अ० ३.२०.६।

इन्द्रवायू मनोजुवा ऋ० १.२३.३।

इन्द्रवायू सुसन्दृशा य० ३३.८६; मै०सं० १.११.२१; २.२.२४ काठ० सं० १०.३८, ७४.११।

इन्द्र शविष्ट सत्पते ऋ. ८.१३.१२।

इन्द्र शुद्धो न आ गहि ऋ० ८.९५.८, सा० १४०३।

इन्द्र शुद्धो हि नो रयिं ऋ० ८.९५.९, सा० १४०४।

इन्द्रश्चकार प्रथमं अ० ६.६५.३; पै० सं० १९.११.९।

इन्द्रश्च मरुतश्च य० ८.५५।

इन्द्रश्च मृळयातिनः ऋ० २.४१.११, अ० २०.२०.६, ५७.९।

इन्द्रश्च वायवेषां ऋ० ५.५१.६ सा० १६२९।

इन्द्रश्च वायवेषां सोमानां ऋ० ४.४७,२, सा० १६२९; ऐ० ब्रा० ५.१.४।

इन्द्रश्च सम्राड् वरुणश्च य० ८.३७।

इन्द्रश्च सोमं पिबतं ऋ० ४.५०.१०, अ० २०.१३.१; ऐ० ब्रा० ६.३.४; गो० ब्रा० उ० २.१२, ४.१६।

इन्द्रश्चिद्घातद्ब्रवीत् ऋ० ८.३३.१७।

इन्द्र श्रुधि सु मे ऋ० ८.८२.६।

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि ऋ० २.२१.६; सं० वि० जातकर्म, निष्क्रमण संस्कार।

इन्द्र सुतेषु सोमेषु ऋ० ८.१३.१; सा० ३८१, ७४६, तां० ब्रा० ९.२.११।

इन्द्रसेनां मोहय अ० ३.१.५।

इन्द्र सोममिमं ऋ० १०.४.१।

इन्द्र सोम पिब ऋ० १.१५.१।

इन्द्र सोमं सोमपते ऋ० ३.३२.१; ऐ० ब्रा० ४.५.३।

इन्द्रः सोमाः सुता ऋ० ३.४०.४, अ० २०.६.४.।

इन्द्रः सोमाः सुता इमे ऋ० ३.४२.५, अ० २०.२४.५.।

इन्द्रस्तुजो बर्हणा ऋ० ३.३४.५ अ० २०.११.५।

इन्द्रस्तुराषाण्मित्रो अ० २.५.३, सा० ६५४; पै० सं० २.४.७।

इन्द्रस्ते सोम ऋ० ६.१०६.२, सा० १३६६।

इन्द्रस्त्रातोत वृत्रहा अ० १६.१५.३; पै० सं० ३,३५.३।

इन्द्र स्थातर्हरीणां ऋ० ८.२४.१७, सा० १६८५, अ० २०.६४.५।

इन्द्रस्पळ्‌त वृत्रहा ऋ० ८.६१.१५।

इन्द्रस्य कर्म सुकृता ऋ० ३.३२.८।

इन्द्रस्य कुक्षिरसि अ० ७.१११.१; पै० सं० २०.६.६।

इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै य० २५.८; मै० सं० ३.१५.७; तै० सं० ५.७.१६.१; का० सं० २१.१२।

इन्द्रस्य गृहोऽसि अ० ५.६.११; पै० सं० ६.१२.१।

इन्द्रस्य त्वा वर्मणा अ० १६.४६.४; पै० सं० ४.२३.६।

इन्द्रस्य दूतीरिषिता ऋ० १०,१०८.२।

इन्द्रस्य नाम गृह्णन्त अ० १६.३५.१; पै० सं० ११.४.१।

इन्द्रस्य नु वीर्याणि ऋ० १.३२.१, सा० ६१२, अ० २.५,५, तै० ब्रा० २.५.४.१, नि० ७.२; ऐ० ब्रा० ३.२.१३; ५.३.२; ऐ० आ० ५.२.१; मै० सं० ४.१४.१८८; आ० ब्रा० ६.३,४.६; सा० ब्रा० ३.३.६.५।

इन्द्रस्य नु सुकृतं ऋ० १०.१००.६।

इन्द्रस्य प्रथमो रथो अ० १०.४.१।

इन्द्रस्य बाहूस्थविरौ सा० १८६६, अ० १६.१३.१; गो० ब्रा० उ० १.११; पै० सं० ७.४.१।

इन्द्रस्य भाग स्थ अ० १०.५.८; पै० सं० १६.१२८.२।

इन्द्रस्य मन्महे अ० ४.२४.१।

इन्द्रस्य या मही अ० २. ३१ १।

इन्द्रस्य रूपमृषभो य० १६. ६१; काठ० सं० ३८. ३८; का० सं० २१. ६१।

इन्द्रस्य व इन्द्रियो अ० १६. १. ६।

इन्द्रस्य वचसा वयं अ० ६. ८५. २; पै० सं० १६. ६. २।

इन्द्रस्य वज्र आयसो ऋ० ८. ६६. ३।

इन्द्रस्य वज्रोम रुतां ऋ० ६ ४७. २८, य० २६. ५४, अ० ६. १२५. ३, तै० सं० ४. ६. ६. ६; १७; मै० सं० ३. १६. ४०।

इन्द्रस्य वज्रोऽसि ऋ० ६. ४७. २८; य० ६. ५; १०. २१; अ० ६. १२५. ३; मै० सं० २. ६. ३१; तै० सं० १. ७. ७. २; ८ १२. २७; २५. १; १६. १६; ५. ७. ३. १, ४. ६. ६. ६; श० ब्रा० ५. १. ४. ३; ४; ५. १. ४. ४; ४. ३.४–१४।

इन्द्रस्य वरुथमसि अ० ५. ६. १४; पै० सं० ६. १२. ४।

इन्द्रस्य वर्मासि अ० ५. ६. १३; पै० सं० ६. १२.३।

इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य ऋ० १०. १०३. ६,

य० १७ ४१, सा० १८५७, अ० १९. १३. १०, तै० सं० ४. ६. ४. ६; मै० सं० २. १०. ४२, काठ० सं० १८. ५३; ६३; पै० सं० ७. ४. १०।

इन्द्रस्य शर्मासि अ० ५. ६. १२।

इन्द्रस्य सख्यमृभवः ऋ० ३. ६०. ३।

इन्द्रस्य सोम पवमानं ऋ० ९. ७६. ३, सा० १२३०।

इन्द्रस्य सोम राधसे ऋ० ९. ८. ३, ६०. ४; सा० ११८०।

इन्द्रस्य स्यूरसि य० ५. ३०; श० ब्रा० ३. ६. १. २५; २६, तै० सं० ६. २. १०. २२; कपि० २. ६; ४०. ३; ४१. ५।

इन्द्रस्य हृदि ऋ० ९. १०८. १६।

इन्द्रस्यांगिरसां चेष्टौ ऋ० १. ६२. ३।

इन्द्रस्यात्र तविषीभ्यः ऋ० १०. ११३. ६।

इन्द्रस्येव रातिमा ऋ० १०. १७८. २; ऐ० ब्रा० ४. ३. ६।

इन्द्रस्यौज स्थ य० ३७. ६; श० ब्रा० १४. १.२.१२-१४, का० सं० ३७. ६।

इन्द्रस्यौज स्थेन्द्रस्य अ० १०. ५. १-६, पै० सं० १६. १२७. १—५।

इन्द्रयस्यौजो मरुताम् य० २९. ५४; अ० ६. १२५. ३. गो० ब्रा० पू० २. २१।

इन्द्रस्यौजो वरुणस्य अ० ६. ४. ८.।

इन्द्रस्य वज्रो मारुतास् ऋ० ६. ४७. २८।

इन्द्रं कामा वसूयन्तो ऋ० ४. १६.१५.।

इन्द्रं कुत्सो वृत्रहणं ऋ० १. १०६. ६।

इन्द्रं तं शुभं ऋ० ८. ७०. २, सा० ९३४, अ० २०. ९२.१७, १०५. ५।

इन्द्रं ते मरुत्वन्तम् अ० १९. १८. ८; पै० सं० ७. १७. ८।

इन्द्रं दुरः कवष्यो य० २०. ४०।

इन्द्रं दैवीर्विशो य० १७. ८६; कपि० २८.६।

इन्द्रं धनस्य सातये सा० ६४७ सा० ब्रा० ३. १. ४. १३।

इन्द्रं नरो नेमधिता ऋ० ७. २७. १, सा० ३१८, तै० सं० १. ६. १२२, आ० ब्रा० ६.१.३. १, ११; ६. २. १. १; २, ३, ६. ३. २. ३, ३. ३. १, ३.४.१, ३, ५, ८, ३. ५. १, ३. ७. २, सा० ब्रा० ३. २. १. ६।

इन्द्रं नो अग्ने ऋ० ७. १०. ४।

इन्द्रं परे ऽवरे ऋ० ४. २५. ८।

इन्द्रं प्रत्नेन मन्मना ऋ० ८. ७६. ६।

इन्द्रं प्रातर्हवामहे ऋ० १. १६. ३।

इन्द्रं मतिर्हृद ऋ० ३. ३९. १।

इन्द्रं मित्रं वरुणम् ऋ० १. १६४. ४६, अ० ९. १०. २८, ९.१५ २८, नि० ७. १७, १४. २; स० प्र० प्रथम समुल्लास, ऋ० भा०१.१. प्र० ४६, ल० आ० नि० १६७, १८७, ल० वेदाङ्क, १२४, ऋ० भू० वेदविषयविचार।

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निम् ऋ० १. १०६. १।

इन्द्रं वयमनूराधं अ० १९. १५. २।

इन्द्रं वयं महाधन ऋ० १. ७. ५, सा० १३०, अ० २०. ७०. ११, तै ब्रा० २. ७. १३. १।

इन्द्रं वर्धन्तु नो गिर ऋ० ८. १३. १६।

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः ऋ० ९. ६३. ५।

इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युम् ऋ० ७. ३१. १२, सा० १७९५।

इन्द्रं विश्वा अवीवृधन् ऋ० १. ११. १, य० १२. ५६. १५. ६१, १७. ६१, सा० ३४३, ८२७, तै० सं० ४. ६. ३. १२, ५. ४. ६. २०, तै० ब्रा० २. ७. १५.५,

मै० सं० २. १०. ५१, ४. ११. ६४, का० स० १३. ५७, १६. ८२, १८. ६१, काठ० सं० ८. २६, ३६. ४३, ३७. २१, १८. २६, ३६. ४३; श० ब्रा० ८. ७. ३. ७, ६. २. ३. २०, कपि० २५. २, २८. ३।

इन्द्रं वृत्राय हन्तवे ऋ० ८. १२. २२।

इन्द्रं वृत्राय हन्तवे पुरुहूतं ऋ० ३. ३७. ५, अ० २०. १६. ५।

इन्द्रं वो नरः सख्याय ऋ० ६. २६. १।

इन्द्रं वो विश्वतः परि ऋ० १. ७. १०, सा० १६२०, अ० २०. ३६. १. ७०. १६, तै० सं० १. ६. १२. १; २. १. ११. १, ३. १४. ३, १. ११. १७, ४. ३. १३. ३०, काठ० सं० ८. ७४, गो० ब्रा० उ० ५. १२।

इन्द्रं सोमस्य पीतये ऋ० ३. ४२. ४, अ० २०. २४. ४।

इन्द्रं स्तना नृतमं ऋ० १० ८६. १।

इन्द्रः कारुमबूबुधद् अ० २०. १२७ ११, गो० ब्रा० उ० ६. १२।

इन्द्रः किल श्रुत्या ऋ० १०. १११. ३।

इन्द्रः पूर्भिदातिरद् ऋ० ३. ३४. १, अ० २०. ११. १, नि० ४. १७, ऐ० ब्रा० ६. ४. २।

इन्द्रः स दामने ऋ० ८. ६३. ८, सा० १२२३, अ० २०. ४७. २, १३७.१३, तै० ब्रा० १. ५. ८. ३, ऐ० ब्रा० ५. २. ३, मै० सं० २. १३. ३१।

इन्द्रः समत्सु यजमानं ऋ० १. १३०. ८।

इन्द्रः सहस्रदाव्नां ऋ० १. १७. ५।

इन्द्रः सीता ऋ० ४. ५७. ७, अ० ३. १७. ४।

इन्द्रः सुतेषु सोमेषु ऋ० ८. १३. १।

इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ ऋ० ६. ४७. १२, १०. १३१. ६, य० २०. ५१, अ० ७. ६१. १, २०. १२५. ६, तै० सं० १. ७. १३. ११, मै० सं० ४. १२. १२०।

इन्द्रः सुत्रामा हृदयेन य० १६. ८५, मै० सं० ३. ११. ७७।

इन्द्रः सु पूषा ऋ० ३. ५७. २।

इन्द्रः सुशिप्रो ऋ० ३. ३०. ३।

इन्द्रः सूर्यस्य रश्मिभिः ऋ० ८. १२. ६।

इन्द्रः सेनां मोहयतु अ० ३. १. ६।

इन्द्रः स्पळुत वृत्रहा ऋ० ८. ६१. १५।

इन्द्रः स्वर्षा जनयन् ऋ० ३. ३४. ४, अ० २०. ११. ४, तै० ब्रा० २. ४. ३. ६।

इन्द्रः स्वाहा पिबतु ऋ० ३. ५०. १, ऐ० ब्रा० ५. ४. १।

इन्द्राकुत्सा वहमाना ऋ० ५. ३१. ६।

इन्द्रा को वां वरुणा ऋ० ४. ४१. १।

इन्द्राग्नी अपसस्पर्युप ऋ० ३. १२. ७, सा० १५७७, १६६४, गो० ब्रा० उ० ३. १५. ४७६।

इन्द्राग्नी अपादियं अ० ६. ५६. ६, य० ३३. ६३, सा० २८१।

इन्द्राग्नी अवसागतं ऋ० ७. ६४. ७।

इन्द्राग्नी अव्यथमाना य० १४. ११, श० ब्रा० ८. ३. १. ८, काठ० सं० १७. ११, २०. २४, तै० सं० ४. ३. ६. १, ५. ३. २. १, कपि० २६. २, ३२. १३।

इन्द्राग्नी आगतं सुतं ऋ० ३. १२ १, य० ७. ३१, सा० ६६६, तै० सं० १. ४. १५. १, मै० सं० १. ३. ५. १, कपि० ३. १. ५, ४१. ८, काठ० सं० ४. ३०, तां० ब्रा० १५. ६. ६, ११. २. ३, गो० ब्रा० उ० ३.

१५. ४७६, श० ब्रा० ४. ३. १. २४, कपि० ३. १, ५, ४१. ८।

इन्द्राग्नी आहि तन्वते ऋ० ६. ५९. ७।

इन्द्राग्नी उक्थवाहसा ऋ० ६. ५९. १०।

इन्द्राग्नी काम सरथं अ० ६. २. ६, पैं० सं० १६. ७६. ८।

इन्द्राग्नी को अस्य वां ऋ० ६. ५९. ५।

इन्द्राग्नी: जरितुः सचा ऋ० ३. १२. २, सा० ६७०।

इन्द्राग्नी तपन्ति माघा ऋ० ६. ५९. ८।

इन्द्राग्नी तविषाणि वां ऋ० ३. १२. ८, सा० १५७८, १६६५।

इन्द्राग्नी द्यावापृथिवी अ० १४. १. ५४, पैं० सं० १८. ६. २, सं० वि० विवाह संस्कार।

इन्द्राग्नी नवति ऋ० ३. १२. ६, सा० १५७६, १७०४, काठ० सं० ४. १०२, मै० सं० ४. १०. १२५, तै० सं० १. १. १४. १।

इन्द्राग्नी मित्रावरुणादितिं ऋ० ५. ४६. ३, य० ३३. ४९।

इन्द्राग्नी यमवथ उभा ऋ० ५. ८६. १।

इन्द्राग्नी युवं सु नः ऋ० ८. ४०. १, ऐ० आ० १. ५. १, ५. ३. १।

इन्द्राग्नी युवामिमे ऋ० ६. ६०. ७, सा० ९९१, तां० ब्रा० १३. २. ९।

इन्द्राग्नी युवोरपि ऋ० ६. ५९. ९।

इन्द्राग्नी रक्षतां अ० १९. १६. २।

इन्द्राग्नी रोचना दिवः ऋ० ३. १२. ९, सा० १६६३, तै० सं० ३. १३. २८, ४. २. ११. १, तै० ब्रा० ३. ५. ७. ३, मै० सं० ४. १० १००, ४. ११. १, ३. १३. २८, काठ० सं० ४. ९६।

इन्द्राग्नी वृत्रहत्येषु ऋ० १०. ६५. २।

इन्द्राग्नी शतदाव्नि ऋ० ५. २७. ६।

इन्द्राग्नी श्रृणुतं ऋ० ६. ६०. १५।

इन्द्राग्न्योः पक्षतिः य० २५. ५, का० सं० २७. ९।

इन्द्राणी भसद्वायुः अ० ९. ७. ८।

इन्द्राणीमासु नारिषु ऋ० १०. ८६. ११, अ० २०. १२६. ११, तै० सं० १.७. १३. १, नि० ११. ३८, काठ० सं० ८. ६४।

इन्द्रादिन्द्रः सोमात् अ० ११. ८. ९, पैं० सं० १६. ८५. ८।

इन्द्रानु पूषणा वयम् ऋ० ६. ५७. १, सा० २०२, मै० सं० ४. १२. १६३, काठ० सं० २३. २७।

इन्द्रा पर्वता बृहता ऋ० ३. ५३. १, सा० ३३८, काठ० सं० २३. २९।

इन्द्राबृहस्पती वयं ऋ० ४. ४९. ५।

इन्द्राय गाव आशिरं ऋ० ८. ६९. ६, सा० १४९१, अ० २०. २२. ६, ९२. ३, तै० ब्रा० २.७. १३. ४, नि० ६. ८।

इन्द्राय गिरो अनिशित ऋ० १०. ८९. ४, सा० ३३९, तै० ब्रा० २. ४. ५. २।

इन्द्राय त्वा वसुमते य० ६. ३२, ३८. ८, श० ब्रा० ३. ९. ४. ९, १०, १४. २. २. ६-१०, का० सं० २८.८ कपि० २. १७।

इन्द्राय नूनमर्चतो ऋ० १. ८४. ५, सा० ९५१।

इन्द्राय पवते मदः ऋ० ९ १०७. १७, सा० ५२०, सा० ब्रा० ३. १. ३. ५।

इन्द्राय भागं परि अ० ९. ५. २, पैं० सं० ६. ९. १०।

इन्द्राय मद्वने सुतं ऋ० ८. ९२. १९, सा० १५८, ७२२, अ० २० ११०. १; ऐ० ब्रा० ४. १. ६, तां० ब्रा० ९. २. ७, गो०

ब्रा० उ० ५. ३।

इन्द्राय वृषणं मदं ऋ० ६. १०६. ५।

इन्द्राय साम गायत ऋ० ८. ६८. १, सा० ३८८, १०२५, अ० २०. ६२. ५, नि० ७. २, ऐ० आ० ५. २ ५, तां० ब्रा० १३. ६. ३।

इन्द्राय सु मदिन्तमं ऋ० ८. १. १६।

इन्द्राय सोम ऋ० ६. ७८. २।

इन्द्राय सोम पवसे ऋ० ६. २३. ६।

इन्द्राय सोम पातवे सा० १४४८।

इन्द्राय सोम पातवे नृभिः ऋ० ६. १०८. १५।

इन्द्राय सोम पातवे मदाय ऋ० ६. ११. ८, सा० १४४८।

इन्द्राय सोम पातवे वृत्रहने ऋ० ६. ६८. १०, सा० १३३१, १६७६।

इन्द्राय सोममृत्विजः अ० ६. २. १, पै० सं० १६. १. ४।

इन्द्राय सोम सुषुतः ऋ० ६ ८५. १, सा० ५६१।

इन्द्राय सोमाः ऋ० ३ ३६. २, तै० ब्रा० २. ४. ३. १२, ऐ० ब्रा० ६. ३. ३।

इन्द्राय हि द्यौः ऋ० १. १३१. १, ऐ० आ० ५. १. १।

इन्द्रा याहि चित्रभानो ऋ० १. ३. ४, य० २०. ८७, सा० ११४६, अ० २०. ८४. १, ऐ० ब्रा० ३. १. १, का० सं० २२. ७४, ७५ तां० ब्रा० १४. २. ५।

इन्द्रा याहि तूतुजानः ऋ० १. ३. ६, य० २०. ८६, सा० ११४८, अ० २०. ८४. ३, का० सं० ,२२. ७७।

इन्द्रा याहि धियेषितो ऋ० १.३.५, य० २०. ८८, सा० ११४७, अ० २०.८४.२; ऐ० ब्रा० ३.१.१, का० सं० २२.७३।

इन्द्रा याहि मे हवम् अ० ५. ८. २, पै० सं० ७. १८. २।

इन्द्रा याहि वृत्रहन् य० २६. ५, कपि० ३.१।

इन्द्रा युवं वरुणा ऋ० ४. ४१. ४।

इन्द्रा युवं वरुणा भूतं ऋ० ४. ४१. ५।

इन्द्रायेन्दुं पुनीतनो ऋ० ६. ६२. २६।

इन्द्रायेन्दुं सरस्वती य० २०. ५७, का० सं० २२. ४५, काठ० सं० ३८. ६०।

इन्द्रायेन्दो मरुत्वते ऋ० ६. ६४. २२, सा० ४७२, १०७६, तां० ब्रा० १३. ६. १, ष० ब्रा० पू० ६१. ४, उ० ६. ३. ३।

इन्द्रावरुण नु नु वां ऋ० १. १७. ८।

इन्द्रावरुणयोरहं ऋ० १. १७. १, तै० सं० २. ५. १२. १८, का० सं० १२. ३८।

इन्द्रावरुण मधुमत्तमस्य ऋ० ६.६८.११ अ० ७. ५८, २, गो० ब्रा० उ० ४.१५, पै० सं० २०. ६. ६।

इन्द्रावरुण वामहं ऋ० १. १७. ७।

इन्द्रावरुण सुतपौ ऋ० ६. ६८. १०, अ० ७. ५८. १, गो० ब्रा० उ० २. २२, पै० सं० २०. ६. ५।

इन्द्रावरुणा यदिमानि ऋ० ७. ८२. ५।

इन्द्रावरुणा यदृषिभ्यो ऋ० ८. ५६. ६।

इन्द्रावरुणा युवमध्वरायो ऋ० ७. ८२. १, तै० सं० २. ५. १२. १६, तै० ब्रा० २. ८. ४. ५, नि० ५. २, मै० सं० ४. १२. ८४।

इन्द्रावरुणा वधनाभिरप्रति ऋ० ७. ८३.४।

इन्द्रावरुणाभ्यां तपन्ति ऋ० ७. ८३. ५।

इन्द्रावरुणा सुतपाविमं ऋ० ६. ६८ १०, अ० ७. ५८. १; ऐ० ब्रा० ६. ३. ४।

इन्द्रावरुणा सौमनसं ऋ० ८. ५६. ७।

इन्द्रो अश्रायि सुध्यो ऋ० १.५१.१४,नि० ६.३१।

इन्द्रो अस्माँ अरदद्वज्रबाहुः ऋ० ३.३३.६, नि० २.३६।

इन्द्रो अस्मे सुमना ऋ० १०.१००.४।

इन्द्रो जघान अ० १०.४.१८, पै० सं० १६.१६.८।

इन्द्रो जयाति अ० ६.६८.१, पै० सं० १६.१२.१३, मै० सं० ४.१२.७६, तै० सं० २.४.१४.४, स० प्र० ६ समु०, ऋ०भू० राज-प्रजा० विषय।

इन्द्रो जातो मनुष्ये अ० ४.११.३।

इन्द्रोतिभिर्बहुलाभिः ऋ० ३.५३.२१,अ० ७.३१.१।

इन्द्रो दधीचो अस्थाभिः ऋ० १.८४.१३, सा० १७९,९१३, अ० २०.४१.१,तै० ब्रा० १,५.८.१, मै० सं० २.१३.२३, काठ० सं० ३९.७०, ता० ब्रा० १२.८.५।

इन्द्रो दिव इन्द्र ऋ० १०.८९.१०, नि० ७.२।

इन्द्रो दिवः प्रतिमानं ऋ० १०.१११.५।

इन्द्रो दिवोऽधिपतिः अ० ५.२४.११।

इन्द्रो दीर्घाय चक्षसे ऋ० १.७.३,सा० ७९९, अ० २०.३८.६,४७.६,७०.९, तै० ब्रा० १.५.८.२,मै० सं० २.१३.१७,२७।

इन्द्रो न यो महा ऋ० ९.८८.४।

इन्द्रो नेदिष्ठमवसा ऋ० ६.५२.६।

इन्द्रो बलं रक्षितारं अ० २०.९१.६।

इन्द्रो ब्रह्मा ब्राह्मणात् अ० २०.२.३।

इन्द्रो ब्रह्मेन्द्र ऋ० ८.१६.७।

इन्द्रो मदाय वावृधे ऋ० १.८१.१,सा० ४११,१००२, अ० २०. ५६.१, ऐ० ब्रा० ५.२.३, ऐ० आ० ५.२.२, श० ब्रा० १३.५.१.१०, तां ब्रा० १३.४.१४, आ० ब्रा० ६.२.४.३, सा० ब्रा० ३.२.७.११।

इन्द्रो महां सिन्धुम् ऋ० २.११.९।

इन्द्रो मधु संभृतम् ऋ० ३.३९.६।

इन्द्रो मन्थतुमन्थिता अ० ८.८.१,पै० सं० १७.२९.१।

इन्द्रो मह्ना महतो ऋ० १०.६७.१२, १११.४, अ० २०.९१.१२।

इन्द्रो मह्ना रोदसी ऋ० ८.३.६, सा० १५८८, अ० २०.११८.४, स० प्र० प्रथम समु०।

इन्द्रो मा मरुत्वान् अ० १८.३.२५,१९.१७.८, पै० सं० ७.१६.८।

इन्द्रो मेन्द्रियेणावतु अ० १९.४५.७, पै० सं० १५.४.७।

इन्द्रो मेऽहिमरन्धयत् अ० १०.४.१६, १७, पै० सं० १६.१५.१०।

इन्द्रो यज्वने ऋ० ६.२८.२, अ० ४.२१.२, तै० ब्रा० २.८.८.११।

इन्द्रो यातोऽवसितस्य ऋ० १.३२.१५, तै० ब्रा० २.८.४.३, मै० सं० ४.१४.१९०।

इन्द्रो यातुनामभवत् ऋ० ७.१०४.२१, अ० ८.४.११, नि० ३.२०.६.३०, पै० सं० १६.११.१।

इन्द्रो युनक्तु अ० ५.२६.११, पै० सं० ९.२.९।

इन्द्रो रथाय प्रवतं ऋ० ५.३१.१।

इन्द्रो राजा सा० ५८७।

इन्द्रो राजा जगतः ऋ० ७.२७.३, अ० १९.५.१, तै० ब्रा० २.८.५.८, आ० ब्रा० ६.१.३.७, ३.२.१, पै० सं० २०.१८.४, मै० सं० ४.१४.१९३।

इन्द्रो रूपेणाग्निर्वहेन अ० ४.११.७।

सामान्यप्रकरण; तै० सं० २.१.११.२१; ५.१२.११,४६.११.२६;४.२.११.१७;का० सं० २३.१।

इमं मे स्तोमम् ऋ० ८.८५.२।

इमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण ऋ० १०.१५० २; काठ० सं० २.८५।

इमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण उपागहि ऋ० १.९१.१०; मै० सं० ४.११.१३७;४.१२.४।

इमं यज्ञं च नो ऋ० ६.१०.६।

इमं यज्ञं त्वम् ऋ० ४.२०.३।

इमं यज्ञं सहसावन् ऋ० ३.१.२२।

इमं यमप्रस्तरमा ऋ० १०.१४.४, अ० १८.१.६०, तै० सं० २.६.१२.६; मै० सं० ४.१४.२३२।

इमं यवमष्टायोगैः अ० ६.९१.१।

इमं रथमधि ऋ० १.१६४.३, अ० ९.९.३।

इमं वहनामि ते मणिं अ० १९.२८.१।

इमं विधन्तो ऋ० २.४.२।

इमं विधन्तो अपां सधस्थे ऋ० १०.४६.२।

इमं वीरमनु हर्षध्वम् अ० ६.९७.३,१९.१३.६; ऋ० भू० राजप्रजाधर्मविषय।

इमं वृषणं कृणुतैक सा० ५९१; आ० ब्रा० ६.१.६.३।

इमं साहस्रं शतधारम् य० १३.४९; काठ० सं० १६.२१६; श० ब्रा० ७.५.२.३४; कपि० २५.८।

इमं स्तनमूर्जस्वन्तं य० १७.८७; काठ० सं० ४०.४१; तै० सं० ५.५.१०.१५।

इमं स्तोममभिष्टये ऋ० ८.१२.४।

इमं स्तोममर्हते जातवेदसे ऋ० १.९४.१, सा० ६६,१०६४, अ० २०.१३.३; ऐ० ब्रा० ६.३.४; ऐ० आ० १.५.३; मै० सं० २.७.४.३; गो० ब्रा० उ० २.२२।

इमं स्तोमं रोदसीं ऋ० ३.५४.१०।

इमं स्तोमं सक्रवतो ऋ० २.२७.२।

इमं स्वस्मै हृद ऋ० २.३५.२; काठ० सं० १२.६३।

इमं होमा यज्ञमवतेमं अ० १९.१.२।

इमा अग्ने मतयः ऋ० १०.७.२।

इमा अभि प्र णोनुमो ऋ० ८.६.७।

इमा अस्मै मतयो ऋ० १०.९१.१२।

इमा अस्य प्रतूर्तय ऋ० ८.१३.२९।

इमा आपः प्रभरामि अ० ३.१२.९,९.३.२३।

इमा इन्द्रं वरुणं ऋ० ४.४१.९।

इमा उत्वा पस्पृधाना ऋ० ७.१८.३।

इमा उत्वा पुरुतमस्य ऋ० ६.२१.१।

इमा उत्वा पुरुशाक ऋ० ६.२१.१०; ऐ० ब्रा० ५.४.१।

इमा उत्वा पुरूवसो ऋ० ८.३.३, य० ३३.८१, सा० २५०, १६०७, अ० २०.१०४.१; ऐ० ब्रा० ५.२.१।

इमा उत्वा शतक्रतो ऋ० ६.४५.२५।

इमा उत्वा सुते सुते ऋ० ६.४५.२८; सा० २०१; अ० ब्रा० ६.३.२.४।

इमा उ वः सुदानवो ऋ० ८.७.१९।

इमा उ वां दिविष्टयः ऋ० ७.७४.१, सा० ३०४,७५३; ऐ० ब्रा० ५.२.१; गो० ब्रा० उ० ५.३.५५८; १०.५७९।

इमा उ वां भृमयो ऋ० ३.६२.१, नि० ५.५।

इमा गावः सरमेया ऋ० १०.१०८.५।

इमा गिर आदित्येभ्यो ऋ० २.२७.१, य० ३४.५४, नि० १२,३४; काठ० सं० ११.४७, का० सं० ३३.४२।

इमा गिरः सवितारं ऋ० ७.४५.४ ।

इमा जुषेथां सवना ऋ० ८.३८.५ ।

इमा जुह्वाना युष्मदावनो ऋ० ७.६५.५, तै० ब्रा० २.४.६.१; काठ० सं० ४.१२०; ७.६५; ऐ० ब्रा० ५.३.३; मै० सं० ४.१४.४४ ।

इमा ते धियं य० ३३.२६ ।

इमा ते वाजिन्नव ऋ० १.१६३.५, य० २६.१६, तै० सं० ४.६.७.२; काठ० सं० ४०.३६, का० सं० ३१.२८; गो० ब्रा० पू० २.२१.१५१ ।

इमा धाना घृतस्नुवो ऋ० १.१६.२, तै० ब्रा० २.४.३.१० ।

इमा नारीरविधवाः ऋ० १०.१८.७, अ० १२.२.३१, १८.३.५७, तै० आ० ६.१०.२; पै० सं० १७.३३.१ ।

इमानि त्रीणि विष्टपा ऋ० ८.९१.५ ।

इमानि यानि पञ्च अ० १९.९.५ ।

इमानि वां भागधेयानि ऋ० ८.५९.१; ऐ० ब्रा० ६.४.६ ।

इमा नु कं भुवना ऋ० १०.१५७.१, य० २५.४६,सा० ४५२,१११०, अ० २०.६३.१,१२४.४ आ० ब्रा० ६.२.५.१; दे० ब्रा० ५.२.३; गो० ब्रा० उ० ६.१२ ।

इमा ब्रह्म बृहद्दिवो ऋ० १०.१२०.८, अ० ५.२.८,२०.१०७.११ ।

इमा ब्रह्म ब्रह्मवाह ऋ० ३.४१.३, अ० २०.२३.३, तै० ब्रा० २.४.६.२, नि० ४.१९; काठ० सं० २६.२६ ।

इमा ब्रह्म सरस्वति ऋ० २.४१.१८; ऐ० ब्रा० ५.१.४ ।

इमा ब्रह्माणि वर्धना ऋ० ५.७३.१० ।

इमा ब्रह्मेन्द्र तुभ्यं ऋ० १०.१४८.४ ।

इमामगृभ्णन् रशना य० २२.२; श० ब्रा० १३.१.२.१; का० सं० २४.३ ।

इमामग्ने शरणिं ऋ० १.३१.१६, अ० ३.१५.४, नि० ६.२० ।

इमा मु षु सोमसुतिमुप ऋ० ७.९३.६ ।

इमामू नु कवितमस्य ऋ० ५.८५.६, नि० ६.१३ ।

इमामू षु प्रभृतिं ऋ० ३.३६.१; ऐ० ब्रा० ९.४.२ ।

इमामू ष्वासुरस्य ऋ० ५.८५.५ ।

इमा मे अग्न य० १७.२; श० ब्रा० ९.१.२.१६,१७; कपि० २६.१,३२.२१ ।

इमामेषां पृथिवीं अ० १०.८.३६ ।

इमा या देवीः अ० २.१०.४ ।

इमा या ब्रह्मणस्पते अ० १९.८.६ ।

इमा यास्तिस्रः पृथिवीः अ० ६.२१.१; पै० सं० १.३८.१ ।

इमा यास्ते शतं अ० ७.३६.२ ।

इमा याः पञ्चप्रदिशो अ० ३.२४.२; पै० सं० ५. ३०.६; १२.६.१२ ।

इमा रुद्राय तवसे ऋ० १.११४.१, य० १६.४८, तै० सं० ४.५.१०.३; मै० सं० २.९.३७; काठ० सं० १७.४८, कपि० २७.६ ।

इमा रुद्राय स्थिरधन्वने ऋ० ७.४६.१, तै० ब्रा० २.८.६.८, नि० १०.६ ।

इमास्त इन्द्र पृश्नयो ऋ० ८.६.१९, सा० १८७ ।

इमास्तिस्रो देवपुरा अ० ५.२८.१० ।

इमां खनाम्योषधिं ऋ० १०.१४५.१, अ० ३.१८.१ ।

इमां गायत्रवर्तनिं ऋ० ८.३८.६ ।

इमां च नः पृथिवीं ऋ० ३.५५.२१ ।

इमां त इन्द्र सुष्टुतिं ऋ० ८.१२.३१ ।

इमां ते धियं ऋ० १.१०२.१, य० ३३.२९, तै० ब्रा० २.७.१३.४; का० सं० ३२.२९।

इमां ते वाचं ऋ० १.१३०.६।

इमां त्वमिन्द्र मीढ्वः ऋ० १०.८५.४५; सं० वि० विवाह संस्कार; स० प्र० ४ समु०, ऋ० भू० नियोगविषय।

इमां धियं शिक्षमाणस्य ऋ० ८.४२.३, तै० १.२.२.८; मैं० सं० १.२.१५; ऐ० ब्रा० १.३.२; काठ० सं० २.९।

इमां धियं सप्तशीर्ष्णीम् ऋ० १०.६७.१, अ० २०.९१.१।

इमां प्रत्नाय सुष्टुतिं ऋ० १०.९१.१३।

इमां भूमिं पृथिवीं अ० ११.७.६; पै० सं० १६.१५३.८।

इमां म इन्द्र सुष्टुतिं ऋ० ८.६.३२।

इमां मात्रां मिमीमहे अ० १८.२.३८।

इमां मे अग्ने समिधमिमां ऋ० २.६.१; ऐ० ब्रा० १.४.८।

इमां मे अग्ने समिधं जुषस्व ऋ० १०.७०.१।

इमां मे मरुतो ऋ० ८.७.९।

इमां वा मित्रावरुणा ऋ० ७.३६.२।

इमां शालां सविता अ० ३.१२४; पै० सं० ३.२०.४; ७.६.६।

इमां सुपूर्व्यां ऋ० ८.६.४३।

इमे गृहा मयोभुव अ० ७.६०.२; पै० सं० ३.२६.२।

इमे चित्तव मन्यवे ऋ० १.८०.११।

इमे चेतारो अनृतस्य ऋ० ७ ६०.५।

इमे जीवा वि मृतैः ऋ० १०.१८.३, अ० १२.२.२२, त० आ० ६.१०.२; पै० सं० १७.३२.२।

इमे त इन्द्र ते वयं ऋ० १.५७.४, सा० ३७३, अ० २०.१५.४।

इमे त इन्द्र सोमा ऋ० ८.२.१०, सा० २१२।

इमे तुरं मरुतो ऋ० ७.५६.१९, तै० ब्रा० २.८.५.६; मैं० सं० ४.१४.२६६।

इमे दिवो अनिमिषा ऋ० ७ ६०.७, नि० ६.२०।

इमे नरो वृत्रहत्ये ऋ० ७.१.१०।

इमे भोजा अंगिरसो ऋ० ३.५३.७।

इमे मयूरवा अ० १०.७.४४।

इमे मा पीता ऋ० ८ ४८.५।

इमे मित्रो वरुणो ऋ० ७.६०.६।

इमे यामासस्त्वद्रिग् ऋ० ५.३.१२।

इमे ये ते सु वायो ऋ० १.१३५.९।

इमे ये नर्वाङ् ऋ० १०.७१.९।

इमे रध्रं चिन्मरुतो ऋ० ७.५६.२०।

इमे वां सोमा ऋ० १.१३५.६; ऐ० ब्रा० ५.२.७।

इमे विप्रस्य वेधसो ऋ० ८.४३.१।

इमे सोमास इन्दवः ऋ० १.१६.६।

इमे हि ते कारवो ऋ० ८.३.१८।

इमे हि ते ब्रह्मकृतः ऋ० ७.३२.२ सा० १६७६।

इमे अग्ने वीततमानि ऋ० ७.१.१८, तै० सं० ४.३.१३.६;२१; ऐ० ब्रा० १.१.६; मैं० सं० ४.१०.२४, काठ० सं० ३५.९।

इमौ ते पक्षावजरौ य० १८.५२; काठ० सं० १८.७७; मैं० सं० २.१२ १०; तै० सं० ४.७.१३.२; श० ब्रा० ९.४.४.४; कपि० २९.४।

इमौ देवौ जायमानौ जुषन्त ऋ० २४०.२, तै० सं० १.८.२२.५;१९;२.६.११.२३, मैं० सं० ४.११.४३; काठ० सं० ८.७१।

इमौ युनज्मि अ० १८.२.५६; सं० वि० अन्त्येष्टि संस्कार।

इयत्तकः कुषुम्भकः ऋ १.१९१.१५।

इयत्तिका शकुन्तिका १.१९१.११।

इयत्यग्र आसीत् य० ३७.५; काठ० सं० ७.५३; मै० सं० ४.९.११; का० सं० ३७.५; श० ब्रा० १४.१.२.११।

इदयस्यायुरसि य० १०.२५; मै० सं० २.६.३२;४.४.६; श० ब्रा० ५.४.३.२५–२७; तै० सं० १.८.१५.११।

इयमग्ने नारीपति अ० २.३६.३; पै० सं० २.२१.२।

इयमददाद्रभसं ऋ० ६.६१.१: काठ० सं० ४.११५; ऐ० ब्रा० ५.२.७।

इमन्तर्वदति जिह्वा अ० ५.३०.१६; पै० सं० ९.१४.६ .

इयमिन्द्रं वरुणमष्टमे ऋ० ७.८४.५,८५.५; ऐ० ब्रा० ६.३.७।

इयमु ते अनुष्टुतिः ऋ० ८.६३.८।

इयमुपरि मतिस्तस्यै य० १३.५८; श० ब्रा० ८.१.२.८,९; तै० सं० ४.३.२.५; कपि० २५.९।

इयमेव पृथिवी अ० ११.३.११।

इयमेव सा या प्रथमा अ० ३.१०.४,८.९.११।

इयमेवामृतानाम् ऋ० १०.७४.३।

इयं कल्याण्यजरा अ० १०.८.२६; पै० सं० १६.१०३.३।

इमं त इन्द्र गिर्वणो ऋ० ८.१३.४।

इयं त ऋत्वियावती ऋ० ८.१२.१०।

इयं ते धीतिरिदमु अ० ११.१.११; पै० सं० १६.९०.२।

इयं ते नव्यसी ऋ० ८.७४.७।

इयं ते पूषन्ना ऋ० ३.६२.७।

इयं ते यज्ञिया य० ४.१३; श० ब्रा० ३.२.२.२०।

इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां ऋ० ७.६०.१२, ६१.७।

इयं न उस्रा प्रथमासु ऋ० १०.३५.४।

इयं नारी पतिलोकं अ० १८.३.१; ऋ० भू० नियोगविषय।

इयं नार्युपब्रूते अ० १४.२.६३; पै० सं० १८.१३.२।

इयं पित्र्या राष्ट्र्येत्वग्रे अ० ४.१.२; गो० ब्रा० उ० २.६; पै० सं० ५.२.१।

इमं मह्वां प्र स्तृणीते ऋ० ६.६७.२।

इयं मनीषा इयम् ऋ० ७.७०.७,७१.६,।

इयं मनीषा बृहती बृहन्त ऋ० ७.९९.६।

इयं महीपति अ० ११.१.८; पै० सं० १६.८९.८।

इमं मा परमेष्ठिनी अ० १९.९.३।

इयं मे नाभिरिह ऋ० १०.६१.१९।

इयं या नीच्यर्किणी ऋ० ८.१०१.१३।

इयं वा उ पृथिवी अ० १५.१०.६।

इयं वामस्य मन्मन ऋ० ७.९४.१, सा० ९१६; ता० ब्रा० १२.८.७; काठ० सं० १३.६२।

इयं वामह्वे शृणुतं ऋ० १०.३९.६।

इयं वां ब्रह्मणस्पते ऋ० ७.९७.९।

इयं विसृष्टिर्यत ऋ० १०.१२९.७, तै० ब्रा० २.८.९.६; मै० सं० ४.१२.२०; स० प्र० ८ समु०, ऋ० भू० वेदविषय विचार; सृष्टिविषयविचार।

इयं वीरुन्मधुजाता अ० १.३४.१; ७.५६.२।

इयं वेदिः परो ऋ० १.१६४.३५, य० २३.६२, अ० ९.१०.१४ श० ब्रा० १३.५.

२.२१, का०सं० २५.६७।

इयं शुष्मेभिर्बिसखा ऋ० ६.६१.२, तै०ब्रा० २.८.२.८, नि० २.२३; ऐ०ब्रा० ५.२.७; काठ०सं० ४.११.६।

इयं समित् पृथिवी अ० ११.५.४; सं०वि० वेदारम्भ संस्कार, ऋ० भू० वर्णाश्रम-विषय।

इयं सा भूया ऋ० १०.३१.५।

इयं सा वो अस्मे ऋ० १.१८६.११।

इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व ऋ० १०.१४०.४, य० १२.१०६, सा० १८१६, तै० सं० १.२.१३.५, ४.२.७.२,६, का० सं० १६.१७७, श० ब्रा० ७.३.१.३२; ३३; कपि० २५.५।

इरा पुंश्चली हसो अ० १५.२.१६।

इरावती धेनुमती ऋ० ७.६६.३, य० ५.१६, तै०सं० १.२.१३.५, तै०ब्रा० १.८.२, कपि० २.४, श०ब्रा० ३.५.३.१३;१४।

इरावतीर्वरुण धेनवो ऋ० ५.६६.२।

इरावेदुमयं दत अ० २०.१३०.१६।

इरेव नोपदस्यति अ० ३.२६.६।

इषमूर्जमभ्यर्षा ऋ० ६.६४.५।

इषमूर्जमहमित य० १२.१०५; काठ०सं० १६.१७३; मै०सं० २.७.१८७; तै०सं० ४.२.७.४; कपि० २५.५।

इषमूर्जं च पिन्वस ऋ० ६.६३.२।

इषमूर्जं पवमान ऋ० ६.८६.३५।

इषश्चोर्जश्च शारदौ य० १४.१६; श०ब्रा० ८.३.२.६; तै०सं० १.४.१४.७; ४.४.११.७, कपि० २६.२,६; ६.३।

इषं तोकाय नो दधत् ऋ० ६.६५.२१, सा० ६६६।

इषं दुहन्सुदुघां ऋ० १०.१२२.६; काठ० सं० १२.४८।

इषा मन्दस्वादु ऋ० ८.८२.३।

इषिकां जरतिमिष्ट्वा अ० १२.२.५४; पै० सं० १७.३५.२।

इषिरा योषा युवतिः अ० १६.४६,१; पै०सं० १४.४.१।

इषिरेण ते मनसा ऋ० ८.४८.७, नि० ४.८; काठ० सं० १७.११०।

इषिरो विश्वव्यचा य० १८.४१; तै०सं० ३.४७.११; १२; श०ब्रा० ६.४.१.१०; सं०वि० वि० संस्कार, कपि० २६.३।

इषुरिव दिग्धा नृपते अ० ५.१८.१५; पै०सं० ६.१८.१।

इषुर्न धन्वन्प्रति ऋ० ६.६६.१।

इषुर्न श्रिय इषुधेः ऋ० १०.६५.३।

इषे त्वोर्जे त्वा य० १.१; का०सं० १.१-३; १७.५०; काठ०सं० १.१; मै०सं० १.१.१, कपि० १.१; श०ब्रा० १.७.१. २-८; गो०ब्रा०पू० १.२६.६३; तै०सं० १.१.१.१; १.३.७.१; ६.१४, ४.३.७.४०, सं०वि० स्वस्तिवाचन।

इषे पवस्व धारया ऋ० ८.६४.१३, सा० ५०५, ८४१।

इषे पिन्वस्वोर्जे य० ३८.१४; का०सं० ३८.१४; श०ब्रा० १४.२.२.२७; २६,३०; ऋ०भू० प्रार्थनायाचना विषय।

इषे राये रमस्व य० १३.३५; मै०सं० १.८.४८; श०ब्रा० ७.५.१.३१;

इष्कर्तारमध्वरस्य ऋ० १०.१४०.५ य० १२.११०, सा० १८२०, तै० सं० ४.२.७.१०, कपि० २५.५; मै०सं० २.७.१६४; श० ब्रा० ७.३.१.३३; ३४;।

इष्कर्तारमनिष्कृतं सहस्कृत ऋ० ६.६६.८।

इष्कृताहावभवतं ऋ० १०.१०१.६, तै० सं० ४.२.५.१४।

इष्कृतिर्नाम वो माता ऋ० १०.९७.९, य० १२.८३, तै०सं० ४.५.६.२; कपि० २५.४।

इष्टं च वा एव पूर्त्तं अ० ९.६.१; पै०सं० १६.११३.७, सं०वि० संन्यास संस्कार।

इष्टा होत्रा असृक्षत ऋ० ८.९३.२३, सा० १५१; सा०ब्रा० ३.२.३.८।

इष्टो अग्निराहुतः य० १८.५७; श०ब्रा० ९.५.१.३१।

इष्टो यज्ञो भृगुभिः य० १८.५६; काठ० सं० ५.१५; १८.११२; ३२.८; कपि० २९.६; श०ब्रा० ९.५.१.४१; मै०सं० १.४.१०; २.१२.१५; तै०सं० ५.६०.८.१०।

इष्यन्वाचमुप वक्तेव ऋ० ६.६५.५।

इष्वा ऋजीयः पततु अ० ५.१४.१२; पै०सं० ७.१.४।

इह गावः प्रजायध्वम् अ० २०.१२७.१२ पै० सं० १९.२०.१०; काठ० सं० ३५.२१; स० वि० विवाह संस्कार।

इह तेऽसुरिहप्राण अ० ८.१.३; पै०सं० १६.१.३।

इह त्या पुरुभूतमा देवा ऋ० ८.२२.३।

इह त्यापुरुभूतमा पुरु ऋ० ५.७३.२।

इह त्या सधमाद्या ऋ० ८.१३.२७, नि० ६.१२।

इह त्या सधमाद्या हरि ऋ० ८.३२.२९; ९३.२४।

इह त्वष्टारमग्रियं ऋ० १.१३.१०, तै० सं० ३.१.११५।

इह त्वं सून े सहसो ऋ० ४.२.२।

इह त्वा गोपरीणसं ऋ० ८.४५.२४, सा० ७३३; अ० २०.२२.३।

इह त्वा भूर्य चरेदुप ऋ० ४.४.९; तै०सं० १.२.१४.९; मै०सं० ४.११.११९।

इह पुष्टिरिह रस अ० ३.२८.४।

इह प्रजामिह रयिं ऋ० ४.३६.९।

इह प्रब्रूहि यतमः ऋ० १०.८७.८; अ० ८.३.८; पै०सं० १६.६.८।

इह प्रयाणमस्तु वां ऋ० ४.४६.७; ऐ०ब्रा० ५.२.१।

इह प्रियं प्रजया ऋ० १०.८५.२७, अ० १४.१.२१, नि० ३.२१; सं०वि० विवाह संस्कार; पै०सं० १८.२.१०।

इह ब्रवीतु य ईमंग ऋ० १.१६४.७, अ० ९.९.५; पै०सं० १६.६६.७।

इह रतिरिह रमध्वम् य० ८.५१; का०स० २४.२१।

इह श्रुत इन्द्रो ऋ० १०.२२.२, नि० ६.२३।

इाहगतं वृषण्वस् ऋ० ८.७३.१०।

इहा यन्तु प्रचेतसो अ० ८.७.७।

इहि तिस्रः परावतः ८.३२.२२।

इहेत्थ० अक्लिली अ० २०.१३४.६।

इहेत्थ० अष्टिला अ० २०.१३४.५।

इहेत्थ प्रागपागुद० अ० २०१३४.१; गो० ब्रा० उ० ६.१३।

इहेत्थ० वत्सा० अ० २०.१३४.२।

इहेत्थ० स वै अ० २०.१३४.४।

इहेत्थ० स्थालीपाको अ० २०.१३४.३।

इहेदसाथ न परो अ० ३.८.४, १४.१.३२; पै०सं० १.१८.७; १८.४.१।

इहेन्द्रग्नी उप ह्वये ऋ० १.२१.१।

इहेन्द्राणीमुप ह्वये ऋ० १.२२.१२; नि० ९.३२।

इहेमाविन्द्र सं नुद अ० १४.२.६४; पै० सं० १८.१३.३; सं०वि० गृहाश्रम संस्कार।

ईडेन्यः पवमानो ऋ० ९.५.३ ।

ईडेन्यो नमस्यः ऋ० ३.२७.१३; सा० १५३८ अ० २०.१०२.१; तै० ब्रा० ३.५..२.२; श०ब्रा० १.४.१.२६-३२ ।

ईडेन्यो वो मनुषो ऋ० ७.९.४ ।

ईड्यश्चासि वन्द्यश्च य० २९.३; मै०सं० ३.१६.१९; तै०सं० ५.१.११ ३; का०सं० ३१.३ ।

ईदृक्षासं एतादृक्षास य० १७.८४; तै० सं० ६.६.५.१९; कपि० २८.६ ।

ईदृङ् चान्यादृङ् च य० १७.८१; कपि० २८.६ ।

ईयिवांसमति स्रिधः ऋ. ३.९.४ ।

ईयुरर्थं न न्यर्थं ऋ० ७.१८.९ ।

ईयुर्गावो न यवसाद् ऋ० ७.१८.१० ।

ईयुष्टे ये पूर्वतरामपश्यन् ऋ० १.११३.११; तै०सं० १.४.३३.१; तै०आ० ३.१८.१ ।

ईर्मान्तासः सिलिकमध्यमा ऋ० १.१६३.१०, य० २९.२१; तै० सं० ४.६.७.४;१०, नि० ४.१३; का०सं० ३१.३३ ।

ईर्मान्य द्वपुषे छायि ऋ० ५.७३.३ ।

ईर्माभ्यामयनं जातः अ० १०.१०.२१; पै०सं० १६.१०९.१ ।

ईर्ष्याया ध्राजिं प्रथमा अ० ६.१८.१; पै०सं० १९.७.१४ ।

ईशान इमा भुवनानि ऋ० ९.८६.३७; सा० ९५७ ।

ईशान एनमिष्वास अ० १५.५.१५ ।

ईशान कृतो धुनयो ऋ० १.६४.५ ।

ईशानाय परस्वतः य० २४.२८. मै० सं० ३.१४.१०; काठ० सं० २६.२९ ।

ईशानाय प्रहुतिं ऋ० ७.९०.२; मै०सं० ४.१४.१८ ।

ईशाना वार्याणां ऋ० १०.९.५; अ० १.५.४, तै०ब्रा० २.५.८.५; तै० आ० ४.४.२.४, मै०सं० ४.९.२७९ ।

ईशानां त्वा भेषजानां अ० ४.१७.१; पै०सं० ५.२३.१ ।

ईशानासो ये दधते ऋ० ७.९०.६ ।

ईशावास्यमिदं य० ४०.१; का० सं० ४०.१; स०प्र० ११ समु० ल० भ्रमोच्छेदन पृ० ३६६ ।

ईशां वो मरुतो अ० ११.९.२५ ।

ईशां वो वेद अ० ११.१०.२ ।

ईशिषे वार्यस्य ऋ० ८.४४.१८;सा० १५३३, काठ० ०४०.१३२ ।

ईशे यो विश्वस्यां ऋ० १०.६.३ ।

ईशे हि शक्रस् सा० ६४६; सा० ब्रा० ३.१.४.१३ ।

ईशे ह्य[१]ग्निरमृतस्य ऋ० ७.४.६ ।

उक्ताः सञ्चरा य० २४.१५; १७; १९; का०सं० २६.१६.१८;२० ।

उक्थ उक्थे सोम ऋ० ७.२६.२; तै०सं० १.४.४६.४ ।

उक्थ भृतं सामभृतं ऋ० ७.३३.१४ ।

उक्थमिन्द्राय शंस्यं ऋ० १.१०.५, सा० ३६३ ।

उक्थवाहसे विभ्वे ऋ० ८.९६.११ ।

उक्थं च न शस्यमानं ऋ० ८.२.१४, सा० २२५,१८०५ ।

उक्थेभिरर्वागवसे ऋ० १.४७.१० ।

उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा ऋ० ७.९४.११, य० ३३.७६; तै०सं० ४.४.५५; का०सं० ३२.७६ ।

उक्थेष्विन्नु शूर येषु ऋ० २.११.३ ।

उक्षन्ते अश्वां ऋ० २.३४.३ ।

उक्षान्नाय वशान्नाय ऋ० ८.४३.११, अ० ३.२१.६; २०.१.३, तै०सं० १.३.१४.२१; काठ० सं० ७.१३; ४०.२४; मै० सं० २.१३.१४; ४.११.११२; पै० सं० ३.१२.६; गो०ब्रा०उ० २.२०, ऐ०ग्रा० ६.३.२ ।

उक्षा महाँ अभि ववक्ष ऋ० १.१४६.२ ।

उक्षा मिमेति प्रति ऋ० ९.९६.४, सा० १३७२ ।

उक्षा समुद्रो अरुषः ऋ० ५.४७.३, य० १७.६०, तै०सं० ४.६.३.११; मै०सं० २.१०.५३; काठ० सं० १८.२८; कपि० २८.३; श०ब्रा० ९.२.३.१८ ।

उक्षेव यूथा परियन् ऋ० ९.७१.९ ।

उक्ष्णो हि मे पंच ऋ० १०.८६.१४, अ० २०.१२६.१४ ।

उखां कृणोतु शक्त्या य० ११.५७; काठ०सं० १६.५६; मै०सं० २.७६.६; श०ब्रा० ६.५.१.११; २.१; तै० सं० ४.१.५.११; कपि० १.८; ३० ४, ४७.७ ।

उग्र इत् ते वनस्पत अ० १९.३४.९; पै०सं० ११.३.९ ।

उग्र एनं देव अ० १५.५.९ ।

उग्र बाहुर्म्रक्ष कृत्वा ऋ० ८.६१.१० ।

उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तः य० ३९.७; का०सं० ३९.५ ।

उग्रस्तुराषाळभि भूत्योजा ऋ० ३.४८.४ ।

उग्रं न वीरं नमसोप ऋ० ८.४९.६ ।

उग्रं पश्ये राष्ट्रभृत् अ० ६.११८.२; मै०सं० ४.१४.२५१ ।

उग्रं युयुज्म पृतनासु ऋ० ८.६१.१२ ।

उग्रंल्लोहितेन मित्रं य० ३९.९; का०सं० ३९.७ ।

उग्रं व ओजः स्थिरा ऋ० ७.५६.७ ।

उग्रं वनिषदाततम् अ० २०.१३२.६ ।

उग्रा इव प्रवहन्तः ऋ० १०.९४.६ ।

उग्रा विघनिना मृध ऋ० ६.६०.५, य० ३३.६१, सा० ८५४; काठ०सं० ४.१०४; का०सं० ३२.६१ ।

उग्रा संता हवामह ऋ० १.२१.४ ।

उग्रेष्व शूर इन्नु ऋ० २.१२.१७ ।

उग्रो जज्ञे वीर्याय ऋ० ७.२० १; काठ० सं० १७.९९; ऐ० ग्रा० ५.२.१ ।

उग्रो राजामन्यमानः अ० ५.१९.६ ।

उग्रो वां ककुहो ऋ० ५.७३.७ ।

उचथ्ये वपुषि यः स्वराट् अ० ८.४६.२८ ।

उच्चा ते जातमन्धसो ऋ० ९.६१.१०, य० २६.१६, सा० ४६७,६७२; तां० ब्रा० १५.९.१, सा० ब्रा० ३.२.६.२;८.६;५.८; ।

उच्चा दिवि दक्षिणावन्तो ऋ० १०.१०७.२ ।

उच्चा पतन्त मरुणं अ० १३.२.३६; गो० ब्रा० पू० २.९; पै० सं० १८.२४.३ ।

उच्चैर्घोषो दुन्दुभिः अ० ५.२०.१; पै० सं० ९.२४.१ ।

उच्छन्ती या कृणोति ऋ० ७.८१.४ ।

उच्छन्तीरद्य चितयन्त ऋ० ४.५१.३ ।

उच्छन्त्यां मे यजता ऋ० ५.६४.७ ।

उच्छन्नुषसः सुदिना ऋ० ७.९०.४; ऐ०ब्रा० ५.३.३ ।

उच्छा दिवो दुहितः ऋ० ६.६५.६ ।

उच्छिष्टं चम्वोर्भर ऋ० १.२८.९; ऐ० ब्रा० ७.३.५ ।

उच्छिष्टे द्यावापृथवी अ० ११.७.२; पै० सं० १६.८२.२ ।

उच्छिष्टे नामरूपं अ० ११.९.१; पै० सं० १६.८२.१ ।

उच्छुष्मा ओषधीनां ऋ० १०.९७.८, य० १२.८२, अ०४.४.४, तै० सं० ४.२.६.१०; मै० सं० २.७.१७५; काठ० सं० १६.१४६, १५६, कपि० २५.४; पैं० सं० ११.६.८।

उच्छोचिषा सहसस्पुत्र ऋ० ३.१८.४।

उच्छ्रयस्व बहुर्भव अ० ६.१४२.१; काठ० सं० १५.५१।

उच्छ्रयस्व वनस्पते ऋ० ३.८.३, तै० ब्रा० ३.६.१.१; मै० सं० १.२.७६; ४.१३.३, ऐ० ब्रा० २. १.२; काठ० सं० १५.५१।

उच्छ्वञ्चमाना पृथिवि ऋ० १०.१८.१२, अ० १८.३.५१, तै० आ० ६.७.१।

उच्छ्वञ्चस्व पृथिवि ऋ० १०.१८.११, अ० १८.३.५० तै० आ० ६.७.१।

उज्जातमिन्द्र ते शव ऋ० ८.६२.१०।

उज्जायतां परशुः ऋ० १०.४३.६, अ० २०.१७.६।

उज्जीहीध्वे स्तनयति अ० ८.७.२१; पैं० सं० १६.१३.११।

उत ऋतुभिर्ऋतुपाः ऋ० ३.४७.३।

उत कण्वं नृषदः ऋ० १०.३१.११।

उत गाव इवादन्ति ऋ० १०.१४६.३, तै० ब्रा० २.५.५.६।

उतग्ना अग्निरध्वर ऋ० ४.६.४।

उतग्ना व्यन्तु देवपत्नीः ऋ० ५.४६,८, अ० ७.४६.२, तै० ब्रा० ३.५.१२.१, नि० १२.४६; मै० सं० ४.१३.७५।

उत घा नेमो अस्तुतः ऋ० ५.६१.८।

उत घा स रथीतमः ऋ० ६.५६.२।

उत ते सुष्टुता ऋ० ८.१३.२३।

उत त्यदा स्वश्व्यं ऋ० ८.६.२४, तै० ब्रा० २.७.१३.२।

उत त्यद्वां जुरते ऋ० ७.६८.६।

उत त्यन्नो मारुतं ऋ० ५.४६.५।

उत त्यं चमसं ऋ० १.२०.६।

उत त्यं पुत्रमग्रुवः ऋ० ४.३०.१६।

उत त्यं वीरं धनसा० ऋ० ८.८६.४।

उत त्या तुर्वशायदू ऋ० ४.३०.१७।

उत त्या दैव्या भिषजा ऋ० ८.१८.८, तै० ब्रा० ३.७.१०.५।

उत त्या मे यशसाश्वतनायै ऋ० १.१२२.४, नि० ६.२१।

उत त्या मे रौद्रावर्चिमन्ता ऋ० १०.६१.१५।

उत त्या मे हवमा ऋ० ६.५०.१०।

उत त्या यजता हरी ऋ० ४.१५.८।

उत त्या सद्य ऋ० ४.३०.१८।

उथ त्या हरितो ऋ० ६.६३.६, सा० १२१८।

उत त्ये देवी सुभगे ऋ० २.३१.५।

उत त्ये नः पर्वतासः ऋ० ५.४६.६।

उत त्ये नो मरुतो ऋ० ७.३६.७।

उत त्ये मा ध्वन्यस्य ऋ० ५.३३.१०।

उत त्ये मा पौरुकुत्सस्य सूरेः ऋ० ५.३३.८।

उत त्ये मा मारुताश्वस्य ऋ० ५.३३.६।

उत त्वं मघवञ्छृणु ऋ० ८.४५.६।

उत त्वः सख्ये ऋ० १०.७१.५, नि० १.८; ऋ० भू० पठनपाठनविषय, प० वि० १२७, ले० जी० ६४५।

उत त्वं सूनो सहसो ऋ० ६.५०.६।

उत त्वः पश्यन्न ऋ० १.७१.४, नि० १.८, १८; स० प्र० ३ समु०; ऋ० भू० पठनपाठन-विषय।

उत पुत्रः पितरं अ० ५.१.८।
उत प्रधिमुदहन्नस्य ऋ० १०१०२.७।
उत प्र पिप्य ऊधरघ्न्यायाः ऋ० ९.९३.३ सा० १२४०।
उत प्रहामतिदीवा अ० ७.५२.६;२०.८९.९।
उत प्रहामतिदीव्या ऋ० १०.४२.९; अ० ७.५०.६; २०.८९.९।
उत ब्रवन्तु जन्तव ऋ० १.७४.३, सा० १३८२, तै० सं० ३.५.११.४, पं० वि० ५७, काठ० सं० ८.५६, मै०सं० ४.१०.६५।
उत ब्रह्मण्या वयं ऋ० ८.६.३३।
उत ब्रह्माणो मरुतो ऋ० ५.२९.३।
उत ब्रवन्तु नो निदो ऋ० १.४.५; अ० २०.६८.५।
उत म ऋज्रे पुर ऋ० ६.६३.९।
उत मन्ये पितुरद्रुहो ऋ० १.१५९.२।
उत माता बृहद्दिवा ऋ० १०.६४.१०; तै० सं० ३.२.११.१०; मै० सं० ४. १२.१३०।
उत माता महिषमन्ववेन ऋ० ४.१८.११, तै०सं० ३.२.११.३।
उत मे प्रयियोर्वयियोः ऋ० ८.१९.३७, नि० ४.१५।
उत मे रपद्युवतिः ऋ० ५.६१.९।
उत मे वोचतादिति ऋ० ५.६१.१८।
उत यत् पतयो अ० ५.१७.८; पै०सं० ९.१६.६।
उत यासि सवितस्त्रीणि ऋ० ५.८१.४।
उत यो द्यामतिसर्पात् अ० ४.१६.४।
उत यो मानुषेष्वा ऋ० १.२५.१५।
उत योषणे दिव्ये मही ऋ० ७.२.६।
उत वः शंसमुशिजा ऋ० २.३१.६।
उत वा उ परि वृणक्षि ऋ० १०.१४२.३।
उत वाजिनं पुरुनिष्षिध्वानं ऋ० ४.३८.२।
उत वात पितासि न ऋ० १०१८६.२, सा० १८४१।
उत वा यस्य वाजिनो ऋ० १.८६.३।
उत वा यः सहस्य प्र विद्वान् ऋ० १.१४७.५।
उत वा यो नो मर्चयाद् ऋ० २.२३.७।
उत वां विक्षु मद्यास्वंधो ऋ० १.१५३.४, नि० ४.१९।
उत व्रतानि सोम ते ऋ० १०.२५.३।
उत शुष्णस्य धृष्णुया ऋ० ४.३०.१३।
उत श्वेत आशुपत्वा अ० २०.१३५.८; गो० ब्रा०उ० ६.१४।
उत सखास्यश्विनो ऋ० ४.५२.३, सा० १७२७।
उत सिन्धुं विबाल्यं ऋ० ४.३०.१२।
उत सुत्ये पयोवृधा ऋ० ८.२.४२।
उत स्तुतासो मरुतो ऋ० ७.५७.६।
उत स्मते परुष्ण्यां ऋ० ५.५२.९; नि० ५.५।
उत स्म ते वनस्पते ऋ० १.२८.६; ऐ०ब्रा० ७.३.५।
उत स्म दुर्गृभीयसे ऋ० ५.९.४।
उत स्म यं शिशुं ऋ० ५.९.३।
उत स्म राशि ऋ० ६.८७.९।
उत स्म सद्म हर्यतस्य ऋ० १०९६.१०; अ० २०.३१.५।
उत स्मा सद्य इत्परि ऋ० ४.३१.८।
उत स्मासु प्रथमः ऋ० ४.३८.६।
उत स्मास्य तन्यतोरिव ऋ० ४.३८.८।
उत स्मास्य द्रवतस्तुर ऋ० ४.४०.३, य० ९.१५, तै० सं० १.७.८.१५; मै०सं०

१.११.१४; काठ०सं० १३.५५; श०ब्रा० ५.१.५.२० ।

उत स्मास्य पनयन्ति ऋ० ४.३८.६ ।

उत स्माहि त्वामाहुः ऋ० ४.३१.७ ।

उत स्मैनं वस्त्रमथिं ऋ० ४.३८.५, नि० ४.२४ ।

उत स्य देवः सविता ऋ० ६.५०.१३ ।

उत स्य देवो भुवनस्य ऋ० २.३१.४ ।

उत स्य न इन्द्रो ऋ० २.३१.३ ।

उत स्य न उशिजामुर्विया ऋ० १०.६२.१२ ।

उत स्य वाजी क्षिपणिं ऋ० ४.४०.४, य० ६.१४, तै०सं० १.७.८.३; नि० २.२८ ।

उत स्य वाजी सहुरिऋ॑ता ऋ० ४.३८.७ ।

उत स्य वाज्यरुषः ऋ० ५.५६.७ ।

उत स्या नः सरस्वती घोरा ऋ० ६.६१.७; मै०सं० ४.१४.९८ ।

उत स्या नः सरस्वती जुषाणोप ऋ० ७.९५.४; ऐ०ब्रा० ५.३.३ ।

उत स्या नो दिवा ऋ० ८.१८.७, सा० १०२, तै०ब्रा० ३.७.१०.४ ।

उत स्या वां मधुमन्मक्षि ऋ० १.११९.९ ।

उत स्या वां रुशतो ऋ० १.१८१.८ ।

उत स्या श्वेतयावरी ऋ० ८.२६.१८ ।

उत स्वया तन्वा ३ संवदे ऋ० ७.८६.२ ।

उत स्वराजे अदितिः स्तोमं ऋ० ८.१२.१४ ।

उत स्वराजो अदितिः ऋ० ७.६६.६, सा० १३५३ ।

उत स्वस्य अरात्यः ऋ० ६.७६.३ ।

उत स्वानासो दिवि ऋ० ५.२.१०, तै०सं० १.२.१४.१८ ।

उत हन्ति पूर्वासिनं अ० १०.१.२७; पै०सं० १६.३७.८ ।

उतादः परुषे गवि ऋ० ६.५६.३, नि० २.६ ।

उताभये पुरुहूत श्रवोभिः ऋ० ३.३०.५; नि० ६.१; ७.६ ।

उतामृतासुर्व्रत एभि अ० ५.१.७ ।

उता यातं संगवे ऋ० ५.७६.३, सा० १७५४; ऐ० ब्रा० १.४.४ ।

उतारब्धान् स्पृणुहि ऋ० १०.८७.७, अ० ८.३.७; पै० सं० १६.६७ ।

उताशिष्टा अनुश्रृण्वंति ऋ० २.२४.१३ ।

उतासि परिपाणं अ० ४.९.२ ।

उतासि मैत्रावरुणो ऋ० ७.३३.११, नि० ५.१४ ।

उताहं नक्तमुत सोम ऋ० ९.१०७.२० ।

उतेदानीं भगवन्तः ऋ० ७.४१.४; य० ३४.३७, अ० ३.१६.४, तै०ब्रा० २.८.९.८, सं०वि० गृहाश्रम संस्कार; पै०सं० ४.३१.४ ।

उतेयं भूमिर्वरुणस्य अ० ४.१६.३ ।

उतेव प्रभ्वीरुत अ० १२.३.२७, पै०सं० १७.३८.७ ।

उतेशिषे प्रसवस्य ऋ० ५.८१.५ ।

उतैनां भेदो नाददाद् अ० १२.४.५० ।

उतैषां पितोत अ० १०.८.२८ ।

उतो अस्य बन्धु अ० ४.१९.१ ।

उतो घा ते पुरुष्या ऋ० ७.२९.४ ।

उतो न अस्य कस्यचित् ऋ० ५.३८.४ ।

उतो नो अस्या उषसो ऋ० १.१३१.६, ऋ० २०.७२.३ ।

उतो न्वस्य जोषमा ऋ० ८.९४.६, सा० १७८७ ।

उतो न्वस्य यत्पदं ऋ० ८.७२.१८ ।

उतो न्वस्य यन्महत् ऋ० ८.७२.६ ।

उतो पतिर्य उच्यते ऋ० ८.१३.९ ।

उतो पितृभ्यां प्रविदानु ऋ० ३.७.६।
उतो सहस्रभर्णसं ऋ० ६.६४.२६।
उतो सं मह्यमिन्दुभिः ऋ० १.२३.१५।
उतो हि वां दात्रा ऋ० ४.३८.१।
उतो हि वां पूर्व्या ऋ० ३.५८.४।
उतो हि वां रत्नधेयानि ऋ० ७.५३.३।
उत्कसन्तु हृदयानि अ० ११.६.२१।
उत्केतुना बृहता अ० १३.२.६।
उत्क्राम महते सौभगाय य० ११.२१; श०ब्रा० ६.३.३.१३; मै०सं० २७.२३; कपि०३०.१।
उत्क्रामातः परिचेदतप्तः अ० ६.५.६; पै०सं० १६.६७.५।
उत्क्रामातः पुरुषः अ० ८.१.४; पै०सं० १६.१.४।
उत्तमेभ्यः स्वाहा अ० १६.२२.१२।
उत्तमो अस्योषधीनां अ० ६.१५.१, ८.५.११, १६.३४.४; पै०सं० १६.५.१४।
उत्तमोनाम कुष्ठासि अ० ५.४.६।
उत्तरं द्विषतो मामयं अ० १० ६.३१।
उत्तरस्त्वमधरे ते अ० ४.२२.६; पै०सं० ३.२१.६।
उत्तरं राष्ट्रं प्रजया अ० १२.३.१०।
उत्तराहमुत्तरः ऋ० १०.१४५.३, अ० ३.१८.४; पै०सं० ७.१२.३।
उत्तरेणेव गायत्री अ० १०८.४१।
उत्तरेभ्यः स्वाहा अ० १६.२२.१३।
उत्तानपर्णे सुभगे ऋ० १०.१४५.२, अ० ३.१८.२।
उत्तानायामजनयन् ऋ० २.१०.३।
उत्तानायामव भरा ऋ० ३.२६.३, य० ३४.१४; का०स० ३३.८।
उत्तानायै शयानायै अ० २०.१३३.४।
उत्तिष्ठतमा रमेथाम् अ० ११.६.३।
उत्तिष्ठत संनह्यध्वं अ० ११.६.२, १०.१।
उत्तिष्ठता प्र तरता अ० १२.२.२७; पै०सं० १७.३२.७।
उत्तिष्ठता व पश्यतं अ० ७.७२.१।
उत्तिष्ठ त्वं देवजना अ० ११.६.५, १०.५।
उत्तिष्ठ नूनमेषां ऋ० ५.५६.५।
उत्तिष्ठन्नोजसा सह ऋ० ८.७६.१०, य० ८.३६,सा० ६८८, अ० १०.४२.३, तै०सं० १.४.३०.१; कपि० ३.१,६; ४१.८; ४२.१; तां० ब्रा० १३.२.७; श०ब्रा० ४.५.४.१०।
उत्तिष्ठ प्रेहि प्र अ० १८.३.८।
उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते ऋ० १.४०.१, य० ३४.५६, अ० १६.६३.१; तै०आ० ४.२.२, ऐ०ब्रा १.४.५; ५.२.१; ऐ० आ० १.४०.१; काठ० सं० १०.४७; मै०सं० ४.६.४; १२.१६, का० सं० ३२.४४।
उत्तिष्ठसि स्वाहुतो ऋ० १०.११८.२; ऐ० ब्रा० १.३.५।
उत्तिष्ठाव पश्यते ऋ० १०.१७६.१, अ० ७.७२.१।
उत्तिष्ठेतः किमिच्छन्ती अ० १४.२.१६; पै० सं० १८.८.१०।
उत्तिष्ठेतो विश्वावसो अ० १४.२.३३।
उत्तुदस्त्वोत्तुदतु मा अ० ३.२५.१।
उत्ते बृहन्तो अर्चयः ऋ० ८.४४.४, सा० १५४१।
उत्ते वयश्चिद्वसतेरपप्तन् ऋ० १.१२४.१२, ६.६४.६।
उत्ते शतान्मघवन्नुच्च भूय ऋ० १.१०२.७।
उत्ते शुष्मा जिहतां ऋ० १०.१४२.६।

उत्ते शुष्मास ईरते ऋ० ९.५०.१, सा० १२०५; तां० ब्रा० १८.८.१४।

उत्ते शुष्मासो अस्थुः ऋ० ९.५३.१, सा० १७१४।

उत्ते स्तभ्नामि पृथिवीं ऋ० १०.१८.१३, अ० १८.३.५२; तै० आ० ६.७.१।

उत्त्वा द्यौरुत्पृथिवी अ० ८.१.१७।

उत्त्वा मन्दन्तु स्तोमाः ऋ० ८.६४.१, सा० १९४,१३५४, अ० २०.९३.१; तां० ब्रा० १५.९.५; ष० ब्रा० ४.२.२४; सा० ब्रा० ३.३.६.६।

उत्त्वा मृत्योरपीपरं अ० ८.१.१९।

उत्त्वा यज्ञा ब्रह्मपूता अ० १३.१.३६।

उत्त्वा वहन्तु मरुत अ० १८.२.२२।

उत्त्वाहार्षं पञ्चशलात् अ० ८.७.२८।

उत्थापय सीद तो अ० १२.३.३०; पै० सं० १७.३८.९।

उत्थाय बृहती भव य० ११.६४; श० ब्रा० ६.५.४.१३–१४; कपि० ३०.५।

उत्पुरस्तात्सूर्य ऋ० १.१९१.८, अ० ५.२३.६।

उत्पूषणं युवामहे ऋ० ६.५७.६।

उत्सक्थ्या अवगुदं य० २३.२१; श० ब्रा० १३.५.२.३; ऋ० भू० भाष्यकरणशंका-समाधानादिविषय, का० सं० २५.२६।

उत्समक्षितं व्यचन्ति अ० ४.२७.२; पै० सं० ४.३५.२।

उत्सादेभ्यः कुब्जं प्रमुदे य० ३०.१०; का० सं० ३४.१०।

उत् सूर्यो दिव अ० ६.५२.१; पै० सं० १९.७.५।

उत्सूर्यो बृहदर्चींष्यश्रेत् ऋ० ७.६२.१।

उत्सम वातो वहति ऋ० १०.१०२.२।

उदक्रमीद्द्रविणोदा य० ११.२२; काठ० सं० १६.१५; मै० सं० २.७.२४; श० ब्रा० ६.३.३.१४; तै० सं० ४.१.२.१५; कपि० ३०.१।

उदगातां भगवती अ० २.८.१;६.१२१.३; पै० सं० १.९९.२;३.२.४;१६.५१.३।

उदगादयमादित्यो ऋ० १.५०.१३, अ० १७.१.२४; तै० ब्रा० ३.७.६.२३।

उदग्ने तव तद् घृतात् ऋ० ८.४३.१०; मै० सं० १.६.३; काठ० सं० ७.४.३।

उदग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्व ऋ० ४.४.४, य० १३.१२, तै० सं० १.२.१४.४; ऐ० ब्रा० १.४.२ काठ० सं० १६.१९२; मै० सं० २.७.२०.७।

उदग्ने भारत द्युमत् ऋ० ६.१६.४५, सा० १३८५।

उदग्ने शुचयस्तव ऋ० ८.४४.१७, सा० १५३४, तै० सं० १.३.१४.२८,५.५.१२, २.४.१४.११; काठ० सं० २.८६; ऐ० ब्रा० ७.२.६; श० ब्रा० १.४.१.१२; मै० सं० १.५.१४; ४.१२.११५।

उदग्रभं परिपाणाद् अ० ४.२०.८; पै० सं० ८.६.८।

उदङ् जातो हिमवतः अ० ५.४.८; पै० सं० १.३१.१।

उदन्वती द्यौरवमा अ० १८.२.४८।

उदपप्तदसौ सूर्यः ऋ० १.१९१.९।

उदपप्तन्नरुणा भानवो ऋ० १.९२.२, सा० १७५६।

उदपूरसि मधुपूरसि अ० १८.३.३७।

उदप्रुतो न वयो ऋ० १०.६८.१, अ० २०.१६.१. तै० सं० ३.४.११.९; काठ० सं०

२३.३८; मै० सं० ४.१२.१७१; गो० ब्रा० उ० ४.१६ ।

उदप्रुते मरुतस्तां अ० ६.२२.३; तै० सं० ३.१.११.२६ ।

उदभ्राणीव स्तनयन् ऋ० ६.४४.१२ ।

उदरात् ते क्लोम्नो ऋ० ६.८.१२ ।

उदसौ सूर्यो अगात् ऋ० १०.१५६.१, अ० १.२६.५ ।

उदस्तंभीत्समिधा ऋ० ३.५.१० ।

उदस्य केतवो अ० १३.२.१, पै० सं० १८.२०.५ ।

उदस्य बाहू शिथिरा ऋ० ७.४५.२ ।

उदस्य शुष्माद्भानुः ऋ० ७.३४.७; मै० स० ४.६.२०.८ ।

उदस्य शोचिरस्थादाजुह्वा ऋ० ७.१६.३, तै० सं० ४.४.४.५ ।

उदस्य शोचिरस्थाद् दीदियुषो ऋ० ८.२३.४; काठ० सं० ३६.१०६ ।

उदस्य श्यावौ विथुरौ अ० ७.६५.१; पै० सं० १६.२६.११ ।

उदह्वमायुरायुषे क्रत्वे अ० १८.२.२३ ।

उदार्तैजिहते बृहद् ऋ० ६.५.५ ।

उदानत्ककुहो दिवं ऋ० ८.६.४८ ।

उदायुरुद्बलमुत्कृत अ० ५.६.८; पै० सं० ६.११.१३ ।

उदायुषा समायुषां अ० ३.३१.१०; काठ० सं० २.३२; मै० सं० १.२.३७ ।

उदावता त्वक्षसा ऋ० ६.१८.६ ।

उदितस्त्रयो अक्रमन् अ० ४.३.१ ।

उदिता यो निदिता ऋ० ८.१०३.११ ।

उदिन्नवस्य रिच्यते ऋ० ७.३२.१२, अ० २०.५६.३; गो० ब्रा० उ० ४.३ ।

उदिमां मात्रां मिमीमहे अ० १८.२.४३ ।

उदिह्युदिहि सूर्य अ० १७.१.६,७ ।

उद्दिवं स्तभानान्तरिक्षं य० ५.२७; श० ब्रा० ३.६.१.१५–१८; कपि० २.६; ४०.३; ४१.३. ।

उदीची दिक्सोमो अ० ३.२७.४; पै० सं० ३.२४.४; सं० वि० गृहाश्रमसंस्कार, ल० पं० वि० २२१ ।

उदीचीनैः पथिभिः अ० १२.२.२६; पै० सं० १७.३२.६ ।

उदीचीमा रोह य० १०.१३; श० ब्रा० ५.४.१.६ ।

उदीच्या दिशः शालाया अ० ६.३.२८; पै० सं० १६.४१.८;४.३०.४; सं० वि० गृहाश्रमसंस्कार ।

उदीच्यां त्वादिशि अ० १८.३.३३; तै० सं० ५.५.८.७ ।

उदीच्यै त्वा दिशे अ० १२.३.५८; पै० सं० १६.६३.४; तै० सं० ७.१.१५.१० ।

उदीरतामवर उत ऋ०१०.१५.१, य० १६.४६, अ० १८.१.४४, तै० ब्रा० २.६.१२.३, नि० ११.१६; ऐ० ब्रा० ३.३.१३; मै० सं० ४.१०.१४०; का० सं० २१.५३; ऋ० भू० पितृयज्ञविषय ।

उदीरतां सूनृता उत ऋ० १.१२३.६ ।

उदीरध्वं जीवो असुः ऋ० १.११३.१६ ।

उदीरयकवितमंकवी ऋ० ५.४२.३ ।

उदीरयत मरुतः अ० ४.१५.५ ।

उदीरयथा मरुतः ऋ० ५.५५.५, तै० सं० २.४.८.६ ।

उदीरयन्त वायुभिः ऋ० ८.७.३ ।

उदीरय पितरा ऋ० १०.११.६, अ० १८.१.२३, नि० ३.१६ ।

उदीराणा उतासीना अ० १२.१.२८;

पैं०सं० १७.३.६ ।

उदीराथामृतायते ऋ० ८.७३.१ ।

उदीर्ष्व नार्यभि ऋ० १०.१८.८, अ० १८.३.२, तै०आ० ६.१.३ ।

उदीर्ष्वातः **पतिवती** ऋ० १०.८५.२१, पैं० सं० १८.१०.३ ।

उदीर्ष्वातो **विश्वावसो** ऋ० १०.८२.२२, अ० १४.२.३३, श० ब्रा० १४.६.४.१८ ।

उदु **ज्योतिरमृतं** ऋ० ७.७६.१, नि० ११.८ ।

उदु **तिष्ठ सवितः श्रुधि** ऋ० ७.३८.२ ।

उदु **तिष्ठ स्वधावर** ऋ० ८.२३.५, य० ११.४१, तै०सं० ४.१.४३; मै० सं० २.७.४८; ४.६.१६६; काठ०सं० १६.३८; कपि० ३०.३; श०ब्रा० ६.४.३.६ ।

उदुत्तमं मुमुग्धिनो ऋ० १.२५.२१, तै०ब्रा० २.४.२.६, काठ०सं० २१.४६ ।

उदुत्तमं वरुण ऋ० १.२४.१५, य० १२.१२, सा० ५८६, अ० ७.८३.३, १८.४.६६, तै० सं० २.५.१२.६, १.५.११.१०; ४.२.१.१०, २.५.१२.६; ११.८, मै० सं० १.२.११८; २.७.१०२; ४.१०.१०६; १४.२५४; स० वि० सामान्य प्रकरण; विवाह संस्कार,काठ० सं० ३.२८; १६.६३; २१.४७; ४०.६१; कपि० २.१५;३२.१; आ०ब्रा० ६.१.३.१०; सा०ब्रा० ३.२.१.५ ।

उदु **त्यच्चक्षुर्महि** ऋ० ६.५१.१ ।

उदु **त्यद्दर्शतं वपुः** ऋ० ७.६६.१४ ।

उदु **त्यं जातवेदसं** ऋ० १.५०.१, य० ७.४१, ८.४१, ३३.३१, सा० ३१, अ० १३.२.१६, २०.४७.१३, तै०सं० १.२.८.२, ४.४.३.१ २२.१२.५; ३.८.५; ४.१३; १४; ५.१२.१३; ३.१.११.३१; ६.१.१.६; नि० १२.१५; काठ० सं० ४.४६; ३०.१७; कपि० १.६,३.७, ष० ब्रा० पू० ६.१२.३; आ०ब्रा० ६.३.३.३; ६.४.२.५; ८.१२; सं०ब्रा० २.१; पैं०सं० १८.२२.१ ।

उदु **त्ये अरुणप्सव** ऋ० ८.७.७ ।

उदु त्ये **मधुमत्तमा** ऋ० ८.३.१५, सा० २५१, १३६२, आ० २०.१०.१, ५६.१; तां०ब्रा० १५.१०.३; सा० ब्रा० ३.१४.५; मै०सं० १.३.१२०; गो० ब्रा० उ० ४.२ ।

उदु **त्ये सूनवो गिरः** ऋ० १.३७.१०, सा० २२१; सा०ब्रा० ३.१.४.५ ;

उदु **त्वा विश्वे देवा** य० १२.३१, १७.५३; काठ०सं० १६.११०; १८.२१; श०ब्रा० ४.३.४.६; ६.८.१.७; ६.२.३.७, मै०सं० १.३.१००, २.७.११८, १०.४४; तै० सं० ४.२.३.२; ६.३.४; ५.२.२.४, ४.६.४; नि० १२.१५; ष० ब्रा० ५.६.१२.३; सं० वि० गृहाश्रम संस्कार; ल० पं० वि० २२५; कपि० २५.१; २८.३; ३२.२ ।

उदुत्सं शतधारं अ० ३.२४.४ ।

उदु **ब्रह्माण्यैरत** ऋ० ७.२३.१, सा० ३३०, अ० २०.१२.१; ऐ० ब्रा० ६.४.२; ऐ०आ० ५.२.२, आ०ब्रा० ६.३.३.६; गो० ब्रा० उ० ६.१; ऐ०ब्रा० ६.४.२ ।

उदुश्रिय उषसो ऋ० ६.६४.१ ।

उदुषा उदु **सूर्य** आ० ४.४.२; पैं०सं० ४.५.३ ।

उदुष्ुतः समिधायह्वो ऋ० ३.५.६ ।

उदु **ष्य देवः सविता** दमूना ऋ० ६.७१.४; ऐ०ब्रा० १.४.५; श०ब्रा० १३.५.१.११ ।

उदुष्य देवः सविता ययाम ऋ० ७.३८.१; ऐ०ब्रा० ४.५.४ ।

उदुष्य देवः सविता सवाय ऋ० २.३८.१; ऐ०ब्रा० ५.२.८ ।

उदुष्य देवः सविता हिरण्यया ऋ० ६.७१.१ ।

उदु ष्य वः सविता ऋ० ८.२७.१२ ।

उदुष्य शरणे दिवो ऋ० ८.२५.१६ ।

उदु स्तोमासो अश्विनो ऋ० ७.७२.३; ऐ०ब्रा० ५.३.१ ।

उदुस्त्रियाः सृजते सूर्याः ऋ० ७.८१.२, सा० ७५२, तै० ब्रा० ३.१.३.२; गो० ब्रा० उ० ५.३.५५७ ।

उदु स्वानेभिरीरत ऋ० ८.७.१७ ।

उदू अयाँ उपवक्तेव ऋ० ६.७१.५ ।

उदू व ऊर्मिः शम्या अ० १४.२.१६ ।

उदू षु णो वसो महे ऋ० ८.७०.६ ।

उदेणीव वारण्यभि अ० ५.१४.११ ।

उदेनमुत्तरां नयाग्ने य० १७.५०; अ० ६.५.१, काठ०सं० १८.१८; मै०सं० १.१०.३१, तै०सं० ४.६.३.१ ।

उदेनमुत्तरं नयाग्ने अ० ६.५.१, काठ० सं० १८.१८, श० ब्रा० ६.२.२.७, मै० सं० २.१०.३१०, तै० सं० ४.६.३.१, कपि० २८.३ ।

उदेनं भगो अग्रभीद् अ० ८.१.२; पै०सं० १६.१.२ ।

उदेशावि वारण्यभि अ० ५.१४.११ ।

उदेषां बाहू अति० य० ११.८२; काठ०सं० १६.८१; मै०सं० २.७.६०; तै०सं० ४.१.१०.१०; कपि० २८.१; ३०.८ ।

उदेहि वाजिन् यो अ० १३.१.१; पै०सं० १८.१५.१ ।

उदेहि वेदिं प्रजया अ० ११.१.२१; पै०सं० १६.६१.२ ।

उद्गा आजदङ्गिरोभ्य ऋ० ८.१४.८, सा० १६४१, अ० २०.१८.२, ३६.३; ऐ०ब्रा० ६.२.४, गो० ब्रा० उ० ५.१३, ५८६ ।

उद्गातां भगवती अ० २.८.१, ६.१२१.३ ।

उदेगातेव शकुने ऋ० २.४३.२ ।

उद् गो ह्रदमपिबज्जर्हृषाणः ऋ० १०.१०२.४ ।

उद्ग्रामं च निग्रामं य० १७.६४; काठ०सं० १.४३,१८.३२,श०ब्रा० ९.२.३.३२;मै०सं० १.१.४०; तै०सं० १.१.१३.२; ६.४.१३; ६.३.१५; कपि० २८.३ ।

उद्द्यामेषिरजः सा० ६३८ ।

उद्दिवँ स्तभानान्तरिक्षं य० ५.२७ ।

उद् द्यामिवेत् तृष्णजो ऋ० ७.३३.५ ।

उद्धर्षन्तां मघवन् अ० ३.१६.६; पै०सं० १.५६.२ ।

उद्धर्षय मघवन् ऋ० १०.१०३.१०, य० १७.४२, सा० १८५८, तै० सं० ४.६.४.११ ।

उद्धर्षिणं मुनिकेशं अ० ८.६.१७; पै०सं० १६.८०.८ ।

उद्वेदभिश्रुतामघं ऋ० ८.६३.१, सा० १२५, १४५०, अ० २०.७.१, ऐ०ब्रा० ८.२.४ ।

उद् बुध्यध्वम् ऋ० १०.१०१.१ ।

उद् बुध्यस्वाग्ने प्रति य० १५.५४,१८.६१; काठ०सं० १८.१०.६; श०ब्रा० ८.६.३.२३; गो० ब्रा० उ० १.४.३२७; तै०सं० ४.७.१३.१२; स०प्र० ११ समु०; सं०वि० सामान्य प्रकरण; ऋ० भू०ग्रन्थप्रामाण्या—प्रामाण्यविषय; द०शा० २६; कपि० २९.६ ।

उद्भिन्दतीं सञ्जयन्ती अ० ४.३८.१ ।

उद्यच्छध्वमप रक्षो अ० १४.१.५६; पै० सं० १८.६.७ ।

उद्यते नम उदायते अ० १७.१.२२; पैं०सं० १८.३२.६।

उद्यत् सहः सहस ऋ० ५.३१.३।

उद्यदिन्द्रो महते दानवाय ऋ० ५.३२.७।

उद्यद् ब्रध्नस्य विष्टपं ऋ० ८.६६.७, अ० २०.६२.४।

उद्यन्नद्य मित्रमह ऋ० १.५०.११, तै०ब्रा० ३.७.६.२२।

उद्यन्नादित्यं क्रिमीन् अ० २.३२.१; पैं०सं० २.१४.१।

उद्यन् रश्मीना तनुषे अ० १३.२.१०; पैं०सं० ४.१६.८, १८.२१.४।

उद्यम्यमीति ऋ० १.६५.७।

उद्यस्य ते नवजातस्य ऋ० ७.३.३, सा० १२२१।

उद्यंस्त्वं देव सूर्य अ० १३.१.३२।

उद्यानं ते पुरुष अ० ८.१.६; पैं०सं० १६.१.६।

उद्यामेषिरजः ऋ० १.५०.७; सा० ६३८; श्रा०ब्रा० ६.४.२.८।

उद्योधन्त्यभि वल्गन्ति अ० १२.३.२६; पैं०सं० १७.३८.८।

उद्व ऊर्मिः शम्या ऋ० ३.३३.१३, अ० १४.२.१६।

उद्वत्स्वस्मा अकृणोतना ऋ० १.१६१.११, नि० ११.१६।

उद्वन्दनमैरतम् ऋ० १.११८.६।

उद्वयं तमसस्परि ऋ० १.५०.२०, य० २०.२१, २७.१०, ३५.१४, ३८.२४, अ० ७.५३.७, का०सं० १८.८६ तै०सं० ४.१.७.१०; ५.१.८.२०, तै०ब्रा०२.४.४.६, ६.६.४, तै०आ० ६.३.२; ऐ०आ० ३.२.४, कपि० २६.४ काठ०सं० १८.६६, २२.८; २६१०; ३५.४७; ३८.२४; नि० १.४; श० ब्रा० १२.६.२.८; १३.८.४.७; १४.३.१२८; मै०सं० २.१२.३४; ४.६.२५६; ल०प०वि० २२४; सं०वि० गृहाश्रमसंस्कार, पैं०सं० ५.६.६; २०.१०.३।

उद्वाज आ गन्यो अ० १३.१.२; पैं०सं० १८.१५.२।

उद्वां चक्षुर्वरुण ऋ० ७.६१.१; मै०सं० २.१२.३४; ४.६.२५६।

उद्वां पृक्षासो मधुमन्त ऋ० ४.४५.२।

उद्वां पृक्षासो मधुमन्तो अस्थुः ऋ० ७.६०.४; मै०सं० ४.१२.६१।

उद् वृहा रक्षः सह ऋ० ३.३०.१७, नि० ६.२।

उद्वेति प्रसवीता जनानां ऋ० ७.६३.२।

उद्वेति सुभगो विश्वचक्षाः ऋ० ७.६३.१।

उद्वेपमाना मनसा अ० ५.२१.२।

उद्वेपय त्वमर्बुदे अ० ११.६.१८।

उद्वेपय सं विजन्ता अ० ११.६.१२।

उनत्ति भूमिं पृथिवीं ऋ० ५.८५.४।

उन्नत ऋषभो वामनः य० २४.७; तै०सं० ५.६.१४.१; का०सं० २६.८।

उन्मदिता मौनेयेन ऋ० १०.१३६.३।

उन्मध्व ऊर्मिर्वनना ऋ० ६.८६.४०।

उन्मादयत मरुतः अ० ६.१३०.४।

उन्मा पीता असंयत ऋ० १०.११६.३।

उन्मा ममन्द वृषभो ऋ० २.३३.६।

उन्मुञ्चन्तीवि वरुणा अ० ८.७.१०।

उन्मुञ्च पाशांस्त्वमग्न अ० ६.११२.२।

उपक्रमस्वाभर ऋ० ८.८१.७।

उप क्षत्रं पृञ्चीत ऋ० १.४०.८।

उप क्षरन्ति सिन्धवो ऋ० १.१२५.४, तै०सं० १.८.२२.१५; मै०सं० ४.११.५; काठ०सं० ११.३६।

उपक्षेतारस्तव सुप्रणीते ऋ० ३.१.१६।

उपच्छायामिव घृणे ऋ० ६.१६.३८ सा० १७०६, तै० ब्रा० २.४.४.६; मै०सं० ४.११.३६; काठ०सं० ४०.१२२।

उपजीका उद्भरन्ति अ० २.३.४।

उप जीवा स्थोप अ० १६.६६.२।

उप ज्मन्नुप वेतसे य० १७.६; काठ०सं० १७.७४; श०ब्रा० ६.१.२.२७; मै०सं० २.१०.४; तै०सं० ४.६.१.५; कपि० २८.१।

उप ते गा इवाकरं ऋ० १०.१२७.८, तै०ब्रा० २.४.६.१०; काठ०सं० १३.८३।

उप तेऽधां सहमाना ऋ० १०.१४५.६, अ० ३.१८.६।

उप ते स्तोमान्पशुपा ऋ० १.११४.६।

उपत्मन्या वनस्पते ऋ० १.१८८.१०।

उप त्या वह्नी गमतो ऋ० ७.७३.४।

उप त्रितस्य पाष्योः ऋ० ६.१०२.२, सा० १०१४।

उप त्वा कर्मन्नूतये ऋ० ८.२१.२, सा० ७०६, अ० २०.१४.२, ६२.२।

उप त्वाग्ने दिवेदिवे ऋ० १.१.७, य० ३.२२, सा० १४, तै०सं० १.५.६.५; ऐ०ब्रा० १.५.४, मै० १.५.२५; ल० वेदाङ्क १५१; काठ०सं० ७.३; सा०ब्रा० ३.१.४.३।

उप त्वाऽग्ने हविष्मतीः य० ३.४; मै०सं० १.५.२५; कपि० ६.२।

उप त्वा जामयो गिरो ऋ० ८.१०२, १३, सा० १३,१५७०, तै० ब्रा० १.८.८.१; काठ०सं० ४०.१२८; आ०ब्रा० ६.२.१.१, सा०ब्रा० ३.१.४.३।

उप त्वा जुह्वो३मम ऋ० ८.४४.५, सा० १५४२; मै० १.६.२; काठ०सं० ७.४४; सं०ब्रा० ३.८।

उप त्वा देवो अग्र अ० ७.११०.३।

उह त्वा नमसा अ० ३.१५.७।

उप त्वा रण्व सदृशं ऋ० ६.१६.३७; सा० १७०५ मै०सं० ४.११.३८, काठ०सं० ४०.१२१।

उप त्वा सातये नरो ऋ० ७.१५.६।

उप द्यामुप वेतसम् अ० १८.३.५।

उप द्रव पयसा अ० ७.७३.६।

उप नः पितवा ऋ० १.१८७.३; काठ०सं० ४०.५५।

उप नः सवना गहि ऋ० १.४.२, सा० १०८८, अ० २०.५७.२, ६८.२।

उप नः सुतमागतम् ऋ० ५.७१.३।

उप नः सुतमा गहि सोमं ऋ० ३.४२.१, अ० २०.२४.१।

उप नः सुतमा गहि ऋ० १.१६.४।

उप नः सूनवो गिरः ऋ० ६.५२.६, य० ३३.७७, सा० १५६५, तै०सं० २.४.१४.५; काठ०सं० २६.३० का० सं० ३२.७७।

उप नो देवा अवसा ऋ० १.१०७.२।

उप नो न रमसि अ० २०.१२७.१४।

उप नो यातमश्विना ऋ० ८.२६.७।

उप नो वाजा अध्वरं ऋ० ४.३७.१; ऐ०ब्रा० ५.२.८।

उप नो वाजिनीवसू ऋ० ८.२२.७।

उप नो हरिभिः सुतं ऋ० ८.९३.३१, सा० १५०, १७६०; ऐ०ब्रा० ५.२.८; ५.२.२; तां०ब्रा० १२.१३.३; ५.१.१६।

उप प्रक्षे मधु सा० ४४४, १११५; सा०ब्रा० ३.१.४.१४।

उप प्र जिन्वन्नुशतीः ऋ० १.७१.१।

उप प्रयन्तो अध्वरं ऋ० १.७४.१, य० ३.११, सा० १३७६, तै०सं० १.५.५.१;

काठ० सं० ४.१३;३७.५६; का० सं० २२. २१; कपि० ३.१ ।

उपयामगृहीतोऽस्याग्रयणो य० ७.२०; काठ० सं० ४.२४; श० ब्रा० ४.२.२.६;१०; कपि० ३.१;४; ४१.८ ।

उपयामगृहीतोऽस्यादित्येभ्यः य० ८.१; काठ० सं० ४.५३;५५.५७; श० ब्रा० ४.३.५.६–६;३.१२;८;४१.८;४६.७ ।

उपमायगृहीतो ऽस्याश्विनं य० १६.८; काठ० सं० ३७.५८; कपि० ३.१ ।

उप यो नमो नमसि ऋ० ४.२१.५ ।

उप व एषे नमसा ऋ० १.१८६.४ ।

उप व एषे वन्द्येभिः ० ऋ ५.४१.७; सं० वि० विवाहसंस्कार ।

उप शिक्षापतस्थुषः ऋ० ६.१६.६, सा० ७६१ ।

उप श्रेष्ठा न आशिषो अ० ४.२५.७; पै० सं० ४.३४.७; मै० सं० ३.१६.७७ ।

उपश्वसे द्रुवये अ० ११.१.१२; पै० सं० १६.६०.१ ।

उप श्वासय पृथिवीं ऋ० ६.४७.२६, य० २६.५५, अ० ६.१२६.१, तै० सं० ४.६.६. १८; नि० ६.१२, काठ सं० ३१.२३; मै० सं० ३.१६.४७; पै० सं० १५.११.६ ।

उप सद्याय मीळ्हुषः ऋ० ७.१५.१; ऐ० ब्रा० १.४.८ ।

उप सर्प मातरं भूमिं ऋ० १०.१८.१०, अ० १८.३.४६ तै० आ० ६.७.१ ।

उपस्तुतिरौचथ्यमुरुष्ये ऋ०१.१५८.४ ।

उपस्तुतिं नमस उद्यतिं ऋ० १.१६०.३ ।

उपस्तुहि प्रथमं रत्नधेयं ऋ० ५.४२.७ ।

उपस्तृणीतमत्रये ऋ० ८.७३.३; ।

उपस्तृणीहि प्रथय अ० १२.३.३७; पै० सं० १७.३६.७ ।

उप स्तृणीहि बल्बजमधि अ० १४.२.२३; पै० सं० १८.६.३ ।

उपस्थाय मातरमन्न ऋ० ३.४८.३ ।

उपस्थायं चरति यत्समारत ऋ० १.१४५. ४ ।

उपस्थास्ते अनमीवा अ० १२.१.६२ ।

उपस्रक्वेषु बप्सतः ऋ० ८.७२.१५, सा० १४८२ ।

उपह्व्यं विषूवन्तं अ० ११.७.१५; पै० सं० १६.८३.५ ।

उप हरति प्रति अ० ६.६.६ ।

उप हरति हवींष्या अ० ६.६.३ ।

उपहूता इव गाव य० ३.४३; स० वि० गृहाश्रम एवं अन्त्येष्टिसंस्कार; ऋ० भू० गृहाश्रमविषय; आर्याभि० २.४६ ।

उपहूता इह गावः अ० ७.६०.५ ।

उपहूता नः पितरः ऋ० १०.१५.५; य० १६. ४७; अ० १८.३.४५; तै० सं० २.६.१२. ८; मै० सं० ४.१०.१३७; काठ० सं० २१. ६५ ।

उपहूता भूरिधनाः अ० ७.६०.४; पै० सं० ३.२६.६ ।

उपहूताः पितरः सोम्यासः ऋ० १०.१५.५, य० १६.५७, अ० १८.३.४५, तै० सं० २. ६.१२.३; काठ० सं० २१.८५; का० सं० २१.५८; मै० सं० ४.१०;१३७; ऋ० भू० पंचमहायज्ञप्रकरण ।

उपहूतो द्यौष्पितोप य० २.११; श० ब्रा० १. ८.४.१३;१५;८.१.४१–४२ ।

उपहूतो मे गोपा अ० १६.२.३ ।

उपहूतो वाचस्पतिः अ० १.१.४; पै० सं० १. ६.४ ।

उपहूतौ सुयुजौ अ० ६.१०४.३।
उपह्वये सुदुघां धेनुमेतां ऋ० १.१६४.२६, अ० ७.७३.७; ६.१०.४, नि० ११.३६, ऐ० ब्रा० १.४.५; पैं० सं० १६.६८.४,२०.११.१।
उप ह्वये सुहवं मारुतं ऋ० १०.३६.७।
उपह्वरे गिरीणां ऋ० ८.६.२८, य० २६.१५, सा० १४३; नि० १.२०।
उपह्वरेषु यदचिध्वं ऋ० १.८७.२, तै० सं० ४.३.१३.२५।
उपाजिरा पुरुहूताय ऋ० ३.३५.२।
उपयातं दाशुषे मर्त्याय ऋ० ७.७१.२।
उपावसृज त्मन्या ऋ० १०.११०.१०, य० २६.३५, अ० ५.१२.१०, तै० ब्रा० ३.६.३.४, नि० ८.१६. मै० सं० ४.१३.२१; काठ० सं० १६.२३८।
उपावीरस्युप देवान् य० ६.७; श० ब्रा० ३.७.३.६–१२; कपि० २.११;४१.५।
उपास्तररिकरो लोकम् अ० १२.३.३८।
उपास्मान् प्राणो अ० १६.५८.२।
उपास्मै गायता ऋ० ६.११.१, य० ३३.६२, सा० ६५१,७६३, तै० ब्रा० १.५.६.७; जै० ब्रा० ३.३८;६.८; का० सं० ३२.६२; ता० ब्रा० १६.११.२; गो० ब्रा० उ० ३.१२.४६६; ष० ब्रा० १.३.१७।
उपाहृत मनुबुद्धं अ० १०.१.१६।
उपेदमुपपर्चनं ऋ० ६.२८.८, अ० ६.४.२३, तै० ब्रा० २.८.८.१२।
उपेदहं धनदामप्रतीत ऋ० १.३३.२।
उपेम सृक्षि वाजयुः ऋ० २.३५.१; मै० सं० ४.१२.६७; काठ० सं० १२.६२।
उपेहोपपर्चनास्मिन् अ० ६.४.२३; पैं० सं० १६.२६.४।
उपैनं विश्वरूपाः अ० ६.७.२६; तै० सं० ६.२.६.३।
उपो अदर्शि शुन्ध्युवो ऋ० १.१२४.४, नि० ४.१६;।
उपो ते बद्ध्वे अ० १३.४.४५।
उपोत्तमेभ्यः स्वाहा अ० १६.२२.११।
उपोनयस्व वृषणा ऋ० ३.३५.३।
उपोप मे परा मृश ऋ० १.१२६.७. नि० ३.२०।
उपो मतिः पृच्यते ऋ० ६.६६.२; सा० १३७१।
उपो षु जातमप्तुरं ऋ० ६.६१.१३, सा० ४८७;७६२;१३३५; ता० ब्रा० १५.५.६; १६.११.२।
उपो रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं ऋ० १.३६.६।
उपो रुरुचे युवति ऋ० ७.७१.१।
उपो षु जातमप्तुरं ऋ० ६.६१.१३; सा० ४८७;७६२;१३३५।
उपोषु शृणुहि ऋ० १.८२.१, सा० ४१६; ऐ० ब्रा० ४.१.३।
उपो ह यद्विदथं वाजिनो ऋ० ७.६३.३; तै० ब्रा० ३.६.१२.१; मै० सं० ४.११.५।
उपोहश्च समूहश्च अ० ३.२४.७।
उपो हरीणां ऋ० ८.२४.१४, सा० १५१०।
उभयतः पवमानस्य ऋ० ६.८६.६, सा० ८८७।
उभयं ते न क्षीयते ऋ० २.६.५।
उभयं शृणवच्च ऋ० ८.६१.१, सा० २६०, १२३३, अ० २०.११३.१; ऐ० ब्रा० ४.५.३;५.३.३;८.१.२; ऐ० ब्रा० ५.२.४; तां० ब्रा० १४.१०.६।
उभयासो जातवेदः ऋ० २.२.१२।

उभयोरग्रभं नामास्या अ० १९.३८.३; प्र० सं० १६.२४.३।

उभा उ नूनं तदिदर्थं ऋ० १०.१०६.१।

उभा जिग्यथुर्न परा ऋ० ६.६९.८. अ० ७.४४.१, तै० सं० ३.२.११.५;७.१.६.१४; मै० स० २.४.२७;४.१२.१२८; ऐ० ब्रा० ६.३.७; काठ० सं० १२.४७; गो० ब्रा० उ० ४.१७।

उभा देवा दिवि ऋ० १.२३.२।

उभा देवा नृचक्षसा ऋ० ६.५.७।

उभा पिबतमश्विना ऋ० १.४६.१५, य० ३४.२८; ऐ० ब्रा० १.४.५;४.२.५; का० सं० ३३.२२।

उभाभ्यां देव सवितः ऋ० ९.६७.२५, अ० ६.१९.३; य० १९.४३, तै० ब्रा० १.४.८.२,२.६.३.४; मै० सं० ३.११.९४, काठ० सं० ३८.२१; का० सं० २१.४७; पै० सं० १९.७.१३।

उभावन्तौ समर्षसि अ० २३.२.१३; पै० सं० १८.२१.७।

उभा वामिन्द्राग्नी ऋ० ६.६०.१३. य० ३.१३,तै० सं० १.१.१४.१,५.५.५;७.६; मै० सं० १.५.३, काठ० सं० ६.२१; श० ब्रा० २.३.४.१२; कपि ४.८;५.३।

उभा शंसा नर्यामामविष्ठा ऋ० १.१८५.९।

उभा हि दस्रा भिषजामयो ऋ० ८.८६.१।

उभे अस्मै पीपयतः ऋ० २.२७.१५।

उभे चिदिन्द्र रोदसी ऋ० ७.२०.४।

उभे द्यावापृथिवी ऋ० ९.८१.५।

उभे धुरौ वह्निरा ऋ० १०.१०१.११।

उभे नमसी उभयांश्च अ० १२.३.६।

उभे पुनामि रोदसी ऋ० १.१३३.१।

उभे भद्रे जोषयेते ऋ० १.९५.६।

उभे यत्ते महिना ऋ० ७.९६.२; ऐ० ब्रा० ५.२.१।

उभे यदिन्द्र रोदसी ऋ० १०.१३४.१, सा० ३७९,१०९०; तां ब्रा० १३.१०.३; आ० ब्रा० ६.२.४.५।

उभे सुश्चन्द्र सर्पिषो ऋ० ५.६.९, य० १५.४३, सा० १०२४, तै० सं० २.२.१२.७; ४.४.४.२१; मै० सं० २.१३.२०;४.१२.११२।

उभे सोमावचाकशन् ऋ० ९.३२.४।

उभोभयाविन्नुपधेहि ऋ० १०.८७३, अ० ८.३.३; पै० सं० १६.६.३।

उयं यकांशलोकका अ० २०.१३०.२०।

उरु गव्यूतिरभयानि ऋ० ९.९०.४, सा० १४१०।

उरु गुलाया दुहिता अ० ५.१३.८।

उरु णस्तन्वे३तने ऋ० ८.६८.१२।

उरु ते ज्रयः पर्येति ऋ० १.९५.९।

उरु वां रथः परि नक्षति ऋ० ४.४३.५।

उरु विष्णो विक्रमस्व य० ५.३८.४१; काठ० सं० ३.५;८; श० ब्रा० ३.६.३.१५;४.३; मै० सं० १.२.८५;८६; तै० सं० १.३.४.४; कपि० २.९.८।

उरु व्यचसा ऽग्नेर्धाम्ना अ० ५.२७.८; पै० सं० ९.१.६।

उरुव्यचसामहिनी असश्च ऋ० १.१६०.२।

उरुव्यचसे महिने ऋ० ७.३१.११, सा० १७९४।

उरुव्यचा नो महिषः ऋ० १०.१२८.८, अ० ५.३.८; तै० सं० ४.७.१४.८; काठ० सं० ४०.७७; पै० स० ५.४.७।

उरुष्या णो अभिशस्तेः ऋ० १.९१.१५।

उरुष्या णो मा परा दाः ऋ० ८.७१.७।

उरुशंसा नमोवृधा ऋ० ३.६२.१७; सा० ६६४।

उरु गभीरं जनुषा ऋ० ३.४६.४।

उरु नृम्य उरु गव ऋ० ८.६८.१३।

उरु नो लोकमनु ऋ० ६.४७.८, अ० १९.१५.४, तै० सं० २.७.१३.३, नि० ७.६; ऐ० ब्रा० ६.४.६, गो० ब्रा० उ० ६.४; पै० सं० ३.३५.४।

उरु यज्ञाय चक्रथुर्हि ऋ० ७.९९.४।

उरु हि राजा वरुणश्चकार ऋ० १.२४.८, य० ८.२३, तै० सं० १.४.४५.१; ६.६.३.६; मै० सं० १.३.११४; काठ० सं० ४.७८।

उरुः कोशो वसुधान अ० ११.२.११।

उरुः प्रथस्व महता अ० ११.१.१९।

उरुः पृथुः सुभूर्भवः अ० १३.४.१; ऋ० भू० उपासना विषय।

उरुः प्रथस्व महता अ० ११.१.१९; पै० सं० १६.९०.७।

उरूणसावसुतृपौ ऋ० १०.१४.१२, अ० १८.२.१३; तै० आ० ६.३.१; पै० सं० १०.९.१०, १९.५२.९।

उरोष्ट इन्द्र राधसो ऋ० ५.३८.१।

उरौ देवा अनिबाधे स्याम ऋ० ५.४२.१७, ४३.१६।

उरौ महाँ अनिबाधे ऋ० ३.१.११।

उरौ वा ये अन्तरिक्षे ऋ० ३.६.८।

उर्वश्च मा चमसश्च मा अ० १६.३.३।

उर्वी पृथिवी बहुले ऋ० १.१८५.७; तै०ब्रा० २.८.४.८; मै० सं० ४.१४.९१।

उर्वीरासन् परिधयो अ० १३.१.४६; पै० सं० १८.१९.६।

उर्वी सद्मनी बृहती ऋ० १.१८५.६।

उलूकयातुं शुशुलूकयातुं ऋ० ७.१०४.२२; अ० ८.४.२२; पै० सं० १६.११.२।

उलूखले मुसले यः अ० १०.९.२६; पै० सं० ५.१३.५।

उवाच मे वरुणो ऋ० ७.८७.४।

उवा सोषा उच्छाच्चनु ऋ० १.४८.३।

उवे अम्ब सुलाभिके ऋ० १०.८६.७; अ० २०.१२६.७।

उवो चिथ हि मघवन् ऋ० ७.३७.३।

उशती कन्यला इमाः अ० १४.२.५२।

उशना काव्यस्त्वा ऋ० ८.२३.१७।

उशनायत्परावत ऋ० ८.७.२६।

उशना यत्सहस्यै ऋ० ५.२९.९।

उशन्तस्त्वा नि धीमहि ऋ० १०.१६.१२; य० १९.७०, अ० १८.१.५६, तै० सं० २.६.१२.१; श० ब्रा० २.६.११.१; का० सं० २१.७२, ऋ० भू० पितृयज्ञविषय; काठ० सं० २१.५९।

उशन्तस्त्वेधीमह्युशन्तः अ० १८.१.५६।

उशन्ता दूता न दभाय ऋ० ७.९१.२; ऐ० ब्रा० ५.३.३।

उशन्ति घा ते अमृतास ऋ० १०.१०.३, अ० १८.१.३।

उशन्नु षु णः सुमना ऋ० ४.२०.४।

उशिक्त्वं देव सोमाग्नेः य० ८.५०; तै० सं० ३.३.३.२०।

उशिक्पावको अरतिः ऋ० १०.४५.७, य० १२.२४, तै० सं० ४.२.२.५; काठ० सं० १६.१०३; मै० सं० २.७.११२।

उशिक्पावको वसुर्मा ऋ० १.६०.४।

उशिक्पावको अरतिः य० १२.२४।

ऊर्जं गावो यवसे ऋ० १०.१००.१० ।

ऊर्जं नो द्यौश्च पृथिवी ऋ० ६.७०.६ ।

ऊर्जं बिभ्रद् वसुवनि अ० ७.६०.१; काठ० सं० ३८.१५१ ।

ऊर्जं वहन्तीरमृतं य० २.३४; ऋ० भू०पितृ-यज्ञविषय; ल० पं० वि० २५१ ।

ऊर्जा देवां अवस्योजसा ऋ० ८.३६.३ ।

ऊर्जा मित्रो सा० ४५५ ।

ऊर्जा च वा एषा अ० ६.६.३ ।

ऊर्जे त्वा बलाय अ० १६.३७.३; पै० सं० १.५४.४ ।

ऊर्जो नपाज्जातवेदः ऋ० १०.१४०.३, य० १२.१०८, सा० १८१८, तै० सं० ४.२.७.७; मै० सं० २.७.१६२; काठ० सं० १६.१७६; ३६.७४; कपि० २५.५; श० ब्रा० ७.३.१.३१—३२ ।

ऊर्जो नपातमध्वरे ऋ० ३.२७.१२ ।

ऊर्जो नपातमा हुवे ऋ० ८.४४.१३, सा० १७१२ ।

ऊर्जो नपातं स हिनायं ऋ० ६.४८.२, य० २७.४४. सा० ७०४; मै० सं० २.१३.७०; काठ० सं० ३६.८४, का० सं० २६.४६; ष० ब्रा० १.३.२१ ।

ऊर्जो नपातं सुभगं ऋ० ८.१६.४, ।

ऊर्जो नपात्सहसावन् ऋ० १०.११५.८ ।

ऊर्जो भागो निहितो अ० ११.१.१५; पै० सं० १६.६०.५ ।

ऊर्जो भागो य इमं अ० १८.४.५४ ।

ऊर्णम्रदा वि प्रथस्वाभ्य ऋ० ५.५.४ ।

ऊर्ध्व ऊषु ण ऊतये ऋ० १.३६.१३, य० ११.४२, सा० ५७, तै० सं० ४.१.४.४, तै० ब्रा० ३.६.१.२; मै० सं० २.७.४६;४.१३.५; ऐ० ब्रा० १.४.५;२.१.२; काठ० सं० १५.५३; १६.३६; श० ब्रा० ६.४.३.१०; कपि० ३०.३ ।

ऊर्ध्व ऊ षु णो अध्वरस्य ऋ० ४.६.१; कपि० ३०.३ ।

ऊर्ध्वमेनमुच्छ्रयतादिगरो य० २३.२७; श० ब्रा० १३.५.२.६; का० सं० २५.३२; ऋ० भू० भाष्यकरणशंकासमाधानविषय ।

ऊर्ध्वस्तिष्ठतु रक्षन्न० अ० १६.४६.२ ।

ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतये ऋ० १.३०.६, सा० १६०१, अ० २०.४५.३; पै० सं० १६.५४.१ ।

ऊर्ध्वं केतुं सविता ऋ० ४.१४.२ ।

ऊर्ध्वं नुनुद्रेवतं ऋ० १.८५.१० ।

ऊर्ध्वं भरन्तमुदकं अ० १०.८.१४ ।

ऊर्ध्वं भानु सविता ऋ० ४.१३.२ ।

ऊर्ध्वः सुप्तेषु जागार अ० ११.४.२५ ।

ऊर्ध्वा अस्य समिधो अ० ५.२७.१; काठ० सं० १८.६२; का० सं० २६.२१; श० ब्रा० ६.२.१.३१;३२; मै० सं० २.१२.३५; कपि० २६.५ ।

ऊर्ध्वा अस्य समिधो य० २७.११; पै० सं० ६.१.१; काठ० सं० १८.६२; मै० सं० २.१२.३५ ।

ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिः अ० ३.२७.६; पै० सं० ३.२४.६; सं० वि० गृहाश्रमसंस्कार; ल० पं० वि० २२१ ।

ऊर्ध्वा धीतिः प्रत्यस्य ऋ० १.११६.२ ।

ऊर्ध्वामा रोह य० १०.१४; श० ब्रा० ५.४.१.७–६ ।

ऊर्ध्वामेनामुच्छ्रापय य० २३.२६; का० सं० २५.३१; श० ब्रा० १३.२.६.२–५;१३.५.२.६; मै० सं० ३.१.३.१ ।

ऊर्ध्वा यत्ते त्रेतिनी ऋ० १०.१०५.६ ।

ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा अ० ७.१४.२; पै० सं० २०४.६; काठ० सं० २.२८।

ऊर्ध्वाया दिशः शालाया अ० ६.३.३०; पै० सं० १६.४१.१०; सं०वि० गृहाश्रमसंस्कार।

ऊर्ध्वायां त्वां दिशि अ० १८.३.३५।

ऊर्ध्वायै त्वा दिशे अ० १२.३.६०; पै० सं० १६.९३.६।

ऊर्ध्वासस्त्वान्विन्दवः ऋ० ७.३१.६।

ऊर्ध्वा हि ते दिवेदिवो ऋ० ८.४५.१२।

ऊर्ध्वो अग्निः सुमतिं ऋ० ७.३९.१।

ऊर्ध्वो गन्धर्वो ऋ० ९.८५.१२; सा० १८४७।

ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि ऋ० १०.१२३.७।

ऊर्ध्वो ग्रावा बृहदग्निः ऋ० १०.७०.७।

ऊर्ध्वो ग्रावा वसवो ऋ० १०.१००.९।

ऊर्ध्वो नः पाह्यंहसो ऋ० १.३६.१४, तै० ब्रा० ३.६.१.२; ऐ० ब्रा० १.४.५, २.१.२; मै० सं० ४.१३.६; काठ० सं० १५.५४; आर्याभि० १.१६।

ऊर्ध्वो नु सृष्टा३स्तिर्यङ् अ० १०.२.२८।

ऊर्ध्वो बिन्दुरुदचरद् अ० १०.१०.१९; पै० सं० १६.१०८.९।

ऊर्ध्वो भव प्रतिविध्या ऋ० ४.४.५, य० १३.१३, तै० सं० १.२.१४.५; ऐ० ब्रा० १.४.२, मै० सं० २.७.२०८; काठ० सं० १६.१९३; श० ब्रा० ७.४.१.४१; मै० सं० २.७.२०८।

ऊर्ध्वो रोहितो अधि अ० १३.१.११; पै०सं० १८.१६.१।

ऊर्ध्वो वामग्निरध्वरेषु ऋ० ६.६३.४।

ऊर्ध्वो वां गातुरध्वरे ऋ० ६.६३.४।

ऊर्ध्वो ह्यस्थादध्यन्तरिक्षे ऋ० २.३०.३।

ऊर्मिर्यस्ते पवित्र ऋ० ९.६४.११।

ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जवः अ० १९.६०.२।

ऋक् साम यजुरुच्छिष्ट अ० ११.७.५; पै० सं० १६.८२.५; तै० सं० ७.३.१२.२।

ऋक्सामयोः शिल्पे य० ४.९; काठ० सं० २.८; कपि० १.१५, २५.९; श० ब्रा० ३.२.१.५–८; मै० सं० १.२.१४।

ऋक्सामाभ्यामभिहितौ ऋ० १०.८५.११; अ० १४.१.११; पै० सं० १८.१.११।

ऋचं वाचं प्रपद्ये य० ३६.१; का० सं० ३६.१; आर्याभि० २०.८।

ऋचं साम यजामहे सा० ३६९, अ० ७.५४.१; सा० ब्रा० ३.३, ९.१,२; पै० सं० २०.२५.३।

ऋचं साम यदप्राक्षं अ० ७.५४.२; पै० सं० २०.५७.१।

ऋचः पदं मात्रया अ० ९.१०.१९, पै० सं० १६.६९.९।

ऋचः प्राञ्चस्तन्तवो अ० १५.३.६।

ऋचः सामानि च्छन्दांसि अ० ११.७.२४।

ऋचा कपोतं नुदत ऋ० १०.१६५.५, १९.११.१; अ० ६.२८.१।

ऋचा कुम्भीमध्यग्नौ अ० ९.५.५।

ऋचा कुम्भ्यधिहिता अ० ११.३.१४; पै०सं० १४.३.९।

ऋचां च वै स अ० १५.६.९।

ऋचां त्वः पोषमास्ते ऋ० १०.७१.११, नि० १.७।

ऋचे त्वा रुचे त्वा य० १३.३९; काठ० सं० १६.२०६; श० ब्रा० ७.५.२.१२; मै० सं० २.७.२३८; तै० सं० ४.२.९.२०।

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् ऋ० १.१६४.३९, अ० ९.१०.१८, तै० ब्रा० ३.१०.९.१४, तै० आ० २.११.१, नि० १३.१०; स०

प्र० ३ समु०; सं० वि० संन्यास प्रकरण, ऋ० भू० पठनपाठनविषय; गो० ब्रा० पू० १.२२; पै० सं० १६.६६.८ ।

ऋचो नामास्मि य० १८.६७; श० ब्रा० ६.५.१.५३; कपि० ३५.४ ।

ऋजवे त्वा साधवे य० ३७.१०; का० सं० ३७.१०; श० ब्रा० १४.१.२.२२—२५; मै० सं० ४.६.३३ ।

ऋजिप्य ईमिन्द्रावतो ऋ० ४.२७.४ ।

ऋजीते परि वृङ्धि ऋ० ६.७५.१२, य० २६.४६, तै० सं० ४.६.६.१२; मै० सं० ३.१६.४३; मै०सं० ३.१६.३३ ।

ऋजीत्येनी रुशती ऋ० १०.७५.७ ।

ऋजीपी श्येनो ददमानो ऋ० ४.२६.६ ।

ऋजीषी वज्री वृषभ ऋ० ५.४०.४, अ० २०.१२.७; नि० ५.१२; गो० ब्रा० उ० ४.२ ।

ऋजुनीती नो वरुणो ऋ० १.६०.१, सा० २१८, नि० ६.२१; ऐ० ब्रा० ६.२.३; आर्याभि० १.१८; गौ० ब्रा० उ० ३.१.४.५; ५.१२.५८३ ।

ऋजुरिच्छंसो वनवत् ऋ० २.२६.१ ।

ऋजुः पवस्व ऋ० ६.६७.४३ ।

ऋज्रमुक्षण्यायने ऋ० ८.२५.२२, नि० ५.१५ ।

ऋज्राविन्द्रोत आ ददे ऋ० ८.६८.१५ ।

ऋणादृणमिव संनयन् अ० १६.४५.१; पै० सं० १५.४.१ ।

ऋतजिच्च सत्यजिच्च य० १७.८३; तै०सं० ४.६.५.१७ ।

ऋतज्येन क्षिप्रेण ऋ० २.२४.८ ।

ऋतधीतय आ गत ऋ० ५.५१.२ ।

ऋतमृतेन सपन्तेषिरं ऋ० ५.६८.४, सा० १४६६ ।

ऋतये स्तेनहृदयं य० ३०.१३; का० सं० ३४.१३ ।

ऋतवस्त ऋतुधा य० २३.४०; का० सं० २५.४८; तै० सं० ५.२.१२.२ ।

ऋतवस्तमबध्नत अ० १०.६.१८; पै० सं० १६.४४.२ ।

ऋतवस्ते यज्ञं य० २६.१४ ।

ऋतवस्थ ऋतावृधा य० १७.३; कपि० २६.६;३२.२१; श० ब्रा० ६.१.२.१८;१६ ।

ऋतवः पक्तारः अ० ११.३.१७ ।

ऋतश्च सत्यश्च य० १७.८२; कपि० २८.६ ।

ऋतस्य गोपा न दभाय ऋ० ६.७३.८; मै० सं० ४.१४.१६३ ।

ऋतस्य गोपा वधि ऋ० ५.६३.१ ।

ऋतस्य च वै स अ० १५.६.६ ।

ऋतस्य जिह्वा पवते ऋ० ६.७५.२, सा० ७०१ ।

ऋतस्य तन्तुर्विततः ऋ० ६.७३.६; ऐ० ब्रा० १.४.३ ।

ऋतस्य दृळ्हा धरुणानि ऋ० ४.२३.६ ।

ऋतस्य देवा अनुव्रता ऋ० १.६५.६ ।

ऋतस्य पथि वेधा ऋ० ६.४४.८ ।

ऋतस्य पन्थामनु अ० ८.६.१३; मै० सं० २.३.७५ ।

ऋतस्य पन्थामनु पश्य अ० १८.४.३; पै० १६.१६.३; काठ० सं० ३६.५३ ।

ऋतस्य प्रेषा ऋतस्य ऋ० १.६८.५ ।

ऋतस्य बुध्न उषसा ऋ० ३.६१.७ ।

ऋतस्य रश्मिमनुयच्छमाना ऋ० १.१२३.१३ ।

ऋतस्यर्तेनादित्या अ० ६.११४.२ ।

ऋतस्य वा केशिना ऋ० ३.६.६ ।

ऋतस्य वो रथ्यः ऋ० ६.५१.६ ।

ऋतस्य हि धेनवो ऋ० १.७३.६ ।

ऋतस्य हि प्रसितिर्द्योः ऋ० १०.९२.४ ।

ऋतस्य हि वर्तनयः ऋ० १०.५.४ ।

ऋतस्य हि शुरुधः ऋ० ४.२३.८, नि० ६. १६,१०.३९ ।

ऋतस्य हि सदसो ऋ० १०.१११.२ ।

ऋतं च मेऽमृतं य० १८.६; काठ० सं० १८.५८; कपि० २८.९ ।

ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् ऋ० १०.१९०.१, तै० आ० १०.१.१३; सं० वि० गृहाश्रम संस्कार; ल० प० वि० २१५ ।

ऋतं चिकित्व ऋतमित् ऋ० ५.१२.२ ।

ऋतं दिवे तदवोचं ऋ० १.१८५.१० ।

ऋतं देवाय कृण्वते ऋ० २.३०.१ ।

ऋतं येमान ऋतमिद्वनो ऋ० ४.२३.१० ।

ऋतं वदन्नृतद्युम्न ऋ० ९.११३.४; सं० वि० संन्यास संस्कार ।

ऋतं वोचे नमसापृच्छ्य ऋ० ४.५.११ ।

ऋतं शंसन्त ऋजुदीध्यानाः ऋ० १०.६७. २, अ० २०.९१.२ ।

ऋतँ सत्यमृतँ य० ११.४७; काठ०सं० १६. ४५; कपि० ३०.३; श० ब्रा० ६.४.४.१०– १६; मै० सं० २.७.५५ ।

ऋतं सत्यं तपो अ० ११.७.१७ ।

ऋतं हस्तावनेजनं अ० ११.३.१३ ।

ऋतायिनी मायिनी ऋ० १०.५.३ ।

ऋतावरी दिवो अर्कैं ऋ० ३.६१.६ ।

ऋतावान ऋतजाता ऋ० ७.६६.१३ ।

ऋतावानमृतायवो ऋ० ८.२३.९ ।

ऋतावानं महिषं ऋ० १०.१४०.६, य० १२.१११, सा० १८२१, तै० सं० ४.२, ७.९; मै० सं० २.७.१९३; कपि० २५.५; काठ० सं० १६.१७८; श० ब्रा० ७.३.१. ३४ ।

ऋतावानं यज्ञियं ऋ० ३.२.१३ ।

ऋतावानं विचेतसं ऋ० ४.७.३ ।

ऋतावानं वैश्वानरम् य० २६.६, सा० १७०८, अ० ६.३६.१; काठ० सं० ४.१३६; ६.३३; ७.५३;९२; तै० सं० १.५.११.२; का० सं० २८.७; कपि० ३.१; मै० सं० ४.११.१६; पै० सं० १९.४.१ ।

ऋतावानः प्रतिचक्ष्या ऋ० २.२४.७ ।

ऋतावाना नि षेदतुः ऋ० ८.२५.८ ।

ऋतावा यस्य रोदसी ऋ० ३.१३.२; ऐ० ब्रा० २.५.३;८ ।

ऋताषाडृतधामाग्निः य० १८.३८; काठ० सं० १८.७२; कपि० २९.३; श० ब्रा० ९. ४.१.७; मै० सं० २.१२.७; सं० वि० विवाह संस्कार; तै० सं० ३.४.७.१ ।

ऋतुथेन्द्रो वनस्पतिः य० २०.६५; का० सं० २२.५३; मै० सं० ३.११.२२ ।

ऋतुमिष्ट्वार्तवैरायुषो अ० ५.२८.१३, १९. ३७.४ ।

ऋतुभ्यष्ट्वार्त्तवेभ्यो अ० ३.१०.१० ।

ऋतुर्जनित्री तस्या ऋ० २.१३.१ ।

ऋतून् ब्रूम ऋतुपतीन् अ० ११.८.१७ ।

ऋतून् यज ऋतुपतीन् अ० ३.१०.९ ।

ऋतूनां च वै स अ० १५.६.१८ ।

ऋतेन ऋतमपिहितं ऋ० ५.६२.१ ।

ऋतेन ऋतं धरुणं ऋ० ५.१५.२ ।

ऋतेन ऋतं नियतमीळ ऋ० ४.३.९ ।

ऋतेन गुप्त ऋतुभिः अ० १७.१.२९; पै० सं० १८.३२.११;१२ ।

ऋतेन तष्टा मनसा अ० ११.१.२३; पै० सं० १६.९१.३ ।

ऋतेन देवः सविता ऋ० ८.८६.५।

ऋतेन देवीरमृता ऋ० ४.३.१२।

ऋतेन मित्रावरुणा ऋ० १.२.८, सा० ८४८; ऐ० ब्रा० ३.१.१।

ऋतेन यावृतावृधा ऋ० १.२३.५, सा० ७६४।

ऋतेन स्थूणामधि अ० ३.१२.६; पै० सं० २०.२२.३।

ऋतेन हि ष्मा वृषभः ऋ० ४.३.१०।

ऋतेनाद्रिं व्यसन्भिदन्तः ऋ० ४.३.११।

ऋते स विन्दते युधः ऋ० ८.२७.१७।

ऋदूदरेण सख्या सचेथ ऋ० ८.४८.१०, तै० सं० २.२.१२.१३, नि० ६.४; मै० सं० ४.११.४७, काठ० सं० ६.७१;।

ऋधक्सा वो मरुतो ऋ० ७.५७.४।

ऋधक्सोम स्वस्तये ऋ० ९.६४.३०, सा० ६५६।

ऋधगित्था स मर्त्यः ऋ० ८.१०१.१, य० ३३.८७।

ऋधङ्मन्त्रो योनिं अ० ५.१.१।

ऋधद्यस्ते सुदानवे ऋ० ६.२.४।

ऋध्याम स्तोमं सनुयाम ऋ० १०.१०६.११।

ऋभुक्षणं न वर्तव ऋ० ८.४५.२९।

ऋभुक्षणामिन्द्रमा हुव ऋ० १.१११.४।

ऋभुक्षणो वाजा ऋ० ७.४८.१।

ऋभुतो रयिः प्रथमश्रव ऋ० ४.३६.५।

ऋभुमन्ता वृषणा ऋ० ८.३५.१५।

ऋभुमृभुक्षणो रयिं ऋ० ४.३७.५।

ऋभुरसि जगच्छन्दा अ० ६.४८.२।

ऋभुर्ऋभुभिरभि वः ऋ० ७.४८.२, नि० ५.२; काठ० सं० २३.३१।

ऋभुर्ऋभुक्षा ऋभुर्विधतः ऋ० १०.९३.८।

ऋभुर्न इन्द्रः शवसान ऋ० १.११०.७।

ऋभुर्न रथ्यं नवं ऋ० ६.२१.६।

ऋभुर्भराय सं शि शातु ऋ० १.१११.५।

ऋभुर्विभ्वा वाज इन्द्रो ऋ० ४.३४.१; ऐ० ब्रा० ५.२.३; श० ब्रा० १३.५.१.११।

ऋभुश्चक्र ईड्यं चारु नाम ऋ० ३.५.६।

ऋश्यो न तृष्यन्नव ऋ० ८.४.१०।

ऋषभं मा समानानां ऋ० १०.१६६.१।

ऋषिभ्यः स्वाहा अ० १९.२२.१४।

ऋषिमना य ऋषिकृत् सा० ११७६।

ऋषिर्न स्तुभ्वा विक्षु ऋ० १.६६.४।

ऋषिर्विप्र पुरएता ऋ० ९.८७.३, सा० ६७९।

ऋषिर्हि पूर्वजा असि ऋ० ८.६.४१; आर्चा-भि० १.२८।

ऋषिं नरावंहसः पांचजन्यं ऋ० १.११७.३।

ऋषीणां प्रस्तरोऽसि अ० १६.२.६।

ऋषी बोधप्रतीबोधा अ० ५.३०.१०; पै०सं० ९.१३.१०।

ऋषे मन्त्रकृतां स्योमैः ऋ० ९.११४.२।

ऋष्टयो वो मरुतो ऋ० ५.५७.६।

ऋष्वस्त्वमिन्द्र शूर जातः ऋ० १०.१४८.२।

ऋष्वा ते पादा ऋ० १०.७३.३।

एक एवाग्निर्बहुधा ऋ० ८.५८.२।

एक चक्रं वर्त्तते अ० १०.८.७; पै० सं० १६.१०१.२।

एक पदी द्विपदी अ० १३.१.४२; पै० सं० १८.१९.२।

एक पाद द्विपदो भूयः ऋ० १०.११७.८; अ० १३.२.२७; ३.२५; गो० ब्रा० उ० २.९; पै० सं० १८.२३.४।

एकं पादं नोत्खिदति अ० ११.४.२१।

एक पाद् भूयो द्विपदो ऋ० १०.११७.८, अ० १३.२.२७, ३.२५।

एकया च दशभिश्च य० २७.३३, अ० ७.४.१; श० ब्रा० ४.४.१.१५; मै० सं० ४.६.३; का० सं० २६.२८।

एकया प्रतिधापिबत् ऋ० ८.७७.४, नि० ५.१०।

एकयाऽस्तुवत प्रजा य० १४.२८; काठ० सं० १७.१४; श० ब्रा० ८.४.३.३—६; मै० सं० २.८.१४; तै० सं० ४.३.१०.१; कपि० २६.४; ३२.४।

एक रात्रो द्विरात्रः अ० ११.७.१०; पै० सं० १६.८२.१।

एकराळस्य भुवनस्य ऋ० ८.३७.३।

एकर्चेभ्यः स्वाहा अ० १६.२३.२०।

एकशतं ता जनता अ० ५.१८.१२; पै० सं० ६.१६.५।

एकशतं लक्ष्म्यो अ० ७.११५.३।

एकशतं विष्कन्धानि अ० ३.६.६; पै० सं० ३.५.१।

एक स्त्वष्टुरश्वस्याविशस्ता ऋ० १.१६२.१६, य० २५.४२, तै० सं० ४.६.६.८।

एकस्मिन् योगे भुरणा ऋ० ७.६७.८।

एकस्मै स्वाहा द्वाभ्यां य० २२.३४; श० ब्रा० १३.२.१.५—६; मै० सं० ३.१२.१७; का० सं० २४.२६, सं० वि० वानप्रस्थ संस्कार; तै० सं० ७.२.११.१; ५.४.८.१८।

एकस्य चिन्मे विभ्वस्त्वोजः ऋ० १.१६५.१०; मै० सं० ४.११.८८; काठ० सं० ६.६२।

एकस्या वस्तोरावतं ऋ० १.११६.२१।

एकं चमसं चतुरः ऋ० १.१६१.२।

एकं च यो विंशतिं ऋ० ७.१८.११।

एकं नु त्वा सत्पतिं ऋ० ५.३२.११।

एकं रजस एना अ० ५.११.६।

एकं वि चक्र चमसं ऋ० ४.३६.४।

एकः समुद्रो धरुणः ऋ० १०.५.१।

एकः सुपर्णः स समुद्रं ऋ० १०.११४.४, नि० १०.४४, ऐ० आ० ३.१.६।

एका च मे तिस्रश्च य० १८.२४; श० ब्रा० ६.३.३.६; ऋ० भू० गणित विषय; कपि० २६.१।

एका च मे दश अ० ५.१५.१; पै० सं० ८.५.१।

एकाचेत्सरस्वतीनदीनां ऋ० ७.६५.२; ऐ० ब्रा० ५.३.१; मै० सं० ४.१४.१००।

एकादशर्चेभ्यः स्वाहा अ० १६.२३.८।

एकादष्टका तपसा अ० ३.१०.१२; पै० सं० १.१०६.४; काठ० सं० ३६.६२।

एकादस्या अन शये ऋ० ४.३०.११; नि० ११.४४।

एकानृचेभ्यः स्वाहा अ० १६.२३.२२।

एकैकयैषा सृष्ट्या अ० ३.२८.१।

एको गौरेक अ० ८.६.२६; पै० सं० १६.२०.४।

एको द्वे वसुमती समीची ऋ० ३.३०.११।

एकोनविंशतिः स्वाहा अ० १६.२३.१६।

एकोबहूनामसि मन्यवीळि ऋ० १०.८४.४, अ० ४.३१.४; पै० सं० ४.१२.४।

एको वो देवोऽप्यतिष्ठत् अ० ३.१३.४; काठ० सं० ३६.१२, मै० सं० २.१३.१०।

एजतु दशमास्यो गर्भो य० ८.२८; श० ब्रा० ४.५.२.४, ५,१६; सं० वि० गर्भाधान एवं जातकर्मसंस्कार।

एजदेजदजग्रभं अ० ४.५.४; पै० सं० ४.६.४।

एतं वां स्तोममश्विनौ ऋ० १०.३९.१४।
एतं वो युवानं अ० ६.४.२४।
एतं शर्ध धाम यस्य सूरेः ऋ० १.१२२.१२।
एतं शंसमिद्रामस्मयुष्ट्वं ऋ० १०.६३.११।
एतं सधस्थ परि य० १८.५९; काठ० सं० ४०.१०२; श० ब्रा० ६.५.१.४६; तै० सं० ५.७.७.२।
एतं सधस्थाः परि अ० ७.१२३.१।
एता अग्न आशुषाणास ऋ० ७.९३.८।
एता अर्षन्ति हृद्यात् ऋ० ४.५८.५; य० १७.९३; काठ० सं० ४०.४६।
एता अर्षन्त्यललला ऋ० ४.१८.६।
एता अश्वा आ अ० २०.१२९.१; गो० ब्रा० उ० ६.१३।
एत असृग्रमिन्दवः सा० ८३०।
एता उ त्या उषसः ऋ० १.९२.१; सा० १७५५; नि० १२.७।
एता उ त्याः प्रत्यदृक्षन् ऋ० ७.७८.३।
एता उ वः सुभगा य० २९.५; मै० सं० ३.१६.२१; तै० सं० ५.१.११.५; का० सं० ३१.५।
एता एता व्याकरं अ० ७.११५.४।
एता ऐन्द्राग्ना द्विरूपा य० २४.८; मै० सं० ३.१३.१३; का० सं० २६.६।
एता चिकित्वो भूमा ऋ० १.७०.६।
एता च्यौत्नानि ते कृता ऋ० ८.७७.९।
एता ते अग्न उचथानि वेधो ऋ० १.७३.१०; मै० सं० ४.१४.२२३।
एता ते अग्न उचथानि वेधोऽवोचम ऋ० ४.२.२०।
एता ते अग्ने जनिमा ऋ० ३.१.२०।
एता त्या ते श्रुत्यानि ऋ० १०.१३८.६।
एता देव सेनाः अ० ५.२१.१२।
एता धियं कृणवामा ऋ० ५.४५.६।
एतानि धीरो निण्या ऋ० ७.५६.४।
एतानि भद्रा कलश ऋ० १०.३२.९।
एतानि वामश्विना ऋ० २.३९.८; ऐ० ब्रा० १.४.४।
एतानि वामश्विना वीर्याणि ऋ० १.११७.२५।
एतानि वां श्रवस्या ऋ० १.११७.१०।
एतानि सोम पवमानो ऋ० ९.७८.५।
एता नो अग्ने सौभगा ऋ० ७.३.१०,४.१०।
एतान्यग्ने नवतिर्नव ऋ० १०.९८.१०।
एतान्यग्ने नवतिं सहस्रा ऋ० १०.९८.११।
एतायामोप गव्यन्त ऋ० १.३३.१।
एतावतश्चिदेषां ऋ० ८.७.१५।
एतावतस्त ईमह इन्द्र ऋ० ८.४९.९।
एतावतस्ते वसो विद्याम ऋ० ८.५०.९।
एतावद्रूपं यज्ञस्य य० १९.३१; का० सं० २१.३३।
एतावद्वां वृषण्वसू ऋ० ८.५.२७।
एतावद्वेदुषस् ऋ० ५.७९.१०।
एतावानस्य महिमा ऋ० १०.९०.३; य० ३१.३; अ० १९.६.३; तै० आ० ३.१२.१; का० सं० ३५.३; ऋ० भू० सृष्टिविषय।
एता विश्वा चकृवां ऋ० ५.२९.१४।
एता विश्वा विदुषे ऋ० ४.३.१६।
एता विश्वा सवना ऋ० १०.५०.६; नि० ५.२५।
एता वो वश्म्युद्यता ऋ० २.३१.७।
एतास्ते अग्ने समिधः अ० ५.२९.१४, १९.६४.४।
एतास्ते असौ धेनवः अ० १८.४.३३।

सं० २२.१०; ३८.२५; कपि० ३.१२; ८. ११; ४५.४।

एधोऽस्येधिषीय अ० ७.८९.४।

एनश्चि पङ्क्तिका हविः अ० २०.१३०. ११।

एनाङ्गुषेण वयमिन्द्रवन्तो ऋ० १.१०५. १९, नि० ५.११।

एना मन्दानो जहि शूर ऋ० ६.४४.१७।

एना वयं पयसा ऋ० ३.३३.४।

एना विश्वान्यर्य आ ऋ० ९.६१.११, य० २६.१८, सा० ५९३, ६७४; ष० ब्रा० १. ३.१८।

एना वो अग्निं नमसो ऋ० ७.१६.१, य० १५.३२, सा० ४५,७४६, तै० सं० ४.४.४. १३, नि० ३.२१; मै० सं० २.१३.४६; काठ० सं० ३९.१०७; मै० सं० २.१३.४६, गो० ब्रा० उ० ४.३.५१७।

एना व्याघ्रं परिषस्वजानाः अ० ४.८.७; काठ० सं० ३७.२८; मै० सं० २.१.१२।

एनीर्धाना हरिणीः अ० १८.४.३४।

एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत ऋ० ८.२४.१३, सा० ३८३, १५०९।

एन्द्रो पार्थिवं रयिं ऋ० ९.२९.६।

एन्द्र नो गधिप्रियः ऋ० ८.९८.४, सा० ३९३, १२४७, अ० २०.६४.१।

एन्द्र पृक्षु कासु सा० २३१।

एन्द्र याहि पीतये ऋ० ८.३३.१३।

एन्द्र याहि मत्स्व ऋ० ८.१.२३।

एन्द्र याहि हरिभिः ऋ० ८.३४.१, सा० ३४८, १८०७।

एन्द्र याह्युप नः ऋ० १.१३०.१, सा० ४५९; ऐ० ब्रा० ५.२.८; ऐ० आ० ५.१.१।

एन्द्रवाहो नृपतिं ऋ० १०.४४.३, अ० २०. ९४.३।

एन्द्र सानसिं रयिं ऋ० १.८.१, सा० १२९, अ० २०.७०.१७, तै० सं० ३.४.११.११, तै० ब्रा० ३.५.७.३; मै० सं० ४.१२.६५; ऐ० आ० ५.२.५; काठ० सं० ८.८०।

एन्द्रस्य कुक्षा पवते ऋ० ९.८०.३।

एन्द्रो बर्हिः सीदतु ऋ० १०.३६.५।

एन्येका श्येन्येका अ० ६.८३.२।

एभिर्द्युभिः सुमना ऋ० १.५३.४, अ० २०. २१.४।

एभिर्न इन्द्राहभिः ऋ० ७.२८.४।

एभिर्नृभिरिन्द्र त्वायुभिः ऋ० ४.१९.१९।

एभिर्नो अर्कैर्भवा ऋ० ४.१०.३, य० १५. ४६, सा० १७७९, तै० सं० ४.४.४.२५; मै० सं० ४.१०.४१; काठ० सं० २०.३७।

एभिर्भव सुमना अग्ने ऋ० ४.३.१५।

एमं पन्थामरुक्षसाम् अ० १४.२.८।

एमं भज ग्रामे अ० ४.२२.२।

एमं यज्ञमनुमतिर्जगाम अ० ७.२०.५।

एमा अगुर्योषितः अ० ११.१.१४; पै० सं० १६.९०.४।

एमा अग्मन्रेवतीः ऋ० १०.३०.१४; ऐ० ब्रा० २.३.२।

एमाशुमाशवे ऋ० १.४.७, अ० २०.६८.७।

एमां कुमारस्तरुण अ० ३.१२.७।

एमेनं प्रत्येतन ऋ० ६.४२.२, सा० १४४१।

एमेनं सृजता ऋ० १.९.२, अ० २०.७१.८, नि० १.९।

एयमगन् दक्षिणा अ० १८.४.५०।

एयमगन्नोषधीनां अ० ४.३७.६; पै० सं० १३.४.१०।

एयमगन् पतिकामा अ० २.३०.५; पैं० सं० २.१७.२।

एयमगन् बर्हिषा अ० ५.२६.६; पैं० सं० ६.२.६।

एवश्छन्दो वरिवः य० १५.४; काठ० सं० १७.१६; श० ब्रा० ८.५.२.३–४; मैं० सं० ४.३.१२; तैं० सं० ४.३.१२.३६; ३.३६; कपि० २६.५।

एवा कविस्तुवीरवाँ ऋ० १०.६४.१६।

एवाग्नि सहस्यं ऋ० ७.४२.६।

एवाग्निर्गोतमेभिर्ऋतावा ऋ० १.७७.५।

एवाग्निर्मर्तैः सह ऋ० १०.११५.७।

एवा च त्वं सरम ऋ० १०.१०८.६।

एवा जज्ञानं सहसे ऋ० ६.३८.५।

एवा त इन्दो सुभ्वम् ऋ० ६.७६.५।

एवा त इन्द्रो चथमहेम ऋ० २.१६.७।

एवा तदिन्द्र इन्दुना ऋ० १०.१४४.६।

एवा तमाहुरुत ऋ० ७.२६.४।

एवा ता विश्वा ऋ० ६.१७.१३।

एवा ते अग्ने विमदो ऋ० १०.२०.१०।

एवा ते अग्ने सुमतिं ऋ० ५.२७.३।

एवा ते गृत्समदाः ऋ० २.१६.८।

एवा ते वयमिन्द्र ऋ० १०.८६.१७।

एवा ते हारियोजना ऋ० १.६१.१६; अ० २०.३५.१६।

एवा त्वं देव्यहन्ये अ० १२.५.६५।

एवा त्वामिन्द्र वज्रिन्नत्र ऋ० ४.१६.१; ऐ० ब्रा० ६.४२।

एवा देव देवताते ऋ० ६.६७.२७।

एवा देवां इन्द्रो विव्ये ऋ० १०.४६.११।

एवा न इन्दो अभि ऋ० ६.६७.२१।

एवा न इन्द्र वार्यस्य ऋ० ७.२४.६, २५.६; ऐ० ब्रा० ५.१.४।

एवा न इन्द्रोतिभिरव ऋ० ५.३३.७।

एवा न इन्द्रो मघवा ऋ० ४.१७.२०; ऐ० ब्रा० ३.३.४।

एवा न पातो मम तस्य ऋ० ६.५०.१५।

एवा नः सोम ऋ० ६.६७.३६, सा० ८६१।

एवा नः सोम परिषिच्यमानो ऋ० ६.६८.१०।

एवा नः स्पृधः सम ऋ० ६.२५.६।

एवा नूनमुप स्तुहि ऋ० ८.२४.२३, अ० २०.६६.२।

एवा नृभिरिन्द्रः सुश्रवस्या ऋ० १.१७८.४।

एवानेवाव सा गरत् अ० १६.७.४।

एवा नो अग्ने अमृतेषु ऋ० २.२.६।

एवा नो अग्ने विक्ष्वा ऋ० ७.४३.५।

एवा नो अग्ने समिधा ऋ० १.६५.११, ६६.६।

एवा पतिं द्रोणसाचं ऋ० १०.४४.४, अ० २०.६४.४।

एवा पवस्व मदिरो ऋ० ६.६७.१५, सा० ८०८।

एवा पाहि प्रत्नथा ऋ० ६.१७.३, अ० २०.८.१, तैं० सं० २.५.८.११; ऐ० ब्रा० ६.३.३; गो० ब्रा० उ० २.११।

एवा पित्रे विश्वदेवाय ऋ० ४.५०.६, अ० २०.८८.६, तैं० सं० १.८.२२.६; मैं० सं० ४.११.६४; १४.५१; ऐ० ब्रा० ३.३.६; ४.२.५।

एवा पुनान इन्द्रयुः ऋ० ६.६.६।

एवा पुनानो अपः स्वः ऋ० ६.६१.६।

एवा प्लते सुनुरवीवृधद्वः ऋ० १०.६३.१७, ६४.१७।

एवा बभ्रो वृषभ ऋ० २.३३.१५, तै० ब्रा० २.८.६.६।

एवा महस्तुविजातः ऋ० १.१६०.८।

एवा महान्बृहद्दिवो ऋ० १०.१२०.६, अ० ५.२.६, २०.१०७.१२।

एवा महो असुर ऋ० १०.६६.१२, नि० ५.३।

एवामृताय महे क्षयाय ऋ० ६.१०६.३, सा० १३६८।

एवा राजेव क्रतुमां ऋ० ६.६०.६।

एवा रातिस्तुवीमघ ऋ० ८.६२.२६, सा० ८२५, अ० २०.६०.२।

एवारे वृषभा सुते ऋ० ८.४५.३८।

एवा वन्दस्व वरुणं बृहन्तं ऋ० ८.४२.२, तै० ब्रा० २.५.८.४; ऐ० ब्रा० १.५.४।

एवा वसिष्ठ इन्द्रं ऋ० ७.२६.५।

एवा वस्वः इन्द्र सत्यः ऋ० ४.२१.१०।

एवा वामह्व ऊतये (०। इंद्राग्नी) ऋ० ८.३८.६।

एवा वामह्व ऊतये (०। नासत्या) ऋ० ८.४२.६।

एवा सत्यं मघवाना युवं ऋ० ४.२८.५।

एवा हि ते विभूतय ऋ० १.८.६, अ० २०.६०.५, ७१.५।

एवा हि ते शं सवना ऋ० १.१७३.८।

एवा हि त्वामृतुथा ऋ० ५.३२.१२।

एवा हि मां तवसं जज्ञुः ऋ० १०.२८.७।

एवा हि मां तवसं वर्धयन्ति ऋ० १०.२८.६।

एवा हि शक्रो सा० ६४३।

एवा ह्यसि वीरयुः ऋ० ८.६२.२८, सा० २३२,८२४, अ० २०.६०.१।

एवा ह्यस्य काम्या ऋ० १.८.१०, अ० २०.६०.६,७१.६।

एवा ह्यस्य सूनृता ऋ० १.८.८, अ० २०.६०.४,७१.४।

एवाह्यो ऽ३ ऽ३ ऽ३ व सा० ६५०।

एवां अग्निमजुर्यमुः ऋ० ५.६.१०।

एवां अग्नि वसूयवः ऋ० ५.२५.६।

एवेदिन्द्रं वृषणं ऋ० ७.२३.६, य० २०.५४, अ० २०.१२.६; ऐ० ब्रा० ६.४.७; का० सं० ८.४१; गो० ब्रा० उ० ४.२, ६.५।

एवेदिन्द्रः सुते अस्तावि ऋ० ६.२३.१०।

एवेदिन्द्रः सहव ऋ० ६.२६.६।

एवेदिन्द्राय वृषभाय ऋ० ४.१६.२०।

एवेदेते प्रति मा ऋ० १.१६५.१२; मै० सं० ४.१०.६०; काठ० सं० ६.६४।

एवेदेष तुविकूर्मिः ऋ० ८.२.३१।

एवेदेषा पुरुतमा दृशेक ऋ० १.१२४.६।

एवेद्यूने युवतयो नमन्त ऋ० १०.३०.६; काठ० सं० १३.७७।

एवेन सद्यः पर्येति ऋ० १.१२८.३; काठ० सं० ३६.११८।

एवेन्द्राग्निभ्यां पितृवन् ऋ० ८.४०.१२।

एवेन्द्राग्निभ्यामहावि ऋ० ५.८६.६।

एवेन्द्राग्नी पपिवांसा ऋ० १.१०८.१३।

एवेन्नु कं सिंधुमेभि ऋ० ७.३३.३।

एवैवापागमरे ऋ० १०.४४.७, अ० २०.६४.७।

एवो ष्वस्मिन्निर्ऋते अ० ६.८४.३; पै० सं० ५.३६.८।

एष इन्द्राय वायवे ऋ० ९.२७.२; सा० १२८७।

एष इषाय मामहे अ० २०.१२७.३।

एष उ स्य पुरुव्रतो ऋ० ९.३.१०; सा० १२६५।

एष उ स्य वृषा रथो ऋ० ९.३८.१; सा० १२७४; सं० ब्रा० ३.८।

एष एतानि चकोरेन्द्रो ऋ० ८.२.३४।

एष कविरभिष्टुतः ऋ० ९.२७.१; सा० १२८६।

एष क्षेति रथवीतिः ऋ० ५.६१.१९।

एष गव्युरचक्रदत् ऋ० ९.२७.४; सा० १२८९।

एष ग्रावेव जरिता ऋ० ५.३६.४।

एषच्छागः पुरो ऋ० १.१६२.३, य० २५.२६, तै० सं० ४.६.८.३; मै० सं० ३.१६.३; का० सं० २७.३०।

एष तुन्नो अभिष्टुतः ऋ० ९.६७.२०।

एष ते गायत्रो भागः य० ४.२४; श० ब्रा० ३.३.२.५—७; तै० सं० ३.१.२.१; कपि० १.१९।

एष ते देव नेता ऋ० ५.५०.५।

एष ते निर्ऋते भागः य० ९.३५; श० ब्रा० ५.२.४.५;६; तै० सं० १.८.१४।

एष यज्ञानां विततो अ० ४.३४.५।

एष ते यज्ञो यज्ञपते अ० ७.९७.६; पै० सं० २०.३४.६; तै० सं० १.४.४४.८; ६.६.२.५।

एष ते रुद्रभागः य० ३.५७; श० ब्रा० २.६.२.९;१०; तै० सं० १.८.६.६; कपि० ८.११।

एष दिवं वि धावति ऋ० ९.३.७; सा० १२६२।

एष दिवं व्यासरत् ऋ० ९.३.८; सा० १२६३।

एष देवः शुभायते ऋ० ९.२८.३; सा० १२८२; सं० ब्रा० ३.८।

एष देवो अमर्त्यः ऋ० ९.३.१, सा०१२५६।

एष देवो रथर्यति ऋ० ९.३.५, सा० १२५९, नि० ६.२८।

एष देवो विपन्युभिः ऋ० ९.३.३; सा० १२६०।

एष देवो विपाकृतो ऋ० ९.३.२; सा० १२६१।

एष द्रप्सो वृषभो ऋ० ६.४१.३।

एष धिया यात्यण्व्या ऋ० ९.१५.१; सा० १२६६; सं० ब्रा० ३.८।

एष नृभिर्विनीयते ऋ० ९.२७.३, सा० १२८८।

एष पवित्रे अक्षरत् ऋ० ९.२८.२; सा० १२८१।

एष पुनानो मधुमां ऋ० ९.११०.११।

एष पुरुधियायते ऋ० ९.१५.२;सा० १२६७।

एष प्रकोशे मधुमां ऋ० ९.७७.१, सा० ५५६।

एष प्रत्नेन जन्मना ऋ० ९.३.९; सा० ७५८, १२६४।

एष प्रत्नेन मन्मना ऋ० ९.४२.२, सा० ७५९।

एष प्रत्नेन वयसा ऋ० ९.९७.४७।

एष प्र पूर्वीरव ऋ० १.५६.१।

एष ब्रह्मा य ऋत्विय सा० ४३८,१७६८।

एष रुक्मिभिरीयते ऋ० ९.१५.५, सा० १२७०।

एष वसूनि पिब्दनः ऋ० ९.१५.६, सा० १२७२।

एष व स्तोमो मरुत इयं ऋ० १.१६५.१५, १६६.१५, १६७.११, १६८.१०; य० ३४.४८; मै० सं० ४.११.६३; काठ० सं० ६.६७; कां० सं० ३३.३६ ।

एष वः स्तोमो मरुतो नमस्वान् ऋ० १.१७१.२; मै० सं० ४.११.६३; काठ० सं० ६.६७ ।

एष वा अतिथिर्यच्छ्रोत्रियः अ० ६.६.७; पै० सं० १६.११३.१० ।

एष वाजी हितो नृभिः ऋ० ६.२८.१; सा० १२८० ।

एष वां देवावश्विना ऋ० ४.१५.६ ।

एष वां स्तोमो अश्विनावकारि ऋ० १.१८४.५ ।

एष विप्रैरभिष्टुतो ऋ० ६.३.६; सा० १२५७ ।

एष विश्ववित्पवते ऋ० ६.६७.५६ ।

एष विश्वानि वार्या ऋ० ६.३.४, सा० १२५८ ।

एष वृषा कनिक्रदत् ऋ० ६.२८.४; सा० १२८३ ।

एष वृषा वृषव्रतः ऋ० ६.६२.११ ।

एष शुष्म्यदाभ्यः ऋ० ६.२८.६, सा० १२६१ ।

एष शुष्म्यसिष्यदत् ऋ० ६.२७.६, सा० १२६० ।

एष शृङ्गाणि दोधुवत् ऋ० ६.१५.४, सा० १२७१ ।

एष सुवानः परि सोमः ऋ० ६.८७.७ ।

एष सूर्यमरोचयत् ऋ० ६.२८.५, सा० १२८४ ।

एष सूर्येण हासते ऋ० ६.२७.५, सा० १२८५ ।

एष सोमो अधि त्वचि ऋ० ६.६६.२६ ।

एष स्तोमो इन्द्र तुभ्य ऋ० १.१७३.१३ ।

एष स्तोमो अचिक्रदद् ऋ० ७.२०.६ ।

एष स्तोमो मह उग्राय ऋ० ७.२४.५, ऐ० आ० १.२१, ७.२, ऐ० ब्रा० ५.१.४ ।

एष स्तोमो मारुतं ऋ० ५.४२.१५ ।

एष स्तोमो वरुण मित्र ऋ० ७.६४.५, ६५.५ ।

एष स्य कारुर्जरते ऋ० ७.६८.६ ।

एष स्य ते तन्वो ऋ० २.३६.५, अ० २०.६७.६ ।

एष स्य ते पवत ऋ० ६.६७.४६ ।

एष स्य ते मधुमां ऋ० ६.८७.४, सा० ५३१ ।

एष स्य धारया सुतो ऋ० ६.१०८.५, सा० ५८४; ता० ब्रा० १४.५.२ ।

एष स्य परिषिच्यते ऋ० ६.६२.१३ ।

एष स्य पीतये सुतो ऋ० ६.३८.६, सा० १२७८ ।

एष स्य भानुरुदियर्ति ऋ० ४.४५.१ ।

एष स्य मद्यो रसो ऋ० ६.३८.५, सा० १२७७ ।

एष स्य मानुषीष्वा ऋ० ६.३८.४, सा० १२७६ ।

एष स्य मित्रावरुणा ऋ० ७.६०.२ ।

एष स्य वाजी क्षिपणिं य० ६.१४; काठ० सं० १३.५४; श० ब्रा० ५.१.५.१८; तै० सं० १.७.८.१४ ।

एष स्य वां पूर्वगत्वेव ऋ० ७.६७.७ ।

एष स्य सोमः पवते ऋ० ६.८४.४ ।

एष स्य सोमो मतिभिः ऋ० ६.६६.१५ ।

एष हितो विनीयते ऋ० ६.१५.३, सा० १२६६ ।

एषा गोभिररुणेभिः ऋ० ५.८०.३ ।
एषा जनं दर्शता ऋ० ५.८०.२ ।
एषा ते अग्ने समित्तया य० २.१४; श० ब्रा० १.६.२.४;६ ।
एषा ते कुलपा अ० १.१४.३ ।
एषा ते राजन् अ० १.१४.२ ।
एषा ते शुक्र तनूः य० ४.१७; श० ब्रा० ३.२.४.६—१२; कपि० १.१७; ३७.४ ।
एषा त्वचां पुरुषे अ० १२.३.५१ ।
एषा दिवो दुहिता ऋ० १.१२४.३ ।
एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि ऋ० १.११३.७ ।
एषा नेत्री राधसः ऋ० ७.७६.७ ।
एषा पशून्त्सं क्षिणाति अ० ३.२८.२ ।
एषा प्रतीची दुहिता ऋ० ५.८०.६ ।
एषा महमायुधा अ० ३.१६.५ ।
एषामहं समासीनानां अ० ७.१३.३; पै० सं० १.१६.५ ।
एषा ययौ परमादन्तः ऋ० ६.८७.८ ।
एषायुक्त परावतः ऋ० १.४८.७ ।
एषा वः सा सत्या य० ६.१२; काठ० सं० १४.३; श० ब्रा० ५.१.५.११—१२ ।
एषा व्येनी भवति ऋ० ५.८०.४ ।
एषा शुभ्रा न तन्वो ऋ० ५.८०.५ ।
एषा सनत्नी सनमेव अ० १०.८.३० ।
एषा स्या नव्यमायुर्दधाना ऋ० ७.८०.२ ।
एषा स्या नो दुहिता ऋ० ६.६५.१ ।
एषा स्या युजाना ऋ० ७.७५.४ ।
एषा स्या वो मरुतो ऋ० १.८८.६ ।
एषो उषा अपूर्व्या ऋ० १.४६.१, सा० १७८, १७२८; सा० ब्रा० ३.१.४.२; ३.२.४.८ ।
एषो ह देवः प्रदिशो य० ३२.४; का० सं० ३५.२६ ।
एह गमन्नृषय सोम ऋ० १०.१०८.८ ।
एह देवा मयोभुव ऋ० १.६२.१८; सा० १७३५ ।
एह यन्तु पशवो अ० २.२६.१; पै० सं० २.१२.१ ।
एह यातु वरुणः अ० ६.७३.१; पै० सं० १६.१०.६ ।
एह वां प्रुषितप्सवो ऋ० ८.५.३३ ।
एह हरी ब्रह्मयुजा ऋ० ८.२.२७; सा० १६५८ ।
एहि जीवं त्रायमाणं अ० ४.६.१ ।
एहि प्रेहि क्षयो ऋ० ८.६४.४ ।
एहि मनुर्देवयुः ऋ० १०.५१.५ ।
एहि वां विमुचो ऋ० ६.५५.१; नि० ५.६ ।
एहि स्तोमां अभि स्वराभिः ऋ० १.१०.४ ।
एह्यग्न इह होता नि ऋ० १.७६.२ ।
एह्यश्मानमा तिष्ठाश्मा अ० २.१३.४ ।
एह्यू षु ब्रवाणि ऋ० ६.१६.१६; य० २६.१३, सा० ७;७०५; काठ० सं० २.८४; २०.२८; श० ब्रा० २.३.३.२३; मै० सं० ४.१२.३; गो० ब्रा० उ० ४.१२.५२६; १५.५३३; सा० ब्रा० ३.२.४.१४; ऐ० ब्रा० ३.५.५ ।
ऐच्छाम त्वा बहुधा ऋ० १०.५१.३ ।
ऐतान्रथेषु तस्थुषः ऋ० ५.५३.२ ।
ऐतु देवस्त्रायमाणः अ० १६.३६.१; पै० सं० ७.१०.१ ।
ऐतु पूषा रयिर्भगः ऋ० ८.३१.११ ।
ऐतु प्राण एतु मनः अ० ५.३०.१३; पै० सं० ६.१४.३ ।

ऐनमापो गच्छति अ० १५.७.३ ।
ऐनमिन्द्रियं गच्छति अ० १५.१०.१० ।
ऐनं कीर्तिर्गच्छत्या अ० १५.२.८, ३.२८ ।
ऐनं निकामो गच्छति अ० १५.११.११ ।
ऐनं प्रियं गच्छति अ० १५.११.७ ।
ऐनं ब्रह्म गच्छति अ० १५.१०.८ ।
ऐनं यशो गच्छति अ० १५.११.६ ।
ऐनं श्रद्धा गच्छति अ० १५.७.५ ।
ऐनान् द्यतामिन्द्राग्नी अ० ६.१०४.३ ।
ऐन्द्रः प्राणो अङ्गे अङ्गे य० ६.२०; श० ब्रा० ३.८.३.३७; कपि० २.१४ ।
ऐन्द्राग्नं पावमानं अ० ११.७.६ ।
ऐन्द्राग्नं वर्म बहुलं अ० ८.५.१६; काठ० सं० ३८.१६३ ।
ऐभिरग्ने दुवो गिरो ऋ० १.१४.१; ऐ० ब्रा० ५.३.२ ।
ऐभिरग्ने रथं ऋ० ३.६.६, अ० २०.१३.४ ।
ऐभिरग्ने सरथं अ० २०.१३.४ ।
ऐभिर्ददे वृष्ण्या पौंस्यानि ऋ० १०.५५.७, सा० १७८४ ।
ऐषां यज्ञमुत वर्चो अ० १.९.४ ।
ऐषु चाकन्धि पुरुहूत ऋ० १०.१४७.३ ।
ऐषु चेतद् वृषण्वती ऋ० ८.६८.१८ ।
ऐषु द्यावापृथिवी ऋ० १०.९३.१० ।
ऐषु धा वीरवद्यशः ऋ० ५.७९.६ ।
ऐषु नह्य वृषाजिनं अ० ६.६७.३ ।
ओकिवांसा सुते सचा ऋ० ६.५९.३ ।
ओको अस्य मूज अ० ५.२२.५; पैं० सं० १३.१.७ ।
ओ चित्सखायं सख्या अ० १८.१.१ ।
ओजश्च तेजश्च अ० १२.५.७; कपि० २८.७; पैं० सं० ९.२०.८; सं० वि० गृहाश्रम-संस्कार ।
ओजश्च मे सहश्च य० १८.३ ।
ओजस्तदस्य तित्विष ऋ० ८.६.५; सा० १८२, १६५३; अ० २०.१०७.२; मै० सं० १.३.८८; काठ० सं० ४.६४; सा० ब्रा० ३.२.४.२ ।
ओजिष्ठं ते मध्यतो ऋ० ३.२१.५; तै० ब्रा० ३.६.७.२; ऐ० ब्रा० २.२.२; मै० सं० ४.१३.३२; काठ० सं० १६.२५० ।
ओजोऽस्योजो मे अ० २.१७.१; मै० सं० २.१.२० ।
ओतो आपः कर्मण्याः अ० ६.२३.२; पैं० सं० ११.४.११ ।
ओतो मे द्यावापृथिवी अ० ५.२३.१, ६.९४.३; पैं० सं० ७.२.१ ।
ओत्यमह्व आ रथं ऋ० ८.२२.१ ।
ओत्ये नर इन्द्रमूतये ऋ० १.१०४.२ ।
ओदन एवौदनं अ० ११.३.३१ ।
ओदनेन यज्ञवचः अ० ११.३.१६; पैं० सं० १६.५४.१२ ।
ओमानमापो मानुषी ऋ० ६.५०.७; ऐ० ब्रा० १.१.४ ।
ओमासश्चर्षणीधृतो ऋ० १.३.७, य० ७.३३; तै० सं० १४.१६.१; ऐ० आ० १.४, नि० १२.३८.४०; का० सं० ७.३३; ऐ० ब्रा० ३.१.१; मै० सं० १.३.५३; काठ० सं० ४.३२; कपि० ३.१,५, ४१.८; श० ब्रा० ४.३.१.२७ ।
ओर्वप्रा अमर्त्या ऋ० १०.१२७.२ ।
ओर्व भृगुवच्छुचि ऋ० ८.१०२.४; सा० १८; तै० सं० २.२.१२.७; ४.४.४.६; मै० सं० २.१३.२०; ४.१२.११२ ।
ओ श्रुष्टिर्विदथ्या ऋ० ७.४०.१ ।

ओष दर्भ सपत्नान् अ० १९.२९.७; पै० सं० १३.११.१६ ।

ओषधयः प्रति गृभ्णीत य० ११.४८; काठ० सं० १६.४६; श० ब्रा० ६.४.४.१०; मै० सं० २.७.५६; तै० सं० ४.१.४.११; कपि० ३०.३ ।

ओषधयः सं वदन्ते ऋ० १०.९७.२२; य० १२.९६; तै० सं० ४.२.६.२० ।

ओषधयो भूतभव्यम् अ० ११.५.२०; पै० सं० १६.१५४.१० ।

ओषधीनामहं वृण अ० १०.४.२१; पै० सं० १६.१७.१ ।

ओषधीः प्रति मोदध्वं ऋ० १०.९७.३; य० १२.७७; काठ० सं० १६.४७; नि० ६.३; मै० सं० २.७.५७; तै० सं० ४.१.४.१२; ५.१.५.३१ ।

ओषधीमिरन्नादीभिः अ० १५.१४.१२ ।

ओषधीरिति मातरः ऋ० १०.९७.४; य० १२.७८; तै० सं० ४.२.६.४; नि० ६.३; मै० सं० २.७.१९९; का० सं० १३.७८; १६.१५५; कपि० २५.४ ।

ओषधीरेव रथन्तरेण अ० ८.१०.७ ।

ओषधीरेवास्मै रथन्तरं अ० ८.१०.९; पै० सं० १६.११; १३३ ।

ओषन्ती समोषन्ती अ० १२.५.५४ ।

ओषमित्पृथिवीमहं ऋ० १०.११९.१० ।

ओ षु घृष्विराधसो ऋ० ७.५९.७ ।

ओ षु प्र याहि वाजेभिः ऋ० ८.२.१९ ।

ओ षु वृष्णः प्रयज्यून् ऋ० ८.७.३३ ।

ओ षु स्वसारः कारवे ऋ० ३.३३.९ ।

ओ षू णो अग्ने शृणुहि त्वं ऋ० १.१३९.७; ऐ० ब्रा० ५.२.७ ।

ओष्ठाविव मध्वास्ने वदन्ता ऋ० २.३९.६; ऐ० ब्रा० १.४.४ ।

ओ सुष्टुत इन्द्र याहि ऋ० १.१७७.५ ।

ओछत्सा रात्री परितक्म्या ऋ० ५.३०.१४ ।

औदुम्बरेण मणिना अ० १९.३१.१; पै० सं० १०.५.१ ।

और्वभृगुवच्छुचि ऋ० ८.१०२.४; सा० १८; तै० सं० ३.१.११.३३; मै० सं० ४.११.६७; काठ० सं० ४०.१२५ ।

क इदं कस्मा अ० ३.२९.७; पै० सं० १६.८५.१; काठ० सं० ९.४२; मै० सं० १.९.१५; पै० सं० १६.८५.१ ।

क इमं दशभिर्मम ऋ० ४.२४.१० ।

क इमं नाहुषीष्वा सा० १९०; सा० ब्रा० ३.३.४.२ ।

क इमं वो निण्यमा चिकेत ऋ० १.९५.४ ।

क ईषते तुज्यते ऋ० १.८४.१७; नि० १४.२६ ।

क ईं वेद सुते सचा ऋ० ८.३३.७; सा० २९७, १६९९; अ० २०.५३.१, ५७.११; तां० ब्रा० १४.१९.१ ।

क ईं व्यक्ता नरः सनीळाः ऋ० ७.५६.१; सा० ४३३; ऐ० ब्रा० ५.१.५ ।

क ईं स्तवत्कः पृणात्को ऋ० ६.४७.१५ ।

क उ श्रवत्कतमो ऋ० ४.४३.१ ।

क उ नु ते महिमनः ऋ० १०.५४.३ ।

क एषां कर्करी अ० २०.१३२.८ ।

क एषां दुन्दुभि अ० २०.१३२.९ ।

ककर्दवे वृषभो युक्त ऋ० १०.१०२.६ ।

ककुभं रूपं वृषभस्य य० ८.४९; तै० सं० ३.३.३.१८; ४.४; कपि० ४२.१ ।

ककुहं चित्त्वा कवे ऋ० ८.४५.१४ ।

कया नो अग्न ऋतयन्नृतेन ऋ० ५.१२.३ ।
कया नो अग्ने वि वसः ऋ० ७.८.३ ।
कया शुभा सवयसः ऋ० १.१६५.१; मै० सं० ४.११.७६; ऐ० ब्रा० ५.३.१; ऐ० आ० १.२.२; ५.१.१; काठ० सं० ६.५३ ।
करम्भ ओषधे भव ऋ० १.१८७.१०; काठ० सं० ४०.६२ ।
करम्भं कृत्वा अ० ४.७.३ ।
करीषिणीं फलवतीं अ० १६.३१.३ ।
कर्करिको निखातकः अ० २०.१३२.३ ।
कर्णगृह्या मघवा शौरदेव्यः ऋ० ८.७०.१५ ।
कर्णाभ्यां ते कङ्कूषेभ्यः अ० ६.८.२; पैं०सं० १६.७४.२ ।
कर्णाश्वावित् अ० ५.१३.६ ।
कर्शफस्य विशफस्य अ० ३.६.१ ।
कर्षेदेनं न चैनं अ० १५.१३.१२ ।
कर्हिस्वित्तदिन्द्र यज्जरित्रे ऋ० ६.३.५३ ।
कर्हिस्वित्तदिन्द्र यन्नृभिर्नॄन् ऋ० ६.३५.२ ।
कर्हिस्वित्सा त इन्द्र ऋ० १०.८९.१४ ।
कल्पन्तां ते दिशः य० ३५.६; श० ब्रा० १३.८.३.५; का० सं० ३५.४२ ।
कल्याणि सर्वविदे अ० ६.१०७.४ ।
कवष्यो न व्यचस्वतीः य० २०.६०; काठ० सं० ३८.९३; मै० सं० ३.११.१७; का० सं० २२.४८ ।
कविमग्निमुपस्तुहि ऋ० १.१२.७; सा० ३२, दे० ब्रा० ५.१.६; २० ।
कविमिव प्रचेतसं ऋ० ८.८४.२ ।
कविमिव प्रशंस्यं सा० १२४५ ।
कविर्न निण्यम् ऋ० ४.१६.३; अ० २०.७७.३ ।
कविर्नृचक्षा अभिषीमचष्ट ऋ० ३.५४.६ ।
कविर्वेधस्या पर्येषि ऋ० ६.८२.२; सा० १३१८ ।
कविं केतुं धासिं भानुः ऋ० ७.६.२ ।
कविं मृजन्ति मर्ज्यं ऋ० ९.६३.२० ।
कविं शशासुः कवयो ऋ० ४.२.१२ ।
कविः कवित्वा दिवि ऋ० १०.१२४.७ ।
कवी नो मित्रा वरुणा ऋ० १ २.९; सा० ८४९; ऐ० ब्रा० ३.१२ ।
कश्छन्दसां योगं ऋ० १०.११४.९ ।
कश्यपस्य चक्षुरसि अ० ४.२०.७; पैं० सं० ८.६.६ ।
कश्यपस्त्वामसृजत अ० ८.५.१४; पैं० सं० १६.२८.४ ।
कश्यपस्य स्वर्विदो सा० ३६१ ।
कस्त उषः कधप्रिये ऋ० १.३०.२०; ऐ० ब्रा० २.१.१ ।
कस्तमिन्द्र त्वा वसवा ऋ० ७.३२.१४; सा० २८०, १६८२; ऐ० ब्रा० ६.४.५; तां०ब्रा० २१.९.२६; सा० ब्रा० ३.२.७.२ ।
कस्तं प्र वेद अ० ९.१.६; पैं० सं० १६.३२.७ ।
कस्ते जामिर्जनानां ऋ० १.७५.३; सा० १५३५ ।
कस्ते मद इन्द्र रन्त्यो ऋ० १०.२९.३; अ० २०.७६.३ ।
कस्ते मातरं विधवामचिक्रत् ऋ० ४.१८.१२ ।
कस्त्वा छ्यति कस्त्वा य० २३.३९; का० सं० २५.४४ ।
कस्त्वा युनक्ति स त्वा य० १.६; श० ब्रा० १.१.२.१; का० सं० १.९ ।
कस्त्वा विमुञ्चति य० २.२३; श० ब्रा० १.९.२.२३ ।

कस्त्वा सत्यो मदानां ऋ० ४.३१.२; य० २७.४०; ३६.५; सा० ६८३; अ० २०.१२४.२; तै० आ० ४.४.२.३; मै० सं० २.१३.६७, ४.९.२५१; काठ० सं० ३९.६८; तै० सं० ७.५.१०.१०, १.६.६.१२; ८.१८; ७.५.१३.१; का० सं० २९.४६; ३.५; सं० वि० सामान्य प्रकरण; कपि० १-४, ४७.३।

कस्मा अद्य सुजाताय ऋ० ५.५३.१२।

कस्मादङ्गाद् दीप्यते अ० १०.७.२; पै० सं० १७.७.४।

कस्मान्नु गुल्फावधरौ अ० १०.२.२।

कस्मिन्नङ्गे तपो अ० १०.७.१; पै० सं० १६.७.१।

कस्मिन्नङ्गे तिष्ठति अ० १०.७.३; पै० सं० १७.७.३।

कस्मै मृजाना अति अ० १८.३.१७; पै० सं० १.३०.१।

कस्य नूनं कतमस्यामृतानां ऋ० १.२४.१।

कस्य नूनं परीणसो ऋ० ८.८४.७; सा० ३४; काठ० सं० ७.१११।

कस्य ब्रह्माणि जुजुषुर्युवा ऋ० १.१६५.२, ४.११.८०; काठ० सं० ९.५४।

कस्य वृषा सुते सचा ऋ० ८.९३.२०; तै० ब्रा० २.४.५.१, ७.१३.१।

कस्य स्वित्सवनं वृषा ऋ० ८.६४.८।

कस्यै सृजाना अ० १८.३.१७।

कं ते दाना असक्षत ऋ० ८.६४.९।

कं नश्चित्रमिषण्यसि ऋ० १०.९९.१।

कं याथः कं ह गच्छथ ऋ० ५.७४.३।

कः काष्ण्याः पयः अ० २०.१३०.४।

कः कुमारमजनयत् ऋ० १०.१३५.५।

कः पृश्निं धेनुं अ० ७.१०४.१।

कः सप्त खानि अ० १०.२.६; गो० ब्रा० पू० १.८।

कः स्विदेकाकी चरति य० २३.९, ४५; श० ब्रा० १३.२.६.१०—१३; ५.२.१२; मै० सं० २.१२.२५; ऋ० भू० प्रकाश्यप्रकाशक विषय; कां० सं० २५.१०,५०।

कः स्विद् वृक्षो ऋ० १.१८२.७।

का ईमरेपिशंगिला य० २३.५५; श० ब्रा० १३.५.२.१८; कां० सं० २५.६०।

काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती य० १३.२०; काठ० सं० १६.१९८; श० ब्रा० ७.४.२.१४; मै० सं० २७.२१४; तै० सं० ४.२.९.३; ५.२.८.८; कपि० ३२.८।

का त उपेतिर्मनसो ऋ० १.७६.१।

का ते अस्त्यरंकृतिः ऋ० ७.२९.३; ऐ० ब्रा० ५.४.१।

का मर्यादा वयुना ऋ० ४.५.१३।

काम स्तदग्रे समवर्त्तत अ० १९.५२.१; तै० ब्रा० २.४.१.१०; ८.९.४; तै० आ० १.२३.१; ऋ० भू० सृष्टिविद्याविषय।

कामस्तदग्रे समवर्तताधि ऋ० १०.१२९.४; तै० ब्रा० २.४.१.१०, ८.९.४; तै० आ० १.२३.१।

कामस्येन्द्रस्य वरुणस्य अ० ९.२.६; पै० सं० १.३०.१।

कामं कामदुघे धुक्ष्व य० १२.७२; काठ० सं० १६.१५१; श० ब्रा० ७.२.२.११; मै० सं० २.७.१८८; तै० सं० ४.२.५.१९; कपि० २५.३।

कामेन मा काम अ० १९.५२.४; पै० सं० १.३०.४।

कामो जज्ञे प्रथमो अ० ९.२.१९; पै० सं० १६.७७.८।

कायमानो वना त्वं ऋ० ३.९.२; सा० ५३; नि० ४.१४; सं० वि० सामान्यप्रकरण; श्रा० ब्रा० ६.३.२.२; ४.१.३ ।

काय स्वाहा कस्मै य० २२.२०; श० ब्रा० १३.१.८.२—८; मै० सं० ३.१२.७; सं० वि० वानप्रस्थ संस्कार; तै० सं० ७.३.१५.४; कां० सं० २४.२२ ।

का राधद्धोत्राश्विना ऋ० १.१२०.१; ऐ० ब्रा० १.४.४।

कारुरहं ततोऽभिषक् ऋ० ९.११२.३; नि० ६.५ ।

कार्षिरसि समुद्रस्य य० ६.२८; श० ब्रा० ३.९.३.२६—२७; २९; कपि० २.१६ ।

कालः प्रजा अ० १९.५३.१०; पै० सं० १२.२.११ ।

कालादापः समभवन् अ० १९.५४.१; पै० सं० १२.२.११ ।

काले तपः काले अ० १९.५३.८ ।

कालेन वातः अ० १९.५४.२; पै० सं० १२.२.१२ ।

काले मनः काले अ० १९.५३.७; पै० सं० १२.२.७।

कालेऽयमङ्गिरा देवी अ० १९.५४.५; पै० सं० १२.२.१५।

कालो अश्वो अ० १९.५३.१ ।

कालो भूतिमसृजत अ० १९.५३.६; पै० सं० १२.२.६।

कालोऽमूं दिवमजनयत अ० १९.५३.५; पै० सं० १२.२.५ ।

कालो यज्ञं समैरयद् अ० १९.५४.४; पै० सं० १२.२.१४।

कालो ह भूतं अ० १९.५४.३; पै० सं० १२.२.१३ ।

का वां भूदुपमातिः ऋ० ४.४३.४ ।

काव्ययोराजानेषु य० ३३.७२; का० सं० ३२.७२ ।

काव्येऽभिरदाभ्या ऋ० ७.६६.१७ ।

कासीत्प्रमा प्रतिमा ऋ० १०.१३०.३; ऋ० भू० गणितविद्याविषय ।

का सुष्टुतिः शवसः ऋ० ४.२४.१ ।

का स्विदासीत् पूर्वचित्तिः य० २३.११,५३; श० ब्रा० १३.२.६.१४—१७; ५.२.१७; मै० सं० ३.१२.२७; का० सं० २५.१२; ५८।

कितवासो यद्रिरिपुर्न ऋ० ५.८५.८; तै० सं० ३.४.११.२०; मै० सं० ४.१४.४०; काठ० सं० २३.४६ ।

किमङ्ग त्वा ब्राह्मणः सोम ऋ० ६.५२.३ ।

किमङ्ग त्वामघवन्भोजमाहुः ऋ० १०.४२.३; अ० २०.८९.३ ।

किमङ्ग रध्रचोदनः ऋ० ८.८०.३ ।

किमत्र दस्रा कृणुथः ऋ० १.१८२.३ ।

किमन्ये पर्यासते ऋ० ८.८.८ ।

किमयं त्वां वृषाकपि ऋ० १०.८६.३; अ० २०.१२६.३ ।

किमस्य मदे किम्वस्य ऋ० ६.२७.१ ।

किमागं आस वरुण ज्येष्ठं ऋ० ७.८६.४ ।

किमादमत्रं सख्यं सखिभ्यः ऋ० ४.२३.६ ।

किमादुतासि वृत्रहन् ऋ० ४.३०.७ ।

किमिच्छन्ती सरमा प्रेदमान ऋ० १०.१०८.१; नि० ११.२२ ।

किमित्ते विष्णो परिचक्षि ऋ० ७.१००.६; सा० १६२५; तै० सं० २.२.१२.१९; नि० ५.८; मै० सं० ४.१०.३१; गो० ब्रा० उ० ५.८.५७४ ।

किमिदं वां पुराणवत् ऋ० ८.७३.११ ।

किमु श्रेष्ठः किं यविष्ठान ऋ० १.१६१.१; ऐ० ब्रा० ५.२.८।

किमु ष्विदस्मै निविदो ऋ० ४.१८.७।

किमू नु वः कृणवामा ऋ० २.२९.३।

किमेता वाचा कृणवा ऋ० १०-९५.२; श० ब्रा० ११.५.१.७।

कियता स्कम्भः अ० १०.७.९; पै० सं० १७.७.९,१०।

कियती योषा मर्यतो ऋ० १०.२७.१२।

कियत्स्विदिन्द्रो अध्येति ऋ० ४.१७.१२।

कियात्या यत्समया ऋ० १.११३.१०।

किलासं च पलितं अ० १.२३.२; पै० सं० १.१६.२।

किं ते कृण्वन्ति कीकटेषु ऋ० ३.५३.१४; नि० ६.३२।

किं देवेषु त्यज एनश्चकर्थ ऋ० १०.७९.६।

किं न इन्द्र जिघांससि ऋ० १.१७०.२।

किं नो अस्य द्रविणं कद्ध ऋ० ४.५.१२।

किं नो भ्रातरगस्त्य ऋ० १.१७०.३।

किं भ्रातासद्यदनाथं भवाति ऋ० १०.१०.११; अ० १८.१.१२।

किमयः श्विच्चमस एष आस ऋ० ४.३५.४।

किं स ऋधक् कृणवद्य ऋ० ४.१८.४।

किं सुबाहो स्वंगुरे ऋ० १०.८६.८; अ० २०.१२६.८।

किं स्वित्सूर्यसमं य० २३.४७; श० ब्रा० १३.५.२.१३; का० सं० २५.५२।

किं स्विदासीदधिष्ठानमारंभ ऋ० १०.८१.२; य० १७.१८; तै० सं० ४.६.२.४, ६.२.११; मै० सं० २.१०.७०; काठ० सं० १८.१२; कपि० २८.२; ऋ० भू० वेद-विषय; आर्याभि० २.३२।

किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस (०। मनीषिणो) ऋ० १०.८१.४; य० १७.२०; तै० सं० ४.६.२.१२; तै० ब्रा० २.८.९.६; कां० सं० १८.११; कपि० २८.२; मै० सं० २.१०.१६; आर्याभि० २.३६।

किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस (०। संतस्थाने) ऋ० १०.३१.७।

किं स्विन्नो राजा जगृहे ऋ० १०.१२.५; अ० १८.१.३३।

कीहङ्ङिन्दः सरमे ऋ० १०.१०८.३।

कीरिश्चिद्धि त्वामवसे ऋ० ७.२१.८।

कीर्तिश्च यशश्च अ० १५.२.८,२८।

कीर्तिश्च यशश्चाम्भश्च अ० १३.४.१४।

कीर्तिं च वा एष अ० ९.८.५।

कुक्कुटोऽसि मधुजिह्व य० १.१६; श० ब्रा० १.१४.१८—२३; कपि० १.५,६; ४७.४,५।

कुत इन्द्रः कुतः सोम अ० ११.८.८; पै० सं० १६.८५.७।

कुतस्तौ जातौ कतमः अ० ८.९.१; पै० सं० १६.१८.१।

कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः ऋ० १.१६५.३; य० ३३.२७; मै० सं० ४.११.८१; काठ० सं० ९.५५; का० सं० ३२.२७।

कुतः केशान कुतः अ० ११.८.१२; पै० सं० १६.८६.१।

कुत्राचिद्यस्य समृतौ ऋ० ५.७.२; तै० सं० २.१.११ १२; मै० सं० ४.११.८८।

कुत्सा एते हर्यश्वाय ऋ० ७.२५.५।

कुत्साय शुष्णमशुषं ऋ० ४.१६.१२।

कुमारश्चित्पितरं ऋ० २.३३.१२।

कुमारं माता युवति ऋ० ५.२.१।

कुम्भीका दूषीकाः अ० १६.६.८।

कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता य० १९.८७; काठ०

सं० ३८.३४; का० सं० २१.८७; मै० सं० ३.११.७६।

कुरुश्रवणमावृणि ऋ० १०.३३.४।

कुर्मस्त आयुरजरं ऋ० १०.५१.७; मै० सं० ४.१६.२२६।

कुर्वन्नेह कर्माणि य० ४०.२; का० सं० ४०.२; स० प्र० ७ समु०; पं० वि० ६६; सं० वि० गृहाश्रम संस्कार।

कुलायं कृणवादिति अ० २०.१३२.५।

कुलायिनी घृतवती य० १४.२; का० सं० १७.२; श० ब्रा० ८ २.१.५; मै० सं० २.८.४; कपि० २५.१०।

कुलायेऽधि कुलायं अ० ९.३.२०; पै० सं० १६.४०.१०।

कुविच्छकत्कुवित्करत् ऋ० ८.९१.४।

कुवित्स देवीः सनयो ऋ० ४.५१.४।

कुवित्सस्य प्र हि ऋ० ६.४५.२४; सा० १६६८; अ० २०.७८.३।

कुवित्सु नो गविष्टये ऋ० ८.७५.११; सा० १६४९; तै० स० २.६.११.११; मै० सं० ४.११.१३८; ऐ० ब्रा० ७.२.६; काठ० सं० ७.११६।

कुविदङ्ग नमसा ये वृधासः ऋ० ७.९१.१; ऐ० ब्रा० ५.३.३।

कुविदङ्ग प्रति यथा चिदस्य ऋ० १०.६४.१३।

कुविदङ्ग यवमन्तो यव ऋ० १०.१३१.२; य० १०.३२, १९.६, २३.३८; अ० २०.१२५.२; तै० सं० १.८.२१.४, ५.२.११.६; तै० ब्रा० २.६.१.३; काठ० सं० १२.२५; १४.२२; ३७.५५; कपि० ३.१; श० ब्रा० ५.३.३.२४; १२.७.३.१३; कां० सं० २१.७, २५.४३; मै० सं० २.११.३१; ३.४०; ३.१२.३८।

कुविद् वृषण्यन्तीभ्यः ऋ० ९.१९.५।

कुविन्नो अग्निरुचथस्य ऋ० १.१४३.६।

कुविन्मा गोपां करसे ऋ० ३.४३.५।

कुषुंभकस्तदब्रवीत् ऋ० १.१९१.१६।

कुष्ठः को वामश्विना सा० ३०५।

कुहश्रुत इन्द्रः ऋ० १०.२२.१; ऐ० ब्रा० ५.१.५।

कुह त्या कुह नु श्रुता ऋ० ५.७४.२।

कुह यान्ता सुष्टुतिं ऋ० १.११७.१२।

कुह स्थः कुह जग्मथुः ऋ० ८.७३.४।

कुह स्विद्दोषा कुह वस्तो ऋ० १०.४०.२; नि० ३.१५; स० प्र० ४ समु०; सं० वि० विवाह संस्कार।

कुहाकं पक्वकं अ० २०.१३०.६।

कुहूँ देवीं सुकृतं अ० ७.४७.१; नि० ११.३०

कुहूर्देवानाममृत अ० ७.४७.२; पै० सं० २०.५.७; काठ० सं० १३.९२।

कूचिज्जायते सनयासु ऋ० १०.४.५।

कूटस्यास्य सं शीर्यन्ते अ० १२.४.३; पै० सं० १७.१६.३।

कूष्ठो देवावश्विना ऋ० ५.७४.१।

कृणुत धूमं अ० ११.१.२; पै० सं० १६.८९.२।

कृणुष्व पाजः प्रसितिं ऋ० ४.४.१; य० १३.९; तै० सं० १.२.१४.१; नि० ६.१२; ऐ० ब्रा० १.४.२; श० ब्रा० ७.४.१.३३; मै० सं० २.७.२०४; ४.११.१४; काठ० सं० ६.४५; १६.१९.९।

कृणोत धूमं वृषणं ऋ० ३.२९.९।

कृणोत्यस्मै वरिवो ऋ० ४.२४.८।

कृणोमि ते प्राजापत्यम् अ० ३.२३.५; पै० सं० ३.१४.१।

कृणोमि ते प्राणापानौ अ० ८.२.११; पै० सं० १६.४.१।

कृण्वन्तो वरिवो गवे ऋ० ९.६२.३; सा० ८३२।

कृत व्यधनि विध्य अ० ५.१४.९; पै० सं० २.७१.१।

कृतं चिद्धि ष्मा सनेमि ऋ० ४.१०.७।

कृतं न श्वघ्नी वि चिनोति ऋ० १०.४३.५; अ० २०.१७.५; नि० ५.२२।

कृतं नो यज्ञं विदथेषु ऋ० ७.८४.३।

कृतं मे दक्षिणे अ० ७.५०.८; पै० सं० १.४९.१।

कृतानीदस्य कर्त्वा ऋ० ९.४७.२।

कृते चिदत्र मरुतो रण ऋ० ७.५७.५।

कृत्याकृतं वलगिनं अ० ५.३१.२२; पै० सं० १.४७.४।

कृत्याकृतो वलगिनो अ० १०.१.३१।

कृत्यादूषण एवायं अ० १९.३४.४; पै० सं० ११.३४।

कृत्यादूषिरयं मणिः अ० २.४.६।

कृत्याः सन्तु अ० ५.१४.५; पै० सं० १६.३५.५।

कृत्रिमः कण्टकः अ० १४.२.६८।

कृधि रत्नं यजमानाय ऋ० ७.१६.६।

कृधि रत्नं सुसनितः ऋ० ३.१८.५।

कृधी नो अह्रयो देव ऋ० १०.९३.९।

कृन्त दर्भ अ० १९.२८.८।

कृषन्नित्फाल आशितं ऋ० १०.११७.७।

कृष्णग्रीवा आग्नेयः य० २४.६; मै० सं० ३.१३.११,१४,१६,१७,१९,२०; कां० सं० २६.२; ७.१०।

कृष्णप्रुतौ वेविजे अस्य ऋ० १.१४०.३।

कृष्णं त एम रुशतः ऋ० ४.७.९।

कृष्णं नियानं हरयः ऋ० १.१६४.४७; अ० ६.२२.१, ९.१०.२२, १३.३.९; तै० सं० ३.१.११.४; नि० ७.२४; मै० सं० ४.१२.१४०; काठ० सं० ११.२८,६०; ऋ० भू० नौविमानादिविद्याविषय; पै० सं० १६.६६.१३; १९.२२.१०।

कृष्णः श्वेतोऽरुषो ऋ० १०.२०.९; सं० वि० अन्त्येष्टिसंस्कार।

कृष्णा भौमा धूम्रा य० २४.१०; मै० सं० ३.१२.१५; का० सं० २६.११।

कृष्णा यद्गोष्वरुणीषु ऋ० १०.६१.४।

कृष्णायाः पुत्रो अ० १३.३.२६।

कृष्णां यदेनीमभि ऋ० १०.३.२; सा० १५४७।

कृष्णा रजांसि पत्सुतः ऋ० ८.४३.६; काठ० सं० ७.९९।

कृष्णोऽस्याखरेष्ठो य० २.१; तै० सं० १.१.११.१; कपि० १.११।

केष्वन्तः पुरुष आ य० २३.५१।

केतुं कृण्वन्दिवस्परि ऋ० ९.६४.८; सा० ९५९।

केतुं कृण्वन्नकेतवे ऋ० १.६.३; य० २९.३७; सा० १४७०; अ० २०.२६.६; ४७.१२; ६९.११; तै० सं० ७.४.२०.११; तै० ब्रा० ३.९.४.३; मै० सं० ३.१६.३०; का० सं० ३१.१२; स० प्र० ११ समु०; ऋ० भू० ग्रन्थप्रामाण्याप्रामाण्यविषय।

केतुं यज्ञानां विदथस्य ऋ० ३.३.३।

के ते अग्ने रिपवे ऋ० ५.१२.४।

के ते नर इन्द्र ऋ० १०.५०.३।

केतेन शर्मन्त्सचते ऋ० ८.६०.१८।

केन देवाँ अनु अ० १०.२.२२; पै० सं० १६. ६१.१ ।

केन पर्जन्यमन्वेति अ० १०.२.१६; पै० सं० १६.६१.२ ।

केन पार्ष्णी आभृते अ० १०.२.१; पै० सं० १६.५६.१ ।

केन श्रोत्रियमाप्नोति अ० १०.२.२०, पै० सं० १६.६१.५ ।

केनापो अन्वतनुत अ० १०.२.१६; पै० सं० १६.६०.६ ।

केनेमां भूमिमौर्णोत् अ० १०.२.१८; पै० सं० १६.६०.१० ।

केनेयं भूमिर्विहिता अ० १०.२.२४; पै० सं० १६.६१.३ ।

के मे मर्यकं वि यवन्त ऋ० ५.२.५ ।

केवलीन्द्राय दुदुहे अ० ८.६.२४; पै० सं० १६.२०.१ ।

केश्य१ग्नि केशी ऋ० १०.१३६.१; नि० १२.२६ ।

केष्ठा नरः श्रेष्ठतमा ऋ० ५.६१.१ ।

केष्वन्तः पुरुषः य० २३.५१; श० ब्रा० १३. ५.२.१५; का० सं० २५.२६ ।

कैरात पृश्न अ० ५.१३.५; पै० सं० ८.२.५ ।

कैरातिका कुमारिका अ० १०.४.१४; पै० सं० १६.१६.४ ।

को अग्निमीट्टे हविषा ऋ० १.८४.१८; नि० १४.२७ ।

कोऽदात्कस्मा अदात् य० ७.४८ ।

को अद्धा वेद क इह प्रवोचत् ऋ० १०.१२६. ६; तै० ब्रा० २.८.६.५; ऋ० भू० सृष्टि-विद्याविषय ।

को अद्धा वेद ऋ० ३.५४.५; मै० सं० ४. १२.१६ ।

को अद्य नर्यो देवकामः ऋ० ४.२५.१; ऐ० ब्रा० ६.४.३ ।

को अद्य युङ्क्ते ऋ० १.८४.१६; सा० ३४१; अ० १८.१.६; तै० सं० ४.२.११.३; ४, १२.१०; नि० १४.२५; मै० सं० ३.१६. ३६, ६६; सा० ब्रा० ३.१.८.२ ।

को अर्जुन्याः पयः अ० २०.१३०.३ ।

को अर्य बहुलिमा अ० २०.१३०.१ ।

कोऽसि कतमोऽसि य० ७.२६, २०.४; काठ० सं० ३७.३८; श० ब्रा० ४.५.६.४; सं० वि० नामकरणसंस्कार; ऋ० भू० राज-प्रजाधर्म विषय; का० सं० २१.१०० ।

को असिद्याः पयः अ० २०.१३०.२ ।

को अस्मिन्नापो अ० १०.२.११ ।

को अस्मिन् अ० १०.२.१३ ।

को अस्मिन् यज्ञम् अ० १०.२.१४ ।

को अस्मिन् रूपम् अ० १०.२.१२ ।

को अस्मिन् रेतो अ० १०.२.१७ ।

को अस्मै वासः अ० १०.२.१५ ।

को अस्य बाहू अ० १०.२.५ ।

को अस्य वीरः ऋ० ४.२३.२ ।

कोऽअस्य वेद य० २३.५६; श० ब्रा० १३. ५.२.२०; का० सं० २५.६४ ।

को अस्य वेद प्रथमस्याह्नः ऋ० १०.१०.६; अ० १८.१.७ ।

को अस्य शुष्मं ऋ० ५.३२.६ ।

को अस्या नो अ० ७.१०३.१ ।

को ददर्श प्रथमं ऋ० १.१६४.४; अ० ६.६. ४; पै० सं० १६.६६.४ ।

कोऽदात्कस्मा अदात् य० ७.४८; कपि० ८. १३; श० ब्रा० ४.३.४.३२ ।

क्रीडुर्मखो न मंहयुः सा० ६७४।

क्रीळन्नो रश्म ऋ० ५.१६.५।

क्रीळं त्यस्य सूनृता ऋ० ८.१३.८।

क्रीळं वः शर्धो ऋ० १.३७.१; तै० सं० ४.३.१३.२२; नि० ७.२; ऐ० ब्रा० ५.३.४; मै० सं० ४.१०.१२२; काठ सं० २१.५४।

क्रीळुर्मखो ऋ० ६.२०.७; सा० ६७४।

क्रूरमस्या अशसनं ऋ० ५.१६.५।

क्रोड आसीज्जामि अ० ६.४.१५; पै० सं० १६.२५.४।

क्रोडौ ते स्तां अ० १०.६.२५; पै० सं० १६.१३८.६।

क्रोधौ वृक्कौ अ० ६.७.१३; पै० सं० १६.१३६.१६।

क्लीब क्लीबं अ० ६.१३८.३; पै० सं० १.३८.४।

क्लीबं कृध्योपशिनम् अ० ६.१३८.२; पै०सं० १.६८.३।

क्व १ त्यानि नौ सख्या ऋ० ७.८८.५; मै० सं० ४.१४.१२५।

क्व १ त्या वल्गू पुरु ऋ० ६.६३.१।

क्व १ त्री चक्रात्रिवृतो ऋ० १.३४.६।

क्व नः सुम्ना नव्यांसि ऋ० १.३८.३।

क्व नूनं कद्वो अर्थं ऋ० १.३८.२।

क्व नूनं सुदानवो ऋ० ८.७.२०।

क्व प्रेप्सन्ती युवती अ० १०.७.६; पै० सं० १७.७.६।

क्व प्रेप्सन् दीप्यते अ० १०.७.४; पै० सं० १७.७.५।

क्व १ वोऽश्वाः क्वा ऋ० ५.६१.२।

क्वसिद्ध कतमास्वश्विना ऋ० १०.४०.१४।

क्वस्य १ ते रुद्रः ऋ० २.३३.७।

क्वस्य वीरः को अपश्यद् ऋ० ५.३०.१।

क्वस्य वृषभो युवा ऋ० ८.६४.७; सा० १४२; सं० ब्रा० ३.८।

क्वस्या वो मरुतः ऋ० १.१६५.६; तै० ब्रा० २.८.३.५; मै० सं० ४.११.८४।

क्वस्विदस्य रजसो ऋ० १.१६८.६।

क्वस्विदासां कतमा पुराणी ऋ० ४.५१.६।

क्वार्धमासाः क्वयन्ति अ० १०.७.५; पै० सं० १७.७.७।

क्वाहतं परास्य अ० १०.१२६.६।

क्वेयथ क्वेदसि ऋ० ८.१.७; सा० २७१।

क्षत्रस्य त्वा परस्पाय य० ३८.१६; श० ब्रा० १४.३.१.६; का० सं० ३८.१६।

क्षत्रस्य योनिरसि य० २०.१; काठ० सं० १५.१४; तै० सं० १.७.६.२; ८.१२.७; श० ब्रा० १२.८.३.८,६; मै० सं० २.६.२५; ४.४.३; ऋ० भू० राजप्रजाधर्मविषय; का० सं० २१.६.६; कपि० २.७।

क्षत्रस्योलबमसि य० १०.८; तै० सं० १.७.६.१; ८.१२.६; श० ब्रा० ५.३.५.२०—२३; २७—३०।

क्षत्रं जिन्वतमुत ऋ० ८.३५.१७।

क्षत्राय त्वं श्रवसे ऋ० १.११३.६।

क्षत्राय त्वमवसि ऋ० ८.३७.६।

क्षत्रेणाग्ने स्वायुः सं य० २७.५; काठ० सं० १८.८५; तै० सं० ४.१.७.५; मै० सं० २.१२.२६; कपि० २६.४; का० सं० २६.५।

क्षत्रेणाग्ने स्वेन अ० २.६.४; पै० सं० ३.३३.५; काठ० सं० १८.८५; मै० सं० १.१२.२६।

क्षप उरश्च दीदिहि ऋ० ७.१५.८।

क्षपो राजन्नुत ऋ० १.७६.६; य० १५.३७;

गंभीरेण न उरुणा ऋ० ६.२४.६।

गयस्फानो अमीवहा ऋ० १.६१.१२, तै० ४.३.१३.५; ऐ० ब्रा० १.४.८; श० ब्रा० ११.४.३.१६; मै० सं० ४.१०.६६; १२. ६८, काठ० सं० २.७३; ११.५४; आर्याभि० १.३८।

गर्भं ते मित्रावरुणौ अ० ५.२५.४।

गर्भं धेहि सिनीवालि ऋ० १०.१८४.२, अ० ५.२५.३, श० ब्रा० १४.६.४.२०; सं० वि० गर्भाधानसंस्कार; पै० सं० १३.२.४।

गर्भे नु सं नौ जनिता ऋ० १०.१०.५, अ० १८.१.५।

गर्भे नु नन्वेषामवेद ऋ० ४.२७.१, ऐ० ब्रा० २.२४।

गर्भे मातु पितुष्पिता ऋ० ६.१६.३५, सा० १३६७।

गर्भे योषामदधुर्व ऋ० १०.५३.११।

गर्भो अस्योषधीनां य० १२.३७; अ० ५.२५.७; ६.६५.३, काठ० सं० १६.११८; तै० सं० ४.२.३.८; श० ब्रा० ६.८.२.५; १२.४.४.४; मै० सं० २.७.१२५; कपि० २५.१; पै० सं० २.३२.३।

गर्भो देवानां पिता य० ३७.१४; का० सं० २७.१४; श० ब्रा० १४.१.४.३;४, मै० सं० ४.६.८६; कपि० ४८.४।

गर्भो यज्ञस्य देवयुः ऋ० ८.१२.११।

गर्भो यो अपां गर्भः ऋ० १.७०.३।

गवामिव क्षियसे शृंगमुत्तमं ऋ० ५.५६.३।

गवाशिरं मन्थिनमिन्द्र ऋ० ३.३२.२; ऐ० ब्रा० ४.५.३।

गव्यन्त इन्द्रं सख्याय विप्राः ऋ० ४.१७.१६।

गव्यो षु णो यथा पुरा ऋ० ८.४६.१०, सा० १८६; सा० ब्रा० ३.१.१.१३।

गाथपतिं मेधपतिं ऋ० १.४३.४।

गाथश्रवसं सत्पतिं ऋ० ८.२.३८।

गामङ्गैष आ ह्वयति ऋ० १०.१४६.४, तै० ब्रा० २.५.५.७।

गायत्रं छन्दोऽसि य० ३८.६; का० सं० ३८.६; श० ब्रा० १४.२.१.१६; १७; १६.२१, तै० स० १.३.७.१०; ६.३.५.८।

गायत्रं त्रैष्टुभं जगत् सा० १८३०; ष० ब्रा० १.४.१२।

गायत्री त्रिष्टुब्जगती य० २३.३३; का० सं० २५.३८; मै० सं० ३.१२.३३; तै० सं० ५.२.११.१; ७.३.१२.३।

गायत्रेण त्वा छन्दसा य० १.२७; तै० सं० १.३.२.३; श० ब्रा० १.२.५.६–१२; कपि० ३६.२।

गायत्रेण प्रति मिमीते ऋ० १.१६४.२४, अ० ६.१०.२; पै० सं० १६.६८.२।

गायत्र्युष्णिगनुष्टुब् अ० १६.२१.१।

गायत्साम नभन्यं ऋ० १.१७३.१; ऐ० ब्रा० ५.४.१।

गायन्ति त्वा गायत्रिणो ऋ० १.१०.१, सा० ३४२, १३४४; तै० सं० १.६.१२.८, नि० ५.५।

गार्हपत्येन संत्य ऋ० १.१५.१२।

गाव इव ग्रामं यूयुधिरिवाश्वा ऋ० १०.१४६.४।

गाव उप वदावटे सा० ११७, १६०२।

गाव उपावतावतं ऋ० ८.७२.१२, य० १३.१६, ७१, सा० ११७, १६०२; का० सं० ३२.१६; ७१।

गोजिन्नः सोमो रथजिद् ऋ० ९.७८.४।

गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं ऋ० १०.१०३.६, य० १७.३८, सा० १८५४, अ० ६.९७.३, १९.१३.६, तै० सं० ४.६.४.५; मै० सं० २.१०.४०; काठ० सं० १८.५०; कपि० २८.४।

गोभिर्न सोममश्विना य० २०.६६; का० सं० २२.५४; मै० सं० ३.११.२३।

गोभिर्मिमिक्षुं दधिरे ऋ० ३.५०.३।

गोभिर्यदीमन्ये अस्मत् ऋ० ८.२.६, नि० ५.३, ऐ० ब्रा० ४.५.३।

गोभिर्वाणो अज्यते सोभरी ऋ० ८.२०.८।

गोभिष्टरेमामति दुरेवां ऋ० १०.४२.१०, ४३.१०, ४४.१०; अ० ७.५०.७, २०.१७.१०, ८९.१०, ९४.१०; पै० सं० १७.३५.६।

गोभिष्ट्वा पात्वृषभो अ० १९.२७.१; पै० सं० १०.७.१।

गोभ्यो अश्वेभ्यो अ० ९.३.१३।

गोमदश्वावद्रथवत्सुवीरं ऋ० ५.५७.७।

गोमदू षु नासत्या ऋ० २.४१.७, य० २०.८१; का० सं० २२.६९।

गोमद्धिरण्यवद्वसु ऋ० ७.९४.९, काठ० सं० ४.१०६।

गोमन्न इन्दो अश्ववत् ऋ० ९.१०५.४, सा० ५७४, १६११।

गोमन्नः सोम वीरवद् ऋ० ९.४२.६।

गोमातरो यच्छुभयन्ते ऋ० १.८५.३।

गोमायुरदादजमायुरदाद् ऋ० ७.१०३.१०।

गोमायुरेको अजमायुरेकः ऋ० ७.१०३.६।

गोमां अग्नेऽविमां अश्वी ऋ० ४.२.५, तै० सं० १.६.६.१५; ३.१.११.२; काठ० सं० ५.३५; १०.२९; ३२.१५।

गोवित्पवस्व वसुविद्धिरण्य ऋ० ९.८६.३९, सा० ९५५; तां० ब्रा० १३.१.१।

गोषा इन्दो नृषा ऋ० ९.२.१०, सा० १०४५; काठ० सं० ३५.३७।

गोषु प्रशस्ति वनेषुधिषे ऋ० १.७०.९।

गोसनिं वाचमुदेयं अ० ३.२०.१०; पै० सं० ३.३४.१।

गौरमीमेदनु वत्सं मिषन्तं ऋ० १.१६४.२८, नि० ११.४२; ऐ० ब्रा० १.४.५।

गौरमीमेदभि वत्सं अ० ९.१०.६, १८; पै० सं० १६.६८.६; २०.११.३।

गौरिन्मिमाय अ० ९.१०.२१; पै० सं० १६.६९.११।

गौरीर्मिमाय सलिलानि ऋ० १.१६४.४१, अ० ९.१०.२१, १३.१.४२, तै० ब्रा० २.४.६.११, तै० आ० १.९.४, नि० ११.४०; ऐ० ब्रा० १.५.३।

गौरेव तान् हन्यमाना अ० ५.१८.११; पै० सं० ९.१८.६।

गौर्धयति मरुतां ऋ० ८.९४.१, सा० १४९।

ग्रामणीरसि ग्रामणीः अ० १९.३१.१२; पै० सं० १०.५.१२।

ग्नाश्च यन्नरश्च वावृधन्त ऋ० ६.६८.४।

ग्रन्थिनं विष्य ऋ० ९.९७.१८।

ग्रहा ऊर्जाहुतयो य० ९.४; कपि० ३.१; श० ब्रा० उ० ५.१.२.१८।

ग्रावाण उपरेष्वा ऋ० १०.१७५.३।

ग्रावाणः सविता ऋ० १०.१७५.४।

ग्रावाणः सोम नो ऋ० ६.५१.१४; ऐ० ब्रा० ५.१.४।

ग्रावाणेव तदिदर्थं ऋ० २.३९.१; ऐ० ब्रा० १.४.४।

ग्रावाणो अप दुच्छुनां ऋ० १०.१७५.२।

ग्रावाणो न सूरयः ऋ० १०.७८.६।

ग्रावा वदन्नप रक्षांसि ऋ० १०.३६.४।

ग्राव्णा तुन्नो अभिष्टुतः ऋ० ६.६७.१६।

ग्राव्णो ब्रह्मा युयुजानः ऋ० ५.४०.८।

ग्राहिं पाप्मानमति अ० १२.३.१८; पै० सं० १७.३७.८।

ग्राह्या गृहाः अ० १२.२.३६; पै० सं० १७.३३.६।

ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः ऋ० १०.१६३.२, अ० २.३३.२, २०.६६.१८; पै० सं० ७.४.२; ६.३.१०।

ग्रीवास्ते कृत्ये अ० १०.१.२१; पै० सं० १६.३६.१०।

ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि अ० १२.१.३६; पै० सं० १७.४.६।

ग्रीष्मेण ऋतुना देवा य० २१.२४; काठ० सं० ३८.१२३; का० सं० २३.२५; मै० सं० ३.११.१२५।

ग्रीष्मो हेमन्तः अ० ६.५५.२; तै० सं० ५.७.२.६।

ग्रैष्मावेनं मासौ अ० १५.४.६।

ग्रैष्मौ मासौ अ० १५.४.५।

घनेव विष्वग्वि जह्य ऋ० १.३६.१६।

घर्म इवाभितपन् अ० १६.२८.३; पै० सं० १३.११.३।

घर्मः समिद्धो अ० ८.८.१७; पै० सं० १६.३०.८।

घर्मा समन्ता त्रिवृतं ऋ० १०.११४.१।

घर्मेव मधु जठरे सनेरू ऋ० १०.१०६.८।

घर्मंतत्ते पुरीषं य० ३८.२१।

घृतप्रुषः सौम्या ऋ० ८.५६.४; श० ब्रा० १४.३.१.२३।

घृतपृष्ठा मनोयुजो ऋ० १.१४.६।

घृतप्रतीकं व ऋतस्य ऋ० १.१४३.७, तै० ब्रा० १.२.१.१२।

घृतमग्नेर्वध्र्यश्वस्य वर्धन ऋ० १०.६६.२।

घृतमप्सराभ्यो वह अ० ७.१०६.२।

घृतवती भुवनानामभिश्रि ऋ० ६.७०.१, य० ३४.४५, सा० ३७८; का० सं० ३३.३३; प० ब्रा० ५.६.१.४, ५.३; मै० सं० ४.११.३४; सा० ब्रा० ३.१.७.१।

घृतवन्तमुप मासि ऋ० १.१४२.२।

घृतवन्तः पावक ते ऋ० ३.२१.२, तै० ब्रा० ३.६.७.१; ऐ० ब्रा० २.२.२; काठ० सं० १६.२४७।

घृतस्य जूतिः समना अ० १६.५८.१; पै० सं० १.१०१.१।

घृतह्रदा मधुकूलाः अ० ४.३४.६; पै० सं० ६.२२.७।

घृतं घृतपावानः य० ६.१६; काठ० सं० ३.२५; तै० सं० १.३.१०.५; श० ब्रा० २.४.१.२४; ३.८.३.३२–३५; कपि० २.१४।

घृतं ते अग्ने अ० ७.८२.६; पै० सं० २०.३२.२।

घृतं न पूतं तनूररेपाः ऋ० ४.१०.६, तै० सं० २.२.१२.७, २५; मै० सं० ४.१२.११.१।

घृत पवस्व धारया ऋ० ६.४६.३, सा० १४३७।

घृतं प्रोक्षन्ती अ० १०.६.११; पै० सं० १६.१३७.१।

घृतं मिमिक्षे घृतमस्य ऋ० २.३.११, य० १७.८८, तै० सं० १०.१०.२।

घृताची स्थो धुर्यौ य० २.१६; श० ब्रा० १.८.३.२७; ११.२.३.६ ।

घृताच्यसि जुहूर्नाम्ना य० २.६; श० ब्रा० १.३.४.१४–१६; कपि० ४.१.११; ७.१० ।

घृतादुल्लुप्तं मधुना अ० ५.२८.१४ ।

घृतादुल्लुप्तो मधुमान् अ० १९.३३.२, ४६.६; पैं० सं० ७.२३.३; १२.५.२ ।

घृताहवन दीदिवः ऋ० १.१२.५ ।

घृताहवन सत्येमा ऋ० १.४५.५ ।

घृतेन त्वा समुक्षामि अ० १९.२७.५; पैं० सं० १०.५.७ ।

घृतेन द्यावापृथिवी ऋ० ६.७०.४; ऐ० ब्रा० ५.१.२ ।

घृतेन सीता य० १२.७०, अ० ३.१७.९; काठ० सं० १६.१५९; तै० सं० ४.२.५.५, २०; श० ब्रा० ७.२.२.९–१०; मै० सं० २.७.१६०; कपि० २५.३ ।

घृतेनाक्तौ पशूंस्त्रायेथां य० ६.११; काठ० सं० ३.२२; तै० सं० १.३.८.१; श० ब्रा० ३.८.१.५; १२–१५; १३.२.११.३७; कपि० २.१३ ।

घृतेनाग्निः समज्यते ऋ० १०.११८.४; ऐ० ब्रा० १.३.५ ।

घृतेनाञ्जन्त्सं पथो य० २९.२; तै० सं० ५.१.११.२; का० सं० ३१.२ ।

घृषुं पावकं वनिनं ऋ० १.६४.१२ ।

घृषुः श्येनाय कृत्वने ऋ० १०.१४४.३ ।

घोरा ऋषयो अ० २.३५.४ ।

घ्नतो वृत्रमतरन्रोदसी ऋ० १.३६.८ ।

घ्नन्मृध्राण्यप द्विषो ऋ० ८.४३.२६; काठ० सं० ३९.१२० ।

चकार ता कृणवन्नु ऋ० ७.२६.३ ।

चक्रवांस ऋभवस्तदपृच्छत ऋ० १.१६१.४ ।

चक्रं न वृत्तं पुरुहूत वेपते ऋ० ५.३६.३ ।

चक्रं यदस्याप्स्वा निषत्तं ऋ० १०.७३.९, सा० ३३१; सा० ब्रा० ३.१.७.१२ ।

चक्राणासः परीणहं पृथिव्या ऋ० १.३३.८ ।

चक्राये हि सध्र्यङ् ऋ० १.१०८.३ ।

चक्रिर्दिवः पवते कृत्वो ऋ० ९.७७.५ ।

चक्रिर्यो विश्वा भुवना ऋ० ३.१६.४ ।

चक्षुरसि चक्षुर्मे अ० २.१७.६ ।

चक्षुर्नो देवः सविता ऋ० १०.१५८.३; सं० वि० गर्भाधानसंस्कार ।

चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे ऋ० १०.१५८.४; मै०सं० ४.१२.११६; सं० वि० गर्भाधानसंस्कार ।

चक्षुर्मुसलं काम अ० ११.३.३; पैं० सं० १६.५३.८ ।

चक्षुषः पिता मनसा ऋ० १०.८२.१, य० १७.२५, तै० सं० ४.६.२.४; ६, मै० सं० २.१२.२३; काठ० सं० १८.१०; कपि० २८.२ ।

चक्षुषा ते चक्षुर्हन्मि अ० ५.१३.४ ।

चक्षुषो हेते अ० ५.६.९; पैं० सं० ६.११.११ ।

चक्षुः श्रोत्रं यशो अ० ११.५.२५; गो० ब्रा० पू० २.८ ।

चतस्र ईं घृतदुहः सचंते ऋ० ९.८९.५ ।

चतस्रश्च मे चत्वारिंशत् अ० ५.१५.४; पैं० सं० ८.५.४ ।

चतस्रश्च मेऽष्टौ च य० १८.२५; श० ब्रा० ९.३.३.६; ऋ० भू० गणित विषय, कपि० २९.१ ।

चतस्रो दिवः अ० १.११.२; पैं० सं० १.५.२ ।

चतुरश्चिद्ददमानात् ऋ० १.४१.९ नि० ३.१५ ।

चमूषच्छ्येनः शकुनो ऋ० ९.९६.१९, सा० ११७७।

चरन्वत्सो रुशन्निह ऋ० ८.७२.५।

चरित्रं हि वेरिवाच्छेदिपर्णं ऋ० १.११६.१५।

चरुर्न यस्तमीङ्खय ऋ० ९.५२.३।

चरुं पञ्चबिलमुखं अ० ११.३.१८; पै० सं० १६.५३.७।

चरेदेवा त्रैहायणा अ० १२.४.१६; पै० सं० १७.१७.६।

चर्कृत्यं मरुतः पृत्सु ऋ० १.६४.१४।

चर्षणीधृतं मघवानमुक्थ्यं ऋ० ३.५१.१, सा० ३७४; गो० ब्रा० उ० ४.१५.५३३; आ० ब्रा० ६.१.५१, सा० ब्रा० ३.१.७.१२।

चाक्लृप्रे तेन ऋषयो ऋ० १०.१३०.६।

चिकित्विन्मनसं ऋ० ५.२२.३।

चिते तद्वां सुराधसा ऋ० १०.१४३.४।

चित्तिमचित्तिं चिनवद् ऋ० ४.२.११, तै० सं० ५.५.४.४; १२; काठ० सं० ४०.२८।

चित्तिरपां दमे विश्वायुः ऋ० १.६७.१०।

चित्तिरा उपबर्हणं ऋ० १०.८५.७, अ० १४.१.६; पै० सं० १८.१.६।

चित्तिं जुहोमि मनसा य० १७.७८; काठ० सं० २६.२४; श० ब्रा० ९.२.३.४२; मै० सं० २.१०.६८, तै० सं० ५.५.४.७; ७.४.१।

चित्पतिर्मा पुनातु य० ४.४; श० ब्रा० ३.१.३.२२,२३; मै० सं० १.२.८; तै० सं० १.२.१.१२, ६.१.१.२२, कपि० १.५; ७; १३; ३५; ४७.४।

चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य ऋ० १०.११५.१, सा० ६४; सा० ब्रा० ३.१.४.१५।

चित्र इद्राजा राजका ऋ० ८.२१.१८।

चित्रश्चिकित्वान्महिषः अ० १३.२.३२; पै० सं० १८.२३.१०।

चित्रस्ते भानुः क्रतुप्रा ऋ० १०.१००.१२।

चित्रं तद्वो मरुतो याम ऋ० २.३४.१०।

चित्रं देवानां केतुः अ० १३.२.३४, २०.१०७.१३; पै० सं० १८.२४.१; तै० सं० २.२.१२.६; ५.१२.१४, ३.१.११.३२।

चित्रं देवानामुदगादनीकं ऋ० १.११५.१, य० ७.४२, १३.४६, सा० ६२९, अ० १३.२.३५, २०.१०७.१४, तै० सं० १.४.४३.२, २.४.१४.१५, तै० ब्रा० २.८.७.३, तै० आ० १.७.६, २.१३. १, नि० १२.१६; १४.१; ऐ० ब्रा० ४.२. ३; ऐ० आ० २.३.१, मै० सं० १.३.१०१; ४.१४.५६; काठ० सं० ४.४७; २२.१०; श० ब्रा० ४.३.४.१०; ७.५.२.१७; कपि० ३.४; ७; ३५.१; सं० वि० गृहाश्रमसंस्कार; ल० पं० वि० २२६; स० प्र० १ समु०; आ० ब्रा० ६.४.२.३; पै० सं० १८.२४.२।

चित्रं ह यद्वा भोजनं ऋ० ७.६८.५।

चित्राणि साकं अ० १९.७.१।

चित्रा वा येषु दीधितिः ऋ० ५.१८.४।

चित्रैरञ्जिभिर्वपुषे ऋ० १.६४.४।

चित्रो यद्भ्राट् श्वेतो ऋ० १.६६.६।

चित्रो वोऽस्तु यामः ऋ० १.१७२.१।

चिदसि तया देवतया य० १२.५३; काठ० सं० १६.१३२; श० ब्रा० ७.१.१.३०; १०.५.१.३; मै० सं० २.७.१३९; तै० सं० ४.२.४.११, कपि० २५.२।

चिदसि मनासि धीरसि य० ४.१९; श० ब्रा० ३.२.४.१६–२०; ३.४.२९; तै० सं० १.२.४६; कपि० १.१७; ३७.४।

चेतो हृदयं यकृत् अ० ६.७.११; पै० सं० १६.१३६.१२।

चोदयतं सूनृताः पिन्वतं ऋ० १०.३६.२।

चोदयित्री सूनृतानां ऋ० १.३.११, य० २०.८५, तै० सं० ४.१.११.६; का० सं० २२.७०,७३; ऐ० ब्रा० ३.११।

च्युता चेयं बृहती अ० ६.२.१५; पै० सं० १६.७७.५।

छन्दस्तुभः कुभन्यवः ऋ० ५.५२.१२।

छन्दः पक्षे अ० ८.६.१२; पै० सं० १६.१६.२।

छन्दांसि यज्ञे अ० ५.२६.५; पै० सं० ६.२.४।

छर्दिर्यन्तमदाभ्यं ऋ० ८.८५.५।

छिनत्त्यस्य पितृबन्धु अ० १२.५.४३; पै० सं० १६.१४५.५।

छिन्द्धि दर्भ अ० १६.२८.६; पै० सं० १३.११.५।

छिन्ध्या च्छिन्धि अ० १२.५.५१; पै० सं० १६.१४६.१।

जगता सिन्धुं दिव्यस्तभाय ऋ० १.१६४.२५, अ० ६.१०.३; पै० सं० १६.६८.३।

जगृह्णा ते दक्षिणमिन्द्र हस्त ऋ० १०.४७.१, सा० ३१७, तै० ब्रा० २.८.२.५; मै० सं० ४.१४.६४, १०.८, दे० ब्रा० ५.१.२; सा० ब्रा० ३.२.७.३।

जघने चोद एषां ऋ० ५.६१.३।

जघन्वां इन्द्र मित्रेरुञ्चोद ऋ० १.१७४.६।

जघन्वां उ हरिभिः ऋ० १.५२.८।

जघान वृत्रं स्वधितिर्वनेव ऋ० १०.८६.७।

जघ्निर्वृत्रमित्रियं ऋ० ६.६१.२०, सा० ८१६।

जङ्गिडोऽसि जङ्गिडो अ० १६.३४.१; पै० सं० ११.३.१।

जङ्गिडो जम्भाद् अ० २.४.२।

जज्ञान एव व्यबाधत ऋ० १०.११३.४।

जज्ञानं सप्तमातरो ऋ० ६.१०२.४, सा० १०१।

जज्ञानः सप्त मातृभिः सा० १०१।

जज्ञानः सोमं सहसे ऋ० ७.६८.३, अ० २०.८७.३।

जज्ञानो नु शतक्रतुः ऋ० ८.७७.१; ऐ० आ० ५.२.४।

जज्ञानो वाचमिष्यसि सा० ६६०।

जज्ञानो हरितो वृषा ऋ० ३.४४.४।

जज्ञिष इत्था गोपीथ्याय ऋ० १०.६५.११।

जनयत्यै त्वा संयौमि य० १.२२; काठ० सं० ३१.१६; श० ब्रा० १.२.२.३–८; १२.१४; तै० सं० १.१.८४; कपि० १.८; ४७.७।

जनयन्नोचना दिवो ऋ० ६.४२.१।

जनस्य गोपा अजनिष्ट ऋ० ५.११.१, य० १५.२७, सा० ६०७, तै० सं० ४.४.४.२; ७; मै० सं० २.१३.३७, काठ० सं० ३६.६५; तां० ब्रा० १२.८.१; मै० सं० २.१३.३७; तां० ब्रा० १२ ८.१।

जनं बिभ्रती अ० १२.१.४५।

जनं वज्रिन्महिचिन् ऋ० ६.१६.१२।

जनाद् विश्वजनीनात् अ० ७.४५.१; पै० सं० २०.१३.३।

जनाय चिद्य ईवते ऋ० ६.७३.२, अ० २०.६०.२; काठ० सं० ४.११७।

जनासो अग्निं दधिरे ऋ० १.३६.२।

जनासो वृक्तबर्हिषो ऋ० ८.५.१७।

जनिता दिवो जनिता ऋ० ८.३६.४।

जनिताश्वानां जनिता ऋ० ८.३६.५।

जनित्रीव प्रति अ० १२.३.२३; पै० सं० १७.३८.२ ।

जनियन्ति नावग्रवः ऋ० ७.९६.४, अ० १४.२.७२; पै० सं० १८.१४.२; सं० वि० गृहाश्रमसंस्कार ।

जनिष्ट योषा पतयत्कनीनक ऋ० १०.४०.९ ।

जनिष्ट हि जेन्यो अग्रे अह्नां ऋ० ५.१.५, तै० सं० ४.१.३.४; १३; काठ० सं० १६.३४ ।

जनिष्ठा उग्रः संहसे तुराय ऋ० १०.७३.१, य० ३३.६४, तै० ब्रा० २.८.३.४; ऐ० ब्रा० ३.२.८; ८.१.२; ऐ० आ० १.२२.१.२.२; ५.१.१; काठ० सं० ४.३४; मै० सं० १.३.५७; कपि० ३.६ ।

जनिष्वा देववीतये ऋ० ६.१५.१८ ।

जनीयन्तो न्वग्रवः ऋ० ७.९६.४, सा० १४६०, अ० १४.२.७२ ।

जनूंश्चिद्वो मरुतस्त्वेष्येण ऋ० ७.५८.२ ।

जने न शेवा आहूर्य ऋ० १.६९.४ ।

जनो यो मित्रावरुणा ऋ० १.१२२.९ ।

जन्मञ्जन्मन्निहितो जातवेदा ऋ० ३.१.२१ ।

जम्भयतमभितो ऋ० १.१८२.४ ।

जयतं च प्र स्तुतं च ऋ० ८.३५.११ ।

जयतामिव तन्यतुः ऋ० १.२३.११ ।

जयेम कारे पुरुहूत कारिणः ऋ० ८.२१.१२ ।

जरतीभिरोषधीभि ऋ० ६.११२.२ ।

जरमाणः समिध्यसे ऋ० १०.११८.५; ऐ० ब्रा० १.३.५ ।

जराबोध तद्विविड्ढि ऋ० १.२७.१०; सा० १५, १६६३; नि० १०.८; सा० ब्रा० ३.१.४.३ ।

जरायुजः प्रथम अ० १.१२.१; पै० सं० १.१७.१ ।

जरायै त्वा परि अ० ३.११.७ ।

जरां सु गच्छ अ० १९.२४.५; पै० सं० १५.६.२ ।

जवस्ते अर्वन्निहितो अ० ६.९२.२ ।

जवो यस्ते वाजिन्निहितो य० ९.९; श० ब्रा० ५.१.४.१० ।

जहि त्वं काम अ० ९.२.१०; पै० सं० १६.७६.६ ।

जहि दर्भ सपत्नान् अ० १९.२९.९; पै० सं० १३.११.१८ ।

जाग्रद्दुष्वप्न्यं स्वप्ने अ० १६.६.९ ।

जातवेदसे सुनवाम ऋ० १.९९.१, तै० आ० १०.२.१, नि० १४.३३; ऐ० ब्रा० ४.५.२; ५.१.२; ५.२.३; १०; ३.२; ४; ४.२; ऐ० आ० १.९९.१; सं० वि० गृहाश्रम-संस्कार; आर्याभि० १.३३ ।

जातवेदो नि वर्तय अ० ६.७७.३; पै० सं० १९.१६.४ ।

जातः परेण धर्मणा सा० ९०; सा० ब्रा० ३.१.८.९ ।

जातो अग्नी रोचते ऋ० ३.२९.७ ।

जातो जायते सुदिनत्वे ऋ० ३.८.५, तै० ब्रा० ३.६.१.३; ऐ० ब्रा० २.१.२ ।

जातो यदग्ने भुवना ऋ० ७.१३.३, तै० सं० १.५.११.५ ।

जातो व्यख्यत् अ० २०.३४.१६; पै० सं० १३.७.१७ ।

जानत्यह्नः प्रथमस्य ऋ० १.१२३.९ ।

जानन्ति वृष्णो अरुषस्य ऋ० ३.७.५ ।

जानन्तो रूपमकृपन्त ऋ० १०.१२३.४ ।

जानीत स्मैनं अ० ६.१२३.२ ।

जामिः सिंधूनां भ्रातेव ऋ० १.६५.७ ।

जाम्यतीतपे धनुः ऋ० ८.७२.४ ।

जायमानाभि जायते ऋ० १२.४.१०; पै० सं० १७.१६.१०।

जाया इद् वो अ० ४.३७.१२; पै० सं० १३.४.१२।

जाया तप्यते कितवस्य ऋ० १०.३४.१०।

जायेदस्तं मघवन्त्सेदयो ऋ० ३.५३.४।

जायेव पत्यावधि शेव ऋ० ६.८२.४।

जालाषेणाभिषिञ्चतं ऋ० ६.५७.२; पै० सं० १६.१०.४।

जिघर्म्यग्निं हविषा ऋ० २.१०.४, य० ११.२३, तै० सं० ४.१.२.४; १७; ५.१.३.४; का० सं० १६.१६।

जितम०/स आङ्गिरसानां ऋ० १६.८.१५।

जितम०/स अथर्वणानां ऋ० १६.८.१७।

जितम०/स आर्तवानां ऋ० १६.८.२१।

जितम०/स आर्षेयाणां ऋ० १६.८.१३।

जितम०/स इन्द्राग्न्योः ऋ० १६.८.२७।

जितम०/स ऋतूनां ऋ० १६.८.२०।

जितम०/स ऋषीणां अ० १६.८.१२।

जितम०/देवजामीनां अ० १६.८.६।

जितम०/स धावा अ० १६.८.२६।

जितम०/स निर्ऋत्या अ० १६.८.५।

जितम०/स निर्भूत्या अ० १६.८.७।

जितम०/स पराभूत्याः अ० १६.८.८।

जितम०/स प्रजापते अ० १६.८.११।

जितम/स बृहस्पते अ० १६.८.१०।

जितम०/स मासानां अ० १६.८.२२।

जितम/स मित्रावरुणयोः अ० १६.८.२८।

जितम/स राज्ञो अ० १६.८.२६।

जितम०/स वनस्पतीनां अ० १६.८.१८।

जितम०/स वानस्पत्यानां अ० १६.८.१६।

जितमस्काकमु० अ० १६.८.१,३०।

जितमस्माकमुद्भिन्नम् अ० १०.५.३६; १६.६.१, पै० सं० १८.२६.१।

जितम०/सोऽङ्गिरसां अ० १६.८.१४।

जितम०/सोऽथर्वाणां अ० १६.८.१६।

जितम०/सोऽभूत्याः अ० १६.८ ६।

जितम०/सोऽर्धमासानां अ० १६.८.२३।

जितम०/सोऽहोरात्रयोः अ० १६.८.२४।

जितम०/सोऽह्नोः संयतो अ० १६.८.२५।

जिह्मं नुनुद्रेऽवतं तया ऋ० १.८५.११।

जिह्मश्ये चरितवे मघोनी ऋ० १.११३.५।

जिह्वा ज्या भवति अ० ५.१८.८; पै० सं० ६.१८.३।

जिह्वाभिरह नन्नमद ऋ० ८.४३.८।

जिह्वा मे भद्र वाङ्महो य० २०.६; काठ० सं० ३८.४७; मै० सं० ३.११.६५; का० सं० २१.१०३।

जिह्वाया अग्रे मधु अ० १.३४.२; पै० सं० २.६.२।

जीमूतस्येव भवति ऋ० ६.७५.१; य० २६.३८; तै० सं० ४.६.६.१; मै० सं० ३.१६.३१, का० सं० ३१.१३।

जीवतां ज्योतिः अ० ८.२.२; पै० सं० १६.३.२।

जीवनामायुः प्र अ० १२.२.४५।

जीवला नाम ते अ० १६.३६.३; पै० सं० ७.१०.३।

जीवला स्थ जीव्यासं अ० १६.६६.४; पै० सं० १६.५४.१४।

जीवलां नघारिषां अ० ८.२.६; ७.६; पै० सं० १.६३.२; १६.३.६; १२.६।

जीवं रुदन्ति वि मयन्ते ऋ० १०.४०.१०; अ० १४.१.४६; सं० वि विवाह संस्कार।

जीवान्नो अभि धेतना ऋ० ८.६७.५; नि० ६.२७।

जीवा स्थ जीव्यासं अ० १९.६९.१; गो० ब्रा० पू० १.३९; पै० सं० २०.४१.१।

जीवेभ्यस्त्वा समुद्रे अ० ८.१.१५; पै० सं० १६.२.५।

जीवेम शरदः शतम् अ० १९.६७.२; गो० ब्रा० पू० २.९।

जुजुरुषो नासत्योत वव्रिं ऋ० १.११६.१०।

जुषद्धव्या मानुषस्य ऋ० १०.२०.५।

जुषस्व नः समिधमग्ने ऋ० ७.२.१।

जुषस्व सप्रथस्तमं ऋ० १.७५.१; तै० ब्रा० ३.६.७.१; ऐ० ब्रा० २.२.२; मै० सं० ३.१०.२; ४.१३.२७।

जुषस्वाग्न इळया सजोषाः ऋ० ५.४.४।

जुषाणो अग्ने प्रतिहर्यमेव ऋ० १०.१२२.२।

जुषाणो अङ्गिरस्तमेमा ऋ० ८.४४.८।

जुषाणो बर्हिर्हरिवान् य० २०.३९; काठ० सं० ३८.७४; मै० सं० ३.११.४; का० सं० २२.२७।

जुषेथां यज्ञमिष्टये ऋ० ८.३८.४।

जुषेथां यज्ञं बोधतं हवस्य मे विश्वेह ऋ० ८.३५.४।

जुषेथां यज्ञं बोधतं हवस्य मे सत्तो ऋ० २.३६.६।

जुष्ट इन्द्राय मत्सरः ऋ० ९.१३.८; सा० ११९४।

जुष्टी नरो ब्रह्मणा ऋ० ७.३३.४; तै० ब्रा० २.४.३.१।

जुष्टो दमूना अतिथिर्दुरोणे ऋ० ५.४.५; अ० ७.७३.९; तै० ब्रा० २.४.१.१; नि० ४.५; मै० सं० ४.११.२।

जुष्टो मदाय देवतात ऋ० ९.९७.१९।

जुष्टो हि दूतो ऋ० १.४४.२; सा० १७८१।

जुष्टवीन इन्द्रो सुपथा ऋ० ९.९७.१६।

जुहुराणा चिदश्विना ऋ० ८.२६.५।

जुहुरे वि चितयन्तो ऋ० ५.१९.२; नि० ३.१९।

जुहूर्दाधारः द्याम् अ० १८.४.५।

जूर्णि पुनर्वो यन्तु अ० २.२४.५।

जेतानृभिरिन्द्रः पृत्सु ऋ० १.१७८.३।

जोषद्यदीमसुर्या सचध्यै ऋ० १.१६७.५।

जोषा सवितर्यस्य ते ऋ० १०.१५८.२; सं० वि० गर्भाधान संस्कार।

जोषयग्ने समिधं जोष्याहुति ऋ० २.३७.६।

जोहूत्रो अग्निः प्रथमः ऋ० २.१०.१।

ज्ञेया भागं सहसा नो ऋ० २.१०.६।

ज्मया अत्र वसवो ऋ० ७.३९.३; नि० १२.४३; ऐ० ब्रा० ५.३.३; १२.४.४२।

ज्याके परि नो अ० १.२.२।

ज्याघोषा दुन्दुभयो अ० ५.२१.९।

ज्यायस्वन्तश्चित्तनो अ० ३.३०.५; पै० सं० ५.१९.५; सं० वि० गृहाश्रम संस्कार।

ज्यायान्निमिषतोऽसि अ० ९.२.२३।

ज्यायांसमस्य यतुनस्य ऋ० ५.४४.८; नि० ६.१५।

ज्येष्ठ आह चमसा द्वाकरेति ऋ० ४.३३.५।

ज्येष्ठघ्न्यां जातो अ० ६.११०.२; पै० सं० १९.२०.१।

ज्येष्ठेन सोतरिन्द्राय सोमं ऋ० ८.२.२३।

ज्यैष्ठ्यं च म आधिपत्यं य० १८.४; तै० सं० ४.७.२.१; कपि० २८.७।

ज्योतिरसि विश्वरूपं य० ५.३५; काठ० सं० ३.१; तै० सं० १.१.१०.१८; कपि० २.८।

ज्योतिर्यज्ञस्य पवते ऋ० ९.८६.१०; सा० १०३१; तां० ब्रा० १३.७.१।

ज्योतिर्यज्ञाय रोदसी अनु ऋ० ३.३९.८।

ज्योतिर्वृणीत तमसो ऋ० ३.३९.७।

ज्योतिष्मतीमदितिं धारयात् ऋ०१.१३६.३।

ज्योतिष्मतो लोकान् अ० ६.६.१४।

ज्योतिष्मन्तं केतुमन्तं ऋ० ८.५८.३।

त आदित्या आ गता सर्वतातये भूत ऋ० १.१०६.२।

त आदित्या आ गता सर्वतातये वृधे नो ऋ० १०.३५.११।

त आदित्यास उरवो ऋ० २.२७.३।

त आयजन्त द्रविणं समस्या ऋ० १०.८२.४; य० १७.२८; तै० सं० ४.६.२.४; नि० ६.१५; काठ० १८.४। कपि० २८.२; मै० सं० २.१०.२५।

त इदुग्राः शवसा ऋ० ६.६६.६।

त इद्देवानां सधमाद ऋ० ७.७६.४।

त इद्वेदिं सुभग ऋ० ८.१६.१८।

त इन्निण्यं हृदयस्य ऋ० ७.३३.६।

इन्न्वस्य मधुमद्वि ऋ० ३.३२.४।

त उक्षितासो महिमानं ऋ० १.८५.२।

त उग्रास वृषण ऋ० ८.२०.१२।

त ऊ षु णो महो यजत्राः ऋ० १०.६१.२७।

तक्मन् भ्राता अ० ५.२२.१२।

तक्मन् मूजवतो अ० ५.२२.७।

तक्मन् व्याल अ० ५.२२.६; पै० सं० १३.१.८।

तक्वा न भूर्णिः ऋ० १.६६.२।

तक्षद्यत्त उशना ऋ० १.५१.१०।

तक्षद्यदी मनसो ऋ० ६.६७.२२। सा० ५३७।

तक्षन्नासत्याभ्यां ऋ० १.२०.३।

तक्षन्रथं सुवृतं ऋ० १.१११.१।

तच्चक्षुर्देवहितं ऋ० ७.६६.१६; य० ३६.२४; तै० आ० ४.४२.५; मै० सं० ४.९.२२२; कपि० ३६.२५; सं० वि० शान्तिकरण; निष्क्रमण-विवाह-गृहाश्रम संस्कार।

तच्चित्रं राध आ भरोषो ऋ० ७.८१.५।

ततश्चैनमन्यया अ० ११.३.३६, ४६; पै० सं० १६.५६.६; १७।

ततश्चैनमन्याभ्यां अ० ११.३.३३, ३, १३–१७; पै० सं० १६.५६.३,४,१४.१६.१८।

ततश्चैनमन्येन अ० ११.३.३२,३५,३६,४०–४३; पै० सं० १६.५६.१, २, ५, ९–१२; १६.१२४.१११।

ततश्चैनमन्यैः अ० ११.३.३७, ३८; पै० सं० १६.५६.७।

ततस्ततामहास्ते अ० ५.२४.१७।

ततं तन्तुमन्वेके अ० ६.१२२.२।

ततं मे अपः ऋ० १.११०.१; तै० ब्रा० ३.७.११.२।

तता अवरे ते अ० ५.२४.१६।

ततुरिर्वीरो नर्यो विचेताः ऋ० ६.२४.२।

ततृदानाः सिन्धवः ऋ० ५.५३.७।

ततो विराडजायत य० ३१.५; सा० ६२१; श० ब्रा० १३.६.१.२; का० सं० ३५.५; स० प्र० १ समु०; ऋ० भू० सृष्टिविद्या-विषय; तै० आ० ३.१२.२; सा० ब्रा० ३.१.४.१८।

तत्त इन्द्रियं परमं ऋ० १.१०३.१; ऐ० ब्रा० ५.४.२।

तत्तदग्निर्वयो दधे ऋ० ८.३९.४।

तत्तदिदश्विनोः ऋ० १.४६.१२।

तत्तदिदस्य पौंस्यं ऋ० १.१५५.४।

तत्तु ते दंसो ऋ० १.६९.८।

तत्तु प्रयः प्रत्नथा ते ऋ० १.१३२.३।

तत्ते भद्रं यत् ऋ० १.९४.१४।

तत्ते यज्ञो अजायत ऋ० ८.८९.६; सा० १४३०।

तत्ते सहस्व ईमहे ऋ० ८.४३.३३।

तत्त्वा यामि ब्रह्मणा ऋ० १.२४.११; य० १८.४९, २१.२; तै० सं० २.५.१२.१२; ४.२.१८. ११.१.२.११.६, २२; मै० सं० ३.४.१६; ४.१४.२५३; नि० २.१; काठ० सं० ४.१४१; १७.१०८; ४०.९३; सं० वि० समावर्त्तन संस्कार; श० ब्रा० ९.४.२.१७; का० सं० २३.२।

तत्त्वा यामि सुवीर्यम् ऋ० ८.३.९; अ० २०.९.३, ४९.६।

तन्नो अपि प्राणीयत ऋ० ८.५६.४।

तत्सविता वोऽमृतत्वं ऋ० १.११०.३।

तत्सवितुर्वरेण्यम् ऋ० ३.६२.१०; य० ३.३५, २२.९, ३०.२, ३६.३; सा० १४६२; का० सं० २४.११; ३४.२; तै० सं० १.५.६.१२, ४.१.११.७; तै० आ० १.११.२; मै० सं० ४.१०.७७; ऐ० ब्रा० ५.२.८; ४.५.४; ५.१.५, २.९; जै० ब्रा० ४.२८.१; श० ब्रा० २.३.४.४०; १४.९.३.११–१३; १३.१३.६.२.९; सं० वि० वेदारम्भ-संस्कार; गो० ब्रा० पू० १.३२.७१; दे० ब्रा० ५.३.२.३; सा० ब्रा० ३.१.४.१३।

तत्सवितुर्वृणीमहे वयं ऋ० ५.८२.१; तै० आ० १.११ ३; ऐ० ब्रा० ५.१.२; २.३; ३.२; ४.५.२; ऐ० आ० १.५.३; सं० वि० उपनयन-संस्कार।

तत्सु नः शर्म यच्छता ऋ० ८.१८.१२।

तत्सु नः सविता भगो (०/ शर्म) ऋ० ८.१८.३।

तत्सु नः सवितो भगो (०/ इन्द्रो) ऋ० ४.५५.१०।

तत्सु नो नव्यं सन्यस ऋ० ८.६७.१८।

तत्सु नो विश्वे (०/बृबुम्) ऋ० ६.४५.३३।

तत्सु नो विश्वे (०/ मरुतः) ऋ० ८.९४.३।

तत्सु वां मित्रावरुणा ऋ० ५.६२.२; तै०ब्रा० २.८.६.६; मै० सं० ४.१४.१४२।

तत्सूर्यस्य देवत्वं ऋ० १.११५.४; य० ३३.३७; अ० २०.१२३.१; तै० ब्रा० २.८.७.१; नि० ४.११; मै० सं० ४.१४.५४; का०सं० ३२.३७।

तत्सूर्यं रोदसी उभे ऋ० ८.२५.२१।

तथा तदग्ने कृणु अ० ५.२९.२।

तथा तदस्तु सोमपाः ऋ० १.३०.१२।

तदग्निराह तदु अ० ८.५.५; १६.९.२; पै० सं० २.२४.५; १५.६.५; १६.२७.५; १८.२९.३।

तदग्ने चक्षुः ऋ० १०.८७.१२; अ० ८.३.२१; पै० सं० १६.८.१।

तदग्ने द्युम्नमा भर ऋ० ८.१९.१५; सा० ११३; काठ० सं० ३९.११५।

तदद्य वाचः प्रथमं ऋ० १०.५३.४; नि० ३.७।

तदद्या चित्त उक्थिनो ऋ० ८.१५.६; सा० ८८२; अ० २०.६१.३।

तदन्नाय तदपसे ऋ० ८.४७.१६।

तदमुष्मा अग्ने अ० १६.६.११।

तदश्विना भिषजा य० १९.८२; काठ० सं० ३८.२९; का० सं० २१.८२।

तदस्य रूपममृतं य० १९.८१; काठ० सं० ३८.२८; मै० सं० ३.११.७३; का० सं० २१.८१।

तदस्तु मित्रावरुणा ऋ० ५.४७.७; अ० १९.११.६; पै० सं० १३.८.१६।

तदस्मैनव्यमङ्गिरस्वद् ऋ० २.१७.१।

तदस्य प्रियमभि ऋ० १.१५४.५; तै० ब्रा०

२.४.६.२; मै० सं० २.१२.२२; ऐ० ब्रा० १.३.६।

तदस्यानीकमुत चारु ऋ० २.३५.११।
तदस्येदं पश्यता ऋ० १.१०३.५।
तदस्यैवं विद्वान् व्रात्य अ० १५.१३.१।
तदित्सधस्थमभि चारु ऋ० १०.३२.४।
तदित्समानमाशाते ऋ० १.२५.६।

तदिदास भुवनेषु ऋ० १०.१२०.१; य० ३३.८०; सा० १४८३; अ० ५.२.१; २०.१०७.४; नि० १४.२४; ऐ० आ० १.३.४७; ५.१.६; का० सं० ३२ ८०; पैं० सं० ६.१.१।

तदिद्ध्यस्य सवनं विवेरपः ऋ० १०.७६.३।
तदिद्रुदस्य चेतति ऋ० ८.१३.२०।
तदिद्वदन्त्यद्रयो विमोचने ऋ० १०.९४.१३।
तदिन्द्र प्रेव वीर्यं ऋ० १ १०३.७।
तदिन्द्राव आ भर ऋ० ८.२४.२५।
तदिन्नक्तं तद्दिवा मह्यमाहुः ऋ० १.२४.१२।
तदिन्नु ते करणं ऋ० ५.३१.७।
तदिन्न्वस्य परिषद्वानो ऋ० १०.६१.१३।
तदिन्न्वस्य वृषभस्य ऋ० ३.३८.७।
तदिन्न्वस्य सवितुः ऋ० ३.३८.८।
तदिन्मे छन्त्सद्वपुषो ऋ० १०.३२.३।

तदु प्रयक्षतमस्य ऋ० १.६२.६; ऐ० ब्रा० १.४.५।

तदु श्रेष्ठं सवनं ऋ० १०.७६.२।

तदूचुषेमानुषेमा ऋ० १.१०३.४।

तदू षु ते महत् अ० ५.१.५; पैं० सं० ६.२.५।

तदू षु वामेना कृतं ऋ० ५.७३.४।
तदृतं पृथिवि बृहत् ऋ० ५.६६.५।
तदेकमभवत् अ० १५.१.३; पैं० सं० १६.२७.३।

तदेजति तन्नैजति य० ४०.५; ऋ० भू० वेदविषयविचार; आर्याभि० २.१२; का० सं० ४०.५।

तदेवाग्निस्तदादित्यः य० ३२.१; का० सं० ३५.२३; आर्याभि० २.४; ल० आ० नि० १६७, १८५, १८६; ऋ० भा० १.१.१; ल० वेदाङ्ग १२४।

तद्द्धाना अवस्यवो ऋ० ८.६३.१०।
तद्देवस्य सवितुर्वार्यं ऋ० ४.५३.१; ऐ०ब्रा० ५.१.२; ऐ० आ० १.५.३।

तद्देवानां देवतमाय ऋ० २.२४.३।
तद्धि वयं वृणीमहे ऋ० १०.१२६.२।
तद्ब्रह्म च तपश्च अ० ८.१०.१६; पैं० सं० १६.१३५.५।

तद् भद्रं तव दंसना ऋ० ३.६.७।
तद्भद्राः समगच्छन्त अ० १०.१०.१७; पैं० सं० १६.१०८.६।

तद्यस्मा एवं विदुषे अ० ८.१०.१।
तद्यस्यैव विद्वान् व्रात्य उद्धृतेषु अ० १५.१२.१; ऋ० भू० पञ्चमहायज्ञविषय; ल० प० वि० २६४।

तद् यस्यैवं विद्वान् व्रात्य एकां अ० १५.१३.१।

तद्यस्यैवं विद्वान् व्रात्यश्चतुर्थी अ० १५.१३.७।

तद्यस्यैवं विद्वान् व्रात्यस्तृतीयं अ० १५.१३.५।

तद्यस्यैवं विद्वान् व्रात्योऽतिथि अ० १५.११.१।

तद्यस्यैवं विद्वान् व्रात्यो द्वितीयां अ० १५.१३.३।

तद्यस्यैवं विद्वान् व्रात्योऽपरि अ० १५.१३.९।

तद्यस्यैवं विद्वान् व्रात्यो राज्ञो अ० १५.१०.१।

तद्रावो अद्य सवितुर्वरेण्यं ऋ० १.१५९.५।

तद्व उक्थस्य बर्हणे ऋ० ६.४४.६; ऐ० ब्रा० ५.१.४।

तद्बन्धुः सूरिर्दिवि ऋ० १०.६१.१८।

तद्वः सुजाता मरुतो ऋ० १.१६६.१२।

तद्वा अथर्वणः अ० १०.२.२७; पै० सं० १६.५९.१०।

तद्वात उन्मथायति अ० २०.१३२.४।

तद्वामृतं रोदसी ऋ० १०.७६.४।

तद्वार्यं वृणीमहे ऋ० ८.२५.१३; नि० ५.१।

तद्वां नरा नासत्यावनुष्यात् ऋ० १.१८२.८।

तद्वां नरा शंस्यं पज्रियेण ऋ० १.११७.६।

तद्वां नरा शंस्यं राध्यं ऋ० १.११६.११।

तद्वां नरा सनये ऋ० १.११६.१२; श० ब्रा० १४.५.५.१६।

तद्विप्रासो विपन्यवो ऋ० १.२२.२१; य० ३४.४४; सा० १६७३; का० सं० ३३.३२।

तद्विविड्ढि यत्त इन्द्रो ऋ० ८.६६.१२।

तद्विषं सर्पा अ० ८.१०.१६; पै० सं० १६.१३५.८।

तद्विष्णोः परमं पदं ऋ० १.२२.२०; य० ६.५; सा० १६७२; अ० ७.२६.७; तै० सं० १.३.६.१३; ४.२.९.३,११; मै० सं० १.२.९.९; काठ० सं० ३.१६; ऋ० भू० वेदविषय; ब्रह्मविद्याविषय; श० ब्रा० ३.७.१.१८; कपि० २.१०, ४१.३।

तद्वीर्यं वो मरुतो ऋ० ५.५४.५।

तद्वै राष्ट्रमा अ० ५.१९.८; पै०सं० ९.१९.४।

तद्वो अद्य मनामहे ऋ० ७.६६.१२; ऐ० ब्रा० ५.२.१।

तद्वो गाय सुते सचा ऋ० ६.४५.२२; सा० ११५, १६६६; अ० २०.७८.१; सा० ब्रा० ३.१.४.१७।

तद्वो जामित्वं मरुतः ऋ० २.१६६.१३।

तद्वो दिवो दुहितरो ऋ० ४.५१.११।

तद्वो यामि द्रविणं ऋ० ५.५४.१५।

तद्वो वाजा ऋभवः ऋ० ४.२६.३।

तनूत्यजेव तस्करा ऋ० १०.४.६; नि० ३.१४।

तनूनपाच्छुचिव्रतः य० २१.१३; काठ० सं० ३८.११२; मै० सं० ३.११.११४; का०सं० २३.१४।

तनूनपात्पथ ऋतस्य ऋ० १०.११०.२; य० २९.२६; अ० ५.१२.२; तै० ब्रा० ३.६.३.१; नि० ८.६; काठ० सं० १६.२३०; मै० सं० ४.१३.१२; का० सं० ३१.३८।

तनूनपात्पवमानः ऋ० ९.५.२।

तनूनपादसुरो विश्व य० २७.१२; काठ० सं० १८.९३; तै० सं० ४.१.८.२; का० सं० २९.१२; कपि० २९.५।

तनूनपादुच्यते ऋ० ३.२९.११।

तनूनपादृतं यते ऋ० १.१८८.२।

तनूपा अग्नेऽसि तन्वं य० ३.१७; तै० सं० १.५.५१५; श० ब्रा० २.३.४.१९; आर्याभि० २.३३; कपि० १.१३; ४.८; ५.३; ४५.३; ४८.९।

तनूपा भिषजा सुते य० २०.५६; का० सं० २२.४४।

तनूष्टे वाजिन् अ० ६.९२.३; पै० सं० १९.३४.१३।

तनूष्टे वाजिन्तन्वं ऋ० १०.५६.२।

तनूस्तन्वा मे रुहे अ० १०.६१.१।

तन्तुना रायस्पोषेण य० १५.७; श० ब्रा० ८.५.३.३; कपि० २६.६ ।

तन्तुं तन्वन्रजसो ऋ० १०.५३.६; तै० सं० ३.४.२.६; ३.१६; ऐ० ब्रा० ३.३.१४; ७.२.८,११ ।

तन्तुं तन्वानमुत्तमं ऋ० ६.२२.६ ।

तन्त्रमेके युवती अ० १०.७.४२ ।

तन्न इन्द्रस्तद्वरुणः ऋ० १.१०७.३ ।

तन्न इन्द्रो वरुणो ऋ० ७.३४.२५; ५६.२५, आर्यीभि० १.२७ ।

तन्नव्यसी हृद ऋ० १.६०.३ ।

तन्नः प्रत्नं सख्यं ऋ० ६.१८.५ ।

तन्नस्तुरीपमद्भुतं ऋ० १.१४२.१०; य० २७.२०; अ० ५.२७.१०; तै० सं० ४.१.८.१०; नि० ६.२१; काठ० सं० १८.१०१; मै० सं० ४.१३.७३; का० सं० २६.२०; पै० सं० ६१.१० ।

तन्नस्तुरीपमध ऋ० ३.४.६; ७.२.६; तै० ३.१.११.६ ।

तन्नाकमर्यो ऋ० ५.५४.१२ ।

तन्नु वोचाम रभसाय ऋ० १.१६६.१ ।

तन्नु सत्यं पवमान ऋ० ६.६२.५ ।

तन्नेमिमृभवो यथा ऋ० ८.७५.५; तै० सं० २.६.११.५; मै० सं० ४.११.१३१; काठ० सं० ७.११० ।

तन्नो अग्ने अत्रि नरो ऋ० ५.६.७ ।

तन्नो अग्ने मघवद्भ्यः ऋ० ७.५.६ ।

तन्नो अनर्वा सविता ऋ० ५.४६.४ ।

तन्नो दातमरुतो ऋ० २.३४.७ ।

तन्नो देवा यच्छत ऋ० १०.३५.१२ ।

तन्नो द्यावापृथिवी ऋ० १०.३७.६ ।

तन्नो रायः पर्वताः ऋ० ७.३४.२३ ।

तन्नो वाजा ऋभुक्षण ऋ० ४.३७.८ ।

तन्नो वातो मयोभु ऋ० १.८६.४; य० २५.१७; का० सं० २७.२१ ।

तन्नो वि वोचो यदि ऋ० ६.२२.४; अ० २०.३६.४ ।

तन्नो विश्वा अवस्युवो ऋ० ६.४३.२ ।

तन्नोऽहिर्बुध्न्यो अद्भिः ऋ० ६.४६.१४ ।

तन्म ऋतमिन्द्र शूर ऋ० ८.६७.१५ ।

तन्मित्रस्य वरुणस्याभि ऋ० १.११५.५; य० ३३.३८; अ० २०.१२३.२; तै० ब्रा० २.८.७.२; मै० सं० ४.१४.५४; का० सं० ३२.३८ ।

तन्वं स्वर्गो बहुधा अ० १२.३.५४; पै० सं० १७.४१.४ ।

तपनो अस्मि अ० ४.३६.६ ।

तपन्ति शत्रुं स्व१र्ण ऋ० ७.३४.१६ ।

तपश्च तपस्यश्च य० १५.५७; श० ब्रा० ८.७.१.५,६; तै० सं० १.४.१४.११; ४.४.११.११; कपि० ६.४; २६.६ ।

तपश्चैवास्तां कर्म अ० ११.८.२,६; पै० सं० १६.८५.२,६ ।

तपसाये अनाधृष्याः ऋ० १०.१५४.२; अ० १८.२.१६; तै० आ० ६.३.२; सं० वि० अन्त्येष्टि संस्कार ।

तपसे कौलालं मायायै य० ३०.७; का० सं० ३४.७ ।

तपसे स्वाहा तप्यते य० ३६.१२; सं० वि० अन्त्येष्टि संस्कार ।

तपुर्जम्भो वन ऋ० १.५८.५ ।

तपुर्मूर्धा तपतु रक्षसो ऋ० १०.१८२.३ ।

तपोष्पवित्रं विततं ऋ० ६.८३.२; सा० ८७६; ऐ०ब्रा० ७.२.८; स०प्र० ११ समु० ।

तपोष्वग्ने अंतरां ऋ० ३.१८.२; तै० आ० ४.५.५; काठ० सं० ३५.७३ ।

तप्तायनी मेऽसि य० ५.६; श० ब्रा० ३.५. २७–३०, ३२; मै० सं० १.२.५८; कपि० २.३; ३६.३ ।

तप्तो वां घर्मो अ० ७.७३.५; पै० सं० २०. ११.६ ।

तम आसीत्तमसा ऋ० १०.१२९.३; तै०ब्रा० २.८.९.४; नि० ७.३; स० प्र० ८ समु०; ल० पं० वि० २१६.७; ऋ० भू० वेदोक्त-धर्म० ।

तमग्निमस्ते ऋ० ७.१.२; सा० १३७४; काठ० सं० ३९.१०५ ।

तमग्ने चक्षुः प्रति ऋ० १०.८७.१२; अ० ८. ३.२१ ।

तमग्ने पास्युत ऋ० ६.१५.११ ।

तमग्ने पृतनाषहं ऋ० ५.२३.२; तै०सं० १. ३.१४.२० ।

तमग्रुवः केशिनीः ऋ० १.१४०.८ ।

तमङ्गिरस्वन्नमसा ऋ० ३.३१.१९ ।

तमद्य राधसे महे ऋ० ८.६४.१२ ।

तमध्वरेष्वीळते ऋ० ५.१४.२ ।

तमप्सन्त शवस उत्सवेषु ऋ० १.१००.८ ।

तममृक्षन्त वाजिनं ऋ० ९.२६.१ ।

तमर्केभिस्तं सामभिः ऋ० ८.१६.९ ।

तमर्वन्तं न सानसिं ऋ० ८.१०२.१२ ।

तमर्वन्तं न सानसिमरुषं ऋ० ४.१५.६ ।

तमस्मेरा युवतयो ऋ० २.३५.४; तै० सं० २.५.१२.१७; सं० वि० विवाह-संस्कार ।

तमस्य द्यावापृथिवी ऋ० १०.११३.१ ।

तमस्य पृक्षमुपरासु ऋ० १.१२७.५ ।

तमस्य मर्जयामसि ऋ० ९.९९.३; सा० १६३२ ।

तमस्य राजा वरुणः ऋ० १.१५६.४; ऐ० ब्रा० १.५.४ ।

तमस्य विष्णुर्महिमानमोज ऋ० १०. ११३.२ ।

तमह्वान्भुरिजोर्धिया ऋ० ९.२६.४ ।

तमह्वे वाजसातय ऋ० ८.१३.३; सा० ७४८ ।

तमागन्म सोभरयः ऋ० ८.१९.३२ ।

तमानूनं व्रजनमन्यथा ऋ० ६.३५.५ ।

तमा नो अर्कममृताय ऋ० ७.९७.५; काठ० सं० १७.८६ ।

तमाहवनीयश्च गार्हपत्यश्च अ० १५.६.१४ ।

तमिच्च्यौत्नैरार्यन्ति ऋ० ८.१६.६ ।

तमित्पृच्छन्ति न सिमो ऋ० १.१४५.२ ।

तमित्सखित्व ऋ० १.१०.६ ।

तमित्सुहव्यमङ्गिरः ऋ० १.७४.५ ।

तमितिहासश्च अ० १५.६.११ ।

तमिदं निगतं अ० १३.४.१२; २०, ऋ० भू० ब्रह्मविद्याविषय; पत्र० वि० ९३ ।

तमिद्गच्छन्ति जुह्वस्तर्वम ऋ० १.१४५.३ ।

तमिद्गर्भं प्रथमं दध्र आपः ऋ० १०.८२.६; य० १७.३०; तै० सं० ४.६.२.७; काठ० सं० १८.९; मै० सं० २.१०.२८; कपि० २८.२ ।

तमिद्दोषा तमुषसि यविष्ठं ऋ० ७.३.५ ।

तमिद्धनेषु हितेषु ऋ० ८.१६.५ ।

तमिद्ध इन्द्रं सुहवं हुवेम ऋ० ४.१६.१६ ।

तमिद्वर्धन्तु नो गिरो ऋ० ९.६१.१४; सा० १३३६; नि० २.९ ।

तमिद्विप्रा अवस्यवः ऋ० ८.१३.१७ ।

तमिद्वोचेम विदथेषु ऋ० १.४०.६; ऐ० ब्रा० ५.१.१ ।

तमिन्द्र मदमा गहि ऋ० ३.४२.२; अ० २०. २४.२ ।

तमिन्द्रं जोहवीमि ऋ० ८.९७.१३; सा०

तमु ष्टुहीन्द्रं यो ह ऋ० १.१७३.५ ।
तमु स्तुष इन्द्रं तं गृणीषे ऋ० २.२०.४ ।
तमु स्तुष इन्द्रं यो विदानः ऋ० ६.२१.२ ।
तमु स्तोतारः पूर्व्यं ऋ० १.१५६.३; तै० ब्रा० २.४.३.६ ।
तमुत्वामिन्द्रं न ऋ० १०.६.५ ।
तमु हुवे वाजसातय सा० ७४८ ।
तमूतयो रणयञ्छूरसातौ ऋ० १.१००.७; आर्याभि० १-४१ ।
तमूर्मिमापो ऋ० ७.४७.२ ।
तमूषु समना गिरा ऋ० ८.४१.२; नि० १०.५ ।
तमृचं च सत्यं च अ० १५.६. ५ ।
तमृचश्च सामानि अ० १५.६.८ ।
तमृतवश्चार्तवाश्च अ० १५.६.१७ ।
तमृत्विया उप वाचः ऋ० १.१९०.२ ।
तमेव ऋषिं तमु ऋ० १०.१०७.६ ।
तमोषधीर्दधिरे गर्भमृत्वियं ऋ० १०.९१.६; सा० १८२४ ।
तम्वभि प्र गायत ऋ० ८.१५.१; सा० ३८२; अ० २०.६१.४, ६२.८ ।
तम्वभिप्रार्चतेन्द्रं ऋ० ८.९२.५; ऐ० ब्रा० ५.२.५ ।
तया पवस्व धारया यया गाव ऋ० ९.४९.२; सा० १४३६ ।
तया पवस्व धारया यया पितो ऋ० ९. ४५.६ ।
तयार्बुदे प्रणुत्तानाम् अ० ११.९.२० ।
तयाहं शत्रून्त्साक्ष अ० २.२७.५ ।
तयोरहं परिनृत्य अ० १०.७ ४३ ।
तयोरिदमवच्छवः ऋ० ५.८६.३ ।
तयोरिदवसा वयं ऋ० १.१७.६ ।
तयोरिद् घृतवत्पयः ऋ० १.२२.१४ ।
तरणिरित्सिषासति ऋ० ७.३२.२०; सा० २३८, ८६७ ।
तरणिर्विश्वदर्शतो ऋ० १.५०.४; य० ३३. ३६; सा० ६३५; अ० १३.२.१९, २०. ४७.१६; तै० सं० १.४.३१.१; तै० आ० ३.१६.१; काठ० सं० १०.५३; का० सं० ३२.३६; पै० सं० १८.२२.४; मै० सं० ४. १०.१५, १०.४०.१५ ।
तरणिं वो जनानां ऋ० ८.४५.२८; सा० २०४ ।
तरत्स मन्दी धावति ऋ० १.५८.१; सा० ५००, १०५७; नि० १३.६; सा० ब्रा० ३. २.१.७ ।
तरत्समुद्रं पवमान ऋ० ९.१०७.१५; सा० ८५७ ।
तरी मन्द्रा सुप्रयक्षु अ० ५.२७.६ ।
तरोभिर्वो विदद्वसुं ऋ० ८.६६.१; सा० २३७, ६८७; ऐ० ब्रा० ५.२.४; तां० ब्रा० १५.१०.४, ११.४.५; गो० ब्रा० उ० ४.३. ५०६; दे० ब्रा० ५.१.२ ।
तर्द है पतङ्ग है अ० ६.५०.२; पै० सं० १६.२०.६ ।
तर्दापते वघापते अ० ६.५०.३; पै० सं० १६. २०.७ ।
तव क्रत्वा तव तद्दंसनाभिः ऋ० ६.१७.६ ।
तव क्रत्वा तवोतिभिः ऋ० ९.४.६; सा० १०५२ ।
तव क्रत्वा सनेयं ऋ० ८.१९.२९ ।
तव चतस्रः प्रतिशः अ० ११.२.१०; पै० सं० १६.१०४.१० ।
तव च्यौत्नानि वज्रहस्त ऋ० ७.१९.५; अ० २०.३७.५ ।

तव त्य इन्द्रो अन्धसो ऋ० ६.५१.३; सा० १२२६।

तव त्य इन्द्र सख्येषु वह्नयः ऋ० १०.१३८.१; नि० ४.२५।

तव त्यदिन्द्रियं बृहत् ऋ० ८.१५.७; सा० १६४५; अ० २०.१०६.१।

तव त्यन्नर्य ऋ० २.२२.४; सा० ४६६।

तव त्ये अग्ने अर्चयो भ्राजन्तो ऋ० ५.१०.५।

तव त्ये अग्ने अर्चयो महि ऋ० ५.६.७।

तव ते अग्ने हरितो ऋ० ४.६.६।

तव त्ये पितो ददतः ऋ० १.१८७.५।

तव त्ये पितो रसा ऋ० १.१८७.४; काठ० सं० ४०.५६।

तव त्ये सोम पवमान ऋ० ६.६२.४।

तव त्ये सोम शक्तिभिः ऋ० १०.२५.५।

तव त्रिधातु पृथिवी ऋ० ७.५.४।

तव त्विषो जनिम ऋ० ४.१७.२।

तव द्युमन्तो अर्चयो ऋ० ५.२५.८,सा०१३२७

तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं ऋ० ८.१५.८; सा० १६४६; अ० २०.१०६.२।

तव द्रप्सा उदप्रुत ऋ० ६.१०६.८ सा०१३२७।

तव द्रप्सो नीलवान् ऋ० ८.१६.३१; सा० १८२३।

तव प्रणीतीन्द्र जोहुवानान् ऋ० ७.२८.३; ऐ० ब्रा० ५.३.३।

तव प्रत्नेभिरध्वभिः ऋ० ६.५२.२।

तव प्र यक्षि संदृशं ऋ० ६.१६.८।

तव प्रयाजा अनुयाजाश्च ऋ० १०.५१.६; नि० ८.२१।

तव भ्रमास आशुया ऋ० ४.४.२; य० १३.१०; तै० सं० १.२.१४.२; ऐ० ब्रा० १.४.२; मै० सं० २.७.२०५; काठ० सं० १६.१६०।

तव वायवृतस्पते ऋ० ८.२६.२१; य० २७.३४; का० सं० २६.३२।

तव विश्वे सजोषसो ऋ० ६.१८.३; सा० १०६५।

तव व्रते नि विशन्ते अ० ४.२५.३; पै० सं० ४.३४.३।

तव व्रते सुभगासः ऋ० २.२८.२।

तव शरीरं पतयिष्ण्वर्वन् ऋ० १.१६३.११, य० २६.२२; तै० सं० ४.६.७.४; का० सं० ३१.३४।

तव शुक्रासो अर्चयो दिवः ऋ० ६.६६.५।

तव श्रिया सुदृशो ऋ० ५.३.४।

तव श्रिये मरुतो मर्जयन्त ऋ० ५.३.३।

तव श्रिये व्यजिहीत ऋ० २.२३.१८; काठ० सं० ४०.८१।

तव श्रियो वर्ष्यस्येव ऋ० १०.६१.५; सा० ६८२; तां० ब्रा० १३.२.१।

तव स्याम पुरुवीरस्य ऋ० २.२८.३।

तव स्वादिष्ठाग्ने ऋ० ४.१०.५।

तव ह त्यदिन्द्र विश्वमाजौ ऋ० ६.२०.१३।

तवाग्ने होत्रं तव ऋ० २.१.२, १०.६१.१०।

तवायं सोमस्त्वमेह्यर्वाङ्० ऋ० ३.३५.६; य० २६.२३; ऐ० ब्रा० ६.३.३।

तवाहमग्न ऊतिभिर्नेदिष्ठाभिः ऋ० ८.१६.२६।

तवाहमग्न ऊतिभिर्मित्रस्य ऋ० ५.६.६।

तवाहं नक्तमुत ऋ० ६.१०७.२०; सा० ६२३।

तवाहं शूर रातिभिः ऋ० १.११.६।

तवाहं सोम रारण ऋ० ६.१०७.१६; सा० ५१६, ६२२; तां०ब्रा० १२.६.३; सा०ब्रा० ३.१.५.८।

तवेदं विश्वमभितः पशव्यं ऋ० ७.६८.६;

अ० २०.८७.६; तै० ब्रा० २.८.२.६; मै० सं० ४.१४.६५ ।

तवेदिन्द्र प्रणीतिषूत ऋ० ८.६.२२ ।

तवेदिन्द्रावमं वसु ऋ० ७.३२.१६; सा० २७०; आ० ब्रा० ६.१.२.४, ६.१.२.५; २.२.१ ।

तवेदिन्द्राहमाशसा ऋ० ८.७८.१० ।

तवेदु ताः सुकीर्तयो ऋ० ८.४५.३३ ।

तवेमाः प्रजा दिव्यस्य ऋ० ९.८६.२८ ।

तवेमे सप्त सिन्धवः ऋ० ९.६६.६ ।

तवोतिभिः सचमाना ऋ० ५.४२.८ ।

तस्तुवं न तस्तुवं अ० ५.१३.११; पै० सं० ८.२.१०; १६.११५.३ ।

तस्मा अग्निर्भारत ऋ० ४.२५.४ ।

तस्मा अभ्रो भवान् अ० ६.६.६ ।

तस्मा अरं गमाम वो ऋ० १०.९.३; य० ११.५२, ३६.१६; सा० १८३९; अ० १.५.३, तै० सं० ४.१.५.४, ५.६.१.१३, ७.४.१९.१८; तै० आ० ४.४२.४, १०.१.१२; काठ० सं० १६.५१, ३५.१९; मै० सं० २.७.६१, ४.९.२४८; कपि० ३०.३, ४८.४; ऋ० भू० सृष्टि-विद्याविषय; ल० ग्र० अमो० ६३१; सा० ब्रा० ३.१.२७; पै०सं० १६.४५.१० ।

तस्मा अर्षन्ति दिव्या ऋ० २.२५.४ ।

तस्मा इदास्ये हविः ऋ० ७.१०२.३; तै०ब्रा० २.४.५.६ ।

तस्मा इद्विश्वे धुनयन्त ऋ० २.२५.५ ।

तस्मा उदीच्या अ० १५.४.१०, ५.८ ।

तस्मा उद्यन्त्सूर्यो अ० ९.६.४; पै० सं० १६.११५.२ ।

तस्मा उषा हिङ्कृणोति अ० ९.६.१ ।

तस्मा ऊर्ध्वाया अ० १५.४.१६, ५.१२ ।

तस्मात् पितृभ्यो अ० ८.१०.४ ।

तस्मात् यज्ञात् सर्व० अ० १९.६.१३,१४ ।

तस्मादमुं निर्भजा० अ० १६.८.२,३१ ।

तस्मादश्वा अजायन्त ऋ० १०.९०.१०; य० ३१.८; अ० १९.६.१२; तै० आ० ३.१२.५; का० सं० ३५.८; ऋ० भू० सृष्टि-विद्याविषय; पै० सं० ९.५.१० ।

तस्माद् देवेभ्योऽर्धमासे अ० ८.१०.६ ।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः ऋ० १०.९०.९; य० ३१.७; अ० १९.६.१३; तै० आ० ३.१२.४; काठ० सं० ३५.६,७; ऋ० भू० सृष्टि-वेदोत्पत्तिविद्याविषय; गो० ब्रा० पू० १.६ ।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं ऋ० १०.९०.८; य० ३१.६; अ० १९.६.१४; तै० आ० ३.१२.४; गो० ब्रा० पू० १.६; पै० सं० ९.५.११.१२ ।

तस्माद् वनस्पतीनां अ० ८.१०.२ ।

तस्माद्विराडजायत ऋ० १०.९०.५, य० ३१.५, अ० १९. ६.९, तै० आ० ३.१२.२ ।

तस्माद् वै ब्राह्मणानां अ० १२.५.१७ ।

तस्माद् वै विद्वान् अ० ११.८.३२; पै० सं० १६.८८.३ ।

तस्मान्मनुष्येभ्यः अ० ८.१०.८ ।

तस्मिन्ना वेशया गिरो ऋ० १.१७६.२ ।

तस्मिन् हिरण्यये अ० १०.२.३२; पै० सं० १६.६२.४ ।

तस्मिन्हि सन्त्यूतयो ऋ० ८.४६.७ ।

तस्मै तवस्यमनु ऋ० २.२०.८ ।

तस्मै घृतं सुरां अ० १०.६.५; पै० सं० १६.४२.५ ।

तस्मै दक्षिणाया दिशः अ० १५.४.४, ५.४ ।

तस्मै ध्रुवाया अ० १५.४.१३, ५.१० ।

तं त्वा नरो दम आ ऋ० १.७३.४।

तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतं ऋ० ९.४८.१, सा० ८३६।

तं त्वा मज्मेषु ऋ० ८.४३.२०।

तं त्वा मदाय घृष्वय ऋ० ९.२.८, सा० १०४४।

तं त्वा मरुत्वती परि ऋ० ७.३१.८।

तं त्वा मती अगृभ्नत ऋ० ३.९.६।

तं त्वा यज्ञेभिरीमहे ऋ० ८.६८.१०, ऐ०ब्रा० ५.१.४।

तं त्वा वयं पति ऋ० १.६०.५।

तं त्वा वयं पितो ऋ० १.१८७.११।

तं त्वा वयं विश्ववारा ऋ० १.३०.१०।

तं त्वा वयं सुध्यो ऋ० ६.१.७, तै० ब्रा० ३.६.१०.३; मै० सं० ४.१३.५३; ऐ० ब्रा० २.१.१०।

तं त्वा वयं हवामहे ऋ० ८.४३.२३।

तं त्वा वाजेषु वाजिनम् ऋ० १.४.९, अ० २०.६८.९।

तं त्वा विप्रा वचोविदः ऋ० ९.६४.२३, सा० १०७७।

तं त्वा विप्रा विपन्यवो ऋ० ३.१०.९।

तं त्वा शोचिष्ठा ऋ० ५.२४.४, य० ३.२६, सा० ११०९, तै० सं० १.५.६.९, ४.४४.२८, का० सं० २७.४९; श० ब्रा० २.३.४.३१; कपि० ५.१।

तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो ऋ० ६.१६.११, य० ३.३, सा० ६६१, तै० मं० २.५.८.१, तै० ब्रा० १.२.१.१०, ३.५.२.१; कपि० २९.५, सं० वि० अन्त्येष्टि संस्कार; ष० ब्रा० ३.३.१७।

तं त्वा सहस्रचक्षसं ऋ० ९.६०.२।

तं त्वा सुतेष्वाभुवो ऋ० ९.६५.२७।

तं त्वा स्वप्न अ० १६.५.३,१०, १९.५७.४।

तं त्वा हविष्मतीः ऋ० ८.६.२७।

तं त्वा हस्तिनो ऋ० ९.८०.५।

तं त्वा हिन्वन्ति ऋ० ९.२६.६।

तं त्वौदनस्य पृच्छामि अ० ११.३.२२।

तं दितिश्चादितिश्च अ० १५.६.२०।

तं दुरोषमभी नरः ऋ० ९.१०१.३, सा० ६९९।

तं देवा बुध्ने रजसः ऋ० २.२.३।

तं धाता प्रत्यमुञ्चत अ० १०.६.२१; पै० सं० १६.४४.४।

तं पत्नीभिरनु गच्छेम य० १५.५०; काठ०सं० १८.१०५; तै० सं० ४.७.१३७; श० ब्रा० ८.६.३.१९; मै० सं० २.१२.१७; कपि० ४.५; २९.६।

तं पुण्यं गन्धर्वा० अ० ८.१०.८; पैं०सं० १६.१३५.६।

तं पृच्छता स ऋ० १.१४५.१।

तं पृच्छन्ति वज्रहस्तं ऋ० ६.२२.५; अ० २०.३६.५।

तं पृच्छन्तोऽवरासः ऋ० ६.२१.६।

तं प्रजापतिश्च अ० १५.६.२५,७,२।

तं प्रत्नथा पूर्वथा ऋ० ५.४४.१, य० ७.१२, तै० सं० १.४.९.१; नि० ३.१६; काठ० सं० ४.१६; श० ब्रा० ४.२.१.९, १४, १५; मै० सं० १. ३.३३; कपि० ३.१,३; ४१.८; ४३.१।

तं बृहच्च रथन्तरं अ० १५.२.२।

तं भूमिश्चाग्निश्च अ० १५.६.२।

तं मर्जयन्ता सुक्रतुम् ऋ० ८.८४.८, तै० सं० ३.५.११.२०; ऐ० ब्रा० १.३.५; काठ०सं० १५.६३।

तं मर्ता अमर्त्यं ऋ० १०.११८.६; ऐ० ब्रा० १.३.४।
तं मर्मृजानं महिषं ऋ० ६.६५.४।
तं यज्ञं प्रावृषा अ० १६.६.११।
तं यज्ञं बर्हिषि ऋ० १०.६०.७, य० ३१.६, अ० १६.६.११; तै० आ० ३.१२.३।
तं यज्ञसाधमपि ऋ० १.१२८.२।
तं यज्ञायज्ञियं अ० १५.२.१०।
तं युञ्जाथां मनसो ऋ० १.१८३.१।
तं युवं देवावश्विना ऋ० ४.१५.१०।
तं व इन्द्रं च तिनं ऋ० ६.१६.४।
तं व इन्द्रं व सुक्रतुम् ऋ० ६.४८.१४।
तं वत्सा उपतिष्ठन्ति अ० १३.४.६।
तं वर्धयन्तो मतिभिः ऋ० १०.६७.६; अ० २०.६१.६।
तं वश्चराथा ऋ० १.६६.६, नि० १०.२१।
तं वः शर्धं रथानाम् ऋ० ५.५३.१०।
तं वः शर्धं मरुतं ऋ० २.३०.११।
तं वः शर्धं रथेशुभम् ऋ० ५.५६.६।
तं वः सखायः सं ऋ० ६.२३.६।
तं वः सखायो मदाय ऋ० ६.१०५.१, सा० ५६६, १०६८।
तं वा रथं वयमद्या ऋ० ४.४४.१, अ० २०.१४३.१।
तं वा रथं वयमद्या हुवेम स्तोमैः ऋ० १.१८०.१०।
तं विराडनु व्यचलत् अ० १५.६.२३।
तं वृक्षा अप सेधन्ति अ० ५.१६.६।
तं वृधन्तं मारुतं ऋ० ६.६६.११।
तं वेधां मेधयाह्यन् ऋ० ६.२६.३।
तं वैरूपं च वैराजं अ० १५.२.१६।
तं वो दस्ममृतीषहम् ऋ० ८.८८.१, य० २६.११, सा० २३६, ६८५, अ० २०.६.१; ४६.४; दे० ब्रा० ५.१.१०, सा० ब्रा० ३.२.७.१।
तं वो दीर्घायुशोचिषं ऋ० ५.१८.३।
तं वो धिया नव्यस्या ऋ० ६.२२.७, अ० २०.३६.७।
तं वो धिया परमया ऋ० ६.३८.३।
तं वो महो महाय्यम् ऋ० ८.७०.८।
तं वो वाजानां पतिं ऋ० ८.२४.१८, सा० १६८८, अ० २०.६४.६।
तं वो वि न द्रुषदम् ऋ० १०.११५.३।
तं शग्मासो अरुषासो ऋ० ७.६७.६; काठ० सं० १७.८४।
तं शश्वतीषु मातृषु ऋ० ४.७.६।
तं शिशीता सुवृक्तिभिः ऋ० ८.४०.१०।
तं शिशीता स्वध्वरम् ऋ० ८.४०.११।
तं शुभ्रमग्निमवसे ऋ० ३.२६.२।
तं श्यैतं च नौधसं अ० १५.२.२२।
तं श्रद्धा च यज्ञश्च अ० १५.७.४।
तं सखायः पुरोरुचम् ऋ० ६.६८.१२, सा० १६८०, नि० ५.१५।
तं सध्रीचीरूतयो ऋ० ६.३६.३, तै० ब्रा० २.४.५.२; मै० सं० ४.१४.२७५; काठ०सं० ३८.८४।
तं सबाधो यतस्रुच ऋ० ३.२७.६, तै० ब्रा० ३.६.१.३; मै० सं० ४.१०.७; काठ० सं० ४०.११८।
तं सभा च समितिश्च अ० १५.६.२।
तं समाप्नोति अ० १३.२.१५।
तं सानावधि जामयो ऋ० ६.२६.५।
तं सिन्धवो मत्सरं ऋ० १०.३०.६।
तं सुप्रतीकं सुदृशम् ऋ० ६.१५.१०, तै० सं० २.५.१२.५,२६; काठ० सं० ७.१०.५।

तं सुष्टुत्या विवासे ऋ० ८.१६.३, अ० २०.४४.३ ।

तं सोतारो धनस्पृतं ऋ० ९.६२.१८ ।

तं स्मा रथं मघवन् ऋ० १.१०२.३ ।

तं हिन्वन्ति मदच्युतं ऋ० ९.५३.४; सा० १७१७ ।

तं हि शश्वन्त ईडते ऋ० ५.१४.३, तै० सं० ४.३.१३.८, २७; मै० सं० ४.१०.१२४; काठ० सं० १९.३४ ।

तं हि स्वराजं वृषभं ऋ० ८.६१.२; सा० १२३४; अ० २०.११३.२; ऐ० ब्रा० ४.५.३; ५.३.३; ८.१.२ ।

तं हुवेम यतस्रुचः ऋ० ८.२३.२० ।

तं होतारमध्वरस्य ऋ० ७.१६.१२, सा० १५१४; ऐ० ब्रा० ३.३.११ ।

ता अत्नत वयुनं ऋ० ५.४८.२ ।

ता अधरादुदीचीः अ० १२.२.४१; पै० सं० १७.३४.२ ।

ता अपः शिवा अ० १९.२.५; पै० सं० ८.८.११ ।

ता अभि सन्तमस्तृतं ऋ० ९.९.५ ।

ता अर्षन्ति शुभ्रियः अ० २०.४८.२ ।

ता अस्य ज्येष्ठमिन्द्रियं ऋ० १०.१२४.८ ।

ता अस्य नमसा सहः ऋ० १.८४.१२, सा० १००७, अ० २०.१०९.३; मै० सं० ४.१२.१०९; काठ० सं० ८.६१; १२.५९ ।

ता अस्य पृशनायुवः ऋ० २.८४.११, सा० १००६, अ० २०.१०९.२; मै० सं० ४.१२.११०; तै० सं० २.४.१४; ५.६.६ ।

ता अस्य वर्णमायुवो ऋ० २.५.५ ।

ता अस्य सूददोहसः ऋ० ८.६९.३; य० १२.५५, १५.६०; तै० सं० ४.२.४.१४, ५.५.६.६; तै० ब्रा० ३.११.६.२; काठ० सं० १६.२२८; ऐ० आ० ५.२.१; कपि० २५.९, ३२.१८ ।

ता आ चरन्ति समना ऋ० ४.५१.८ ।

ता इन्वेव समना ऋ० ४.५१.९ ।

ताई वर्धन्ति मह्यस्य ऋ० १.१५५.३ ।

ता उभौ चतुरः पदः य० २३.२०; श० ब्रा० १३.२.८.५, १३.५.२.२; ऋ० भू० भाष्यकरणशङ्कासमाधान विषय ।

ता कर्माषतरास्मै ऋ० १.१७३.४ ।

ता गृणीहि नमस्येभिः ऋ० ६.६८.३ ।

ता घा ता भद्रा उषसः ऋ० ४.५१.७ ।

ता जिह्वया सदमेदं ऋ० ६.६७.८ ।

ता तू त इन्द्र महतो ऋ० ४.२२.५ ।

ता तू ते सत्या ऋ० ४.२२.६ ।

ता ते गृणन्ति ऋ० ४.३२.११ ।

ता न ऽआ वोळहमश्विना ऋ० २.४१.९, य० २०.८३; का० सं० २२.७१ ।

ता नव्यसो जरमाणस्य ऋ० ६.६२.४ ।

तानश्वत्थ निः शृणुहि अ० ३.६.२; पै० सं० ३.३.२ ।

ता नः प्रजाः अ० १२.१.१६ ।

ता नः शक्तं पार्थिवस्य ऋ० ५.६८.३, सा० ११४५, १४६५ ।

ता नः स्तिपा तनूपा ऋ० ७.६६.३ ।

ता नासत्या सुपेशसा य० २०.७४; काठ०सं० १८.१०५; मै० सं० ३.११.३४; का० सं० २२.६२ ।

तानि कल्पद् ब्रह्मचारी अ० ११.५.२६; गो० ब्रा० उ० २.८; पै० सं० १६.१५५.६; सं० वि० समावर्त्तन संस्कार ।

तानि सर्वाण्यप अ० १२.५.११; पै० सं० १६.१४१.५ ।

तानीदहानि बहुलान्यासन् ऋ० ७.७६.२ ।

ता वामेषे रथानां ऋ० ५.८६.४; काठ० सं० ४.१०; ऐ० ब्रा० ५.१.४।

ता वां गीर्भिर्विपन्यवः ऋ० ७.९४.६; सा० ८०२।

ता वां धियोऽवसे ऋ० ४.४१.८।

ता वां नरा स्ववसे ऋ० १.११८.१०।

ता वां मित्रावरुणा ऋ० १०.१३२.२।

ता वां वास्तून्युश्मसि ऋ० १.१५४.६, य० ६.३, तै० सं० १.३.६.१, नि० २.७; काठ० सं० ३.१३।

ता वां विश्वस्य गोपा ऋ० ८.२५.१।

ता वां सम्यगद्रुहवाणो ऋ० ५.७०.२; सा० ९८६।

तावांस्ते मघवन् अ० १३.४.४४।

ता विग्रं धैथे ऋ० ६.६७.७।

ताविदा चिदहानां ऋ० ८.२२.१३।

ताविद्दु शंसं मर्त्यं ऋ० ७.९४.१२।

ताविद्दोषा ता उषसि ऋ० ८.२२.१४।

ता विद्वांसा हवामहे वा ऋ० १.१२०.३।

ता वृधन्तावनु द्यून् ऋ० ५.८६.५।

ता सम्राजा घृतासुती ऋ० २.४१.६, सा० ९१२; नि० २.१३।

ता सानसी शवसाना ऋ० ७.९३.२।

तासामेका हरिक्निका अ० २०.१२९.३।

ता सुजिह्वा उपह्वये ऋ० १.१३.८।

तासु त्वान्तर्जरस्य अ० २.१०.५।

ता सुदेवाय दाशुषे ऋ० ८.५.६।

तास्ते रक्षन्तु तव अ० ९.५.३८।

ता ह त्यद्वर्तिर्यद् ऋ० ६.६२.३।

ता हि क्षत्रं धारयेथे ऋ० ६.६७.६।

ता हि क्षत्रमविह्रुतं ऋ० ५.६६.२; ऐ०ब्रा० ५.१.४।

ता हि देवानामसुरा ता ऋ० ७.६५.२; ऐ० ब्रा० ५.३.३।

ता हि मध्यं भराणां ऋ० ८.४०.३; ऐ०ब्रा० ६.४.८।

ता हि शश्वन्त ईडत ऋ० ७.९४.५; सा० ८०१।

ता हि श्रेष्ठवर्चसा ऋ० ५.६५.२।

ता हि श्रेष्ठा देवताता ऋ० ६.६८.२।

ता हुवे ययोरिदं ऋ० ६.६०.४, सा० ८५३; ष०ब्रा० ४.२.२४।

तां आ रुद्रस्य मीढ्हुषो ऋ० ७.५८.५, नि० ४.१५।

तां आशिरं पुरोडाशं ऋ० ८.२.११।

तां इयानो महि ऋ० २.३४.१४।

तां उशतो वि बोधय ऋ० १.१२.४।

तां जुषस्व गिरं मम ऋ० ३.६२.८।

त. तिरोधामित अ० ८.१०.१२।

ता देवमनुष्या अ० ८.१०.२।

तां देवः सविता अ० ८.१०.३।

तां देवा अमीमां अ० १२.४.४२; पै०सं० १७.२०.२।

तां देवा मनुष्या अ० ८.१०.२; पै०सं० १६.१३३.८।

तां द्विमूर्धार्त्व्यो अ० ८.१०.३; पै०सं० १६.१३५.१।

तां धृतराष्ट्र ऐरावतो अ० ८.१०.१५।

तां पूषञ्छिवतमाम् ऋ० १०.८५.३७, अ० १४.२.३८, नि० ३.१२; पै० सं० १८.१०.९ सं० वि० गृहाश्रम संस्कार।

तां पूष्णः सुमतिं वयं ऋ० ६.५७.६।

तां पृथी वैन्यो अ० ८.१०.११; पै० सं० १६.१३५.२।

तां बृहस्पतिः अ० ८.१०.१५; पै० सं० २०.३.६।

तां मायामसुरा अ० ८.१०.४; पै० सं० १६.१३५.१।

तां मे सहस्राक्षो अ० ४.२०.४।

तां रजतनाभिः अ० ८.१०.११।

तां वसुरुचिः अ० ८.१०.७।

तां वां धेनुं न ऋ० १.१३७.३; ऐ० ब्रा० ५.२.७।

तां वो देवाः सुमतिं ऋ० ५.४१.१८।

तां सवितः सत्यसवां अ० ७.१५.१।

तां सवितुर्वरेण्यस्य य० १७.७४; काठ० सं० ८.४१; श० ब्रा० ६.२.३.१८; मै० सं० २.१०.६४, तै० सं० ४.६.५.१३; ५.४.७.१४; कपि० २८.४।

तां सु ते कीर्तिम् ऋ० १०.५४.१; ऐ० ब्रा० ५.३.४; ऐ० आ० १.३.७; ५.१.६।

तां स्वधां पितरः अ० ८.१०.८।

तांस्त्वं प्रच्छिन्द्धि अ० १०.३.१६।

तां ह जरितर्नः अ० २०.१३५.७; गो० ब्रा० उ० ६.१४।

तिग्मजम्भाय तरुणाय ऋ० ८.१९.२२।

तिग्ममनीकं विदितं अ० ४.२७.७; पै० सं० ८.१४.२।

तिग्ममायुधं मरुतां ऋ० ८.९६.९; मै० सं० ३.१६.८१।

तिग्ममेको बिभर्ति ऋ० ८.२९.५।

तिग्मं चिदेम ऋ० ६.३.४।

तिग्मा यदन्तरशनिः ऋ० ४.१६.१७।

तिग्मायुधौ तिग्महेती ऋ० ६.७४.४; मै०सं० ४.११.५७।

तिग्मो विभ्राजन् अ० १३.२.३३; पै० सं० १८.३०.६।

तिग्मो विभ्राजन् अ० १३.२.३३।

तिरश्चिराजेरसितात् अ० ७.५६.१; पै०सं० २०.१३.७।

तिरश्चीनो विततो ऋ० १०.१२९.५, य० ३३.७४, तै० ब्रा० २.८.९.५; ऋ० भू० सृष्टिविषय, का० सं० ३२.७४।

तिरः पुरु चिदश्विना ऋ० ३.५८.५।

तिर्यग्बिलश्चमसः अ० १०.८.९; पै० सं० १६.१०१.५; नि० १२.३७।

तिष्ठावरे तिष्ठ अ० १.१७.२; पै० सं० १९.४.१६।

तिष्ठा सु कं मघवन् ऋ० ३.५३.२।

तिष्ठा हरी रथ आ० ऋ० ३.३५.१; तै० ब्रा० २.७.१३.१; ऐ० ब्रा० ५.४.१।

तिस्र इडा सरस्वती य० २१.१९; काठ०सं० १८.११८; का० सं० २३.२०।

तिस्रश्च मे त्रिंशच्च अ० ५.१५.३; पै० सं० ८.५.३।

तिस्र स्त्रेधा सरस्वती य० २०.६३; काठ० सं० ३८.९६; का० सं० २२.५१; मै० सं० ३.११.२०।

तिस्रः क्षपस्त्रिः ऋ० १.११६.४, तै० आ० १.१०.३;ऋ०भू०नौविमानादिविद्याविषय।

तिस्रो जिह्वा वरुण अ० १०.१०.२८; पै० सं० १६.१०९.८।

तिस्रो दिवस्तिस्रः अ० ४.२०.२, १९.२७.३ पै० सं० ८.६.२, १०.७.३।

तिस्रो दिवो अत्य अ० १९.३२.४, पै० सं० १२.४.४।

तिस्रो देष्ट्राय ऋ० १०.११४.२।

तिस्रो देवीर्बर्हिरिदं वरीयं ऋ० १०.७०.८।

तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं य० २७.१९, काठ० सं० १८.१००, मै० सं० २.१२.४३, तै० सं०

४.१.८.९ का० सं० २९.१९, कपि० २९.५ ।

तिस्रो देवीर्महि नः अ० ५.३.७, पै० सं० ६.१.६, काठ० सं० ४०.७८ ।

तिस्रो देवीर्हविषा य २०.४३, काठ० सं० ३८.३८, मै० सं० ३.११.८, का० सं० २२.३१ ।

तिस्रो द्यावः सवितुः ऋ० १.३५.६ ।

तिस्रो द्यावो निहिता ऋ० ७.८७.५ ।

तिस्रो भूमीर्धारयन् ऋ० २.२७.८, तै० सं० २.१.११.१७, मै० सं० ४.१४.२०१, काठ० सं० ११.४६ ।

तिस्रो मातृस्त्रीन्पितॄन् ऋ० १.१६४.१०, अ० ९.९.१०, पै० सं० १६.६६.१० ।

तिस्रो मात्रा गन्धर्वाणां अ० ३.२४.६, पै० सं० ५.३०.८ ।

तिस्रो यदग्ने शरदः ऋ० १०.७२.३, तै०ब्रा० २.४.५.६ ।

तिस्रो यह्वस्य समिधः ऋ० ३.२.९ ।

तिस्रो वाच ईरयति ऋ० ९.९७.३४, सा० ५२५, ८५६, नि० १४.१४, सा०ब्रा० ३.१.४.१० ।

तिस्रो वाच उदीरते ऋ० ९.३३.४, सा० ४७१,८६६, सं०ब्रा० २.३.२.१३, सा०ब्रा० ३.१.४.४ ।

तिस्रो वाचः प्र वद ऋ० ७.१०१.१ ।

तिस्रो ह प्रजा अ० १०.८.३, पै० सं० १६.१०१.६ ।

तीक्ष्णीयांसः परशो अ० ३.१९.४, पै० सं० ३.१९.३ ।

तीक्ष्णेनाग्ने चक्षुषा ऋ० १०.८७.९ अ० ८.३.९, पै० सं० १६.६.९ ।

तीक्ष्णेषवो ब्राह्मणा अ० ५.१८.९, पै० सं० ९.१८.२ ।

तीक्ष्णो राजा विषासहिः अ० १९.३३.४, पै० सं० १२.५४ ।

तीर्थैस्तरन्ति प्रवतो अ० १८.४.७ ।

तीव्रस्याभिवयसो ऋ० १०.१६०.१, अ० २०.९६.१, ऐ०आ० ५.१.१ ।

तीव्रान्घोषान्कृण्वते ऋ० ६.७५.७, य० २९.४४, तै० सं० ४.६.६.७, मै० सं० ३.१६.३७ ।

तीव्राः सोमास आगहि ऋ० ८.८२.८ ।

तीव्राः सोमास आ गह्याशीर्वन्त ऋ० १.२३.१ ।

तीव्रो वो मधुमां अयं ऋ० २.४१.१४ ।

तुग्रो ह भुज्युमश्विनो ऋ० १.११६.३, तै० आ० १.१०.२, ऋ० भू० नौविमानादि विद्या-विषय ।

तुचे तुनाय तत्सु नो ऋ० ८.१८.१८, सा० ३९५, सा० ब्रा० ३.२.१.१० ।

तुजे नस्तने पर्वताः ऋ० ५.४१.९ ।

तुञ्जे तुञ्जे य ऋ० १.७.७, अ० २०.७०१३, नि० ६.१८ ।

तुभ्यं गावो घृतं ऋ० ९.३१.५ ।

तुभ्यं घेते जना ऋ० ८.४३.२९ ।

तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम ऋ० ८.४३.१८, य० १२.११६, तै० सं० १.३.१४.३, तै० ब्रा० ३.७.१.७, काठ० सं० ३५.८२, श० ब्रा० ७.३.२.८, कपि० ४८.१५ ।

तुभ्य दक्ष कविक्रतो ऋ० ३.१४.७ ।

तुभ्यं पयो यत् ऋ० १.१२१.५ ।

तुभ्यं ब्रह्माणि गिर ऋ० ३.५१.६ ।

तुभ्यं भरन्ति क्षितयो ऋ० ५.१.१०, तै०ब्रा० २.४.७.९, काठ० सं० ७.९८ ।

तुभ्यमग्रे पर्यवहन् ऋ० १०.८५.३८, अ० १४.२.१ ।

तुभ्यमारण्याः पशवो अ० ११.२.२४, पै० सं० १६.१०६.४ ।

तुभ्यमुषासः शुचयः ऋ० १.१३४.४ ।

तुभ्यमेव जरिमन् अ० २.२८.१, तै० सं० १.१२ १ ।

तुभ्यं वातः पवतां अ० ८.१.५, पै० सं० १६.१.५ ।

तुभ्यं वाता अभिप्रियः ऋ० ६.३१.३ ।

तुभ्यं शुक्रास शुचयस्तु ऋ० १.१३४.५ ।

तुभ्यं श्चोतन्त्यध्रिगो ऋ० ३.२१.४, तै०ब्रा० ३.६.७.२, ऐ० ब्रा० २.२.२, मै० सं० ४.१३.३१, काठ० सं० १६.२४६ ।

तुभ्यं सुतासः सोमाः सा० २१३ ।

तुभ्यं सुतास्तुभ्यमु ऋ० १०.१६०.२, अ० २०.६६.२ ।

तुभ्यं सोमाः सुता इमे ऋ० ८.६३ २५, सा० २१३ ।

तुभ्यं स्तोका घृत ऋ० ३.२१.३, तै० ब्रा० ३.६.७.२, ऐ० ब्रा० २.२.२, मै० सं० ४.१३.३०, काठ० सं १६.२४८ ।

तुभ्यं हिन्वानो वसिष्ठ ऋ० २.३६.१ ।

तुभ्यायमद्रिभिः सुतो ऋ० ८.८२.५ ।

तुभ्यायं सोमः परिपूतो ऋ० १.१३५.२, ऐ०ब्रा० ५.२.७ ।

तुभ्येदमग्ने मधुमत्तमं ऋ० ५.११.५, मै०सं० २.१३.३६ ।

तुभ्येदमिन्द्र परिषिच्यते ऋ० १०.१६७.१ ।

तुभ्येद्रिन्द्र स्व अ० २०.२४.८, ए० ब्रा० ५.२.१ ।

तुभ्येद्रिन्द्र मरुत्वते ऋ० ८.७६.८ ।

तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्ये ऋ० ३.४२.८, अ० २०.२४.८ ।

तुभ्येदिमा सवना ऋ० ६.२२.७, २०.७३.१ ।

तुभ्येदेते बहुला ऋ० १.५४.६ ।

तुभ्यदेते मरुतः ऋ० ५.३०.६ ।

तुभ्येमा भुवना कवे ऋ० ६.६२.२७, सा० ७७७ ।

तुरण्यवोऽङ्गिरसो ऋ० ७. ५२.३ ।

तुरण्यवो मधुमन्तं ऋ० ८.५१.१०, सा० १६१०, अ० २०.११६.२ ।

तुराणामतुराणां अ० ७.५०.२, पै० सं० १६.६.६ ।

तुरीयं नाम यज्ञियं ऋ० ८.८०.६ ।

तुविक्ष ते सुकृतं ऋ० ८.७७.११, नि० ६.३३ ।

तुविग्रीवो वृषभो वावृधानो ऋ० ५.२. १२ ।

तुवीग्रीवो वपोदरः ऋ० ८.१७.८, अ० २०.५.२ ।

तुविशुष्म तुविक्रतो ऋ० ८.६८.२, सा० १७७२, ऐ० ब्रा० ४.५.१, ८.१.१ ।

तुर्वन्नो जीयान् ऋ० ६.२०.३ ।

तूतुजानो महेमते ऋ० ८.१३.११ ।

तृचेभ्यः स्वाहा अ० १६.२३.१६ ।

तृणस्कंद्रस्य नु विशः ऋ० १.१७२.३ ।

तृणानि प्राप्तः अ० ६.७.२२, पै० सं० १६.१३६.२३ ।

तृणैरावृता पलदान् अ० ६.३.१७, पै० सं० १६.४०.७ ।

तृतीयकं वितृतीयं अ० ५.२२.२३, पै० सं० २.३२.५, २०.५७.८ ।

तृतीये धानाः सवने ऋ० ३.५२.६ ।

तृतीयेभ्यः शङ्खेभ्यः अ० १९.२२.१० ।

तृदिला अतृदिलासो ऋ० १०.९४.११ ।

तृन्द्धि दर्भ सपत्नान् अ० १९.२९.२ ।

तृषु यदन्ना तृषुणा ऋ० ४.७.११, काठ० सं० ७.६४ ।

तृष्टमेतत्कटुकमेतत् ऋ० १०.८५.३४; अ० १४.१.२९, पै० सं० १८.३.८ ।

तृष्टामया प्रथमं ऋ० १०.७५.६ ।

तृष्टासि तुष्टिका अ० ७.११३.२, पै० सं० २०.१६.२ ।

तुष्टिके तृष्टिवन्दन अ० ७.११३.१, पै० सं० २०.१६.१ ।

तृष्णामारं क्षुधामारं अ० ४.१७.७ ।

ते अज्येष्ठा अकनिष्ठास ऋ० ५.५६.६ ।

ते अद्रयोदशयन्त्रास ऋ १०.९४.८ ।

ते अस्मभ्यं शर्म ऋ० १.९०.३ ।

ते अस्य योषणे य० २७.१७, काठ० सं० १९.९.८, मै० सं० २.१२.४१, तै० सं० ४.१.८०७, का० सं० २९.१७, कपि० २९.५ ।

ते अस्य सन्तु केतवो ऋ० ९.७०.३ सा० १४२५ ।

ते आचरन्ती समनेव ऋ० ६.७५.४, य० २९.४१, तै० सं० ४.६.६.४, नि० ९.३८, मै० सं० ३.१६.३४, का० सं० ३१.१५ ।

ते कुष्ठिकाः सरमायै अ० ९.४.१६, पै० सं० १६.२५.६ ।

ते कृषि च सस्यं च अ० ८.१०.१२ ।

ते क्षोणीभिररुणेभिः ऋ० २.३४.१३ ।

ते गव्यता मनसा ऋ० ४.१.१५ ।

ते घा राजानो अमृतस्य ऋ० १०.९३.४ ।

ते घेदग्ने स्वाध्यो ये त्वा ऋ० ८.१९.१७ ।

ते घेदग्ने स्वाध्योऽहा विश्वा ऋ० ८.४३.३० ।

ते चिद्धि पूर्वीरभि ऋ० ७.४८.३ ।

ते जज्ञिरे दिव ऋष्वास ऋ० १.६४.२ ।

तेजः पशूनां हविः य० १९.९५, काठ० सं० ३८.४२ मै० सं० ३.११.८७, का० सं० २१.९५ ।

ते जानत स्वमोक्यं ऋ० ८.७२.१४, सा० १४८१ ।

तेजिष्ठया तपनी ऋ० २.२३.१४ ।

तेजिष्ठा यस्यारतिः ऋ० ६.१२.३, मै० सं० ४.१४.२१२ ।

तेजोऽसि तेजो मयि य० १९.९; काठ० सं० ३८.६७; मै० सं० ४.९.१२३; तै० सं० १.४.४. ५,१२; ६.६.३.२४, का० सं० २१.९; स० प्र० ७ समु०, ऋ०भू० ईश्वर-प्रार्थनायाचना०; आर्याभि० २.९; ।

तेजोऽसि शुक्रममृतम् य० २२.१; काठ०स० १.३३; तै०सं० १.१.१०.१३;१७; का०सं० २४.१; कपि० ४८.१ ।

ते ते अग्ने त्वोता ऋ० ७.१६.२७ ।

ते ते देव नेतः ऋ० ५.५०.२ ।

ते ते देवाय दाशतः ऋ० ७.१७.७ ।

ते त्वा मदा अमदन् ऋ० १,५३.६, अ० २० २१.६ ।

ते त्वा मदा इन्द्र मादयन्तु ऋ० ६.२३.५, अ० २०.१२.५ ।

ते त्वा मदा बृहदिन्द्र ऋ० ६.१७.४ ।

ते त्वा रक्षन्तु अ० ८.१.१४, पै० सं० १६. २.४ ।

ते दशग्वाः प्रथमा ऋ० २.३४.१२ ।

ते देवेभ्य आ अ० १२.२.५०, पै० सं० १७. ३४.१० ।

तेऽधराञ्चः प्र अ० ३.६.७, ९.२.१२; पै०

सं० ३.३.७, १६.७७.२ ।

ते न आस्नो वृकाणां ऋ० ८.६७.१४ ।

ते न इन्द्रः पृथिवी ऋ० ६.५१.११ ।

तेन तमभ्यतिसृजामो अ० १६.१.५, पै० सं० १६.१२६.१–५, ७.८.१० ।

तेन नासत्या गतं ऋ० १.४७.६ ।

तेन नो वाजिनीवसू परावतः ऋ० ८.५.३० ।

तेन भूतेन हविषा अ० ६.७८.१, पै० सं० १६.१६.६ ।

तेन वो वाजिनीवसू पश्वे ऋ० ८.५.२० ।

तेन सत्येन जागृतम् ऋ० १.२१.६ ।

तेन स्तोतृभ्य आ भर ऋ० ८.७७.८ ।

ते नस्त्राध्वं ते ऋ० ८.३०.३ ।

ते नः पूर्वास उपरास ऋ० ६.७७.३ ।

ते नः सन्तु युजः सदा ऋ० ८.८३.२ ।

ते नः सहस्रिणं रयिं ऋ० ६.१३.५, सा० ११६२ ।

ते नूनं नोऽयमूतये ऋ० १०.१२६.३ ।

तेनेषितं तेन जातं अ० १६.५३.६, पै० सं० १२.२.६ ।

तेनैनं विध्यामि अ० १६.७.१ ।

ते नो अर्वन्तो हवन ऋ० १०.६४.६, य० ६.१७, तै० स० १.७.८.११; मै० सं० १.११.१२; काठ० स० १३.५३; का० सं० २३.११; श० ब्रा० ५.१.५.२३ ।

ते नो गृणाने महिनो ऋ० १.१६०.५ ।

ते नो गोपा अपाच्यः ऋ० ८.२८.३ ।

ते नो नावमुरुष्यत ऋ० ८.२५.११ ।

ते नो भद्रेण शर्मणा ऋ० ८.१८.१७ ।

ते नो मित्रो वरुणो अर्यमा ऋ० ५.४१.२ ।

ते नो रत्नानि धत्तन ऋ० १.२०.७, ऐ० ब्रा० ५.४.२ ।

ते नो रायो द्युमतो वाजवतः ऋ० ६.५०.११ ।

ते नो रुद्रः सरस्वती ऋ० ६.५०.१२ ।

ते नो वसूनि काम्या ऋ० ५.६१.१६ ।

ते नो वृष्टिं दिवस्परि ऋ० ६.६५.२४, सा० ११६५ ।

ते प्रत्नासो व्युष्टिषु ऋ० ६.६८.११ ।

ते पूतासो विपश्चितः सा० ११०२ ।

तेभ्यो गाधा अयथं ऋ० १०.२८.११ ।

तेभ्यो द्युम्नं बृहद्यशः ऋ० ५.७६.७ ।

ते म आहुर्य आययुः ऋ० ५.५३.३ ।

ते मन्वत प्रथमं सा० ६०६ ।

ते मन्वत प्रथमं नाम ऋ० ४.१.१६; आ० ब्रा० ६.३.२.५, ७.२ ।

ते मर्मृजत दहवांसो ऋ० ४.१.१४ ।

ते मायिनो ममिरे ऋ० १.१५६.४ ।

तेऽमुष्मै परा वह अ० १६.६.७ ।

ते राया ते सुवीर्यैः ऋ० ४.८.६ ।

तेऽरुणेभिर्वरमागैः ऋ० १.८८.२ ।

ते रुद्रासः सुमखा ऋ० ५.८७.७ ।

तेऽवदन् प्रथमा ऋ० १०.१०६.१, अ० ५.१७.१ ।

तेऽवर्धन्त स्वतवसो ऋ० १.८५.७, तै० सं० ४.१.११.३ ।

तेऽविन्दन्मनसा ऋ० १०.१८१.३; ऐ० ब्रा० १.४.४ ।

ते विश्वा दाशुषे वसु ऋ० ६.६४.६, सा० १०३६ ।

ते वृक्षाः सह अ० १०.१३१.११ ।

ते वो हृदे मनसे ऋ० ४.३७.२ ।

तेषां न कश्चना अ० ६.६.४ ।

तेषामासन्नानामतिथिः अ० ६.६.४; पै०सं०

१६.११२.१०; सं० वि० संन्यास संस्कार।

तेषां प्रज्ञानाय अ० ११.३.५३।

तेषां सर्वेषामीशा अ० ११.६.२६।

तेषां हि चित्रमुक्थ्यं ऋ० ८.६७.३।

तेषां हि मह्ना महतां ऋ० १०.६५.३।

ते सत्येन मनसा ऋ० १०.६७.८, अ० २०. ९१.८।

ते सत्येन मनसा दीध्यानाः ऋ० ७.९०.५; ऐ० ब्रा० ५.४.१।

ते सीषपन्त जोषम् ऋ० ७.४३.४।

ते सुतासो मदिन्तमाः ऋ० ९.६७.१८, सा० १८११।

ते सूनवः स्वपसः ऋ० १.१५९.३।

ते सोमादो हरी ऋ० १०.९४.९, नि० २.५।

ते स्पन्द्रासो नोक्षणो ऋ० ५.५२.३।

ते स्याम देव वरुण ऋ० ७.६६.९, सा० १०६९; गो० ब्रा० उ० ५.१३.५८६।

ते स्याम ये अग्नये ऋ० ४.८.५; काठ० सं० १२.४८।

ते हि द्यावापृथिवी भूरिरेतसा ऋ० १०.९२. ११।

ते हि द्यावापृथिवी मातरा ऋ० १०.६४. १४।

ते हि द्यावापृथिवी विश्व ऋ० १.१६०.१; ऐ० ब्रा० ४.२.४, ५.४।

ते हिन्विरे अरुणं ऋ० ८.१०१.६।

ते हि पुत्रासो अदितेः ऋ० ८.१८.५, य० ३. ३३; श० ब्रा० २.३.४.३७; कपि० ५.२।

ते हि प्रजाया अभरन्त ऋ० १०.९२.१०।

ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमा आदित्येन ऋ० १०.७७.५।

ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमाः सधस्थम् ऋ० ७. ३९.४, नि० ६.१३।

ते हि वस्वो वसवानाः ऋ० १.९०.२।

ते हि श्रेष्ठवर्चसः ऋ० ६.५१.१०।

ते हि ष्मा वनुषो ऋ० ८.२५.१५।

ते हि सत्या ऋतस्पृश ऋ० ५.६७.४।

ते हि स्थिरस्य शवसः ऋ० ५.५२.२।

तैस्त्वा सर्वैरभि अ० ४.१६.९।

तोके हिते तनय ऋ० ४.४१.६।

तोशा वृत्रहणा हुवे ऋ० ३.१२.४, सा० १७०२; गो० ब्रा० उ० ३.१५.४७६।

तोशास रथयावाना ऋ० ८.३८.२, सा० १०७४।

तौदी नामासि अ० १०.४.२४, पै० सं० १६. १७.६।

तौविलिकेऽवेल अ० ६.१६.३।

त्मना वहन्तो ऋ० १.९६.१०।

त्मना समत्सु हिनोत ऋ० ७.३४.६।

त्यमु वः सत्रासाहं ऋ० ८.९२.७, सा० १७०, १६४२; ऐ० ब्रा० ५.१.५।

त्यमु वो अप्रहणं ऋ० ६.४४.४, सा० ३५७; ऐ० ब्रा० ५.१.४।

त्यमू षु वाजिनं ऋ० १०.१७८.१, सा० ३३२, अ० ७.८५.१, नि० १०.२७; ऐ० ब्रा० ५. १.१,४, ४.३.६, ५.३, ५.२.२,७, ३.१,३, ४.१; ऐ० ब्रा० ५.३.१; ष० ब्रा० पू० ६. १.६; सा० ब्रा० ३.२.१.२, ३.९.३।

त्यस्य चिन्महतो निर्मृगस्य ऋ० ५.३२.२।

त्यं चित्पर्वतं गिरिं ऋ० ८.६४.५।

त्यं चिदत्रिमृतजुरं ऋ० १०.१४३.१।

त्यं चिदर्णं ऋ० ५.३२.८।

त्यं चिदश्वं ऋ० १०.१४३.२।

त्यं चिदस्य क्रतुभिः ऋ० ५.३२.५।

यं चिदित्था कत्पयं ऋ० ५.३२.६, नि० ६.३ ।

त्यं चिदेषां स्वधया ऋ० ५.३२.४ ।

त्यं चिद्धा दीर्घं ऋ० १.३७.११ ।

त्यं नु मारुतं गणं ऋ० ८.९४.१२ ।

त्यं सु मेषं ऋ० १.५२.१, सा० ३७७; ऐ० ब्रा० ५.३.१ ।

त्यान्नु क्षत्रियां ऋ० ८.६७.१, तै० सं० २.१.११.५,१८; मै० सं० ४.१२.५ ।

त्यान्नु पूतदक्षसो ऋ० ८.९४.१० ।

त्यान्नु य वि रोदसी ऋ० ८.९४.११ ।

त्यान्वश्विना हुवे ऋ० ८.१०.३ ।

त्रपु भस्म हरितं अ० ११.३.८; पै० सं० १६.५३.१३ ।

त्रय इन्द्रस्य सोमाः ऋ० ८.२.७; ऐ० ब्रा० ५.१.१,५, २.७ ।

त्रयस्त्रिंशद् देवताः अ० १६.२७.१०; पै०सं० १७.३७.६ ।

त्रयः कृण्वन्ति भुवनेषु ऋ० ७.३३.७ ।

त्रयः केशिन ऋ० १.१६४.४४, अ० ६.१०.२६, नि० १२.२६ ।

त्रयः कोशासश्चोतन्ति ऋ० ८.२.८ ।

त्रयः पवयो मधुवाहने ऋ० १.३४.२; ऋ० भू० नौविमानादिविद्याविषय ।

त्रयः पोषास्त्रिवृत्ति अ० ५.२८.३; पै० सं० २.५६.१ ।

त्रयः सुपर्णा अ० १८.४.४ ।

त्रयः सुपर्णा स्त्रिवृता अ० ५.२८.८ ।

त्रया देवा एकादशः य० २०.११, काठ० सं० ३८.५३; मै० सं० ३.११.६२; श० ब्रा० १२.८.३.२६; का० सं० २१.१०६ ।

त्रयोदशर्चेभ्यः अ० १६.२३.१० ।

त्रयो दासा आञ्जनस्य अ० ४.९.८; पै० सं० ८.३.७ ।

त्रयो लोकाः अ० १२.३.२०; पै० सं० १७.३७.१० ।

त्राता नो बोधि दहशान ऋ० ४.१७.१७ ।

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं ऋ० ६.४७.११, य० २०.५०, सा० ३३३, अ० ७.८६.१, तै० सं० १.६.१२.५,१६; मै० सं० ४.९.२५३, १२.५१; काठ० सं० १७.६८; का० शा० १०; का० सं० २२.३८; ऋ० भू० राजप्रजाधर्मविषय; सा० ब्रा० ३.१.३.१०; पै० सं० ५.४.११ ।

त्रातारं त्वा तनूनां ऋ० २.२३.८ ।

त्रातारो देवा अधि वोचता ऋ० ८.४८.१४ ।

त्रायध्वं नो अघ अ० ६.९३.३; पै० सं० १९.१४.१५ ।

त्रायन्तामिमं देवाः ऋ० १०.१३७.५; अ० ४.१३.४; पै० सं० ५.१८.५ ।

त्रायन्तामिमं पुरुषं अ० ८.७.२; पै० सं० १६.१२.२ ।

त्रायन्तामिह देवाः ऋ० १०.१३७.५, अ० ४.१३.४ ।

त्रायमाणे विश्वजिते अ० ६.१०७.२ ।

त्रिकद्रुकेभिः पतति ऋ० १०.१४.१६, अ० १८.२.६, तै० आ० ६.५.३, काठ० सं० ४०.८६ ।

त्रिकद्रुकेषु चेतनं०/० नो गिरः ऋ० ८.९२.२१, सा० ७२४, अ० २०.११०.३, सा० ब्रा० ३.१.७.२ ।

त्रिकद्रुकेषु०/० नो गिरः सदा वृधम् ऋ० ८.१३.१८, नि० १.१० ।

त्रिकद्रुकेषु महिषो ऋ० २.२२.१, सा० ४५७, १४८६, अ० २०.९५.१, तै० ब्रा० २.५.८.

६; ऐ० ब्रा० ४.१.३; ऐ० आ० ५.१.१; श० ब्रा० १३.५.१.६ ।

त्रितः कूपे ऋ० १.१०५.१७, नि० ६.२७ ।

त्रिते देवा अमृजत अ० ६.११३.१; पै० सं० १.७०.३; १६.३३.११ ।

त्रिधा हितं पणिभिः ऋ० ४.५८.४, य० १७.६.२, तै० आ० १०.१०.२, काठ० सं० ४०.४५ ।

त्रिपञ्चाशः क्रीळति ऋ० १०.३४.८ ।

त्रिपाजस्यो वृषभो ऋ० ३.५६.३ ।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः ऋ० १०.६०.४, य० ३१.४, सा० ६१८, अ० १६.६.२, तै०आ० ३.१२.२, का० सं० ३५.४, ऋ० भू० राज-प्रजाधर्मविषय; आ० ब्रा० ६.३६.१ ।

त्रिभिः पद्भिर्द्याम् ऋ० १०.६०.४; य० ३१.४; अ० १६.६.२; पै० सं० ६.५.२ ।

त्रिभिः पवित्रैरपुपोद् ऋ० ३.२६.८; ऋ०भू० १.१.१ ।

त्रिभिष्ट्वं देव सवितः ऋ० ६.६७.२६ ।

त्रिमूर्धानं सप्तरश्मिं ऋ० १.१४६.१ ।

त्रिरन्तरिक्षं सविता ऋ० ४.५३.५ ।

त्रिरश्विना सिन्धुभिः ऋ० १.३४.८ ।

त्रिरस्मै सप्तधेनवो ऋ० ६.७०.१, सा० ५६०, १४२३; सा० ब्रा० ३.३.३.४ ।

त्रिरस्य ता परमा ऋ० ४.१.७ ।

त्रिरा दिवः सवितर्वार्याणि ऋ० ३.५६.६ ।

त्रिरा दिवः सविता सोषवीति ऋ० ३.५६.७ ।

त्रिरुत्तमा दूणशा ऋ० ३.५६.८ ।

त्रिर्देवः पृथिवी ऋ० ७.१००.३, तै० ब्रा० २.४.३.५; मै० सं० ४.१४.६२ ।

त्रिर्नो अश्विना दिव्यानि ऋ० १.३४.६, ऋ० भू० १६५ ।

त्रिर्नो अश्विना यजता ऋ० १.३४.७ ।

त्रिर्नो रयिं वहतमश्विना ऋ० १.३४.५ ।

त्रिर्यातुधानः प्रसितिं ऋ० १०.८७.११, अ० ८.३.११; पै० सं० १६.७.१ ।

त्रिर्वर्तिर्यातं त्रिरनुव्रते ऋ० १.३४.४ ।

त्रिवन्धुरेण त्रिवृता रथेन त्रिचक्रेण ऋ० १.११८.२; काठ० सं० १७.६२ ।

त्रिवन्धुरेण त्रिवृता रथेन ऋ० ८.८५.८ ।

त्रिवन्धुरेण त्रिवृता सुपेशसा ऋ० १.४७.२ ।

त्रिविष्टिधातु प्रतिमानं ऋ० १.१०२.८ ।

त्रिवृदसि त्रिवृते त्वा य० १५.६, तै० स० ३.५.२.१५, कपि० २६.६ ।

त्रिशीर्षाणं त्रिककुदं अ० ५.२३.६ ।

त्रिश्चिदक्तोः प्र चिकितु ऋ० ७.११.३ ।

त्रिश्चिन्नो अद्या ऋ० १.३४.१ ।

त्रिषधस्था सप्तधातुः ऋ० ६.६१.१२; ऐ० ब्रा० ५.१.१ ।

त्रिषधस्थे बर्हिषि ऋ० २.४७.४ ।

त्रिषन्धे तमसा अ० ११.१०.१६ ।

त्रिषु पात्रेषु अ० १०.१०.१२ ।

त्रिष्टवा देवा अजनयन् अ० १६.३४.६ ।

त्रिशच्छतं वर्मिण ऋ० ६.२७.६ ।

त्रिंशद्धामा वि राजति ऋ० १०.१८६.३, य० ३.८, सा० ६३२, १३७८; अ० ६.३१.३, २०.४८.६, तै०सं० १.५.३.३; मै० सं० १.६.७; काठ० सं० ७.७२; कपि० ६.२ ।

त्रिः शाम्बुभ्यो अ० १६.३६.५; पै० सं० ७.१०.५ ।

त्रिः षष्टिस्त्वा मरुतो ऋ० ८.६६.८ ।

त्रिः सप्त मयूर्यः ऋ० १.१६१.१४ ।

त्रिः सप्त यद्गुह्यानि ऋ० १.७२.६ ।

त्रिः सप्त विष्पुलिङ्गका ऋ० १.१६१.१२ ।

त्रिः सप्त सस्रा नद्यो ऋ० १०.६४.८।

त्रिः स्मा माह्नः ऋ० १०.९५.५, नि० ३.२१।

त्रीणि च्छन्दांसि अ० १८.१.१७।

त्रीणि जाना परि ऋ० १.९५.३।

त्रीणि त आहुर्दिवि ऋ० १.१६३.४, य० २९.१५, तै० सं० ४.६.७.४; काठ० सं० ४०.३८।

त्रीणि ते कुष्ठ अ० १९.३९.२; पै० सं० ७.१०.२।

त्रीणि त्रितस्य धारया ऋ० ९.१०.२.३, सा० १०१५।

त्रीणि पदानि अ० १८.३.४०; पै० सं० २.६.२।

त्रीणि पदान्यश्विनोः ऋ० ८.८.२३।

त्रीणि पदा विचक्रमे ऋ० १.२२.१८, य० ३४.४३, सा० १६७०, अ० ७.२६.५, तै० ब्रा० २.४.६.१; ऐ० ब्रा० १.४.८; का० सं० ३३.३१।

त्रीणि राजाना विदथे ऋ० ३.३८.६; स० प्र० ६ समु० ; सं०वि० गृहाश्रम संस्कार।

त्रीणि वशाजातानि अ० १२.४.४७; पै० सं० १७.२०.७।

त्रीणि शता त्री सहस्राणि ऋ० ३.९.९, १०.५२.६, य० ३३.७, तै० ब्रा० २.७.१२.२; का० सं० ३२.७।

त्रीणि शतान्यर्वतां ऋ० ८.६.४७।

त्रीणि सरांसि पृश्नयो ऋ० ८.७.१०।

त्रीण्यायूंषि तव ऋ० ३.१७.३, तै० सं० ३.२.११.६; मै० सं० ४.११.२५; १२.१३१; काठ० सं० २.१०;१२.४९।

त्रीण्युष्ट्रस्य नामानि अ० २०.१३२.१३।

त्रीण्येक उरुगायो ऋ० ८.२९.७।

त्रीन्त्समुद्रान्त्समसृपत् य० १३.३१; मै० सं० २.७.२२४, श० ब्रा० ७.५.१.९।

त्रीन् नाकांस्त्रीन् अ० १९.२७.४; पै० सं० १०.७.४।

त्री यच्छता महिषाणाम् ऋ० ५.२९.८।

त्री रोचना दिव्या धारयन्त ऋ० २.२७.९।

त्री रोचना वरुण ऋ० ५.६९.१; मै० सं० ४.१२.८।

त्री षधस्था सिन्धवः ऋ० ३.५६.५।

त्रेधा जातं जन्मनेदं अ० ५.२८.६; पै० सं० २.५९.४।

त्रेधा भागो अ० ११.१.५; पै० सं० १६.८६ ५।

त्र्यर्यमा मनुषो ऋ०५.२९.१; ऐ० ब्रा० ५.१.१।

त्र्यवयो गायत्र्यै पञ्च य० २४.१२, मै०सं० ३.१३.२१, का० सं० २६.१३।

त्र्यविश्च मे त्र्यवी च य० १८.२६, कपि० २९.१।

त्र्यम्बकं यजामहे ऋ० ७.५९.१२, य० ३.६०, अ० १४.१.१७, तै०सं० १.८.६.१० नि० १४.३५, मै०सं० १.१०.२५, काठ०सं० ९.३२, ३६.२७, कपि० ८.११, श०ब्रा० २.६.२.१२,१४, जी० दे० १.१२०, द० शा० ६२, जी० ले० २४१।

त्र्यायुषं जमदग्नेः य० ३.६२, अ० ५.२८.७ सं० प्र० ११ समु०, सं० वि० जात० चूडाकर्मसंस्कार, ल० ग्र० उ० ३६४, ऋ०भू० वेदसंज्ञा विचार।

त्र्युदायं देवहितं ऋ० ४.३७.३।

त्वज्जातास्त्वयि अ० १२.१.१५, पै० सं० १७.२.६।

त्वद्धि पुत्र सहसो ऋ० ३.१४.६।

त्वद्भिया विश आयन्नसि ऋ० ७.५.३।

त्वद्भियेन्द्र पार्थिवानि ऋ० ६.३१.२।

त्वद्वाजी वाजम्भरो ऋ० ४.११.४।

त्वद्विप्रो जायते ऋ० ६.७.३, काठ० सं० ४.१३५।

त्वद्विश्वा सुभगा ऋ० ६.१३.१।

त्वमग्न इन्द्रो वृषभः ऋ० २.१.३।

त्वमग्न ईडितो जातवेदो ऋ० १०.१५.१२; य० १९.६६, १८.३.४२, तै०सं० २.६.१२.५, का० सं० २१.६८।

त्वमग्न उरुशंसाय ऋ० १.३१.१४।

त्वमग्न ऋभुराके ऋ० २.१.१०।

त्वमग्ने अदितिर्देव ऋ० २.१.११।

त्वदग्ने काव्या ऋ० ४.११.३।

त्वमग्ने क्रतुभिः अ० १३.३.२३।

त्वमग्ने गृहपतिः ऋ० ७.१६.५, सा० ६१; मै० सं० २.१३.४७।

त्वमग्ने त्वष्टा ऋ० २.१.५।

त्वामग्ने दम आ विश्पतिं ऋ० २.१.८।

त्वमग्ने द्युभिस्त्वमा ऋ० २.१.१, य० ११.२७, तै० स० ४.१.२.२१, तै० आ० १०.७६;१, नि० ६.१.१३.१, मै० सं० २.७.२९, काठ० सं० १६.२०, कपि० ३०.१, श० ब्रा० ६.३.३.२५।

त्वमग्ने द्रविणोदा ऋ० २.१.७।

त्वमग्ने पुरुरूपो ऋ० ५.८.५।

त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरस्तमः ऋ० १.३१.२, ऐ० ब्रा० ५.१.२, का० सं० ३३.६।

त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरा ऋ० १.३१.१, य० ३४.१२।

त्वमग्ने प्रथमो मातरिश्वन ऋ० १.३१.३।

त्वमग्ने प्रमतिस्त्वं ऋ० १.३१.१०।

त्वमग्ने प्रयतदक्षिणं ऋ० १.३१.१५।

त्वमग्ने बृहद्वयो ऋ० ८.१०.२.१, तै० सं० ३.४.११.१।

त्वमग्ने मनवे द्याम् ऋ० १.३१.४।

त्वमग्ने यज्ञानां ऋ० ६.१६.१, सा० २, १४७४, सं० वि० सामान्य प्रकरण।

त्वमग्ने यज्यवे पायुः ऋ० १.३१.१३।

त्वमग्ने यातुधाना अ० १.७.७।

त्वमग्ने राजा वरुणो ऋ० २.१.४।

त्वमग्ने रुद्रो असुरो ऋ० २.१.६, तै० सं० १.३.१४.१, तै० ब्रा० ३.११.२.१।

त्वमग्ने वनुष्यतो ऋ० ६.१५.१२, ७.४.६।

त्वमग्ने वरुणो जायसे ऋ० ५.३.१, ऐ०ब्रा० ६.४.१०।

त्वमग्ने वसूंरिह ऋ० १.४५.१, सा० ९६।

त्वमग्ने वाघते ऋ० ४.२.१३।

त्वमग्ने वीरवद्यशो ऋ० ७.१५.१२, मै०सं० ४.१०.२१।

त्वमग्ने वृजिनवर्तनिं ऋ० १.३१.६।

त्वमग्ने वृषभः ऋ० १.३१.५।

त्वमग्ने व्रतपा असि ऋ० ८.११.१, य० ४.१६, अ० १९.५९.१, तै० सं० १.१.१४.१३, २.३.४; मै० सं० १.२.२८, ४.१०.५६, ऐ० ब्रा० ७.२.७, काठ० सं० २.१७, ६.४३, कपि० ३.५, ४.८, श०ब्रा० ३.२.२.२४, २५।

त्वमग्ने शशमानाय ऋ० १.१४१.१० ।

त्वमग्ने शोचिषा शोशुचान ऋ० ७.१३.२, तै० सं० १.५.११.६ ।

त्वमग्ने सप्रथा असि ऋ० ५.१३.४, सा० १४०७, तै० ब्रा० २.४.१.६, नि० ६.७, काठ० सं० २.७४, मै० सं० ४.१०.४५ ।

त्वमग्ने सहसा ऋ० १.१२७.९ ।

त्वमग्ने सुभृत ऋ० २.१.१२ ।

त्वमग्ने सुहवो ऋ० ७.१.२१ ।

त्वामग्ने स्वाध्यो ऋ० ६.१६.७ ।

त्वमङ्ग जरितारं ऋ० ५.३.११ ।

त्वमङ्ग प्रशंसिषो ऋ० १.८४.१९, य० ६.३७, सा० २४७, १७२३, नि० १४.२८, श० ब्रा० ३.९.४.२४ ।

त्वमध प्रथमं जायमानः ऋ० ४.१७.७ ।

त्वमध्वर्युरुत होतासि ऋ० १.९४.६ ।

त्वमपामपिधाना वृणोरप ऋ० १.५१.४ ।

त्वमपो यद्ध वृत्रं जघन्वान् ऋ० ३.३२.६ ।

त्वमपो वि दुरो ऋ० ६.३०.५ ।

त्वमप्सो यदवे तुर्वशाय ऋ० ५.३१.८ ।

त्वमर्यमा भवसि यत् ऋ० ५.३.२, सं० वि० विवाह संस्कार ।

त्वमसि प्रशस्यो ऋ० ८.११.२, आर्याभि० १.२६ ।

त्वमसि सहमानो अ० १९.३२.५, पै० सं० १२.४.५ ।

त्वमस्माकमिन्द्र विश्वध ऋ० १.१७४.१० ।

त्वमस्य पारे रजसो ऋ० १.५२.१२, आर्याभि० १.१३. ल० वे० नि० ८२ ।

त्वमस्यावपनी जनानाम् अ० १२.१.६१, पै० सं० १७.६.१० ।

त्वमायसं प्रति ऋ० १.१२१.९ ।

त्वमाविथ नर्यं तुर्वशं ऋ० १.५४.६ ।

त्वमाविथ सुश्रवसं ऋ० १.५३.१०. अ० २०.२१.१० ।

त्वमित्सप्रथा अस्य ऋ० ८.६०.५, सा० ४२ ।

त्वमित्सप्रथा असयग्ने सा० ४१ ।

त्वमिन्दो परि स्रव ऋ० ९.६२.९, सा० ९८१ ।

त्वमिन्द्र कपोताय अ० २०.१३५.१२ ।

त्वमिन्द्र नर्यो यां ऋ० १.१२१.१२ ।

त्वमिन्द्र प्रतूर्तिषु ऋ० ८.९९.५; य० ३३.६६; सा० ३११, १६३७; अ० २०.१०५.१; ऐ० ब्रा० ५.१.४; का० सं० ३२.६६; आ० ब्रा० ६.१.६.१ ।

त्वमिन्द्र बलादधि ऋ० १०.१५३.२; सा० १२०, अ० २०.९३.५; नि० ७.२ ।

त्वमिन्द्र यशा असि ऋ० ८.९०.५; सा० २४८, १४११; सा० ब्रा० ३.१.३.९, २.६.१७ ।

त्वमिन्द्र शर्मरिणा अ० २०.१३५.११; गो० ब्रा० उ० ६.१४ ।

त्वमिन्द्र सजोषसं ऋ० १०.१५३.४; अ० २०.९३.७ ।

त्वमिन्द्रस्त्वं महेन्द्रः अ० १७.१.१८; पै० सं० १८.३२.२ ।

त्वमिन्द्र स्रवितवा अपस्कः ऋ० ७.२१.३ ।

त्वमिन्द्र स्वयशा ऋभुक्षाः ऋ० ७.३७.४ ।

त्वमिन्द्राधिराजः अ० ६.९८.२; पै०सं० १९.१२.१४; काठ० सं० ८.६१; ऋ० भू० राजप्रजाधर्मविषय ।

त्वमिन्द्रा पुरुहूत अ० १९.५५.६ ।

त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वं सूर्यं ऋ० ८.९८.२; सा० १०२६, अ० २०.६२.६ ।

त्वमिन्द्राभिभूरसि विश्वा ऋ० १०.१५३.५; अ० २०.६३.८।

त्वमिन्द्राय विष्णवे ऋ० ६.५६.४।

त्वमिन्द्रासि विश्वजित् अ० १७.१.११; पै० सं० १८.३१.६।

त्वमिन्द्रासि वृत्रहा ऋ० १०.१५३.३; अ० २०.६३.६।

त्वमिमा ओषधीः सोम ऋ० १.६१.२२; य० ३४.२२; सा० ६०४; तै० ब्रा० २.८.३.१; काठ० सं० १३.५६; मै० सं० ४.१४.५; का० सं० ३३.१६; आ० ब्रा० ६.३.१.६; सा० ब्रा० ३.२.३.१०।

त्वमिमा वार्या पुरु ऋ० ६.१६.५।

त्वमीशिषे पशूनां ऋ० ८.६४.३; सा० १३५६; अ० २.२८.३; पै० सं० १.१२.४।

त्वमीशिषे वसुपते वसूनां ऋ० १.१७०.५।

त्वमीशिषे सुतानां ऋ० ८.६४.३; सा० १३५६; अ० २०.६३.३।

त्वमुत्तमास्योषधे ऋ० १०.६७.२३; य० १२.१०१; अ० ६.१५.१।

त्वमुत्सां ऋतुभिर्बद्बधानां ऋ० ५.३२.२।

त्वमेकस्य वृत्रहन् ऋ० ६.४५.५।

त्वमेतदधारयः कृष्णासु ऋ० ८.६३.१३, सा० ५६५; आ० ब्रा० ६.२.२.४।

त्वमेताञ्जनराज्ञो द्विर्दश ऋ० १.५३.६; अ० २०.२१.६।

त्वमेतानि प्रपिषे ऋ० १०.७३.८।

त्वमेतान्रुदतो जक्षतः ऋ० १.३३.७।

त्वमोदनं प्राशीः अ० ११.३.२७।

त्वया पूर्वमथर्वाणो अ० ४.३७.१; पै० सं० १३.४.१।

त्वया प्रमूर्णं अ० १२.५.६१।

त्वया मन्यो सरथं ऋ० १०.८४.१, अ० ४.३१.१, तै० ब्रा० २.४.१.१०, नि० १०.२६, पै० सं० ४.१२.१।

त्वया यथा गृत्समदासो ऋ० २.४.६।

त्वया वयमप्सरसो अ० ४.३७.२; पै० सं० १३.४.२।

त्वया वयमुत्तमं ऋ० २.२३.१०।

त्वया वयं पवमानेन ऋ० ६.६७.५८; सा० ५००; आ० ब्रा० ६.१.५.१।

त्वया वयं पवमानेन सोम ऋ० ६.६७.५८।

त्वया वयं मघवन्निन्द्र ऋ० १.१७८.५।

त्वया वयं मघवन्पूर्व्ये ऋ० १.१३२.१; नि० ५.२।

त्वया वयं शाशद्महे ऋ० १०.१२०.५, अ० ५.२.५, २०.१०७.८।

त्वया वयं सधन्यस्त्वोताः ऋ० ४.४.१४, तै० सं० १.२.१४.६, नि० ५.१४; मै० सं० ४.११.१२३; काठ० सं० ६.५४।

त्वया वयं सुवृधा ऋ० २.२३.६, नि० ३.११।

त्वया वीरेण वरिवो ऋ० ६.३५.३।

त्वया ह स्विद्युजा वयं चोदिष्ठेन ऋ० ८.१०२.३।

त्वया ह स्विद्युजा वयं प्रति ऋ० ८.२१.११, सा० ४०३।

त्वया हितमप्यमप्सु ऋ० २.३८.७।

त्वया हि नः पितरः ऋ० ६.६६.११; य० १६.५३, तै० सं० २.६.१२.३; मै० सं० ४.१०.१३४; काठ० सं० २१.६१; का० सं० २१.५५।

त्वया ह्यग्ने वरुणो धृतव्रतो ऋ० १.१४१.६।

त्वयि रात्रि वसामसि अ० १६.४७.६; पै० सं० ६.२०.६।

त्वयेदिन्द्र युजा वयं ऋ० ७.९२.३२ ।
त्वेषस्तेधूम ऊर्णोतु अ० १८.४.५९ ।
त्वष्टः श्रेष्ठेन अ० ५.२५.११ ।
त्वष्टा जायामजनयत् अ० ६.७८.३; पै०सं० १९ १६.११ ।
त्वष्टा तुरीपो अद्भुत य० २१.२०; काठ० सं० ३८.११९; मै० सं० ३.११.१२१; का० सं० २३.२१ ।
त्वष्टा दधच्छुष्मम् य० २०.४४; काठ० सं० ३८.७९; का० सं० २२.३२ ।
त्वष्टा दुहित्रे वहतुं ऋ० १०.१७.१, अ० १८.१.५३, ३.३१.५; नि० १२.११ ।
त्वष्टा नो दैव्यं सा० २९९ ।
त्वष्टा माया वेदपसा ऋ० १०.५३.९ ।
त्वष्टा मे दैव्यं अ० ६.४.१; पै० सं० १९.२. १ ।
त्वष्टा यद्वज्रं सुकृतं ऋ० १.८५.९ ।
त्वष्टा युनक्तु अ० ५.२६.८; पै० सं० ९.२.८ ।
त्वष्टारं अग्रजां गोपां ऋ० ९.५.९ ।
त्वष्टारं वायुमृभवो ऋ० १०.६५.१० ।
त्वष्टा रूपाणि हि प्रभुः ऋ० १.१८८.९ ।
त्वष्टा वासो अ० १४.१.५३; पै० सं० १८. ५.१०; सं० वि० विवाह संस्कार ।
त्वष्टा वीरं देवकामं य० २९.९; मै० सं० ३.१६.२५; तै० सं० ५.१.११.९; का० सं० ३१.९ ।
त्वष्टुर्जामातरं वयं ऋ० ८.२६.१२ ।
त्वं करञ्जमुत ऋ० १.५३.८; अ० २०.२१. ८ ।
त्वं कविं चोदयो ऋ० ६.२६.३ ।
त्वं काम सहसा० अ० १९.५२.२ ।
त्वं कुत्सं शुष्णहत्येषु ऋ० १.५१.६ ।
त्वं कुत्सेनाभि शुष्णं ऋ० ६.३१.३ ।
त्वं गोत्रमङ्गिरोभ्यो ऋ० १.५१.३ ।
त्वं च सोम नो वशो ऋ० १.९१.६, तै०सं० ३.४.११.३; मै० सं० ४.१२.१६७; काठ० सं० २३.२६ ।
त्वं चित्ती तव दक्षैः ऋ० ८.७९.४ ।
त्वं चिन्नः शम्या ऋ० ४.३.४ ।
त्वं जघन्य नमुचि ऋ० १०.७३.७ ।
त्वं जामिर्जनानां ऋ० १.७५.४; सा० १५३६ ।
त्वं जिगेथ न धना ऋ० १.१०२.१० ।
त्वं तदुक्थं इन्द्र ऋ० ६.२६.५ ।
त्वं तमग्ने अमृतत्व ऋ० १.३१.७ ।
त्वं तमिन्द्र पर्वतं अ० २०.१५.६ ।
त्वं तमिन्द्र पर्वतं न ऋ० १.५५.३ ।
त्वं तमिन्द्र पर्वतं महां ऋ० १.५७.६; अ० २०.१५.६ ।
त्वं तमिन्द्रमर्त्य ऋ० ५.३५.५ ।
त्वं तमिन्द्र वावृधानो ऋ० १.१३१.७ ।
त्वं तस्य द्वयाविनो ऋ० १.४२.४ ।
त्वं तं देव जिह्वया ऋ० ६.१६.३२ ।
त्वं तं ब्रह्मणस्पते ऋ० १.१८.५ ।
त्वं तान्त्सं च प्रति चासि ऋ० २.१.१५ ।
त्वं तान्वृत्रहत्ये ऋ० १०.२२.१० ।
त्वं तां अग्न उभयान्वि ऋ० १.१८९.७ ।
त्वं तां इन्द्रोभयां ऋ० ६.३३.३ ।
त्वं तू न इन्द्रं तं ऋ० १.१६९.४ ।
त्वं तूतं त्वं अ० १७.१.१५ ।
त्वं त्यत्पणीनां विदो ऋ० ९.१११.२, सा० १५९२ ।
त्वं त्यमिदतो रथं ऋ० १०.१७१.१ ।

त्वं नो अग्ने अङ्गिरस्तुतः ऋ० ५.१०.७।

त्वं नो अग्ने अद्भुत ऋ० ५.१०.२।

त्वं नो अग्ने अधराद् ऋ० १०.८७.२०; अ० ८.३.१९; पै० सं० १६.७.९।

त्वं नो अग्ने तव देव ऋ० १.३१.१२; य० ३४.१३; का० सं० ३३.७।

त्वं नो अग्ने पित्रोरुपस्थे ऋ० १.३१.९।

त्वं नो अग्ने महोभिः ऋ० ८.७१.१; सा० ६।

त्वं नो वरुणस्य ऋ० ४.१.४; य० २१.३; तै० सं० २.५.१२.२२,४.२.११.१९; काठ० सं० ३४.३८; ऐ० ब्रा० ७.२.८, ३.५; मै० सं० ४.१०.१०८, १४.२५६; कपि० ४८.१, का० सं० २३.३।

त्वं नो अग्ने सनये ऋ० १.३१.८; मै० सं० ४.११.१९।

त्वं नो असि भारताग्ने ऋ० २.७.५।

त्वं नो अस्या अमतेरुत ऋ० ८.६६.१४।

त्वं नो अस्या इन्द्र ऋ० १.१२१.१४।

त्वं नो अस्या उषसो ऋ० ३.१५.२।

त्वं नो गोपाः पथिकृद् ऋ० २.२३.६।

त्वं नो नभसस्पत अ० ६.७९.२; गो०ब्रा०उ० ४.९; पै० सं० १९.१६.१८।

त्वं नो मेधे अ० ६.१०८.१।

त्वं नो वायवेषामपूर्व्यः ऋ० १.१३४.६।

त्वं नो वृत्रहन्तमे ऋ० १०.२५.९।

त्वं पवित्रे रजसो ऋ० ९.८६.३०।

त्वं पाहीन्द्र सहीयसो ऋ० १.१७१.६।

त्वं पिप्रुं मृगयं ऋ० ४.१६.१३।

त्वं पुर इन्द्र चिकिद् ऋ० ८.९७.१४।

त्वं पुरं चरिष्णवं ऋ० ८.१.२८।

त्वं पुरूण्या भरा ऋ० १०.११३.१०।

त्वं पुरू सहस्राणि ऋ० ८.६१.८; सा० १५८२; ऐ० ब्रा० ४.५.३।

त्वं भगो न आ हि ऋ० ६.१३.२; मै० सं० ४.१०.२२।

त्वं भुवः प्रतिमानं ऋ० १.५२.१३।

त्वं भूमिमत्येषु अ० १९.३३.३; पै० सं० १२.५.३।

त्वं मखस्य दोधतः ऋ० १०.१७१.२।

त्वं मणीनामधिपा अ० १९.३१.११; पै०सं० १०.५.१।

त्वं महां इन्द्र तुभ्यं ऋ० ४.१७.१; काठ० सं० ६.३२; ऐ० ब्रा० ५.३.४।

त्वं महां इन्द्र यो ऋ० १.६३.१; ऐ० ब्रा० ५.३.४।

त्वं महीमवनिं विश्वधेनां ऋ० ४.१९.६।

त्वं मानेभ्य इन्द्र ऋ० १.१६९.८; मै० सं० ४.१४.१८५।

त्वं मायाभिरनवद्य ऋ० १०.१४७.२।

त्वं मायाभिरप ऋ० १.५१.५।

त्वं यविष्ठ दाशुषो ऋ० ८.८४.३; य० १३.५२, १८.७७; सा० १२४६; काठ० सं० ७.९७; मै० सं० २.१३.२७।

त्वं रक्षसे प्रदिशः अ० १७.१.१६; पै० सं० १८.३१.८।

त्वं रथं प्र भरो ऋ० ६.२६.४।

त्वं रयिं पुरुवीरं ऋ० ८.७१.६।

त्वं राजेन्द्र ये च ऋ० १.१७४.१।

त्वं राजेव सुव्रतो ऋ० ९.२०.५; सा० ९७२।

त्वं वरुण उत मित्रो ऋ० ७.१२.३; सा० १३०६; तै० ब्रा० ३.५.२.३, ६.१.३।

त्वं वरो सुषाम्णे ऋ० ८.२३.२८।

त्वं वर्मासि सप्रथः ऋ० ७.३१.६; अ० २०.१८.६।

त्वं वलस्य गोमतो ऋ० १.११.५; सा० १२५१।
त्वं विक्षु प्रदिवः सीद ऋ० ६.५.३।
त्वं विप्रस्त्वं कविः ऋ० ९.१८.२; सा० १०६४।
त्वं विश्वस्य जगतश्चक्षुः ऋ० १०.१०२.१२।
त्वं विश्वस्य धनदा ऋ० ७.३२.१७।
त्वं विश्वस्य मेधिरः ऋ० १.२५.२०।
त्वं विश्वा दधिषे ऋ० १०.५४.५।
त्वं विश्वेषां वरुणासि ऋ० २.२७.१०।
त्वं विष्णो सुमतिं विश्व ऋ० ७.१००.२।
त्वं वीरुधां श्रेष्ठतमा अ० ६.१३८.१; पै० सं० १.६८.२।
त्वं वृथा नद्य इन्द्र ऋ० १.१३०.५।
त्वं वृध इन्द्र पूर्व्यो ऋ० ६.२०.११।
त्वं वृषाक्षुं मघवन् अ० २०.१२८.१३।
त्वं वृषा जनानां ऋ० ८.१५.१०।
त्वं शतान्यव शम्बरस्य ऋ० ६.३१.४।
त्वं शर्धाय महिना ऋ० १०.१४७.५।
त्वं श्रद्धाभिर्मन्दसानः ऋ० ६.२६.६।
त्वं सत्य इन्द्र धृष्णुरेता ऋ० १.६३.३।
त्वं सद्यो अपिबो जात ऋ० ३.३२.१०।
त्वं समुद्रियो अपो ऋ० ९.६२.२६, सा० ७७६।
त्वं समुद्रो असि विश्ववित् ऋ० ९.८६.२९।
त्वं सिन्धूरवासृजो ऋ० १०.१३३.२, सा० १८०२, अ० २०.९५.३, नि० १.१५।
त्वं सुतस्य पीतये ऋ० १.५.६, अ० २०.६९.४, तै० सं० ३.४.११.४;१३; मै० सं० ४.१२.१७३; काठ० सं० २३.४०।
त्वं सुतो नृमादनो ऋ० ९.६७.२,।
त्वं सुतो मदिन्तमः सा० १३२४; सं० ब्रा० २.३।
त्वं सुष्वाणो अद्रिभिः ऋ० ९.६७.३, सा० १३२५।
त्वं सूकरस्य दर्दृहि ऋ० ७.५५.४।
त्वं सूरा हरितो रामयो ऋ० १.१२१.१३।
त्वं सूर्येन आ भज ऋ० ९.४.५, सा० १०५१।
त्वं सोम क्रतुभिः ऋ० १.९१ २, तै० ब्रा० २.४.३.८, ऐ० ब्रा० ३.२.७, ५.१.१, २.१,७,९, ३.१, ऐ० आ० १.२.१, मै०सं० ४.१४.३।
त्वं सोम तनू कृद्भ्यो ऋ० ८.७९.३, य० ५.३५, तै० सं० १.३.४.१, मै० स० १.२.८२; काठ० सं० ३.२।
त्वं सोम नृमादनः ऋ० ९.२४.४, सा० ९६५।
त्वं सोम परिणय्य आ ऋ० ९.२२.७।
त्वं सोम परिस्रव सा० ९८१।
त्वं सोम पवमानो ऋ० ९.५९.३।
त्वं सोम पितृभिः संविदानो ऋ० ८.४८.१३, य० १९.५४, तै० सं० २.६.१२.४, मै०सं० ४.१०.१३५, ऐ० ब्रा० ३.३.८, ऋ० भू० पृथिव्यादि लोकभ्रमणविषय काठ० सं० २१.८२, का० सं० २१.५६।
त्वं सोम प्रचिकितो ऋ० १.९१.१, य० १९.५२, तै० सं० २.६.१२.२, मै० सं० ४.१०.१३३, ऐ० ब्रा० १.२.३, काठ० सं० २१.६०।
त्वं सोम महे ऋ० १.९१.७; तै० ब्रा० २.४.५.३, मै०सं० ४.१०.१३२, काठ०सं० २.७५।
त्वं सोम विपश्चितं तना ऋ० ९.१६.८।
त्वं सोम विपश्चितं पुनानो ऋ० ९.६४.२५।

त्वं सोम सूर एषस्तोकस्य ऋ० ६.६६.१८।

त्वं सोमासि धारयुः ऋ० ६.६७.१, सा० १३२३, काठ० सं० २.६७।

त्वं सोमासि सत्पतिः ऋ० १.९१.५, तै०सं० ४.३.१३.२, तै० सं० ३.५.६.१, ऐ०ब्रा० १.१.४, ४.८ आर्याभि० १.१६।

त्वं स्त्री त्वं अ० १०.८.२७।

त्वं ह व्यत्पर्णीनां सा० १५६२।

त्वं ह त्यत्पर्णीनां सा० १५६२।

त्वं ह त्यत्सप्तभ्यो जायमानो ऋ० ८.९६.१६ सा० ३२६, अ० २०.१३७.१०।

त्वं ह त्यदप्रतिमानमोजः ऋ० ८.९६.१७, अ० २०.१३७.११।

त्वं ह त्यदिन्द्र कुत्समावः ऋ० ७.१९.२, अ० २०.३७.२।

त्वं ह त्यदिन्द्र चोदीः ऋ० १.६३.४।

त्वं ह त्यदिन्द्र सप्त ऋ० १.६३.७।

त्वं ह त्यदिन्द्रा रिषण्यन् ऋ० १.६३.५।

त्वं ह त्यदृणया इन्द्र ऋ० १०.८९.८।

त्वं ह त्यद्वृषभ ऋ० ८.९६.१८।

त्वं ह नु त्यददमायो ऋ० ६.१८.३।

त्वं ह यद्यविष्ठ्य ऋ० ८.७५.३, तै० सं० २.६.११.३, मै० सं० ४.११.१२६, काठ० सं० ७ १०८।

त्वं हि क्षैतवद्यशो ऋ० ६.२.१, सा० ८४।

त्वं हि नस्तन्वः सोमगोपाः ८.४८.९।

त्वं हि नः पिता वसो ऋ० ८.९८.११, सा० ११७०, अ० २०.१०८.२।

त्वं हि मन्यो अभिभूत्योजा ऋ० १०.८३.४, अ० ४.३२.४, मै० सं० ४.१२.८०, पै०सं० ४.३२.४।

त्वं हि मानुषे जने ऋ० ५.२१.२।

त्वं हि राधस्पते ऋ० ८.६१.१४, सा० १३२२।

त्वं हि विश्वतोमुख ऋ० १.९७.६, अ० ४.३३.६, तै० आ० ६.११.२, आर्याभि० १.३६, पै० सं० ४.२९.६।

त्वं हि वृत्रहन्नेषां ऋ० ८.९३.३३, सा० १७९२।

त्वं हि शश्वतीनामिन्द्र ऋ० ८.९८.६ सा० १२४६, अ० २०.६४.३।

त्वं हि शूरः सनिता ऋ० १.१७५.३, सा० १४३४।

त्वं हि ष्मा च्यावयन्नच्युता ऋ० ३.३०.४।

त्वं हि सत्यो मघवन्ननानतः ऋ० ८.९०.४।

त्वं हि सुप्रतूरसि ऋ० ८.२३.२९।

त्वं हि सोम वर्धयन् ऋ० ९.५१.४।

त्वं हि स्तोमवर्धन ऋ० ८.१४.११, अ० २०.२९.१।

त्वं होता मनुर्हितोऽग्ने ऋ० १.१४.११।

त्वं होता मनुर्हितो वह्निः ऋ० ६.१६.९।

त्वं होता मन्द्रतमो ऋ० ६.११.२।

त्वं ह्यग्ने अग्निना ऋ० ८.४३.१४, तै० सं० १.४.४६.१२, ३.५.११.१६; मै० सं० ४.१०.५१, काठ० सं० १५.६२; ऐ० ब्रा० २.३.५; ७.२.५; श० ब्रा० १२.४.३.५।

त्वं ह्यग्ने दिव्यस्य ऋ० १.१४४.६।

त्वं ह्यग्ने प्रथमो ऋ० ६.१.१, तै० ब्रा० ३.६.१०.१; ऐ० ब्रा० २.१.१०; मै० सं० ४.१३.४७; काठ० सं० १८.११४।

त्वं ह्यङ्ग दैव्य ऋ० ९.१०८.३, सा० ५८३,६३८।

त्वं ह्यङ्ग वरुण अ० ५.११.५;७; पै० सं० ८.१.५;७।

त्वं ह्येक ईशिष ऋ० ४.३२.७।

त्वं ह्येहि चेरवे ऋ० ८.६१.७, सा० २४०,१५८१; ऐ०ब्रा० ४.५.३.५.३.१,४.१।

त्वा दत्ते भी रुद्र शन्तमेभिः ऋ० २.३३.२, तै० ब्रा० २.८.६.८।

त्वामग्न आदित्यासः ऋ० २.१.१३, तै०ब्रा० २.७.१२.६।

त्वामग्न ऋतायवः समीधि ऋ० ५.८.१।

त्वामग्ने अङ्गिरसो गुहा ऋ० ५.११.६, य० १५.२८, सा० ९०८, तै० सं० ४.४.४.८; मै० सं० २.१३.३८; काठ० सं० ३९.१६।

त्वामग्ने अतिथिं पूर्व्यं ऋ० ५.८.२।

त्वामग्ने दम आ विश्पतिं ऋ० २.१.८।

त्वामग्ने धर्णसिं विश्वधा ऋ० ५.८.४।

त्वामग्ने पितरमिष्टिभिः ऋ० २.१.९।

त्वामग्ने पुष्करादधि ऋ० ६.१६.१३, य० ११.३२.१५.२२, सा० ९, तै० सं० ३.५.११.११, ४.१.३.७, ४.४.२; ५.१.४.११; मै० सं० २.७.३५; काठ० सं० १६.२८; ऐ० ब्रा० १.३.५, सं० ब्रा० २.११, काठ० सं० १६.२८।

त्वामग्ने प्रथममायुम् ऋ० १.३१.११।

त्वामग्ने प्रथमं देवयन्तो ऋ० ४.११.५।

त्वामग्ने प्रदिवं आहुतं ऋ० ५.८.७, तै०ब्रा० १.२.१.१२।

त्वामग्ने मनीषिणस्त्वम् ऋ० ८.४४.१९।

त्वामग्ने मनीषिणः सम्राजं ऋ० ३.१०.१।

त्वामग्ने मानुषीरीडते ऋ० ५.८.३; तै०सं० ३.३.११.६, ऐ० ब्रा० ७.२.५; श० ब्रा० १२.४.४.२।

त्वामग्ने यजमाना अनुद्यून ऋ० १०.४५.११ य० १२.२८, तै० सं० ४.२.२.१०; मै०सं० २.७.११९; काठ० सं० १६.१०९।

त्वामग्ने वसुपतिं वसूनां ऋ० ५.४.१, तै०सं० १.४.४६.८; काठ० सं० ७ ६६।

त्वामग्ने वाजसातमं ऋ० ५.१३.५, तै०सं० १.४.४६.९; मै० सं० ४.११.१०८; काठ० सं० ६.४१।

त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा य० २७.३; अ० २.६.३; काठ० सं० १८.८३; मैं० सं० २.१२.२७; का० सं० २९.३; कपि० २९.४।

त्वामग्ने समिधानं यविष्ठ्य ऋ० ५.८.६, तै० ब्रा० १.२.१.१२।

त्वामग्ने समिधानो वसिष्ठो ऋ० ७.९.६, नि० ६.१७।

त्वामग्ने साध्यो ३ मर्तासो ऋ० ६.१६.७।

त्वामग्ने हरितो वावशाना ऋ० ७.५.५।

त्वामग्ने हविष्मन्तो ऋ० ५.६.१, तै० ब्रा० २.४.१.४; काठ० सं० ३९.९८।

त्वामच्छा चरामसि ऋ० ९.१.५।

त्वामद्य ऋष आर्षेयः य० २१.६१; का०सं० २३.६४।

त्वामस्या व्युषि देव पूर्वे ऋ० ५ ३.८।

त्वामाहुर्देववर्मे अ० १९.३०.३।

त्वामिच्छवसस्पते ऋ० ८.६.२१, सा० १७६९।

त्वामिदत्र वृणते त्वायवः ऋ० १०.९१.९।

त्वामिदस्या उषसो व्युष्टिषु ऋ० १०.१२२.७।

त्वामिदा ह्यो नरो ऋ० ८.९९.१, सा० ३०२, ८१३; ऐ० ब्रा० ५.२.४; सा० ब्रा० ३.१.४.१५।

त्वामिद्धि त्वायवो ऋ० ८.९२.३३।

त्वामिद्धि सहसस्पुत्र ऋ० १.४०.२।

त्वामिद्धि हवामहे साता ऋ० ६.४६.१, य०

२७.३७, सा० २३४,८०६, अ० २०.९८.१, मै० सं० २.१३.६४, तै० सं० २.४.१४;३; ऐ० ब्रा० ४.५.३; ५.१.४; ३.१; ४.१; ८.१.२; ऐ० आ० ५ २.२; काठ० सं० ३९.८१; का० सं० २९.४३; ष० ब्रा० ४.३.६; श्रा० ब्रा० ६.१.२.१०; ६.११; सा० ब्रा० ३.३.६.४,१० ।

त्वामिद्यवयुर्मम ऋ० ८.७८.६ ।

त्वामिद् वृत्रहन्तम (०। उग्रम्) ऋ० ५.३५.६ ।

त्वामिद् वृत्रहन्तम सुतावन्तो ऋ० ८.९३.३० ।

त्वामिद् वृत्रहन्तम (०। हवन्ते) ऋ० ८.६ ३७ ।

त्वामिन्द्र ब्रह्मणा ऋ० १७.१.१४ ।

त्वामीडते अजिरं ऋ० ७.११.२, तै० ब्रा० ३.६.८.२ ।

त्वामीडे अध द्विता ऋ० ६.१६.४ ।

त्वामुग्रमवसे चर्षणी सह ऋ० ६.४६.६ अ० २०.८०.२ ।

त्वामु जातवेदसं ऋ० १०.१५०.३ ।

त्वामु ते दधिरे हव्यवाहं ऋ० ७.१७.६ ।

त्वामु ते स्वाभुवः ऋ० १०.२१.२ ।

त्वा युजा तव तत्सोम सख्यः ऋ० ४.२८.१ । काठ० सं० ९.७० ।

त्वा युजा नि स्विदत्सूर्यस्य ऋ० ४.२८.२ ।

त्वयेन्द्र सोमं सुषुमा ऋ० १.१०१.६ ।

त्वावतः पुरूवसो ऋ० ८.४६.१, सा० १९३, सा० ब्रा० ३.२.१.५ ।

त्वावतो हीन्द्र क्रत्वे ऋ० ७.२५.४ ।

त्वाष्ट्रेणाहं वचसा अ० ७.७४.३ ।

त्वां गन्धर्वा अखनंस्त्वा य० १२.९८ ।

त्वां चित्रश्रवस्तम ऋ० १.४५.६,य० १५.३१ तै०सं० ४.४.४.१० ।

त्वां जना ममसत्येष्विन्द्र ऋ० १०.४२.४, अ० २०.८९.४ ।

त्वां दूतमग्ने अमृतं ऋ० ६.१५.८, सा० १५६८ ।

त्वां देवेषु प्रथमं हवामहे ऋ० १.१०२.९ ।

त्वां पूर्वा ऋषयो ऋ० १०.९८.९ ।

त्वां मृजन्ति दश ऋ० ९.६८ ७ ।

त्वां यज्ञेभिरुक्थैः ऋ० १०.२४.२ ।

त्वां यज्ञेष्वीडते ऋ० १०.२१.६ ।

त्वां यज्ञेष्वृत्विजं अग्ने ऋ० ३.१०.२ ।

त्वां यज्ञेष्वृत्विजं चारुं ऋ० १०.२१.७ ।

त्वां यज्ञैरवीवृधन् ऋ० ९.४.९, सा० १०५५ ।

त्वां रिहन्ति मातरो ऋ० ९.१००.७, सा० १०१७ ।

त्वां वर्धन्ति क्षितयः पृथिव्या ऋ० ६.१.५, तै० ब्रा० ३.६.१०.२; ऐ० ब्रा० २.१.१०; मै० सं० ४.१३.५१; काठ० सं० १८.११८ ।

त्वां वाजी हवते वाजिनेयो ऋ० ६.२६.२ ।

त्वां विशो वृणतां अ० ३.४.२ ।

त्वां विश्वे अमृत जायमानं ऋ० ६.७.४, सा० ११४१ ।

त्वां विश्वे सजोषसो ऋ० ५.२१.३ ।

त्वां विष्णुर्बृहन्क्षयो ऋ० ८.१५.९, सा० १६४७, अ० २०.१०६.३ ।

त्वां विष्णुर्बृहन् अ० २०.१०६.३ ।

त्वां शुष्मिन्पुरुहूत वाजयं ऋ० ८.९८.१२, सा० ११७१, अ० २०.१०८.३ ।

त्वां सुतस्य पीतये ऋ० ३.४२.९, अ० २०.२४.९ ।

त्वां सोम पवमानं स्वाध्यः ऋ० ९.८६.२४।

त्वां स्तोमा अवीवृधन् ऋ० १.५.८, अ० २०.६९.६।

त्वां ह त्यदिन्द्रार्णसातौ ऋ० १.६३.६।

त्वां हि मन्द्रतममर्कशोकैः ऋ० ६.४.७, य० ३३.१३, नि० १.१७; का० सं० ३२.१३।

त्वां हि ष्मा चर्षणयो ऋ० ६.२.२।

त्वां हि सत्यमद्रिवो ऋ० ८.४६.२।

त्वां हि सुप्सरस्तमं ऋ० ८.२६.२४; ऐ० ब्रा० ५.१.१।

त्वां हीन्द्रावसे विवाचो ऋ० ६.३३.२।

त्वां ह्यग्ने सदमित्समन्यवः ऋ० ४.१.१।

त्विषीमन्तो अध्वरस्येव ऋ० ६.६६.१०; मै० सं० ४.१४.१५१।

त्वे अग्न आहवनानि ऋ० ७.१.१७।

त्वे अग्ने विश्वे अमृतासो ऋ० २.१.१४।

त्वे अग्ने सुमतिं ऋ० १.७३.७, तै० ब्रा० २.७.१२.५।

त्वे अग्ने स्वाहुत ऋ० ७.१६.७, य० ३३.१४, सा० ३८; का० सं० ३२.१४।

त्वे असुर्यं वसवो ऋ० ७.५.६।

त्वे इदग्ने सुभगे ऋ० १.३६.६।

त्वे इन्द्राप्यभूम विप्रा ऋ० २.११.१२।

त्वे क्रतुमपि वृञ्जन्ति ऋ० १०.१२०.३, सा० १४८५, अ० ५.२.३, २०.१०७.६, तै० सं० ३.५.१०१।

त्वे धर्माण आसते ऋ० १०.२१.३।

त्वे धेनुः सुदुधा ऋ० १०.६९.८।

त्वे पितो महानां ऋ० १.१८७.६; काठ०सं० ४०.४८।

त्वे राय इन्द्र तो शतमा ऋ० १.१६९.५।

त्वे वसूनि पुर्वणीक ऋ० ६.५.२, तै० सं० १.३.१४.६; काठ० सं० ७.१००।

त्वे वसूनि संगता ऋ० ८.७८.८।

त्वे विश्वा तविषी ऋ० १.५१.७।

त्वे विश्वा सरस्वती ऋ० २.४१.१७; ऐ० ब्रा० ५.१.४।

त्वे विश्वे सजोषसो सा० १०९५।

त्वेषमित्था समरणं शिमी ऋ० १.१५५.२, नि० ११.७।

त्वेषस्ते धूम ऋण्वति ऋ० ६.२.६, सा० ८३, अ० १८.४.५९।

त्वेषं गणं तवसं ऋ० ५.५८.२।

त्वेषं रूपं कृणुत उत्तरं यत् ऋ० १.९५.८।

त्वेषं रूपं कृणुते वर्णो अस्य ऋ० ९.७१.८।

त्वेषं वयं रुद्रं यज्ञसाधं ऋ० १.११४.४।

त्वेषं शर्धो न मारुतं तुविष्व ऋ० ६.४८.१५।

त्वेषासो अग्नेरमवन्तो ऋ० १.३६.२०।

त्वे सु पुत्र शवसो ऋ० ८.९२.१४, तै० सं० १.४.४६.३।

त्वे सोम प्रथमा वृक्तबर्हिषः ऋ० ९.११०.७, सा० १५०६।

त्वे ह यत्पितरश्चिन्न ऋ० ७.१८.१; ऐ०ब्रा० ५.२.२।

त्वोतासस्तवावसा ऋ० ९.६१.२४; ऐ० ब्रा० ५.१.१।

त्वोतासस्त्वा युजाप्सु ऋ० ८.६८.९।

त्वोतासो मघवन्निन्द्र विप्राः ऋ० ४.२९.५।

त्वोतो वाज्यह्रयो ऋ० १.७४.८।

दक्षस्य वादिते जन्मनि ऋ० १०.६४.५, नि० ११.२०।

दक्षिणा दिगिन्द्रो अ० ३.२७.२; पै० सं० ३.

२४.२; सं० वि० गृहाश्रमसंस्कार; ल० प० त्रि० २२० ।

दक्षिणामारोह य० १०.११; श० ब्रा० ५.४.१.४ ।

दक्षिणाया दिशः अ० ६.३.२६; पै० सं० १६.४१.६; सं० वि० गृहाश्रम संस्कार ।

दक्षिणायां त्वा दिशि अ० १८.३.३१; पै० सं० १७.३६.८ ।

दक्षिणायै त्वा दिशः अ० १२.३.५६; पै० सं० १६.६३.२ ।

दक्षिणावान्प्रथमो ऋ० १०.१०७.५ ।

दक्षिणाश्वं दक्षिणा ऋ० १०.१०७.७ ।

दक्षिणां दिशमभि अ० १२.३.८ ।

दण्डं हस्तादाददानो अ० १८.२.५९ ।

दण्डा इवेद्गोअजनास ऋ० ७.३३.६ ।

ददानमिन्न ददमन्त ऋ० १.१४८.२ ।

ददामीत्येव ब्रूयाद् अ० १२.४.१; पै० सं० १७.१६.१ ।

ददाम्यस्मा अवसानं अ० १८.२.३७ ।

ददि रेक्णस्तन्वे ददिर्वसु ऋ० ८.४६.१५; ऐ० ब्रा० ५.२.५ ।

ददिर्हि मह्यं अ० ५.१३.१ ।

दधन्नृतं धनयन्नस्य ऋ० १.७१.३ ।

दधन्वे या यदीमनु ऋ० २.५.३; सा० ९४; तै० सं० ३.३.३.२५; मै० सं० २.१३.२१; ल० भा० उ० ३६६ ।

दधानो गोमदश्ववत् ऋ० ८.४६.५ ।

दधामि ते मधुनो ऋ० ८.१००.२ ।

दधामि ते सुतानां ऋ० ८.३४.५ ।

दधिक्रामग्निमुषसं ऋ० ३.२०.५ ।

दधिक्राम्णु नमसा ऋ० ७.४४.२ ।

दधिक्रावाणं बुबुधानो ऋ० ७.४४.३; मै० सं० ४.११.२८ ।

दधिक्रावा प्रथमो वाज्यर्वा ऋ० ७.४४.४ ।

दधिक्राव्ण इदु नु ऋ० ४.४०.१ ।

दधिक्राव्ण इष ऊर्जो ऋ० ४.३९.४ ।

दधिक्राव्णो अकारिषं ऋ० ४.३९.६; य० २३.३२; सा० ३५८; अ० २०.१३७.३; तै० सं० १.५.११.१, ७.४.१९.१५; तां० ब्रा० १.६.१७; मै० सं० १.५.७,३.१३.५; ऐ० ब्रा० ६.५.६; काठ० सं० ६.२४, ७.२८; तां० ब्रा० १.६.१७; श० ब्रा० १३.५.२.९; का० सं० २५.३७; सा० ब्रा० ३.१.५.५; गो० ब्रा० उ० ६.१६ ।

दधिक्रां वः प्रथम ऋ० ७.४४.१ ।

दधिष्वा जठरे सुतं ऋ० ३.४०.५; अ० २०.६.५ ।

दधुष्ट्वा भृगवो मानुषे ऋ० १.५८.६ ।

दध्यङ् ह मे जनुषं ऋ० १.१३९.९ ।

दनो विश इन्द्र ऋ० १.१७४.२; नि० ६.३१ ।

दभ्रं चिद्धि त्वावतः ऋ० ८.४५.३२ ।

दभ्रेभिश्चिच्छशीयांसं ऋ० ४.३२.३ ।

दमूनसो अपसो ये सुहस्ताः ऋ० ५.४२.१२ ।

दमूना देवः अ० ७.१४.४; पै०सं० ३०.३.३ ।

दर्भः शोचिस्तरूणकम् अ० १०.४.२; पै०सं० १६.१५.२ ।

दर्भेण त्वं कृणवद् अ० १९.३३.५; पै० सं० १२.५.५ ।

दर्भेण देवजातेन अ० १९.३२.७; पै० सं० १७.१०.४ ।

दर्शन्नत्र शृतपां अनिन्द्रान् ऋ० १०.२७.६ ।

दर्शय मा यातुधानान् अ० ४.२०.६ ।

दर्शं नु विश्वदर्शतं ऋ० १.२५.१८ ।

दर्शोऽसि दर्शतोऽसि अ० ७.८१.४; पै० सं० २०.४१.४ ।

दविद्युतत्या रुचा ऋ० ९.६४.२८; सा० ६५४; ष० ब्रा० १.३.१७।

दशक्षिपः पूर्व्यं सीम् ऋ० ३.२३.३।

दशक्षियो युञ्जते बाहू ऋ० ५.४३.४।

दश च मे शतं च मे अ० ५.१५.१०; पै० सं० ८.५.१०।

दश ते कलशानां ऋ० ४.३२.१९।

दशमह्यं पौतक्रतः ऋ० ८.५६.२।

दश मासाञ्छशयानः ऋ० ५.७८.९; सं० वि० गर्भाधान-संस्कार।

दश रथान् प्रष्टिमतः ऋ० ६.४७.२४।

दश राजानः समिता ऋ० ७.८३.७।

दश रात्रीरशिवेनानवद्यून् ऋ० १.११६.२४।

दशर्चेभ्यः स्वाहा अ० १९.२३.७।

दशवृक्ष मुञ्चेमं अ० २.९.१; पै० सं० २.१०.१।

दश श्यावा ऋधद्रयो ऋ० ८.४६.२३।

दश साकमजायन्त अ० ११.८.३; पै० सं० १६.८५.३।

दशस्यन्ता मनवे पूर्व्यं ऋ० ८.२२.६।

दशस्यन्तो नो मरुतो ऋ० ७.५६.१७।

दशस्या नः पुर्वणीक ऋ० ६.११.६।

दशानामेकं कपिलं ऋ० १०.२७.१६।

दशावनिभ्यो दश कक्ष्येभ्यः ऋ० १०.९४.७; नि० ३.८।

दशाश्वान्दश कोशान् ऋ० ६.४७.२३।

दशेमं त्वष्टुर्जनयन्त गर्भं ऋ० १.९५.२; तै० ब्रा० २.८.७.४।

दस्मो हि ष्मा वृषणं ऋ० १.१२९.३।

दस्यूञ्छिम्यूंश्च पुरुहूत ऋ० १.१००.१८।

दस्रा युवाकवः सुता ऋ० १.३.३; य० ३३.५८; का० सं० ३२.५८; ऐ० ब्रा० ३.१.१।

दस्रा हि विश्वमानुषङ् ऋ० ८.२६.६।

दह दर्भ सपत्नान् अ० १९.२९.८; पै० सं० १३.११.१७।

दंष्ट्राभ्यां मलिम्लूञ्जम्भ्यै य० ११.७८।

दातो मे पृषतीनां ऋ० ८.६५.१०।

दादृहाणो वज्रमिन्द्रो ऋ० १.१३०.४।

दाधार क्षेमं ऋ० १.६६.३।

दाना मृगो न वारणः ऋ० ८.३३.८; सा० १६९७; अ० २०.५३.२, ५७.१२।

दानाय मनः सोमपावन्न ऋ० १.५५.७।

दानासः पृथुश्रवसः ऋ० ८.४६.२४।

दानो अग्नेधिया रयिं ऋ० ७.१.५।

दा नो अग्ने बृहतो दाः ऋ० २.२.७; तै०सं० २.२.१२.२१।

दामानं विश्वचर्षणे ऋ० ८.२३.२।

दाशराज्ञे परियत्ताय विश्व ऋ० ७.८३.८।

दाशेम कस्य मनसा ऋ० ८.८४.५; सा० १५५०।

दासपत्नीरहिगोपा ऋ० १.३२.११; नि० २.१७।

दिक्षु चन्द्राय अ० ४.३९.७।

दिग्भ्यः स्वाहा चन्द्राय य० ३९.२; श० ब्रा० १४.३.२.१०—१५; सं० वि० अन्त्येष्टि-संस्कार; तै० सं० ७.१.१५.१२।

दितिः शूर्पमदितिः अ० ११.३.४; पै० सं० १६.५३.६।

दितेश्च वै सोऽदितेः अ० १५.६.२१।

दितेः पुत्राणामदितेः अ० ७.७.१; मै० सं० १.३.२९।

दिदृक्षन्त उषसो ऋ० ३.३०.१३।

दिदृक्षेण्यः परि काष्ठासु ऋ० १.१४६.५।

दिवक्षसो अग्निजिह्वा ऋ० १०.६५.७।

दिवक्षसो धेनवो ऋ० ३.७.२ ।

दिवश्चित्ते बृहतो जातवेदः ऋ० १.५९.५ ।

दिवश्चिदस्य वरिमा ऋ० १.५५.१; ऐ०ब्रा० ५.३.४ ।

दिवश्चिदा ते रुचयन्त ऋ० ३.६.७ ।

दिवश्चिदा पूर्व्या ऋ० ३.३९.२ ।

दिवश्चिदा वोऽमवत्तरेभ्यो ऋ० १०.७६.५ ।

दिवश्चिद् घा दुहितरं ऋ० ४.३०.९ ।

दिवश्चिद्रोचनादधि ऋ० ८.८.७ ।

दिवस्कण्वास इन्दवो ऋ० १.४६.९ ।

दिवस्त्वा पातु अ० ५.२८.९ ।

दिवस्परि प्रथमं जज्ञे अग्निः ऋ० १०.४५.१, य० १२.१८, तै० सं० १.३.१४.१४, ४.२.२.१, नि० ४.१४, काठ० सं० १६.९९; मै० सं० २.७.१०८; श० ब्रा० ६.७.४.३ ।

दिवस्पृथिव्या अधि भवेन्दो ऋ० ९.३१.२ ।

दिवस्पृथिव्या पर्योज ऋ० ६.४७.२७; य० २९.५३; अ० ६.१२५.२; तै० सं० ४.६.६.१६ ।

दिवस्पृथिव्याः अ० ६.१२५.२, ६.१.१, १९.३.१; पै० सं० १५.११.६, २०.२०.१; मै० सं० ३.१६.३९; तै० सं० ४.६.६.१६ ।

दिवस्पृथिव्योरव आ० ऋ० १०.३५.२ ।

दिवस्पृष्ठे धावमानं अ० १३.२.३७; पै० सं० १८.२४.४ ।

दिवं च रोह अ० १३.१.३४ ।

दिवं पृथिवीमनु अ० ३.२१.७ ।

दिवं ब्रूमो नक्षत्राणि अ० ११.६.१०; पै० सं० १५.१४.३ ।

दिवः पीयूषमुत्तमं ऋ० ९.५१.२; सा० १२२७ ।

दिवः पीयूषं पूर्व्यं ऋ० ९.११०.८; सा० १४९४ ।

दिवः पृथिव्याः पर्योज य० २९.५३ ।

दिवा चित्तमः कृण्वन्ति ऋ० १.३८.९; तै० सं० २.४.८.४, मै० सं० २.४.२९; काठ० सं० ११.२३ ।

दिवा मा नक्तं अ० ५.२९.९; पै० सं० १३.९.१० ।

दिवा यान्ति मरुतो ऋ० १.१६१.१४ ।

दिवि क्षयन्ता रजसः ऋ० ७.६४.१; ऐ०ब्रा० ५.४.१ ।

दिवि चक्षुषे अ० ६.१०.३ ।

दिवि जातः समुद्रजः अ० ४.१०.४; पै०सं० ४.२५.६ ।

दिवि ते तूलमोषधे अ० १९.३२.३; पै० सं० १२.४.३ ।

दिवि ते नाभा परमो ऋ० ९.७९.४ ।

दिवि त्वात्रिरधारयत् अ० १३.२.१२; गो० ब्रा० पू० २.१७; पै० सं० १८.२१.६ ।

दिवि धा इमं यज्ञम् य० ३८.११; श० ब्रा० १४.२.२.१७, १८; मै० सं० ४.९.१२८; का० सं० ३८.११ ।

दिवि न केतुरधि ऋ० १०.९६.४; अ० २०.३०.४ ।

दिवि मे अन्यः पक्षो ऋ० १०.११९.११ ।

दिवि विष्णुर्व्यक्रँस्त य० २.२५; श० ब्रा० १.९.३.१०,१२,१४ ।

दिविस्पृशं यज्ञमस्माकं ऋ० १०.३६.६ ।

दिविपृष्टो अरोचत य० ३३.९२ ।

दिविस्पृष्टो यजतः अ० २.२.२; पै० सं० १.७.२ ।

दिवि स्वनो यतते भूम्योप ऋ० १०.७५.३ ।

दिवे चक्षुषे नक्षत्रेभ्यः अ० ६.१०.३; पै० सं० १९.२७.७ ।

दिवेदिवे सदृशीरन्यमर्धं ऋ० ६.४७.२१ ।

दिवे स्वाहा अ० ५.९.१,५; पैं० सं० ६.१३.१०।

दिवो धर्ता भुवनस्य ऋ० ४.५३.२।

दिवो धर्तासि शुक्रः पीयूषः ऋ० ९.१०९.६; सा० १२४३।

दिवो धामभिर्वरुण ऋ० ७.६६.१८।

दिवो न तुभ्यमन्विन्द्र ऋ० ६.२०.२।

दिवो न यस्य रेतसो दुघानाः ऋ० १.१००.३।

दिवो न यस्य विधतो ऋ० ६.३.७।

दिवो न सर्गा असस्रग्रमह्नां ऋ० ९.९७.३०।

दिवो न सानु पिप्युषी ऋ० ९.१६.७।

दिवो न सानु स्तनयन्न ऋ० ९.८६.९।

दिवो नाके मधुजिह्वा ऋ० ९.८५.१०।

दिवो नाभा विचक्षणो ऋ० ९.१२.४; सा० ११९९।

दिवो नु मां अ० ६.१२४.१; गो० ब्रा० पू० २.७।

दिवो नो वृष्टिं मरुतो ऋ० ५.८३.६, तै०सं० ३.१.११.२७, काठ० सं० ११.६२।

दिवो मादित्या अ० १९.१६.२, २७.१५; पैं० सं० १०.८.५, १३.३.१६।

दिवो मानं नोत्सदन् ऋ० ८.६३.२; ऐ०ब्रा० ५.२.७।

दिवो मूर्धासि पृथिव्या य० १८.५४; काठ० सं० १८.७९, ३९.५; श० ब्रा० ९.४.४.१३, मैं० सं० २.१२.१२; तै० सं० ४.३.४.५; कपि० २९.४।

दिवो मूलमवततं अ० २.७.३।

दिवो यः स्कम्भो धरुणः ऋ० ९.७४.२।

दिवो रुक्म उरुचक्षा ऋ० ७.६३.४; तै०ब्रा० २.८.७.३; काठ० सं० १०.५४।

दिवो वराहमरुषं ऋ० १.११४.५।

दिवो वा विष्णु उत य० ५.१९; काठ० सं० २.५६, २५.२३; श० ब्रा० ३.५.३.२२; मैं० सं० १.२.६८; तै० सं० १.२.१३.८; कपि० २.४, ४०.१।

दिवो वा सानु ऋ० १०.७०.५।

दिवो विष्ण अ० ७.२६.८; पैं० सं० २०.६.८; काठ० सं० २.५६, २५.२३; मैं० सं० १.२.६८।

दिव्यन्यः सदनं ऋ० २.४०.४; तै० ब्रा० २.८.१.५; मैं० सं० ४.१४.८।

दिव्यस्य सुपर्णस्य अ० ४.२०.३।

दिव्यं सुपर्णं वायसं ऋ० १.१६४.५२; अ० ७.३९.१; तै० सं० ३.१.११.१४; काठ० सं० १९.४१।

दिव्यः सुपर्णोऽवचक्षि ऋ० ९.९७.३३।

दिव्या आप अभि येदनम् ऋ० ७.१०३.२।

दित्यादित्याय अ० ४.३९.५।

दिव्यो गन्धर्वो अ० २.२.१; पैं० सं० १.७.१; काठ० सं० १५.४०।

दिशश्चतस्रोऽश्वतर्यो अ० ८.८.२२; पैं० सं० १६.३१.१।

दिशः सूर्यो न मिनन्ति ऋ० ३.३०.१२।

दिशां प्रज्ञानां अ० १३.२.२।

दिशो ज्योतिष्मतीः अ० १०.५.३८; पैं०सं० १६.१३२.३।

दिशोदिशः शालाया अ० ९.३.३१; पैं० सं० १६.४१.४१; सं० वि० गृहाश्रम-संस्कार; तै० सं० १.३.१०.६।

दिशो धेनवस्तासां अ० ४.३९.८।

दीक्षायै रूपं शष्पाणि य० १९.१३; का०सं० २१.१५।

दीदिवांसमपूर्व्यं ऋ० ३.१३.५; ऐ० ब्रा० २.५.३,८,९।

दीर्घतन्तुर्बृहदुक्षायमग्निः ऋ० १०.६९.७।

दीर्घतमा मामतेयो ऋ० १.१५८.६।

दीर्घस्ते अस्त्वङ्कुशो ऋ० ८.१७.१०; अ० २०.५.४; मै० सं० ४.१२.८२, काठ० सं० ६.३७।

दीर्घंह्याङ्कुशं ऋ० १०.१३४.६, सा०१०९१।

दीर्घायुत्वाय बृहते अ० २.४.१; पै०सं० १९.२५.६, २०.५४.९।

दीर्घायुस्त ओषधे य० १२ १००; कपि० ४७.१।

दुन्दुभेर्वाचं प्रयतां अ० ५.२०.५, पै० सं० ९.२४.५।

दुरदस्नैनमा शये अ० १२.४.१९, पै० सं० १७.१७.८।

दुराध्यो अदितिं स्रेवयन्तो ऋ० ७.१८.८।

दुरो अश्वस्य ऋ० १.५३.२, अ० २०.२१.२।

दुरोकशोचिः क्रतुर्न ऋ० १.६६.५।

दुरो देवीर्दिशो महीः य० २१.१६, मै० सं० ३.११.११७; का० सं० २३.१७।

दुर्णामा च सुनामा च अ० ८.६.४, पै० सं० १६.७९.४।

दुर्गे चिन्नः सुगं कृधि ऋ० ८.९३.१०।

दुर्मन्त्वत्रामृतस्य नाम ऋ० १०.१२.६, अ० १८.१.३४।

दुर्हार्दः संघोरं अ० १९.३५.३, पै० स० ११.४.३।

दुष्ट्यै हि त्वा अ० ३.९.५, पै० सं० ३.७.६।

दुष्वप्न्यं काम अ० ९.२.३, पै० सं० १६.७६.३।

दुहन्ति सप्तैकामुप ऋ० ८.७२.७, ऐ० ब्रा० १.४.५।

दुहान ऊधर्दिव्यं ऋ० ९.१०७.५, सा० ६७६।

दुहानः प्रत्नमित्पय ऋ० ९.४२.४, सा० ७६०।

दुहीयन्मित्रधितये युवाकुः ऋ० १.१२०.९, ऐ० ब्रा० १.४.४।

दुहे सायं दुहे प्रातः अ० ४.११.१२।

दुह्नां मे पञ्च अ० ३.२०.९, पै० सं० ३.३४.१०।

दूणाशं सख्यं तव ऋ० ६.४५.२६।

दूतं वो विश्ववेदसं ऋ० ४.८.१, सा० १२, मै० सं० २.१३.१८; ऐ० ब्रा० ५.३.२; काठ० सं० १२.५०, सं० ब्रा० २.४; सा० ब्रा० ३.१.४.३।

दूरमित पणयो वरीयः ऋ० १०.१०८.११।

दूरं किल प्रथमा ऋ० १०.१११.८।

दूराच्चकमानाय अ० १९.५२.३; पै० सं० १.३०.३।

दूराच्चिद्दा वसतो ऋ० ६.३८.२।

दूरादिन्द्रमनयन्ना ऋ० ७.३३.२।

दूरादिहेव यत्सती ऋ० ८.५.१, सा० २१९; सा० ब्रा०३.१.४.५।

दूरे चित्सन्तमरुषास: अ० ३.३.२; पै० सं० २.७४.२।

दूरे तन्नाम गुह्यं पराचैः ऋ० १०.५५.१।

दूरे पूर्णेनवसति अ० १०.८.१५।

दूष्या दूषिरसि अ० २.११.१; पै० सं० १.५७.१।

दृते दृंह मा ज्योक्ते य० ३६.१९।

दृते दृंह मा मित्रस्य य० ३६.१८; सं० वि०

संन्यास संस्कार; ऋ० भू० वेदोक्त धर्म विषय; आर्याभि० २.३ ।

दृतेरिव तेऽवृकमस्तु ऋ० ६.४८.१८ ।

दृशानो रुक्म उर्विया ऋ० १०.४५.८, य० १२.१.२५; तै० सं० १.३.१४.१६; ४.१.१०.११; २.२.४; १६; काठ० सं० १६.८२; १०८; १६.२६; श० ब्रा० ६.७.२.२; मै० सं० २.७.६३ ।

दृशेन्यो यो महिना ऋ० १०.८८.७ ।

दृढो दृंह स्थिरो अ० ११.७.४; पै० सं० १६.८२.४ ।

दृष्टमदृष्टमतृहम् अ० २.३१.२ ।

दृष्ट्वा परिस्रुतो रसँ य० १६.७६; काठ० सं० ३८.८; मै० सं० ३.११.४८ ।

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् य० १६.७७; काठ० सं० ७.३८; मै० सं० २.११.४५; सं०वि० गृहाश्रम संस्कार, ऋ० भू० वेदोक्तधर्म विषय; का० सं० २१.७८ ।

दृळ्हा चिदस्मा अनु दुः ऋ० १.१२७.४ ।

दृळ्हा चिद्या वनस्पतीन् ऋ० ५.८४.३; काठ० सं० १०.२७ ।

दृंह प्रत्नान् जनया अ० ६.१३६.२ ।

दृंह मूलमाग्रं अ० ६.१३७.३; पै० सं० १.३८.४ ।

दृंहस्व देवि पृथिवि य० ११.६६; मै० सं० २.७.७८; काठ० सं० १६.६८; तै० सं० ४.१.६.६; कपि० ३०.८ ।

देव इन्द्रो नराशंसः य० २१.५५, २८.१६; का० सं० २३.५८; ३०.१६ ।

देवकृतस्यैनसोऽव य० ८.१३; श० ब्रा० ४.४.३.१५; आर्याभि० २.१६ ।

देवजना गुदा अ० ६.७.१६; पै० सं० १६.१३६.१४ ।

देव त्वप्रतिसूर्य अ० २०.१३०.१० ।

देव त्वष्टर्यद्ध ऋ० १०.७०.६ ।

देवपीयुश्चरति अ० ५.१८.१३; पै० सं० ६.१७.४ ।

देवबर्हिर्वर्धमानं सुवीरं ऋ० २.३.४ ।

देवयन्तो यथा मतिं ऋ० १.६.६, अ० २०.७०.२ ।

देवश्रुतौ देवेष्वा य० ५.१७; काठ० सं० २.५२; श० ब्रा० ३.५.३.१४-२०; १.२.६०; कपि० २.४ ।

देव सवितरेष ते य० ५.३६ ।

देव सवितः प्रसुवः य० ६.१, ११.७, ३०.१, काठ०सं० १३.४४; श०ब्रा० ५.१.१.१४–१६; ६.३.१.१६; १३.६.२.६; गो० ब्रा० उ० १.४.३२८; मै० सं० १.११.१; २.७.७, सं०वि० सामान्य प्रकरण;सीमन्तोन्नयनसंस्कार; तै० सं० १.७.७.१; ४.१.१.७; का० सं० ३४.१ ।

देवसवितरेष ते य० ५.३६; काठ० सं० ३.७;२६.७; श० ब्रा० ३.६.३.१८—२०; कपि० ३.२, ४०.५ ।

देव संस्फान अ० ६.७६.३, गो० ब्रा० उ० ४.६, पै० सं० १६.१६.१६, तै० सं० ३.३.८.७ ।

देवस्ते सविता अ० १४.१.४६, पै० सं० १८.५.५ ।

देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः ऋ० ३.५५.१६ नि० १०.३३ ।

देवस्त्वा सवितोद्वपतु य० ११.६३, काठ० सं० १६.६२, श० ब्रा० ६.५.४.११-१२, तै० सं० ४.१.६.१७, ५.१.७.६, कपि० ३०.५ ।

देवस्य चेततो महीम् य० २२.११ ।

देवस्य त्वा सवितुः य० १.१०, २१, २४, ५.२२.२६, ६, १, ६, ३०, ६.३०, ३८, ११.६, २८, १८.३७, २०.३, ३७.१, ३८.१, अ० १६.५१.२, काठ० सं० १.५, २०, २४, २५, २.४७, ६०, ६२, ३.१२, २१,६.३६, ३७, १४.१३, १६.१, २१, २६.२३, २७.५, ३१.१८, २१, ३८.४५, १३५, मै० सं० १.१.२३, २.३६, ७२, ६.५, ११.२६, २.६.१०, ३.८.२२, ११.६१, ४.१.६, ६०, ६.२, ६६, ७.६.३०.११, का० सं० २१.६६, २४.२, ३७.१, ३८.१, श० ब्रा० १.१.२.१७, २.२.१-२, ४.४, ४, ७, ३.५.४.४, ५, ८.६, ६.१.४–७, १२–१४, ७.१.१–२, ४–७, ४.३–५, ६.४.३–७, ५.२.२.१४–१७, २.४.१७–२०, ६.३.१.१८. ४.१.१,२, ६.३.४.१७, १४.१.२.७, २.१.६, कपि० १.४, ८, ६, २.३, ५, १० ६.३, ७.५, २७.४.५, १.१८, २.१२, १७, ४१.३,६, ८.१३, २६.८, ४०.२.३ ४२.१, ४५.६, ऋ० भू० राजप्रजाधर्मविषय, सं० वि० विवाह संस्कार, गो०ब्रा०उ० १.२, २.२०, पै०सं० ५.४०.१, १६.७०.१, २०.५३.१०, तै० सं० १.१.४.६, ३.६.६, ५.४.१, ६.६, ३.१.१, ७.१०.८, १.१५, २.६. ४.१, ४.१.१.१०, ३.१,५.१.१.११, ४.१,६.३.४, २.१०, ७.१.११.१ ।

देवस्य वयं सवितुः सवीमनि ऋ० ६.७१.२, नि० ६.७, मै० सं० १.११.७ ।

देवस्य सवितुर्मतिम् य० २२.१४ ।

देवस्य सवितुर्वयं ऋ० ३.६२.११, ऐ० ब्रा० ४.५.४ ।

देवस्य सवितुः अ० ६.२३ ३, १०.५.१४, पै० सं० १६.१२८.६, १६.४.१२, तै०सं० १.१.६.२०, ४.३.६.८, ५.३.४.८, काठ० सं० १३.४६ ।

देवस्याहं सवितुः य० ६.१०.१३, श० ब्रा० ५.१.५.२–५, १५–१७, तै० सं० १.७.८.१, २ ।

देवहितिं जुगुपुर्द्वादशस्य ऋ० ७.१०३.६ ।

देवहूर्यज्ञ आ च य० १७.६२; श० ब्रा० ६.२.३.२०; कपि० २८.३ ।

देवहेतिर्ह्रियमाणाः अ० १२.५.२६; पै० सं० १६.१४४.२ ।

देवं देवं राधसे चोदयन्ति ऋ० ७.७६.५ ।

देवं देवं वोऽवस इन्द्रं इन्द्रं ऋ० ८.१२.१६ ।

देवं देवं वोऽवसे देवं देवं ऋ० ८.२७.१३; य० ३३.९१; ऐ० ब्रा० ५.२.१ ।

देवं नरः सवितार ऋ० ३.६२.१२ ।

देवं बर्हिरिन्द्रँ सुदेवं य० २८.१२ ।

देवं बर्हिर्वयोधसं य० २८.३५ ।

देवं बर्हिर्वर्धमानं ऋ० २.३.४ ।

देवं बर्हिर्वारितीनां य० २१.५७,२८.२१,४४ ।

देवं बर्हिः सरस्वती य० २१.४८ ।

देव वो अद्य सवितारमेषे ऋ० ५.४६.१ ।

देव वो देवयज्यया ऋ० ५.२१.४ ।

देवा अग्रे न्यपद्यन्त अ० १४.२.३२; पै० सं० १८.१०.२; सं० वि० गृहाश्रमसंस्कार ।

देवा अदुः सूर्यो अ० ६.१००.१; पै० सं० १६.१३.४ ।

देवा अमृतेन अ० १६.१६.१० ।

देवा इमं मधुना अ० ६.३०.१ ।

देवा एतस्यामवदन्त पूर्वे ऋ० १०.१०६.४; अ० ५.१७.६ ।

देवा गातुविदो गातुं य० ८.२१; श० ब्रा० ४.४.४.१३; मै० सं० १.१.४.३; तै० सं० १.१.१३.१८, ४.४४.६ ।

देवा देवानां भिषजा य० २१.५३; का० सं० २३.५६ ।

देवा दैव्या होतारा य० २८.१७,४०; का० सं० ३०.१७, ४० ।

देवाञ्जन त्रैककुदं अ० १९.४४.३; पै० सं० १५.३.६ ।

देवा ददत्वासुरं अ० २०.१३५.१०; गो०ब्रा० उ० ६.१४ ।

देवानामस्थि कृशनं अ० ४.१०.७; पै० सं० ४.२५.७ ।

देवानामिदवो महत् ऋ० ८.८३.१; सा० १३८; ऐ० ब्रा० ५.३.४ ।

देवानामेतत् परिषूतं अ० ११.५.२३; गो० ब्रा० पू० २.७; पै० सं० १६.१५५.४ ।

देवानामेनं घोरैः अ० १६.७.२; पै०सं० १७.२४.३ ।

देवानां चक्षुः सुभगा ऋ० ७.७७.३ ।

देवानां दूतः पुरुध ऋ० ३.५४.१९ ।

देवानां निहितं अ० १९.२७.९; पै० सं० १०.७.९ ।

देवानां नु वयं जाना ऋ० १०.७२.१ ।

देवानां पत्नीनां अ० १९.५७.३; पै० सं० ३.३०.३ ।

देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु ऋ० ५.४६.७; अ० ७.४९.१; तै० ब्रा० ३.५.१२.१; नि० १२.४५; मै० सं० ४.१३.७४ ।

देवानां पत्नीः पृष्टये अ० ६.७.६; पै० सं० १६.१३६.९ ।

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजु ऋ० १.८९.२; य० २५.१५; नि० १२.३७; मै० सं० ४.१४.२७; सं० वि० स्वस्तिवाचन; का० सं० २७.१९ ।

देवानां भाग अ० ६.४.५; पै० सं० १६.१२४.४ ।

देवानां माने प्रथमातिष्ठ ऋ० १०.२७.२३; नि० २.२२ ।

देवानां युगे प्रथमे ऋ० १०.७२.३ ।

देवानां हेतिः अ० ८.२.९; पै० सं० १६.३.८ ।

देवान्दिवमगन्यज्ञः य० ८.६०; कपि० ४.५, ३९.५ ।

देवान् यन्नाथितो अ० ७.१०९.७ ।

देवान्वसिष्ठो अमृतान् ऋ० १०.६५.१५, ६६.१५ ।

देवान्वा यच्चकृमा ऋ० १.१८५.८ ।

देवान्हुवे बृहच्छ्रवसः ऋ० १०.६६.१ ।

देवा यज्ञमतन्वत य० १९.१२; का०सं० २१.१४ ।

देवा यज्ञमृतवः अ० १८.४.२ ।

देवा वशामयाचन् अ० १२.४.२०,२४; पै० सं० १७.१८.४ ।

देवा वशां अ० १२.४.४९ ।

देवा वा एतस्या ऋ० १०.१०९.४; अ० ५.१७.६ ।

देवाव्यो नः परिषच्यमानाः ऋ० ९.९७.२६ ।

देवाश्चित्ते अमृता जातवेदः ऋ० १०.६९.९ ।

देवाश्चित्ते असुर्य ऋ० २.२३.२ ।

देवाश्चित्ते असुर्याय पूर्वे ऋ० ७.२१.७ ।

देवास आयन् परशूँरबिभ्रन् ऋ० १०.२८.८ ।

देवासो हि ष्मा मनवे ऋ० ८.२७.१४; य० ३३.९४; ऐ० ब्रा० ५.२.१ ।

देवास्ते चीतिमविदन् अ० २.६.४ ।

देवास्त्वा वरुणा मित्रो ऋ० १.३६.४ ।

देवाः कपोत इषितो ऋ० १०.१६५.१; अ० ६.२७.१; नि० १.१७ ।

देवाः पितरः अ० ६.१२३.३ ।

देवाः पितरो अ० १०.६.६, ११.७.२७; गो० ब्रा० पू० ५.२.१।

देवी उषासानक्ता य० २८.१४, ३७; का० सं० ३०.१४, ३७।

देवी उषासावश्विना य० २१.५०, का० सं० २३.५६।

देवी ऊर्जाहुती दुघे य० २१.५२,२८.१६,३६; का० सं० २३.१६, ३०.३६,५५।

देवी जोष्ट्री वसुधिती य० २८.१५,३८; का० सं० ३०.१५,३८।

देवी जोष्ट्री सरस्वती य० २१.५१; का०सं० २३.५४।

देवी दिवो दुहितरा ऋ० १०.७०.६।

देवी देवस्य रोदसी ऋ० ७.६७.८।

देवी देवेभिर्यजते ऋ० ४.५६.२।

देवी देव्यामधि अ० ६.१३६.१।

देवी द्यावापृथिवी य० ३७.३; मै० सं० ४.६.६; श०ब्रा० १४.१.२.६; का० सं० २३.५४।

देवी यदि तविषी ऋ० १.५६.४।

देवीराप एष वो य० ८.२६; श० ब्रा० ४.४.५.२१; कपि० ३.११।

देवीरापः शुद्धा वोढ्वँ य० ६.१३; श० ब्रा० ३.८.२.३; कपि० २.१३।

देवीरापो अपां नपाद्यो य० ६.२७; काठ० सं० २.१६, ३.३४; मै० सं० १.३.५, २.६.१७; तै० सं० १.२.३.१८, ३.१३.४, ६.१.४.२१, ४.३.६; कपि० १.१६, २.१६, ३६.३, ४५.४, ४८.४।

देवीर्द्वार इन्द्रँ सङ्घाते य० २८.१३; का०सं० ३०.१३।

देवीर्द्वारो अश्विना य० २१.४६; का० सं० २३.५०।

देवीर्द्वारो वयोधसँ य० २८.३६; का० सं० ३०.३६।

देवीर्द्वारो विश्रयध्वम् ऋ० ५.५.५।

देवीस्तिस्रस्तिस्रो य० २१.५४, २८.१८,४१; का० सं० २३.५७, ३०.१८,४१।

देवी हनत् अ० २०.१३२.११।

देवीं वाचमजनयन्त देवाः ऋ० ८.१००.११; तै० ब्रा० २.४.६.१०; नि० ११.२७; सं० वि० अन्नप्राशन संस्कार।

देवीः षळुर्वीरुरु नः कृणोत ऋ० १०.१२८.५; अ० ५.३.६; तै० सं० ४.७.१४.५।

देवेन नो मनसा देव ऋ० १.६१.२३; य० ३४.२३; का० सं० ३३.१७।

देवेभिर्देव्यदिते ऋ० ८.१८.४।

देवेभिर्न्विषितो यज्ञियेभिः ऋ० १०.८८.३।

देवेभ्यस्त्वा मदाय ऋ० ६.८.५; सा० ११८२।

देवेभ्यस्त्वा वृथा पाजसे ऋ० ६.१०६.२२।

देवेभ्यः कमवृणीत मृत्युं ऋ० १०.१३.४; अ० १८.३.४१।

देवेभ्यो अधिजातो अ० ५.४.७; पै०सं० १६.११.२।

देवेभ्यो हि प्रथमं ऋ० ४.५४.२; य० ३३.५४; का० सं० ३२.५४।

देवैनसात् पित्र्यात् अ० १०.१.१२; पै० सं० १६.३६.२।

देवैनसादुन्मदितं अ० ६.१११.३; पै० सं० ५.१७.१।

देवैर्दत्तं मनुना अ० १४.२.४१; पै०सं० १८.११.२।

देवैर्दत्तेन मणिना अ० २.४.४; पै० सं० २.११.४।

देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु (०/तन) ऋ० १. १०६.७।

देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु (०/नहि) ऋ० ४. ४५.७।

देवो अग्निः अ० १२.२.१२; पै० सं० १७. ३१.२।

देवो अग्निः स्विष्टकृद् य० २१.५८, २८.२२, ४५; का० सं० २३.६१, ३०.२२,४५।

देवो देवानामसि मित्रो ऋ० १.९४.१३; आर्याभि० १.४८; जी० ले० २०१।

देवो देवान्परिभूर्ऋतेन ऋ० १०.१२.२; अ० १८.१.३०; नि० ६.४।

देवो देवान् मर्चयसि अ० १३.१.४०; पै०सं० १८.१८.१०।

देवो देवाय अ० ५.११.११; पै०सं० ८.१.१।

देवो देवाय धारयेन्द्राय ऋ० ९.६.७।

देवो देवेषु अ० ५.२७.२।

देवो देवैर्वनस्पतिः य० २१.५६, २८.२०; का० सं० २३.५९, ३०.२०।

देवो द्रविणोदाः अ० २०.२.४।

देवो न यः पृथिवीं ऋ० १.७३.३; आर्याभि० १.४६।

देवो न यः सविता ऋ० १.७३.२।

देवो नराशँ्सो देवम् य० २८.४२; का० सं० ३०.४२।

देवो भगः सविता रायो ऋ० ५.४२.५।

देवो मणिः अ० १९.३१.८; पै० सं० ७.५.८, १०.५.८।

देवो वनस्पतिर्देवम् य० २८.४३; का० सं० ३०.४३।

देवो वो द्रविणोदाः ऋ० ७.१६.११; सा० ५५, १५१३; ऐ० ब्रा० ३.३.११; मै० सं० २.१३.४८।

देव्यो वम्रयो भूतस्य य० ३७.४; का० सं० ३७.४; श० ब्रा० १४.१.२.१०।

देहि मे ददामि ते य० ३.५०; काठ० सं० ९. १५; मै० सं० १.१०.६; श० ब्रा० २.५.३. १९; ऋ० भू० गृहाश्रम संस्कार; कपि० ८.८।

दैवा होतार अ० ५.२७.९।

दैवी पूर्तिर्दक्षिणा ऋ० १०.१०७.३।

दैवीर्विशः पयस्वाना अ० ६.४.६।

दैवीः षड्उर्वीरुरु ऋ० १०.१२८.५; अ० ५. ३.६; पै० सं० ५.४.६।

दैव्या अध्वर्यवस्त्वा य० २३.४२; तै० सं० ५.२.१२.३; का० सं० २५.४७।

दैव्या मिमाना मनुषः य० २०.४२; मै० सं० ३.११.७; का० सं० २२.३०; काठ० सं० ३८.७७।

दैव्याय धर्त्रे जोष्ट्रे य० १७.५६; काठ० सं० १८.२४; मै० सं० २.१०.४७; श०ब्रा० ९. २.३.९–११; कपि० २८.३।

दैव्यावध्वर्यू आ गतँ य० ३३.३३,७३; का० सं० ३२.३३,७३।

दैव्या होतारा अ० ५.१२.७।

दैव्या होतारा ऊर्ध्वम् य० २७.१८; तै० सं० ४.१.८.८; का० सं० २९.१८; कपि० २९. ५।

दैव्या होतारा प्रथमा ऋ० १०.११०.७; य० २९.३२; काठ० सं० १६.२३३; मै० सं० २.१२.४२।

दैव्या होतारा प्रथमान्यृञ्जे ऋ० ३.४.७, ७.८।

दैव्या होतारा प्रथमा पुरोहित ऋ० १०.६६. १३।

दैव्या होतारा प्रथमा विदुष्टरा ऋ० २.३.७।

दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा ऋ० १०.११०.७; य० २६.३२; अ० ५.१२.७; तै० ब्रा० ३.६.३.३; नि० ८.११; काठ० सं० १६.२३५; मै० सं० ४.१३.१८ ।

दैव्या होतारा भिषजा य० २१.१८; काठ० सं० ३८.१७; का० सं० २३.१६, मै०सं० ३.११.११६ ।

दोषो आगाद् सा० १७७; अ० ६.१.१; सा० ब्रा० ३.१.४.२ ।

दोषो गाय अ० ६.१.१; पै० सं० १६.१.१ ।

दोहेन गामुप शिक्षा ऋ० १०.४२.२, अ० २०.८६.२ ।

दौव हस्तिनो अ० २०.१३१.२० ।

दौष्वप्न्यं दौर्जीवित्यं अ० ४.१७.५,७.२३.१ ।

द्यामिन्द्रो हरिधायसं ऋ० ३.४४.३ ।

द्यावा चिदस्मै पृथिवी ऋ० २.१२.१३, अ० २०.३४.१४; पै० सं० १३.७.१४ ।

द्यावा नः पृथिवी इमं ऋ० २.४१.२०, तै० सं० ४.१.११.१७, नि० ६.३८; ऐ० ब्रा० १.५.३ ।

द्यावा नो अद्य पृथिवी ऋ० १०.३५.३ ।

द्यावापृथिवी अनु अ० २.१२.५; पै० सं० २.५.५ ।

द्यावापृथिवी उप अ० २.१६.२; पै० सं० २.४३.१ ।

द्यावा पृथिवी उर्वन्तरिक्षं अ० २.१२.१ ।

द्यावा पृथिवी जनयन्नभि ऋ० १०.६६.६ ।

द्यावापृथिवी दातॄणां अ० ५.२४.३ ।

द्यावापृथिवीभ्यां अ० ११.३.३३; मै० सं० ४.६.११८; तै० सं० २.३.८.२७ ।

द्यावापृथिवी श्रोत्रे अ० ११.३.२ ।

द्यावाभूमी अदिते ऋ० ७.६२.४ ।

द्यावा यमग्निं पृथिवी ऋ० १०.४६.६ ।

द्यावा ह क्षामा प्रथमे ऋ० १०.१२.१, अ० १८.१.२६ ।

द्यावो न यस्य पनयन्ति ऋ० ६.४.३ ।

द्यावो न स्तृभिश्चित ऋ० २.३४.२ ।

द्यां मा लेखीरन्तरिक्षं य० ५.४३; कपि० २.६.४१.३; श० ब्रा० ३.६.४.१३—१६ ।

द्युक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं ऋ० ८.८८.२, सा० ६८६, अ० २०.६.२,४६.५ ।

द्युतद्यामानं बृहतीमृतेन ऋ० ५.८०.१ ।

द्युतानं वो अतिथिं स्वर्णरं ऋ० ६.१५.४ ।

द्युभिरक्तुभिः परिपातम ऋ० १.११२.२५, य० ३४.३०, तै० आ० ४.४२.३; ऐ०ब्रा० १.४.४, का० सं० ३३.२४ ।

द्युभिर्हितं मित्रमिव प्रयोगं ऋ० १०.७.५ ।

द्युमत्तमं दक्षं धेह्यस्मे ऋ० ६.४४.६ ।

द्युमन्तस्त्वे धीमहि अ० १८.१.५७ ।

द्युम्नी वां स्तोमो अश्विना ऋ० ८.८७.१ ।

द्युम्नेषु पृतनाज्ये ऋ० ३.३७.७, अ० २०.१६.७ ।

द्युम्नेषु पृतनाज्ये अ० २०.१६.७ ।

द्यौरासीत्पूर्वचित्तिः य० २३.१२,५४; मै०सं० ३.१२.२८; श०ब्रा० १३.२.५.१७; तै०सं० ७.४.१८.२; का० सं० २५.१३; ५६ ।

द्यौर्धेनुस्तस्या आदित्यो अ० ४.३६.६ ।

द्यौर्न य इन्द्राभि भूमार्यः ऋ० ६.२०.१ ।

द्यौर्नः पिता जनिता अ० ६.१०.१२ ।

द्यौर्मे पिता जनिता नाभि ऋ० १.१६४.३३, अ० ६.१०.१२, नि० ४.२१; ऋ० भू० ग्रन्थ प्रामाण्याप्रामाण्यविषय ।

द्यौर्वः पिता पृथिवी ऋ० १.१९१.६ ।

द्यौश्च त्वा पृथिवी यज्ञियासः ऋ० ३.६.३ ।

द्यौश्च नः पृथिवी ऋ० १०.३६.२; काठ० सं० ३७.२७ ।

सं० ४.२.६.१, ३.७.३८।

ध्रुवाऽसि धरुणेतो य० १३.३४, श० ब्रा० ७.५.१.३०।

ध्रुवाऽसि ध्रुवोऽयं य० ५.२८, श० ब्रा० ३.६.१.२०—२२, कपि० २.६, ४१.३।

ध्रुवासु त्वासु क्षितिषु ऋ० ७.८८.७।

ध्रुवेयं विराण्नमो अ० १२.३.११।

ध्रुवोऽच्युतः प्र मृणीहि अ० ६.८८.३।

ध्रुवोऽसि पृथिवीं दृंह य० ५.१३; श० ब्रा० ३.५.२.१४; कपि० २.३।

ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योः ऋ० ६.५८.३; सा० १०५६।

न कामेन पुनर्मघो अ० ५.११.२; पै० सं० ८.१.२।

न कि इन्द्र त्वदु सा० २०३।

न कि देवा इनीमसि ऋ० १०.१३४.७; सा० १७६।

नकिरस्य शचीनां ऋ० ८.३२.१५।

नकिरस्य सहन्त्य ऋ० १.२७.८; सा० १४१६।

नकिरिन्द्र त्वदुत्तरो ऋ० ४.३०.१; सा० २०३।

नकिरेषां निन्दिता मर्त्येषु ऋ० ३.३६.४।

नकिर्देवा मनीमसि ऋ० १०.१३४.७; सा० १७६।

नकिर्ह्येषां जनूंषि ऋ० ७.५६.२।

न किल्विषमत्र अ० १२.३.४८; पै०सं० १७.४०.४।

नकिष्ट एता व्रता ऋ० १.६९.७।

नकिष्टं कर्मणा नशद्यस् ऋ० ८.७०.३; सा० २४३, ११५५; अ० २०.९२.१८; काठ० सं० ११.३५; मै० सं० ४.११.५१; त०सं० १.८.२२.१४।

नकिष्टं कर्मणा नशन्न प्र ऋ० ८.३१.१७; तै०सं० १.८.२२.२४; काठ०सं० ११.३५।

नकिष्ट्वद्रथीतरो ऋ० १.८४.६; सा०९५०।

नकिः परिष्टिर्मघवन् ऋ० ८.८८.६।

नकिः सुदासो रथं ऋ० ७.३२.१०; ऐ० ब्रा० ५.१.१, २.७; ऐ० आ० १.२.१, ५.२.४।

नकीमिन्द्रो निकर्तवे ऋ० ८.७८.५।

नकीरेवन्तं सख्याय विन्दसे ऋ० ८.२१.१४; सा० १३९०; अ० २०.११४.२।

नकीं वृधीक इन्द्र ते ऋ० ८.७८.४।

नक्तंजातास्योषधे अ० १.२३.१।

नक्तोषासा वर्णमामेम्याने ऋ० १.९६.५; य० १२.२, १७.७०; तै० सं० ४.१.१०, १३, ६.५.६, ७.१२.८; मै० सं० २.७ १४४, २२८; श० ब्रा० ६.७.२.३, ७.२.३.३१; कपि० २८.४, ३२.१; काठ० सं० १६.८३, १८.३८।

नक्तोषासा समनसा य० १२.२, १७.७०।

नक्तोषासा सुपेशसास्मिन् ऋ० १.१३.७।

नक्षत्रमुल्काभिहतं अ० १९.९.९।

नक्षत्रेभ्यः स्वाहा य० २२.२८; तै० सं० १.८.७.१, १३.३७; का० सं० २४.३०।

नक्षद्ध्वमरुणीः पूर्व्यं राट् ऋ० १.१२१.३।

नक्षद्धोता परि सद्म ऋ० १.१७३.३।

नक्षन्त इन्द्रमवसे ऋ० ८.५४.२।

न क्षोणीभ्यां परिभ्वे ऋ० २.१६.३।

न घा त्वद्रिगप ऋ० १०.४३.२; अ० २०.१७.२।

न घा राजेन्द्र आ दभन्नः ऋ० १.१७८.२।

न घा वसुर्नि यमते ऋ० ६.४५.२३; सा० १६६७; अ० २०.७८.२।

न घा स मामप जोषं जभार ऋ० ४.२७.२।

न घेमन्यदा पपन ऋ० ८.२.१७; सा० ७२०, अ० २०.१८.२।

न ध्रंस्तताप न हिमो अ० ७.१८.२; पै०सं० २०.३७।

न च प्रत्याहन्या अ० ८.१५.२।

न च प्राणं रुणद्धि अ० ११.३.५५; पै० सं० १६.५८.४।

न च सर्वज्यानिं अ० ११.३.५६।

न जामये तान्वो रिक्थमा ऋ० ३.३१.२, नि० ३.६।

नडमा रोह न ते अ० १२.२.१; पै० सं० १७.३०.१।

न त इन्द्र सुमतयो न रायः ऋ० ७.१८.२०।

न तद्दिवा न पृथिव्या ऋ० ६.५२.१।

न तद्रक्षांँसि न य० ३४.५१; का० सं० ३३.३९।

न तमग्ने अरातयो ऋ० ८.७१.४।

न तमश्नोति कश्चन ऋ० १०.६२.९।

न तमँहो न दुरितं ऋ० १०.१२६.१; सा० ४२६।

न तमँहो न दुरितानि ऋ० ७.८२.७।

न तमँहो न दुरितं ऋ० २.२३.५।

न तस्य प्रतिमा य० ३२.३; का० सं० ३५.२५; स० प्र० ११ समु०; ऋ० भू० ग्र थ-प्रामाण्याप्रामाण्यविषय; जी० ले० ४२९; जी० दे० १.१९१, २.१२२, ला० वे० वी० २१; द० शा० १३५।

न तस्या मायया चन ऋ० ८.२३.१५; सा० १०४; सा० ब्रा० ३.१.८.६।

न तस्या विद्म तदु षु ऋ० १०.४०.११।

न तं जिनन्ति बहवो ऋ० ४.२५.५।

न तं तिग्मं चन त्यजो ऋ० ८.४७.७।

न तं राजानावदिते कुतश्चन ऋ० १०.३९.११।

न तं यक्ष्मा अ० १९.३८.१।

न तं विदाथ य इमा जजान ऋ० १०.८२.७, य० १७.३१, तै० सं० ४.६.२.५, नि० १४.१०, मै० सं० २.१०.३०; काठ० सं० १८.६; कपि० २८.२, आर्याभि० २.४४।

न ता अर्वा रेणुककाटो ऋ० ६.२८.४, अ० ४.२१.४, तै० ब्रा० २.४.६.९; काठ० सं० १३.८१।

न ता नशन्ति ऋ० ६.२८.३, अ० ४.२१.३; तै० ब्रा० २.४.६.९।

न ता मिनन्ति मायिनो ऋ० ३.५६.१।

न तिष्ठन्ति न नि ऋ० १०.१०.८, अ० १८.१.९, नि० ५.२।

न ते अदेवः प्रदिवो ऋ० १०.३७.३।

न ते अन्तः शवसो ऋ० ६.२९.५।

न ते गिरो अपि मृष्ये ऋ० ७.२२.५; सा० १७९९; गो० ब्रा० उ० ६.१.६०१।

न ते त इन्द्राभ्यस्मद्वृष्व ऋ० ५.३३.३, य० १०.२२।

न ते दूरे परमा ऋ० ३.३०.२, य० ३४.१९, का० सं० ३३.१३।

न ते नाथं अ० १८.१.१३।

न ते बाह्वोर्बलमस्ति अ० ७.५६.६।

न ते वर्तास्ति राधस ऋ० ८.१४.४; अ० २०.२७.४।

न ते विष्णो जायमानो ऋ० ७.९९.२।

न ते सखा सख्यं ऋ० १०.१०.२, अ० १८.१.२।

न ते सख्यं न दक्षिणं ऋ० ८.२४.५।

न त्वदन्यः कविः अ० ५.११.४, पै० सं० ८.१.४ ।

न त्वद्धोता पूर्वो अग्ने ऋ० ५.३.५ ।

न त्वा गभीरः पुरुहूत ऋ० ३.३२.१६ ।

न त्वा देवास आशत ऋ० ८.९७.६ ।

न त्वा पूर्वा अ० १९.३४.७;पै०सं० ११.३.७ ।

न त्वा बृहन्तो अद्रयो ऋ० ८.८८.३; सा० २९६ ।

न त्वा रासीयाभिशस्तये ऋ० ८.१९.२६ ।

न त्वा वरन्ते अन्यथा ऋ० ४.३२.८ ।

न त्वावाँ अन्यो दिव्यो ऋ० ७.३२.२३, य० २७.३६, सा० ६८१, अ० २०.१२१.२, का० सं० २९.४२, मै० सं० २.१३.३६; ऐ० ब्रा० ४.५.१, काठ० सं० ३९.८०, ऋ० भू० वेदविषय ।

न त्वा शतं चन ऋ० ९.६१.२७, सा० १२१५ ।

न दक्षिणा वि चिकिते ऋ० १.२७.११, तै० सं० २.१.११.१९; मै० सं० ४.१४.१९९ ।

नदन्न भिन्नममुया ऋ० १.३२.८ ।

नदस्य मा रुधतः काम ऋ० १.१७९.४, नि० ५.२ ।

नदं व ओदतीनां ऋ० ८.६९.२, सा० १५१२, ऐ० ब्रा० १.३.५८, ५.१.६ ।

नदीभ्यः पौञ्जिष्ठम् य० ३०.८, का० सं० ३४.८ ।

नदी सूत्री वर्षस्य अ० ९.७.१४ ।

नदीं यन्त्वप्सरसो अ० ४.३७.३, पै० सं० १३.४.३ ।

न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु सा० ८६८ ।

न दुष्टुती मर्त्यो विन्दते ऋ० ७.३२.२१ ।

न देवानामति व्रतं ऋ० १०.३३.९ ।

न देवानामपिह्नुतः ऋ० ८.३१.७ ।

न देवेष्वा वृश्चते अ० १५.१२.६ ।

न द्याव इन्द्रमोजसा ऋ० ८.६.१५ ।

न द्वितीयो न तृतीयः अ० १३.४.१६, ऋ० भू० ब्रह्मविद्याविषय, पत्र वि० ९६, ल० आ० नि० १९० ।

न नूनमस्ति नोऽश्वः ऋ० १.१७०,१; नि० १.६ ।

न नूनं ब्राह्मणामृणं ऋ० ८.३२.१६ ।

न पञ्चभिर्दशभिः ऋ० ५.३४.५ ।

न पञ्चमो न षष्ठ अ० १३.४.१७; ल०आ० नि० ९०; पत्र वि० ९६ ।

न पर्वता न नद्यो ऋ० ५.५५.७ ।

नपाता शवसो महः ऋ० ८.२५.५ ।

नपातो दुर्गहस्य मे ऋ० ८.६५.१२ ।

न पापासो मनामहे ऋ० ८.६१.११; नि० ६.२५ ।

न पितृयाणं पन्थां अ० १५.१२.९ ।

न पिशाचैः सं शक्नोमि अ० ४.३६.७ ।

न पूषणं मेथामसि ऋ० १.४२.१० ।

नप्तीभिर्यो विवस्वतः ऋ० ९.१४.५ ।

न प्रमिये सवितुर्दैव्यस्य ऋ० ४.५४.४; श० ब्रा० १३.४.२.१३ ।

न बहवः समशक अ० १.२७;३; पै० सं० १९.३१.६ ।

न ब्राह्मणो हिंसितव्यो अ० ५.१८.६; पै०सं० ९.१७.८ ।

नभश्च नभस्यश्च य० १४.१५; श० ब्रा० ८.३.२.५; तै० सं० १.४.१४.५,६, ४.४.११.५–६; कपि० ६.३, २६.९ ।

न भूमिं वातो अ० ४.५.२; पै०सं० ४.६.२ ।

न भोजा मम्रुर्न ऋ० १०.१०७.८ ।

नम आशवे च य० १६.३१; तै० सं० ४.५.५.१२; कपि० २७४.।

नम इदुग्रं नम आ विवासे ऋ० ६.५१.८।

नम इन्द्रेण सख्यं ऋ० २.१८.८।

नम उष्णीषिणे य० १६.२२; कपि० २७.२, ३।

न मत्स्त्री सुभसत्तरा ऋ० १०.८६.६; अ० २०.१२६.६।

नमसेदुप सीदत ऋ० ६.११.६; सा० १४४६; ऐ० ब्रा० १.४.५।

नमस्कृत्य द्यावा अ० ७.१०२.१; पै० सं० २०.३६.४।

नमस्त आयुधाय य० १६.१४; मै० सं० २.६.२३; कपि० २७.१।

नमस्तक्षभ्यो य० १६.२७; कपि० २७.३।

नमस्तस्मै नमो अ० ६.३.१२; पै० सं० १६.४०.४।

नमस्ते अग्न ओजसे ऋ० ८.७५.१०; सा० ११, १६४८; तै०सं० २.६.११.१०, काठ० सं० ७.११५, सा० ब्रा० ३.१.४.१; मै०सं० ४.११.१३६।

नमस्ते अधिवाकाय अ० ६.१३.२; पै० सं० १६.५.१।

नमस्ते अस्तु नारद अ० १२.४.४५; पै० सं० १५.२०.८।

नमस्ते अस्तु पश्यत अ० १३.४.४८,५५, पै० सं० १६.२१.२; सं० वि० गृहाश्रमसंस्कार।

नमस्ते अस्तु विद्युते अ० १.१३.१; पै० सं० १५.२३.१।

नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते य० ३६.२१; का० सं० ३६.२२।

नमस्ते अस्त्वायते अ० ११.२.१५, ४.७; पै० सं० १६.२१.८, १०५.५।

नमस्ते घोषिणीभ्यो अ० ११.२.३१; पै०सं० १६.१०६.११।

नमस्ते जायमानायै अ० १०.१०.१; पै० सं० १६.१०७.१।

नमस्ते प्रवतो अ० १.१३.२; पै० सं० १६.३.४।

नमस्ते प्राण कन्दाय अ० ११.४.२; पै० सं० १६.२१.२।

नमस्ते प्राण प्राणते अ० ११.४.८; पै० सं० १६.२१.७।

नमस्ते यातुधानेभ्यो अ० ६.१३.३; पै० सं० १६.५.३।

नमस्ते राजन् अ० १.१०.२; पै० सं० १.६.२।

नमस्ते रुद्रमन्यव य० १६.१; काठ० सं० १७.३३; मै० सं० २.६.१४, ४.१२.१८; श० ब्रा० ६.१.१.१४; कपि० २७.१; स० प्र० ११ समु०; पं० वि० ३४६।

नमस्ते रुद्रास्यते अ० ६.६०.३; पै० सं० १.३७.२।

नमस्ते लाङ्गलेभ्यो अ० २.८.४।

नमस्ते हरसे शोचिषे य० १७.११, ३६.२०; काठ० सं० १७.७८; श० ब्रा० ६२.१.२; मै० सं० २.१०.८; का० सं० ३६.२१; कपि० २८.१।

नमस्यत हव्यदातिं ऋ० ३.२.८।

नमः कपर्दिने च य० १६.२६; कपि० २७.३, ४।

नमः कूप्याय च य० १६.३८; तै० सं० ४.५.७.११; कपि० २७.५।

नमः कृत्स्नायतया य० १६.२०; कपि० २७.२।

नमः पर्णाय च पर्णशदाय च य० १६.४६;

तै० सं० ४.५.६.१२; श० ब्रा० ६.१.१.२२, २३; कपि० २७.५.६ ।

नमः पार्याय च वार्याय च य० १६.४२; कपि० २७.५ ।

नमः पुरा ते वरुणोत ऋ० २.२८.८ ।

नमः शङ्गवे च य० १६.४०; कपि० २७.५ ।

नमः शम्भवाय च य० १६.४१; तै० सं० ४.५.८.१; कपि० २७.५; सं० वि० गृहाश्रम-संस्कार; ल० पं० वि० २३४; आर्याभि० २.२६ ।

नमः शीताय तक्मने अ० १.२५.४ ।

नमः शुष्क्याय च य० १६.४५; कपि० २७.५ ।

नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यः य० १६.२८; कपि० २७.३ ।

नमः सखिभ्यः सा० १८२८ ।

नमः सनिस्रसाक्षे अ० २.८.५ ।

नमः सभाभ्यः य० १६.२४; तै० सं० ४.५.३.१६; कपि० २७.३ ।

नमः सायं नमः अ० ११.२.१६ ।

नमः सिकत्याय च य० १६.४३; तै० सं० ४.५.८.१७; कपि० २७.५ ।

नमः सु ते निर्ऋते य० १२.६३; श० ब्रा० ७.२.१.१०; तै० सं० ४.२.५.७; कपि० २५.३ ।

नमः सेनाभ्यः य० १६.२६; तै० सं० ४.५.४.१०; कपि० २७.३ ।

नमः सोभ्याय च य० १६.३३; तै० स० ४.५.६.५; कपि० २७.४ ।

नमः स्रुत्याय च य० १६.३७; तै० सं० ४.५.७.७; कपि० २७.५ ।

न मा गरन्नद्योमातृतमा ऋ० १.१५८.५ ।

न मा तमन्न श्रमन्नोत ऋ० २.३०.७ ।

न मा मिमेथ ऋ० १०.३४.२ ।

न मृत्युरासीदमृतं न ऋ० १०.१२९.२; तै० ब्रा० २.८.९.४; नि० ७.३; ऋ० भू० सृष्टि-विद्याविषय ।

न मृषा श्रान्तं यदवन्ति ऋ० १.१७९.३; श० ब्रा० १०.४.४.५ ।

नमो गणेभ्यो य० १६.२५; तै० सं० ४.५.४.५; कपि० २७.३ ।

नमो गन्धर्वस्य अ० १४.२.३५ ।

नमो ज्येष्ठाय य० १६.३२; तै० सं० ४.५.६.१; कपि० २७.४; पं० वि० ३४६ ।

नमो दिवे बृहते ऋ० १.१३६.६ ।

नमो देववधेभ्यो अ० ६.१३.१ ।

नमो धृष्णवे य० १६.३६; तै० सं० ४.५.७.२; कपि० २७.४ ।

नमो बभ्लुशाय य० १६.१८; कपि० २७.२ ।

नमो बिल्मिने य० १६.३५; कपि० २७.४ ।

नमो महद्भ्यो नमो ऋ० १.२७.१३; नि० ३.२०; ऐ० ब्रा० ७.३.४ ।

नमो मित्रस्य वरुणस्य ऋ० १०.३७.१; य० ४.३५; तै० सं० १.२.६.४; मै० सं० १.२.४५; ऐ० ब्रा० ४.२.३; काठ० सं० २.४१; कपि० २.१, ३८.८; श० ब्रा० ३.३.४.२४; मै० सं० १.२.४५ ।

नमो यमाय नमो अ० ५.३०.१२; पै० सं० ६.१४.२, १९.२१.११ ।

नमो रुद्राय नमो अ० ६.२०.२ ।

नमो रूराय अ० ७.११६.१ ।

नमो रोहिताय य० १६.१९; तै० सं० ४.५.२.६; कपि० २७.२ ।

नमो वञ्चते परि य० १६.२१; तै० सं० ४.५.३.४; कपि० २७.२ ।

नमो वन्याय च य० १६.३४; तै० सं० ४.५.६.६; कपि० २७.४ ।

नमो वः पितर ऊर्जे अ० १८.४.८१ ।

नमो वः पितरः स्वधा अ० १८.४.८५ ।

नमो वः पितरो य० २.३२; काठ० सं० ६.२३; श० ब्रा० २.४.२.२४, ६.१.४२; तै० सं० ३.२.५.१६; कपि० ८.६; ऋ० भू० पितृयज्ञविषय; पं० वि०ल० पं०वि० २५६ ।

नमो वः पितरो भामाय अ० १८.४.८२ ।

नमो वः पितरो यच्छिवं अ० १८.४.८४ ।

नमो वः पितरो यद्घोरं अ० १८.४.८३ ।

नमो वाके प्रस्थिते ऋ० ८.३५.२३ ।

नमो वात्याय च य० १६.३६; तै० सं० ४.५.७.१५; कपि० २७.५ ।

नमो विसृजद्भ्यो य० १६.२३; कपि २७.३ ।

नमो व्रज्याय च य० १६.४४; कपि० २७.५ ।

नमोऽस्तु ते निर्ऋते अ० ६.६३.२; पै० सं० ५.२७.४, १६.११.५ ।

नमोऽस्तु नीलग्रीवाय य० १६.८; कपि० २७.१ ।

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो य० १६.६४—६६, श० ब्रा० ६.१.१.३५—३६, ल० ग्र० उ० १८३ ।

नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये य० १३.६, श० ब्रा० ७.४.१.२८ ।

नमोऽस्त्वसिताय अ० ६.५६.२ ।

नमो हिरण्यबाहवे य० १६.१७, श० ब्रा० ६.१.१.१८, तै० सं० ४.५.२.१, कपि० २७.२ ।

नमो ह्रस्वाय च य० १६.३०, तै० सं० ४.५.५.८, कपि० २७.४ ।

न य इषन्ते जनुषो ऋ० ६.६६.४ ।

न यजमान रिष्यसि ऋ० ८.३१.१६, तै० सं० १.८.२२.१२, मै० सं० ४.११.५०, काठ० सं० ११.३६ ।

नयतामून मृत्युदूता अ० ८.८.११ ।

न यत्परो नान्तर ऋ० २.४१.८, य० २०.८२, का० सं० २२.७० ।

न यत्पुरा चकृमा कद्ध नूनं ऋ० १०.१०.४, अ० १८.१.४ ।

नयसीद्वति द्विषः ऋ० ६.४५.६ ।

न यस्य ते शवसान ऋ० ८.६८.८, ऐ० ब्रा० ५.१.१ ।

न यस्य देवा देवता ऋ० १.१००.१५; आर्याभि० १.३२ ।

न यस्य द्यावापृथिवी अनु ऋ० १.५२.१४; आर्याभि० १.१५, ल० वे० नि० ८३ ।

न यस्य द्यावापृथिवी न धन्व ऋ० १०.८९.६, नि० ५.३ ।

न यस्य वर्ता जनुषा ऋ० ४.२०.७ ।

न यस्य सातुर्जनितो ऋ० ४.६.७ ।

न यस्याः पारं अ० १६.४७.२; पै० सं० ६.२०.२ ।

न यस्येन्द्रो वरुणो ऋ० २.३८.६ ।

न यं जरन्ति शरदो ऋ० ६.२४.७ ।

न यं दिप्सन्ति ऋ० १.२५.१४ ।

न यं दुध्रा वरन्ते ऋ० ८.६६.२, सा० ६८८ ।

न यं रिपवो न रिषण्यवो ऋ० १.१४८.५ ।

न यं विविक्तो रोदसी ऋ० ८.१२.२४ ।

न यं शुक्रो न दुराशी ऋ० ८.२.५, ऐ०ब्रा० ४.५.३ ।

न यं हिन्सन्ति धीतयो ऋ० ६.३४.३।

न यः संपृच्छे न पुनर्हवीतवे ऋ० ८.१०१.४।

न यातव इन्द्र जूजवुर्नः ऋ० ७.२१.५, नि० ४.१९।

न युष्मे वाजबन्धवो ऋ० ८.६८.१९।

न ये दिवः पृथिव्या ऋ० १.३३.१०।

न योरुपब्दिरश्व्यः ऋ० १.७४.७।

न यो वराय मरुतां ऋ० १.१४३.५।

नरा गौरेव विद्युतं ऋ० ७.६९.६।

नरा दन्सिष्ठावत्रये ऋ० १०.१४३.३।

नरा वा शंसं पूषणमगोह्यं ऋ० १०.६४.३।

नराशंसमिह प्रियं ऋ० १.१३.३, सा० १३४९।

नराशंसस्य महिमानमेषां ऋ० ७.२.२, य० २९.२७, तै० ब्रा० ३.६.३.१, नि० ८.७; काठ० सं० ३७.५, मै० सं० ४.१३.१३; का० सं० ३१.३९।

नराशंसं वाजिनं वाजयन्निह ऋ० १.१०६.४।

नराशंसं सुधृष्टमं ऋ० १.१८.९।

नराशंसः प्रतिधामानि ऋ० २.३.२।

नराशंसः प्रति शूरो य० २०.३७; काठ० सं० ३८.७२, का० सं० २२.२५; मै० सं० ३.११.२।

नराशंसः सुषूदति ऋ० ५.५.२।

नराशंसो नोऽवतु ऋ० १०.१८२.२।

न रेवता पणिना सख्यमिन्द्रः ऋ० ४.२५.७।

नरो ये के चास्मदा ऋ० १०.२०.८।

नर्माय पुंश्चलूं हसाय य० ३०.२० का० सं० ३४.२०।

नवग्वासः सुतसोमास ऋ० ५.२९.१२।

नव च मे नवतिश्च अ० ५.१५.९; पै० सं० ८.५.६।

नव च या नवतिश्च अ० ६.२५.३; पै० सं० ८.१६.१; १९.५.४।

नवदशभिरस्तुवत य० १४.३०; श० ब्रा० ८.४.३.१२—१६; **कपि**० २६.४।

न वनिषदनाततम् अ० २०.१३२.७।

नव प्राणान्नवभिः अ० ५.२८.१; पै० सं० २.५९.१०।

नवभिरस्तुवत य० १४.२९; श० ब्रा० ८.४.३.६—११; कपि० २६.४।

नव भूमीः समुद्रा अ० ११.७.१४; पै० सं० १६.८३.४०।

नव यदस्य नवतिं ऋ० ५.२९.६।

नव यो नवतिं पुरो ऋ० ८.९३.२, सा० १४५१, अ० २०.७.२।

नवर्चेभ्यः स्वाहा अ० १९.२३.६।

न वर्ष मैत्रावरुणं अ० ५.१९.१५; पै० सं० ९.२।

नवविंशत्याऽस्तुवत य० १४.३१; श० ब्रा० ८.४.३.१७—१९; कपि० २६.४।

नवं नु स्तोममग्नये ऋ० ७.१५.४, तै० ब्रा० २.४.८.१; काठ० सं० ४०.११९।

नवं बर्हिरोदनाय अ० १२.३.३२, पै०सं० १६.३९.२।

नवं वसानः सुरभिः अ० १४.२.४४।

न वा अरण्यानिर्हन्ति ऋ० १०.१४६.५, तै० ब्रा० २.५.५.७।

न वा उ एतन्म्रियसे ऋ० १.१६२.२१, य० २६.१६, तै० सं० ४.६.९.१०, तै० ब्रा० ३.७.७.१४; श० ब्रा० १३.२.७.१२; का० सं० २५.१८।

न वा उ ते तन्वा तन्वं ऋ० १०.१०.१२, अ० १८.१.१४।

न वा उ देवाः क्षुध ऋ० १०.११७.१।

न वा उ मां वृजने ऋ० १०.२७.५।

न वा उ सोमो वृजिनं ऋ० ७.१०४.१३, अ० ८.४.१३; पै० सं० १६.१०.३।

नवानां नवतीनां ऋ० १.१९१.१३।

नवा नो अग्न आ भर ऋ० ५.६.८।

न विकर्णः पृथु अ० ५.१७.१३।

न वि जानामि ऋ० १.१६४.३७, अ० ९.१०.१५, नि० ७.३, १४.२२।

न वीळवे नमते ऋ० ६.२४.८।

न वेपसा न तन्यतेन्द्रम् ऋ० १.८०.१२।

न वै तं चक्षुः अ० १०.२.३०।

न वैव या नवतयो अ० ५.१९.११।

न वै वातश्चन अ० ९.२.२४; पै० स० १८.३.३।

न वो गुहा चकृम ऋ० १०.१००.७।

नवोनवो भवसि ऋ० १०.८५.१९, अ० ७.८१.२, १४.१.२४, तै० सं० २.३.५.४, ४.१४.१, नि० ११.५; काठ०सं० १०.४१।

नव्यं तदुक्थ्यं हितं ऋ० १.१०५.१२।

नष्टासवो नष्टविषा अ० १०.४.१२; पै०सं० १६.१६.२।

न स जीयते मरुतो ऋ० ५.५४.७।

न स राजा व्यथते यस्मिन् ऋ० ५.३७.४।

न स सखा यो न ददाति ऋ० १०.११७.४।

न स स्वो दक्षो वरुण ऋ० ७.८६.६।

न संस्कृतं प्र मिमीतो ऋ० ५.७६.२, सा० १७५३; ऐ० ब्रा० १.४.४।

न सायकस्य चिकिते ऋ० ३.५३.२३, नि० ४.१४।

न सीमदेव आपदिषं ऋ० ८.७०.७, सा० २६८।

न सेशे यस्य रम्बते ऋ० १०.८६.१६, अ० २०.१२६.१६।

न सेशे यस्य रोमशं ऋ० १०.८६.१७, अ० २०.१२६.१७।

न सोम इन्द्रमसुतो ऋ० ७.२६.१।

नहि ग्रभायारणः सुशेषः ऋ० ७.४.८, नि० ३.३।

नहि ते अग्ने तन्वः अ० ६.४९.१; पै० सं० १९.३१.१४; काठ० सं० ३५.७६।

नहि ते अग्ने वृषभ ऋ० ८.६०.१४।

नहि ते क्षत्रं न सहो ऋ० १.२४.६।

नहि ते नाम ऋ० १०.१४५.४; अ० ३.१८.३।

न हि ते पूर्तमक्षिपत् ऋ० ६.१६.१८ सा० ७०७, काठ० सं० २०.३०।

नहि वे शूर राधसो ऋ० ८.४६.११।

नहि तेषाममा चन ऋ० १०.१८५.२, य० ३.३२; मै० सं० १.५.३६, काठ० सं० ७.१०; कपि० ५.२।

नहि त्वा रोदसी उभे ऋ० १.१०.८।

नहि त्वा शूर देवा ऋ० ८.८१.३, सा० ७३०।

नहि त्वा शूरो ऋ० ६.२५.५।

नहि देवो न मर्त्यो ऋ० १.१९.२।

नहि नु ते महिमनः ऋ० ६.२७.३।

नहि नु यादधीमसि ऋ० १.८०.१५।

नहि मन्युः पौरुषेय ऋ० ८.७१.२।

नहि मे अक्षिपच्चन ऋ० १०.११९.६।

नहि मे अस्त्यघ्न्या ऋ० ८.१०२.१९।

नहि मे रोदसी उभे ऋ० १०.११९.७।

नहि व ऊतिः पृतनासु ऋ० ७.५९.४।

नहि वश्चरमं चन ऋ० ७.५९.३, २४१, सा०आ० ३.२.८.२।

नहि वः शत्रुर्विविदे ऋ० १.३९.४।

नहि वामस्ति दूरके ऋ० १.२२.४; ऋ० भा० १.३.१।

नहि वां वव्रयामहे ऋ० ८.४०.२।

नहि वो अस्त्यर्भको ऋ० ८.३०.१।

नहि षस्तव नो मम ऋ० ८.३३.१६।

नहि ष्म यद्ध वः पुरा ऋ० ८.७.२१।

नहि ष्मा ते शतं चन ऋ० ४.३१.९।

नहि स्थूर्यृतुथा यात ऋ० १०.१३१.३, अ० २०.१२५.३।

नहि स्पशमविदत् य० ३३.६०; का० सं० ३२.६०।

नही नु वो मरुतो ऋ० १.१६७.९।

नह्यङ्ग नृतो त्वत् ऋ० ८.२४.१२।

नह्यङ्ग पुराचन ऋ० ८.२४.१५, सा० १५११।

नह्यन्यं बळाकरं ऋ० ८.८०.१। ऐ० ब्रा० ५.२.४।

नह्यस्या नाम गृभ्णामि ऋ० १०.१४५.४, अ० ३.१८.३।

नाकस्य पृष्ठे अधि ऋ० १.१२५.५।

नाके राजन् प्रतितिष्ठ अ० ६.१२३.५; पै० सं० १६.५१.१०; गो० ब्रा० पू० ५.२१।

नाके सुपर्णमुपपप्तिवान्सं ऋ० ९.८५.११।

नाके सुपर्णमुप यत्पतन्तं ऋ० १०.१२३.६, सा० ३२०, १८४६, अ० १८.३.६६, ष० ब्रा० पू० ६.१.४; तै० ब्रा० २.५.८.५, तै० आ० ६.३.१, आ० ब्रा० ६.२.६.२।

नाधृष आ दधृषते ऋ० ६.३३.२।

नाना चक्राते यम्या ऋ० ३.५५.११।

नानानं वा उ नो धियो ऋ० ९.११२.१।

नाना हि त्वा हवमाना ऋ० १.१०२.५; मै० सं० २.३.४३।

नाना हि वां देव य० १९.७; मै० सं० २.३.४३; का० सं० २१.८; श० ब्रा० १२.७.३.१४।

नानाह्यग्नेऽवसे ऋ० ६.१४.३।

नानौकांसि दुर्यो ऋ० २.३८.५।

नापाभूत न वो ऋ० ४.३४.११।

नाभा नाभिं न आ ददे ऋ० ९.१०.८, सा० ११२६।

नाभा पृथिव्या धरुणो ऋ० ९.७२.७, मै० सं० २.७.८५।

नाभा पृथिव्याः समिधाने य० ११.७६; काठ० सं० १६.७५; मै० स० २.७.८५; तै० सं० ४.१.१०.४; कपि० ३०.८; श० ब्रा० ६.६.३.९।

नाभिरहं रयीणां अ० १६.४.१।

नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं य० २०.९; काठ० सं० ३८.५०, मै० सं० ३.११.६८, का० सं० २१.१०६।

नाभिं यज्ञानां सदनं ऋ० ६.७.२, सा० ११४२।

नाभ्या आसीदन्तरिक्षं ऋ० १०.९०.१४, य० ३१.१३, अ० १९.६.८, तै० आ० ३.१२.६ का० सं० ३५.१३; ऋ० भू० सृष्टिविद्या विषय।

नाम नाम्ना जोहवीति अ० १०.७.३१; पै० सं० १७.१०.२।

नामानि ते शतक्रतो ऋ० ३.३७.३, अ० २०.१९.३; मै० सं० ४.१२.६२।

नार्यस्ते पत्न्यो लोम य० २३.३६ का० सं० २५.४१।

नाल्प इति ब्रूया अ० ११.३.२४; पै० सं० १६.५४.१०।

नावा न क्षोदः प्रदिशः ऋ० १०.५६.७।

नावेव नः पारयन्तं ऋ० २.३९.४; ऐ० ब्रा० १.४.४।

नाशयित्री बलासस्या य० १२.९७।

नाष्टमो व नवमो अ० १३.४.१८; ऋ० भू० ब्रह्मविद्याविषय, पत्र० वि० ६।

नासत्याभ्यां बर्हिरिव ऋ० १.११६.१।

नासत्या मे पितरा बन्धुपृच्छा ऋ० ३.५४.१६।

नासदासीन्नो ऋ० १०.१२९.१. तै० ब्रा० २.८.९.३, श० ब्रा० १०.५.३.२; ऋ० भू० वेदविषयविचार।

नास्माकमस्ति तत्तरः ऋ० ८.६७.१९।

नास्मै पृश्नि अ० ५.१७.१७।

नास्मै विद्युन्न तन्यतुः ऋ० १.३२.१३; ऋ० भू० ग्रन्थप्रामाण्याप्रामाण्यविषय।

नास्य केशान् अ० १९.३२.२; पै० सं० १२.४.२।

नास्य क्षत्ता अ० ५.१७.१४।

नास्य क्षेत्रे अ० ५.१७.१६।

नास्य जाया अ० ५.१७.१२।

नास्य धेनुः अ० ५.१७.१८।

नास्य पशून् अ० १५.५.३; ५; ७; ९; ११; १३; १६।

नास्य वर्ता न तरुता ऋ० ६.६६.८।

नास्य श्वेतः अ० ५.१७.१५।

नास्यास्थीनि अ० ९.५.२३।

नास्यास्मिंल्लोक अ० १५.१२.११।

नाहमतो निरया ४.१८.२।

नाहमिन्द्राणि रारण ऋ० १०.८६.१२, अ० २०.१२६.१२, तै० सं० १.७.१३.४, नि० ११.३९, काठ० सं० ८.६५।

नाहं तन्तुं न वि जानाम्योतुं ऋ० ६.९.२।

नाहं तं वेद दभ्यं ऋ० १०.१०८.४।

नाहं तं वेद य इति ऋ० १०.२७.३।

नाहं वेद भ्रातृत्वं नो ऋ० १०.१०८.१०।

नि काव्या वेधसः ऋ० १.७२.१, तै० सं० २.२.१२.१।

निक्रमणं निषदनं ऋ० १.१६२.१४, य० २५.३८, तै० सं० ४.६.९.३; मै० सं० ३.१६.१५; का० सं० २७.४२।

निक्षदर्भ अ० १९.२९.१ पै०सं० १३.११.१०।

निखातं चिद्यः पुरुसंभृतं ऋ० ८.६६.४।

नि गव्यता मनसा सेदुः ऋ० ३.३१.९।

नि गव्यवोऽनवो द्रुह्यवश्च ऋ० ७.१८.१४।

नि गावो गोष्ठे असदन् ऋ० १.१९१.४, अ० ६.५२.२; पै० सं० १.१११.२; ४.१६.७; १९.७७।

नि गृह्य कर्णकौ अ० २०१३३.३।

नि ग्रामासो अविक्षत ऋ० १०.१२७.५।

निचेतारो हि मरुतो ऋ० ७.५७.२।

नि तद्दधिषेऽवरं परं च ऋ० १०.१२०.७, अ० ५.२.६,२०.१०७.१, पै०सं० ६.१.७।

नितिक्ति यो वारणमन्नम् ६.४.५।

नि तिग्ममभ्यन्शुं ऋ० ८.७२.२।

नि तिग्मानि भ्राशयन् ऋ० १०११६.५।

नित्यश्चाकन्यात्स्वपतिर्दमू ऋ० १०.३१.४।

नित्यस्तोत्रो वनस्पतिः ऋ० ९.१२.७; सा० १२०२।

नित्यं न सूनुं मधु बिभ्रत ऋ० १.१६६.२।

निर्माया उ त्ये असुरा ऋ० १०।१२४.५।

निर्यत्पूतेव स्वधितिः शुचि ऋ० ७.३.९।

निर्यदीं बुध्नान्महिषस्य ऋ० १.१४१.३।

निर्युवाणो अशस्ती ऋ० ४.४८.२।

निर्लक्ष्म्यं ललाम्यं अ० १.१८.१; पै० सं० २०.१८.२।

निर्वै क्षत्रं नयति अ० ५.१८.४; पै० सं० ९.१७.३।

निर्वो गोष्ठादजामसि अ० २.१४.२; पै० सं० २.४.४।

निर्हस्तः शत्रुरभि अ० ६.६६.१; पै० सं० १९.११.१०।

निर्हस्ताः सन्तु अ० ६.६६.३, पै० सं० १९.११.१३।

निर्हस्तेभ्यो नैर्हस्तः अ० ६.६५.२; पै० सं० १९.११.१४।

नि वर्तध्वं मानु गाता ऋ० १०.१९.१।

नि वेवेति पलितो ऋ० ३.५५.९।

निवेशनः सङ्गमनः य० १२.६६; काठ० सं० १६.१४३; मै०सं० २.७.१५१; श०ब्रा० ७.२.१.२० कपि० २५.३।

निवेशनः सङ्गमनो अ० १०.८.४२।

नि वो यामाय मानुषो ऋ० १.३७.७।

नि शत्रोः सोम वृष्ण्यं ऋ० ९.१९.७।

नि शीर्षतो न पतत अ०.१३१.१।

नि शुष्ण इन्द्र धर्णसिं ऋ० ८.६.१४।

नि शुष्ममिन्दवेषां ऋ० ९.५२.४।

निश्चर्मण ऋभवो ऋ० १.११०.८।

निश्चर्मणो गामरिणीत ऋ० १.१६१.७।

नि षसाद धृतव्रतो ऋ० १.२५.१०, य० १०.२७. २०.२, तै० सं० १.८.१६.७, का० सं० २१.९७, तै० ब्रा० १.७.१०.२, २.६.५.१; ऐ० ब्रा० ८.३.२; काठ० सं० २.४३; ७.८३; १५.२३; ३८.४४; मै० सं० १.६.३२; २.६.३६; ७.२३१; ४.४.७; कपि० २.१; ६.४; ७.४; श० ब्रा० ५.४.४,५; १२.८.३.१०; ११।

नि षीमिदत्र गुह्या ऋ० ३.३८.३।

नि षु ब्रह्म जनानां ऋ० ८.५.१३।

नि षु सीद गणपते ऋ० १०.११२.९।

नि षू नमातिमतिं ऋ० १.१२९.५।

निष्कं वा घा कृणवते ऋ० ८.४७.१५।

निष्वापया मिथूदृशा ऋ० १.२९.३, अ० २०.७४.३।

निष्षिध्वरीरोषधीराप ऋ० ८.५९.२१।

निष्षिध्वरीस्त ओषधीरुता ऋ० ३.५५.२२।

नि सर्वसेन इषुधीरं ऋ० १.३३.३।

नि सामनामिषिरामिन्द्र ऋ० ३.३०.९।

निहस्तेभ्योनैर्हस्तं अ० ६.६५.२।

नि होता होतृषदने ऋ० २.९.१, य० ११.३६, तै०सं० ३.५.११.७, ४.१.३.११, काठ० सं० १६.३२, ऐ० ब्रा० १.५.२७, श० ब्रा० ६.४.२.७; मै० सं० २.७.३९।

निः सालां धृष्णुं अ० २.१४.१।

नीचावया अभवद् ऋ० १.३२.९।

नीचा वर्तन्त उपरि ऋ० १०.३४.९।

नीचीनबारं वरुणः ऋ० ५.८५.३, नि० १०.४।

नीचैः खनत्यसुरा अ० २.३.३।

नीचैः पद्यन्ताम ऋ० ३.१९.३।

नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः य० १६.५६–५७; तै० सं० ४.५.११.३;४; कपि० २७.६।

नीलनखेभ्यः स्वाहा अ० १९.२२.४।

नू रोदसी अभिष्टुते ऋ० ७.३९.७,४०.७ ।

नू रोदसी अहिना ऋ० ४.५५.६ ।

नू रोदसी बृहद्भिर्नो ऋ० ४.५६.४ ।

नू ष्टुत इन्द्र नू गृणानः ऋ० ४.१६.२१, १७.११, १९.२१, २०.११, २१.११, २२.११, २३.११, २४.११; ऐ० ब्रा० ६.४.७ ।

नू ष्ठिरं मरुतो वीरवन्तं ऋ० १.६४.१५ ।

नू सद्मानं दिव्यं ऋ० ६.५१.१२ ।

नृचक्षसं त्वा वयं ऋ० ९.८.९, सा० ११८५ ।

नृचक्षसो अनिमिषन्तो ऋ० १०.६३.४; सं० वि० स्वस्तिवाचन ।

नृचक्षसा एष दिवो ऋ० १०.१३९.२, य० १७.५९, तै० सं० ४.६.३.३ ।

नृचक्षा रक्षः परि पश्य ऋ० १०.८७.१०, अ० ८.३.१०; पै० सं० १६.९.१० ।

नृणामु त्वा नृतमं ऋ० ३.५१.४; ऐ० ब्रा० १.३.७; ५.१.६ ।

नृत्ताय सूतं गीताय य० ३०.६; का० सं० ३४.६ ।

नृधूतो अद्रिषुतो ऋ० ९.७२.४ ।

नृबाहुभ्यां चोदितो ऋ० ९.७२.५ ।

नृभिर्धूतः सुतो ऋ० ८.२.२, ऐ० ब्रा० ४.५.१; ८.१.१ ।

नृभिर्धौतः सुतो सा० ७३५ ।

नृभिर्येमानो जज्ञानः ऋ० ९.१०९.८ ।

नृभिर्येमानो हर्यतो ऋ० ९.१०७.१६, सा० ८५८ ।

नृवत्त इन्द्र नृतमाभिरूती ऋ० ६.१९.१०, नि० ६.६ ।

नृवद्दस्रा मनोयुजा ऋ० ८.५.२ ।

नृवद्वसो सदमिद्धेह्यस्मे ऋ० ६.१.१२, तै० ब्रा० ३.६.१०.५, २.१.१०; मै० सं० ४.१३.५८; काठ० सं० १८.१२५ ।

नृषदे वेडप्सुषदे य० १७.७२; काठ० सं० १७.८९; तै० सं० ४.६.१.१३; ५.४.५.१, श० ब्रा० ९.२.१.८; कपि० २८.१ ।

नेच्छत्रुः प्राशं अ० २.२७.१ ।

नेतार ऊषु णस्तिरो ऋ० १०.१२६.६ ।

नेमा इन्द्र अ० २०.१२७.१३ ।

नेमिं नमन्ति चक्षसा ऋ० ८.९७.१२, सा० ९३१, अ० २०.५४.३ ।

नेव मांसेन पीवसि अ० १.११.४ ।

नेशत्तमो दुधितं ऋ० ४.१.१७ ।

नेह भद्रं रक्षस्विने ऋ० ८.४७.१२;आर्याभि० १.२९ ।

नैतावदन्ये मरुतो ऋ० ७.५७.३ ।

नैतावदेना परो अन्यत् ऋ० १०.३१.८ ।

नैतां ते देवा अ० ५.१८.१; पै० सं० ९.१७.१ ।

नैतां विदुः अ० १९.५६.४; पै० सं० ३.८.४ ।

नैनं घ्नन्ति अ० ६.७६.४; पै० सं० ८.३.१२, १९.१५.१५ ।

नैनं घ्नन्त्याप्सरसो अ० ८.५.१३; पै० सं० १६.२८.३ ।

नैनं प्राप्नोति अ० ४.९.५ ।

नैनं रक्षांसि अ० १.३५.२ ।

नैनं शर्वो अ० १५.५.३, १६ ।

नैवाहमोदनं न मां अ० ११.३.३० ।

न्यक्रतून्ग्रथिनो ऋ० ७.६.३ ।

न्यक्रन्दयन्नुपयन्त ऋ० १०.१०२.५, नि० ९.२३ ।

न्यग्निं जातवेदसं दधाता ऋ० ५.२२.२; मै० सं० ४.११.२६ ।

पत्नी यदृश्यते अ० २०.१३५.५ ।

पत्नीवन्तः सुता इम ऋ० ८.९३.२२, नि० ५.१८ ।

पत्नीव पूर्वहूतिं ऋ० १.१२२.२ ।

पथ एकः पीपाय ऋ० ८.२९.६ ।

पथस्पथः परिपतिं ऋ० ६.४९.८, य० ३४.४२, तै०सं० १.१.१४.६,नि० १२.१८; श०ब्रा० १३.४.१.१५;का०सं० ३३.३० ।

पथ्या रेवतीर्बहुधा अ० ३.४.७; पै० सं० ३.१.७ ।

पदज्ञा स्थ रमतयः अ० ७.७५.२ ।

पदं देवस्य नमसा ऋ० ६.१.४, तै० ब्रा० ३.६.१०.२, नि० ४.१९, काठ० सं० १८. ११७ ।

पदं देवस्य मीळहुषो ऋ० ८.१०२.१५, सा० १५७२; काठ० सं० १८.१.१७ ।

पदापणीरराधसो ऋ० ८.६४.२; सा० १३५५, अ० २०.९३.२ ।

पदे इव निहिते ऋ० ३.५५.१५ ।

पदेपदे मे जरिमा ऋ० ५.४१.१५ ।

पदोरस्या अधिष्ठानाद् अ० १२.४.५; पै० सं० १७.१६.६ ।

पद्भिः सेदिमवक्रा अ० ४.११.१०; पै० सं० ३.२५.११ ।

पद्या वस्ते पुरुरूपाः ऋ० ३.५५.१४ ।

पनाय्यं तदश्विना ऋ० ८.५७.३, अ० २०.१४३.९ ।

पन्य आ दर्दिरच्छता ऋ० ८.३२.१८ ।

पन्य इदुप गायत ऋ० ८.३२.१७ ।

पन्यं पन्यमित्सोतारः ऋ० ८.२.२५, सा० १२३, १६५७ ।

पन्यान्सं जातवेदसं ऋ० ८.७४.३, सा० १५६६ ।

पपृक्षेण्यमिन्द्रत्वे ह्योजः ऋ० ५.३३.६ ।

पप्राथ क्षां महि ऋ० ६.१७.७ ।

पर्यावर्ते दुःष्वप्न्यात् अ० ७.१००.१ ।

पयश्च रसश्चानां अ० १२.५.१०; पै० सं० १६.१४१.४; ऋ० भू० वेदोक्तधर्मविषय, सं० वि० गृहाश्रम संस्कार ।

पयश्च वा एष अ० ९.६.२ ।

पयसा शुक्रममृतं य० १९.८४; काठ० सं० ३८.३१; का० सं० २१.८४ ।

पयसो रूपं यद्यवा य० १९.२३; का० सं० २१.२५ ।

पयसो रेत आभृतं य० ३८.२८; श० ब्रा० १४.३.१.३१ ।

पयस्वतीः कृणुथ अ० ६.२२.२; पै० सं० १९.२२.११ ।

पयस्वतीरोषधयः ऋ० १०.१७.१४, अ० ३.२४.१, १८.३.५६, तै० सं० १.५.१०.७ काठ० सं० ३५.२६; पै० सं० ५.३०.१; २०.१३.१ ।

पयः पृथिव्यां पयः त० १८.३६; काठ० सं० १८.७१; ३१.४६; तै० सं० ४.७.१२.६ श० ब्रा० ९.३.४.१–१६; मै० सं० २.१२. ६; कपि० २९.२ ।

पयो धेनूनां अ० ४.२७.३; पै० सं० ४.३५.२ ।

पर ऋणा सावीः ऋ० २.२८.९; मै० सं० ४.१४.१२१ ।

परमस्याः परावतो य० ११.७२; काठ० स० १६.७१; तै० सं० ४.१९.१३; श० ब्रा० ६.६.३.४; कपि० ३०.८ ।

परमां तं परावतं अ० ६.७५.२; पै० सं० २.८२.५ ।

परि णो याह्यस्मयुः ऋ० ९.६४.१८।

परि णो वृङ्ग्धि अ० ६.३७.२; पै० सं० २०.१७.२।

परि णो वृणजन्नथा ऋ० ८.४७.५।

परि णो हेती रुद्रस्य ऋ० २.३३.१४, य० १६.५०, तै० सं० ४.५.१०.४।

परि तृन्धि पणीनां ऋ० ६.५३.५।

परि ते जिग्युषो ऋ० ९.१००.४।

परि ते दूळभो ऋ० ४.९.८, य० ३.३६; मै० सं० १.५.४२; काठ० सं० ७.१६; कपि० ५.२,३;५; श० ब्रा० २.३.४.४०।

परि ते धन्वनो हेतिः य० १६.१२; काठ० सं० १७.४४; मै० सं० २.९.२७; तै० सं० ४.५.१.१५, कपि० २७.१।

परि त्मना मितद्रुरेति ऋ० ४.६.५।

परि त्यं हर्यतं हरिं ऋ० ९.९८.७, सा० ५५२, १३२९, १६८१।

परि त्रिधातुरध्वरं ऋ० ८.७२.९।

परि त्रिविष्ट्यध्वरं ऋ० ४.१५.२; तै० ब्रा० ३.६.४.१; ऐ० ब्रा० २.१.५; मै० सं० ४.१३.२३; काठ० सं० १.३८; १६.३८; २४१।

परि त्वा गिर्वणो ऋ० १.१०.१२, य० ५.२९, तै० सं० १.३.१.२; का० सं० ५.३.७; काठ० सं० २.६४; ऐ० ब्रा० १.४.२; ५.३; मै० सं० १.२.७९; कपि० २.६; ४७.१।

परि त्वाग्ने पुरं वयं ऋ० १०.८७.२२, य० ११.२६, अ० ७.७१.१, ८.३.२२, श० ब्रा० ६.३.३.२५; तै० सं० १.५.६.१५; ८.१२; ४.१.२.२०; काठ० सं० १६.१९; ३८.१४०; कपि० ३०.१; पै०सं० १६.८.२; १९.२७.३।

परि त्वा धातु अ० १३.१.२०; पै० सं० १८.१६.१०।

परि त्वा परिपत्नुना अ० १.३४.५, पै० सं० २.९.३।

परि त्वा पातु अ० ८.२.२६; पै० सं० १६.५.६।

परि त्वा रोहितैः अ० १.२२.२; पै० सं० १.२८.२।

परि दध्म इन्द्रस्य अ० ६.९९.३; पै० सं० १९.१३.३।

परि दिव्यानि मर्मृशत् ऋ०९.१४.८।

परि दैवीरनु स्वधा ऋ० ९.१०३.५।

परि द्यामिव अ० ६.१२.१।

परि द्यावापृथिवी य० ३२.१२, अ० २.१.४; का० सं० ३५.३१; पै० सं० २.६.५।

परि द्युक्षं सनद्रयिं ऋ० ९.५२.१; सा० ४९६।

परि द्युक्षं सहसः ऋ० ९.७१.४।

परि धत्तधत्तनो अ० २.१३.२, १९.२४.४; पै० सं० १५.६.१।

परि धामनि यानि ते ऋ० ९.६६.३।

परि धामान्यासां अ० २.१४.६; पै० सं० २.४.३; १०.१.६।

परि नो रुद्रस्य हेतिः य० १६.५०, ऋ० भाष्य २.३३.१४; तै० सं० ४.५.१०.९; कपि० २९.६; ४६.८।

परि त्रयः अ० २०.१२९.८।

परिपाणमसि अ० २.१७.७।

परिपाणं पुरुषाणां अ० ४.९.२; पै० सं० ८.३.३; १६.८१.२।

परिपूषा पुरस्तात् ऋ० ६.५४.१० अ०

७.९.४; पैं० सं० २०.४३।

परि प्रजातः क्रत्वा ऋ० १.६६.२।

परि प्र धन्वेन्द्राय ऋ० ९.१०९.१, सा० ४२७, १३६७।

परिप्रयन्तं वरयं ऋ० ९.६८.८।

परि प्र सोम ते रसो ऋ० ९.६७.१५।

परि प्रसिष्यदत्कविः ऋ० ९.१४.१, सा० ४८६।

परि प्रियः कलशे ऋ० ९.९६.९।

परि प्रिया दिवः ऋ० ९.९.१, सा० ४७६, ९३५; सं० ब्रा० २.२; सा०ब्रा० ३.२.६.७।

परि माग्ने दुश्चरितात् य० ४.२८; श०ब्रा० ३.३.३.१३, १४; कपि० १.१९; ३७.७।

परि मा दिवः अ० १९.३५.४; पैं० सं० ११.४.४।

परि मां परि मे अ० २.७.४।

परि यत्कविः काव्या ऋ० ९.९४.३।

परि यत्काव्या कविः ऋ० ९.७.४, सा० ११३१।

परि यदिन्द्र रोदसी ऋ० १.३३.९।

परि यदेषामेको ऋ० १.६८.२।

परि यो रश्मिना ऋ० ८.२५.१८; काठ० सं० ११.६३।

परि यो रोदसी उभे ऋ० ९.१८.६।

परि वर्त्मानि सर्वतः अ० ६.६७.१; पैं० सं० १९.६.१३।

परि वः सिकतावती अ० १.१७.४।

परि वाजपतिः कविः ऋ० ४.१५.३, य० ११.२५, सा० ३०, तै० सं० ४.१.२.१९, तै० ब्रा० ३.६.४.१; काठ० सं० १६.१८, २४२; ३८.१३९; ऐ०ब्रा० २.७.५; कपि० ३०.१; मैं० सं० १.१.२१; २.७.२७; ४.१३.२४; श० ब्रा० ६.३.३.२५।

परि वाजे न वाजयु ऋ० ९.६३.१९।

परिवाराण्यव्याय गोभिः ऋ० ९.१०३.२।

परि विश्वानि चेतसा ऋ० ९.२०.३; सा० ९७०।

परि विश्वानि सुधिताग्नेः ऋ० ३.११.८।

परि विश्वा भुवना अ० २.१.५।

परिविष्टं जाहुषं विश्वतः ऋ० १.११६.२०।

परि वीरसि परि त्वा य० ६.६; काठ० सं० ३.१७; तै० सं० १.३.६.१६; श० ब्रा० ३.७.१.२१–२२, २.३, ९.३.६,७,१४; कपि० २.१०; ४१.४।

परि वृक्ता च महिषी अ० २०.१२८.१०; पैं० सं० ९.६.४।

परि वृक्तेव पतिविद्यं ऋ० १०.१०२.११।

परि वो विश्वतो दध ऋ० १०.१९.७।

परिषद्यं ह्यरणस्य ऋ० ७.४.७; नि० ३.२।

परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं ऋ० ९.३९.२; सा० ८९९।

परिष्कृतास इन्दवो योषेव ऋ० ९.४६.२।

परिष्य सुवानो अक्ष ऋ० ९.९८.३; सा० १२४०।

परिष्य सुवानो अव्ययं ऋ० ९.९८.२।

परि सद्मेव पशुमान्ति ऋ० ९.९२.६।

परि सप्तिर्न वाजयुः ऋ० ९.१०३.६।

परि सुवानश्चक्षसे ऋ० ९.१०७.३; सा० १३१५।

परि सुवानास इन्दवो ऋ० ९.१०.४; सा० ४८५, ११२२।

परि सुवानो गिरिष्ठाः ऋ० ९.१८.१; सा० ४७५, १०९३।

परि सुवानो हरिरंशुः ऋ० ९.९२.१।

परि सृष्टं धारयतु अ० ८.६.२०; पै० सं० १६.८१.१ ।

परि सोम ऋतं बृहत् ऋ० ९.५६.१ ।

परि सोम प्रधन्वा ऋ० ९.७५.५; नि० ४. १५ ।

परि स्तृणीहि अ० ७.९९.१ ।

परि स्पशो वरुणस्य ऋ० ७.८७.३ ।

परि स्य स्वानो सा० १२४० ।

परि स्वानश्चक्षसे सा० १३१५ ।

परि स्वानास इन्दवो सा० ४८५, ११२२ ।

परि हस्त विधारय अ० ६.८१.२; पै० सं० १६.१७.२ ।

परि हि ष्मा पुरुहूतो ऋ० ९.८७.६ ।

परिह्वृतेदना जनो ऋ० ८.४७.६ ।

परीतो वायवे सुतं ऋ० ९.६३.१० ।

परीतो षिञ्चता सुतं ऋ० ९.१०७.१; य० १९.२; सा० ५१२, १३१३; तै० ब्रा० २.६.१.१; मै० सं० ३.११.४९; काठ० सं० ३७.५२; श० ब्रा० १२.८.२.४; का० सं० २१.२; ष० ब्रा० ४.१.१२; सं० ब्रा० ३.१; सा० ब्रा० ३.१.४.३, ७.६ ।

परीत्य भूतानि परीत्य य० ३२.११; का० सं० ३५.३०; श० ब्रा० ३.७; सं० वि० संन्यास संस्कार; ऋ० भू० वेदविषय; ब्रह्मविद्याविषय; आर्याभि० २.१०; ल० भ्रमो० ३६६ ।

परीदं वासो अधिथाः अ० २.१३.३, १९.२४.६; पै० सं० १५.६.३ ।

परीममिन्द्रमायुषे अ० १९.२४.३ ।

परीमं सोममायुषे अ० १९.२४.३; पै० सं० १५.५.१० ।

परीमे गामनेषत ऋ० १०.१५५.५; य० ३५.१८; अ० ६.२८.२; का० सं० ३५.५ ।

परीमेऽग्निमर्षत अ० ६.२८.२ ।

परीवृता ब्रह्मणा अ० १७.१.२८ ।

परीं घृणा चरति ऋ० १.५२.६ ।

परुषानमून् परुषा अ० ८.८.४ ।

परेणैतु पथा वृकः अ० ४.३.२ ।

परेयिवांसं प्रवतो ऋ० १०.१४.१; अ० १८.१.४९; तै० आ० ६.१.१; नि० १०.२०; मै० सं० ४.१४.२३४; सं० वि० अन्त्येष्टिसंस्कार।

परेहि कृत्ये मा अ० १०.१.२६; पै० सं० १६.३७.१० ।

परेहि नारि पुनः अ० ११.१.१३; पै० सं० १६.६०.३ ।

परेहि विग्रमस्तृतं ऋ० १.४.४; अ० २०.६८.४ ।

परो दिवा पर एना ऋ० १०.८२.५; य० १७.२९; तै० सं० ४.६.२.६; मै० सं० २.१०.२७; काठ० सं० १८.८; कपि० २८.२ ।

परोऽपेहि मनस्पाप अ० ६.४५.१ ।

परोऽपेह्य समृद्धे अ० ५.७.७; पै० सं० ७.६.६ ।

परो मात्रमृचीषमं ऋ० ८.६८.६; ऐ० ब्रा० ५.४.३ ।

परो मात्रया तन्वा ऋ० ७.९९.१; तै० ब्रा० २.८.३.२; मै० सं० ४.१४.६० ।

परो यत्त्वं परम ऋ० ५.३०.५ ।

परो हि मर्त्यैरसि ऋ० ६.४८.१९ ।

पर्जन्यवाता वृषभा ऋ० ६.४९.६, १०.६५.९ ।

पर्जन्यवृद्धं महिषं ऋ० ९.११३.३ ।

पर्जन्यः पिता महिषस्य ऋ० ९.८२.३; सा० १३१७ ।

पर्जन्याय प्र गायत ऋ० ७.१०२.१; तै०ब्रा० २.४.५.५; तै० आ० १.२९.१; मै० सं० ४.१२.१३६; काठ० सं० २०.४३।
पर्णो राजापिधानं अ० १८.४.५३।
पर्णोऽसि तनूपानः अ० ३.५.८।
पर्यस्ताक्षा अप्रच० अ० ८.६.१६।
पर्यस्य महिमा अ० १३.२.४५; पै० सं० १८.२५.५।
पर्यस्यास्मिल्लोक अ० १५.१२.७।
पर्यागारं पुनः पुनः अ० २०.१३२.१२।
पर्यायिकेभ्यः स्वाहा अ० १९.२२.७।
पर्यावर्ते दुःष्वप्न्यात् अ० ७.१००.१।
पर्यू षु प्र धन्व वाजसातये ऋ० ९.११०.१; सा० ४२८, १३६४; अ० ५.६.४; ऐ०ब्रा० ८.२.७; काठ० स० ३८.१४९।
पर्वतश्चिन्महि वृद्धो ऋ० ५.६०.३, तै० सं० ३.१.११.२३, मै० सं० ४.१२.१४३।
पर्वताद् दिवो योनेः अ० ५.२५.१, पै० सं० ३.३९.५।
पर्शुर्ह नाम मानवी ऋ० १०.८६.२३, अ० २०.१२६.२३।
र्षि तोकं तनयं ऋ० ६.४८.१०, सा० १६२४।
र्षिदीने गभीर ऋ० ८.६७.११।
पलालानुपलालौ अ० ८.६.२, पै० सं० १६.७६.२।
पल्प बद्ध वयो अ० २०.१२९.१५।
पवते हर्यतो हरिरति ऋ० ९.१०६.१३, सा० ५७६, ७७३, सा० ब्रा० ३.१.६.१७।
पवते हर्यतो हरिर्गृणानो ऋ० ९.६५.२५।
पवन्ते वाजसातये ऋ० ९.१३.३, सा० ११८९, तां० ब्रा० ४.२.१५।
पवमान ऋतं बृहत् ऋ० ९.६६.२४।
पवमान ऋतः कविः ऋ० ९.६२.३०।
पवमान धिया हितो ऋ० ९.२५.२, सा० ९२१।
पवमान नि तोशसे ऋ० ९.६३.२३, सा० १२३६।
पवमानमवस्यवो ऋ० ९.१३.२,सा० ११८८।
पवमान महि श्रवश्चित्रेभिः ऋ० ९.१००.८।
पवमान महि श्रवो गाम् ऋ० ९.९.९।
पवमान महार्णो ऋ० ९.८६.३४, नि० ५.६।
पवमान रसस्तव ऋ०९.६१.१८, सा० ८९०।
पवमान रुचारुचा ऋ० ९.६५.२, सा० ९०५।
पवमान विदा रयिमस्मभ्यं सोम दुष्टरम् ऋ० ९.६३.११।
पवमान विदा रयिमस्मभ्यं सोम सुश्रियम् ऋ० ९.४३.४।
पवमान सुवीर्यं ऋ० ९.११.९, सा० १४४९।
पवमानस्य जिघ्नतो ऋ० ९.६६.२५, सा० १३१०, ष० ब्रा० ४.२.२४।
पवमानस्य ते कवे ऋ० ९.६६.१०, सा० ६५७, ष० ब्रा० ४.२.२४।
पवमानस्य ते रसो ऋ० ९.६१.१७, सा० ८९१।
पवमानस्य ते वयं ऋ० ९.६१.४, सा० ७८७।
पवमानस्य विश्ववित् ऋ० ९.६४.७, सा० ९५८।
पवमानः पुनातु अ० ६.१९.२।
पवमानः सुतो नृभिः ऋ० ९.६२.१६।
पवमानः सो अद्य नः ऋ० ९.६७.२२, य० १९.४२, काठ० सं० ३८.२०, का० सं० २१.४६।

पवमाना असृक्षत पवित्रमति ऋ० ९.१०७.२५, सा० ५२२।

पवमाना असृक्षत सोमाः ऋ० ९.६३.२५; सा० १६९९।

पवमाना दिवस्परि ऋ० ९.६३.२७, सा० १७००।

पवमानास आशवः ऋ० ९.६३.२६, सा० १७०१।

पवमानास इन्दवः ऋ० ९.६७.७।

पवमाना स्वर्विदो ऋ० ९.५९.४।

पवमानो अजीजनद् ऋ० ९.६१.१६, सा० ४८४, ८८९।

पवमानो अति स्रिधो ऋ० ९.६६.२२।

पवमानो अभि स्पृधो ऋ० ९.७.५, सा० ११३२।

पवमानो अभ्यर्षा सुवीर्यम् ऋ० ९.८५.८।

पवमानो असिष्यदद्रक्षांसि ऋ० ९.४९.५, सा० १४३९।

पवमानो रथीतमः ऋ० ९.६६.२६, सा० १३११।

पवमानो व्यश्नवत् ऋ० ९.६६.२७, सा० १३१२।

पवस्तैस्त्वा पर्यक्रीणान् अ० ४.७.६, पै० सं० २.१.५।

पवस्व गोजिदश्वजित् ऋ० ९.५९.१।

पवस्व जनयन्निषो ऋ० ९.६६.४।

पवस्व दक्षसाधनो ऋ० ९.२५.१, सा० ४७४, ९१९।

पवस्व देव आयुष सा० ४८३, १२३५।

पवस्व देवमादनो ऋ० ९.८४.१।

पवस्व देववीतय इन्दो ऋ० ९.१०६.७, सा० ५७१, १३२६।

पवस्व देव वीरति ऋ० ९.२.१, सा० १०३७।

पवस्व देवायुषग् ऋ० ९.६३.२२, सा० ४८३, १२३५।

पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय ऋ० ९.१०८.१, सा० ५७८, ६९२, ष० ब्रा० ६.२.२४।

पवस्व वाचो अग्रियः ऋ० ९.६२.२५, सा० ७७५।

पवस्व वाजसातमः ऋ० ९.१००.६, सा० १०१६।

पवस्व वाजसातमो सा० ५२१।

पवस्व वाजसातये ऋ० ९.१०७.२३, सा० १०१६, ५२१।

पवस्व वाजसातये विप्रस्य ऋ० ९.४३.६।

पवस्व विश्वचर्षण ऋ० ९.६६.१, सा० ८९६।

पवस्व वृत्रहन्तमोक्थेभिः ऋ० ९.२४.६, सा० ९९६।

पवस्व वृष्टिमा सुनो ऋ० ९.४९.१; सा० १४३५।

पवस्व सोम क्रतुविन् ऋ० ९.८६.४८।

पवस्व सोम क्रत्वे दक्षाय ऋ० ९.१०९.१०, सा० ४३०, १३३२।

पवस्व सोम दिव्येषु ऋ० ९.८६.२२।

पवस्य सोम देववीतये ऋ० ९.७०.९।

पवस्व सोम द्युम्नी ऋ० ९.१०९.७, सा० ४३६।

पवस्व सोम मधुमां ऋ० ९.९६.१३, सा० ५३२; सा० ब्रा० ३.१.४.१०; १५।

पवस्व सोम मन्दयन् ऋ० ९.६७.१६, सा० १८१०।

पवस्व सोम महान्त्समुद्रः ऋ० ९.१०९.४,

पाता वृत्रहा सुतं ऋ० ८.२.२६, सा० १६५६।

पाता सुतमिन्द्रो अस्तु सोमं प्रणेनी: ऋ० ६.२३.३।

पाता सुतमिन्द्रो अस्तु सोमं हन्ता ऋ० ६.४४.१५।

पाति प्रियं रिपो अग्रं पदं ऋ० ३.५.५।

पान्तमा वो अन्धस ऋ० ८.९२.१, सा० १५५, ७१३; ऐ० ब्रा० ४.१.६।

पान्ति मित्रावरुणाववद्यात् ऋ० १.१६७.८।

पात्यग्निर्विपो अग्रं ऋ० ३.५.५; सा० ६१४; सा० ब्रा० ३.२.१.८।

पादाभ्यां ते जानुभ्यां अ० ९.८.२१; पै० सं० १६.७५.११।

पापाय वा भद्राय ऋ० १३.४.४२।

पाप्माधिधीयमाना अ० १२.५.३०; पै० सं० १६.१४४.३।

पारावतस्य रातिषु ऋ० ८.३४.१८।

पार्थिवस्य रसे अ० २.२९.१; पै० सं० १९.१७.१०।

पार्थिवा दिव्या: अ० ११.५.२१, ६.८; पै० सं० १६.१५५.१।

पार्श्वे आस्तामनु अ० ९.४.१२; पै० सं० १६.२५.२।

पर्षद्वाण: प्रस्कण्वं ऋ० ८.५१.२।

पावकया यश्चितयन्त्या ऋ० ६.१५.५, य० १७.१०, तै० सं० ४.६.१.७; मै० सं० ४.११.१९; काठ० सं० १६.७७; कपि० २८.१।

पावकवर्चा: शुक्रवर्चा: ऋ० १०.१४०.२, य० १२.१०७, सा० १८१७, तै०सं० ४.२.७.८, मै० सं० २.१०.७; काठ० सं० १६.१७५; कपि० २५.५।

पावकशोचे तव हि क्षयं ऋ० ३.२.६; ऐ० ब्रा० १.४.५।

पावका न: सरस्वती ऋ० १.३.१०, य० २०.८४, सा० १८९, तै० ब्रा० २.४.३.१, नि० ११.२३; का० सं० २२.६६; ऐ० ब्रा० ३.१.१; ऐ० आ० १.१.४; काठ० सं० ४.११९; मै० सं० ४.१०.१५; ७९; ११.६०; आर्याभि० १.८।

पावमानीर्दधन्त न सा० १३०१।

पावमानीर्यो अध्येति ऋ० ९.६७.३२, सा० १२९९।

पावमानी: स्वस्त्ययनी: सुदुघा—सा० १३००।

पावमानी: स्वस्त्ययनीस्ताभि: सा० १३०३।

पावीरवी कन्या चित्रायु: ऋ० ६.४९.७, तै० सं० ४.१.११.१०; काठ० सं० १७.९६।

पावीरवी तन्यतुरेकपादय: ऋ० १०.६५.१३, नि० १२.२९; मै० सं० ४.१४.४२।

पाहि: गायान्धसो मदे ऋ० ८.३३.४, सा० २८९।

पाहि न इन्द्र सुष्टुत ऋ० १.१२९.११।

पाहि नो अग्न एकया ऋ० ८.६०.९, य० २७.४३, सा० ३६, १५४४।

पाहि नो अग्ने पायुभि ऋ० १.१८९.४।

पाहि नो अग्ने रक्षस: पाहि ऋ० १.३६.१५; आर्याभि० १.१२।

पाहि नो अग्ने रक्षसो अजुष्टात् ऋ० ७.१.१३।

पाहि विश्वस्माद्रक्षसो ऋ० ८.६०.१०, सा० १५४५।

पिबापिबेदिन्द्र शूर सोमं मन्दन्तु ऋ० २.११.११।

पिबापिबेदिन्द्र शूर सोमं मा रिषण्यो ऋ० १०.२२.१५।

पिबा वर्धस्व तव घा सुतासः ऋ० ३.३६.३।

पिबा सुतस्य रसिनो ऋ० ८.३.१, सा० २३६, १४२१; ऐ० ब्रा० ४.५.१; ५.२.१। ऐ० आ० ५.२.४।

पिबा सोममभि यमुग्रतः ऋ० ६.१७.१; ऐ० ब्रा० ५.३.३; ६.३.३; ऐ० आ० १.२.२; ५.१.१।

पिबा सोममिन्द्र मन्दतु ऋ० ७.२२.१, सा० ३.९७, ९.२७, अ० २०.११७.१, तै० सं० २.४.१४.९. ऐ० ब्रा० ५.१.४; ३.२.११; ऐ० आ० ५.३.१; ता० ब्रा० १२.१०.१; आ० ब्रा० ६.१.४.३; ६.१५; २.५.३; दे० ब्रा० ५.२.५; मा० ब्रा० ३.१.४.७।

पिबा सोममिन्द्र सुवानन् ऋ० १.१३०.२।

पिबा सोमं मदाय कं ऋ० ८.९५.३।

पिबा सोमं महत ऋ० १०.११६.१।

पिबेदिन्द्र मरुत्सखा ऋ० ८.७६.९; ऐ० ब्रा० ५.२.१।

पिशङ्गभृष्टिमम्भृणं ऋ० १.१३३.५।

पिशङ्गरूपः सुभरो ऋ० २.३.९, तै० सं० ३.१.११.८; मै० सं० ४.१४.१०५।

पिशङ्गरूपो नमसो अ० ९.४.२२; पै० सं० १६.२६.९।

पिशङ्गे सूत्रे अ० ३.९.३।

पिशाचक्षयणमसि अ० २.१८.४; पै० सं० २.४६.१।

पिन्श दर्भ अ० १९.२८.९।

पीपाय धेनुरदितिः ऋ० १.१५३.३।

पीपाय स श्रवसा मर्त्येषु ऋ० ६.१०.३।

पीपिवान्सं सरस्वत ऋ० ७.९६.६, तै० सं० ३.१.११.२।

पीवानं मेषमपचन्त ऋ० १०.२७.१७।

पीवो अन्नां रयिवृधः ऋ० ७.९१.३, य० २७.२३, तै० ब्रा० २.८.१.१; ऐ० ब्रा० ५.३.३; मै० सं० ४.१४.२३; का० सं० २९.२३।

पीवो अश्वाः शुचद्रथा ऋ० ४.३७.४।

पुण्डरीकं नवद्वारं अ० १०.८.४३।

पुण्यं पूर्वा अ० १९.७.३।

पुत्र इव पितरं अ० ५.१४.१०; पै० सं० ७.१.८।

पुत्रमत्तु यातुधानीः अ० १.२८.४।

पुत्रमिव पितरौ ऋ० १०.१३१.५, य० १०.३४, २०.७७, अ० २०.१२५.५, तै० ब्रा० १.४.२.१; काठ० सं० १७.१०४; ३८.१०८; श० ब्रा० ५.३.३.२६; मै० सं० ३.११.३२।

पुत्रं पौत्रमधितर्प अ० १८.४.३९।

पुत्रिणा ता कुमारिणा ऋ० ८.३१.८।

पुत्रो न जातो रण्वो ऋ० १.६९.५।

पुनन्तु ता देवजनः ऋ० ९.६७.२७, य० १९.३९ अ० ६.१९.१; तै० ब्रा० १.४.८.१, २.६.३.४; काठ० सं० ३८.१७ का० सं० २१.४३; ऋ० भू० पञ्चमहायज्ञविषय; ल० पं० वि० २४७; २५७; पै० सं० १९.७.११

पुनन्तु मा पितराः य० १९.३७; काठ०सं० ३८.१४; मै० सं० ३.११.८८; का० सं० २१.४०; ऋ० भू० पञ्चमहायज्ञविषयः।

पुनरासद्य सदनम् य० १२.३९; काठ० सं० १६.१२०; श० ब्रा० ३.८.२.६; मै० सं०

२.७.१२७; कपि० २२.२; २५.१।

पुनरूर्जा नि वर्त्तस्व य० १२.६,४०, सा० १८३२; काठ०सं० ८.३१; ६.४; १६.६०; श० ब्रा० ६.७.३.६; ८.२.६; मै० सं० १.७.१०; १५; तै० सं० १.५.३.६; ४.२.१.८; ३.११; कपि० ४.७; ८.२; २५.१; ३२.१; २; ३५.६।

पुनरेता नि वर्तन्ताम् ऋ० १०.१६.३।

पुनरेना नि वर्तय ऋ० १०.१६.२।

पुनरेहि वाचस्पते अ० १.१.२; पै० सं० १.६.२।

पुनरेहि वृषाकपे ऋ० १०.८६.२१, अ० २०.१२६.२१, नि० १२.२७।

पुनर्दाय ब्रह्मजायां ऋ० १०.१०९.७, अ० ५.१७.११; पै० सं० ६.१५.१०; १६.१४।

पुनर्देहि वनस्पते अ० १८.३.७०।

पुनर्नः पितरो मनो ऋ० १०.५७.५; य० ३.५५, तै० सं० १.८.५.२२; काठ० सं० ६.२६; मै० सं० १.१०.२०; कपि० ८.१०।

पुनर्नो असुं पृथिवी ऋ० १०.५९.७; ऋ० भू० पुनर्जन्मविषयः।

पुनर्मनः पुनरायुर्म य० ४.१५; मै० सं० १.२.२७; श० ब्रा० ३.२.२.१३; ऋ० भू० पुनर्जन्मविषयः।

पुनर्मैत्विन्द्रियं अ० ७.६७.१, पै०सं० ३.१३.६; ऋ० भू० पुनर्जन्मविषयः।

पुनर्ये चक्रुः पितरा युवाना ऋ० ४.३३.३।

पुनर्वै देवा अददुः ऋ० १०.१०९.६, अ० ५.१७.१०; पै० सं० ६.१५.६।

पुनस्त्वादित्या रुद्रा य० १२.४४; अ० १२.२.६; काठ० सं० ८.२६; ३८.१३६; मै० सं० १.७.४; तै० सं० ४.२; ३.१३; ५.२.२.१६; कपि० ८.२; पै० सं० १७.३०.६।

पुनस्त्वा दुरप्सरसः अ० ६.१११.४।

पुनः कृत्यांकृत्य अ० ५.१४.४।

पुनः पत्नीमग्निरदाद् ऋ० १०.८५.३६ अ० १४.२.२, नि० ४.२५।

पुनः पुनर्जायमाना ऋ० १.६२.१०।

पुनः प्राणः पुनरात्मा अ० ६.५३.२।

पुनः समव्यद्वितत ऋ० २.३८.४; नि० ४.११।

पुनाता दक्षसाधनं ऋ० ६.१०४.३; सा० ११५६।

पुनाति ते परिस्रुतं ऋ० ६.१.६; य० १६.४; तै० सं० १.८.२१.१; तै० ब्रा० २.६.१.२; काठ० सं० १२.२३; का० सं० २१.५; श० ब्रा० १२.७.३.११; मै० सं० २.३.३८, ३.११.५१।

पुनान इन्दवा भर (०/त्वं वसूनि०) ऋ० ६.१००.२।

पुनान इन्दवा भर (० / वृषन्) ऋ० ६ ४०.६।

पुनान इन्दवेषां पुरुहूत ऋ० ६.६४.२७।

पुनानश्चमू जनयन् ऋ० ६.१०७.१८।

पुनानः कलशेष्वा ऋ० ६.८.६; सा० ११८३।

पुनानः सोम जागृविः ऋ० ६.१०७.६; सा० ५१६।

पुनानः सोम धारयापो ऋ० ६.१०७.४; सा० ५११, ६७५; तां० ब्रा० १४.३.२; १५.६.२; ष० ब्रा० ४.२.२४; आ० ब्रा० ६.१.२.३,४; दे० ब्रा० ५.१.२; सं० ब्रा० २.११; सा० ब्रा० ३.१.१.१३, २.७।

पुनानः सोम धारयेन्दो ऋ० ६.६३.२८।

पुनानामश्वमूषदो ऋ० ९.८.२; सा० ११७९।

पुनाने तन्वा मिथः ऋ० ४.५६.६; सा० १५९७।

पुनानो अक्रमीदभि ऋ० ९.४०.१; सा० ४८८, ९२४; ष० ब्रा० ४.२.२४।

पुनानो देववीतय ऋ० ९.६४.१५; सा० ८४३।

पुनानो याति हर्यतः ऋ० ९.४३.३।

पुनानो रूपे अव्यये ऋ० ९.१६.६।

पुनानो वरिवस्कृधि ऋ० ९.६४.१४; सा० ८४२।

पुनानो वारे पवमानो सा० १०८०।

पुनीषे वामरक्षसं ऋ० ७.८५.१।

पुमानन्तर्वान्त्स्थवि अ० ९.४.३।

पुमान पुंस परिजान्ः अ० ३.६.१; पै० सं० ३.३.१।

पुमान् पुंसोऽधितिष्ठः अ० १२.३.१; पै०सं० १६.९६.१।

पुमां एनं तनुत उत् ऋ० १०.१३०.२; अ० १०.७.४३-४४।

पुमां कुस्ते अ० २०.१२९.१४।

पुमांसं पुत्र जनय अ० ३.२३.३।

पुरस्तात् ते नमः अ० ११.२.४; पै० सं० १६.१०४.४।

पुरस्ताद्युक्तो वह अ० ५.२९.१।

पुरन्दरा शिक्षतं ऋ० १.१०९.८।

पुरं देवानाम्मृतं अ० ५.२८.११; पै० सं० २.५९.९।

पुरं न धृष्णवा रुज ऋ० ८.७३.१८।

पुरः सद्य इत्थाधिये ऋ० ९.६१.२; सा० १२११।

पुरा क्रूरस्य विसृपो य० १.२८; काठ० सं० १.२९; मै० सं० १.१.२४; श० ब्रा० १.२.५.१९, २०, २.६.१.१२; कपि० १.९; ३९.२।

पुराग्ने दुरितेभ्यः ऋ० ८.४४.३०।

पुराणमोकः सख्यम् ऋ० ३.५८.६।

पुराणा वां वीर्या ऋ० १०.३९.५।

पुराणां अनुवेनन्तं ऋ० १०.१३५.२।

पुरा यत्सूरस्तमसो ऋ० १.१२१.१०।

पुरा संबाधादभ्याववृत्स्व ऋ० २.१६.८।

पुरां भिन्दुर्युवा कविः ऋ० १.११.४; सा० ३५९, १२५०; तां० ब्रा० १४.१२.३।

पुरीष्यासो अग्नयः ऋ० ३.२२.४; य० १२.५०; मै० सं० २.७.१३६; श० ब्रा० ७.३.२.८; काठ० सं० १६.१२९; कपि० २५.२; तै० सं० ४.१.३.६, २.४.८।

पुरीष्योऽसि विश्व भरा य० ११.३२; काठ० सं० १८.३६; मै० सं० २.७.३४; श० ब्रा० ६.४.२.१,२; कपि० ३०.२।

पुरुकुत्सानी हि वामदाशत् ऋ० ४.४२.९।

पुरुतमं पुरूणाम् अ० २०.६८.१२।

पुरुतमं पुरूणामीशानं सा० ७४१।

पुरुत्रा चिद्धि वां नरा ऋ० ८.५.१६।

पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि ऋ० ८.११.८, ४३.२१; सा० ११६७; तै० ब्रा० २.४.४.४; मै०सं० ४.११.१०१।

पुरु त्वा दाश्वान्वोचे ऋ० १.१५०.१; सा० ९७; नि० ५.७।

पुरुदस्मो विषुरूप य० ८.३०; श० ब्रा० ४.५.२.१२।

पुरुद्रप्सा अञ्जिमन्तः ऋ० ५.५७.५।

पुरुप्रियाण ऊतये ऋ० ८.५.४।

पूर्णा दर्विपरा पत य० ३.४६; का० सं० ६.१४; मै० सं० १.१०.८; श० ब्रा० २.५.३.१७; कपि० ८.८ ।

पूर्णात् पूर्णमुदचति अ० १०.८.२९; गो०ब्रा० पू० १.७ ।

पूर्णा पश्चादुत अ० ७.८०.१ ।

पूर्णं नारि प्रभा अ० ३.१२.८; पै० सं० १७.३५.७ ।

पूर्णः कुम्भोऽधि अ० १९.५३.३; पै० सं० १२.२.३ ।

पूर्वस्य यत्ते सा० ६४८; सा० ब्रा० ३.१.४.१३ ।

पूर्वापरं चरतो ऋ० १०.८५.१८; अ० ७.८१.१, १३.२.११, १४.१.२३; तै० ब्रा० २.७.१२.२, ८.९.३; मै० सं० ४.१२.३७; पै० सं० १८.३.२, २१.५ ।

पूर्वापुषं सुहवं पुरुस्पृहं ऋ० ८.२२.२ ।

पूर्वामनु प्रदिशं ऋ० ९.१११.३; सा० १५९१ ।

पूर्वामनु प्रयतिम् ऋ० १.१२६.५ ।

पूर्वा विश्वस्माद्भुवनाद् ऋ० १.१२३.२ ।

पूर्वीभिर्हि ददाशिम ऋ० १.८६.६; तै० सं० ४.३.१३.५ ।

पूर्वीरस्य निष्षिधो ऋ० ३.५१.५ ।

पूर्वीरहं शरदः शश्रमाणा ऋ० १.१७९.१; स० प्र० ४ समु० ।

पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो ऋ० १.११.३; सा० ८२९ ।

पूर्वीरुषसः शरदश्च ऋ० ४.१९.८ ।

पूर्वीश्चिद्धि त्वे तुविकूर्मि ऋ० ८.६६.१२ ।

पूर्वीष्ट इन्द्रोपमातयः ऋ० ८.४०.९; ऐ०ब्रा० ६.४.८ ।

पूर्वे अर्धे रजसो ऋ० १.१२४.५ ।

पूर्वो अग्निष्ट्वा अ० १८.४.९ ।

पूर्वो जातो ब्रह्मणो अ० ११.५.५; पै० सं० १६.१५३.५; ऋ०भू० वर्णाश्रमविषयः ।

पूर्वो दुन्दुभे अ० ५.२०.६ ।

पूर्वो देवा भवतु ऋ० १.९४.८ ।

पूर्व्य होतरस्य नो ऋ० १.२६.५ ।

पूषणं न्वजाश्वं ऋ० ६.५५.४ ।

पूषणं वनिष्ठुना य० २५.७; मै० सं० ३.१५.९; का० सं० २७.११ ।

पूषण्वते ते चकृमा ऋ० ३.५२.७ ।

पूषण्वते मरुत्वते ऋ० १.१४२.१२ ।

पूषन्तव व्रते अ० ७.१०.३ ।

पूषन्तव व्रते वयं ऋ० ६.५४.९, य० ३४.४१, अ० ७.९.३, तै० ब्रा० २.५.५.५; श०ब्रा० १३.४.१.१५; का० सं० ३३.२९ ।

पूषन्ननु प्र गा इहि ऋ० ६.५४.६ ।

पूषा गा अन्वेतु नः ऋ० ६.५४.५, तै० सं० ४.१.११.११, तै० ब्रा० २.४.१.५; काठ० सं० ४.१०८; मै० सं० ४.१०.८० ।

पूषा त्वेतश्च्यावयतु ऋ० १०.१७.३; अ० १८.२.५४, तै० आ० ६.१.१, नि० ७.९ ।

पूषा त्वेतो नयतु ऋ० १०.८५.२६, अ० १४.१.२०; सं० वि० विवाह संस्कार ।

पूषा पञ्चाक्षरेण य० ९.३२; श० ब्रा० ५.२.२.१७ ।

पूषा राजानमाघृणिः ऋ० १.२३.१४ ।

पूषा विष्णुर्हवनं मे ऋ० ८.५४.४ ।

पूषा सुबन्धुर्दिव ऋ० ६.५८.४, तै० ब्रा० २.८.५.४ ।

पूषेम शरदः अ० १९.६७.५ ।

पूषेमा आशा अनु वेद ऋ० १०.१७.५. अ०

७.६.२, तै० ब्रा० २.४.१.५, मै० सं० ४.१४.२३७ ।

पूष्णश्चक्रं न रिष्यति ऋ० ६.५४.३ ।

पृक्षप्रयजो द्रविणः ऋ० ३.७.१० ।

पृक्षस्य वृष्णो अरुषस्य ऋ० ६.८.१; ऐ० ब्रा० ४.५.४ ।

पृक्षे ता विश्वा भुवना ऋ० २.३४.४ ।

पृक्षो वपुः पितुमान् ऋ० १.१४१.२ ।

पृच्छामि त्वा चितये य० २३.४९; श० ब्रा० १३.५.२.१४; का० सं० २५.५७ ।

पृच्छामि त्वा परमन्तं ऋ० १.१६४.३४, य० २३.६१, अ० ९.१०.१३; श० ब्रा० १३.५.२.२१; तै० सं० ८.४.१८.५; का० सं० २५.६६; पै० सं० १६.६६.३ ।

पृच्छे तदेनो वरुण ऋ० ७.८६.३ ।

पृणीयादिन्नाधमानाय ऋ० १०.११७.५ ।

पृतनाजितं सहमानं अ० ७.६३.१; पै० सं० २०.३२.८ ।

पृथक्प्रायन्प्रथमा ऋ० १०.४४.६, अ० २०.९४.६, नि० ५.२५ ।

पृथक् सर्वे अ० ११.५.२२; पै० सं० १६.१५५.२ ।

पृथक् सहस्राभ्यां अ० १९.२२.१९ ।

पृथग् रूपाणि अ० १२.३.२१; पै० सं० १७.३८.१ ।

पृथिवि देवयजनि य० १.२५; श० ब्रा० १.२.४.१६; तै० सं० १.१.९.३; कपि० १.९.२.५; ४.८; ४७.८ ।

पृथिवी च म इन्द्रश्च य० १८.१८; कपि० २८.१० ।

पृथिवी छन्दोऽन्तरिक्षं य० १४.१९; तै० सं० ४.३.७.१३; कपि० २६.२; ३२.१२ ।

पृथिवी दण्डो अ० ९.१.२१; पै० सं० १६.३४.१ ।

पृथिवी धेनुस्तस्याः अ० ४.३९.२ ।

पृथिवीप्रो महिषो अ० १३.२.४४; पै० सं० १८.२५.४ ।

पृथिवी शान्तिः १९.९.१४, पै० सं० ४.९.२४५ ।

पृथिवीं त्वा पृथिव्यामा अ० १२.३.२२; १८.४.४८ ।

पृथिव्या अहमुदन्तरिक्षम् य० १७.६७; काठ० सं० १८.३५, श०ब्रा० ९.२.३.२५, २६; मै० सं० २.१०.४६; तै० सं० ४.६.५; ३; कपि० २८.४ ।

पृथिव्यामग्नये अ० ४.३९.१ ।

पृथिव्याः पुरीषमसि य० १४.४; काठ० सं० २१.५, श० ब्रा० ८.२.१.७; मै० सं० २.८.६; तै० सं० ४.१.३.५; कपि० २५.१० ।

पृथिव्याः सधस्थादग्नि य० ११.१६; काठ० सं० १६.४; कपि० सं० २९.८ ।

पृथिव्यै श्रोत्राय अ० ६.१०.१; गो० ब्रा० पू० १.१४ ।

पृथिव्यै स्वाहा अ० ५.९.२,६; काठ० सं० ३७.४४. मै० सं० ३.१२.१२; तै० सं० १.८.१३.३२, ५.११.१, ७.१.१५.१, २७.१; का० सं० २४.३३; पै० सं० १३.१२ ।

पृथिव्यै स्वाहाऽन्तरिक्षाय य० २२.२९ ।

पृथुपाजा अमर्त्यो ऋ० ३.२७.५, तै० ब्रा० ३.६.१.३; का० सं० ४०.११७ ।

पृथू करस्ना बहुला ऋ० ६.१९.३ ।

पृथू रथो दक्षिणाया ऋ० १.१२३.१ ।

पृदाकवः अ २०.१२९.६।

पृदाकुसानुर्यजतो गवेषणः ऋ० ८.१७.१५।

पृश्निस्तिरश्चीनपृश्निः त० २४.४; मै० सं० ३.१३.६; तै० सं० ५.६.१२.१, का० सं० २६.५।

पृषदश्वा मरुतः पृश्नि ऋ० १.८९.७, य० २५.२०; कपि० ४८.२; का०सं० २७.२४; कपि० ४८.२; काठ० सं० १.३०; ३५.३।

पृषध्रे मेध्ये मातरिश्वनि ऋ० ८.५२.२।

पृष्टो दिवि धाय्यग्निः ऋ० ७.५.२।

पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः ऋ० १.९८.२, य० १८.७३, तै० ब्रा० ३.११.६.४, तै० सं० १.५.११.४, ४.४.१२.१६, ७.१३.१८, काठ० सं० ४.१३८; २०.४२, ४०.१३; ऐ० ब्रा० ७.२८, श० ब्रा० ६.५.२.६, मै० सं० २.१३.८६, ३.१६.६५।

पृष्ठं धावन्तं हर्यो० अ० २०.१२८.१५।

पृष्ठात् पृथिव्या अहम् अ० ४.१४.३; पै० सं० ३.३८.८, १६.९८.६।

पृष्ठीर्मे राष्ट्रमुदरम् य० २०.८, मै० सं० ३.११.६७; ऋ० भू० राजप्रजाधर्मविषयः; का० सं० २१.१०५।

पैद्व प्रेहि प्रथमो अ० १०.४.६, पै० सं० १६.१५.६।

पैद्वस्य मन्महे वयं अ० १०.४.११, पै० सं० १६.१६.१।

पैद्वो हन्ति कसणीलं अ० १०.४.५, पै० सं० १६.१५.५।

पौरं चिद्धच्युदप्रुतं ऋ० ५.७४.४।

पौरो अश्वस्य पुरुकृद् ऋ० ८.६१.६, सा० १५८०, अ० २०.११८.२।

पौर्णमासी प्रथमा अ० ७.८०.४, पै० सं० २०.१०२.१।

प्र ऋभुभ्यो दूतमिव ऋ० ४.३३.१, ऐ० ब्रा० ५.१.५।

प्र कविर्देववीतये ऋ० ९.२०.१, सा० ९६८।

प्र कारवो मनना ऋ० ३.६.१, तै० ब्रा० २.८.२.५, मै० सं० ८.१४.३८।

प्र काव्यमुशनेव ऋ० ९.९७.७, सा० ५२४, १११६, तां० ब्रा० १४.१.३, सा० ब्रा० ३.१.४.१०, १८।

प्र कृतान्यृजीषिणः ऋ० ८.३२.१, ऐ० ब्रा० ५.२.४।

प्र कृष्टिहेव शूष एति ऋ० ९.७१.२।

प्र केतुना बृहता यात्यग्निः ऋ० १०.८.१, सा० ७१, अ० १८.३.६५, तै० ब्रा० ६.३.१, सा० ब्रा० ३.१.४.७।

प्रक्षस्य वृष्णो ऋ० ६.८.१, सा० ६०९, ब्रा० ब्रा० ६.३.३.४, ४.१.३,५, सा० ब्रा० ३.१.४.१८।

प्र क्षोदसा धायसा ऋ० ७.९५.१, मै० सं० ४.१४.९९, ऐ० ब्रा० ५.३.१।

प्र गायताभ्यर्चाम ऋ० ९.९७.४, सा० ५३५।

प्र गायत्रेण गायत ऋ० ९.६०.१।

प्र घान्वस्य महतो ऋ० २.१५.१; ऐ० ब्रा० ५.२.८।

प्रघासिनो हवामहे य० ३.४४; काठ० सं० ९.९, मै० सं० १.१०.३; श० ब्रा० २.५.२.२१; कपि० ८.७।

प्र चक्रे सहसा सहो ऋ० ८.४.५।

प्र चर्षणिभ्यः पृतना० ऋ० १.१०९.६, तै० सं० ४.२.११.१; काठ० सं० ४.१०५।

प्र चित्रमर्कं गृणते ऋ० ६.६६.९, तै० सं०

४.१.११.३, तै० ब्रा० २.८.५.५, नि० ३.२१।

प्रचेतसं त्वा कवे ऋ० ८.१०२.१८।

प्र च्यवस्व तन्वं अ० १८.३.६; काठ० सं० २४.१६।

प्र च्यवानाज्जुजुरुषो ऋ० ५.७४.५।

प्रजया स वि क्रीणीते अ० १२.४.२; पै०सं० १७.१६.२।

प्रजानत्यघ्न्ये जीव अ० १८.३.४।

प्रजानन्तः प्रति अ० २.३४.५; पै० सं० ३.३२.१०; काठ० सं० ३०.३८; तै० सं० ३.१.४.३।

प्रजानन्नग्ने तव योनिं ऋ० १०.६१.४।

प्रजानां प्रजननाय ऋ० ६.६.१०।

प्रजापतये च वायवे य० २४.३०; मै० सं० ३.१४.११; का० सं० २६.३१।

प्रजापतये त्वा जुष्टं य० २२.५; का० सं० २४.७; श० ब्रा० १३.१.२.५–६; २.७.१२।

प्रजापतये पुरुषान् य० २४.२६; मै० सं० ३.१४.८; का० सं० २६.३०।

प्रजापतिरनुमतिः अ० ६.११.३; पै० सं० २.७५.१; सं० वि० पुंसवनसंस्कार।

प्रजापतिर्जनयति अ० ७.१६.१; पै० सं० १६.२२.१५।

प्रजापतिर्मह्यमेता ऋ० १०.१६६.४, तै० सं० ७.४.१७.२।

प्रजापतिर्मा प्रजनन अ० १६.१७.६; पै० सं० ७.१६.६।

प्रजापतिर्विश्वकर्मा य० १८.४३।

प्रजापतिश्च परमेष्ठी अ० ६.७.१; पै० सं० १६.१३६.१।

प्रजापतिश्चरति य० ३१.१६, अ० १०.८.१३; पै० सं० १६.१०२.२; १५१.१०।

प्रजापतिष्ट्वा बध्नातु अ० १६.४६.१; पै० सं० ४.२३.१।

प्रजापतिष्ट्वा सादयतु य० १३.१७।

प्रजापतिं सलिलादा अ० ४.१५.११; पै० सं० ५.७.१०।

प्रजापतिं ते प्रजन० अ० १६.१८.६।

प्रजापतिः प्रजाभिः अ० १६.१६.११; पै० सं० १६.१५१.६।

प्रजापतिः सम्भ्रियमाणः य० ३६.५; का० ३६.३।

प्रजापते न त्वदेतानि ऋ० १०.१२१.१०, य० १०.२०.२३.६५, अ० ७.८०.३, श० ब्रा० १३.५.२.२३, १४.६.३.३; तै० सं० १.८.१४.२, ३.२.५.२०, तै० ब्रा० २.८.१.२, ३.५.७.१; नि० १०.४१; मै० सं० २.६.४१; सं० वि० सामान्य प्रकरण।

प्रजापतेरावृतो अ० १७.१.२७; पै० सं० १८.३२.१०।

प्रजापतेर्वा एष अ० ६.६.१२; सं० वि० सँन्यास संस्कार।

प्रजापतेश्च वै स अ० १५.६.२६।

प्रजापते श्रेष्ठेन रूपेण अ० ५.२५.१३।

प्रजापतेस्तपसा य० २६.११; मै० सं० ३.१६.२७; का० सं० ३१.११।

प्रजापतौ त्वा देवतायां य० ३५.६; श० ब्रा० १३.८.३.३।

प्रजाभ्यः पुष्टिं विभजन्त ऋ० २.१३.४।

प्रजामृतस्य पिप्रतः ऋ० ८.६.२, सा० १३०६, अ० २०.१३८.२।

प्रति ते दस्यवे वृक ऋ० ८.५६.१ ।

प्रति त्यं चारुमध्वरं ऋ० १.१९.१; सा० १६; नि० १०.३५; सा० ब्रा० ३.१.४.२ ।

प्रति त्वा दुहितर्दिवः ऋ० ७.८१.३ ।

प्रति त्वाद्य सुमनसो ऋ० ७.७८.५ ।

प्रति त्वा शवसी वदत् ऋ० ८.४५.५ ।

प्रति त्वा स्तोमैरीळते ऋ० ७.७६.६ ।

प्रति दह यातुधानान् अ० १.२८.२; पै० सं० २.६२.४ ।

प्रति द्युतानामरुषासो ऋ० ७.७५.६ ।

प्रति धाना भरत ऋ० ३.५२.८ ।

प्रति न स्तोमं ऋ० ७.३४.२१ ।

प्रतिपदसि प्रतिपेद य० १५.८ ।

प्रति पन्थामपद्महि य० ४.२९; श० ब्रा० ३.३.३.१५; कपि० १.१९, ३७.७ ।

प्रति प्रयाणमसुरस्य ऋ० ५.४९.२ ।

प्रति प्र याहीन्द्र ऋ० १.१६९.६ ।

प्रति प्राशव्यां इतः ऋ० ८.३१.६ ।

प्रति प्रियतमं रथं ऋ० ५.७५.१; सा० ४१८; १७४३ ।

प्रति ब्रवाणि वर्तयते ऋ० १०.९५.१३ ।

प्रतिभद्रा अदृक्षत ऋ० ४.५२.५ ।

प्रति मे स्तोममदितिजगृ ऋ० ५.४२.२ ।

प्रति यत्स्या नीथा दर्शि ऋ० १.१०४.५; नि० ५.१६ ।

प्रति यदापो अदृश्रं ऋ० १०.३०.१३; ऐ० ब्रा० २.३.२ ।

प्रति वा एना नमसा ऋ० १.१७१.१ ।

प्रति वां रथं नृपती ऋ० ७.६७.१ ।

प्रति वां सूर उदिते मित्रं ऋ० ७.६६.७; सा० १०६७; ऐ० ब्रा० ५.३.३; तां० ब्रा० १३.८.२ ।

प्रति वां सूर उदिते सूक्तैः ऋ० ७.६५.१ ।

प्रति वो वृषदञ्जये ऋ० ८.२०.९ ।

प्रति श्रुताय वो धृषत् ऋ० ८.३२.४; नि० ५.१६ ।

प्रतिश्रुत्काया अर्तनं य० ३०.१९; का० सं० ३४.३९ ।

प्रतिषीममग्निर्जरते समिद्धः ऋ० ७.७८.२ ।

प्रति ष्टोभन्ति सिन्धवः ऋ० १.१६८.८ ।

प्रतिष्ठे ह्यभवतं अ० ४.२६.२; पै० सं० ४.३६.१ ।

प्रति ष्या सूनरी जनी ऋ० ४.५२.१; सा० १७२५ ।

प्रति स्तोमेभिरुषसं वसिष्ठाः ऋ० ७.८०.१ ।

प्रति स्पशो वि सृज ऋ० ४.४.३; य० १३.११; तै० सं० १.२.१४.३; मै० सं० २.७.२०६; ऐ० ब्रा० १.४.२; का० सं० १६.१९१ ।

प्रति स्मरेथां तुजयद्भिरेवैः ऋ० ७.१०४.७; अ० ८.४.७; पै० सं० १६.९.७ ।

प्रतीचीने मामहनी ऋ० १०.१८.१४ ।

प्रतीची दिग्वरुणो अ० ३.२७.३; पै० सं० ३.२४.३; सं० वि० गृहाश्रमसंस्कार; ल० पं० वि० २.२१ ।

प्रतीची दिशामि अ० १२.३.९; पै० सं० २.८६.३ ।

प्रतीचीन आङ्गिरसो अ० १०.१.६; पै० सं० १६.३५.६ ।

प्रतीचीन फलो हि अ० ७.६५.१; पै० सं० २.२६.७, ५.२३.४, १६.१५.१० ।

प्रतीचीमा रोह य० १०.१२; श० ब्रा० ५.४.१.५ ।

प्रतीची सोममसि अ० ७.३८.३; पै० सं० ३.२९.१ ।

प्रतीचीं त्वा प्रतीचीनः ऋ० ६.३.२२; पै० सं० १६.४१.४; सं०वि० गृहाश्रम संस्कार।

प्रतीच्या दिशः अ० ६.३.२७; पै० सं० १६.४१.७; सं० वि० गृहाश्रम-संस्कार।

प्रतीच्यां त्वा दिशि अ० १८.३.३२; पै० सं० १६.६३.३।

प्रतीच्यां दिशि अ० ४.१४.८; पै० सं० १६.६६.१; तै० सं० १.६.५६।

प्रतीच्यै त्वा दिशे अ० १२.३.५७; पै० सं० १६.६३.३।

प्रतीपं प्राति सुत्वनम् अ० २०.१२६.२; गो० ब्रा० उ० ६.१३।

प्रतीहारो निधनं अ० ११.७.१२; पै० सं० १६.८२.२।

प्र तु द्रव परि कोशं ऋ० ६.८७.१; सा० ५२३, ६७७; तां० ब्रा० ११.३.१; सा० ब्रा० ३.१.४.१०।

प्र तुविद्युम्नस्य स्थविरस्य ऋ० ६.१८.१२; ऋ० भा० १.३.४।

प्रतूर्त्त वाजिन्ना द्रव य० ११.१२; काठ० सं० १६.४; १६.३; मै० सं० २.७.१२; श० ब्रा० ६.३.२.२, तै० सं० ४.१.२.२; ५.१.२.२, कपि० २६.८।

प्रतूर्वन्नेह्यवक्राम् य० ११.१५; मै० सं० २.७.१५; तै० सं० ४.१.२.५; श० ब्रा० ६.३.२.७;८; ३.३; कपि० २६.८।

प्र ते अग्नयोऽग्निभ्यो वरं ऋ० ७.१.४।

प्र ते अग्ने हविष्मतीं ऋ० ३.१६.२।

प्र ते अश्नोतु कुक्ष्योः ऋ० ३.५१.१२, सा० ७३६।

प्र ते अस्या उषसः ऋ० १०.२६.२, अ० २०.७६.२।

प्र ते दिवो न वृष्टयो ऋ० ६.६२.२८।

प्र ते धारा अत्यण्वानि ऋ० ६.८६.४७।

प्र ते धारा असश्चतो ऋ० ६.५७.१; सा० १७६१।

प्र ते धारा मधुमतीः ६.६७.३१. सा० ५३४।

प्र ते नावं न समने ऋ० २.१६.७।

प्र ते पूर्वाणि करणानि विप्रा ऋ० ४.१६.१०।

प्र ते पूर्वाणि करणानि वोचं ऋ० ५.३१.६।

प्र ते बभ्रू विचक्षण ऋ० ४.३२.२२।

प्र ते भिनद्मि मेहनं अ० १.३.७; पै० सं० १६.२०.१३; २०.४०.३।

प्र ते मदासो मदिरास ऋ० ६.८६.२।

प्र ते महे विदथे शन्सिषं ऋ० १०.६६.१, अ० २०.३०.१, तै० ब्रा० २.४.३.१०, ३.७.६.६; ऐ० ब्रा० ४.१.३; मै० सं० ४.१२.१८४।

प्र ते यक्षि प्र त इर्यमि ऋ० १०.४.१, तै० सं० २.५.१२.२५।

प्र ते रथं मिथूकृतं ऋ० १०.१०२.१।

प्र तेऽरदद्वरुणो यातवे ऋ० १०.७५.२।

प्र ते वोचाम वीर्या ऋ० ४.३२.१०।

प्र ते शृणामि शृङ्गे अ० २.३२.६; पै० सं० २.१४.४।

प्र ते सोतार ओण्योः ऋ० ६.१६.१।

प्र ते सोतारो सा० १३३३।

प्रत्नवज्जनया गिरः ऋ० ८.१३.७।

प्रत्नं पीयूषं पूर्व्यं ऋ० ६.११०.८; तां० ब्रा० १६.११.८।

प्रत्नं रयीणां युजं ऋ० ६.४५.१६।

प्रत्नं होतारमीड्यं ऋ० ८.४४.७।

प्रत्नान्मानादध्या ये ऋ० ९.७३.६; ऐ० ब्रा० १.४.३ ।

प्रत्नो हि कमीड्यो अ० ६.११०.१ ।

प्रत्नो हि कमीड्यो अध्वरेषु ऋ० ८.११.१०. तै० आ० १०.२१ ।

प्रत्यग्निरुषसश्चेकितानो ऋ० ३.५.१ ।

प्रत्यग्निरुषसा अ० ७.८२.५, १८.१.२८ ।

प्रत्यग्निरुषसामग्रम् ऋ० ४.१३.१ ।

प्रत्यग्निरुषसो जातवेदा ऋ० ४.१४.१ ।

प्रत्यग्ने मिथुना ऋ० १०.८७.२४ ।

प्रत्यग्ने हरसा हरः ऋ० १०.८७.२५, सा० ९५, नि० ४.१९ ।

प्रत्यङ् तिष्ठन् धातो अ० ९.७.२१; पै० सं० १६.१३९.२२ ।

प्रत्यङ् देवानां सा० ६३६ ।

प्रत्यङ् देवानां विशः ऋ० १.५०.५, अ० १३.२.२०,२०.४७.१६, नि० १२.२३; पै० स० १८.२२.५ ।

प्रत्यङ् हि सम्बभूविथ अ० ४.१९.७; पै०स० ५.२५.७ ।

प्रत्यञ्चमर्कमनयन् ऋ० १०.१५७.५, अ० २०.६३.३,१२४.६; पै० सं० १७.३५.४ ।

प्रत्यञ्चमर्कं प्रत्य अ० १२.२.५५ ।

प्रत्यञ्चं चैनं प्राशीः अ० ११.३.२९ ।

प्रत्यर्चीरुशदस्या ऋ० १.९२.५ ।

प्रत्यर्थिर्यज्ञानां ऋ० १०.२६.५ ।

प्रत्यस्मै पिपीषते ऋ० ६.४२.१ सा० ३५२, १४४०, तै० ब्रा० ३.७.१०.६; ऐ० ब्रा० ४.१.२ ।

प्रत्यस्य श्रेणयो ददृश्र ऋ० १०.१४२.५ ।

प्रत्यु अदर्श्यायती ऋ० ७.८१.१, सा० ३०३, ७५१, तै० ब्रा० ३.१.३.१; गो० ब्रा० उ० ५.३.५५७ ।

प्रत्युष्टं रक्षः प्रत्युष्टा य० १.७,२९; का० सं० १.१०.१५;१६; मै० सं० १.१.२५; तै० सं० १.१.२.२;४.३;१०.१; श० ब्रा० १.१.२.२;४;३.१.४-१७; कपि० १.४; १०;४९.३;९ ।

प्रत्वक्षसः प्रतवसो ऋ० १.८७.१; ऐ० ब्रा० ४.५.२ ।

प्र त्वा दूतं वृणीमहे ऋ० १.३६.३ ।

प्र त्वा नमोभिरिन्दव ऋ० ९.१६.५ ।

प्रत्वा मुञ्चामि वरुणस्य ऋ० १०.८५.२४, अ० १४.१.१९,५८; सं० वि० विवाह संस्कार, पै० सं० १८.२.६ ।

प्रथमभाजं यशसं ऋ० ६.४९.९ ।

प्रथमं जातवेदसमग्निं ऋ० ८.२३.२२ ।

प्रथमा द्वितीयैः य० २०.१२; श० ब्रा० १२.८.३.३०; का० सं० २१.११० ।

प्रथमा वां सारथिना य० २९.७; मै० सं० ३.१६.२३; का० सं० ३१.७ ।

प्रथमा ह व्युषास अ० ३.१०.१; पै० सं० १.१४१.१; काठ० सं० ३९.६.५; मै० सं० २.१३.८५ ।

प्रथमा हि सुवाचसा ऋ० १.१८८.७ ।

प्रथमेन प्रमारेण अ० ११.८.३३ ।

प्रथमेभ्यः शङ्खेभ्यः अ० १९.२२.८ ।

प्रथश्च यस्य सप्रथश्च ऋ० १०।१८१.१, सा० ५९९, ऐ० ब्रा० १.४.४ ।

प्रथिष्ट यस्य वीरकर्म ऋ० १०.६१.५ ।

प्रथिष्ट यामन्पृथिवी ऋ० ५.५८.७ ।

प्रथो वरो व्यचो अ० १३.४.५३; ऋ० भू० उपासना विषय ।

प्रदक्षिणिदभि गृणन्ति ऋ० २.४३.१ ।

प्र दानुदो दिव्यो दानु ऋ० ९.९७.२३ ।

प्र दीधितिर्विश्ववारा ऋ० ३.४.३ ।

प्रदुद्रुदो मघाप्रति अ० २०.१३०.१२ ।

प्र देवत्रा ब्रह्मणे ऋ० १०.३०.१; ऐ० ब्रा० २.३.१ ।

प्र देवमच्छा मधुमन्त ऋ० ९.६८.१, सा० ५६३ ।

प्र देवं देववीतये ऋ० ६.१६.४१, तै० सं० ३.५.११.१६; मै० सं० ४.१०.६७; ऐ० ब्रा० १.३.५; काठ० सं० १५.५६ ।

प्र देवं देव्या धिया ऋ० १०.१७६.२, तै० सं० ३.५.११.१; मै० सं० ४.१०.६१; १३.१०; ऐ० ब्रा० १.५.२; १५.४३ ।

प्र दैवोदासो अग्निः ऋ० ८.१०३.२, सा० ५१,१५१७; दे० ब्रा० ५.१.१.३; सा० ब्रा० ३.३.५.६ ।

प्र द्यावा यज्ञैः पृथिवी ऋतावृधा ऋ० १.१५९.१ ।

प्र द्यावा यज्ञैः पृथिवी नमोभिः ऋ० ७.५३.१; ऐ० ब्रा० ५.१.५ ।

प्र द्युम्नाय प्र शवसे ऋ० ८.९.२०, अ० २०.१४२.५ ।

प्र धन्वा सोम जागृविः ऋ० ९.१०६.४, सा० ५६७ ।

प्र धारा अस्य शुष्मिणो ऋ० ९.३०.१ ।

प्र धारा मध्वो अग्रियो ऋ० ९.७.२, सा० ११२९ ।

प्र न इन्द्रो महे सा० ५०९ ।

प्र नभस्व पृथिवि अ० ७.१८.१ ।

प्र नव्यसा सहसः ऋ० ६.६.१ ।

प्र नः पूषा चरथं ऋ० १०.९२.१३ ।

प्र निम्नेनेव सिन्धवो ऋ० ९.१७.१ ।

प्र नु यदेषां महिना ऋ० १.१८६.९ ।

प्र नु वयं सुते या ऋ० ५.३०.३ ।

प्र नु वोचा सुतेषु वां ऋ० ६.५९.१ ।

प्र नूनं जातवेदसं ऋ० १०.१८८.१, नि० ७.१९ ।

प्र नूनं जायतामयं ऋ० १०.६२.८ ।

प्र नूनं धावता पृथक् ऋ० ८.१००.७ ।

प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिः ऋ० १.४०.५; य० ३४.५७; ऐ० ब्रा० ५.१.१; २.८; ४.१; मै० सं० १.६.३४; कपि० ४.६; ७.४; काठ० सं० ७.८४; का० सं० ३३.४५; कपि० ४.६; ७.४ ।

प्र नू महित्वं वृषभस्य ऋ० १.५९.६, नि० ७.२३ ।

प्र नू स मर्तः शवसा ऋ० १.६४.१३ ।

प्र नेमस्मिन्ददृशे ऋ० १०.४८.१० ।

प्र नो यच्छत्वर्यमा ऋ० १०.१४१.२, य० ९.२९, अ० ३.२०.३, तै० सं० १.७.१०.५ मै० सं० १.११.१८; काठ० सं० १४.९; श० ब्रा० ५.२.२.१३ ।

प्र प्रतेतः पापि अ० ७.११५.१; पै० सं० २०.१७.७ ।

प्रपथे पथाम जनिष्ट ऋ० १०.१७.६, अ० ७.९.१, तै० ब्रा० २.८.५.३; मै० सं० ४.१४.२३८ ।

प्रपदोऽव ने निग्धि अ० ९.५.३; पै० सं० १६.९७.२ ।

प्र पर्वतस्य वृषभस्य य० १०.१९; श० ब्रा० ५.४.२.५;६ ।

प्र पर्वतानामुशती ऋ० ३.३३.१, नि० ९. ३७ ।

प्र पवमान धन्वसि ऋ० ९.२४.३, सा०

९६३।

प्र पस्त्यामदितिं सिन्धुम् ऋ० ४.५५.३।

प्र पादौ न यथायति अ० १९.४९.१०।

प्र पितृयाणं पन्था अ० १५.१२.५।

प्र पीपय वृषभ जिन्व ऋ० ३.१५.६।

प्र पुनानस्य चेतसा ऋ० ९.१६.४।

प्र पुनानाय वेधसे ऋ० ९.१०३.१, सा० ५७३।

प्र पूतास्तिग्मशोचिषे ऋ० १.७९.१०।

प्र पूर्वजे पितरा नव्यसीभिः ऋ० ७.५३.२, तै० स० ४.१.११.४, तै० ब्रा० २.८.४.७; मै० सं० ४.१०.७८; १४.७८।

प्र पूषणं वृणीमहे ऋ० ८.४.१५।

प्र प्यायस्व प्र स्यन्दस्व ऋ० ९.६७.२८।

प्र प्रक्षयाय पन्यसे ऋ० ९.९.२, सा० ९३७।

प्र प्रदोऽव नेनिग्धि अ० ९.५.३।

प्र प्र पूष्णस्तुविजातस्य ऋ० १.१३८.१।

प्र प्र वस्त्रिष्टुभं ऋ० ८.६९.१, सा० ३६०; ऐ० ब्रा० ४.१.४।

प्र प्रायमग्निर्भरतस्य ऋ० ७.८.४, य० १२.३४, तै० सं० २.५.१२.२४; ४.२.३.५, ऐ० ब्रा० १.३.६; काठ० सं० १६.११५; कपि० २५.१; श० ब्रा० ६.८.१.१४।

प्र प्रा वो अस्मे ऋ० १.१२९.८, नि० ६.४।

प्र बभ्रवे वृषभाय ऋ० २.३३.८।

प्र बाहवा सिसृतं ऋ० ७.६२.५, य० २१.९ तै० ब्रा० २.७.१५.६, ८.६.७, मै० सं० ४.११.६६; १४.१४४; काठ० सं० ४. १२७ का० सं० २३.९ तै० सं० १.८.२२. ९ ; ४.२.३.५।

प्र बुध्न्या व ईरते ऋ० ७.५६.१४, तै० सं० ४.३.१३.१९; मै० सं० ४.१०.११८, काठ० सं० २१.५३।

प्र बुध्यस्व सुबुधा अ० १४.२.७५; पै० सं० १८.१४.५; सं० वि० गृहाश्रम संस्कार।

प्र बोधयोषः पृणतो ऋ० १.१२४.१०।

प्र बोधयोषो अश्विना ऋ० ८.९.१७, अ० २०.१४२.२।

प्र ब्रह्माणि नभाकवद् ऋ० ८.४०.५।

प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो ऋ० ७.४२.१ ऐ० ब्रा० ५.४.१।

प्र ब्रह्मै तु सदनादृतस्य ऋ० ७.३६.१।

प्रब्लीनो मृदितः अ० ११.९ १९।

प्रभङ्गं दुर्मतीनां ऋ० ८.४६.१९।

प्रभङ्गी शूरो मघवा ऋ० ८.६१.१८, सा० १४५९।

प्रभर्ता रथं गव्यन्त ऋ० ८.२.३५।

प्र भूजर्यन्तं महाँ ऋ० १०.४६.५, सा० ७४; सा० ब्रा० ३.१.४.६।

प्र भोजनस्य सा० ६४९, सा० ब्रा० ३.१. ४.१०।

प्रभ्राजमानां हरिणीं अ० १०.२.३३, पै०सं० १६.६२.५।

प्र भ्रातृत्वं सुदानवो ऋ० ८.८३.८।

प्र मन्दिने पितुमदर्चता ऋ० १.१०१.१, सा० ३८०, नि० ४.२४; ऐ० ब्रा० ५.४.१; सा० ब्रा० ३.२.५.५।

प्र मन्महे शवसा य० ३४.१६; का० सं० ३३.१०।

प्र मन्हिष्ठाय अ० २०.१५.१।

प्र मन्हिष्ठाय गायत ऋ० ८.१०३.८, सा० १०७,८७८; सा० ब्रा० ३.१.६.१६।

प्र याभिर्यासि दाश्वान्सम् ऋ० ७.९२.३,य० २७.२७, तै० सं० २.२.१२ ७;२८; मै० सं० ४.१०.१४८; ऐ० ब्रा० ५.३.१; काठ० सं० १०.२५; का० सं० २९.२६।

प्र या महिम्ना ऋ० ६.६१.१३।

प्र याः सिस्त्रते सूर्यस्य ऋ० १०.३५.५।

प्रयुजा वाचो ऋ० ९.७.३, सा० ११३०।

प्र युञ्जती दिव ऋ० ५ ४७.१।

प्र ये गावो न भूर्णयः ऋ० ९.४१.१, सा० ४९१,८९२।

प्र ये गृहादममदुस्त्वाया ऋ० ७.१८.२१, नि० ६.३०।

प्र ये जाता महिना ऋ० ५.८७.२।

प्र ये दिवः पृथिव्या ऋ० १०.७७.३।

प्र ये दिवो बृहतः ऋ० ५.८७.३।

प्र ये धामानि पूर्व्याण्यर्चा ऋ० ४.५५.२।

प्र ये मित्रं प्रार्यमणं ऋ० १०.८९.९।

प्र ये मे बन्ध्वेषे ऋ० ५.५२.१६।

प्र ये ययुरवृकासो रथा इव ऋ० ७.७४.६।

प्र ये वसुभ्य ईवदानमोर्ट्; ऋ० ५.४९.५।

प्र ये शुम्भन्ते जनयो ऋ० १.८५.१।

प्र यो जज्ञे विद्वानस्य अ० ४.१.३; पै० सं० ५.२.३; काठ० सं० १०.४२, तै० सं० २.३.१४.२३।

प्र यो ननक्षे अभ्योजस ऋ० ८.५१.८।

प्र यो राये निनीषति ऋ० ८.१०३.४; सा० ५८; सा० ब्रा० ३.२.८.२।

प्र यो रिरिक्ष ऋ० ८.८८.५; सा० ३१२।

प्र यो वां मित्रावरुणाजिरो ऋ० ८.१०१.३।

प्र राजा वाचं जनयन् ऋ० ९.७८.१।

प्र रुद्रेण ययिना यन्ति ऋ० १०.९२.५।

प्र रेभ एत्यति वारं ऋ० ९.८६.३१।

प्र रेभ धीं भरस्व अ० २०.१२७.६।

प्र रेभासो मनीषा अ० २०.१२७.५।

प्र व इन्द्राय बृहते ऋ० ८.८९.३, य० ३३ ९६, सा० २५७; ऐ० ब्रा० ३.२.८; ४.५.१;५.१.४;५.३.१; ऐ० आ० १.२.३; आ० ब्रा० ६.१.३.४; २.५.४।

प्र व इन्द्राय मादनं ऋ० ७.३१.१, सा० १५६,७१६; तां० ब्रा० ९.२.२।

प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय सा० ४४६,१११३।

प्र व उग्राय निष्टुरे ऋ० ८.३२.२७।

प्र व एको मिमय ऋ० २.२९.५।

प्र व एते सुयुजो ऋ० ५.४४.४।

प्रवता हि क्रतूनां ऋ० ४.३१.५।

प्रवतो नपान्नमः १.१३.१. पै० सं० १९.३५।

प्रवत्ते अग्ने जनिमा ऋ० १०.१४२.२।

प्रवत्वतीयं पृथिवी ऋ० ५.५४.९।

प्रवद्यामना सुवृता ऋ० १.११८.३।

प्र वर्तय दिवो अश्मानमिन्द्र ऋ० ७.१०४.१९, अ० ८.४.१९; पै० सं० १६.१०.१०।

प्र व स्पळक्रन्त्सुवि ऋ० ५.५९.१।

प्र वः पान्तमन्धसो ऋ० १.१५५.१।

प्र वः पान्तं रघुमन्यवो ऋ० १.१२२.१।

प्र वः शर्धाय घृष्वये ऋ० १.३७.४।

प्र वः शंसाम्यद्रुहः ऋ० ८.२७.१५; ऐ० ब्रा० ५.२.१।

प्र वः शुक्राय भानवे ऋ० ७.४.१, तै० ब्रा० २.८.२.३; मै० सं० ४.१४.३४; काठ० सं० ७.१०२।

प्र वः सखायो अग्नये ऋ० ६.१६.२२, काठ० सं० ७.१०१।

प्र वः सतां ज्येष्ठतमाय ऋ० २.१६.१ ।

प्र वा एतीन्दुः ऋ० ९.८६.१६, सा० ५५७, ११५२, अ० १८.४.६० ।

प्र वाचमिन्दुरिष्यति ऋ० ९.१२.६, सा० १२०१ ।

प्र वाच्यं वचसः ऋ० ४.५.८ ।

प्र वाच्यं शश्वधा वीर्यं तत् ऋ० ३.३३.७ ।

प्र वाजमिन्दुरिष्यति ऋ० ९.३५.४ ।

प्र वाज्यक्षाः सहस्रधार ऋ० ९.१०९.१६; सा० ११६०, तां० ब्रा० १४.५.६ ।

प्र वाता इव दोधत ऋ० १०.११९.२ ।

प्र वाता वान्ति ऋ० ५.८३.४, तै० आ० ६.६.२, मै० सं० ४.१२.१३७ ।

प्र वामन्धांसि मद्यान्यस्थुः ऋ० ७.६८.२, ऐ० ब्रा० ४.२.५ ।

प्र वामर्चन्त्युक्थिनो ऋ० ३.१२.५, सा० १५७५, १७०३, मै० सं० ४.११.४ ।

प्र वामवोचमश्विना ऋ० ४.४५.७ ।

प्र वामश्नोतु सुष्टुतिः ऋ० १.१७.९ ।

प्र वायुमच्छा बृहती ऋ० ६.४९.४, य० ३३.५५. तै० ब्रा० २.८.१.१, मै० सं० ४.१०.१४७, का० सं० ३२.५५ ।

प्र वावृजे सुप्रया बर्हिरेषां ऋ० ७.३९.२ य० ३३.४४, नि० ५.२८, ऐ० ब्रा० ५.३.३; का० सं० ३२.३४, ऋ० भा० १.२.१ ।

प्र वां दंसांस्यश्विनावोचं ऋ० १.११६.२५ ।

प्र वां निचेरुः कुकुहो वशां ऋ० १.१८१.५ ।

प्र वां महि द्यवि ऋ० ४.५६.५, सा० १५९६ ऐ० ब्रा० ५.४.२ ।

प्र वां रथो मनोजवा ऋ० ७.६८.३ ।

प्र वां शरद्वान्वृषभो ऋ० १.१८१.६ ।

प्र वां स मित्रावरुणावृतावा ऋ० ७.६१.२ ।

प्र वां स्तोमाः सुवृक्तयो ऋ० ८.८.२२ ।

प्र विशतं प्राणापानौ अ० ३.११.५, ७.५३.५; पै० सं० १.६१.३ ।

प्र विश्वसामन् ऋ० ५.२२.१ ।

प्र विष्णवे शूषमेतु ऋ० १.१५४.३ ।

प्रवीय माना चरति अ० १२.४.३७, पै० सं० १७.२९.७ ।

प्र वीरमुग्रं विविचिं ऋ० ८.५०.६ ।

प्र वीरया शुचयो ऋ० ७.९०.१, य० ३३.७०., ऐ० ब्रा० ५.४.१, का० सं० ३२.७०

प्र वीराय प्र तवसे ऋ० ६.४९.१२ ।

प्रवृण्वन्तो अभियुजः ऋ० ९.२१.२ ।

प्र वेधसे कवये वेद्याय ऋ० ५.१५.१, तै० ब्रा० १.२.१.९, काठ० सं० ७.४१ ।

प्र वेपयन्ति पर्वतान् ऋ० १.३९.५, तै० ब्रा० २.४.४.३ ।

प्र वो ग्रावाणः सविता ऋ० १०.१७५.१ ।

प्र वोऽच्छा रिरिचे देवयुः ऋ० १०.३२.५ ।

प्र वो देवं चित्सहसानमग्नि ऋ० ७.७.१ ।

प्र वो देवायाग्नये ऋ० ३.१३.१, ऐ० ब्रा० २.५.३.८, ऐ० आ० १.१.१ ।

प्र वो धियो मन्द्रयुवो ऋ० ९.८६.१७, सा० ११५३ ।

प्र वो भ्रियन्त इन्द्रवो ऋ० १.१४.४ ।

प्र वो मरुतस्तविषा ऋ० ५.५४.२ ।

प्र वो महीमरमतिं कृणुध्वं ऋ० ७.३६.८ ।

प्र वो महे मतयो यन्तु ऋ० ५.८७.१, सा० ४६२ ।

प्र वो महे मन्दमानायान्धसः ऋ० १०.५०.१, य० ३३.२३, नि० ११.७ ।

प्र वो महे महि नमो ऋ० १.६२.२, य० ३४.१७, का० सं० ३३.११ ।

प्र वो महे महेवृधे भरध्वं ऋ० ७.३१.१०, सा० ३२८,१७९३, अ० २०.७३.३, तां० ब्रा० १२.१३.१६, आ० ब्रा० ६.३.४.३ ।

प्र वो महे सहसा ऋ० १.१२७.१० ।

प्र वो मित्राय गायत ऋ० ५.६८.१, सा० ११४३, तां० ब्रा० १४.२.४, गो० ब्रा० उ० ३.१३.४७० ।

प्र वो यज्ञेषु देवयन्तो अर्चन् ऋ० ७.४३.१, ऐ० ब्रा० ५.३.१ ।

प्र वो यह्वं पुरूणां ऋ० १.३६.१, सा० ५६ ।

प्र वो रयिं युक्ताश्वं भरध्वं ऋ० ५.४१.५ ।

प्र वो वाजा अभिद्यवो ऋ० ३.२७.१, तै० सं० २.५.७.७, तै० ब्रा० ३.५.२.१, मै० सं० १.६.१ ।

प्र वो वायुं रथयुजं कृणुध्वं ऋ० ५.४१.६ ।

प्र वो वायुं रथयुजं पुरन्धिम् ऋ० १०.६४.७ ।

प्र शन्तमा वरुणं ऋ० ५.४२.१ ।

प्र शर्ध आर्त प्रथमं ऋ० ४.१.१२ ।

प्र शर्धाय मारुताय ऋ० ५.५४.१ ।

प्रशंसमानो अतिथिर्न ऋ० ८.१९.८ ।

प्र शंसा गोष्वघ्न्यं ऋ० १.३७.५ ।

प्र शुक्रासो वयोजुवो ऋ० ९.६५.२६ ।

प्र शुक्रैतु देवी मनीषा ऋ० ७.३४.१, तै० आ० ४.१७.१, तां० ब्रा० १.२.६, मै० सं० ४.६.२०६, ऐ० ब्रा० ५.१.५ ।

प्र शुन्ध्युवं वरुणाय ऋ० ७.८८.१ ।

प्र शोशुचत्या उषसो ऋ० १०.८९.१२ ।

प्र श्यावाश्व धृष्णुया ऋ० ५.५२.१ ।

प्र श्येनो न मदिरं ऋ० ६.२०.६ ।

प्र सक्षणो दिव्यः ऋ० ५.४१.४ ।

प्र स क्षयं तिरते ऋ० ८.२७.१६ ।

प्रसद्य भस्मना योनिम् य० १२.३८, काठ० सं० १६.११६, मै० सं० २.७.१२६, श० ब्रा० ६.८.२.६, कपि० २५.१, ३२.२ ।

प्र सद्यो अग्ने अत्येष्यन्यान् ऋ० ५.१.६, तै० ब्रा० २.४.७.१० ।

प्रे सप्तगुमृतधीतिं ऋ० १०.४७.६ ।

प्र सप्तवध्रिराशसा ऋ० ८.७३.६ ।

प्र सप्तहोता सनकादरोचद् ऋ० ३.२९.१४ ।

प्र स मित्र मर्तो अस्तु ऋ० ३.५९.२, तै० सं० ३.४.११.५, नि० २.१३ ।

प्र सम्राजमसुरस्य ऋ० ७.६.१, सा० ७८ ।

प्र सम्राजं चर्षणीनां ऋ० ८.१६.१, सा० १४४, अ० २०.४४.१ ।

प्र सम्राजे बृहते मन्म नु ऋ० ६.६८.९ ।

प्र सम्राजे बृहदर्चा गभीरं ऋ० ५.८५.१ ।

प्र सम्राजो असुरस्य प्रशस्ति ऋ० ७.६.१, सा० ७८ ।

प्र स विश्वेभिरग्निभिः सा० १५०४ ।

प्रसवे त उदीरते ऋ० ९.५०.२, सा० १२०६ ।

प्र ससाहिषे पुरुहूत ऋ० १०.१८०.१, तै० सं० ३.४.११.४, तै० ब्रा० २.६.६.१, ३.५.७.४ ।

प्र साकमुक्षे अर्चता गणाय ऋ० ७.५८.१ ।

प्र सा क्षितिरसुर ऋ० १.१५१.४ ।

प्र सा वाचि सुष्टुतिर्मघोनां ऋ० ७.५८.६ ।

प्र सीमादित्यो असृजत् ऋ० २.२८.४, नि० १.७ ।

प्र सु ग्मन्ता धियसानस्य ऋ० १०.३२.१ ।

प्र सु ज्येष्ठं निचिराभ्यां ऋ० १.१३६.१ ।

प्र सुन्वानस्यान्धसो ऋ० ९.१०१.१३, सा०

२८.७ ।

प्राणः प्रजा अनु अ० ११.४.१०; पै० सं० १६.२१.१० ।

प्राणापानौ चक्षुः अ० ११.७.२५, ११.८.४.२६; पै० सं० १६.८७.६ ।

प्राणापानौ मा मा अ० १६.४.५; पै० सं० १६.१४६.५, तै० सं० ३.१.७.६ ।

प्राणापानौ मृत्योः अ० २.१६.१; पै० सं० २.४३.३, तै० सं० ३.१.७.५ ।

प्राणापानौ व्रीहियवौ अ० ११.४.१३; पै० सं० १६.२२.२ ।

प्राणाय नमो यस्य अ० ११.४.१; पै० सं० १६.२१.१; सं० प्र० १ समु० ।

प्राणाय मे वर्चोदा य० ७.२७; श० ब्रा० ४.५.६.२; तै० सं० ३.२.३.२ ।

प्राणाय स्वाहाऽपानाय य० २२.२३, २३.१८ मै० सं० २.१२.२६; का० सं० २४.२५; २५.२०; तै० सं० ७.१.१३.२; १६.६; ४.२१.१; श० ब्रा० १३.२.१.५; ५.१.४; २.८.२,३ ।

प्राणा शिशुर्महीनां ऋ० ६.१०२.१; सा० ५७०, १०१३, तां० ब्रा० १३.५.३; सा० ब्रा० ३.३.७.३ ।

प्राणायान्तरिक्षाय अ० ६.१०.२ ।

प्राणेन त्वा द्विपदां अ० ८.२.४; पै० सं० १६.३.४ ।

प्राणेन प्राणतां अ० ३.३१.६ ।

प्राणेन विश्वतो अ० ३.३१.७ ।

प्राणेनाग्निं सं सृजति अ० १६.२७.७; पै० सं० १०.७.७ ।

प्राणेनाग्ने चक्षुषा अ० ५.३०.१४; पै० सं० ६.१४.४ ।

प्राणेनान्नादेना अ० १५.१४.२२ ।

प्राणो अपानो व्यानः अ० १८.२.४६ ।

प्राणो मृत्युः प्राणस्तक्मा अ० ११.४.११; पै० सं० १६.२२.१ ।

प्राणो विराट् प्राणो अ० ११.४.१२; पै० सं० १६.२२.२ ।

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं ऋ० ७.४१.१; य० ३४.३४; अ० ३.१६.१; तै० ब्रा० २.८.६.७; सं० वि० गृहाश्रम संस्कार; पै० सं० ४.३१.१ ।

प्रातरग्निः पुरुप्रियो ऋ० ५.१८.१; सा० ८५; सं० ब्रा० २.१३ ।

प्रातर्जरेथे जरणेव ऋ० १०.४०.३ ।

प्रातर्जितं भगमुग्रं ऋ० ७.४१.२, य० ३४.३५, अ० ३.१६.२, तै०ब्रा० २.८.९.७ नि० १२.१४; सं० वि० गृहाश्रम संस्कार; का० सं० ३३.१८; पै० सं० ४.३१.२० ।

प्रातर्देवीमदितिं जोहवीमि ऋ० ५.६६.३ ।

प्रातर्यजध्वमश्विना ऋ० ५.७७.२, तै० ब्रा० २.४.३.१३, नि० १२.५ ।

प्रातर्यावभिरागतं ऋ० ८.३८.७; ऐ० ब्रा० ६.३.२ ।

प्रातर्यावाणा प्रथमा यजध्वं ऋ० ५.७७.१, तै० ब्रा० २.४.३.१३; मै० सं० ४.१२.१६१ ।

प्रातर्यावाणा रथ्येव ऋ० २.३६.२; ऐ०ब्रा० १.४.४ ।

प्रातर्यावणः सहस्कृत ऋ० १.४५.६ ।

प्रातर्युजं नासत्याधि ऋ० १०.४१.२ ।

प्रातर्युजा वि बोधय ऋ० १.२२.१, तै० सं० १.४.७.१, तै० ब्रा० २.४.३.१३, नि० १२.४ ।

प्रातः प्रातर्गृहपतिः अ० १६.५५.४; पै०सं०

१९.४४.२३; सं० प्र० ४ समु० ऋ० भू० पञ्चमहायज्ञविधि, ल० पं० वि० २३८।

प्रातः सुतमपिबो ऋ० ४.३५.७।

प्राता रत्नं प्रातरित्वा ऋ० १.१२५.१।

प्राता रथो नवो ऋ० २.१८.१।

प्रान्यच्चक्रमवृहः सूर्यस्य ऋ० ५.२९.१०।

प्रान्यान्त्सपत्नान् अ० ७.३५,१; पै० सं० २२.८.९।

प्रामूं जयाभीमे अ० ६.१२६.३; पै० सं० १५.१२.१।

प्राव स्तोतारं मघवन्नव ऋ० ८.३६.२।

प्रावीविपद्वाच ऊर्मिं ऋ० ९.९६.७, सा० ९४५।

प्रावेपा मा बृहतो ऋ० १०.३४.१, नि० ९.८।

प्रास्तौदृष्वौजा ऋष्वेभिः ऋ० १०.१०५.६।

प्रास्मत् पाशान् वरुण अ० ७.८३.४, १८.४.७०; पै० सं० २०.३१.६।

प्रास्मदेनो वहन्तु अ० १६.१.११।

प्रास्मा ऊर्जं घृतश्चुतं ऋ० ८.८.१६।

प्रास्मै गायत्रमर्चत ऋ० ८.१.८।

प्रास्मै हिनोत मधुमन्तं ऋ० १०.३०.८।

प्रास्य धारा अक्षरन् ऋ० ९.२९.१, सा० १७६५।

प्रास्य धारा बृहतीः ऋ० ९.९६.२२।

प्रियमेधवदत्रिवत् ऋ० १.४५.३, नि० ३.१७।

प्रियं दुग्धं न काम्यं ऋ० ५.१९.४।

प्रियं पशूनां भवति अ० १२.४.४०; पै० सं० १७.१९.३।

प्रियं प्रियाणां कृणवाम अ० १२.३.४९; पै० सं० १७.४०.९।

प्रियं मा कृणु देवेषु अ० १९.६२.१; पै०सं० २.३२.५; सं० प्र० ८ समु०।

प्रियं मा दर्भ कृणु अ० १९.३२.८; पै० सं० १२.४.८।

प्रियं श्रद्धे ददतः ऋ० १०.१५१.१.२, तै० ब्रा० २.८.८.६।

प्रिया तष्टानि मे कपिः ऋ० १०.८६.५, अ० २०.१२६.५।

प्रिया पदानि पश्वो ऋ० १.६७.६।

प्रियाप्रियाणि बहुला अ० १०.२.९; पै० सं० १६.६०.१।

प्रिया वो नाम हुवे ऋ० ७.५६.१०, तै० सं० २.१.११.७; मै० सं० ४.११.७५; काठ० सं० ८.७२।

प्रियास इत्ते मघवन्नभिष्टौ ऋ० ७.१९.८, अ० २०.३७.८।

प्रियो नो अस्तु विश्पतिः ऋ० १.२६.७, सा० १६१९।

प्रीणीताश्वान्हितं जयाथ ऋ० १०.१०१.७, नि० ५.२६।

प्रेतं पादौ प्र स्फुरतं अ० १.२७.४; पै० सं० १९.३१.७।

प्रेता जयता नरः ऋ० १०.१०३.१३, य० १७.४६, सा० १८६२, अ० ३.१९.७, तै० सं० ४.६.४.१२।

प्रेतां यज्ञस्य शम्भुवा ऋ० २.४१.१९; ऐ० ब्रा० १.४.२; ५.३.२।

प्रेतो मुञ्चामि नामुतः ऋ० १०.८५.२५, अ० १४.१.१८; सं० वि० विवाह संस्कार; पै० सं० १८.२.८।

प्रेतो यन्तु व्याध्यः अ० ७.११४.२; पै० सं० २०.१७.६ ।

प्रेदग्ने ज्योतिष्मान् याहि य० १२.३२; काठ० सं० १६.१११; तै० सं०४.२.३.३; ५.२.२.७; मै० सं० २.७.११६, श० ब्रा० ६.८.१.७—६; कपि० ३२.२ ।

प्रेदं ब्रह्म वृत्रपूर्येष्वाविथ ऋ० ८.३७.१ ऐ० ब्रा० ५.२.२; श० ब्रा० १३.५.१.१० ।

प्रेद्धो अग्ने दीदिहि पुरो ऋ० ७.१.३, य० १७.७६, सा० १३७५, ऐ० ब्रा० १.१.६; मै० सं० ४.१०.१६१; काठ०सं० १८.४३, ३५.५; ३६.१०६; कपि० २८.४; ४८.२; श० ब्रा० ६.२.३.३६; ४०; तां० ब्रा० १२.११.२०; तै० सं० ४.६.५.११,५.४. ७.१२ ।

प्रेद्वग्निर्वावृधे स्तोमेभिः ऋ० ३.५.२ ।

प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा ऋ० ७.६८.५, अ० २०.८७.५; गो० ब्रा० उ० ३.२.३ ।

प्रेन्द्राग्निभ्यां सुवचस्यां ऋ० १०.११६.६ ।

प्रेमां मात्रा मिमीमहे अ० १८.२.३६ ।

प्रेरय सूरो अर्थं न ऋ० १०.२६.५, अ० २०.७६.५ ।

प्रेव पिपतिषति अ० १२.२.५२ ।

प्रेष्ठमु प्रियाणां ऋ० ८.१०३.१० ।

प्रेष्ठं वो अतिथिं गृणीषे ऋ० १.१८६.३ ।

प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे ऋ० ८.८४.१, सा० ५,१२४४, तां० ब्रा० १४.१२.१ ।

प्रेहि-प्रेहि पथिभिः ऋ० १०.१४.७, अ० १८.१.५४, मै० सं० ४.१४.२३०, सं०वि० अन्त्येष्टि संस्कार ।

प्रेह्यभीहि धृष्णुहि ऋ० १.८०.३, सा० ४१३ ।

प्रैणाञ्छृणीहि प्र अ० १०.३.२ ।

प्रैणान्नुदे मनसा अ० ३.६.८ पै० सं० ३.३.८ ।

प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः ऋ० १.४०.३, य० ३३.८६ ३७.७, सा० ५६ तै० आ० ४.२.२. मै०सं० ४.६.५, ऐ० ब्रा० १.४.५, ५.४, ४.५.१, ५.१.४, ३.१, ऐ० आ० १.२.१, का० सं० ३७.७ श० ब्रा० १४.१.२.१५—१७, २.२.१ ।

प्रैतु वाजी कनिक्रदत् य० ११.४६, मै० सं० २.७.५२, श० ब्रा० ६.४.४.४—६, कपि० ३०.३ ।

प्रैते वदन्तु प्र वयं ऋ० १०.६४.१, नि० ६.६ ।

प्रैषः स्तोमः पृथिवीमन्तरि०ऋ० ५.४२.१६ ।

प्रैषामज्मेषु विथुरेव ऋ० १.८७.३, तै० सं० ४.३.१३.७ ।

प्रैषा यज्ञे निविदः अ० ५.२६.४ ।

प्रैषेभिः प्रैवानाप्नोति य० १६.१६, का०सं० २२.२१ ।

प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य ऋ० ६.८६.१६, सा० ५५७, ११५२ अ० १८.४.६० ।

प्रो अश्विनाववसे ऋ० १.१८६.१० ।

प्रो अस्मा उपस्तुतिं ऋ० ८.६२.१ ।

प्रोगां पीतिं वृष्ण ऋ० १०.१०४.३, अ० २०.२५.७, ३३.२ ।

प्रोतये वरुणं मित्रमिन्द्रं ऋ० ६.२१.६ ।

प्रो त्ये अग्नयोऽग्निषु ऋ० ५.६.६ ।

प्रोथदश्वो न यवसे ऋ० ७.३.२, य० १५.६२ सा० १२२०, तै० सं० ४.४.३.८, मै० सं० २.८.३२, काठ० सं० १७.२४, कपि० २६.६, श० ब्रा० ८.७.३.१२ ।

प्रो द्रोणे हरयः ऋ० ६.३७.२ ।

प्रोरोर्मित्रावरुणा ऋ० ७.६१.३ ।

प्रोष्ठेशया वह्येशया ऋ० ७.५५.८, अ० ४.५.३ ।

प्रोष्ठेशयास्तल्पेशया अ० ४.५.३ ।

प्रो ष्वस्मै पुरोरथं ऋ० १०.१३३.१, सा० १८०१, अ० २०.९५.२, तै० सं० १.७.१३.१४, तै० ब्रा० २.५.८.१, मै० सं० ४.१२.१०४, ऐ० ब्रा० १०.१३३.१, ऐ० ब्रा० ४.१.३ ।

प्रो स्य वह्निः पथ्याभिः ऋ० ६.८६.१ ।

प्रोह्यमाणः सोम आगतो य० ८.५६ ।

बट् सूर्य श्रवसा ऋ० ८.१०१.१२, य० ३३.४०, सा० १७८६, अ० २०.५८.४, का० सं० ३२.४० ।

बण्महाँ असि सूर्य ऋ० ८.१०१.११, य० ३३.३६, सा० २७६, १७८८, अ० १३.२.२६, २०.५८.३, तै० ब्रा० १.४.५.३, का० सं० ३२.३६, आ० ब्रा० ६.१.५.२; पै० सं० १८.२३.६ ।

बतो बतासि ऋ० १०.१०.१३, अ० १८.१.१५, नि० ६.२८ ।

बद्ध वो अधा इति अ० २०.१२६.१६ ।

बन्धस्त्वाग्रे विश्वचया अ० १९.५६.२; पै० सं० ३.८.२ ।

बभ्रवे नु स्वतवसे ऋ० ६.११.४, सा० १४४४ ।

बभ्राणः सूनो सहसो ऋ० ३.१.८ ।

बभ्रुरेको विषुणः ऋ० ८.२९.१; ऐ० ब्रा० ५.४२ ।

बभ्रेरक्षः समदमा अ० ११.१.३२; पै० सं० १६.१२.२ ।

बभ्रेरध्वर्यो मुखम् अ० ११.१.३१ ।

बभ्रोरर्जुनकाण्डस्य अ० २.८.३ ।

बरामहा असि सूर्य अ० १३.२.२९,२०.५८.३ ।

बर्हिर्वा यत्स्वपत्याय ऋ० १.८३.६,अ० २०.२५.६ ।

बर्हिषदः पितर ऊति ऋ० १०.१५.४, य० १९.५५, अ० १८.१.५१, तै० सं० २.६.१२.६, नि० ४.२१; मै० सं० ४.१०.१३६; काठ० सं० २१.६२.६३; ऋ० भू० पञ्च महायज्ञविधि; का० सं० २१.५७; ।

बर्हिः प्राचीनमोजसा ऋ० ६.५.४ ।

बलमसि बलं मे अ० २.१७.३; पै०सं० २.४५.५ ।

बलविज्ञायः स्थविरः ऋ० १०.१०३.५, य० १७.३७, सा० १८५३, अ० १९.१३.५, तै० सं० ४.६.४.६; मै० सं० २.१०.३६; काठ० सं० १८.४९; का० सं० ३१.१८; कपि० ३१.२८.५ पै० सं० ७.४.५ ।

बलं धेहि तनूषु नो ऋ० ३.५३.१८ ।

बलेनान्नादेवान्नमति अ० १५.१४.४ ।

बहवः सूरचक्षसो ऋ० ७.६६.१०; ऐ० ब्रा० ४.२.४; ५.२.१ ।

बहिर्बिलं निर्द्रवतु अ० ९.८.११; पै० सं० १६.७५.१ ।

बह्वीदं राजन् वरुणा अ० १९.४४.८; पै० सं० १५.३.८ ।

बह्वीनां पिता ऋ० ६.७५.५, य० २९.४२, तै० सं० ४.६.६.५, नि० ९.१३ ।

बह्वीः समा अकरमन्त ऋ० १०.१२४.४ ।

बळस्य नीथा वि ऋ० १०.६२.३ ।

बळित्था तद्वपुषे ऋ० १.१४१.१ ।

बृहन्त इद्भानवो ऋ० ३.१.१४।

बृहन्त इन्नु ये ते ऋ० २.११.१६।

बृहन्तेव गम्भरेषु ऋ० १०.१०६.९।

बृहन्नच्छायो अपलाशः १०.२७.१४।

बृहन्निदिध्म एषां ऋ० ८.४५.२, य० ३३.२४, सा० १३३९; का० सं० ३२.२४।

बृहस्पत इन्द्र वर्धतं ऋ० ४.५०.११।

बृहस्पतिना० तेजो अ० १४.२.५४।

बृहस्पतिना ०/ पयो अ० १४.२.५७।

बृहस्पतिना ०/ भगो अ० १४.२.५५।

बृहस्पतिना ०/ यशो अ० १४.२.५६।

बृहस्पतिना ०/ रसो अ० १४.२.५८।

बृहस्पतिना ०/ वर्चो अ० १४.२.५३।

बृहस्पतिरमत हि त्यत् ऋ० १०.६८.७, अ० २०.१६.७।

बृहस्पतिराङ्गिरसः अ० ११.१०.१०,१३।

बृहस्पतिरूर्जयो० अ० ९.६.२, पै० सं० १६.११५.१।

बृहस्पतिर्नयतु दुर्गहा ऋ० १०.१८२.१।

बृहस्पतिर्नः परि पातु ऋ० १०.४२.११,४३.११,४४.११, अ० ७.५१.१,२०.१७.११,८९.११,९४.११, तै० सं० ३.३.११.४, काठ० सं० १०.५१, ऐ०ब्रा० ६.३.७, गो० ब्रा० उ० ४.१६, तै० सं० १५.११.१, १६.८.११।

बृहस्पतिर्म आकूतिं अ० १९.४.४, पै० सं० १९.२४.६।

बृहस्पतिर्म आत्मा अ० १६.३.५।

बृहस्पतिर्मा विश्वैः अ० १९.१७.१०, पै० सं० ७.१६.१०।

बृहस्पति ते विश्व अ० १९.१८.१०।

बृहस्पतिः प्रथमं जायमानो ऋ० ४.५०.४, अ० २०.८८.४, तै०ब्रा० २.८.२.७, काठ० सं० ११.५१,१७.८५, मै० सं० ४.१२.१० पै० सं० १८.६.३।

बृहस्पतिः प्रथमः सूर्यायाः अ० १४.१.५५।

बृहस्पतिः समजयद्वसूनि ऋ० ६.७३.३ अ० २०.९०.३, तै० ब्रा० २.८.२.८, काठ० सं० ४.११.८, ४०.८३।

बृहस्पतिः सविता अ० ९.४.१०, पै० सं० १६,२४.१०।

बृहस्पते अति यदर्यो ऋ० २.२३.१५, य० २६.३, तै० सं० १.८.२२.७; मै० सं० ४.१४.५०, काठ० सं ४.१२५; ४०.८२; ऐ० ब्रा० ४.२.५; स० प्र० ११ समु०, ऋ० भू० ग्रन्थप्रामा०, अधिकारानधिकारविषय; का० सं० २८.५।

बृहस्पते जुषस्व नो ऋ० ३.६२.४, तै० सं० १.८.२२.५; मै० सं० ४.११.६३; काठ० सं० ४.१२४, २६.३२।

बृहस्पते तपुषाश्नेव ऋ० २.३०.४।

बृहस्पते परि दीया ऋ० १०.१०३.४, य० १७.३६, सा० १८५२, अ० १९.१३.८, तै० सं० ४.६.४.४; मै० सं० २०.१०.३७ काठ० सं० १८.४८; कपि० २८.५; पै०सं०७.४.८।

बृहस्पते प्रति मे देवताम् ऋ० १०.९८.१।

बृहस्पते प्रथमं वाचो ऋ० १०.७१.१, ऐ० ब्रा० १.११.१४।

बृहस्पते या परमा परावत् ऋ० ४.५०.३, अ० २०.८८.३।

बृहस्पते युवमिन्द्रश्च ऋ० ७.९७.१०, ९८.७, अ० २०.१७.१२,८७.७, तै० ब्रा० २.५.६.३; गो० ब्रा० उ० ४.१६।

बृहस्पते वाजं जय य० ९.११; श० ब्रा० ५.१.५.८,९।

बृहस्पते सदमिन्नः ऋ० १.१०६.५ ।

बृहस्पते सवितर्बोधय य० २७.८; काठ० सं० १८.६०; मै० सं० २.१३.३२; का० सं० २६.८; कपि० २६.८ ।

बृहस्पते सवितः अ० ७.१६.१ ।

बोधन्मना इदस्तु सा० १४० ।

बोधद्यन्मा हरिभ्यां ऋ० ४.१५.७ ।

बोधश्च त्वा प्रतिबोधश्च अ० ८.१.१३ ।

बोधा मे अस्य वचसो ऋ० १.१४७.२; य० १२.४२, तै० सं० ४.२.३.१४, नि० ३.२०; मै० सं० २.७.१२६; काठ० सं० १६.१२२; कपि० २५.१; ३२.२; श० ब्रा० ६.८.२.६ ।

बोधा सुमे मधवन्वाचमेमां ऋ० ७.२२.३, सा० ६२६, अ० २०.११७.३; मै०सं० ४.१२.१०२; १४.१३३ ।

बोधिन्मनसा रथ्ये ऋ० ५.७५.५ ।

बोधिन्मना इदस्तु नो ऋ० ८.६३.१८, सा० १४० ।

ब्रध्नलोको भवति अ० ११.३.५१ ।

ब्रध्नस्त्वाग्ने विश्वचया अ० १६.५६.२ ।

ब्रध्नः समीची रुषसः अ० ७.२२.२ ।

ब्रह्म क्षत्रं पवते य० १६.५; काठ० सं० ३७.४८; मै० सं० ३.११.५४; श० ब्रा० १२.७.३.१२; का० सं० २१.६ ।

ब्रह्मगवी पच्यमाना अ० ५.१६.४; पै० सं० ६.१६.१ ।

ब्रह्म गामश्वं जनयन्त ऋ० १०.६५.११ ।

ब्रह्म च क्षत्रं च अ० ६.७.६,१२.५.८; पै० सं० १६.१३६.१०; १४१.२; सं० वि० गृहाश्रम संस्कार; ऋ० भू० वेदोक्तधर्म-विषय ।

ब्रह्म च तपश्च अ० १३.४.२२ ।

ब्रह्म च ते जातवेदो ऋ० १०.४.७ ।

ब्रह्मचर्येण कन्या अ० ११.५.१८; पै० सं० १६.१५४.८; स० प्र० ३ समु; सं० वि० वेदारम्भ संस्कार; ऋ० भू० वर्णाश्रम विषय ।

ब्रह्मचर्येण तपसा अ० ११.५.१७,१६ ।

ब्रह्मचारिणं पितरो अ० ११.५.२ ।

ब्रह्मचारी चरति ऋ० १०.१०६.५, अ० ५.१७.५ ।

ब्रह्मचारी जनयन् अ० ११.५.७ ।

ब्रह्मचारी ब्रह्म अ० ११.५.२४; पै० सं० १६.१५५.३; सं० वि० वेदारम्भ संस्कार।

ब्रह्मचारीष्णंश्चरति अ० ११.५.१; गो० ब्रा० पू० २.१; पै० सं० १६.१५३.१ ।

ब्रह्मचार्येति समिधा अ० ११.५.६; गो० ब्रा०पू० २.१; पै० सं० १६.१५३.६; सं० वि० वेदारम्भ संस्कार, ऋ० भू० वर्णाश्रम विषय ।

ब्रह्म जज्ञानं सा० ३२१ ।

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं य० १३.३, अ० ४.१.१, ५.६.१; श० ब्रा० ७.४.१.१४; १४.१.३.३; आर्याभि० २.२८; तै० सं० ४.२.८.४; ५.२.७.१–२; कपि० ३२.७; काठ० सं० १६.१८३; ३८.१५७; सा० ब्रा० ३.१.६.४.८, गो० ब्रा० उ० २.६; पै० सं० १.१५१.८; ५.२.२; ६.११.१; १६.१५०.१ ।

ब्रह्म जिन्वतमुत जिन्वतं ऋ० ८.३५.१६ ।

ब्रह्मज्यं देव्यघ्न्य आ अ० १२.५.६३ ।

ब्रह्म ज्येष्ठा सम्भृता अ० १६.२२.२१, २३.३०; पै० सं० ८.६.१ ।

ब्रह्मणस्पतिरेता ऋ० १०.७२.२।

ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता ऋ० २.२३.१९, २४.१६, य० ३४.५८, तै०ब्रा० २.८.५.१; का० सं० ३३.४६; मै० सं० ४.१२.१४; १४.१३३।

ब्रह्मणस्पते रभवद्यथा ऋ० २.२४.१४, तै० ब्रा० २.८.५.२; मै० सं० ४.१४.१३५।

ब्रह्मणस्पते सुयमस्य ऋ० २.२४.१५,तै०ब्रा० २.८.५.२; मै०सं० ४.१२.१५; १४.१३७।

ब्रह्मणाग्निः संविदानो ऋ० १०.१६२.१, अ० २०.९६.११; पै० सं० १९.२५.१२।

ब्रह्मणाग्नी वावृधानौ अ० १३.१.४९।

ब्रह्मणा तेजसा अ० १०.६.३०।

ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा ऋ० ३.३५.४, अ० २०.८६.१; ऐ० ब्रा० ६.४.६; गो० ब्रा० उ० ६.४।

ब्रह्मणान्नादेना० अ० १५.१४.२४।

ब्रह्मणा परिगृहीता अ० ११.३.१५।

ब्रह्मणा भूमिर्विहिता अ० १०.२.२५; पै० सं० १६.६१.४।

ब्रह्मणा शालां निमितां अ० ९.३.१९; सं० वि० गृहाश्रम संस्कार।

ब्रह्मणाशुद्धा उत अ० ११.१.१८; पै० स० १६.९०.८।

ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय य० ३० ५; का० सं० ३४.५।

ब्रह्मणे स्वाहा अ० १९.२२.२०, २३.२९।

ब्रह्म देवां अनु अ० १०.२.२३।

ब्रह्मन्वीर ब्रह्मकृतिं ऋ० ७.२९.२; ऐ० ब्रा० ४.१.३; ५.४.१।

ब्रह्म पदवायं अ० १२.५.४।

ब्रह्म प्रजापतिः अ० १९.९.१२।

ब्रह्म प्रजावदा भर ऋ० ६.१६.३६, सा० १३९८।

ब्रह्म ब्रह्मचारिभिः अ० १९.१९.८; पै० सं० ८.१७.८।

ब्रह्मवादिनो वदन्ति अ० ११.३.२६; पै० सं० १६.५५.१–१८; काठ० सं० ३४.१८; तै० सं० १.७.१.१०;२.५.२.६; ३.८.१४; ४.१; ६.२.६; ३.२; ५.१.२२; ६.८; ९.१०, ३.२.९.४; ३.६.६; ७.३;५.२.७.४; ५.३.३, ५.७; ६.३; ७.२.१३; ३.८; ४.४; ९.४–५, ६.१.४.१२; ५.६; ६.८, ७.२; ९.१; २.१.५ १६; ३.१.१२; ८.३; ४.३.१; ५.४.१४; ९.५.१०.११; ११.१२; ५.११.८; ६.७.९. ७.१.३.१; ७.१०;२.६.२; ३.२.१; ४.१०. १; ५.१.१२।

ब्रह्म श्रोत्रियमाप्नोति अ० १०.२.२१।

ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिः य० २३.४८; श० ब्रा० १३.५.२.१३; का० सं० २५.५३।

ब्रह्म स्रुचो घृतवतीः अ० १९.४२.२; पै० सं० ८.९.६; सं० वि० संन्यास संस्कार।

ब्रह्म होता ब्रह्म अ० १९.४२.१; पै० सं० ८.९.५; सं० वि० संन्याससंस्कार।

ब्रह्मा कृणोति वरुणो ऋ० १.१०५.१५।

ब्रह्माण इन्द्रोप याहि ऋ० ७.२८.१, ऐ०ब्रा० ५.३.३।

ब्रह्माण इन्द्रं सा० ४३९; ऐ० ब्रा० ५.३.३; सा० ब्रा० ३.२.१.६।

ब्रह्माणस्त्वा युजा वयं ऋ० ८.१७.३, सा० ६९८, अ० २०.३.३,३८.३,४७.९।

ब्रह्माणं ब्रह्मवाहसं ऋ० ६.४५.७।

ब्रह्माणि मे मतयः ऋ० ५.१६५.४, य० ३३.७८, काठ० सं० ९.५६; मै० सं० ४.११.८२; का० सं० ७८.६।

ब्रह्माणि चकृषे वर्धनानि ऋ० ६.२३.६ ।

ब्रह्मा त इन्द्र गिर्वणः ऋ० ८.९०.३ ।

ब्रह्मा देवानां पदवीः ऋ० ९.९६.६, सा० ९४४, तै० सं० ३.४.११.१ तै० आ० १० १०.१ नि० १४.१३; काठ० सं० २३.३७ ।

ब्रह्मापरं युज्यतां अ० १४.१.६४; पै० सं० १८.६.१२ ।

ब्रह्माभ्यावर्ते अ० १०.५.४०; पै० सं० १६. १३२.६ ।

ब्रह्मास्य शीर्षं अ० ४.३४.१; पै०सं० ६.२२. १ ।

ब्राह्मण एव पतिर्न अ० ५.१७.९; पै० सं० ९.१६.७ ।

ब्राह्मणमद्य विदेयं य० ७.४६; श० ब्रा० ४. ३.४.१९;२०; कपि० ३.७;४४;४; तै० सं० १.४.४३.८; ६.६.१.१२ ।

ब्राह्मणादिन्द्र राधसः ऋ० १.१५.५, सा० २२९ ।

ब्राह्मणासः पितरः ऋ० ६.७५.१० य० २९. ४७, तै० सं० ४.६.६.३; मै० सं० ३.१६. ४२ ।

ब्राह्मणासः सोमिनो वच ऋ० ७.१०३.८ ।

ब्राह्मणासो अतिरात्रे ऋ० ७.१०३.७ ।

ब्राह्मणां अभ्यावर्ते अ० १०.५.४१ ।

ब्राह्मणेन पर्युक्तासि अ० ४.१९.२; पै० सं० ५.२५.२ ।

ब्राह्मणेभ्य ऋषभं अ० ९.४.१९ ।

ब्राह्मणेभ्यो वशां अ० १०.१०.३३ ।

ब्राह्मणो जज्ञे प्रथमो अ० ४.६.१ ।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् ऋ० १०.९०.१२, य० ३१.११, अ० १९.६.६, तै० आ० ३. ११.५; का० सं० ३५.११, स०प्र० ४ समु०, जी० ले० ७३; २४१; द० शा० ६२, ऋ० भू० सृष्टिविद्याविषय; जी० च० भा० १. पृ० २१०; पै० सं० ९.५.६ ।

ब्रूमो देवं सवितारं अ० ११.६.३ ।

ब्रूमो राजानं वरुणं अ० ११.६.२; पै० सं० १५.१३.२; मै० सं० २.७.१८३ ।

भग एव भगवाँ ऋ० ७.४१.५, य० ३४. ३८, अ० ३.१६.५, तै० ब्रा० २.५.५. १, ८. ९.८; सं० वि० गृहाश्रम संस्कार; आर्याभि० २.४५; पै० सं० ४.३१.५ ।

भग प्रणेतर्भग सत्य० ऋ० ७.४१.३, य० ३४.३६, अ० ३.१६.३, तै० ब्रा० २.५.५. २, ८.९.८; सं० वि० गृहाश्रम संस्कार; आर्याभि० २.११; पै० सं० ४.३१.३ ।

भगभक्तस्य ते वयं ऋ० १.२४.५; ऐ० ब्रा० ७.३.४ ।

भगस्मया वर्चः अ० १.१४.१ ।

भगस्ततक्ष चतुरः अ० १४.१.६०; पै० सं० १८.६.८ ।

भगस्ते हस्तमग्रहीत् अ० १४.१.५१; पै० सं० १८.५.८; सं० वि० विवाह संस्कार ।

भगस्त्वेतो नयतु अ० १४.१.२०; पै० सं० ४.१०.१; १८.२.९ ।

भगस्य नावमारोह अ० २.३६.५; पै० सं० २.२१.५ ।

भगस्य स्वसा वरुणस्य ऋ० १.१२३.५ ।

भगं धियं वाजयन्तः ऋ० २.३८.१०, तै० ब्रा० २.८.६.३; मै० सं० ४.१४.८४ ।

भगेन माशां शयेन अ० ६.१२९.१; पै० सं० १९.३२.१ ।

भगो न चित्रो सा० ४४९; सा० ब्रा० ३.२. ६.५ ।

भरेष्विन्द्रं सुहवं ऋ० १०.६३.६, तै० सं० ७.१.११.५, तै० ब्रा० २.७.१३.३, सं०वि० स्वस्तिवाचन।

भर्गो ह नामोत ऋ० १०.६१.१४।

भवतन्नः समनसौ य० ५.३, १२.६०; काठ० सं० ३.१६;१६.११६; श०ब्रा० ३.४.१.२४; ७.१.१.३८; २.४६,८.४८; २.७.१४३; तै० सं० १.३.७.१३; ४.२.५.४; का० २.११; २५.२; ४१.५; सं०वि० सामान्य प्रकरण।

भव एनमिष्वासः अ० १५.५.२।

भवद्वसुरिदद्वसुः अ० १३.४.५४।

भव राजन् यजमानाय अ० ११.२.२८; पै० सं० १६.१०६.८।

भवा द्युम्नी वाध्र्यश्वोत ऋ० १०.६६.५।

भवा नो अग्नेऽवितोत ऋ० १०.७.७, काठ० सं० २.१००।

भवा नो अग्ने सुमना ऋ० ३.१८.१; ऐ० ब्रा० १.४.२।

भवा मित्रो न शेव्यो ऋ० १.१५६.१, तै० ब्रा० २.४.३.८।

भवारुद्रौ सयुजा अ० ११.२.१४; पै० सं० १६.१०५.४।

भवा वरूथं गृणते ऋ० १.५८.६।

भवा वरूथं मघवन्मघोना ऋ० ७.३२.७।

भवाशर्वाविस्यतां अ० १०.१.२३; पै० सं० १६.३७.२।

भवाशर्वाविदं अ० ११.६.६; पै० सं० १५.१३.६।

भवाशर्वौ मन्वे वां अ० ४.२८.१; पै० सं० ४.३७.१।

भवाशर्वौ मृडतं अ० ११.२.१; पै०सं० १६.१०४.१।

भवेम शरदः शतम् अ० १६.६७.६।

भवो दिवो भव अ० ११.२.२७; पै० सं० १६.१०६.७।

भसदासीदादित्यानां अ० ६.४.१३; पै० सं० १६.२५.३।

भाग्यो भवदथो अ० १०.८.२२।

भायै दार्वाहारं य० ३०.१२।

भारती पवमानस्य ऋ० ६.५.८।

भारतीळे सरस्वति ऋ० १.१८८.८।

भारवती नेत्री सूनृतानां ऋ० १.६२.७।

भास्वती नेत्री सूनृतानाम ऋ० १.११३.४।

भिनत्पुरो नवति इन्द्र ऋ० १.१३०.७।

भिनद्गिरिं शवसा ऋ० ४.१७.३।

भिनद्वलमङ्गिरोभिः ऋ० २.१५.८, तै० सं० २.३.१४.५, मै० सं० ४.१४.७३।

भिन्धि विश्वा अपद्विषः ऋ० ८७.४५.४०, सा० १३४, १०७०, अ० २०.४३.१।

भिन्द्धि दर्भ सपत्नान् अ० १६.२८.४;५; पै० सं० १३.११.४;६।

भीताय नाधमानाय ऋ० ५.७८.६।

भीमा इन्द्रस्य हेतयः अ० ४.३७.८,६; पै० सं० १३.४.३।

भीमो विवेषायुधेभिरेषां ऋ० ७.२१.४।

भुगित्यभिगतः अ० २०.१३५.१।

भुज्युमन्हसः पिपृथो ऋ० १०.६५.१२।

भुज्युः सुपर्णो यज्ञो य० १८.४२; श० ब्रा० ६.४.७.११, सं० वि० विवाहसंस्कार, तै० सं० ३.४.७.७;८।

भुरन्तु नो यशसः ऋ० १०.७६.६।

भुवत्त्रितस्य मर्ज्यो ऋ० ६.३४.४।

भुवनस्य पितरं गीर्भिराभिः ऋ० ६.४६.१०।

भूरिदा नाम वन्दमानो ऋ० ५.३.१० ।
भूरिभिः समह ऋषिभिः ऋ० ८.७०.१४ ।
भूरिहि ते सवना ऋ० ७.२२.६, सा० १८०० ।
भूरिं द्वे अचरन्ती चरन्तं ऋ० १.१८५.२, तै० ब्रा० २.८.४.८; मै० सं० ४.१४.८६ ।
भूरीणि भद्रा नर्येषु ऋ० १.१६६.१० ।
भूरीणि हि त्वे दधिरे ऋ० ३.१६.४ ।
भूरीदिन्द्र उदिनक्षन्त ऋ० १०.८.६ ।
भूरिदिन्द्रस्य वीर्यं ऋ० ८.५५.१ ।
भूर्जज्ञ उत्तानपदः ऋ० १०.७२.४ ।
भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव य० ३.५, काठ० सं० ३८.७०; गो० ब्रा० उ० १.४.३२७; कपि० ६.२; सं० वि० समावर्त्तन संस्कार ।
भूर्भुवः स्वः तत्सवितुः य० ३६.३; श० ब्रा० २.२.२.६, मै० सं० १.६.४१; ८.१८;३४; ३७.४१; ३.४.१०, स० प्र० ३ समु० सं० वि० वेदारम्भ संस्कार, पं०वि० २२६; का० सं० ३६.३ ।
भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः य० ३.३७; श० ब्रा० २.४.१.१—७; कपि० सं० ५.२.; ६.१; आर्याभि० २.३५ ।
भूषन्न योऽधि बभ्रूषु ऋ० १.१४०.६ ।
भूर्निश्चिद्धासि तूतुजिः ४.३२.२ ।
भेषजमसि भेषजं य० ३.५६, कपि० ८.११ ।
भोजमश्वाः सुष्ठुवाहः ऋ० १०.१०७.११ ।
भोजं त्वामिन्द्र ऋ० २.१७.८ ।
भोजा जिग्युः सुरभिं ऋ० १०.१०७.६ ।
भोजायाश्व समृजन्ति ऋ० १०.१०७.१०, नि० ७.३ ।
भ्राजन्त्यग्ने समिधान सा० ६१५; श्रा० ब्रा० ६.३.५.१; सा० ब्रा० ३.२.१.८ ।
भ्रातृव्य क्षयणमसि अ० २.१८.१; पै० सं० २.४६.५ ।
मक्षू कनायाः सख्यं ऋ० १०.६१.१० ।
मक्षू कनायाः सख्यं नवीयो ऋ० १०.६१.११ ।
मक्षू ता त इन्द्र दानाप्नस ऋ० १०.२२.११ ।
मक्षू देववतो रथः ऋ० ८.३१.१८, तै० सं० १.८.२२.११; मै० सं० ४.११.४६; काठ० सं० ११.३४ ।
मक्षू न येषु दोहसे ऋ० ६.६६.५ ।
मक्षू न वह्निः प्रजाया ऋ० १०.६१.६ ।
मक्षू हि ष्मा गच्छथ ऋ० ४.४३.३ ।
मखस्य ते तविषस्य ऋ० ३.३४.२; अ० २०.११.२ ।
मखस्य शिरोऽसि य० ३७.८; काठ० सं० १६.५७; श० ब्रा० १४.१.२.१७—१६; मै० सं० २.७.६७, ३.१.६; ४.१.५६; ६.१६, तै० सं० १.१.८.७, १२.६, ४.१.५.११; ५.१.६.१०, कपि० १.८; ४७.७; का० सं० ३७.८ ।
मघोन आ पवस्व नो ऋ० ६.८.७, सा० ११८४ ।
मघोनः स्म वृत्रहत्येषु ऋ० ७.३२.१५, सा० १६८३; ऐ० ब्रा० ६.४.५ ।
मङ्गलिकेभ्यः स्वाहा अ० १६.२३.२८ ।
मज्जा मज्ज्ञा सं धीयतां अ० ४.१२.४; पै० सं० ४.१५.२ ।
मतयः सोमपामुरुं ऋ० ३.४१.५, अ० २०.२३.५ ।
मती जुष्टो धिया ऋ० ६.४४.२ ।
मत्सि नो वस्य इष्टये ऋ० १.१७६.१ ।
मत्सि वायुमिष्टये ऋ० ६.६७.४२, सा०

१२५४; तां० ब्रा० १५.१.३ ।

मत्सि सोम वरुणं ऋ० ६.६०.५ ।

मत्स्यपायि ते महः ऋ० १.१७५.१, सा० १४३२ ।

मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभिः ऋ० १.६.३, अ० २०.७१.६ ।

मत्स्वा सुशिप्र हरिवस्तदीम ऋ० ८.६६.२, सा० ८१४ ।

मथीद्यदीं विभृतो ऋ० १.७१.४ ।

मथीद्यदीं विष्टो मा ऋ० १.१४८.१, मै० सं० ४.१४.२१७ ।

मदच्युत्क्षेति सादने ऋ० ६.१२.३, सा० ११६८ ।

मदेनेषितं मदं ८.१.२१ ।

मदेमदे हि नो ददिः ऋ० १.८१.७, अ० २०.५६.४, तै० ब्रा० २.४.४.७; काठ०सं० १०.३०; मै० सं० ४.१२.१०८ ।

मधवे स्वाहा माधवाय य० २२.३१, मै० सं० ३.१२.१५, काठ० सं० २४.३६ ।

मधु जनिषीय अ० ६.१.१४; पै० सं० १६.३३.४ ।

मधु नक्तमुतोषसो ऋ० १.६०.७, य० १३.२८, तै० सं० ४.२.६.८, तै० आ० १०.१०.२, श० ब्रा० १४.६.३.१२; काठ० सं० ३६.२८; मै० सं० २.७.२२१; सं० वि० विवाह संस्कार ।

मधु नो द्यावापृथिवी ऋ० ६.७०.५ ।

मधुपृष्ठं घोरमयासं ऋ० ६.८६.४ ।

मधुमतीरोषधीर्द्याव आपः ऋ० ४.५७.३, अ० २०.१४३.८; मै० सं० ४.११.१२ पै० सं० ४.२०.४ ।

मधुमतीर्न इषस्कृधि य० ७.२; काठ० सं० ४.४; मै० सं० १.३.१६; कपि० ३.१; ४२.१; २ ।

मधुमती स्थ मधुमती अ० १६.२.२ ।

मधुमन्तं तनूनपाद् ऋ० १.१३.२, सा० १३४८ ।

मधुमन्मूलं मधुमद अ० ८.७.१२; पै० सं० १६.१३.२ ।

मधुमन्मे निक्रमणं अ० १.३४.३; पै० सं० ६.६.१ ।

मधुमन्मे परायणं ऋ० १०.२४.६ ।

मधुमान् भवति अ० ६.१.२३ ।

मधुमान्नो वनस्पतिः ऋ० १.६०.८, य० १३.२६, तै० सं० ४.२.६.६, तै० आ० १०.१०.२; काठ० सं० ३६.२६; श० ब्रा० १४.६.३.१३; मै० सं० २.७.२२; सं० वि० विवाह संस्कार ।

मधुवाता ऋतायते ऋ० १.६०.६, य० १३.२७, तै० आ० १०.१०.२, काठ० सं० ३६.२७, श० ब्रा० १४.६.३.११; मै० सं० २.७.२०; सं० वि० विवाह संस्कार; तै० सं० ४.२.६.७; ५.२.८.१५ ।

मधुश्च माधवश्च य० १३.२५; काठ० सं० ३५.४६; मै० सं० २.८.२४; तै० सं० १.४.१४.१, ११; कपि० ६.३; २६.६; ४८.१०; श० ब्रा० ७.४.२.२६ ।

मधोरस्मि मधुतरो अ० १.३४.४ ।

मधोर्धारामनु क्षर ऋ० ६.१७.८ ।

मधोः कशामजनयन्त अ० ६.१.५; पै० सं० १६.३२.५ ।

मध्यन्दिन उद्गायति अ० ७.६.५; पै० सं० १६.११५.२ ।

मध्यमेतदनडुहो अ० ४.११.८; पै० सं०

३.२५.१० ।

मध्या यत्कर्त्वमभवत् ऋ० १०.६१.६; ऐ० ब्रा० ६.५.१ ।

मध्ये होता दुरोणे बर्हिषोरा ऋ० ६.१२.१ ।

मध्व ऊ षु मधूयुवा ऋ० ५.७३.८ ।

मध्वः पिबतं मधुपेभिरास ऋ० ४.४५.३ ।

मध्वः सूदं पवस्व ऋ० ९.९७.४४ ।

मध्वः सोमस्याश्विना ऋ० १.११७.१ ।

मध्वा पृञ्चे नद्यः अ० ६.१२.३ ।

मध्वा यज्ञं नक्षति अ० ५.२७.३; तै० सं० ५.१.८.३; का० सं० २६.१३ ।

मध्वा यज्ञं नक्षसे य० २७.१३ ।

मध्वो वो नाम मारुतं ऋ० ७.५७.१ ।

मनसस्पत इमं नो अ० ७.९७.८; पै० सं० २०.३४.७ ।

मनसः काममाकूतिं य० ३९.४, का० सं० ३.९२, श० ब्रा० १४.३.२.१९-२० ।

मनसान्नादेनान्नमत्ति अ० १५.१४.२ ।

मनसा सं कल्पयति अ० १२४.३१, पै०सं० १७.१९.१ ।

मनसा होमैर्हरसा अ० ६.९३.२, पै० सं० १९.१४.१४ ।

मनसे चेतसे धियः अ० ६.४१.१, पै० सं० १९.१०.१ ।

मनस्त आ प्यायतां य० ६.१५, श० ब्रा० ३.८.२.९-१२, कपि० १.१३, २.६, १३ ।

मनीषिणः प्र भरध्वं ऋ० १०.१११.१ ।

मनीषिभिः पवते पूर्व्यः ऋ० ९.८६.२०, सा० ८२२ ।

मनुष्वत्त्वा नि धीमहि ऋ० ५.२१.१, तै० ब्रा० ३.११.६.३, काठ० सं० २.५०, ७ ७७, ३९.८८ ।

मनुष्वदग्ने अङ्गीरस्वदङ्गिरः ऋ० १.३१.१७ ।

मनुष्वदिन्द्र सवन जुषाणः ऋ० ३.३२.५ ।

मनो अस्या अन आसीत् ऋ० १०.८५.१०, अ० १४.१ १०; पै० सं० १८.१.१० ।

मनोजवसा वृषणा मदच्यु० ऋ० ८.२२.१६ ।

मनोजवा अयमान ऋ० ८.१००.८ ।

मनो जूतिर्जुषताम् य० २.१३, काठ० सं० ३४.३३, मै० सं० १.७.६, श० ब्रा० १.७.४.२२, तै० सं० १.५.३.७, कपि० ४८.१ ।

मनो न येषु हवने षु ऋ० १०.६१.३, य० ७.१७, कपि० ४३.१, श०ब्रा० ४.२.१.१२, १४, १५, कपि० ४३.१ ।

मनो न योऽध्वनः ऋ० १.७१.९ ।

मनोन्वा हुवामहे ऋ० १०.५७.३, य० ३.५३, तै० सं० १.८.५ १०, काठ० सं० ९.२४, कपि० ८१० मै० सं० १.१०.१८, श० ब्रा० २.६.१.३९ ।

मनो मे तर्पयत य० ६.३१, श० ब्रा० ३.९.४.९; कपि० २.१७ ।

मन्त्रमखर्वं सुधितं ऋ० ७.३२.१३, अ० २०.५९.४ ।

मन्थता नरः कविमद्वयन्तं ऋ० ३.२९.५ ।

मन्थ दर्भ सपत्नान् अ० १९.२९.५; पै० सं० १३.११.१४ ।

मन्दन्तु त्वा मघवन्निन्द्रेन्दवः ऋ० ८.४.४, सा० १७२२ ।

मन्दन्तु त्वा मन्दिनो ऋ० १.१३४.२ ।

मन्दमान ऋतादधि ऋ० १०.७३.५ ।

मन्दस्व होत्रादनु जोषमन्धसः ऋ० २.३७.१ ।

मन्दस्वा सु स्वर्णर ऋ० ८.६.३९ ।

मन्दामहे दशतयस्य ऋ० १.१२२.१३ ।

मन्दिष्ठ यदुशने काव्ये ऋ० १.५१.११।

मन्द्रजिह्वा जुगुर्वणिः ऋ० १.१४२.८।

मन्द्रया सोम धारया ऋ० ९.६.१, सा० ५०६।

मन्द्रस्य कवेर्दिव्यस्य ऋ० ६.३९.१।

मन्द्रस्य रूपं विविदुः ऋ० ९.६८.६।

मन्द्रं होतारमुशिजो नमोभिः ऋ० १०.४६.४।

मन्द्रं होतारमुशिजो यविष्ठं ऋ० ७.१०.५।

मन्द्रं होतारमृत्विजं ऋ० ८.४४.६, सा० १५४३।

मन्द्रं होतारं शुचिमद्वया ऋ० ३.२.१५।

मन्द्रा कृणुध्वं धिय ऋ० १०.१०१.२।

मन्द्रो होता गृहपतिः ऋ० १.३६.५।

मन्यवेऽयस्तापं क्रोधाय य० ३०.१४, काठ० सं० ३४.१४।

मन्युनाग्नादेवाग्नमत्ति अ० १५.१४.२०।

मन्युरिन्द्रो मन्युरेवास ऋ० १०.८३.२, अ० ४.३२.२, तै० ब्रा० २.४.१.११; पै० सं० ४.३२.२।

मन्ये त्वा यज्ञियं ऋ० ८.९६.४।

मन्वे वां द्यावापृथिवी सा० ६२२, अ० ४.२६.१, आ० ब्रा० ६.३.६.२; पै० सं० ४.३६.१।

मन्वे वां मित्रावरुणौ अ० ४.२९.१; पै० सं० ४.३८.१, काठ० सं० २२.५८, मै० सं० ३.१६.७४, तै० सं० ४.७.१५.५।

ममच्चन ते मघवन् ऋ० ४.१८.९।

ममच्चन त्वा युवति ऋ० ४.१८.८।

ममत्तु त्वा दिव्यः सोमः ऋ० १०.११६.३।

ममत्तु नः परिज्मा ऋ० १.१२२.३, तै० सं० २.१.११.६; काठ० सं० २३.२०।

मम त्वा दोषणिश्रिषं अ० ६.९.२।

मम त्वा सूर उदिते ऋ० ८.१.२९।

मम देवा विहवे ऋ० १०.१२८.२, अ० ५.३.३, तै० सं० ४.७.१४,१; काठ० सं० ४०.७१; मै०सं० १.४.१, पै०सं० ५.४.३।

मम द्विता राष्ट्रं क्षत्रियस्य ऋ० ४.४२.१।

मम पुत्राः शत्रुहणो ऋ० १०.१५९.३।

मम ब्रह्मेन्द्र याह्यच्छ ऋ० २.१८.७।

ममाग्ने वर्चो विहवेषु ऋ० १०.१२८.१, अ० ५.३.१, तै० सं० ४.६.१४.१, पै० सं० १८ ५.९; काठ० सं० ८.५७; मै० सं० १.४.१।

ममेयमस्तु पोष्या अ० १४.१.५२; सं० वि० विवाह संस्कार।

मया गावो गोपतिना अ० ३.१४.६, पै० सं० २.१३.३।

मया सोऽन्नमत्ति ऋ० १०.१२५.४, अ० ४.३०.४।

मयि क्षत्रं पर्णमणे अ० ३.५.२।

मयि गृह्णाम्यग्रे य० १३.१; काठ० सं० ७.४९; मै० सं० १.६.१२; श० ब्रा० ७.४.१.२; तै० सं० ५.७.९.१; कपि० १.१०; ६.२।

मयि त्यदिन्द्रियं ३८.२७; काठ० सं० ५.८, का० सं० ३८.२७; श० ब्रा० १४.३.१.३१।

मयि देवा द्रविणम् ऋ० १०.१२८.३, अ० ५.३.५, काठ० सं० ४०.७२; तै० सं० ४.७.१४.३।

मयि वर्चो अथो यशो सा० ६०२, अ० ६.६९.३, आ० ब्रा० ६.३.१४; सा० ब्रा० ३.२.८.३;३.३.७.८।

मयीदमिन्द्र इन्द्रियं य० २.१०; ऋ० भू० ईश्वरस्तुतिप्रार्थनायाचनासमर्पणोपासना-विद्याविषयः, आर्याभि० २.५१।

मयुः प्राजापत्य उलो य० २४.३१; मै० सं० ३.१४.१२; का० सं० २६.३२।

मयो दधे मेधिरः ऋ० ३.१.३; ऐ०ब्रा० ७.२.६।

मयोभूर्वातो अभिवातु ऋ० १०.१६९.१, तै० सं० ७.४.१७.१, नि० ९.१७।

मय्यग्रे अग्निः गृह्णामि अ० ७.८२.२, पै० सं० २०.३२.३।

मरीचीर्धूमान् प्र अ० ६.११३.२, पै० सं० १६.३३.१२।

मरुतः पर्वतानाम् अ० ५.२४.६।

मरुतः पिबत ऋतुना ऋ० १.१५.२।

मरुतः पोत्रात् सुष्टुभः अ० २०.२.१।

मरुतां पिता पशूनाम् अ० ५.२४.१२।

मरुतां मन्वे अधि अ० ४.२७.१, गो० ब्रा० उ० २.८, मै० सं० ३.१६.८०, पै० सं० ४.३५.१, काठ० सं० २२.६२।

मरुतां स्कन्धा विश्वेषां य० २५.६, मै० सं० ३.१५.६, का० सं० २७.१०।

मरुतो मा गणैरवन्तु अ० १९.४५.१०, गो० ब्रा० उ० ५.८, पै० सं० १५.४.१०।

मरुतो मारुतस्य न ऋ० ८.२०.२३।

मरुतो यद्ध वो दिवः ऋ० ८.७.११, मै० सं० ४.१०.१०२, काठ० सं० ८.७६, ९.६८, तै० सं० १.५.११.१५, २.१.११.३, १४.१७।

मरुतो यद्ध वो बलं ऋ० १.३७.१२।

मरुतो यस्य हि क्षये ऋ० १.८६.१ य० ८.३१, अ० २०.१.२, तै० सं० ४.२.११.४, ऐ० ब्रा० ५.४.२, ६.३.२, ७.२.८, श० ब्रा ४.५.२.१३, गो० ब्रा० उ० २.२०।

मरुतो वीळुपाणिभिः ऋ० १.३८.११।

मरुत्वतो अप्रतीतस्य ऋ० ५.४२.६।

मरुत्वन्तमृजीषिणं ऋ० ८.७६.५।

मरुत्वन्त वृषभं ऋ० ३.४७.५.६.१९.११ य० ७.३६, तै० सं० १.४.१७.१, तै० ब्रा० २.८.३.४, काठ० सं० ४.४०, मै० सं० १.३.४६. श० ब्रा० ४.३.३.१४,३.१,६,४१.८।

मरुत्वन्तं हवामहे ऋ० १.२३.७।

मरुत्वां इन्द्रमीढ्वः ऋ० ८.७६.७, मै० सं० १.३.४६, ऐ० ब्रा० ५.२.१।

मरुत्वां इन्द्र वृषभो ऋ० ३.४७.१ य० ७.३८, तै० सं० १.४.१९.१, नि० ४.६, मै० सं० १.३.६१, काठ०सं० ४.३८, ऐ० ब्रा० ५.१.४, ऐ० ब्रा० १.२.२,५.१.१, कपि० ३.१.६;४१.८ का० सं० २८.११।

मरुत्सु वो दधीमहि ऋ० ५.५२.४।

मरुत्स्तोत्रस्य वृजनस्य ऋ० १.१०१.११।

मर्तश्चिद्वो नृतवो रुक्मवक्ष ऋ० ८.२०.२२।

मर्ता अमर्त्यस्य ते ऋ० ८.११.५।

मर्माणि ते वर्मणा ऋ० ६.७५.१८, य० १७.४९, सा० १८७०, अ० ७.११८.१ तै० सं० ४.६.४.१४।

मर्माविधं रोरुवतं अ० ११.१०.२७।

मर्मृजानास आयवो ऋ० ९.६४.१६।

मर्यो न शुभ्रस्तन्वं ऋ० ९.९६.२०।

मल्वं बिभ्रती गुरुभृद् अ० १२.१.४८।

मशकान् केशैरिन्द्रं य० २५.३, मै० सं० ३.१५.३, तै० सं० ५.७.१४.१, का० सं० २७.६।

मस्तिष्कमस्य यतमो अ० १०.२.८, पै० सं० १६.५९.६ ।

मस्त्वा सुशिप्र अ० २०.७१.६ ।

मह उग्राय तवते ऋ० ८.९६.१० ।

महत्काण्डाय स्वाहा अ० १६.२३.१८ ।

महत्तत्सोमो महिषः ऋ० ९.९७.४१, सा० ५४२,१२५५, नि० १४.१७, सा० ब्रा० ३. १.७.१ ।

महत्तदुल्बं स्थविरं ऋ० १०.५१.१, नि० ६. ३५ ।

महत्तद्वः कवयः ऋ० ३.५४.१७ ।

महत्तन्नाम गुह्यं ऋ० १०.५५.२ ।

महत्पयो विश्वरूपं अ० ९.१.२, पै०सं० १६. ३२.३ ।

महत्सधस्थं महती अ० १२.१.१८, पै० सं० १७.२.९ ।

महदद्य महातावृणीमहे ऋ० १०.३६ ११ ।

महदेषाव तपति अ० १२.४.३९, पै० सं० १७.१९.९ ।

महद्यक्षं भुवनस्य अ० १०.७.३८, पै० सं० १७.१०.९, ऋ०भू० ब्रह्मविद्याविषयः; ल० ऋ० उ० ३६६ ।

महश्चर्कर्म्यर्वतः क्रतुप्राः ऋ० ४.३९.२, काठ० सं० ७.९१ ।

महश्चित्त्वमिन्द्र यत एतान् ऋ० १.१६९.१ ऐ० ब्रा० ५.३.३ ।

महश्चिदग्न एनसो ऋ० ४.१२.५, मै० सं० ४.११.१२, काठ० सं० २.१०६ ।

महः स राय एषते ऋ० २.१४६.१ ।

महः सु वो अरमिषे ऋ० ८.४६.१७ ।

महाँ अमत्रो वृजने ऋ० ३.३६.४, नि० ६.२३ ।

महाँ असि महिषि ऋ० ३.४६.२ ।

महाँ असि सोम ज्येष्ठ ऋ० ९.६६.१६ ।

महाँ अस्यध्वरस्य ऋ० ७.११.१ ।

महाँ आदित्यो नमसोप ऋ० ३.५९.५, तै० ब्रा० २.८.७.६ ।

महाँ इन्द्रः परश्चनः ऋ० १.८.५, सा० १६६, अ० २०.७१.१ ।

महाँ इन्द्रो नृवदा ऋ० ६.१९.१, य० ७.३९, तै० सं० १.४.२१.१, तै० ब्रा० ३.५.७.४, नि० ६.१६-१७, काठ० सं० ४.४४; ऐ०ब्रा० ५.३.३; ऐ०ब्रा० ५.२.३; श० ब्रा० ४.३.३ १८; कपि० ३.१; ६; ४१.८ ।

महाँ इन्द्रो य ओजसा ऋ० ८.६.१, य० ७.४०, सा० १३०७, अ० २०.१३८.१, तै०सं० १.४.२०.१, तै० ब्रा० ३.५.७.४; काठ० सं० ४.४२, कपि० ३.१६, ४१.८, तां० ब्रा० १५.२.७ ।

महाँ इन्दो वज्रहस्तः य० २६.१०, कपि० ३.१ ।

महाँ उग्रो वावृधे ऋ० ३.३६.५ ।

महां उतासि यस्य ते ऋ० ७.३१.७ ।

महां ऋषिर्देवत्रा ऋ० ३.५३.९ ।

महागणेभ्यः स्वाहा अ० १६.२२.१७ ।

महादेव एनमिष्वासः अ० १५.५.१३ ।

महानग्नी कृकवाकं अ० २०.१३६.१० ।

महानग्नी महानग्नं अ० २०.१३६.११ ।

महानग्न्यतृप्नद्वि अ० २०.१३६.५ ।

महानग्न्युप ब्रूते अ० २०.१३६.७–९ ।

महानग्न्युलूखलम् अ० २०.१३६.६ ।

महानाम्न्यो रेवत्यो य० २३.३५, मै० सं० ३.१२.३६, का० सं० २५.४० ।

महान्तं कोशमुदचा ऋ० ५.८३.८, अ०

४.१५.१६, पैं० सं० ५.७.१४।

महान्तं त्वा महीरनु ऋ० ६.२.४, सा० १०४०।

महान्तं महिना वयं ऋ० ८.१२.२३।

महान्ता मित्रावरुणा ऋ० ८.२५.४।

महान्तो मह्ना विभ्वो ऋ० १.१६६.११।

महान्त्सधस्थे ध्रुव ऋ० ३.६.४।

महान् वै भद्रो बिल्वो अ० २०.१३६.१५।

महावृषान् मूजवतो अ० ५.२२.८; पैं० सं० १३.१६।

महिकेरव ऊतये १.४५.४।

महि क्षेत्रं पुरुश्चन्द्रं ऋ० ३.३१.१५, तै० ब्रा० २.७.१३.३।

महि ज्योतिर्निहितं ऋ० ३.३०.१४।

महि ज्योतिर्बिभ्रतं ऋ० १०.३७.८।

महि त्रीणामवोऽस्तु ऋ० १०.१८५.१, य० ३.३१, सा० १९२; मै० सं० १.५.३५; ४८; काठ० सं० ७.६.३५; कपि० ५.२; ५; श० ब्रा० २.३.४.३७।

महि त्वाष्ट्रमूर्जयन्तीरजुर्यं ऋ० ३.७.४।

महि प्सरः सुकृतं ऋ० ९.७४.३।

महि महे तवसे ऋ० ५.३३.१।

महि महे दिव ऋ० ३.५४.२।

महीमू षु मातरं अ० ७.६.२ पैं० सं० २०.१.८, काठ० सं० ३०.१२.२१, तै० सं० १.५.११.१८, ७.१.१८.७।

महिम्न एषां पितरः ऋ० १०.५६.४।

महिराधो विश्वजन्यं ऋ० ६.४७.२५।

महि वो महतामवो वरुण मित्र दाशुषे ऋ० ८.४७.१।

महि वो महतामवो वरुण मित्रार्यमन् ऋ० ८.६७.४।

महिषासो मायिनश्चित्र ऋ० १.६४.७।

मही अत्र महिना ऋ० १.१५१.५।

मही त्रीणामवरस्तु ऋ० १० १८५.१, य० ३.३१, आ०ब्रा० ६.२.६.१, सा० ब्रा० ३.२.१.५, मै० सं० १.५.३५,५४, कपि० ५.२,५।

मही द्यावापृथिवी इह ज्येष्ठे ऋ० ४.५६.१, मै० ४.१६.८६, श०ब्रा० १.५.१.११, ऐ० ब्रा० १.३.५, ५.२.३।

महीद्यावापृथिवी भूतमुर्वी ऋ० १०.९३.१।

मही द्यौः पृथिवी चनः ऋ० १.२२.१३, य० ८.३२,१३.३२, तै०सं० ३.३.१०.८, ५.११.१०,४.२.६.१०, ५.२.८.१७, मै० सं० २.७.२२५,४.१०.६४,११.३३, कपि० ३२.६, काठ० सं० १३.२७, १५.५७, १६.२०६, ३६.३२, श० ब्रा० ४.५.२.१८, ७.५.१.१०।

महीनां पयोऽसि य० ४.३, श०ब्रा० ३.१.३.६.१५, कपि० १.१३,४५.३।

मही मित्रस्य साधथः ऋ० ४.५६.७, सा० १५६८।

महीमू षु मातरं य० २१.५, काठ०सं० ३०.१२.२१, का० सं० २३.५, मै०सं० ४.१०.३४, कपि० ४६.७।

महीमे अस्य वृषनाम ऋ० ६.६७.५४, सा० ११०६।

मही यदि धिषणा शिश्नथे ऋ० ३.३१.१३।

महीरस्य प्रणीतयः (०/नास्य) ऋ० ६.४५.३।

महीरस्य प्रणीतयः (०/ विश्वा वसूनि) ऋ० ८.१२.२१।

२३३; अ० १८.१.४७, तै० सं० २.६.१२.१४, मै० सं० ४.१४.२३३, ऐ० ब्रा० ३.३.१३, सं० त्रि० अन्त्येष्टि संस्कार।

माता च ते पिता च य० २३.२४,२५, तै० सं० ४.७.१६.१४, श० ब्रा० १३.२.६.७, ५.२५, मै० सं० ३.१३.३, का० सं० २५.२६,३० ।

माता च यत्र दुहिता ऋ० ३.५५.१२ ।

मातादित्यानां दुहिता अ० ६.१.४, पै० सं० १६.३२.४ ।

माता देवानामदितेः ऋ० १.११३.१६ ।

माता पितरमृत आ भज० ऋ० १.१६४.८, अ० ६.६.८, पै० सं० १६.६६.८ ।

माता रुद्राणां दुहिता ऋ० ८.१०१.१५, तै० आ० ६.१२.१ ।

मातुर्दिधिषुम् ऋ० ६.५५.५ नि० ३.१६ ।

मातुष्टे किरणौ द्वौ अ० २०.१३३.२ ।

मातुष्पदे परमे ऋ० ५.४३.१४ ।

मा ते अमाजुरो यथा ऋ० ८.२१.१५ ।

मा ते अस्यां सहसावन्परि ऋ० ७.१६.७,अ० २०.३७.७, तै० सं० १.६.१२.१७; मै० सं० ४.१२.५२ ।

मा ते गोदत्र निरराम ऋ० ८.२१.१६ ।

मा ते प्राण उप अ० ५.३०.१५; पै० सं० ६.१४.५ ।

मा ते मनस्तत्र गान्मा अ० ८.१.७; पै० सं० १६.१.७ ।

मा ते मनो मासो अ० १८.२.२४ ।

मा ते राधांसि ऋ० १.८४.२०, सा० १७२४, नि० १४.३७ ।

मातेव पुत्रं पृथिवी य० १२.६१; काठ० सं० १६.१३७, तै० सं० ४.२.५.५, मै० सं० २.७.१४४; कपि० ३.४;२५.२; ३२.३ ।

मातेव यद् भरसे ऋ० ५.१५.४ ।

मा ते हरी वृषणा ऋ० ३.३५.५ ।

मात्र पूषन्नाघृण ऋ० ७.४०.६ ।

मात्रे नु ते सुमिते ऋ० १०.२६.६, अ० २०.७६.६ ।

मा त्वा क्रव्यादभि अ० ८.१.१२; पै० सं० १६.२.२ ।

मा त्वाग्निर्ध्वनीयद् धूमगन्धिः ऋ० १.१६२.१५, य० २५.३७, तै० सं० ४.६.६.४, मै० सं० ३.१६.१६; का० सं० २७.४१ ।

मा त्वा जम्भः सन्हनुः अ० ८.१.१६. पै० सं० १६.२.६ ।

मा त्वा तपत्प्रिय ऋ० १.१६२.२०, य० २५.४३, तै० सं० ४.६.६.६ ।

मा त्वा दमन्त्सलिले अ० १७.१.८; पै० सं० १८.२०.६ ।

मा त्वा दभन् परि अ० १३.२.५, पै० सं० २.७२.५ ।

मा त्वाभि सखा नो अ० २०.२३०.१४ ।

मा त्वा मूरा अविष्यवो ऋ० ८.४५.२३, सा० ७३२. अ० २०.२२.२ ।

मा त्वा रुद्र चुक्रुधामा ऋ० २.३३.४ ।

मा त्वा वृक्षः सं अ० १८.२.२५ ।

मा त्वा श्येन ऋ० २.४२.२ ।

मा त्वा सोमस्य गल्दया ऋ० ८.१.२०. सा० ३०७, नि० ६.२४ ।

मादयस्व सुते सचा ऋ० १.८१.८, अ० २०.५६.५ ।

मादयस्व हरिभिः ऋ० १.१०१.१०, नि० ६.१७ ।

माध्यन्दिनस्य सवनस्य ऋ० ३.५२.५ ।

माध्यन्दिने सवने ऋ० ३.२८.४।

मा न आपो मेधां अ० १९.४०.२ पै० सं० २०.५७.३।

मा न इन्द्र परा ऋ० ८.९७.७, सा० २६०।

मा न इन्द्र पीयत्नवे ऋ० ८.२.१५, सा० १८०६।

मा न इन्द्राभ्यादिशः ऋ० ८.९२.३१, सा० १२८; सं० ब्रा० ३.८।

मा न एकस्मिन्नागसि ऋ० ८.४५.३४।

मा नस्तोके तनये ऋ० १.११४.८, य० १६.१६, तै० सं० ३.४.११.२,४.५.१०.६; मै० सं० ४.१२.१७६, काठ० स० २३.४८; आर्यभि० १.५१, प० वि० ९७।

मानस्य पत्नि शरणा अ० ३.१२.५; पै० सं० ३.२०.५।

मा नः पश्चान्मा अ० १२.१.३२।

मा नः पाशं प्रति अ० ९.३.२४; पै० सं० १६.५१.२, सं० वि० गृहाश्रम संस्कार।

मा नः शँसो अररुषो ऋ० १.१८.३, य० ३.३०; काठ० सं० ७.१४, श० ब्रा० २.३.४.३५; कपि० ५.२।

मा नः समस्य दूढ्यः ऋ० ८.७५.९, तै० सं० २.६.११.९, नि० ५.२३, मै० सं० ३.११.१३५; काठ० सं० ७.११४।

मा नः सेतुः सिषेदयं ऋ० ८.६७.८।

मा नः सोमपरिबाधो ऋ० १.४३.८।

मा नः सोम सं वीविजो ऋ० ८.७९.८, तै० सं० ३.२.५.२।

मा नः स्तेनेभ्यो ये अभि ऋ० २.२३.१६।

मा निन्दत य इमां ऋ० ४.५.२।

मा नो अग्ने सा० १६५०।

मा नो अग्ने दुर्भृतये ऋ० ७.१.२२।

मा नो अग्नेऽमतये ऋ० ३.१६.५।

मा नो अग्नेऽवसृजो ऋ० १.१८९.५।

मा नो अग्नेऽवीरते ऋ० ७.१.१९।

मा नो अग्ने सख्या ऋ० १.७१.१०।

मा नो अज्ञाता वृजना ऋ० ७.३२.२७, सा० १४५७; अ० २०.७९.२, तां० ब्रा० ४.७.५.६।

मा नो अरातिरीशत ऋ० २.७.२।

मा नो अस्मिन्मघवन् ऋ० १.५४.१।

मा नो अस्मिन्महाधने ऋ० ८.७५.१२, सा० १६५०, तै० सं० २.६.११.३; मै० सं० ४.११.१३९, ऐ० ब्रा० ७.२.६, श० ब्रा० १२.४.४.३, काठ० सं० ७.११७।

मा नो गव्येभिरश्व्यैः ऋ० ८.७३.१५।

मा नो गुह्या रिप ऋ० २.३२.१।

मा नो गोषु पुरुषेषु अ० ११.२.२१।

मा नो देवा अहिः अ० ६.५६.१, पै० सं० १९.९.१३।

मा नो देवानां विशः ऋ० ८.७५.८, तै० सं० २.६.११.८; मै० सं० १.११.१३४; काठ० सं० ७.११३।

मा नो निदे च वक्तवे ऋ० ७.३१.५, अ० २०.१८.५।

मा नोऽभि स्रा मत्यं अ० ११.२.१९, पै० १६.१०५.९।

मा नो मर्ता अभिद्रुहन् ऋ० १.५.१०, अ० २०.६९.८।

मा नो मर्ताय रिपवे ऋ० ८.६०.८।

मा नो मर्धीरा भरा ऋ० ४.२०.१०, तै० सं० १.७.१३.७; २.२.१२.२३।

मा नो महान्तमुत ऋ० १.११४.७, य० १६.१५; अ० ११.२.२९, तै० सं० ४.५.१०.

५, आर्याभि० १.५०, प० वि० ६७, स० प्र० ७ समु०; पै० सं० १६.१०६.६।

मा नो मित्रो वरुणो ऋ० १.१६२.१, य० २५.२४, तै० सं० ४.६.८.१, नि० ६.२; तै० सं० ४.६.८.१ श० ब्रा० १३.५.१.१८; मै० सं० ३.१६.१; काठ० सं० २७.२८।

मा नो मृचा रिपूणां ऋ० ८.६७.६।

मा नो मेधां मा नो अ० १९.४०.३; पै० सं० २०.५७.४; सं० वि० वानप्रस्थ संस्कार।

मा नो रक्ष आ वेशीदाघृणीव ऋ० ८.६०.२०।

मा नो रक्षो अभि नड्यातु ऋ० ७.१०४.२३, अ० ८.४.२३; पै० सं० १६.११.३।

मा नो रुद्रतक्मना अ० ११.२.२६।

मा नो वधाय हत्नवे ऋ० १.२५.२।

मा नो वधीरिन्द्र मा ऋ० १.१०४.८।

मा नो वधी रुद्र मा ऋ० ७.४६.४।

मा नो वधैर्वरुण ऋ० २.२८.७; मै० सं० ४.१४.१२४।

मा नो विदन् विव्याधिनो अ० १.१९.१; पै० सं० १.२०.१।

मा नो वृकाय वृक्ये ऋ० ६.५१.६।

मा नो हासिषुर्ऋषयो अ० ६.४१.३; पै० सं० १९.१०.२; सं० वि० जातकर्मसंस्कार।

मा नोऽहिर्बुध्न्यो रिषेधात् ऋ० ७.३४.१७, नि० १०.४३; ऐ० ब्रा० ५.१.१।

मा नो हिन्सीज्जनिता ऋ० १०.१२१.९; य० १२.१०२. तै० सं० ४.२.७.१, काठ० सं० १६.१७०।

मा नो हिन्सीरधि अ० ११.२.२०, पै० सं० १६.१०५.१०।

मा नो हृणीतामतिथिर्वसु ऋ० ८.१०३.१२, सा० ११०; सं० ब्रा० २.२।

मा नो हेतिर्विवस्वत ऋ० ८.६७.२०।

मा पापत्वाय नो नरेन्द्राग्नी ऋ० ७.९४.३, सा० ९१८।

मा पृणन्तो दुरितम् ऋ० १.१२५.७।

माऽपो मौषधीर्हिं सीः य० ६.२२; श० ब्रा० ३.८.५.१०, कपि० २.१५.४.८।

मा प्र गाम पथो वयं ऋ० १०.५७.१, अ० १३.१.५९; ऐ० ब्रा० ३.१.११; पै० सं० १७.२५.२।

मा बिभेर्न मरिष्यसि अ० ५.३०.८, पै० सं० २.२.३; ९.१३.३।

मा भूम निष्ट्या इवे ऋ० ८.१.१३, अ० २०.११६.१, तां० ब्रा० ९.१०.१।

मा भेम मा श्रमिष्मो ऋ० ८.४.७, सा० १६०५।

मा भेर्मा संविक्था य० १.२३,६.३५; श० ब्रा० १.२.२.१५–१७; ३.५; ३.९.४.१८, कपि० १.८; २.१७; ४७.७।

मा भ्राता भ्रातरं अ० ३.३०.३; पै० सं० ५.१९.२; स० वि० गृहाश्रम संस्कार।

मा मामिमं तव ऋ० ५.४०.७।

मा मा वोचन्नराधसं अ० ५.११.८; पै० सं० ८.१.८।

मा मा हिंसीज्जनिता य० १२.१०२; श० ब्रा० ७.३.१.२०; का० सं० २९.३७, मै० सं० २.७.१८४; कपि० २५.५।

मा मां प्राणो हासीन्मो अ० १६.४.३; पै० सं० १८.१६.२।

मायाभिरिन्द्र मायिनं ऋ० १.११.७।

मायाभिरुत्सिसृप्सत ऋ० ८.१४.१४, अ०

मित्रं वयं हवामहे ऋ० १.२३.४, सा० ७९३, ऐ० ब्रा० ६.३.२।

मित्रं हुवे पूतदक्षं ऋ० १.२.७, य० ३३.५७ सा० ८४७; का० सं० ३२.५७; ऐ० ब्रा० ३.१.१, ऐ०ब्रा० १.१.४; तां०ब्रा० १५.२.५; ष० ब्रा० ४.२.२४।

मित्रः पृथिव्योदक्रामत् अ० १९.१९.१; पै० सं० १५.७.१।

मित्र सं सृज्य पृथिवीं य० ११.५३।

मित्रा तना न रथ्या ऋ० ८.२५.२।

मित्राय पञ्च येमिरे ऋ० ३.५९.८।

मित्राय शिक्ष वरुणाय ऋ० १०.६५.५।

मित्रावरुणयोः अ० १० ५.११।

मित्रावरुणवन्ता उत ऋ० ८.३५.१३।

मित्रावरुणा परि अ० १८.३.१२।

मित्रा वरुणाभ्यां त्वा य० ७.२३।

मित्रावरुणौ वृष्ट्या० अ० ५.२४.५।

मित्रो अग्निर्भवति यत् ऋ० ३.५.४; ऋ० भा० १.२.७।

मित्रो अंहोश्चिदादुरु ऋ० ५.६५.४।

मित्रो जनान्यातयति ऋ० ३.५९.१, मै० सं० ३.४.११.५; तै० ब्रा० ३.७.२.१३, नि० १० २२; काठ० सं० २३.४३; ३५.९२।

मित्रो देवेष्वायुषु ऋ० ३.५९.९।

मित्रो न एहि य० ४.२७; तै० सं० १.२.७.७; श० ब्रा० ३.३.३.१०—११; कपि० १.१९ ३७.७।

मित्रो नवाक्षरेण य० ९.३३, तै० सं० १.७.११.९; श० ब्रा० ५.२.२.१७; ५.२.२३।

मित्रो नो अत्यन्हति ऋ० ८.६७.२।

मिमाति वह्निरेतशः ऋ० ९.६४.१९।

मिमातु द्यौरदितिर्वीतये ऋ० ५.५९.८।

मिमीहि श्लोकमास्ये ऋ० १.३८.१४।

मिम्यक्ष येषु रोदसी ऋ० ६.५०.५ नि० ६.६।

मिम्यक्ष येषु सुधिता ऋ० १.१६७.३।

मिहः पावकाः प्रतता ऋ० ३.३१.२०।

मीडहुष्मतीव पृथिवी ऋ० ५.५६.३।

मीढुष्टम शिवतम य० १६.५१; काठ० सं० १७.५७; तै० सं० ४.५.१०.१०; मै० सं० ९.२.४० कपि० २७.६।

मुखं सदस्य शिरः य० १९.८८; काठ० सं० ३८.३५; का० सं० २१.८८; मै० सं० ३.११.८०।

मुखाय ते पशुपते अ० ११.२.५; पै०सं० १६.१०४.५।

मुग्धा देवा उत अ० ७.५.५।

मुञ्चन्तु मा शपथ्याद् ऋ० १०.९७.१६, य० १२.९०, अ० ६.९६.२,७.११२.२; कपि० २५.४, पै० सं० १५.१३.६; १७.२३.२।

मुञ्चन्तु मा शपथ्यादहोरात्रे अ० ११.६.७; पै० सं० १९.१२.५।

मुञ्च शीर्षक्तया उत अ० १.१२.३; पै० सं० १.१७.३।

मुञ्चामि त्वा वैश्वानराद् अ० १.१०.४।

मुञ्चामि त्वा हविषा ऋ० १०.१६१.१;अ० ३.११.१, २०.९६.६; पै० सं० १.६२.१२।

मुनयो वातरशनाः ऋ० १०.१३६.२।

मुमुक्तमस्मान् दुरिताद् अ० ५.६.८; पै० सं० ६.११.१०।

मुमुक्ष्वो मनवे ऋ० १.१४०.४।

मुमुचाना ओषधयो अ० ८.७.१६; पै० सं० १६.१३.६।

मुमोद गर्भो वृषभः ऋ० १०.८.२।

मुषाय सूर्यं कवे ऋ० १.१७५.४।

मुहुर्गृध्यैः प्र वदति अ० १२.२.३८; पै० सं० १७.३३.८।

मुह्यन्त्वेषां बाहवः अ० ११.९.१३।

मूढा अमित्रा न्यर्बुदे अ० ११.१०.२१।

मूढा अमित्राश्चरता० अ० ६.६७.२।

मूरा अमूरा न वयं ऋ० १०.४.४, नि० ६.८।

मूर्णा मृगस्य दन्ता अ० ४.३.६; पै० सं० २.८.४।

मूर्धा दिवोनाभिरग्निः ऋ० १.५९.२।

मूर्धानमस्य संसीव्या० अ० १०.२.२६, पै० सं० १६.५९.९।

मूर्धानं दिवो अरतिं ऋ० ६.७.१, य० ७.२४,३३.८, सा० ६७,११४०, तै० सं० १.४.१३.१, ६.५.२.२, मै० सं० १.३.४५;काठ० सं० ४.२.६; का० सं० ३२.८; कपि० ३.५; ४४.१, सं० वि० सीमन्तोन्नयनसंस्कार; सा० ब्रा० ३.१.४.६;१६, श० ब्रा० ४.२.४.२४, १३.५.१.११।

मूर्धा भुवो भवति नक्तं ऋ० १०.८८.६, नि० ७.२७।

मूर्धा वयः प्रजापतिः य० १४.९; तै० सं० ४.३.५.१९; श० ब्रा० ८.२.४.१–८; ८.२.३.१०–१३, कपि० २६.१।

मूर्धाऽसि राड् ध्रुवाऽसि य० १४.२१; श० ब्रा० ८.३.४.६–८ तै० सं० ४.३.७.३७; ५.३.२.१४; कपि० २६.२,३२.१२।

मूर्धाहं रयीणाम् अ० १६.३.१।

मूर्ध्नो देवस्य बृहतो अ० १९.६.१६; पै० सं० ९.५.१४।

मूलबर्हणी पर्या० अ० १२.५.३३; पै० सं० १६.१४४.६।

मूषो न शिश्ना व्यदन्ति ऋ० १०.३३.३।

मृगो न भीमः कुचरो ऋ० १०.१८०.२, य० १८.७१, सा० १८७३, अ० ७.८४.३, तै० सं० १.६.१२.१४; नि० १.२०; काठ० सं० ४.४९; मै० स० २.१२.४८; जी० ले० ४४७; जी० च० भा० २, पृ० १८१; द० शा० १६९; पै० सं० १.७७.२।

मृजन्ति त्वा दश ऋ० ९.८.४ सा० ११८१।

मृजन्ति त्वा समग्रुवो ऋ० ९.६६.९।

मृजानो वारे पवमानो ऋ० ९.१०७.२२ सा० १०८०।

मृज्यमानः सुहस्त्य ऋ० ९.१०७.२१, सा० ५१७, १०७९; तां० ब्रा० १३.९.२; सा० ब्रा० ३.१.४.२९।

मृण दर्भ सपत्नान् अ० १९.२९.४।

मृत्यवेऽमून् प्र अ० ८.८.१०।

मृत्युरीशे द्विपदां अ० ८.२.२३।

मृत्युर्हिङ्कृण्वती अ० १२.५.२१।

मृत्युः प्रजानामधि० अ० ५.२४.१३।

मृत्योरहं ब्रह्मचारी अ० ६.१३३.३; पै० सं० ५.३३.३।

मृत्योराषमा पद्यन्तां अ० ८.८.१८; पै० सं० १६.३०.६।

मृत्योः पदं योपयन्तो ऋ० १०.१८.२, अ० १२.२.३०, तै० आ० ६.१०.२; पै० सं० ५.१३.९।

मृळत नो मरुतो मा वधि ऋ० ५.५५.९।

मृळा नो रुद्रोत ऋ० १.११४.२, तै० सं० ४.५.१०.४; काठ०सं० ४०.८७; आर्याभि० १.४५।

मेंडि न त्वा सा० ३२७।

ऐ० आ० ५.२.५; दे० ब्रा० ५.१.१५ ।

य आर्जीकेषु कृत्वसु ऋ० ९.६५.२३, सा० ११६४ ।

य आपिर्नित्यो वरुण प्रियः ऋ० ७.८८.६ ।

य आमं मांसमदन्ति अ० ८.६.२३; मै० सं० १६.८१.५ ।

य आयुं कुत्समतिथिग्व ऋ० ८.५३.२ ।

य आर्षेयेभ्यो याचद्भ्यो अ० १२.४.१२; पै० सं० ७.१६.२ ।

य आशानामाशापालाः अ० १.३१.२; पै० सं० १.२२.३ ।

य आस्तेयश्च चरति ऋ० ७.५५.६, अ० ४.५.५; पै० सं० ४.६.५ ।

य आस्वत्क आशये ऋ० ८.४१.७ ।

य इदं प्रतिपप्रथे सा० १७०९; अ० ६.३६.२ ।

य इद्ध आविवासति ऋ० ६.६०.११, सा० ११५० ।

य इन्द्रोः पवमानस्यानु ऋ० ९.११४.१ ।

य इन्द्र इन्द्रियं दधुः य० २०.७०; काठ० सं० ३८.१०१; का० सं० २२.५८; मै० सं० ३.११.२७; श० ब्रा० २.६.१.२२ ।

य इन्द्र इव देवेषु अ० ६.४.११; पै० सं० १६.२५.१ ।

य इन्द्र चमसेष्वा ऋ० ८.८२.७, सा० १६२ ।

य इन्द्र यतयस्त्वा ऋ० ८.६.१८ ।

य इन्द्र शुष्मो मघवन्ते ऋ० ७.२७.२, तै० ब्रा० २.८.५.७ ।

य इन्द्र सस्त्यव्रतो ऋ० ८.९७.३ ।

य इन्द्र सोमपातमो ऋ० ८.१२.१, सा० ३९४; अ० २०.६३.७ ।

य इन्द्राग्नी चित्रतमो ऋ० १.१०८.१ ।

य इन्द्राग्नी सुतेषु ऋ० ६.५९.४, नि० ५.२२ ।

य इन्द्राय वचोयुजा ऋ० १.२०.२ ।

य इन्द्राय सुनवत् ऋ० ४.२४.७ ।

य इन्द्रेण सरथं अ० ३.२१.३; पै० सं० ३.१२.३ ।

य इमा विश्वा जातानि ऋ० ५.८२.९; मै० सं० ४.१२.१८०; काठ० सं० १०.२२; ऐ० ब्रा० १.२.३; ४.५.४; श० ब्रा० १३.२.२.१०; तै० सं० ४.६.२.१; नि० १०.२६; ऋ० भू० वेदविषय; आर्याभि० २.३०; कपि० २८.२ ।

य इमा विश्वा भुवनानि ऋ० १०.८१.१, य० १७.१७, तै० सं० ४.६.२.१; मै० सं० २.१०.१५, नि० १०.२६; काठ० सं० १८.२ ।

य इमां देवो मेखलाम् अ० ६.१३३.१, पै० सं० ५.३३.१ ।

य इमे उभे अहनी ऋ० ५.८२.८; ऐ० ब्रा० ४.५.४ ।

य इमे द्यावापृथिवी ऋ० १०.११०.९, य० २९.३४; अ० ५.१२.९, १३.३.१, तै० ब्रा० ३.६.३.४, नि० ८.१४; मै० सं० २.१३.११५; ३.१३.२०; ४.१६.१७७; काठ० सं० १६.२३७; का० सं० ३१.४६. पै० सं० ४.१.५ ।

य इमे रोदसी ऋ० ३.५३.१२ ।

य इमे रोदसी मही समीची ऋ० ८.६.१७ ।

य इमे रोदसी मही सं मातरेव ऋ० ९.१८.५ ।

य इह पितरो जीवा अ० १८.४.८७ ।

य ईङ्खयन्ति पर्वतान् ऋ० १.१९.७ ।

यजन्ते अस्य सख्यम् ऋ० ७.३६.५ ।

यजमानब्राह्मणं अ० ६.६.१, पै० सं० १६. ११२.५ ।

यजमानाय सुन्वत आग्ने ऋ० ५.२६.५ ।

यजस्व वीर प्रविहि ऋ० २.२६.२ ।

यजस्व होतारिषितो ऋ० ६.११.१ ।

यजा नो मित्रावरुणा ऋ० १.७५.५, य० ३३.३, सा० १५३७, तै० ब्रा० २.७. १२.१; का० सं० ३२.३ ।

यजाम इन्नमसा ऋ० ३.३२.७ ।

यजामह इन्द्रं वज्र० ऋ० १०.२३.१, सा० ३३४; सा० ब्रा० ३.१.३.१० ।

यजामहे वां महः ऋ० १.१५३.१ ।

यजिष्ठं त्वा यजमाना ऋ० १.१२७.२, सा० १८१४; काठ० सं० ३६.११७ ।

यजिष्ठं त्वा ववृमहे ऋ० ८.१६.३, सा० ११२, १४१३ ।

यजुर्भिराप्यन्ते ग्रहा य० १६.२८; का० सं० २१.३० ।

यजूँषि यज्ञे समिधः अ० ५.२६.१, गो० ब्रा० उ० २.११, पै० सं० ६.२.१ ।

यज्जाग्रतो दूरम् य० ३४.१; का० सं० ३३. १; स० प्र० ७ समु०; सं० वि० शान्तिकरण; ऋ० भू० ईश्वरस्तुतिप्रार्थना याचना०; आर्याभि० २.४३ ।

यज्जाग्रद्यत् सुप्तो अ० १६.७.१० ।

यज्जातवेदो भुवनस्य ऋ० १०.८८.५ ।

यज्जामयो यद्यु० अ० १४.२.६१; पै० सं० १८.१२.६ ।

यज्जायथा अपूर्व्य ऋ० ८.८६.५, सा० ६०१, १४२६; श्रा० ब्रा० ६.२.७.१ ।

यज्जायथास्तदहरस्य ऋ० ३.४८.२ ।

यज्ञ इन्द्रमवर्धयत् ऋ० ८.१४.५, सा० १२१, १६३६, अ० २०.२७.५; तां० ब्रा० १६.७.५ ।

यज्ञ एति विततः अ० १८.४.१३ ।

यज्ञपतिमृषयः अ० २.३५.२, पै० सं० १. ८८.१, तै० सं० ३.२.८.१६ ।

यज्ञपदीराक्षीरा अ० १०.१०.६ ।

यज्ञभिर्यज्ञवाहसं ऋ० ८.१२.२० ।

यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं य० ८.२२; अ० ७. ६७.५; काठ० सं० ४.७७; श० ब्रा० ४.४. ४.१४; मै० सं० १.३.११३; तै० सं० १. ४.४४.७; ६.६.२.४, पै० सं० २०.३४.५ ।

यज्ञर्तो दक्षिणीयो अ० ८.१०.७ ।

यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निम् ऋ० ५. ११.२, सा० ६०६, तै० सं० ४.४.४.६ ।

यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितं हविष्मन्त ऋ० १०.१२२.४; काठ० सं० ३६.३७ ।

यज्ञस्य केतुः पवते ऋ० ६.८६.७ ।

यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिः अ० २.३५.५, १६. ५८.५ ।

यज्ञस्य दोहो विततः य० ८.६२ ।

यज्ञस्य वो रथ्यं विश्पतिं ऋ० १०.६२.१; ऐ० ब्रा० ४.५.४ ।

यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा ऋ० ८.३८.१, सा० १०७३, काठ० सं० ३५.३१; ता० ब्रा० १३.८.५ ।

यज्ञं च नस्तन्वं च ऋ० १०.१५७.२, सा० ११११, अ० २०.६३.१, १२४.४, मै० सं० ४.१४.११६ ।

यज्ञं दुहानं सद० अ० ११.१.३४, पै० सं० १६.६२.४ ।

यतो यतः समीहसे य० ३६.२२; का० सं० ३६.२३; ऋ० भू० ई० प्रार्थनायाचना० आर्याभि० २.७।

यत् कशिपूपबर्हणं अ० ६.६.१०, पै० सं० १६.१११.१०।

यत् काम कामय० अ० १६.५२.५, पै० सं० १.३०.५,२०.४६.६।

यत् किं चासौ मनसा अ० ७.७०.१, पै० सं० १६.२७.१।

यत् किं चेदं पतयति अ० १६.४८.३, पै० सं० ४.२२.२।

यत् किं चेदं वरुण ऋ० ७.८६.५, अ० ६.५१.३, तै० सं० ३.४.११.१६; मै० सं० ७.१२.१७७; काठ० सं० २३.४५, पै० सं० १६.४३.५।

यत् कुरुते यद्वनुते अ० १२.२.३६।

यत् क्षत्तारं ह्वयत्या अ० ६.६.१, पै० सं० १६.११६.२।

यत् क्षुरेण मर्चयता अ० ८.२.१७, पै० सं० १६.४.७।

यत् त आत्मानि तन्वां अ० १.१८.३, पै० सं० २०.१८.१।

यत् तच्छरीरमशं० अ० ११.८.१६, पै० सं० १६.८६.६।

यत् तर्पणमाहरन्ति अ० ६.६.६; पै० सं० १६.१११.६।

यत्तुदत्सूर एतशं ऋ० ८.१.११।

यत्तृतीयं सवनं रत्नधेयं ऋ० ४.३५.६।

यत् ते अङ्गमतिहितं अ० १८.२.२६।

यत् ते अन्नं भुवस्पत अ० १०.५.४५; गो० ब्रा० उ० ५.८, पै० सं० १.६३.१।

यत् ते अपोदकं विषं अ० ५.१३.२; पै०सं० ८.२.२।

यत्ते आपो यदोषधीः ऋ० १०.५८.७।

यत् ते काम शर्म अ० ६.२.१६ पै० सं० १६ ७७.१।

यत्ते कृष्णः शकुन ऋ० १०.१६.६, अ० १८.३.५५, तै० आ० ६.४.२।

यत् ते क्रुद्धो धनपतिः अ० १०.१०.११, पै० सं० १६.१०८.१।

यत् ते क्लोमा यद् अ० १०.६.१५।

यत्ते गात्रादग्निना ऋ० १.१६२.११, य० २५.३४, तै० सं० ४.६.८.११; मै० सं० ३.१६.११।

यत्ते चतस्रः प्रदिशो ऋ० १०.५८.४।

यत्ते चन्द्रं कश्यप अ० १३.३.१०; पै० सं० ४.३.१।

यत्ते चर्म शतौदने अ० १०.६.२४; पै० सं० १६.१३८.४।

यत्ते तनूष्वनह्यन्त अ० १६.२०.३, पै० सं० १.१०८.३।

यत्ते दर्भ जरामृत्युः अ० १६.३०.१, पै० सं० १३.११.१६।

यत्ते दित्सु प्रराध्यं ऋ० ५.३६.३, सा० ११७४।

यत्ते दिवं यत्पृथिवीं ऋ० १०.५८.२।

यत्ते देवा अकृण्वन् अ० ७.७६.१, पै० सं० २०.३२.१।

यत्ते देवी निर्ऋतिः अ० ६.६३.१, पै० सं० १६.११.४।

यत्ते नद्धं विश्ववारे अ० ६.३.२, पै० सं० १६.३६.२।

यत्ते नाम सुहवं अ० ७.२०.४; पै० सं० २०.४.५।

यत्पाकत्रा मनसा ऋ० १०.२.५, तै० ब्रा० ३.७.११.५।

यत्पाञ्चजन्यया विशेन्द्रे ऋ० ८.६३.७, नि० ३.८; ऐ० ब्रा० ५.२.१।

यत् पिबामि सं पिबामि अ० ६.१३५.२, पै० सं० ५.३३.८।

यत् पुरा परिवेषात् अ० ९.६.१२।

यत्पुरुषं व्यदधुः ऋ० १०.९०.११, य० ३१.१०, अ० १९.६.५, तै० आ० ३.१२.५; का० सं० ३५.१०; ऋ० भू० सृष्टिविद्याविषय, पै० सं० ९.५.५।

यत्पुरुषेण हविषा ऋ० १०.९०.६, य० ३१.१४, अ० १९.६.१०, ७.५.४; तै० आ० ३.१२.३; का० सं० ३५.१४; ऋ० भू० सृष्टिविद्या विषय।

यत्पूर्व्यं मरुतो यच्च नूतनं ऋ० ५.५५.८।

यत्प्रज्ञानमुत चेतो य० ३४.३; स० प्र० ७ समु०; सं० वि० सामान्य प्रकरण।

यत् प्रतिशृणोति अ० ९.६.२, पै० सं० १६.११६.३।

यत् प्रत्याहन्ति अ० ८.१०.३, पै० सं० १६.१३५.१०।

यत् प्राङ् प्रत्यङ् अ० १३.२.३, पै० सं० १८.२०.७।

यत् प्राण ऋतावा० अ० ११.४.४, पै० सं० १६.२१.३।

यत् प्राण स्तनयित्नु० अ० ११.४.३, पै० सं० १६.२१.४।

यत्प्रायासिष्ट पृषतीभिरश्वैः ऋ० ५.५८.६।

यत् प्रेषिता वरुणे अ० ३.१३.२, पै० सं० ३.४.२, काठ० सं० ३९.१०, तै० सं० ४.६.१.६।

यत्र ऋषयः प्रथमजा अ० १०.७.१४, पै० सं० १७.८.५।

यत्र कामा निकामाश्च ऋ० ९.११३.१०; सं० वि० संन्यास संस्कार।

यत्र क्व च ते मनो ऋ० ६.१६.१७, सा० ७०६।

यत्र ग्रावा पृथुबुध्न ऋ० १.२८.१; ऐ० ब्रा० ७.३.५।

यत्र ज्योतिरजस्रं ऋ० ९.११३.७; सं० वि० संन्यास संस्कार।

यत्र तपः पराक्रम्य अ० १०.७.११, पै० सं० १७.८.२।

यत्र देवां ऋघायतो ऋ० ४.३०.५।

यत्र देवा ब्रह्मविदो अ० १०.७.२४, पै० सं० १७.९.५।

यत्र देवाश्च मनुष्याः अ० १०.८.३४।

यत्र द्वाविव जघना ऋ० १.२८.२; ऐ० ब्रा० ७.३.५।

यत्र धारा अनपेता य० १८.६५; काठ० सं० ४०.१०९; श० ब्रा० ९.५.१.५०; तै० सं० ५.७.७.१०।

यत्र नार्यपच्यवं ऋ० १.२८.३; ऐ० ब्रा० ७.३.५।

यत्र नावप्रभ्रंशनं अ० १९.३९.८।

यत्र बाणाः सम्पतन्ति ऋ० ६.७५.१७, य० १७.४८, सा० १८६६, तै० सं० ४.६.४.१५; तै० ब्रा० ४.६.४.४।

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं य० २०.२५; का० सं० ३२.१३; ऋ० भू० राजप्रजाधर्मविषय।

यत्र ब्रह्मा पवमान ऋ० ९.११३.६; सं० वि० संन्यास संस्कार; ऐ० आ० ३.२.४।

१८.२१.८ ।

यत् समुद्रो अभि अ० १६.३०.५ ।

यत् संयमो न वि अ० ४.३.७ ।

यत्संवत्समृभवो ऋ० ४.३३.४ ।

यत्सानोः सानुमारुहत् ऋ० १.१०.२; सा० १३४५ ।

यत्सिन्धौ यद्सिकन्यां ऋ० ८.२०.२५ ।

यत् सुपर्णा विवक्षवो अ० २.३०.३ ।

यत्सोम आ सुते नर ऋ० ७.६४.१०, ऐ० ब्रा० ६.२.३ ।

यत्सोम चित्रमुक्थ्यं ऋ० ६.१६.६, सा० ६६६ ।

यत्सोममिन्द्र विष्णवि ऋ० ८.१२.१६; सा० ३८४. अ० २०.१११.१ ।

यत्सोमो वाजमर्षति ऋ० ६.५६.२ ।

यत्स्थो दीर्घप्रसद्मनि ऋ० ८.१०.१ ।

यत् स्वप्ने अन्नम् अ० ७.१०१.१, पै० सं० २०.३५.५ ।

यथा कण्वे मघवन्त्रसद ऋ० ८.४६.१० ।

यथा कण्वे मघवन्मेधे ऋ० ८.५०.१० ।

यथा कलां यथा शफं ऋ० ८.४७.१७, अ० ६.४६.३; १६.५७.१, पै० सं० २.३७.३, ३.३०.१, १६.४६.११ ।

यथाङ्गरो सवर्वं० अ० २.३६.४, पै०सं० २.२१.४ ।

यथा गौरो अपा ऋ० ८.४.३, सा० २५२, १७२१, नि० ३.२० ।

यथाग्रे त्वं वनस्पते अ० १६.३१.६, पै० सं० १०.५.६० ।

यथा चक्रुर्देवासुरा अ० ६.१४१.३, पै० सं० १६.२२.८ ।

यथा चित्कण्वमावतं ऋ० ८.५.२५ ।

यथा चिद्वृद्धमतसं ऋ० ८.६०.७ ।

यथा चिन्मन्यसे हृदा ऋ० ५.५६.२ ।

यथाऽयं प्रगृहीत० अ० १२.४.३४ ।

यथा त्वमुत्तरोऽसो अ० १६.४६.७, पै० सं० ४.२३.७ ।

यथादित्या वसुभिः अ० ६.७४.३, तै० सं० २.१.११.११ ।

यथा देवा असुरान् अ० ६.२.१८, पै० सं० १७.७७.७ ।

यथा देवा असुरेषु ऋ० १०.१५१.३, तै० ब्रा० २.८.८.७ ।

यथा देदेष्वमृतं अ० १०.३.२५; पै०सं० १६.६५.४ ।

यथा द्यां च पृथिवीं अ० १.२.४, पै० सं० २०.३३.६ ।

यथा द्यौश्च पृथिवी अ० २.१५.१, पै० सं० ५.३०.३, ६.५.१ ।

यथा नकुलो विच्छिद्य अ० ६.१३६.५ ।

यथा नडं कशिपुने अ० ६.१३८.५, पै० सं० १.६८.१ ।

यथा नो अदितिः करत् ऋ० १.४३.२, तै० सं० ३.४.११.७; मै० सं० ४.१२.१७८; काठ० सं० २३.४७ ।

यथा नो मित्रो अर्यमा ऋ० ८.३१.१३ ।

यथा नो मित्रो वरुणो ऋ० १.४३.३ ।

यथापवथा मनवे ऋ० ६.६६.१२ ।

यथा पसस्तायादरं अ० ६.७२.२ ।

यथा पूर्वेभ्यः शतसा ऋ० ६.८२.५ ।

यथा पूर्वेभ्यो जरितृभ्यः ऋ० १.१७५,१७६.६ ।

यथा प्रधिर्यथो० अ० ६.७०.३ ।

यथा प्राण बलि० अ० ११.४.१६, पै० सं०

६.५.१०।

यथा बाणः सुसंशितः अ० ६.१०५.२।

यथा बीजमुर्वरायां अ० १०.६.३३, पै० सं० १६.४५.३।

यथा ब्रह्म च क्षत्रं अ० २.१५.४, पै० सं० ६.५.७।

यथा भवदनुदेयी ऋ० १०.१३५.६।

यथा भूतं च भव्य अ० २.१५.६, पै० सं० ६.५.१३।

यथा भूमिर्मृतमना अ० ६.१८.२, पै० सं० १६.७.१६।

यथा मक्षा इदं मधु अ० ९.१.१७, पै० सं० १६.३३.८।

यथा मधु मधुकृतः अ० ९.१.१६; पै० सं० ६.६.८, १६.३३.७, १९.४३.३, २०.५४.८।

यथा मनो मनस्केतैः अ० ६.१०५.१।

यथा मनौ विवस्वति ऋ० ८.५२.१।

यथा मनौ सांवरणौ ऋ० ८.५१.१।

यथा मम स्मरादसौ अ० ६.१३०.३।

यथा मांसं यथा अ० ६.७०.१।

यथा मृगाः संविजन्त अ० ५.२१.४।

यथायजो होत्रमग्ने ऋ० ३.१७.२।

यथा यमाय हर्म्य अ० १८.४.५५।

यथा यशश्चन्द्रमसि अ० १०.३.१८, पै० सं० १६.६५.२।

यथा यशः कन्यायां अ० १०.३.२०, पै० सं० १६.६५.१।

यथा यशः पृथिव्यां अ० १०.३.१९, पै० सं० १६.६४.८।

यथा यशः प्रजापतौ अ० १०.३.२४, पै० सं० १६.६५.३।

यथा यशः सोमपीथे अ० १०.३.२१, पै० सं० १६.६४.१०।

यथा यशो अग्निहोत्रे अ० १०.३.२२, पै०सं० १६.६४.९।

यथा यशो यजमाने अ० १०.३.२३।

यथायं वाहो अश्विना अ० ६.१०२.१; पै० सं० ९.१४.१।

यथायाद्यमसाद० अ० १२.५.६४।

यथा युगं वरत्रया ऋ० १०.६०.८।

यथा रुद्रस्य सूनवो ऋ० ८.२०.१७।

यथा वरो सुषाम्ने ८.२४.२८।

यथा वशन्ति देवास्तथेदसत् ऋ० ८.२८.४।

यथा वः स्वाहा अग्नये ऋ० ७.३.७।

यथा वातश्चाग्निश्च अ० १०.३.१४, पै० सं० १६.६४.५।

यथा वातश्च्यावयति अ० १०.१.१३, पै० सं० १६.३६.३।

यथा वातः पुष्करिणीं ऋ० ५.७८.७, श० ब्रा० १४.९.४.२२; श०ब्रा० १२.९.४.२२; नि० ३.१५; सं० वि० गर्भाधानसंस्कार।

यथा वातेन प्रक्षीणा अ० १०.३.१५, पै०सं० १६.६४.४।

यथा वातो यथा अ० १.११.६; सं० वि० गर्भाधानसंस्कार, पै०सं० २०.२१.९।

यथा वातो यथा वनं ऋ० ५.७८.८, य० ८.२८, नि० ३.१५।

यथा वातो वनस्पतीन् अ० १०.३.१३, पै० सं० १६.६४.३।

यथा वामत्रिरश्विना ऋ० ८.४२.५।

यथा विद्धाँ अरं करत् ऋ० २.५.८।

यथा विप्रस्य मनुषो ऋ० १.७६.५ ।

यथा वृकादजावयो अ० ५.२१.५ ।

यथा वृक्षं लिबुजा अ० ६.८.१ ।

यथा वृक्षमशनिः अ० ७.५०.१, पै०सं० १९.६.८ ।

यथा वृत्र इमा आप० अ० ६.८५.३, पै० सं० १९.६.३ ।

यथा शाम्याकः अ० १९.५०.४, पै०सं० १६.४.१४ ।

यथा शेपो अपायातै अ० ७.९०.३ ।

यथा शेवधिर्निहितो अ० १२.४.१४, पै० सं० १७.१७.४ ।

यथा श्येनात् पतत्रिणः अ० ५.२१.६ ।

यथाश्वत्थ निरभनो अ० ३.६.३ ।

यथाश्वत्थ वानस्पत्यान् अ० ३.६.६ ।

यथा सत्यं चानृतं अ० २.१५.५, पै० सं० ६.५.१२ ।

यथासितः प्रथयते अ० ६.७२.१, पै० सं० १९.२७.१४ ।

यथा सिन्धुर्नदीनां अ० १४.१.४३, पै० सं० १८.४.१० ।

यथा सुपर्णः प्रपतन् अ० ६.८.२ ।

यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च अ० २.१५.३ पै० सं० ६.५.३ ।

यथा सूर्यस्य रश्मयः अ० ६.१०५.३ ।

यथा सूर्यो अतिभाति अ० १०.३.१७, पै० सं० १६.६४.७ ।

यथा सूर्यो नक्षत्राणां अ० ७.१३.१, पै० सं० १९.२१.१ ।

यथा सूर्यो मुच्यते अ० १०.१.३२ ।

यथा सो अस्य परिधिः अ० ५.२९.३ ।

यथा सोम ओषधीनां अ० ६.१५.३, पै० सं० १९.५.१६ ।

यथा सोमस्तृतीये अ० ९.१.१३, पै० सं० १६.३३.३ ।

यथा सोमः प्रातः सवने अ० ९.१.११, पै० सं० १६.३३.१ ।

यथा सोमो द्वितीये अ० ९.१.१२, पै० सं० १६.३३.२ ।

यथा स्म ते विरोहते अ० ४.४.३, पै० सं० ४.५.४ ।

यथा ह त्यद्वसवो ऋ० ४.१२.६,१०.१२६.८. तै० सं० ४.७.१५.७;२२; मै० सं० ३.१६. ८८,४.११.२४; काठ० सं० २.१०९; ९.७७ ।

यथा हव्यं वहसि अ० ४.२३.२, पै० सं० ४.३३.३ ।

यथाहश्च रात्री अ० २.१५.२, पै० सं० ६.५.४ ।

यथा हस्ती हस्तिन्याः अ० ६.७०.२, पै० सं० १९.२९.८ ।

यथाहान्यनुपूर्वं ऋ० १०.१८.५, अ० १२.२.२५, तै० आ० ६.१०.१, पै० सं० १७.३२.४ ।

यथा होतर्मनुषो देवताता ऋ० ६.४.१, मै० सं० ४.३.१३.२, ७; ।

यथेदं भूम्या अधि अ० २.३०.१, पै० सं० २.१७.१ ।

यथेन्द्र उद्वाचनं अ० ५.८.८, पै० सं० ७.१८.९ ।

यथेन्द्रो द्यावापृथिव्योः अ० ६.५८.२, पै० सं० १९.१०.७ ।

यथेमां वाचं कल्याणीं य० २६.२; स० प्र० ४ समु०; जी० ले० ४७७; जी० च०

भाग०२-पृ० १८१, ऋ० भू० अधिकारानधिकारविषय; द० शा० १६८।

यथेमे द्यावापृथिवी अ० ६.८.३।

यथेयं पृथिवी मही ऋ० १०.६०.६, अ० ६.१७.१-४, ५.२५.२; सं० वि० सीमन्तोन्नयनसंस्कार, सं० वि० गर्भाधान संस्कार।

यथेषुका परापतदव० अ० १.३.६।

यथोत कृत्व्ये धने ऋ० ८.५.२६।

यथोदकमपपुषो अ० ६.१३९.४।

यदक्रन्दः प्रथमं जायमानः ऋ० १.१६३.१, य० २९.१२, तै० सं० ४.२.८.२, ६.७.१; मै० सं० १.६.१७; काठ० सं० ३९.१; ४०.३५; श० ब्रा० १३.५.१.१७; गो० ब्रा० पू० २.१८.१३८; २१.१५८।

यदक्षेषु वदा अ० १२.३.५२, पै० सं० १७.४१.२।

यदग्न एषा समितिः ऋ० १०.११.८, अ० १८.१.२६; मै० सं० ४.१४.२२२; ऐ० ब्रा० ५.१.१।

यदग्निरापो अदहत् अ० १.२५.१, पै० सं० १.३२.१।

यदग्ने अद्य मिथुना ऋ० १०.८७.१३, अ० ८.३.१२; १०.५.४८, पै० सं० १६.७.२।

यदग्ने कानि कानि चित् ऋ० ८.१०२.२०, य० ११.७३, अ० १९.६४.३, तै० सं० ४.१.१०.१, मै० सं० २.७.८२; काठ० सं० १६.७२; कपि० ३०.८; श० ब्रा० ६.६.३.५।

यदग्ने तपसा तपः अ० ७.६१.१, पै० सं० १६.१३२.१२, १९.२८.१२।

यदग्ने दिविजा असि ऋ० ८.४३.२८।

यदग्ने मर्त्यस्त्वं ऋ० ८.१९.२५।

यदग्ने यानि कानि ऋ० ८.१०२.२०, अ० १९.६४.३, मै० सं० २.७.८२, तै० सं० ४.१.१०.१।

यदग्ने स्यामहं त्वं ऋ० ८.४४.२३।

यदग्नौ सूर्ये विषं अ० १०.४.२२, पै० सं० १६.१७.२।

यदङ्ग तविषीयवो ऋ० ८.७.२।

यदङ्ग तविषीयस ऋ० ८.६.२६।

यदङ्ग त्वा भरताः ऋ० ३.३३.११।

यदङ्ग दाशुषे त्वं ऋ० १.१.६; आर्याभि० १.६; ल० वेदाङ्ग १४६।

यदचरस्तन्वा वावृधानो ऋ० १०.५४.२, श० ब्रा० ११.१.६.१०।

यदज्ञातेषु वृजनेषु ऋ० १०.२७.४।

यदत्त्युपजिह्विका ऋ० ८.१०२.२१, य० ११.७४, तै०सं० ४.१.१०.२, नि० ३.२०; काठ० सं० १६.७३, मै० सं० २.७.८३; श० ब्रा० ६.६.३.६।

यदत्र रिप्तँ रसिनः य० १९.३५; काठ० सं० ३८.१२; का० सं० २१.३७; श० ब्रा० १२.८.१.५।

यददः संप्रयती० अ० ३.१३.१, पै० सं० ३.४.१, काठ० सं० ३९.६, तै० सं० ५.६.१.५।

यददीव्यन्नृणमहं अ० ६.११९.१।

यददो अदो अभि अ० १६.७.६।

यददो दिवो अर्णव ऋ० ८.२६.१७।

यददो देवा असुरान् अ० ४.१९.४, पै० सं० ५.२५.४।

यददो पितो अजगन् ऋ० १.१८७.७; काठ० सं० ४०.५६।

यददो वात ते गृहे ऋ० १०.१८६.३, सा०

१८४२, तै० ब्रा० २.४.१.८, तै० ग्रा० २.४.२.२ ।

यदद्भिः परिषिच्यसे ऋ० ६.६५.६; सा० ७८५ ।

यदद्य कच्च वृत्रहन् ऋ० ८.९३.४, य० ३३.३५, सा० १२६, अ० २०.११२.१; का० सं० ३२.३५; प० ब्रा० १.१.४; सा० ब्रा० ३.२.४.८ ।

यदद्य कर्हि कर्हिचित् ऋ० ८.७३.५ ।

यदद्य त्वा पुरुष्टुत ऋ० ६.५६.४ ।

यदद्य त्वा प्रयति ऋ० ३.२९.१६, य० ८.२०, अ० ७.९७.१, तै० सं० १.४.४४.४; मै० सं० १.३.११२; काठ० सं० ४.७६, पै० सं० २०.३३.९ ।

यदद्य भागं विभजासि ऋ० १.१२३.३ ।

यदद्य वां नासत्योक्थैः ऋ० ८.९.६, अ० २०.१४०.४ ।

यदद्य सूर उदिते ऋ० ७.६६.४, ८.२७.२१, य० ३३.२०, सा० १३५१; का० सं० ३२.२०; तां० ब्रा० १५.८.३ ।

यदद्य सूर्य उद्यति ऋ० ८.२७.१९ ।

यदद्य सूर्य ब्रवो ऋ० ७.६०.१; मै० सं० ४.१२.६० ।

यदद्य स्थः परावति ऋ० ५.७३.१ ।

यदद्या रात्रि सुभगे अ० १९.५०.६ ।

यदद्याश्विनावपाक ऋ० ८.१०.५ ।

यदद्याश्विनावहम् ऋ० ८.९.१३, अ० २०.१४१.३ ।

यदध्रिगावो अध्रिगू ऋ० ८.२२.११ ।

यदनूचीन्द्रमैरा० अ० १०.१०.१०, पै० सं० १६.१०७.१० ।

यदनूरा परावतम् ऋ० ३.४०.९, अ० २०.६.९ ।

यदन्तरं तद्बाह्यं अ० २.३०.४, पै० सं० २.१७.४ ।

यदन्तरा द्यावापृथिवी अ० १०.८.३९ ।

यदन्तरा परावतम् ऋ० ३.४०.९; अ० २०.६.९; मै० सं० ४.१२.६४ ।

यदन्तरिक्षं पृथिवी० अ० ६.१२०.१, पै० सं० १६.५०.९, मै० सं० १.१०.१२, ४.१४.२४६, तै० सं० १.८.५.१३ ।

यदन्तरिक्षे पतथः पुरुभुजा ऋ० ८.१०.६ ।

यदन्तरिक्षे यद्दिवि ऋ० ८.९.२, अ० २०.१३९.२ ।

यदन्ति यच्च दूरके ऋ० ९.६७.२१ ।

यदन्यासु वृषभो ऋ० ३.५५.१७ ।

यदन्नमद्मि बहुधा अ० ६.७१.१ ।

यदन्नमद्म्यनृतेन अ० ६.७१.३ ।

यदन्ये शतं याचेयुः अ० १२.४.२२ ।

यदपामोषधीनां ऋ० १.१८७.८ ।

यदप्सु यद्वनस्पतौ ऋ० ८.९.५, अ० २०.१३९.५, पै० सं० २.३४.३ ।

यदब्रवं प्रथमं वां वृणानः ऋ० १.१०८.६ ।

यदभिवदति दीक्षां अ० ९.६.४, पै० सं० १६.१११.४, सं० वि० संन्यास संस्कार ।

यदयातं दिवोदासाय वर्तिः ऋ० १.११६.१८ ।

यदयातं शुभस्पती ऋ० १०.८५.१५, अ० १४.१.१५, पै० सं० १८.२.४ ।

यदयुक्था अरुषा ऋ० १.९४.१० ।

यदर्जुन सारमेय ऋ० ७.५५.२ ।

यदर्वाचीनं त्रैहायणाद् अ० १०.५.२२, पै० सं० ९.२२.४, १६.१३०.१ ।

यदलिपका स्वलिपका अ० २०.१३६.३ ।

यदशनकृतं ह्वयन्ति अ० ६.६.१३, पै० सं० १६.१११.१३।

यदश्नासि बलं कुर्वे अ० ६.१३५.१, पै० सं० ५.३३.१।

यदश्नासि यत् पिबसि अ० ८.२.१९, पै० सं० १६.४.९।

यदश्वस्य क्रविषो मक्षिका ऋ० १.१६२.९, य० २५.३२, तै० स० ४.६.८.६, मै० सं० ३.१६.१० का० स० २७.३७।

यदश्वान्धूर्षु पृषतीरयुग्ध्वं ऋ० ५.५५.६।

यदश्वाय वास उपस्तृणन्ति ऋ० १.१६२.१६, य० २५.३९, तै० सं० ४.६.९.५; मै० सं० ३.१६.१४, का० सं० २७.४३।

यदश्विना पृच्छमानाव० ऋ० १०.८५.१४, अ० १४.१.१४, पै० सं० १८.२.३।

यदसावमुतो देवाः अ० ५.८.३, पै० सं० ७.१८.३।

यदस्मासु दुष्वप्न्यं अ० १६.४५.२, पै० सं० ३.५०.३, १५.४.२।

यदस्मृति चकृम अ० ७.१०६.१; पै० सं० २०.७९।

यदस्य दक्षिणम० अ० १५.१८.२।

यदस्य धामनि प्रिये ऋ० ८.१२.३२।

यदस्य मन्युरध्वनीत् ऋ० ८.६.१३।

यदस्य हुतं विहुतं अ० ५.२६.५; पै० सं० १३.६.६।

यदस्या अँहुभेद्याः य० २३.२८, अ० २०.१३६.१; श० ब्रा० १३.५.२.७; ऋ० भू० भाष्यकरणशंकासमाधानादिविषय; का० सं० २५.३३; गो० ब्रा० उ० ६.१५।

यदस्या गोपतौ अ० १२.४.८; पै० सं० १७.१६.७।

यदस्याः कस्मै चिद् अ० १२.४.७; पै० सं० १७.१६.८।

यदस्याः पल्पूलनं अ० १२.४.९; पै० सं० १७.१६.९।

यदहरहरभि० अ० १६.७.११।

यदा कदा च मीढुषे सा० २८८।

यदाकूतात्समसुस्रो य० १८.५८; काठ० सं० ४०.१०१; श० ब्रा० ९.५.१.४५; तै० सं० ५.७.७.१।

यदा केशानस्थि अ० ११.८.११; पै० सं० १६.८६.२।

यदा गार्हपत्य० अ० १४.२.२०; पै० सं० १८.९.१।

यदाजि यात्याजिकृत् ऋ० ८.४५.७।

यदाञ्जनं त्रैककुदं अ० ४.९.९; पै० सं० ८.३.१।

यदाञ्जनाभ्यञ्ज० अ० ९.६.११।

यदा ते मारुतीर्विशः ऋ० ८.१२.२९; ऋ० भू० आकर्षणानुकर्षणविषय।

यदा ते विष्णुरोजसा ऋ० ८.१२.२७।

यदा ते हर्यता हरी ऋ० ८.१२.२८; ऋ० भू० आकर्षणानुकर्षणविषय।

यदा त्वष्टा व्यतृणत् अ० ११.८.१८; पै० सं० १६.८६.८।

यदादित्यैर्हूयमाना अ० १०.१०.६, पै० सं० १६.१०७.६।

यदादीध्ये नदविषाणि ऋ० १०.३४.५, नि० १२.७।

यदान्त्रेषु गवीन्योः अ० १.३.६।

यदापिपेष मातरं य० १६.११; श० ब्रा० १२.७.३.२१–२२; का० सं० २१.१२।

यदापीतासो अंशवो ऋ० ८.९.१९, अ०

२०.१४२.४।

यदापो अघ्न्या इति य० २०.१८, अ० १६.४४.६; काठ० सं० ३८.६०; श० ब्रा० १२.६.२.४, कपि० ३.११; ४५.४; पैं०सं० २०.३२.५।

यदा प्राणो अभ्य० अ० ११.४.५, १७; पैं० सं० १६.२२.७।

यदा बध्नन् दाक्षायणा य० ३४.५२, अ० १.३५.१; का० सं० ३३.४०।

यदारमक्रन्नृभवः पितृभ्यां ऋ० ४.३३.२।

यदा वज्रं हिरण्यमित् ऋ० १०.२३.३, अ० २०.७३.४।

यदा वलस्य पीयतो ऋ० १०.६८.६, अ० २०.१६.६।

यदावसथान् कल्प० अ० ६.६.७; स० वि० संन्यास संस्कार।

यदा वाजमसनत् ऋ० १०.६७.१०, अ० २०.६१.१०; मैं० सं० ४.१२.११।

यदा विर्यदपीच्यं ऋ० ८.४७.१३।

यदा वीरस्य रेवतो ऋ० ७.४२.४।

यदा वृत्रं नदीवृतं ऋ० ८.१२.२६।

यदाशसा निः शसा ऋ० १०.१६४.३, अ० ६.४५.२, तै० ब्रा० ३.७.१२.४।

यदाशसा वदतो मे अ० ७.५७.१।

यदा शृतं कृणवो अ० १८.२.५।

यदासन्द्यामुपधाने अ० १४.२.६५।

यदा समर्यं व्यचेद् ऋ० ४.२४.८।

यदा सुतेः क्रियमाणायाः अ० ३.७.६।

यदासु मर्तो अमृतासु ऋ० १०.६५.६।

यदा सूर्यममुं दिवि ऋ० ८.१२.३०; ऋ० भू० आकर्षणानुकर्षणविषय।

यदा स्थूलेन पससाणौ अ० २०.१३६.२।

यदाहभूय उद्धरेति अ० ६.६.२; पैं० सं० १६.११२.६।

यदि कर्तं पतित्वा अ० ४.१२.७।

यदि कामादप० अ० ६.८.८।

यदि क्षितायुर्यदि वा ऋ० १०.१६१.२, अ० ३.११.२, २०.६६.७; पैं० सं० १.६२.२।

यदि चतुर्वृषो अ० ५.१६.४।

यदि चिन्नु त्वा धना अ० ५.२.४, २०.१०७.७।

यदि जाग्रद्यदि य० २०.१६, अ० ६.११५.२; काठ० सं० ३८.५८; श० ब्रा० १२.६.२.२; का० सं० २२.३।

यदि त्रिवृषोऽसि अ० ५.१६.३।

यदि दशवृषोऽसि अ० ५.१६.१०।

यदि दिवा यदि नक्तम् य० २०.१५; श०ब्रा० १२.६.२.२; मैं० सं० ३.११.१०७; का० सं० २२.२।

यदि द्विवृषोऽसि अ० ५.१६.२।

यदि नववृषोऽसि अ० ५.१६.६।

यदि नो गां हंसि अ० १.१६.४।

यदिन्द्र मित्र मेहनास्ति ऋ० ५.३६.१, सा० ३४५,११७२, तां० ब्रा० १४.६.४; नि० ४.४।

यदिन्द्र ते चतस्रो ऋ० ५.३५.२।

यदिन्द्र दिवि पार्ये यदृधक् ऋ० ६.४०.५।

यदिन्द्र नाहुषीष्वाँ ऋ० ६.४६.७, सा० २६२।

यदिन्द्र पूर्वो अपराय ऋ० ७.२०.७।

यदिन्द्र पृतनाज्ये ऋ० ८.१२.२५।

यदिन्द्र प्रागपागुदङ् (०/ **आयाहि**) ऋ० ८.६५.१।

यदिन्द्र प्रागपागुदङ् (०/ **सिमा**) ऋ० ८.४.

यदी घृतेभिराहुतो ऋ० ८.१९.२३ ।

यदीदहं युधये ऋ० १०.२७.२ ।

यदीदं मातुर्यदि अ० ६.११६.३; पै० सं० १९.४६.६ ।

यदीदिदं मरुतो अ० ४.२७.६ ।

यदी मन्थनन्ति बाहुभिः ऋ० ३.२९.६ ।

यदी मातुरुप स्वसा ऋ० २.५.६ ।

यदीमिन्द्र श्रवाय्यं ऋ० ५.३८.२ ।

यदीमृतस्य पयसा ऋ० १.७९.३ ।

यदीमे केशिनो जना अ० १४.२.५९ ।

यदीमेनां उशतो ऋ० ७.१०३.३ ।

यदीयं दुहिता तव अ० १४.२.६० ।

यदीयं हनत् कथं अ० २०.१३२.१० ।

यदि वहन्त्याशवो सा० ३५६ ।

यदीशीयामृतानां ऋ० १०.३३.८ ।

यदी सुतेभिरिन्दुभिः ऋ० ६.४२.३, सा० १४४२ ।

यदीं गणस्य रशनामजीगः ऋ० ५.१.३, सा० १७४८ ।

यदीं सुतास इन्दवो ऋ० ८.५०.३ ।

यदीं सोमा बभ्रुधूता ऋ० ५.३०.११ ।

यदुत्तमे मरुतो ऋ० ५.६०.६, तै०ब्रा० २.७.१२.४ ।

यदुदञ्चो वृषाकपे ऋ० १०.८६.२२, अ० २०.१२६.२२, नि० १३.३ ।

यदुदरं वरुणस्य अ० १०.१०.२२; पै० सं० १६.१०९.२ ।

यदुदीरत आजयो ऋ० १.८१.३, सा० ४१४, १००४, अ० २०.५६.३; सा० ब्रा० ३.२.१.२ ।

यदुद्वतो निवतो यासि ऋ० १०.१४२.४ ।

यदुपरिशयनमाहरन्ति अ० ९.६.९; पै० सं० १६.१११.११ ।

यदुपस्तृणन्ति बर्हिः अ० ९.६.८; सं० वि० संन्यास संस्कार ।

यदुलूको वदति मोघं ऋ० १०.१६५.४ ।

यदुवक्थानृतं जिह्वया अ०.१.१०.३; पै० सं० १.९.३ ।

यदूवध्यमुदरस्यापवाति ऋ० १.१६२.१०, य० २५.३३, तै० सं० ४.६.८.४;१०; मै० सं० ३.१६.१ ।

यदुष औच्छः प्रथमा ऋ० १०.५५.४ ।

यदुषो यासि भानुना ऋ० ८.९.१८, अ० २०.१४२.३ ।

यदुस्त्रियास्वाहुतं अ० ७.७३.४ ।

यदूवध्यमुदरस्य ऋ० १.१६२.१०; य० २५.३३; तै० सं० ४.६.८.१०; काठ०सं० २७.३७, मै० सं० ३.१६.१ ।

यदेजति पतति अ० १०.८.११; पै० सं० १६.१०२.३ ।

यदेदेनमदधुर्यज्ञियासो ऋ० १०.८८.११, नि० ७.२९; मै० सं० ४.१४.२०१ ।

यदेनमाह व्रात्य अ० १५.११.३—६,८.१० ।

यदेनसो मातृकृतात् अ० ५.३०.४; पै० सं० ९.१३.४ ।

यदेमि प्रस्फुरन्निव ऋ० ७.८९.२ ।

यदेषामन्यो अन्यस्य वाचं ऋ० ७.१०३.५ ।

यदेषां पृषती रथे ऋ० ८.७.२८, अ० १३.१.२१ ।

यद्गायत्रे अधि गायत्रं ऋ० १.१६४.२३, अ० ९.१०.१; ऐ० ब्रा० ३.२.१; गो० ब्रा० उ० ३.१०; पै० सं० १६.६८.१ ।

यद् गिरामि सं गिरामि अ० ६.१३५.३; पै० सं० ५.३३.९ ।

यद् गिरिषु पर्वतेषु अ० ६.१.१८; पै० सं० २.३५.२; ४.१०.७; १६.३३.६।

यद्गोपावददितिः ऋ० ७.६०.८।

यद्ग्रामे यदरण्ये य० ३.४५, २०.१७; काठ० सं० ६.११; ३८.४६; श० ब्रा० १२.६.२.३; मै० सं० १.१०.६; ३.११.१०६; का० सं० २२.४; कपि० ८.७।

यद् दण्डेन यदिष्वा अ० ५.५.४; पै० सं० ६.४.३।

यद्दत्त यत्परादानं य० १८.६४; श० ब्रा० ६.५.१.४६।

यद्दधिषे प्रदिवि चार्वन्नं ऋ० ७.६८.२, अ० २०.८७.२।

यद्दधिषे मनस्यासि ऋ० ८.४५.३१।

यद्द्याव इन्द्र ते शतम् ऋ० ८.७०.५, सा० २७८, ८६२, अ० २०.८१.१, ६२.२०, तै० स० २.४.१४.३, तै० आ० १.७.५, नि० १३.१; सा० ब्रा० ३.१.४.७।

यद् दारुणि बध्यसे अ० ६.१२१.२; पै० सं० १६.५१.२।

यद् दुद्रोहिथ शेपिषे अ० ५.३०.३।

यद् दुर्भगां प्रस्नपितां अ० १०.१.१०; पै० स० १६.३५.१०।

यद् दुष्कृतं यच्छमलं अ० ७.६५.२, १४.२ ६६; पै० सं० ६.२२.५; १८.१३.५।

यद्देवा अदः सलिले ऋ० १०.७२.६।

यद्देवा देवहेडनं य० २०.१४, अ० ६.११४.१; श० ब्रा० १२.६.२.२; मै० सं० ३.११.१०५; ४.१४.२४१; का० सं० २२ १; पै० सं० १६.४६.१।

यद्देवा देवान् हविषा अ० ७.५.३।

यद्देवानां मित्रमहः ऋ० १.४४.१२।

यद्देवापिः शंतनवे ऋ० १०.६८.७, नि० २.१२।

यद्देवा यतयो यथा ऋ० १०.७२.७; सं० वि० संन्यास संस्कार।

यद्देवासो ललामगुं य० २३.२६, अ० २०.१३६.४; श० ब्रा० १३.५.२.७; का० सं० २५.३४।

यद्देवाः शर्म शरणं ऋ० ८.४७.१०।

यद् द्विपाच्चतुष्पाच्च अ० १६.२१.४।

यद्ध त्यद्वां पुरुमीळहस्य ऋ० १.१५१.२।

यद्ध त्यन्मित्रावरुणा ऋ० १.१३६.२।

यद्ध नूनं परावति ऋ० ८.५०.७।

यद्ध नूनं यद्वा यज्ञे ऋ० ८.४६.७।

यद्ध प्राचीरजगन्तोरो ऋ० १०.१५५.४, अ० २०.१३७.१।

यद्ध यान्ति मरुतः ऋ० १.३७.१३।

यद्धरिणो यवमत्ति य० २३.३०, ३१; श० ब्रा० १३.५.२.८; का० सं० २५.३५; ३६; कपि० ३.७।

यद्ध विष्यमृतुशी देवयानं ऋ० १.१६२.४, य० २५.२७, तै० सं० ४.६.८.२; का०सं० २७.३१।

यद्धस्ताभ्यां चक्रम अ० ६.११८.१; पै स० १६.५०.३।

यद्ध स्यात इन्द्र ऋ० १.१७८.१।

यद् धावसि त्रियोजनं अ० ६.१३१.३।

यद्धिरण्यं सूर्येण अ० १६.२६.२।

यद् ब्रह्मभिर्यदृषिभिः अ० ६.१२.२; पै० सं० १६.४.५।

यद् भद्रस्य पुरुषस्य अ० २०.१२८.३।

यद्यग्निः क्रव्याद् अ० १२.२.४; पै० सं० १७.३०.४।

यद्यज्जाया पचति अ० १२.३.३९; पै० सं० १७.३९.९ ।

यद्यत् कृष्णः शकुन अ० १२.३.१३; पै० सं० १७.३७.३ ।

यद्यन्तरिक्षे यदि वाते अ० ७.६६.१; पै० सं० २०.३२.९ ।

यद्यर्चिर्यदि वासि अ० १.२५.२; पै० सं० १.३२.२ ।

यद्यष्टवृषोऽसि अ० ५.१६.८ ।

यद्यामं चक्रुर्निखनन्तः अ० ६.११६.१; पै० सं० १६.४९.७ ।

यद्याव इन्द्र ते शतं ऋ० ८.७०.५, सा० २७८, ८६२ अ० २०.८१.१, ९२.२०, तै० सं० २.४.१४.८, तै० आ० १.७.५, नि० १३.१, ऐ० ब्रा० ५.१.१, जै० ब्रा० १.३२.१ ।

यद्युञ्जते मरुतो रुक्मवक्षसः ऋ० २.३४.८ ।

यद्युञ्जाथे वृषणमश्विना ऋ० १.१५७.२, सा० १७५९ ।

यद्यूयं पृश्निमातरो ऋ० १.३८.४ ।

यद्येकवृषोऽसि अ० ५.१६.१ ।

यद्येकादशोऽसि अ० ५.१६.११ ।

यद्येयथ द्विपदी अ० १०.१.२४; पै० सं० १६.३७.४ ।

यद्योधया महतो मन्यमानः ऋ० ७.९८.४, अ० २०.८७.४ ।

यद् राजानो विभजन्त अ० ३.२९.१ ।

यद् रिप्रं शमलं अ० १२.२.४०; पै० सं० १७.३७.१ ।

यद्रोदसी प्रदिवो अस्ति ऋ० ६.६२.८ ।

यद् रोदसी रेजमाने अ० १.३२.३; पै० सं० १.२३.३ ।

यद् वदामि मधु० अ० १२.१.५८; पै० सं० १७.६.५ ।

यद्वर्चो हिरण्यस्य सा० ६२४; सा० ब्रा० ३.३.७.७ ।

यद्वंहिष्ठं नातिविधे ऋ० ५.६२.९, तै० ब्रा० २.८.६.७ ।

यद्वः श्रान्ताय सुन्वते ऋ० ८.६७.६ ।

यद्वः सहः सहमाना अ० ८.७.५; पै० सं० १९.१७.१ ।

यद्वा अतिथिपतिः अ० ९.६.३, ६.५; सं वि० संन्यासप्रकरण ।

यद्वा उ विश्पतिः ऋ० ८.२३.१३, सा० ११४; सा० ब्रा० ३.१.४.२१ ।

यद्वां कक्षीवां उत ऋ० ८.९.१०, अ० २०.१४०.५ ।

यद्वा कृणोष्योषधीः अ० १३.४.४३; पै० सं० १५.१० ।

यद्वाग्वदन्त्य विचेतनानि ऋ० ८.१००.१०, तै० ब्रा० २.४.६.११, नि० ११.२८ ।

यद्वाजिनो दाम ऋ० १.१६२.८, य० २५.३१, तै० सं० ४.६.८.३; मै० सं० ३.१६.८; का० सं० २७.३५ ।

यद्वातजूतो वना ऋ० १.६५.८ ।

यद्वा तृक्षौ मघवं द्रुह्यावाज ऋ० ६.४६.८ ।

यद्वातो अपो अगनगिन् य० २३.७; श० ब्रा० १३.२.६.२; मैं० सं० ३.१२.१३, तै० सं० ४.७.२०.७; का० सं० २५.७ ।

यद्वा दिवि पार्ये सुष्विमिन्द्र ऋ० ६.२३.२ ।

यद्वा प्रवृद्ध सत्पते ऋ० ८.९३.५, अ० २०.११२.२ ।

यद्वा प्रस्रवणे दिवो ऋ० ८.६५.२ ।

यद्वाभिपित्वे असुरा ऋ० ८.२७.२० ।

यद्वा मरुत्वः परमे सधस्थे ऋ० १.१०१.८ ।
यद्वा यज्ञं मनवे संमिमिक्ष ऋ० ८.१०.२ ।
यद्वा रुमे रुशमे ऋ० ८.४.२, सा० १२३२, अ० २०.१२०.२ ।
यद्वावन्थ पुरुष्टुत ऋ० ८.६६.५ ।
यद्वावान पुरुतमं ऋ० १०.७४.६; ऐ० ब्रा० ३.२.११; ५.२.७; ऐ० आ० ५.२.२ ।
यद्वा शक्र परावति ऋ० ८.१२.१७, अ० २०.१११.२ ।
यद्वासि रोचने दिवः ऋ० ८.९७.५ ।
यद्वासि सुन्वतो वृधो ऋ० ८.१२.१८, अ० २०.१११.३ ।
यद्वाहिष्ठं तदग्नये ऋ० ५.२५.७, य० २६.१२, सा० ८६, तै० सं० १.१.१४.४; ११; काठ० सं० ३९.१००; दै० ब्रा० ५.१.२४ ।
यद्विजामन्परुषि ऋ० ७.५०.२ ।
यद् विद्वांसो यद० अ० ६.११५.१ ।
यद्विरूपाचरं मर्त्येषु ऋ० १०.९५.१६, श० ब्रा० ११.५.१.१० ।
यद् द्विपाच्च चतुष्पाच्च अ० १९.३१.४ ।
यद् वीध्रे स्तनयति अ० ९.१.२४; पैं० सं० १६.३४.८ ।
यद्वीळाविन्द्र यत्स्थिरे ऋ० ८.४५.४१, सा० २०७, १०७२, अ० २०.४३.२; सा० ब्रा० ३.३.१.८ ।
यद् वृत्रं तव चाशनिं ऋ० १.८०.१३ ।
यद् वेद राजा वरुणो अ० ५.२५.६, १९.२६.४; पैं० सं० १३.२.१६; २०.५१.९ ।
यद् वो अग्निरज० अ० १८.४.६४ ।
यद् वो देवा उपजीका अ० ६.१००.२; पैं० सं० ९.१०.७; १९.१३.५ ।
यद्वो देवाश्चकृम ऋ० १०.३७.१२ ।
यद् वो मनः परागतं अ० ७.१२.४ ।
यद् वो मुद्रं पितरः अ० १८.३.१९ ।
यद्वो वयं प्रमिनाम ऋ० १०.२.४, अ० १९.५९.२, तै०सं० १.१.१४.४; १४; मै० सं० ४.१०.५७; ऐ० ब्रा० ७.२.७; काठ० सं० ६.४४;३५.५८; पैं० सं० १९.४७.५ ।
यन्ता च मे धर्ता य० १८.७ ।
यन्तासि यच्छसे अ० ६.८१.१ ।
यन्त्री राड् यन्त्र्यसि य० १४.२२; श० ब्रा० ८.३.४.६.१०; कपि० २६.२;३२.१२ ।
यन्त्यस्य देवा देव० अ० ८.१०.५; पैं० सं० १६.१३३.३ ।
यन्त्यस्य सभां सभ्यो अ० ८.१०.९; पैं० सं० १६.१३३.५ ।
यन्त्यस्य समितिं अ० ८.१०.११; पैं० सं० १६.१३३.६ ।
यन्त्यस्यामन्त्रणमा० अ० ८.१०.१३, पैं० सं० १६.१३३.७ ।
यन्त्वा पृषती रथे अ० १३.१.२१, पैं० सं० १८.१७.१ ।
यन्न इन्द्रो अखनद् अ० ७.२४.१ ।
यन्न इन्द्रो जुजुषे ऋ० ४.२२.१; ऐ० ब्रा० ६.४.२ ।
यन्नासत्या पराके अर्वाके ऋ० ८.९.१५, अ० २०.१४१.५ ।
यन्नासत्या परावति यद्वा स्थो अध्यम्बरे ऋ० ८.८.१४ ।
यन्नासत्या परावति यद्वा स्थो अधि तुर्वशे ऋ० १.४७.७ ।
यन्नासत्या भुरण्यथो ऋ० ८.९.६, अ० २०.१४०.१ ।
यन्नियानं न्ययनं ऋ० १०.१९.४ ।
यन्निर्णिजा रेक्णसा ऋ० १.१६२.२, य०

२५.२५, तै० सं० ४.६.८.२; मै० सं० ३.१६.२; ४.१२.१६४; का० सं० २७.२६।

यन्नीक्षणं मां स्पचन्या ऋ० १.१६२.१३, य० २५.३६, तै० सं० ४.६.६.२; मै० सं० ३.१६.१३; का० सं० २७.४०।

यन्नूनमश्यां गतिं ऋ० ५.६४.३।

यन्नूनं धीभिरश्विना ऋ० ८.६.२१, अ० २०.१४२.६।

यन्मन्यसे वरेण्यं ऋ० ५.३६.२, सा० ११७३, नि० ४.१८।

यन्मन्युर्जायामावहत् अ० ११.८.१; पै० सं० १६.८५.१।

यन्मरुतः सरभसः ऋ० ५.५४.१०।

यन्मातली रथ० अ० ११.६.२३;।

यन्मा हुतमहुतमा० अ० ६.७१.२; पै० सं० २.२८.३।

यन्मे अक्ष्योरादि० अ० ६.२४.२।

यन्मे छिद्रं चक्षुषो य० ३६.२, अ० १६.४०.१; का० सं० ३६.२; आर्षाभि० २.३६; पै० सं० १६.३८.६।

यन्मेदमभिशोचति अ० ४.२६.७।

यन्मे मनसो न प्रियं अ० ६.२.२; पै० सं० १६.७६.२।

यन्मे माता यन्मे पिता अ० १०.३.८; पै० सं० १६.६३.६।

यमग्निं मेध्यातिथिः ऋ० १.३६.११।

यमग्ने कव्यवाहन ऋ० १.२७.७; य० १६.६४; तै० सं० १.३.१३.२; का० सं० २१.६६।

यमग्ने पृत्सु मर्त्यं ऋ० १.२७.७, य० ६.२६. सा० १४१५, तै० सं० १.३.१३.२; श० ब्रा० ३.६.३.३२; मै० सं० १.३.६; कपि० २.१६; काठ० सं० ३.३७।

यमग्ने मन्यसे ऋ० १०.२१.४।

यमग्ने वाजसातम ऋ० ५.२०.१, य० १६.६४।

यमत्यमिव वाजिनं ऋ० ६.६.५।

यमबध्नाद् ०/ तमग्निः अ० १०.६.६।

यमबध्नाद् ०/ तमापो अ० १०.६.१४।

यमबध्नाद् ०/ तमिन्द्रः अ० १०.६.७।

यमबध्नाद् ०/ तमिमं अ० १०.६.१७।

यमबध्नाद् ०/ तं देवा अ० १०.६.१६।

यमबध्नाद् ०/ तं बिभ्रत् अ० १०.६.१०, १३।

यमबध्नाद् ०/ तं राजा अ० १०.६.१५।

यमबध्नाद् ०/ तं सूर्यः अ० १०.६.६।

यमबध्नाद् ०/ तं सोमः अ० १०.६.८।

यमबध्नाद् ०/ तेनेमां अ० १०.६.१२।

यमबध्नाद् ०/ स मायं मणिरागमत् तेजसा अ० १०.६.२७।

यमबध्नाद् ०/ स मायं मणिरागमत् सर्वाभिः अ० १०.६.२८।

यमबध्नाद् ०/ स मायं मणिरागमत् सह अ० १०.६.२३,२४।

यमबध्नाद् ०/स मायं मणिरागमदूर्जया अ० १०.६.२६।

यमबध्नाद् ०/ स मायं मणिरागमद् रसेन अ० १०.६.२२।

यमबध्नाद् ०/ स मायं मणिरागमन्मधोः अ० १०.६.२५।

यमबध्नाद् ०/ सो अस्मै अ० १०.६.११।

यममी पुरोदधिरे अ० ५.८.५; पै० सं० ७.१८.६।

यमोदनं प्रथमजा अ० ४.३५.१; पै० सं० ३७.२ ।

यमो नो गातुं ऋ० १०.१४.२, अ० १८.१.५०; मै० सं० ४.१४.२२१, सं० वि० अन्त्येष्टिसंस्कार ।

यमो मृत्युरघमारो अ० ६.६३.१; पै० सं० १९.१४.१३ ।

यमो ह जातो ऋ० १.६६.८, नि० १०.२१ ।

यया गा आकरामहे ऋ० १०.१५६.२, सा० १५२८ ।

यया द्यौर्यया पृथिवी अ० १०.१०.४; पै० सं० १६.१०७.४ ।

यया रध्रं पारय० ऋ० २.३४.१५ ।

ययो रथः सत्य० अ० ४.२९.७; पै० सं० ४.३८.७ ।

ययोरधि प्र यज्ञा ऋ० ८.१०.४ ।

ययोरभ्यध्व उत यद् अ० ४.२८.२; पै० सं० ४.३७.२ ।

ययोरोजसा स्कभिता अ० ७.२५.१; पै० सं० २०.१४.१०; पै० सं० ४.१४.७७ ।

ययोर्वधान्नापपद्यते अ० ४.२८.५; पै० सं० ४.३७.३ ।

ययोः संख्याता अ० ४.२५.२; पै० सं० ४.३४.२ ।

यवंयवं नो अन्धसा ऋ० ९.५५.१; सा० ९७५ ।

यवं वृकेणाश्विना ऋ० १.११७.२१, नि० ६.२६; पं० वि० ५८ ।

यवानां भागोऽस्ययवानां य० १४.२६; श० ब्रा० ८.४.२.१०–१२; कपि० ३२.१६; ३६.३ ।

यवानो यतिस्वभिः अ० २०.१३०.७ ।

यशसं मेन्द्रो मघवान् अ० ६.५८.१; पै० सं० १९.१०.६ ।

यशा इन्द्रो यशा अ० ६.३९.३,५८.३; पै० सं० १९.८.८ ।

यशा यासि प्रदिशो अ० १३.१.३८; पै० सं० १८.१८.८ ।

यशो मा द्यावा सा० ६११; सा० ब्रा० ३.२.६.१ ।

यशो हविर्वर्धताम् अ० ६.३९.१; पै० सं० १९.८.७ ।

यश्च कवची यश्च अ० ११.१०.२२ ।

यश्चकार न शशाक अ० ४.१८.६, ५.३१.११ ।

यश्चकार स निष्करत् अ० २.९.५; पै० सं० २.१०.२ ।

यश्च गां पदा अ० १३.१.५६ ।

यश्च पणि रघुजिष्ठ्यो अ० २०.१२८.४ ।

यश्चर्षणिप्रो वृषभः अ० ४.२४.३ ।

यश्च सापत्नः शपथो अ० २.७.२ ।

यश्चिकेत स सुक्रतुः ऋ० ५.६५.१ ।

यश्चिदापो महिना ऋ० १०.१२१.८, य० २७.२६, ३२.७, तै० सं० ४.१.८.२०, का० सं० २६.३६ ।

यश्चिद्धि त इत्था ऋ० १.२४.४; ऐ० ब्रा० ७.३.५ ।

यश्चिद्धि त्वा बहुभ्यः ऋ० १.८४.९, सा० १३४२, अ० २०.६३.६ ।

यस्त आस्यत् पञ्च० अ० ४.६.४ ।

यस्त इध्मं जभरत्सि ऋ० ४.२.६, तै० आ० ६.२.१ ।

यस्त इन्द्र ऋ० ८.६.१६ ।

यस्त इन्द्र नवीयसीं सा० ८८४ ।

यस्ते भरादन्नियते ऋ० ४.२.७।

यस्ते मज्जा यदस्थि अ० १०.६.१८।

यस्ते मदः पृतनाषाळ् ऋ० ६.१९.७।

यस्ते मदो युज्यश्चारुः ऋ० ७.२२.२, सा० ९२८, अ० २०.११७.२।

यस्ते मदोऽवकेशो अ० ६.३०.२; पै० सं० १९.२४.६।

यस्ते मदो वरेण्यस्तेना ऋ० ९.६१.१९, सा० ४७०,८१५; तां० ब्रा० १४.५.१; ष० ब्रा० १४.१५; दे० ब्रा० ५.१.१६।

यस्ते मदो वरेण्यो य ऋ० ८.४६.८।

यस्ते मन्योऽविधद्वज्र ऋ० १०.८३.१, अ० ४.३२.१; पै० सं० ४.३२.१।

यस्ते यज्ञेन समिधा ऋ० ६.५.५।

यस्ते रथो मनसा ऋ० १०.११२.२।

यस्ते रसः सम्भृतः य० १९.३३; काठ० सं० ३८.१०; श० ब्रा० १२.८.१.४; मै० सं० ३.११.५८; का० सं० २१.३५।

यस्ते रेवां अदाशुरिः ऋ० ८.४५.१५।

यस्ते शृङ्गवृषो ऋ० ८.१७.१३, सा० ७२७, अ० २०.५.७, तै० ब्रा० २.४.५.१।

यस्ते शोकाय तन्वं अ० ५.१.३।

यस्ते सर्पो वृश्चिकः अ० १२.१.४६।

यस्ते साधिष्ठोऽवस ऋ० ५.३५.१।

यस्ते साधिष्ठोऽवसे ते स्या ऋ० ८.५३.७।

यस्ते सूनो सहसो ऋ० ६.१३.४।

यस्ते स्तनः शशयो ऋ० १.१६४.४९, य० ३८.५, अ० ७.१०.१ तै० आ० ४.८.२, श० ब्रा० १४.९.४.२८; ऐ० ब्रा० १.४.५ सं० वि० जातकर्म संस्कार, मै० सं० ४.९.१०२; ४.१४.४५; का० सं० ३८.५; श० ब्रा० १४.२.१.१५; ९.४.२८।

यस्ते हन्ति पतयन्त ऋ० १०.१६२.३; अ० २०.९६.१३।

यस्ते हवं विवदत् अ० ३.३.६।

यस्त्वद्धोता पूर्वो ऋ० ३.१७.५, नि० ५.३।

यस्त्वा कृत्याभिः अ० ८.५.१५; पै० सं० १६.२८.५।

यस्त्वा देवि सरस्वति ऋ० ६.६१.५।

यस्त्वा दोषा ऋ० ४.२.८।

यस्त्वा पिबति जीवति अ० ५.५.२; पै० सं० ६.४.२।

यस्त्वा भ्राता ऋ० १०.१६२.५, अ० २०.९६.१५।

यस्त्वामग्न इन्धते ऋ० ४.१२.१।

यस्त्वामग्ने हविष्पतिः ऋ० १.१२.८, सा० ८४५।

यस्त्वा शाले निमिमाय अ० ९.३.११।

यस्त्वा शाले प्रतिगृह्णाति अ० ९.३.९।

यस्त्वा स्वपन्तीं त्सरति अ० ८.६.८।

यस्त्वा स्वप्नेन ऋ० १०.१६२.६, अ० २०.९६.१६।

यस्त्वा स्वप्ने निपद्यते अ० ८.६.७।

यस्त्वा स्वश्वः ऋ० ४.४.१०, तै० सं० १.२.१४.१०; मै० सं० ४.११.१।

यस्त्वा हृदा ऋ० ५.४.१०, तै० सं० १.४.४६.१।

यस्त्वोवाच परेहि अ० १०.१.७; पै० सं० १६.३५.७।

यस्पतिर्वार्याणामसि ऋ० १०.२४.३।

यस्मा अन्ये दश ऋ० ८.३.२३।

यस्मा अरासत ऋ० ८.४७.४।

यस्मा अर्कं सप्तशीर्षाणम् ऋ० ८.५१.४।

यस्यास्ते घोर आसन् य० १२.६४; श० ब्रा० ७.२.१.११; कपि० २५.३।

यस्यां कृष्णमरुणं अ० १२.१.५२; पै० सं० १७.५.१०।

यस्यां गायन्ति अ० १२.१.४१; पै०सं० १७.५.१।

यस्यां पूर्वे पूर्वजना अ० १२.१.५; पै० सं० १७.१.४; मै० सं० ४.१४.१५६।

यस्यां पूर्वे भूतकृतः अ० १२.१.३९; पै० सं० १७.४.१०।

यस्यां वृक्षां वानस्पत्या अ० १२.१.२७; पै० सं० १७.३.८।

यस्यां वेदि परि० अ० १२.१.१३।

यस्यां सदोहविर्धाने अ० १२.१.३८।

यस्यां समुद्र उत अ० १२.१ ३।

यस्याः पुरो देवकृताः अ० १२.१.४३।

यस्येक्ष्वाकुरुप व्रते ऋ० १०.६०.४।

यस्येदमा रजो युजस्तुजे सा० ५८८; अ० ६.३३.१; सा० ब्रा० ३.२.३.६; पै० सं० १९.२८.१।

यस्येदं प्रदिशि यद् अ० ४.२३.७, ७.२५.२; पै० सं० ४.३३.७।

यस्येमे हिमवन्तो ऋ० १०.१२१.४, य० २५.१२, अ० ४.२५, तै० सं० ४.१.८.१६; काठ० सं० ४०.६; का० सं० २७.१६।

यस्यै ते यज्ञियो गर्भो य० ८.२९; श० ब्रा० ४.५.२.१०; सं० वि० गर्भाधान संस्कार।

यस्योरुषु त्रिषु अ० ७.२६.३; पै० सं० २०.६.१०।

यस्यौषधीः प्रसर्पथा ऋ० १०.९७.१२, य० १२.८६; कपि० २५.४।

यं ककुभो सर्प निबारय ऋ० ८.४१.४, ऐ० ब्रा० ६.४.८।

यं कुमार नवं रथं ऋ० १०.१३५.३।

यं कुमार प्रावर्तयो ऋ० १०.१३५.४।

यं क्रन्दसी अवसा ऋ० १०.१२१.६, य० ३२.७, अ० ४.२.३; तै० सं० ४.१.८.१७; का० सं० २६.३४।

यं क्रन्दसी संयती ऋ० २.१२.८, अ० २०.३४.८।

यं ग्राममाविशत अ० ४.३६.८।

यं जनासो हविष्मन्तो ऋ० ८.७४.२ सा० १५६५।

यं ते देवी निर्ऋतिः य० १२.६५; श० ब्रा० ७.२.१.१५–१७; मै० सं० २.७.१४८; कपि० २५.३; ३२.४।

यं ते मन्थं यमोदनं अ० १८.४.४२।

यं ते श्येनश्चारुमवृकं ऋ० १०.१४४.५।

यं ते श्येनः पदाभरत् ऋ० ८.८२.९।

यं त्रायध्व इदमिद ऋ० ७.५९.१।

यं त्वमग्ने समदहः ऋ० १०.१६.१३, अ० १८.३.६; तै० आ० ६.४.१।

यं त्वं रथमिन्द्र मेधसा ऋ० १.१२९.१।

यं त्वं विप्र मेधसातौ ऋ० ८.७१.५।

यं त्वा गोपवनो गिरा ऋ० ८.७४.११, सा० २९।

यं त्वा जनास इन्धते ऋ० ८.४३.२७।

यं त्वा जनास ईळते ऋ० ८.७४.१२।

यं त्वा जनासो अभि संचरन्ति ऋ० १०.४.२, नि० ५.१।

यं त्वा देवा दधिरे ऋ० १०.४६.१०।

यं त्वा देवापिः शुशुचानो ऋ० १०.९८.८।

यं त्वा देवासो मनवे ऋ० १.३६.१०।

यं त्वा द्यावापृथिवी ऋ० १०.२.७।

यः परुषः पारुषेयो अ० ५.२२.३ ।

यः पवमानीरध्येति ऋ० ६.६७.३१, सा० १२६८ ।

यः पर्वतान्व्यदधाद् अ० २०.१२८.१४ ।

यः पुष्पिणीश्च ऋ० २.१३.७ ।

यः पूर्व्याय वेधसे ऋ० १.१५६.२, तै० ब्रा० २.४.३.६ ।

यः पृथिवीं बृहस्पतिं अ० १५.१०.६ ।

यः पृथिवीं व्यथमानाम् ऋ० २.१२.२, अ० २०.३४.२ ।

यः पौरुषेयेण क्रविषा ऋ० १०.८७.१६, अ० ८.३.१५ ।

यः प्रथमः कर्म० अ० ४.२४.६ ।

यः प्रथमः प्रवत० अ० ६.२८.३ ।

यः प्राणतो निमिषतो ऋ० १०.१२१.३, य० २३.३, २५.११, अ० ४.२.२, तै० सं० ४.१.८.१४, ७.५.१६.१ मै० सं० २.१३.१११; ३.१२.२०; काठ० सं० ४.१२६; ४०.२; श० ब्रा० १३.५.३.७ ।

यः प्राणदः प्राण० अ० ४.३५.५ ।

यः प्राणेन द्यावापृथिवी अ० १३.३.४ ।

यः शक्रो मृक्षो अश्व्यः ऋ० ८.६६.३ ।

यः शग्मस्तुविशग्म ते ऋ० ६.४४.२ ।

यः शतौदनां पचति अ० १०.६.४ ।

यः शम्बरं पर्वतेषु ऋ० २.१२.११, अ० २०.३४.१२ ।

यः शश्वतो मह्येनो ऋ० २.१२.१०, अ० २०.३४.१० ।

यः शुक्र इव सूर्यो ऋ० १.४३.५ ।

यः शूरेभिर्हव्यो ऋ० १.१०१.६ ।

यः श्रमात् तपसो अ० १०.७.३६ ।

यः श्वेतां अधिनिर्णिजः ऋ० ८.४१.१० ।

यः सत्राहा विचर्षणि ऋ० ६.४६.३, सा० २८६ ।

यः सपत्नो योऽसपत्नो अ० १.१६.४ ।

यः सप्तरश्मिर्वृषभः ऋ० २.१२.१२, अ० २०.३४.१३ ।

यः सभेयो विदथ्यः अ० २०.१२८.१ ।

यः समाम्यो वरुणो अ० ४.१६.८ ।

यः समिधा य आहुति ऋ० ८.१६.५ ।

यः सहमानश्चरसि अ० ३.६.४ ।

यः संग्रामान्नयति अ० ४.२४.७ ।

यः संस्थे चिच्छतक्रतुः ऋ० ८.३२.११ ।

यः सुनीथो ददाशुषे ऋ० २.८.२ ।

यः सुन्वते पचते ऋ० २.१२.१५, अ० २०.३४.१८ ।

यः सुन्वन्तमवति यः ऋ० २.१२.१४, अ० २०.३४.१५ ।

यः सुषव्यः सुदक्षिणः ऋ० ८.३३.५ ।

यः सृबिन्दमनर्शनिं ऋ० ८.३२.२ ।

यः सोमः कलशेष्वा ऋ० ६.१२.५, सा० १२०० ।

यः सोमकामो हर्यश्वः अ० २०.३४.१७ ।

यः सोम सख्ये तव ऋ० १.६१.१४ ।

यः सोमे अन्तर्यो अ० ३.२१.२ ।

यः स्तीहितीषु पूर्व्यः ऋ० १.७४.२, सा० १३८० ।

यः स्माारुन्धानो ऋ० ४.३८.४ ।

या अकृन्तन्नवयन् अ० १४.१.४५; पै० सं० १८.५.२ ।

या अक्षेषु प्रमोदन्ते अ० ४.३८.४ ।

या आपो दिव्याः ऋ० ७.४६.२, अ० ४.८.५; काठ० सं० ३७.१६; पै० सं० ४.२.६ ।

या आपो याश्च अ० ११.८.३०; पै० सं० १६.८८.१ ।

या इन्द्र प्रस्वस्त्वासा ऋ० ८.६.२०, ऐ० आ० ५.२.४ ।

या इन्द्र भुज ऋ० ८.६७.१, सा० २५४, अ० २०.५५.२ ।

या इषवो यातुधानानां य० १३.७; श० ब्रा० ७.४.१.२६; तै० सं० ४.२.८.६ ।

या एव यज्ञ आपः अ० ६.६.५ ।

या ओषधयः सोमराज्ञीः ऋ० १०.६७.१८; १६; य० १२.६२; अ० ६.६६.१; पै० सं० १३.१३.६; १६.१२.४; तै० सं० ४.२.६.१६ ।

या ओषधयो या नद्यः अ० १४.२.७; पै० सं० १८.७.८ ।

या ओषधीः पूर्वा ऋ० १०.६७.१, य० १२.७५, तै० सं० ४.२.६.१, नि० ६.२६, कपि० २५.४; श० ब्रा० ७.२.४.२६ ।

या ओषधीः सोम० ऋ० १०.६७.१८, य० १२.६२,अ० ६.६६.१, तै० सं० ४.२.६.४; १६; काठ० सं० १३.७६; कपि० २५.४ ।

या ओषधीः सोमराज्ञी० ऋ० १०.६७.१६, य० १२.६३, तै० सं० ४.२.६.४; १६; कपि० २५.४ ।

या क्लन्दास्तमिषी० अ० २.२.५ ।

या गुङ्गूर्या सिनी० ऋ० २.३२.८ ।

या गुदा अनुसर्पन्ति अ० ६.८.१७; पै० सं० १६.७५.७ ।

या गुल्म्यस्त्रिपञ्चाशीः अ० १६.३४.२ ।

या गोमतीरुषसः ऋ० १.१३३.१८ ।

या गौर्वर्तनिं पर्येति ऋ० १०.६५.६; ऋ० भू० पृथिव्यादिलोकभ्रमणविषय ।

या ग्रैव्या अपचितो अ० ७.७६.२ ।

या जामयो वृष्ण ऋ० ३.५७.३ ।

यात इन्द्र तनूरप्सु अ० १७.१.१३ ।

यात ऊतिरमित्रहन् ऋ० ६.४५.१४; ऐ० ब्रा० ४.५.४ ।

यात ऊतिरवमा ऋ० ६.२५.१ ।

या तं छर्दिष्पा ऋ० ८.६.११, अ० २०.१४१.१ ।

याति देवः प्रवता ऋ० १.३५.३ ।

यातुधानस्य सोमपः अ० १.८.३; पै० सं० ४.४.६ ।

यातुधाना निर्ऋ़ति अ० ७.७०.२; पै० स० १६.२७.२ ।

या ते अग्ने पर्वतस्येव ऋ० ३.५७.६ ।

या ते अग्नेऽयः शया य० ५.८; काठ० सं० २.४६; श० ब्रा० ३.४.४.२३–२५, गो० ब्रा० उ० २.७.३६१; कपि० २.३; ३८.२ ।

या ते अष्ट्रा गोओपशा ऋ० ६.५३.६ ।

या ते काकुत्सुकृता ऋ० ६.४१.२, तै० ब्रा० २.४.३.१३ ।

या ते जिह्वा मधुमती ऋ० ३.५७.५ ।

या ते दिद्युदवसृष्टा ऋ० ७.४६.३, नि० १०.७ ।

या ते धर्म दिव्या य० ३८.१८; का० सं० ३८.१८, श० ब्रा० १४.३.१.४; ६–८ ।

या ते धामानि दिवि ऋ० १.६१.४; तै० सं० २.३.१४.६; तै० ब्रा० २.८.३.२; मै० सं० ४.१०.७६; १४.४; कपि० २८.२; ऐ० ब्रा० १.३.२; काठ० सं० १३.५७ ।

या ते धामानि परमाणि ऋ० १०.८१.५;

य० १७.२१; तै० सं० ४.६.२.१३; मै० सं० २.१०.१६; काठ० सं० १८.१४; कपि० २८.२; आर्षाभि० २.३८ ।

या ते धामानि हविषा ऋ० १.९१.१९, य० ४.३७, तै० सं० १.२.१०.६; मै० सं० ४.१२.६६; १४.६; काठ० सं० ११.५५ ।

या ते धामान्युश्मसि य० ६.३; तै० सं० ४.१.११.६; श० ब्रा० ३.७.१.१५; कपि० २.१० ।

या ते प्राण प्रिया अ० ११.४.९; पै० सं० १६.२१.९ ।

या ते धामान्युश्मसि य० ६.३ ।

या ते भीमान्यायुधा ऋ० ९.६१.३०; सा० ७८० ।

या ते रुद्र शिवा य० १६.२, ४९; काठ० सं० १७.३४; ५५; तै० सं० ४.५.१.३; कपि० २७.१; ६ ।

या ते वसोर्वात इषुः अ० १९.५५.२; पै० सं० २०.४१.१० ।

या ते हेतिर्मीढुष्टम य० १६.११; काठ० सं० १७.४३; तै० सं० ४.५.१.१३; कपि० २७.१ ।

या त्वा दिवो ऋ० ७.६६.६ ।

या दम्पती समनसा ऋ० ८.३१.५ ।

या दस्रा सिन्धुमातरा ऋ० १.४६.२, सा० १७२९ ।

या दुर्हार्दो युवतयो अ० १४.२.२९; पै० सं० १८.९.९; सं० वि० गृहाश्रमसंस्कार ।

यादृगेव ददृशे तादृगुच्यते ऋ० ५.४४.६ ।

या देवीः पञ्चप्रदिशो अ० ११.६.२२; पै० सं० १५.१४.१० ।

या देवेषु तन्वमैरयन्त ऋ० १०.१६९.३, तै० सं० ७.४.१७.१ ।

याद्राध्यं वरुणो ऋ० २.३८.८ ।

या द्विपक्षा चतुष्पक्षा अ० ९.३.२१; पै० सं० १६.४०.८; सं० वि० गृहाश्रमसंस्कार ।

या धर्तारा रजसो ऋ० ५.६९.४ ।

या धारयन्त देवाः ऋ० ७.६६.२, तै० ब्रा० २.४.६.४ ।

या नः पीपरदश्विना ऋ० १.४६.६, अ० १९.४०.४ ।

यानसावतिसरां० अ० ५.८.७ ।

यानावह उशतो अ० ७.९७.३; पै० सं० २०.३४.३; काठ० सं० ४.७५; तै० सं० १.४.४४.६ ।

यानि कानि चिच्छान्तानि अ० १९.९.१३ ।

यानि चकार भुवनस्य अ० १६.२०.२; पै० सं० १.१.८.२ ।

यानि तेऽन्तः शिक्यानि अ० ९.३.६; पै० सं० १६.३९.६ ।

यानि त्रीणि बृहन्ति अ० ८.९.३ ।

यानि नक्षत्राणि अ० १९.८.१ ।

यानि भद्राणि बीजानि अ० ३.२३.४; पै० सं० ३.१४.४ ।

यानि स्थानानि ऋ० ७.७०.३; ऐ० ब्रा० ५.४.१ ।

यानीन्द्राग्नी चक्रथु ऋ० १.१०८.५ ।

या नु श्वेतावथो ऋ० ८.४०.८ ।

यान्त्वादिवोदुहित ऋ० ७.७७.६ ।

यान्त्राये मर्ता० ऋ० १.७३.८ ।

यान्युलूखलमुसलानि अ० ९.६.१५ ।

यान्वो नरो देव० ऋ० ३.८.६ ।

याप सर्पं विजमाना अ० १२.१.३७ ।

या रोहन्त्याङ्गिरसीः अ० ८.७.१७; पै० सं० १६.१३.६ ।

या रोहिणीर्देवत्या अ० १.२२.३; पै० सं० १.२८.३ ।

यार्णवेऽधि सलिलं अ० १२.१.८; पै० सं० १७.१.६ ।

यावङ्गिरसमवथो अ० ४.२६.३; पै० सं० ४.३८.३ ।

यावच्चतस्रः प्रदिशः अ० ३.२२.५; पै० सं० ३.१८.६ ।

यावती द्यावापृथिवी य० ३८.२६, अ० ४.६.२, ६.२.२०; तै० सं० ३.२.६.२; का० सं० ३८.२६; पै० सं० ५.८.१; २७.३; १६.७८.४ ।

यावतीनामोषधीनां अ० ८.७.२५; पै० सं० १६.१४.४ ।

यावतीर्दिशः प्रदिशो अ० ९.२.२१; पै० सं० १६.७८.५ ।

यावतीर्भृङ्गा जत्वः अ० ९.२.२२; पै० सं० १६.७८.६ ।

यावतीषु मनुष्या अ० ८.७.२६; पै० सं० १६.१४.५ ।

यावतीः कियतीः अ० ८.७.१३; पै० सं० १६.१३.३ ।

यावतीः कृत्या उप० अ० १४.२.४९; पै० सं० १८.११.६ ।

यावत्तरस्तन्वो ऋ० ७.९१.४; ऐ० ब्रा० ५.३.३ ।

यावत् तेऽभि विपश्यामि अ० १२.१.३३; पै० सं० १७.४.३ ।

यावत् सत्रसद्येन अ० ९.६.६ ।

यावदग्निष्टोमेन अ० ९.६.२ ।

यावदङ्गीनं पारस्वतं अ० ६.७२.३; पै० सं० १९.२७.१५ ।

यावदतिरात्रेण अ० ९.६.४ ।

यावदस्या गोपतिः अ० १२.४.२७; पै० सं० १७.१८.७ ।

यावदिदं भुवनं विश्व ऋ० १.१०८.२ ।

यावद् दाताभिमन० अ० ११.३.२५; पै० सं० १६.५४.११ ।

यावद् द्वादशाहेन अ० ९.६.८ ।

यावन्तो अस्याः पृथिवीं अ० १२.३.४०; पै० सं० १७.३९.१० ।

यावन्तो मा सपत्नानां अ० ७.१३.२ ।

यावन्मातरमुषसो ऋ० १०.८८.१९, नि० ७.३१ ।

यावयद्द्वेषस त्वा ऋ० ४.५२.४ ।

यावयद्द्वेषा ऋतपा ऋ० १.११३.१२ ।

यावया वृक्यं वृकं ऋ० १०.१२७.६ ।

या वशा उदकल्पयन् अ० १२.४.४१; पै० सं० १७.२०.१ ।

या वः शर्म ऋ० १.८५.१२, तै० ब्रा० २.८.५.६; मै० सं० ४.१४.१०३; २६३; तै० सं० १.५.११.१६; २.१.११.४; ३.१४.१८ ।

या वा ते सन्ति ऋ० ७.३.८ ।

यावारेभाते बहु अ० ४.२८.४; पै० सं० ४.३७.४ ।

या वां कशा मधुमति ऋ० १.२२.३, य० ७.११, तै० सं० १.४.६.१; मै० सं० १.३.२६; काठ० सं० ४.१२; कपि० ३.१; ४१.८; श० ब्रा० ४.१.५.१७ ।

या वां शतं नियुतो याः ऋ० ७.९१.६; ऐ० ब्रा० ५.३.१ ।

यास्ते पूषन्नावो ऋ० ६.५८.३, तै० ब्रा० २.५.५.५ ।

यास्ते प्रजा अमृतस्य ऋ० १.४३.६ ।

यास्ते प्राचीः प्रदिशो अ० १२.१.३१; पै० सं० १७.४.१ ।

यास्ते राके सुमतयः ऋ० २.३२.५, अ० ७.४८.२, तै० सं० ३.३.११.१६; काठ० सं० १३.८८ सं० वि० सीमन्तोन्नयनसंस्कार; पै० सं० २०.१०.६ ।

यास्ते रुहः प्ररुहोः अ० १३.१.६; पै० सं० १८.१५.६ ।

यास्ते विशस्तपसः अ० १३.१.१०, पै० सं० १०.१५.१० ।

यास्ते शतं धमनयो अ० ६.९०.२; पै० सं० १.६४.१ ।

यास्ते शिवास्तन्वः अ० ६.२.२५; पै० सं० १६.७८.७; काठ० सं० ७.६३; ७०.७४ ।

यास्ते शोचयो रन्हयो अ० १८.२.६ ।

या हस्तिनि द्वीपिनि अ० ६.३८.२; पै० सं० २.१८.२; काठ० सं० ३६.३० ।

या हृदयमुपर्षन्ति अ० ६.८.१४; पै० सं० १६.७५.४ ।

याँ आभजो मरुत ऋ० ३.३५.६ ।

याँ आऽवह उशतो देव य० ८.१६; श० ब्रा० ४.४.४.११ ।

यां कल्पयन्ति वहतौ अ० १०.१.१ ।

यां जमदग्निरखनद् अ० ६.१३७.१ ।

यां पूषन्ब्रह्मचोदनीम् ऋ० ६.५३.८ ।

यां प्रच्युतामनु० अ० ८.६.८ ।

यां ते कृत्यां कूपे अ० ५.३१.८ ।

यां ते चक्रुरमूलायां अ० ५.३१.४ ।

यां ते चक्रुरामे पात्रे अ० ४.१७.४, ५.३१.१; पै० सं० ५.२३.६ ।

यां ते चक्रुरेकशफे अ० ५.३१.३ ।

यां ते चक्रुर्गार्हपत्ये अ० ५.३१.५ ।

यां ते चक्रुः कृक० अ० ५.३१.२ ।

यां ते चक्रुः पुरुषास्थे अ० ५.३१.६ ।

यां ते चक्रुः सभायां अ० ५.३१.६ ।

यां ते चक्रुः सेनायां अ० ५.३१.७ ।

यां ते धेनुं निपृणामि अ० १८.२.३० ।

यां ते बर्हिषि यां अ० १०.१.१८ ।

यां ते रुद्र इषुं अ० ६.९०.१ ।

यां त्वा गन्धर्वो अ० ४.४.१; पै० सं० ४.५.१ ।

यां त्वदिवोदुहितुर्बुर्ध ऋ० ७.७७.६ ।'

यां त्वा देवा असृजन्त अ० १.१३.४ ।

यां त्वा पूर्वे भूतकृतः अ० ६.१३३.५ ।

यां देवा अनुतिष्ठन्ति अ० ११.१०.२७ ।

यां देवा प्रतिनन्दन्ति अ० ३.१०.२; पै० सं० १.१०४.२ ।

यां द्विपादः पक्षिणः अ० १२.१.५१; पै० सं० १७.५.६ ।

यां प्रच्युतामनु यज्ञाः अ० ८.६.८; पै० सं० १६.१८.८ ।

यां मृतायानु० अ० ५.१६.१२ ।

यां मेधां देवगणाः य० ३२.१४; का० सं० ३५.३३, आर्याभि० २.५३; स० प्र० ७ समु०; पत्र० वि० ६७; सं० वि० गृहाश्रमसंस्कार; ऋ० भू० ईश्वरस्तुतिप्रार्थनायाच० ।

यां मेधामृभवो अ० ६.१०८.३ ।

यां मे धिय मरुत ऋ० १०.६४.१२ ।

यां रक्षन्त्यस्वप्ना अ० १२.१.७ ।

याः कृत्या आङ्गीरसी अ० ८.५.६ ।

याः क्लन्दास्तमिषीचयः अ० २.५.२ ।

याः पार्श्वे उपर्षन्ति अ० ६.८.१५ ।

याः प्रवतो निवता ऋ० ७.५०.४ ।

याः फलिनीर्या ऋ० १०.९७.१५, य० १२.८९, तै० सं० ४.२.६.४; काठ० सं० १६.१६७; कपि० २५.४; मै० सं० २.७.१८० ।

याः सरूपा विरूपाः ऋ० १०.१६९.२. तै० सं० ७.४.१७.२ ।

यां सीमानं विरुजन्ति अ० ६.८.१३; पै० सं० १९.७५.३ ।

याः सुपर्णा आङ्गिरसीः अ० ८.७.२४; पै० सं० १६.१४.३ ।

याः सुबाहुः स्वंगुरिः ऋ० २.३२.७ ।

याः सूर्यो रश्मिभि० ऋ० ७.४७.४ ।

याः सेना अभीत्वरीः य० ११.७७; कपि० ३०.८; श० ब्रा० ६.६.३.१०; तै० सं० ४.१.१०.५ ।

युक्तस्ते अस्तु दक्षिण ऋ० १.८२.५ ।

युक्ता मातासीद्धुरि दक्षिणाया ऋ० १.१६४.९; अ० ९.९.९ ।

युक्तेन मनसा वयं य० ११.२; काठ० सं० १५.३४; श० ब्रा० ६.३.१.१४; मै० सं० २.७.२; तै० सं० ४.१.१.१३, ऋ० भू० उपासनाविषय ।

युक्तो ह यद्वां तौग्र्याय ऋ० १.१५८.३ ।

युक्त्वाय सविता देवान् य० ११.३; काठ० सं० १५.३५; श० ब्रा० ६.३.१.१५; मै० सं० २.७.३; ऋ० भू० उपासनाविषय ।

युङ्क्ष्वा हि केशिना हरी ऋ० १.१०.३; य० ८.३४; सा० १३४६; का० सं० ८.१४; श० ब्रा० ४.५.४.१०; तै० सं० २.६.११.१; ४.२.६.१७; कपि० २१.८; ४१.८ ।

युक्ष्वा हि त्वं रथासहा ऋ० ८.२६.२० ।

युक्ष्वा हि देव हूतमां ऋ० ८.७५.१; य० १३.३७; ३३.४; तै० सं० २.६.११.१; ४.२.९.११; ऐ० ब्रा० ५.१.१; मै० सं० २.७.२३६; ४.११.१२७; काठ० सं० ७.१०६; १२.११; २२.११; ३२.४; कपि० ३.४; श० ब्रा० ७.५.१.३३ ।

युंक्ष्वा हि वाजिनीवती ऋ० १.९२.१५, सा० १७३३ ।

युंक्ष्वा हि वृत्रहन्तम ऋ० ८.३.१७, सा० ३०१ ।

युक्ष्वा ह्यरुषी रथे ऋ० १.१४.१२ ।

युगेयुगे विदथ्यं गृणद्भ्यः ऋ० ६.८.५ ।

युङ्ध्वं ह्यरुषी रथे ऋ० ५.५६.६ ।

युजं हि मामकृथा आदिदि ऋ० ५.३०.८ ।

युजा कर्माणि जनयन् ऋ० १०.५५.८ ।

युजानो अश्वा वातस्य ऋ० १०.२२.४ ।

युजानो हरिता रथे ऋ० ६.४७.१९ ।

युजे रथं गवेषणं ऋ० ७.२३.३, अ० २०.१२.३, तै० ब्रा० २.४.१.३; मै० सं० ४.१०.१२८ ।

युजे वां ब्रह्म ऋ० १०.१३.१, य० ११.५, अ० १८.३.३९, तै०सं० ४.१.१.५; मै०सं० २.७.५; ऐ० ब्रा० १.५.३; काठ० सं० १५.३७; श० ब्रा० ६.३.१.१७; ऋ० भू० उपासनाविषय ।

युज्यमानो वैश्वदेवो अ० ९.७.२४; पै० सं० १६.१३९.२५ ।

युञ्जते मन उत ऋ० ५.८१.१, य० ५.१४, ११.४, ३७.२, तै० सं० १.२.१३.१, ४.१.१.१, तै० आ० ४.२.४; काठ० सं० २.५१; १५.३६; ऋ० भू० उपासनाविषय; कपि०

२.४; ४०.१ मै० सं० १.२.६१; ४.६.१; श० ब्रा० ३.५.३.११–१२; ६.३.१.१६; १४.१.२.८ ।

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुष ऋ० १.६.१, य० २३.५, सा० १४६८, अ० २०.२६.४, ४७.१०, ६९.६, तै० सं० ७.४.२०.१०; मै० सं० ३.१२.२२; १६.२८; का० सं० २५.५; स० प्र० ११ समु०; ऋ० भू० उपासनाविषय; श० ब्रा० १३.२.६.१; पै० सं० १६.३४.१० ।

युञ्जन्ति हरी इषिरस्य ऋ० ८.९८.९, सा० ७१२, अ० २०.१००.३ ।

युञ्जन्त्यस्य काम्या ऋ० १.६.२, य० २३.६. सा० १४६९, अ० २०.२६.५, ४७.११, ६९.१०, तै० सं० ७.४.२०.१; मै० सं० ३.१६.२९; का० सं० २५.६ ।

युञ्जाथां रासभं रथे ऋ० ८.८५.७, य० ११.१३; मै० सं० २.७.१३; काठ० सं० १६.६; कपि० २६.८; श० ब्रा० ६.३.२.३; तै० सं० ४.१.२.३; ५.१.२.३; कपि० २९.८ ।

युञ्जानः प्रथमं मनः य० ११.१; काठ० सं० १५.३३; मै० सं० २.७.१; श० ब्रा० ६.३.१.११–१३; ऋ० भू० उपासनाविषय; तै० सं० ४.१.१.१ ।

युञ्जे वाचं शतपदीं सा० १८२९; प० ब्रा० उ० १.४.१० ।

युध एकः सं सृजति अ० १०.१०.२४ ।

युधा युधमुप घेदेषि ऋ० १.५३.७, अ० २०.२१.७ ।

युधेन्द्रो मह्ना वरिवश्चकार ऋ० ३.३४.७, अ० २०.११.७ ।

युध्मँ सन्तमनर्वाणं ऋ० ८.९२.८, सा० १६४३ ।

युध्मस्य ते वृषभस्य ऋ० ३.४६.१; मै० सं० ४.१४.१९५; ऐ० ब्रा० ५.१.५ ।

युध्मो अनर्वा खजकृत्सम ऋ० ७.२०.३ ।

युनक्त सीरा वि युगा ऋ० १०.१०१.३, य० १२.६८, अ० ३.१७.२, तै० सं० ४.२.५.५; १६; नि० ५.२८; काठ० सं० १६.१४५; कपि० २५.३; श० ब्रा० ७.२.२.५; ऋ० भू० उपासनाविषय; पै० सं० २.२२.१ ।

युनक्तु देवः सविता अ० ५.२६.२; पै० सं० ९.२.२ ।

युनज्मि त उत्तरा० अ० ४.२२.५ ।

युनज्मि ते ब्रह्मणा ऋ० १.८२.६; काठ० सं० ३१.४८ ।

युयूषतः सवयसा ऋ० १.१४४.३ ।

युयोता शरुमस्मदाँ ऋ० ८.१८.११ ।

युयोप नाभिरुपरस्यायोः ऋ० १.१०४.४ ।

युवमत्यस्याव नक्षथो ऋ० १.१८०.२ ।

युवमत्रयेऽवनीताय तप्तं ऋ० १.११८.७ ।

युवमेतं चक्रथुः सिंधुषु प्लवं ऋ० १.१८२.५ ।

युवमेतानि दिवि ऋ० १.९३.५, तै० सं० २.३.१४.१, तै० ब्रा० ३.५.७.८; मै० सं० ४.१०.३६ ऐ० ब्रा० २.१.९; काठ० सं० ४.१३२ ।

युवं कण्वाय नासत्या ऋ० ८.५.२३ ।

युवं कवीष्ठः ऋ० १०.४०.६ ।

युवं चित्रं ददथुर्भोजनं ऋ० ७.७४.२, सा० १७५४; ऐ० ब्रा० ५.२.१ ।

युवं च्यवानमश्विना ऋ० १.११७.१३ ।

युवं च्यवानं जरसो ऋ० ७.७१.५ ।

युवाभ्यां मित्रावरुणो ऋ० ५.६४.४।
युवाभ्यां वाजिनीवसु ऋ० ८.५.३।
युवमिद्धचवसे पूर्व्याय ऋ० ४.४१.७।
युवामिद्युत्सु पृतनासु ऋ०७.८२.४
युवामिन्द्राग्नी वसुनो ऋ० १.१०९.५।
युवा स मारुतो गणः ऋ० ५.६१.१३।
युवा सुवासाः परिवीत ऋ० ३.८.४, तै० ब्रा० ३.६.१.३; मै० सं० ४.१३.८; ऐ० ब्रा० २.१.२; काठ० सं० १५.५५; सं० वि० उपनयनसंस्कार; वेदारम्भसंस्कार; स० प्र० ४ समु०।
युवां गोतमः पुरुमीळहो ऋ० १.१८३.५।
युवां चिद्धि ष्माश्विनावनु ऋ० १.१८०.८।
युवां देवास्त्रय ऋ० ८.५७.२।
युवां नरा पश्यमानास ऋ० ७.८३.१।
युवां पूषेवाश्विना ऋ० १.१८१.९।
युवां मृगेव वारणा ऋ० १०.४०.४।
युवां यज्ञैः प्रथमा ऋ० १.१५१.८।
युवां स्तोमेभिर्देवयन्तो ऋ० १.१३९.३।
युवां ह घोषा पर्यश्विनायती ऋ० १०.४०.५।
युवां हवन्त उभयास ऋ० ७.८३.६।
युवोः श्रियं परि योषा० ऋ० ७.६९.४, तै० ब्रा० २.८.७.८, नि० ६.४।
युवोरत्रिश्चिकेतति ऋ० ५.७३.६।
युवो रथस्य परि ऋ० ८.२२.४।
युवोरश्विना वपुषे ऋ० १.११९.५।
युवो राजान्सि सुयमासो ऋ० १.१८०.१।
युवो राष्ट्रं बृहदिन्वतिद्यौः ऋ० ७.८४.२।
युवोरुषा अनु श्रियं ऋ० १.४६.१४।
युवोरुषू रथं हुवे ऋ० ८.२६.१।
युवोर्ऋतं रोदसी ऋ० ३.५४.३।
युवोर्दानाय सुभरा ऋ० १.११२.२।
युवोर्यदि सख्यायास्मे ऋ० १०.६१.२५।
युवोर्हि मातादितिः ऋ० १०.१३२.६।
युष्मा इन्द्रोऽवृणीत य० १.१३; श० ब्रा० १.१.३.८–१२; कपि० १. ;११;४.७,१०।
युष्माकं देवा अवसाहनि ऋ० ७.५९.२।
युष्माकं बुध्ने अपां ऋ० १०.७७.४।
युष्माकं स्मा रथां ऋ० ५.५३.५।
युष्मादत्तस्य मरुतो ऋ० ५.५४.१३।
युष्मां उ नक्तं ऋ० ८.७.६।
युष्मे देवा अपि ष्मसि ऋ० ८.४७.८।
युष्मेषितो मरुतो ऋ० १.३९.८।
युष्मोतो विप्रो मरुतः ऋ० ७.५८.४।
यून ऊ षु नविष्ठया ऋ० ८.२०.१९।
यूपव्रस्का उत ये ऋ० १.१६२.६, य० २५.२९, तै० सं० ४.६.८; मै० सं० ३.१६.७, का० सं० २७.३३।
यूयमग्ने शंतमाभिः अ० १८.४.१०।
यूयमस्मभ्यं धिषणाभ्यः ऋ० ४.३६.८।
यूयमस्मान्नयत वस्यो ऋ० ५.५५.१०; काठ० सं० ८.७७।
यूयमुग्रा मरुतः अ० ३.१.२,५.२१.११,१३.१.३; पै० सं० ३.६.२; १८.१५.३।
यूयं गावो मेदयथा कृशं ऋ० ६.२८.६, अ० ४.२१.६; तै० ब्रा० २.८८.१२।
यूयं तत्सत्यशवस ऋ० १.८.६.९।
यूयं देवाः प्रमतिर्यूय ऋ० २.२९.२।
यूयं धूर्षु प्रयुजो न ऋ० १०.७७.५।
यूयं न उग्रा मरुतः ऋ० १.१६६.६।
यूयं नः प्रवतो अ० १.२६.३; पै० सं० १९.३.७।
यूयं मर्तं विपन्यवः ऋ० ५.६१.१५।

यूयं रयिं मरुत ऋ० ५.५४.१४।

यूयं राजानः कञ्चिच्चर्षणि ऋ० ८.१९.३५।

यूयं राजानमिर्यं जनाय ऋ० ५.५८.४।

यूयं विश्व परिपाथ ऋ० १०.१२६.४।

यूयं ह रत्न मघवत्सु ऋ० ७.३७.२।

यूयं हि देवीर्ऋतुयुग्भिरश्वैः ४.५१.५।

यूयं हि ष्ठा सुदानव (०/ अधा चिद्) ऋ० ८.८३.९।

यूयं हि ष्ठा सुदानव (०/ कर्ता) ऋ० ६.५१.१५।

यूयं हि ष्ठा सुदानवो रुद्रा ऋ० ८.७.१२; ऐ० ब्रा० ५.१.४।

ये अग्नयो अप्स्व० अ० ३.२१.१; गो० ब्रा० उ० २.१२।

ये अग्नयो न शोशुचन्निधाना ऋ० ६.६६.२।

ये अग्निजा ओषधिजा अ० १०४.२३; पै० सं० १६.१७.५।

ये अग्निदग्धा ये अनग्निदग्धा ऋ० १०.१५.१४, य० १९.६०, अ० १८.२.३५।

ये अग्निष्वात्ता य० १९.६०; का० सं० २१.६२; ऋ० भू० पञ्चमहायज्ञविषय।

ये अग्ने चन्द्र ते गिरः ऋ० ५.१०.४।

ये अग्ने नेरयन्ति ते ऋ० ५.२०.२।

ये अग्नेः परि जज्ञिरे ऋ० १०.६२.६।

ये अग्रवः शशमानाः अ० १८.२.४७।

ये अङ्गानि मदयन्ति अ० ९.८.१९; पै०सं० १६.१५.९।

ये अञ्जिषु ये वाशीषु ऋ० ५.५३.४।

ये अत्रयो अङ्गिरसो अ० १८.३.२०।

ये अन्ता यावतीः अ० १४.२.५१; पै० सं० १८.११.१०।

ये अपीषन् ये अदि० अ० ४.६.७।

ये अमृतं विभृथो अ० ४.२६.४।

ये अम्नो जातान् अ० ८.६.१९; पै० सं० १६.८०.१०।

ये अर्वाङ् मध्य अ० १०.८.१७; पै०सं० १६.१०३.८०।

ये अर्वाञ्चस्तां ऋ० १.१६४.१९, अ० ९.९.१९; १४.१९. पै० सं० १६.६७.९।

ये अश्विना ये पितरा ऋ० ४.३४.९।

ये अस्या ये अङ्ग्याः १.१९१.७।

ये उस्रिया बिभृथो अ० ४.२६.५; पै० सं० ४.३६.४।

ये ऋष्वा ऋष्टिविद्युतः ऋ० ५.५२.१३।

ये कीलालेन तर्पय० अ० ४.२६.६, २७.५; पै० सं० ४.३५.५; ३६.५।

ये कुकुन्धाः कुकूरभाः अ० ८.६.११।

ये के च ज्मा महिनो ऋ० ६.५२.१५; काठ० सं० १३.६५।

ये क्रिमयः पर्वतेषु अ० २.३१.५; पै० सं० २.१५.५।

ये क्रिमयः शितिकक्षा अ० ५.२३.५; पै० सं० ७.२.५।

ये गन्धर्वा अप्सरसो अ० १२.१.५०, पै० सं० १७.५.८।

ये गर्भा अवपद्यन्तो अ० ५.१७.७।

ये गव्यता मनसा शत्रुमाद ऋ० ६.४६.१०, अ० २०.८३.२; ऐ० ब्रा० ५.१.१; ४.१।

ये गोपतिं पराणीय अ० १२.४.५२; पै० सं० १७.२०.१२.।

ये गोमन्तं वाजवन्तं सुवीरं ऋ० ४.३४.१०।

ये ग्रामा यदरण्यं अ० १२.१.५६; पै० सं० १७.६.४।

१०.१७; ऐ० ब्रा० ५.४.२; ऋ० भू० वेद-विषयविचार।

येऽत्र पितरः पितरो अ० १८.४.८६।

ये त्रयः कालकाञ्जा अ० ६.८०.२; पै० सं० १९.१६.१४।

ये त्रिषप्ताः परियन्ति अ० १.१.१; पै० सं० १.६.१; सं० वि० स्वस्तिवाचन।

ये त्रिंशन्ति त्रयस्परो ऋ० ८.२८.१।

ये त्वा कृत्वालेभिरे अ० १०.१.९; पै० सं० १६.३५.९।

ये त्वा देवोस्रिकं मन्ये ऋ० १.१९०.५, नि० ४.२५।

ये त्वामिन्द्र न तुष्टवुः ऋ० ८.६.१२, सा० १५०२, अ० २०.११५.३।

ये त्वा श्वेता अजै० अ० २०.१२८.१६।

ये त्वाहिहत्ये मघवन् ऋ० ३.४७.४, य० ३३.६३, ऐ० ब्रा० ३.२.९;२०; का० सं० ३२.६३।

ये दक्षिणतो जुह्वति अ० ४.४०.२।

ये दस्यवः पितृषु अ० १८.२.२८।

येदं पूर्वागन् रशना० अ० १४.२.७४।

ये दिवि पुण्या लोकाः अ० १५.१६.६।

ये दिशामन्तर्देशेभ्यो अ० ४.४०.८।

ये देवा अग्निनेत्राः य० ९.३६।

ये देवा अन्तरिक्ष अ० १९.२७.१२; पै० सं० १०.८.२।

ये देवा दिविषदो अ० १०.९.१२, ११.६.१२; पै० सं० १५.१४.७।

ये देवा दिविष्ठये अ० १.३०.३; पै० सं० १५.२२.४।

ये देवा दिव्येकादश अ० १९.२७.११; पै० सं० १०.८.१; काठ० सं० ४.२३; तै० सं० १.४.१०.१; ६.४.११.३।

ये देवा देवानां य० १७.१३, काठ० सं० १७.८०; मै० सं० २.१०.११; श० ब्रा० ९.२.१.१४; तै० सं० ४.६.१.१८; कपि० २८.१।

ये देवा देवेष्वधि य० १७.१४; काठ० सं० १७.८१; श० ब्रा० ९.२.१.१५; तै० सं० ४.६.१.१९; कपि० २८.१।

ये देवानामृत्विजो अ० १९.११.५, ५८.६; पै० सं० २.५७.३; १३.८.१५।

ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां ऋ० ७.३५.१५, अ० १९.११.५; काठ० सं० १७.८०; सं० वि० स्वस्तिवाचन।

ये देवा राष्ट्रभृतो अ० १३.१.३५।

ये देवास इह स्थन विश्वे ऋ० ८.३०.४।

ये देवासो अभवता सुकृत्या ऋ० ४.३५.८।

ये देवासो दिव्येकादश ऋ० १.१३९.११, य० ७.१९, तै० सं० १.४.१०.१; ६.४.११.३; ऐ० ब्रा० ५.२.७; कपि० ३.४; श० ब्रा० ४.२.२.९।

ये देवास्तेन हासन्ते अ० ४.३६.५।

ये देवाः पृथिव्यां अ० १९.२७.१३।

ये द्रप्सा इव रोदसी ऋ० ८.७.१६।

ये३ऽधस्ताज्जुह्वति अ० ४.४०.५।

ये धीवानो रथकाराः अ० ३.५.६।

येन ऋषयस्तपसा य० १५.४९; काठ० सं० १८.१०४; मै० सं० २.१२.१६; श० ब्रा० ८.६.३.१५; तै० सं० ४.७.१३.६।

येन ऋषयो बलम० अ० ४.२३.५।

येन कर्माण्यपसो य० ३४.२; स०प्र० ७ समु; सं० वि० शान्तिकरण।

येन कृशं वाजयन्ति अ० ६.१०१.२।

येन चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमा ऋ० ८.१९.१६।

येन ज्योतींष्यायवे ऋ० ८.१५.५, सा० ८८१; अ० २०.६१.२।

येन तोकाय तनयाय ऋ० ५.५३.१३।

ये नदीनां संस्रवन्ति अ० १.१५.३।

येन दीर्घं मरुतः ऋ० १.१६६.१४।

येन देवं सवितारं अ० १९.२४.१, पै० सं० १५.५.८।

येन देवा अमृतम० अ० ४.२३.६; पै० सं० ४.३३.६।

येन देवा असुराणां अ० ६.७.३; पै० सं० १९.३.१२।

येन देवा असुरान् अ० ९.२.१७; पै० सं० १६.७७.६।

येन देवा ज्योतिषा अ० ११.१.३७; पै० सं० ३.१८.४; १७.९२.७; १९.४०.१४।

येन देवा वियन्ति अ० ३.३०.४; पै० सं० ५.१९.४; सं० वि० गृहाश्रमसंस्कार।

येन देवाः पवित्रे सा० १३०२।

येन देवाः स्वरा० अ० ४.११.६; पै० सं० ३.२५.६।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी ऋ० १०.१२१.५, य० ३२.६, अ० ४.२.४, तै० सं० ४.१.८.१८; मै० सं० २.१३.११४; काठ० सं० ४०.४; का० सं० २९.३३; सं० वि० ईश्वरस्तुति-प्रार्थना०।

येन धनेन प्रपणं अ० ३.१५.५, ६।

येन महानघ्न्या अ० १४.१.३६।

येन मानासश्चितयन्त ऋ० १.१७१.५।

येन मृतं स्नपयन्ति अ० ५.१९.१४।

येन वहसि सहस्रं य० १५.५५, १८.६२; काठ० सं० १८.११०; ४०.१०५; श० ब्रा० ८.६.३.२४; ९.५.१.४७, मै० सं० २.१२.१३; कपि० २९.६।

येन वंसाम पृतनासु ऋ० ८.६०.१२।

येन वृक्षां अभ्यभवो अ० ६.१२९.२।

येन वृद्धो न शवसा ऋ० ६.४४.३।

येन वेहद् बभूविथ अ० ३.२३.१।

येन सिन्धुं महीरपो ऋ० ८.१२.३, अ० २०.६३.९।

येन सूर्य ज्योतिषा ऋ० १०.३७.४।

येन सूर्यां सावित्रीं अ० ६.८२.२; पै० सं० १९.१७.५।

येन सोम साहन्त्या० अ० ६.७.२।

येन सोमादितिः अ० ६.७.१; पै० सं० ९.२.७।

येन हस्ती वर्चसा अ० ३.२२.३; पै० सं० ३.१८.४।

ये नः पितुः पितरो अ० १८.२.४९, ३.४६, ५९।

ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासो ऋ० १०.१५.८, य० १९.५१, अ० १८.३.४६; ऋ० भू० पञ्चमहायज्ञविषय; ल० प० वि० २५६।

ये नः सपत्ना अप ते ऋ० १०.१२८.९, य० ३४.४६, अ० ५.३.१०, तै० सं० ४.७.१४.९; काठ०सं० ४०.७९; का० सं० ३३.३४।

ये नाकस्याधि रोचने ऋ० १.१९.६।

येनाग्निरस्या भूम्या अ० १४.१.४८; पै० सं० १८.५.७।

येनातरन् भूतकृतो अ० ४.३५.२।

येना दशग्वमध्रिगुं ऋ० ८.१२.२, अ० २०.६३.८।

येनादित्यान् हरि अ० १३.३.१७।

८८.३; तै० सं० ३.२.८.६ ।

येभिर्वात इषितः अ० १०.८.३५; पै० सं० १८.२६.३ ।

येभिस्तिस्रः परावतो ऋ० ८.५.८ ।

येभिः पाशैः परि० अ० ६.११२.३; पै० सं० १९.३३.१० ।

येभिः सूर्यमुषसं मन्दसानः ऋ० ६.१७.५ ।

ये भूतानामधिपतयो य० १६.५९; मै० सं० २.९४८; तै० सं० ४.५.११.६ ।

येभ्यो माता मधुमत् ऋ० १०.६३.३; मै० सं० ४.१२.६; ऐ० ब्रा० ३.३.६; सं० वि० स्वस्तिवाचन ।

येभ्यो होत्रां प्रथमां ऋ० १०.६३.७; सं० वि० स्वस्तिवाचन ।

ये महो रजसो विदुः ऋ० १.१९.३ ।

ये मा क्रोधयन्ति अ० ४.३६.९ ।

येऽमावास्यां रात्रिं अ० १.१६.१ ।

ये मूर्धानः क्षितीनां ऋ० ८.६७.१३ ।

ये मृत्यव एकशतं अ० ८.२.२७; पै० सं० १६.५.८ ।

ये मे पञ्चाशतं ददुः ऋ० ५.१८.५, तै० ब्रा० २.७.५.२ ।

ये यक्ष्मासो अर्भका अ० १९.३६.३; पै० सं० २.२७.३ ।

ये यजत्रा य ईड्याः ऋ० १.१४.८ ।

ये यज्ञेन दक्षिणया ऋ० १०.६२.१; ऐ० ब्रा० ५.२.८; ऋ० भू० मुक्तिविषय ।

ये युध्यन्ते प्रधनेषु ऋ० १०.१५४.३, अ० १८.२.१७, तै० आ० ६.३.२; पै० सं० २०.४०.८; सं वि० अन्त्येष्टि संस्कार ।

ये रथिनो ये अरथा अ० ११.१०.२४ ।

ये राजानो राजकृतः अ० ३.५.७ ।

ये रात्रिमनुतिष्ठन्ति अ० १९.४८.५; पै० सं० ६.२१.५; काठ० सं० ३७.३३ ।

ये राधान्सि ददत्यश्व्या ऋ० ७.१६.१० ।

ये रूपाणि प्रति य० २.३०; श० ब्रा० २.४.२.१५ ।

ये व आपोऽपामग्नयो अ० १०.५.२१; पै० सं० १६.१२९.९ ।

ये वध्यमानमनु अ० २.३४.३ ।

ये वध्वश्चन्द्र वहतुं ऋ० १०.८५.३१, अ० १४.२.१० ।

ये वर्मिणो येऽवर्माणो अ० ११.१०.२३ ।

ये वशाया अदानाय अ० १२.४.५१ ।

ये वाजिनं परिपश्यन्ति ऋ० १.१६२.१२, य० २५.३५; तै० सं० ४.६.९.१; मै० सं० ३.१६.१२; का० सं० २७.३९ ।

ये वामी रोचने दिवो य० १३.८ ।

ये वायव इन्द्रमादनास ऋ० ७.९२.४; ऐ० ब्रा० ५.३.१ ।

ये वावृधन्त पार्थिवा ऋ० ५.५२.७ ।

येवाषासः कष्कषासः अ० ५.२३.७; पै० सं० ७.२.८ ।

ये वां दन्सांस्यश्विना ऋ० ८.९.३, अ० २०.१३९.३ ।

ये वृक्णासो अधि क्षमि ऋ० ३.८.७ ।

ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा य० १६.५८; मै० सं० २.९.४७; तै० सं० ४.५.११.५ ।

ये वो देवाः पितरो अ० १.३०.२; पै० सं० १.१४.२ ।

ये व्रीहयो यवा अ० ९.६.१४ ।

ये शालाः परि० अ० ८.६.१०; पै० सं० १६.७९.१० ।

ये शुभ्रा घोरवर्पसः ऋ० १.१९.५ ।

यो अग्निः कव्यवाहनः ऋ० १०.१६.११, य० १९.६५; काठ० सं० २१.७०; का० सं० २१.६७।

या अग्निः क्रव्यात्प्रविवेश ऋ० १०.१६.१०, अ० १२.२.७।

यो अग्निरग्नेरध्यजायत य० १३.४५; श० ब्रा० ७.५.२.२१; १२.५.२.४; मै० सं० २.७.२४३; कपि० २५.८।

यो अग्निः सप्तमानुषः ऋ० ८.३९.८।

यो अग्नीषोमा हविषा ऋ० १.९३.८, तै० ब्रा० २.८.७.९।

यो अग्नौ रुद्रो यो अ० ७.८७.१।

यो अग्रतो रोचनानां अ० ४.१०.२; पै० सं० ४.२५.३।

यो अङ्ग्यो यः कर्ण्यो अ० ६.१२७.३।

यो अत्य इव मृज्यते ऋ० ९.४३.१।

यो अदधाज्ज्योतिषि ऋ० १०.५४.६।

यो अद्य देव सूर्य अ० १३.१.५८।

यो अद्य सेन्यो वधो अ० १.२०.२, ६.९९.२।

यो अद्यस्तेन आयति अ० ४.३.५, १९.४९.६।

यो अद्रिभित्प्रथमजा ऋ० ६.७३.१, अ० २०.९०.१।

यो अध्वरेषु शन्तम ऋ० १.७७.२।

यो अनिध्मो दीदयत् ऋ० १०.३०.४, अ० १४.१.३७, नि० १०.१९।

यो अन्तरिक्षेण अ० ४.२०.९।

यो अन्धो यः पुरः सरो अ० ३.१२९.३।

यो अन्नादो अन्नपतिः अ० १३.३.७।

यो अन्येद्युरुभयद्यु० अ० ७.११६.२।

यो अपाचीने तमसि ऋ० ७.६.४।

यो अप्सु चन्द्रमा इव ऋ० ८.८२.८।

यो अप्स्वा शुचिना दैव्येन ऋ० २.३५.८।

यो अर्यो मर्तभोजनं ऋ० १.८१.६।

यो अश्वस्य दधिक्राव्णो ऋ० ४.३९.३; काठ० सं० ७.१।

यो अश्वानां यो गवां गोपति ऋ० १.१०१.४, नि० ५.१५।

यो अश्वेभिर्वहते ऋ० ८.४६.२६।

यो अस्मभ्यमराती य० ११.८०, काठ० सं० १६.७९; मै० सं० २.७.८९; तै० सं० ४.१.१०.८; कपि० ३०.८।

यो अस्मा अन्नं तृषु ऋ० १०.७९.५।

यो अस्मै घ्रंस उत वाय ऋ० ५.३४.३, नि० ६.१९।

यो अस्मै हविषाविधन् ऋ० ६.५४.४।

यो अस्मै हव्यदातिभिः ऋ० ८.२३.२१।

यो अस्मै हव्यैर्घृत ऋ० २.२६.४।

यो अस्य पारे रजसः ऋ० १०.१८७.५, अ० ६.३४.५।

यो अस्य विश्वजन्मनः अ० ११.४.२३।

यो अस्य समिधं अ० ६.७६.३।

यो अस्य सर्वजन्मनः अ० ११.४.२४।

यो अस्य स्याद् अ० १२.४.१३।

यो अस्या ऊधो अ० १२.४.१८।

यो अस्या ऋचः अ० १२.४.२८।

यो अस्याः कर्णा० अ० १२.४.६।

योगक्षेमं व आदायाहं ऋ० १०.१६६.५; नि० १०.१७।

यो गर्भमोषधीनां ऋ० ७.१०२.२, तै० ब्रा० २.४.५.६, तै० आ० १.२९.१।

यो गिरिष्वजायथा अ० ५.४.१; पै० सं० १९.८.१५।

पै० सं० २०.१७.३ ।

यो नः शश्वत्पुराविथा ऋ० ८.८०.२ ।

यो नः सनुत्य उत ऋ० २.३०.६ ।

यो नः सनुत्यो अभिदासत् ऋ० ६.५.४; काठ० सं० ३५.७४; ऐ० ब्रा० १४.२ ।

यो नः सुप्तान् जाग्रतो अ० ७.१०८.२ ।

यो नः सोमः सुशंसिनो अ० ६.६.२ ।

यो नः सोमाभिदासति अ० ६.६.३ ।

यो नः स्वो अरणो ऋ० ६.७५.१६, सा० १८७२ ।

यो नः स्वो यो अरणः अ० १.१६.३ ।

योऽनाक्ताक्षो अनभ्यक्तो अ० २०.१२८.६; गो० ब्रा० उ० ६.१२ ।

यो नार्मरं सहवसुं ऋ० २.१३.८ ।

योनिमेक आ ससाद ऋ० ८.२६.२ ।

योनिष्ट इन्द्र निषदे ऋ० १.१०४.१, नि० १.१७ ।

योनिष्ट इन्द्र सदने ऋ० ७.२४.१, सा० ३१४; सं० ब्रा० २.३ ।

यो नो अग्निर्गार्हपत्य अ० १६.३१.२ ।

यो नो अग्निः पितरो अ० १२.२.३३; पै० सं० १७.३३.४; काठ० सं० ७.५०; तै० सं० ५.७.६.२ ।

यो नो अग्ने अररिवां ऋ० १.१४७.४ ।

यो नो अग्ने दुरेव आ ऋ० ६.१६.३१ ।

यो नो अग्नेऽभिदासति ऋ० १.७६.११ ।

यो नो अश्वेषु वीरेषु अ० १२.२.१५ ।

यो नो दाता वसूनां ऋ० ८.५१.५ ।

यो नो दाता स नः पिता ऋ० ८.५२.५ ।

यो नो दास आर्यो वा ऋ० १०.३८.३ ।

यो नो दिप्सददिप्सतो अ० ४.३६.२ ।

यो नो देवः परावतः ऋ० ८.१२.६ ।

यो नो द्युवे धनमिदं अ० ७.१०६.५ ।

यो नो द्वेषत् पृथिवी अ० १२.१.१४ ।

यो नो भद्राहमकरः अ० ६.१२८.४ ।

यो नो मरुतो अभि दुर्हृणायुः ऋ० ७.५६.८; अ० ७.७७.२; तै० सं० ४.३.१३.११; मै० सं० ४.१०.११५ ।

यो नो मरुतो वृकताति ऋ० २.३४.६ ।

यो नो रसं दिप्सति ऋ० ७.१०४.१०, अ० ८.४.१० ।

यो नो वनुष्यन् सा० ३३६; आ० ब्रा० ६.३.७.२ ।

योऽन्तरिक्षे तिष्ठति अ० ११.२.२३ ।

योऽप्स्वग्निरति अ० १६.१.७ ।

यो ब्रह्मणे सुमतिमायजाते ऋ० ७.६०.११ ।

यो भानुभिर्विभावा ऋ० १०.६.२; मै० सं० ४.१४.२२१ ।

योऽभियातो निलयते अ० ११.२.१३ ।

यो भूतं च भव्यं च अ० १०.८.१; ऋ० भू० ईश्वरप्रार्थनायाचना० ।

यो भूतानामधिपतिः य० २०.३२; का० सं० २२.२० ।

यो भूयिष्ठं नासत्याभ्यां ऋ० ५.७७.४ ।

यो भोजनं च दयसे ऋ० २.१३.६ ।

यो म इति प्रवोचति ऋ० ५.२७.४ ।

यो म इमं चिदुत्मना ऋ० ८.४६.२७ ।

यो ममार प्रथमो अ० १८.३.१३ ।

यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा ऋ० ४.२.१ ।

यो मंहिष्ठो मघोनाम् ऋ० ६.४४.१; सा० ६४५; सा० ब्रा० ३.१.४.७ ।

यो मा पाकेन मनसा ऋ० ७.१०४.८, अ० ८.४.८; पै० सं० १६.६.८ ।

यो माभिच्छायमत्येषि अ० १३.१.५७ ।

यो मायातुं यातुधानेत्याह ऋ० ७.१०४.१६,

योवा उद्यन्तं नामतु॑ अ० ६.५.३५।
यो वाघते ददाति सूनुरं ऋ० १.४०.४; ऐ० ब्रा० ४.५.१।
यो वाचा विवाचो ऋ० १०.२३.५, अ० २० ७३.६।
यो वामश्विना मनसो ऋ० १.११७.२।
यो वामुरुव्यचस्तमं ऋ० ८.२६.१४।
यो वामृजवे क्रमणाय ऋ० ६.७०.३।
यो वां गर्तं मनसा ऋ० ७.६४.४।
यो वां नासत्यावृषि ऋ० ८.८.१५।
यो वां परिज्मा सुवृद् ऋ० १०.३९.१।
यो वां यज्ञेभिरावृतो ऋ० ८.२६.१३।
यो वां यज्ञैः शशमानो ऋ० १.१५१.७, नि० ६.८।
यो वां यज्ञो नासत्या ऋ० ७.७०.६।
यो वां रजांस्यश्विना ऋ० ८.७३.१३।
यो वां रथो नृपती ऋ० ७.७१.४।
यो विद्यात् ब्रह्म प्रत्यक्षं अ० ९.६.१; सं० वि० संन्याससंस्कार।
यो विद्यात् सप्त अ० १०.१०.२।
यो विद्यात् सूत्रं विततं अ० १०.८.३७।
यो विश्वचर्षणि० अ० १३.२.२६; पै० सं० १८.२३.३।
यो विश्वतः सुप्रतीकः ऋ० १.९४.७, नि० ३.११।
यो विश्वस्य जगतः ऋ० १.१०१.५; आर्याभि० १.४४।
यो विश्वा दयते ऋ० ८.१०३.६, सा० ४४, १५८३।
यो विश्वान्यभि व्रता ऋ० ८.३२.२८।
यो विश्वाभि विपश्यति (०/ सनः पर्षद्) ऋ० १०.१८७.४, अ० ६.३४.४; पै० सं० १९.४५.३।
यो विश्वाभि विपश्यति (०/ स नः पूषा) ऋ० ३.६२.९।
यो वृत्राय सिनमत्रा ऋ० २.३०.२।
यो वेतसं हिरण्ययं अ० १०.७.४१; पै० सं० १७.११.२।
यो वेदानडुहो दोहान् अ० ४.११.९; पै०सं० ३.२५.९।
यो वेदिष्ठो अव्यथिषु ऋ० ८.४.२४।
यो वेहतं मन्यमानो अ० १२.४.३८; पै० सं० १७.११.२।
यो वै कशायाः सप्त अ० ९.१.२२।
यो वै कुर्वन्तं नामतु॑ अ० ९.५.३२।
यो वै तां ब्रह्मणो अ० १०.२.२९; पै० सं० १६.६२.२।
यो वै ते विद्यादरणी अ० १०.८.२०; पै० सं० १६.१०२.७।
यो वै नैदाघं नामतु॑ अ० ९.५.३१।
यो वै पिन्वन्तं नामतु॑ अ० ९.५.३४।
यो वै संयन्तं नामतु॑ अ० ९.५.३३; पै० सं० १६.१००.६।
यो वो देवा घृतस्नुना ऋ० ६.५२.८।
यो वो वृताभ्यो अकृणोद् ऋ० १०.३०.७।
यो व्यतींरफाणयत् ऋ० ८.६९.१३, अ० २०.९२.१०; ऐ० ब्रा० ४.१.४।
यो व्यंसं जाहृषाणेन ऋ० १.१०१.२।
यो सुप्ता० जाग्रतः अ० ७.१०८.२।
यो सोम सुशंसिन अ० ६.६.२; पै० सं० १९.२.१८।
यो सोमाभिदासति ऋ० १०.१३३.५; अ० ६.६.३; पै० सं० १९.२.९।
यो३स्मान् द्वेष्टि तं अ० १६.७.५; १.६३.५ ३.२४.१–६; २५.१३;१६.५२.२;१७.२९.१७;१९.२.१३;२०.२८.६;४१.६।

रथं ये चक्रुः सुवृतं ऋ० ४.३३.८, ४.३६.२ ।
रथं वामनुगायसं ऋ० ८.५.३४ ।
रथं हिरण्यवन्धुरं इन्द्रवायू ऋ० ४.४६.४ ।
रथं हिरण्यवन्धुरं हिरण्याभीशुम् ऋ० ८.५.२८ ।
रथानां न येऽराः ऋ० १०.७८.४ ।
रथाय नावमुतनो ऋ० १.१४०.१२ ।
रथिरासो हरयो ऋ० ८.५०.८ ।
रथीतमं कपर्दिनं ऋ० ६.५५.२ ।
रथीव कशयाश्वां ऋ० ५.८३.३ ।
रथे अक्षेष्वृषभस्य अ० ६.३८.३; पै० सं० २.१८.४; काठ० सं० ३६.२६ ।
रथे तिष्ठन्नयति ऋ० ६.७५.६, य० २६.४३, तै० सं० ४.६.६.६; नि० ६.१५; मै० सं० ३.१६.३६; का० सं० ३१.२१ ।
रथेन पृथुपाजसा ऋ० ४.४६.५; ऐ० ब्रा० ५.२.१ ।
रथेष्ठायाध्वर्यवः ऋ० ८.४.१३ ।
रथो न यातः ऋ० १.१४१.८ ।
रथो यो वां त्रिवन्धुरो ऋ० ८.२२.५ ।
रदत्पथो वरुणः ऋ० ७.८७.१ ।
रपत्कविरिन्द्रार्कसातौ ऋ० १.१७४.७ ।
रपद्गन्धर्वीरप्या ऋ० १०.११.२, अ० १८.१.१९ ।
रमध्वं मे वचसे ऋ० ३.३३.५, नि० २.२५ ।
रयिर्न चित्रा सूरो ऋ० १.६६.१ ।
रयिर्न यः पितृवित्तो ऋ० १.७३.१ ।
रयिश्च मे रायश्च य० १८.१०; कपि० २८.६ ।
रयिं दिवो दुहितरो ऋ० ४.५१.१० ।
रयिं नश्चित्रमश्विनं ऋ० ६.४.१०, सा० १०५६ ।
रयिं मे पोषं सवितोत अ० ४.२५.५; पै० सं० ४.३४.५ ।
रयिं सुक्षत्रं स्वपत्यं ऋ० १.११६.१९ ।
ररे हव्यं मतिभिर्यज्ञियानां ऋ० ७.३६.६ ।
रश्मिना सत्याय सत्यं य० १५.६; श० ब्रा० ८.५.३३; कपि० २६.६ ।
रश्मिभिर्नम आभृतं अ० १३.४.२, ६ ।
रश्मीरिव यच्छतमध्वरां ऋ० ८.३५.२१ ।
रसं ते मित्रो अर्यमा ऋ० ६.६४.२४, सा० १०७८ ।
रसाय्यः पयसा पिन्व० ऋ० ६.६७.१४, सा० ८०७ ।
राकामहं सुहवां सुष्टुती ऋ० २.३२.४, अ० ७.४८.१, तै० सं० ३.३.११.१५, नि० ११.२८; मै० सं० ४.१२.१५३; काठ० सं० १३.८७; सं वि० सीमन्तोन्नयनसंस्कार; पै० सं० २०.१०.८ ।
राजन्तमध्वराणां ऋ० १.१.८, य० ३.२३, तै० सं० १.५.६.६; का० सं० ३.३१; मै० सं० १.५.२६; ल० वेदाङ्क १५३; काठ० सं० ७.४; श० ब्रा० २.३.४.२६; कपि० ५.१, ५ ।
राजन्ये दुन्दुभावा० अ० ६.३८.४ ।
राजसूयं वाजपेयं अ० ११.७.७; पै० सं० १६.८२.७ ।
राजानावनभिद्रुहा ऋ० २.४१.५, सा० ६११ ।
राजानो न प्रशस्तिभिः ऋ० ६.१०.३, सा० ११२१ ।
राजा मेधाभिरीयते ऋ० ६.६५.१६; सा० ८३३ ।
राजा राष्ट्रानां पेशो नदीनां ऋ० ७.३४.११ ।
राजा समुद्रं नद्यो ऋ० ६.८६.८ ।
राजा सिन्धूनां पवते ऋ० ६.८६.३३ ।

रुद्र जलाषभेषज अ० २.२७.६; पै० सं० २.१६.४; ५.२२.६।

रुद्रस्य मूत्रमस्य० अ० ६.४४.३; पै० सं० १६.३१.१२।

रुद्रस्य ये मीळ्हुषः ऋ० ६.६६.३।

रुद्रस्यैलबकारेभ्यो अ० ११.२.३०।

रुद्राणामेति प्रदिशा ऋ० १.१०१.७।

रुद्राः संसृज्य पृथिवीं य० ११.५४; काठ० सं० १६.५३; तै० सं० ४.१.५.७; ५.१.६.६; कपि० ३०.४; श० ब्रा० ६.५.१.७।

रुद्रो वो ग्रीवा अशरैत् अ० ६.३२.२।

रुन्द्धि दर्भ सपत्नान् अ० १६.२६.३।

रुवति भीमो वृषभः ऋ० ६.७०.७।

रुशद्वत्सा रुशती ऋ० १.११३.२, सा० १७५०, नि० २.२०।

रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव ऋ० ६.४७.१८; श० ब्रा० १४.५.५.१६; जै० ब्रा० १.४४.१।

रूपंरूपं मघवा बोभवीति ऋ० ३.५३.८; जै० ब्रा० १.४४.६; नि० १०.१८।

रूपंरूपं वयोवयः अ०१६.१.३; पै० सं० १६.४३.१४।

रुहो रुरोह रोहित अ० १३.१.४; पै० सं० १८.१५.४।

रूपेण वो रूपमभ्यागां य० ७.४५; श० ब्रा० ४.३.४.१३; तै० सं० १.४.४३.५; ६.६.१.६; कपि० ३.७.४४.४।

रेतो मूत्रं वि जहाति य० १६.७६; काठ० सं० ३८.५; का० सं० २१.७७; सं० वि० गर्भाधानसंस्कार।

रेभदत्र जनुषा पूर्वः ऋ० १०.६२.१५।

रेवतीरनाधृषः अ० ६.२१.३; पै० सं० १.३८.३।

रेवती रमध्वम् य० ३.२१, ६.८; मै० सं० १.५.२२; तै० सं० १.५.६.३; श० ब्रा० २.३.४.२६; ३.७.३.१३; ४.१; २; कपि० २.११; ५.१, ५; ४१.५, ६।

रेवतीर्नः सधमाद ऋ० १.३०.१३; सा० १५३, १०८४, अ० २०.१२२.१, तै० सं० १.७.१३;१३, २.२.१२.२६, ४.१४.१०; १२.१०३; काठ० सं० ८.६०; ऐ० ब्रा० ५.२.५, ७; ब्रा० ब्रा० ६.१.६.७; सा० ब्रा० ३.१.४.७; मै० सं० ४.१२.१०३।

रेवद्वयो दधाथे ऋ० १.१५१.६।

रेवां इन्द्रेवत स्तोता ऋ० ८.२.१३, सा० १८०४, तै० सं० २.२.१२.३०; ऐ० ब्रा० ५.२.७।

रैभ्यासीदनुदेयी ऋ० १०.८५.६, अ० १४.१.७; पै० सं० १८.१.७।

रोचसे दिवि रोचसे अ० १३.२.३० पै० १८.२३.७।

रोदसी आ वदता ऋ० १.६४.६।

रोहण्यसि रोहणी अ० ४.१२.१।

रोहिच्छ्यावा ऋ० १.१००.१६।

रोहित द्यावापृथिवी अ० १३.१.३७।

रोहितं मे पाकस्थामा ऋ० ८.३.२२।

रोहितः कालो अभवद् अ० १३.२.३६।

रोहिता यज्ञस्य जनिता अ० १३.१.१३।

रोहितेभ्यः स्वाहा अ० १६.२३.२३।

रोहितो दिवमारुहत् अ० १३.१.२६, २.२५; पै० सं० १८.१७.६; १८.२३.२।

रोहितो द्यावापृथिवी अदृंहत् अ० १३.१.७; पै० सं० १८.१६.७।

रोहितो द्यावापृथिवी जजान अ० १३.१.६; पै० सं० १८.१६.६।

रोहितो धूम्ररोहितः य० २४.२; का० सं०

वनस्पतेऽवसृजोप देवान् ऋ० ३.४.१०, ७. २.१०, य० २७.२१; अ० ५.२७.११; तै० सं० ४.१.८.११; मै० सं० २.१२.४५; पै० सं० ९.१.११; काठ० सं० १८.१०२।

वनस्पते वीड्वंगो हि भूयाः ऋ० ६.४७.२६, य० २९.५२, अ० ६.१२५.१, का० सं० ३१.२० तै० सं० ४.६.६.१५, नि० ६.७; मै० सं० ३.१६.३८; गो० ब्रा० पू० २.२१; पै० सं० १५.११.८।

वनस्पते शतवल्शो ऋ० ३.८.११, तै० सं० १.३.५.७; ६.३.३.६।

वनस्पते स्तीर्णमा अ० १२.३.३३; पै० सं० १७.३९.३।

वनिष्ठानाव गृह्यन्ति अ० २०.१३१.९।

वनीवानो मम दूतास ऋ० १०.४७.७; मै० सं० ४.१४.११०।

वने न वा यो न्यधायि ऋ० १०.२९.१, अ० २०.७६.१, नि० ६.२८, ऐ० ब्रा० ६.४.३; ऐ० आ० १.५.२; ५.३.१; गो० ब्रा० उ० ६.२।

वनेम तद्धोत्रया ऋ० १.१३९.७।

वनेम पूर्वीरयो ऋ० १.७०.१।

वनेषु जायुर्मर्तेषु ऋ० १.६७.१।

वनेषुव्यन्तरिक्षं ततान ऋ० ५.८५.२; य० ४.३१, तै० सं० १.२.८.६; ६.१.११.८; मै० सं० १२.४०; कपि० १.९;३.७;३७. ७; काठ० सं० २.३७; ४.५०; श० ब्रा० ३.३.४.७; कपि० १.९; ३.७; ३७.७।

वनोति हि सुन्वन् ऋ० १.१३३.७, अ० २०. ६७.१; ऐ० आ० ५.२.७।

वन्दस्व मारुतं गणम् ऋ० १.३८.१५।

वन्वन्नवातो अभि ऋ० ९.८९.७।

वपन्ति मरुतो मिहं ऋ० ८.७.४।

वपुर्न तच्चिकितेषु ऋ० ६.६६.१; ऐ० ब्रा० ५.२.३।

वस्रीभिः पुत्रमग्रुवो ऋ० ४.१९.९, नि० ३. २०।

वयमग्ने अर्वता ऋ० २.२.१०।

वयमग्ने वनुयाम ऋ० ५ ३.६।

वयमद्येन्द्रस्य प्रेष्ठा ऋ० १.१६७.१०।

वयमिद्वः सुदानवः ऋ० ८.८३.६।

वयमिन्द्र त्वायवः सखित्वं ऋ० १०.१३३.६।

वयमिन्द्र त्वायवो ऋ० ७.३१.४, सा० १३२; अ० २०.१८.४।

वयमिन्द्र त्वायवो हविष्मन्तो ऋ० ३.४१.७, अ० २०.२३.७।

वयमिन्द्र त्वे सचा ऋ० ४.३२.४।

वयमु त्वा गृहपते ऋ० ६.१५.१९, तै० ब्रा० ३.५.१२.१; मै० सं० ४.१४.२१०।

वयमु त्वा तदिदर्था ऋ० ८.२.१६, सा० १५७. ७१९, अ० २०.१८.१; तां० ब्रा० ९.२.५।

वयमु त्वा दिवा ऋ० ८.६४.६।

वयमु त्वा पथस्पते ऋ० ६.५३.१, तै० सं० १.१.१४.५।

वयमु त्वामपूर्व्य ऋ० ८.२१.१, सा० ४०८, ७०८, अ० २०.१४.१, ६२ १; तां० ब्रा० १२.२२.३ गो० ब्रा० उ० ४.१६।

वयमु त्वा शतक्रतो ऋ० ८.९२.१२।

वयमेनमिदा ह्यो पीपेमेह ऋ० ८.६६.७, सा० २७२, १६९१, अ० २०.९७.१; सं० ब्रा० २.४।

वयश्चित्ते पतत्रिणो ऋ० १.४९.३ सा० ३६७।

वयं घ त्वा सुता० ऋ० ८.३३.१, सा० २६१,

वषड्ढुतेभ्यो वष० अ० ७.९७.७ ।
वसन्त इन्नु सा० ६१६; आ० ब्रा० ६.३.५.३ ।
वसन्ताय कपिञ्जलान् य० २४.२०; का० सं० २६.२१; श० ब्रा० १३.५.१.१३ ।
वसन्तेन ऋतुना देवा य० २१.२३; काठ० सं० ३८.१२२; मै० सं० ३.११.१२४; का० सं० २६.२४ ।
वसवस्त्रयोदशाक्षरेण य० ९.३४; श० ब्रा० ५.२.२.१७ ।
वसवस्त्वा कृण्वन्तु य० ११.५८; कपि० ३०.४; श० ब्रा० ६.५.२.३–६ ।
वसवस्त्वाऽऽछृन्दन्तु य० ११.६५; मै०सं० २.७.७४; श० ब्रा० ६.५.४.१७; तै० सं० ४.१.६.१९; कपि० १.९; ३०.५ ।
वसवस्त्वाञ्जन्तु गायत्रेण य० २३.८; मै० सं० ३.१२.२४; श० ब्रा० १३.२.६.४–६, ८ ।
वसवस्त्वा दक्षिणतः अ० १०.९.८; पै० सं० १६.१३६.८ ।
वसवस्त्वा धूपयन्तु य० ११.६०; काठ० सं० १६.५९; मै० सं० २.७.६९; श० ब्रा० ६.५.३.१०; तै० सं० ४.१.६.१; कपि० १.९; ३०.४ ।
वसां राजानं वसतिं ऋ० ५.२.६ ।
वसिष्ठं ह वरुणो ऋ० ७.८८.४ ।
वसिष्ठासः पितृवत् ऋ० १०.६६.१४ ।
वसिष्ठा हि मियेध्य ऋ० १.२६.१ ।
वसु च मे वसतिश्च य० १८.१५ ।
वसुभ्य ऋश्यानालभते य० २४.२७; का० सं० २६.२८ ।
वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यः य० २.१६; तै० सं० १.१.१३.३; श० ब्रा० १.८.३.८, १२; १४–१६; १९; १.९.२.१७; कपि० १.१२; १३; ३.८; ४७.११; ४८.९ ।
वसुरग्निर्वसुश्रवा ऋ० ५.२४.२, सा० ११०८, तै० सं० १.५.६.१०, ४.४.४.२९; मै० सं० १.५.२९; काठ० सं० ७.७; का० सं० २७.४८ ।
वसुर्वसुपतिर्हि कं ऋ० ८.४४.२४, तै० सं० १.४.४६.२; आर्याभि० १.३० ।
वसुं न चित्रमहसं ऋ० १०.१२२.१ ।
वसूनां भागोऽसि रुद्राणां य० १४.२५; श० ब्रा० ८.४.२.६–९; तै० सं० ४.३.९.६; ५.३.४.५; कपि० २६.३; ३२.१६ ।
वसूनां वा चर्कृष ऋ० १०.७४.१ ।
वसू रुद्रा पुरुमन्तू ऋ० १.१५८.१ ।
वसोरिन्द्रं वसुपतिं ऋ० १.९.९, अ० २०.७१.१५ ।
वसोर्या धारा मधुना अ० १२.३.४१; पै० सं० १७.४०.१ ।
वसोः पवित्रमसि द्यौः य० १.२; काठ० सं० १.१०; ३१.३; कपि० १.३; ४६.८; ४७.२; श० ब्रा० १.७.१.९–११; पै० सं० १.१.३; तै० सं० १.१.१, काठ० सं० १.३; का० सं० १.४–७ ।
वसोः पवित्रमसि शत य० १.३ ।
वस्यां इन्द्रासि मे पितुः ऋ० ८.१.६, सा० २९२ ।
वस्योभूयाय वसुमान् अ० १६.९.४; पै० सं० १८.२९.५ ।
वस्वी ते अग्ने संदृष्टिः ऋ० ६.१६.२५ ।
वस्व्यस्यदितिरस्या य० ४.२१; तै० सं० ४.२.५.१; ६.१.८.३; श० ब्रा० ३.३.१.२ ।
वह कुत्समिन्द्र यस्मिन् ऋ० १.१७४.५ ।
वहन्ति सीमरुणासो ऋ० ६.६४.३ ।

वहन्तु त्वा मनोयुजा ऋ० ४.४८.४।

वहन्तु त्वा रथेष्ठां ऋ० ८.३३.१४।

वह वपां जातवेदः य० ३५.२०; का० सं० ३५.५३।

वहिष्ठेभिर्विहरन् ऋ० ४.१३.४, तै० ब्रा० २.४.५.४; काठ० सं० ११.६४।

वह्नि यशसं विदथस्य ऋ० १.६०.१।

वंशानां ते नहनानां अ० ६.३.४; पै० सं० १६.३६.५।

वंसगेव पूषर्या ऋ० १०.१०६.५।

वंस्व विश्वा वार्याणि ऋ० ७.१७.५।

वंस्वा नो वार्या पुरु ऋ० ८.२३.२७।

वाङ्म आसन् नसोः अ० १६.६०१; तै० सं० ५.५.७.६।

वाचमष्टापदीमहं ऋ० ८.७६.१२, सा० ६६०, अ० २०.४२.१।

वाचस्पत ऋतवः अ० १३.१.१८; पै० सं० १८.१६.८।

वाचस्पतये पवस्व य० ७.१; काठ० सं० ४.१; २७.१; तै० सं० १.४.२.१; श० ब्रा० ४.१.१.६–११; मै० सं० १.३.१४; कपि० ३.१; ४२.१।

वाचस्पतिं विश्वकर्माणं ऋ० १०.८१.७, य० ८.४५, १७ २३, तै० सं० ४.६.२.५ मै० सं० २.१०.२२; काठ० सं० १८.१७; २१.४८; ३०.१६; कपि० ३.१; २८.२; ४१.८।

वाचस्पते पृथिवी अ० १३.१.१७; पै० सं० १८.१६.७।

वाचस्पते सौमनसं अ० १३.१.१६; पै० सं० १८.१६.६।

वाचं ते शुन्धामि य० ६.१४; श० ब्रा० ३.८.२.६; कपि० २.१३।

वाचं सु मित्रावरुणाविराव ऋ० ५.६३.६, तै० ब्रा० २.४.५.४; मै ०सं० ४.१४.१६४।

वाचे स्वाहा प्राणाय य० ३६.३; श० ब्रा० १४.३.२.१७; सं० वि० अन्त्येष्टिसंस्कार; तै० सं० ३.२.३.५।

वाचो जन्तुः कवीनां ऋ० ६.६७.१३।

वाजयन्निव नू रथान् ऋ० २.८.१।

वाजश्च मे प्रसवश्च य० १८.१; काठ० सं० १८.५६; मै० सं० २.११.२; कपि० २८.७; ऋ० भू० प्रार्थनायाचनासमर्पण०।

वाजस्य नु प्रसव आ य० ६.२५; काठ० सं० १८.६४; श० ब्रा० ५.२.२.७।

राजस्य नु प्रसवे य० १८.३०, अ० ३.२०.८, ७.६.४; मै० सं० १.११.२; श० ब्रा० ६.३.४.१–१६; कपि० २६.२; पै० सं० २०.१.७ काठ० सं० १४.५; १८.६४; तै० सं० १.७.७.३।

वाजस्य मा प्रसव य० १७.६३; काठ० सं० १.४२; १८.३१; श० ब्रा० ६.२.३.२१; मै० सं० १.१.३६; २.१०.५५; कपि० २८.३।

वाजस्येमं प्रसवः य० ६.२३; काठ० सं० १४.६; ४५.४; श० ब्रा० ५.२.२.५; मै० सं० १.११.२४।

वाजस्येमां प्रसवः य० ६.२४; श० ब्रा० ५.२.२.६; मै० सं० १.११.२२।

वाजः पुरस्तादुत य० १८.३४; काठ० सं० १८.६६; श० ब्रा० ६.३.४.१–१६; मै० सं० २.१२.३ कपि० २६.२।

वाजाय स्वाहा य० १८.२८, २२.३२; श० ब्रा० ६.३.३.८–१०; कपि० २६.१।

वाजिनीवती सूर्यस्य यो ऋ० ७.७५.५।

वाजिन्तमाय सह्यसे ऋ० १०.११५.६।

वाजी वाजेषु धीयते ऋ० ३.२७.८, सा० १४७८; ऐ० ब्रा० १.५.४।

वाजेभिर्नो वाजसाता० ऋ० १.११०.६।

वाजेवाजेऽवत वाजिनो ऋ० ७.३८.८, य० ६.१८, २१.११, तै० सं० १.७.८.६; ४.१.११.२२; २.११.१४; ७.१२.४; काठ० सं० १३.५२; श० ब्रा० ५.१.५.२४; मै० सं० १.११.११; का० सं० २३.१२।

वाजेषु सासहिर्भव ऋ० ३.३७.६, अ० २०.१६.६, ऐ० ब्रा० २.३.६।

वाजो नः सप्त प्रदिशः य० १८.३२; काठ० सं० १८.६७; श० ब्रा० ६.३.४.१-१६; कपि० २६.२।

वाजो नु ते शवसस्पत्यन्तं ऋ० ५.१५.५।

वाजो नो अद्य य० १८.३३; काठ० सं० १८.६८; श० ब्रा० ६.३.४.१–१६; कपि० २६.२; सं० वि० अन्नप्राशन०।

वाज्यासि वाजिनेना ऋ० १०.५६.३।

वाञ्छ मे तन्वं पादौ अ० ६.६.१; पै० सं० २.३३.२; ६०.२।

वात आ वातुभेषजं ऋ० १०.१८६.१, सा० १८४, १८४०, तै० ब्रा० २.४.१.८, सा० ब्रा० ३.१.४.२ तै० आ० ४.४२.२, नि० १०.३४; ष० ब्रा० पू० ६.४.१।

वात इव वृक्षान्नि० अ० १०.१.१७; पै० सं० १६.३६.७।

वातत्विषो मरुतो वर्षनि ऋ० ५.५७.४।

वातरंहा भव वाजिन् य० ६.८; अ० ६.६२.१; श० ब्रा० ५.१.४.६; पै०सं० १६.३४.१०।

वातस्य जूर्ति वरुणस्य य० १३.४२; काठ० सं० १६ २०८; श० ब्रा० ७.५.२.१८; मै० सं० २.७.२४०; कपि० २५.८।

वातस्यनु महिमानं ऋ० १०.१६८.१।

वातस्य पत्मन्नीळिता ऋ० ५.५.७।

वातस्य युक्तान्सुयुजश्चिद् ऋ० ५.३१.१०।

वातस्याश्वो वायोः सखा ऋ० १०.१३६.५।

वातं प्राणेनापानेन य० २५.२; श० ब्रा० १३.३.६.५; मै० सं० ३.१५.२; का० सं० २७.४।

वातं ब्रूमः पर्जन्यं अ० ११.६.६; पै० सं० १६.३४.१०।

वाताज्जातो अन्तरिक्षाद् अ० ४.१०.१।

वातात् ते प्राणमविदं अ० ८.२.३।

वाताय स्वाहा धूमाय य० २२.२६; का० सं० २४.२८।

वातासो न ये धुनयो ऋ० १०.७८.३।

वातेवाजुर्या नद्येवरीतिः ऋ० २.३६.५; ऐ० ब्रा० १.४.४।

वातोपधूत दूषितो ऋ० १०.६१.७; सा० ६८३; मै० सं० ४.११.११३।

वातो वा मनो वा य० ६.७।

वानस्पत्यः संभृतः अ० ५.२१.३; पै० सं० १७.३७.८।

वानस्पत्या ग्रावाणो अ० ३.१०.५; पै० सं० १.१०५.१।

वाममद्य सवितर्वामिमु ६.७१.६, य० ८.६, तै० सं० १.४.२३.१, २.२.१२.१०; श० ब्रा० ४.४.१.६; मै० सं० ४.१२.३३।

वामस्य हि प्रचेतसो ऋ० ८.८३.५।

वामं नो अस्त्वर्यमन् ऋ० ८.८३.४।

वामं वामं त आदुरे ऋ० ४.३०.२४, नि० ६.३१।

वामी वामस्य धूतयः ऋ० ६.४८.२०।

वाय उक्थेभिर्जरन्ते ऋ० १.२.२; ऐ० ब्रा० ३.१.१।

व.यवा याहि दर्शतेमे ऋ० १.२.१, नि० १०.२; ऐ० ब्रा० ४.५.१; आर्याभि० १.७।

वि ततूर्यन्ते मघवन् ऋ० ८.१.४, अ० २०.८५.४ ।

वि तिष्ठध्वं मरुतो ऋ० ७.१०४.१८, अ० ८.४.१८; पैं० सं० १६.१०.८ ।

वि तिष्ठन्तां मातुः अ० १४.२.२५ ।

वि ते भिनद्मि मेहनं अ० १.११.५ ।

वि ते मदं मदावति अ० ४.७.४ ।

वि ते मुञ्चामि रशनां अ० ७.७८.१; पैं० सं० १८.१४.६; २०.३१.९; काठ० सं० ४.१४; मै० सं० १.४.९; २.१२.१४ ।

वि ते वज्रासो अस्थिरन् ऋ० १.८०.८ ।

वि ते विष्वग्वातजूतासो ऋ० ६.६.३, तै० सं० ३.३.११.५; श० ब्रा० १२.४.४.८ ।

वि ते सर्वाः परिजाः अ० १९.५६.६; पैं० सं० ३.८.६ ।

वि ते स्वप्नं जनित्रं अ० ६.४६.२; १६.५.१, ४; ५–८; पैं० सं० १७.२४.१; ४–११; १८.२८.६ ।

वि ते हनव्यां शरणि अ० ६.४३.३; पैं० सं० १९.३३.९ ।

वित्तं च मे वेद्यं य० १८.११; श० ब्रा० ९.२.१.२; कपि० २८.८ ।

वित्वक्षणः समृतौ चक्रमास ऋ० ५.३४.६ ।

वि त्वदापो न पर्वतस्य ऋ० ६.२४.६, सा० ६८; सा० ब्रा० ३.१.४.१५ ।

वि त्वा ततस्रे मिथुना ऋ० १.१३१.३, अ० २०.७२.२; ७५.१ ।

वि त्वा नरः पुरुत्रा ऋ० १.७०.१० ।

विदद्यत्पूर्व्यं नष्टं ऋ० ८.७९.६ ।

विदधदी सरमा ऋ० ३.३१.६, य० ३३.५९, तै० ब्रा० २.५.८.१०; मै० सं० ४.६.१७; काठ० सं० २७.२६, का० सं० ३२.५९ ।

विदन्तीमत्र नरो ऋ० १.६७.४ ।

विदा चिन्नु महान्तो ऋ० ५.४१.१३ ।

विदा दिवो विष्यन्नद्रिमुक्थैः ऋ० ५.४५.१ ।

विदा देवा अघानां ऋ० ८.४७.२ ।

विदानासो जन्मनो ऋ० ४.३४.२ ।

विदा मघवन् सा० ६४१; ष० ब्रा० ४.५.६; आ० ब्रा० ६.४.२.१५; सा० ब्रा० ३.१.४.१३ ।

विदा राये सुवीर्यं सा० ६४४; सा० ब्रा० ३.१.४.१३ ।

वि दुर्गा वि द्विषः पुरः ऋ० १.४१.३ ।

विदुष्टे अस्य वीर्यस्य ऋ० १.१३१.४, अ० २०.७५.२ ।

विदुष्टे विश्वा भुवनानि ऋ० ४.४२.७ ।

विदुः पृथिव्या दिवो ऋ० ७.३४.२, तां० ब्रा० १.२.९ ।

विद्दळहानि चिदद्रिवो ऋ० ६.४५.९ ।

विदेवस्त्वा महान० अ० २०.१३६.१४ ।

वि देवा जरसा अ० ३.३१.१ ।

विद्रधस्य बलासस्य अ० ६.१२७.१ ।

विद्म ते सभे नाम अ० ७.१२.२ ।

विद्म ते सर्वाः परिजाः अ० १९.५६.६ ।

विद्म ते स्वप्न जनित्रमभूत्याः अ० १६.५.५ ।

विद्म ते स्वप्न जनित्रं ग्राह्याः अ० १६.५.१ ।

विद्म ते स्वप्न जनित्रं देव अ० ६.४६.२, १६.५.८ ।

विद्म ते स्वप्न जनित्रं निर्ऋत्याः अ० १६.५.४ ।

विद्म ते स्वप्न जनित्रं निर्भूत्या अ० १६.५.६ ।

विद्म ते स्वप्न जनित्रं पराभूत्या अ० १६.५.७

कपि० ३.१; ४१.८; तै० सं० १.६.१२. १२; २.५.१२.३२; पै० सं० २.८८.३।

वि नः पथः सुविताय ऋ० १.९०.४।

वि नः सहस्रं शुरुधो ऋ० ७.६२.३।

वि नो देवासो अद्रुहो ऋ० ८.२७.९।

वि नो वाजा ऋभुक्षणः ऋ० ४.३७.७।

वि पथो वाजसातये ऋ० ६.५३.४।

विपश्चितं तरणिं अ० १३.२.४; पै० सं० १८.२०.८।

विपश्चिते पवमानाय ऋ० ९.८६.४४, सा० १६१५, तै० ब्रा० ३.१०.८.१।

वि पाजसा पृथुना ऋ० ३.१५.१, य० ११.४९, तै० सं० ४.१.५.१; २.५.१२.२६; काठ० सं० १६.४८; मै० सं० २.७.५८; कपि० ३०.३; श० ब्रा० ६.४.४.२१।

वि पिप्रोरहिमायस्य दृळ्हाः ऋ० ६.२०.७।

वि पूषन्नारया ऋ० ६.५३.६।

वि पृक्षो अग्ने मघवानो ऋ० १.७३.५; मै० सं० ४.१४.२२४।

वि पृच्छामि पाक्या ऋ० १.१२०.४; ऐ० ब्रा० १.४.४।

वि प्रथतां देवजुष्टं ऋ० १०.७०.४।

विप्रस्य वा स्तुवतः ऋ० ८.१९.१२।

विप्रं विप्रासोऽवसे ऋ० ८.११.६, नि० १४.३२।

विप्रं होतारमद्रुहं ऋ० ७.४४.१०।

विप्रा यज्ञेषु मानुषेषु ऋ० ७.२.७।

विप्रासो न मन्मभिः ऋ० १०.७८.१।

विप्रेभिर्विप्र सन्त्य ऋ० ५.५१.३।

विभक्तारं हवामहे ऋ० १.२२.७, य० ३०.४, तै० आ० १०.१०.२; का० सं० ३४.४; श० ब्रा० १०.२.६.६।

विभक्तासि चित्रभानो ऋ० १.२७.६, सा० १४९८।

विभावा देवः सुरणः ऋ० ३.३.९।

विभिद्या पुरं शयथा ऋ० १०.६७.५, अ० २०.९१.५; मै० सं० ४.१२.१३९; काठ० सं० ९.९५।

विभिर्द्वा चरत ऋ० ८.२९.८।

विभिन्दती शतशाखा अ० ४.१९.५; पै० सं० ५.२५.५।

विभु प्रभु प्रथमं मेहनां ऋ० २.२४.१०।

विभूतरातिं विप्र ऋ० ८.१९.२, सा० १६८८।

विभूरसि प्रवाहणो य० ५.३१; काठ० सं० २.६५; मै० सं० १.२.८१; तै० सं० १.३.३.१ कपि० २.७; आर्यभि० २.१६।

विभूर्मात्रा प्रभूः पित्रा य० २२.१९; मै० सं० ३.१२.६; तै० सं० ७.१.१२.१, का० सं० २.४.१९; श० ब्रा० १३.१.६१.२; १३.४.२.१५–१६।

विभूषन्नग्न उभयां ऋ० ६.१५.९, सा० १५६९।

विभोष्ट इन्द्रराधसः ऋ० ५.३८.१; सा० ३६६; सा० ब्रा० ३.२.५४।

विभ्राजञ्ज्योतिषा स्वः (०/ देवास्त) ऋ० ८.९८.३, सा० १०२७, अ० २०.६२.७।

विभ्राजञ्ज्योतिषा स्वः (०/ येनेमा) ऋ० १०.१७०.४।

विभ्राजमान उषसामुपस्थाः ऋ० ७.६३.३।

विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं ऋ० १०.१७०.१, य० ३३.३०, सा० ६२८, १४५३; काठ० सं० २.४८; मै० सं० १.२.४९; का० सं० ३२.३०; श्रा० ब्रा० ६.४.१.५।

विभ्राड् बृहत्सुभृतं ऋ० १०.१७०.२, सा० १४५४।

वि मच्छ्रथाय रशनाम् ऋ० २.२८.५; मै० सं० ४.१४.१२०।

विमान एष दिवो य० १७.५९; काठ० सं० १८.२०; मै० सं० २.१०.५२; श० ब्रा० ६.२.३.१७; तै० सं० ४.६.३.१०; ५.४.६.१७; कपि० २८.३।

वि मिमीष्व पयस्वतीं अ० १३.१.२७; पै० सं० १८.१७.७।

वि मुच्यध्वमघ्न्या य० १२.७३; काठ० सं० १६.१५०; मै० सं० २.७.१६५; कपि० ३.४; २५.३; श० ब्रा० ७.२.२.११।

विमृग्वरीं पृथिवीं अ० १२.१.२९; पै० सं० १७.३.१०।

वि मृळीकाय ते मनो ऋ० १.२५.३।

वि मे कर्णा पतयतो ऋ० ६.९.६।

वि मे पुरुत्रा ऋ० ३.५५.३।

विमोकश्च मार्द्रपविश्च अ० १६.३.४।

वि य और्णोत् पृथिवीं अ० १३.३.२२।

वि यत्तिरो धरुणं० ऋ० १.५६.५।

वि यदस्थाद्यजतो ऋ० १.१४१.७।

वि यदहेरध त्विषो ऋ० ८.९३.१४।

वि यद्वरांसि पर्वतस्य ऋ० ४.२१.८।

वि यद्वाचं कीस्तासो ऋ० ६.६७.१०; ऐ० ब्रा० ५.३.१।

वि यस्य ते ज्रयसानस्या० ऋ० १०.११५.४।

वि यस्य ते पृथिव्यां ऋ० ७.३.४।

वि या जानाति ऋ० ५.६१.७।

वि या सृजति ऋ० १.४८.६।

वि ये चृतन्त्यृता ऋ० १.६७.८।

वि ये ते अग्ने भेजिरे ऋ० ७.१.९।

वि ये दधुः शरदं ऋ० ७.६६.११; ऐ० ब्रा० ५.२.१।

वि ये भ्राजन्ते ऋ० १.८५.४; ऋ० भू० नौविमानादिविद्याविषय।

वि यो ममे यम्या ऋ० ९.६८.३।

वि यो रजांस्यमिमीत ऋ० ६.७.७।

वि यो ररप्श ऋषिभिः ऋ० ४.२०.५।

वि यो वीरुत्सु रोध ऋ० १.६७.९।

वि रक्षो वि मृधो ऋ० १०.१५२.३, सा० १८६७, अ० १.२१.३; पै० सं० २.८८.२।

विराजश्च वै स अ० १५.६.२३।

विराजान्नाद्यान्नमति अ० १५.१४.१०।

विराट् सम्राड्विभ्वीः ऋ० १.१८८.५।

विराडग्रे समभवद् अ० १९.६.९; पै० सं० ९.५.७।

विराडसि दक्षिणा दिग् य० १५.११; श० ब्रा० ८.६.१.६; तै० सं० ४.३.६.४; ४.२.२; कपि० २६.७; ३२.१३।

विराड्ज्योतिरधारयत् य० १३.२४।

विराड् वा इदमग्र अ० ८.१०.१; पै० सं० १६.१३३.१।

विराड् वाग्विराट् अ० ९.१०.२४।

विराण्मित्रावरुणयोः ऋ० १०.१३०.५; ऐ० ब्रा० ८.२.२।

वि राय और्णोद्दुरः ऋ० १.६८.१०।

विरूपास इदृषयः ऋ० १०.६२.५, नि० ११.१५।

वि रोहितो अमृशद् अ० १३.१.८; पै० सं० १८.१५.८।

वि लपन्तु यातुधाना अ० १.७.३; पै० सं० १४.४.३।

विलिपत्यो बृहस्पते अ० १२.४.४४।

विलिप्ती या बृहस्पते अ० १२.४.४६; पैं० सं० १७.२०.६।

विलोहितो अधिष्ठानाद् अ० १२.४.४; पैं० सं० १६.१६.४।

विवस्वन्नादित्यैष ते य० ८.५; काठ० सं० ४.५८; मै० सं० ४.६.६०; श० ब्रा० ४.३.५.१८; कपि० ३ ५, ८।

विवस्वान्नो अभयं अ० १८.३.६१।

विवस्वान्नो अमृतत्वे अ० १८.३.६२; सं० वि० जातकर्मसंस्कार।

वि वातजूता अतसेषु ऋ० १.५८.४।

विवाहां ज्ञातीन्त्सर्वा अ० १२.५.४४; पैं० सं० १६.१४५.६।

वि वृक्षान्हन्त्युतहन्ति ऋ० ५.८३.२, नि० १०.११।

वि वृत्रं पर्वशो ययुः ऋ० ८.७.२३।

विवेष यन्मा धिषणा ऋ० ३.३२.१४, तै० सं० १.६.१२.३; मै० सं० ४.१२.४६; १४.२७४; काठ० सं० ८.४६; ३८.८३।

विव्यक्थ महिना वृषन् ऋ० ८.६२.२३, सा० १६६१।

विशंविशं मघवा परि ऋ० १०.४३.६, अ० २०.१७.६।

विशामासामभयानां ऋ० १०.६२.१४।

विशां कविं विश्पतिं मानुषीणाम् ऋ० ५.४.३।

विशां कविं विश्पतिं मानुषीः ऋ० ३.२.१०।

विशां कविं विश्पतिं शश्व ऋ० ६.१.८; तै० ब्रा० ३.६.१०.३; ऐ० ब्रा० २.१.१०; मै० सं० ४.१३.५४; काठ० सं० १८.१२१।

विशां गोपा अस्य ऋ० १.६४.५।

विशां च वै स अ० १५.८.३।

विशां राजानमद्भुतं ऋ० ८.४३.२४।

विशो यदह्वे नृभिः ऋ० १.६६.६।

विशोविश ईड्यमध्वरेषु ऋ० ६.४६.२।

विशोविशो वो अतिथिं ऋ० ८.७४.१, सा० ८७, १५६४; ऐ० ब्रा० १.१.१, सं० ब्रा० २.१३।

विश्पतिं यह्वमतिथिं नरः ऋ० ३.३.८।

वि श्रयन्तामुर्विया ऋ० २.३.५।

वि श्रयन्तामृतावृधः प्रयै ऋ० १.१४२.६।

वि श्रयन्तामृतावृधो द्वारो ऋ० १.१३.६।

विश्वकर्मन् हविषा ऋ० १०.८१.६, य० १७.२२, सा० १५८६, तै० सं० ४.६.२.१५, नि० १०.२६; मै० सं० २.१०.२१; काठ० सं० १८.१५; २१.५७; कपि० ३.१; २८.२; ४१.८।

विश्वकर्माणं ते सप्तऋषिवन् अ० १६.१८.७; पैं० सं० ७.१७.७।

विश्वकर्मा त्वा सादयतु य० १४.१२, १४; श० ब्रा० ८.३.१.६, १०; २.३, ४।

विश्वकर्मा मा सप्त० अ० १६.१७.७; पैं० सं० ७.१६.७।

विश्वकर्मा विमना ऋ० १०.८२.२, य० १७.२६, तै०सं० ४.६.२.१, नि० १०.२५; कपि० २८.२ काठ० सं० १८.३; आर्याभि० २.४०।

विश्वकर्मा ह्यजनिष्ट य० १७.३२; कपि० २८.२।

विश्वजित् कल्याण्यै अ० ६.१०७.३; पैं० सं० १६.४४.६।

विश्वजित् त्रायमाणायै अ० ६.१०७.१।

विश्वजिते धनजिते ऋ० २.२१.१।

विश्वङ्‌वस्तस्माद्यक्ष्मा अ० १६.३८.२; पैं० सं० १६.२४.२ ।

विश्वतश्चक्षुरुत ऋ० १०.८१.३, य० १७.१६, तै० सं० ४.६.२.१०, तै० आ० १०.१.३; कपि० २८.२; ऋ० भू० वेदविषय-विचार, आर्याभि० २.३४ ।

विश्वतोदावन्विश्वतो सा० ४३७; आ० ब्रा० ६.२.४.२; सा० ब्रा० ३.२.१.५ ।

विश्वदानीं सुमनसः ऋ० ६.५२.५ ।

विश्वमन्यामभीवार अ० १.३२.४ ।

विश्वमस्या नानाम ऋ० १.४८.८ ।

विश्वमित्सवनं सुतं ऋ० १.१६.८ ।

विश्वरूपं चतुरक्षं अ० २.३२.२ ।

विश्वरूपां सुभगां अ० ६.५६.३; पैं० सं० १६.१४.१२ ।

विश्वव्यचा घृतपृष्ठो अ० १२.३.१६; पैं० सं० १७.३७.६ ।

विश्वव्यचाश्चर्मा० अ० ६.७.१५; पैं० सं० १६.१३६.१८ ।

विश्ववेदसो रयिभिः ऋ० १.६४.१० ।

विश्वस्मा अग्निं भुवनाय ऋ० १०.८८.१२ ।

विश्वास्मा इत्स्वर्दृशे ऋ० ६.४८.४, सा० ८४० ।

विश्वस्मात्सीमधमां ऋ० ४.२८.४ ।

विश्वस्मान्नो अदितिः ऋ० १०.३६.३ ।

विश्वस्मै प्राणायापानाय य० १३.१६; श० ब्रा० ७.४.२.८ ।

विश्वस्य केतुर्भुवनस्य ऋ० १०.४५.६, य० १२.२३, तै० सं० ४.२.२.६ ।

विश्वस्य दूतममृतं य० १५.३३ ।

विश्वस्य प्र स्तोभ सा० ४५० ।

विश्वस्य मूर्धन्नाधि य० १८.५५; श० ब्रा० ६.४.४.१३; कपि० २६.४ ।

विश्वस्य राजा पवते ऋ० ६.७६.४ ।

विश्वस्य हि प्रचेतसा ऋ० ५.७१.२ ।

विश्वस्य हि प्राणनं ऋ० १.४८.१० ।

विश्वस्य हि प्रेषितो ऋ० १०.३७.५ ।

विश्वस्य हि श्रुष्टये ऋ० २.३८.२ ।

विश्वस्वं मातरं अ० १२.१.१७; पैं० सं० १८.२.८ ।

विश्वं प्रतीची सप्रथा ऋ० ७.७७.२ ।

विश्वं पश्यन्तो बिभृथा ऋ० ८.२०.२६ ।

विश्वं भर विश्वेन अ० २.१६.५ ।

विश्वं भरा वसुधानी अ० १२.१.६ ।

विश्वं वायुः स्वर्गो अ० ६.७.४; पैं० सं० १६.१३६.४ ।

विश्वं सत्यं मघवाना ऋ० २.२४.१२ ।

विश्वा अग्नेऽप दहारातीः ऋ० ७.१.७ ।

विश्वा आशा दक्षिण य० ३८.१०; श० ब्रा० १४.२.२.१६; ३८.१० ।

विश्वा उत त्वया वयं ऋ० २.७.३ ।

विश्वा द्वेषांसि जहि ऋ० ८.५३.४ ।

विश्वा धामानि विश्वचक्ष ऋ० ६.८६.५, सा० ८८८ ।

विश्वानरस्य वस्पतिं ऋ० ८.६८.४, सा० ३६४, नि० १२.२०; ऐ० ब्रा० ४.५.३; ५.३.३ ।

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि ऋ० ५.८२.५, य० ३०.३, तै० ब्रा० २.४.६.३, ऐ० ब्रा० ४.५.२; श० ब्रा० १३.६.२.६; प० वि० १२७; जी० ले० ६४४, का० सं० ३४.३; श० ब्रा० १३.६.२.६; स० प्र० ३ समु०, सं० वि० ईश्वरस्तुति०, ऋ० भू० ईश्वरस्तुतिप्रार्थनायाचना० ।

विश्वानि देवी भुवना ऋ० १.६२.६ ।

विश्वानि नो दुर्गहा ऋ० ५.४.६, तै० ब्रा० २.४.१.५, तै० आ० १०.२.१; मै० सं० ४.१०.११।

विश्वानि भद्रा मरुतो ऋ० १.१६६.६।

विश्वानि विश्वमनसो ऋ० ८.२४.७।

विश्वानि शुक्रो नर्याणि ऋ० ४.१६.६, अ० २०.७७.६।

विश्वान् देवानिदं अ० ११.६.१६; पै० सं० १५.१४.५।

विश्वान्देवान्हवामहे ऋ० १.२३.१०।

विश्वान्देवां आ वह ऋ० १.४८.१२।

विश्वान्यन्यो भुवना ऋ० २.४०.५, तै० ब्रा० २.८.१.६; मै० सं० ४.१४.१०।

विश्वान्येवास्य अ० १५.३.११।

विश्वाभिर्धीभिर्भुवनेन ऋ० ८.३५.२।

विश्वामित्र जमदग्ने अ० १८.३.१६; पै० सं० १४.३.२३; तै० सं० ३.१.७.१०; ४.५.११.१०।

विश्वामित्रा अरासत ऋ० ३.५३.१३।

विश्वा रूपाणि प्रति मुञ्चते ऋ० ५.८१.२, य० १२.३, तै० सं० ४.१.१०.१२, नि० १२.१३; कपि० ३२.१; ऐ० ब्रा० १.५.३; मै० सं० २.७.६५; ४.१२.१८१; श० ब्रा० ६.७.२.४।

विश्वा रूपाण्याविशन् ऋ० ६.२५.४।

विश्वा रोधान्सि ऋ० ४.२२.४।

विश्वावसुरभि तन्नो ऋ० १०.१३६.५।

विश्वावसुं सोमगन्धर्वम् ऋ० १०.१३६.४, तै० आ० ४.११.७।

विश्वा वसूनि संजयन् ऋ० ९.२९.४।

विश्वासां गृहपतिर्विशाम् ऋ० ६.४८.८।

विश्वासां त्वा विशां ऋ० १.१२७.८।

विश्वासां भुवां पते य० ३७.१८; श० ब्रा० १४.१.४.११–१३; का० सं० ३७.१८।

विश्वा सोम पवमान ऋ० ९.४०.४।

विश्वाहा ते सदमिद् अ० ३.१५.८।

विश्वाहा त्वा सुमनसः ऋ० १०.३७.७।

विश्वा हि मर्त्यत्वना ऋ० ८.९२.१३।

विश्वा हि वो नमस्यानि ऋ० १०.६३.२।

विश्वाहेन्द्रो अधिवक्ता ऋ० १.१००.१६, १०२.११; मै० सं० ४.१२.८६।

विश्वां अर्यो विपश्चितो ऋ० ८.६५.९।

विश्वाः पृतना अभिभूतरं ऋ० ८.९७.१०, सा० ३७०, ९३०, अ० २०.५४.१; सा० ब्रा० ३.२.२.३.।

विश्वे अद्य मरुतो विश्वे ऋ० १०.३५.१३, य० १८.३१, ३३.५२, का० सं० ३२.५२; तै० सं० ४.७.१२.२।

विश्वे अस्या व्युषि ऋ० ५.४५.८।

विश्वे चनेदना त्वा ऋ० ४.३०.३।

विश्वे त इन्द्र वीर्यं ऋ० ८.६२.७।

विश्वेत्ता ते सवनेषु ऋ० ८.१००.६।

विश्वेत्ता विष्णुराभरत् ऋ० ८.७७.१०, नि० ५.४; मै० सं० ३.८.१०।

विश्वेदनु रोधना ऋ० २.१३.१०।

विश्वेदेते जनिमा ऋ० ३.५४.८।

विश्वे देवा अकृपन्त ऋ० १०.२४.५।

विश्वे देवा अनमस्यन् ऋ० ६.९.५।

विश्वे देवा अँशुषु य० ८.५७।

विश्वे देवा उपरिष्टाद् अ० ८.८.१३; पै० सं० १६.३०.३।

विश्वे देवा ऋतावृध ऋ० ६.५२.१०, तै० सं० २.४.१४.१६; मै० सं० ४.१०.८४; १२.२३।

विश्वे देवा नो अद्या ऋ० ५.५१.१३ ।

विश्वे देवा मम शृण्वन्तु ऋ० ६.५२.१४; सा० ६१०; आ० ब्रा० ६.३.३.५ ।

विश्वे देवा मरुतः अ० ६.४७.२; पै० सं० १९.४३.११; काठ० सं० १८.६५ ।

विश्वे देवा वसवो अ० १.३०.१ ।

विश्वे देवाश्चससेषु य० ८.५८ ।

विश्वे देवास आ गत ऋ० २.४१.१३, य० ७.३४; श० ब्रा० ४.३.३.८; कपि० ३.१, ४१.८ ।

विश्वे देवासो अध ऋ० १०.११३.८ ।

विश्वे देवासो अप्तुरः ऋ० १.३.८ नि० ५.४; ऐ० ब्रा० ३.१.१ ।

विश्वे देवासो अस्रिध ऋ० १.३ ९; मै० सं० ४.१०.८५; ऐ० ब्रा० ३.१.१ ।

विश्वे देवाः शास्तनमा ऋ० १०.५२.१, श० ब्रा० १.५.१.२६ ।

विश्वे देवाः शृणुतेमम् ऋ० ६.५२.१३, य० ३३.५३, तै० सं० २.४.१४.५, तै० ब्रा० २.८.६.५ ऐ० ब्रा० ३.३.७; मै० सं० ४.१२.२४; का० सं० ३२.५१ ।

विश्वे देवाः सहधीभिः ऋ० १०.६५.१४ ।

विश्वे देवाः स्वाहा ऋ० ९.५.११ ।

विश्वेभिरग्ने अग्निभिः ऋ० १.२६.१०, सा० १६१७ ।

विश्वेभिः सोम्यं ऋ० १.१४.१०, य० ३३.१०; का० सं० ३२.१०; ऐ० ब्रा० ३.१.४; ऋ० भाष्य १.३.६;५.१ ।

विश्वेभ्यो हि त्वा भुवनेभ्यः ऋ० २.२३.१७ ।

विश्वे यजत्रा अधि० ऋ० १० ६३.११; सं० वि० स्वस्तिवाचन ।

विश्वे यद्वां मन्हना ऋ० ६.६७.५ ।

विश्वेषामदितिर्यज्ञियानां ऋ० ४.१.२०, य० ३३.१६, तै० ब्रा० २.७.१२.५; का० सं० ३२.१६ ।

विश्वेषामिरज्यन्तं वसूनां ऋ० ८.४६.१६ ।

विश्वेषामिरज्यवो ऋ० १०.९३.३ ।

विश्वेषामिह स्तुहि ऋ० ८.१०२.१० ।

विश्वेषां वः सतां ज्येष्ठतमा ऋ० ६.६७.१ ।

विश्वेषां ह्यध्वराणामनीकं ऋ० १०.२.६ ।

विश्वेषु हि त्वा सवनेषु ऋ० १.१३१.२, अ० २०.७२.१ ।

विश्वे हि त्वा सजोषसो ऋ० ५.२३.३ ।

विश्वे हि त्वा सजोषसो देवासो ऋ० ८.२३.१८ ।

विश्वे हि विश्ववेदसो ऋ० ५.६७.३ ।

विश्वे हि ष्मामनवे ऋ० ८.२७.४ ।

विश्वे ह्यस्मै यजताय ऋ० २.१६.४ ।

विश्वैर्देवैस्त्रिभिरेकादशैः ऋ० ८.३५.३ ।

विश्वो देवस्य नेतुः ऋ० ५.५०.१, य० ४.८, ११.६७, २२.२१, तै० सं० १.२.२.६, ४.१.९.७; ५.१.९.३; ६.१.२.१७; कपि० १.१४; ३५.८; मै० सं० १.२.१३; २.७.७६; ऐ० ब्रा० ४.५.४; ५.१.५; काठ० सं० २.६; १६.६६; का० सं० २४.२३ ।

विश्वो यस्य व्रते जनो ऋ० ९.३५.६ ।

विश्वो विहाया अरतिः ऋ० १.१२८.६, तै० ब्रा० २.५.४.४ ।

विश्वो ह्य१न्यो अरिराजगाम ऋ० १०.२८.१ ।

विषमेतद् देवकृतं अ० ५.१९.१०; पै० सं० ९.१९.३ ।

विषमेवास्यप्रियं अ० ८.१०.४ ।

विषं गवां यातुधानाः ऋ० १०.८७.१८, अ०

वृत्रस्य त्वा श्वसथा दीषमाणा ऋ० ८.९६.७, सा० ३२४, तै० ब्रा० २.८.३.५, ऐ० ब्रा० ३.६.२०, सा० ब्रा० ३.३.७.५, ६ ।

वृत्राण्यन्यः समिथेषु ऋ० ७.८३.९ ।

वृत्रेण यदहिना बिभ्रत् ऋ० १०.११३.३ ।

वृथा क्रीडन्त इन्दवः ऋ० ९.२१.३ ।

वृश्च दर्भ सपत्नान् अ० १९.२८.७ ।

वृश्च प्र वृश्च सं अ० १२.५.६२ ।

वृषणश्वेन मरुतो ऋ० ८.२०.१० ।

वृषणस्ते अभीशवो ऋ० ८.३३.११ ।

वृषणं त्वा वयं वृषन् ऋ० ३.२७.१५, सा० १५४०, अ० २०.१०२.३, तै० ब्रा० ३.५.२.२, श० ब्रा० १.४.१.३२, मै० सं० ४.१२.१३४ ।

वृषणं धीभिरप्तुरं ऋ० ९.६३.२१ ।

वृषन्निन्द्र वृषपाणास ऋ० १.१३९.६; ऐ० ब्रा० ५.२.७ ।

वृषभं चर्षणीनां ऋ० ३.६२.६; काठ० सं० ४.१२२ ।

वृषभं वाजिनं वयं अ० ७.८०.२ ।

वृषभो न तिग्मशृङ्गो ऋ० १०.८६.१५, अ० २०.१२६.१५ ।

वृषभोऽसि स्वर्ग अ० ११.१.३५ ।

वृषाकपायि रेवति ऋ० १०.८६.१३, अ० २०.१२६.१३, नि० १२.९ ।

वृषा ग्रावा वृषामदो (०/ वृषन्निन्द्र) ऋ० ५.४०.३ ।

वृषा ग्रावा वृषामदो (०/ वृषा यज्ञो) ऋ० ८.१३.३२; ऐ० ब्रा० ५.१.१ ।

वृषा जजान वृषणं रणाय ऋ० ७.२०.५ ।

वृषाणं वृषभिर्यतं ऋ० ९.३४.३ ।

वृषा ते वज्र ऋ० २.१६.६ ।

वृषा त्वा वृषणं वर्धतु ऋ० ५.३६.५; ऐ० ब्रा० ५.१.१ ।

वृषा त्वा वृषणं हुवे (०/ वावन्थ) ऋ० ८.१३.३३ ।

वृषा त्वा वृषणं हुवे (०/ वृषन्निन्द्र) ऋ० ५.४०.३ ।

वृषा न क्रुद्धः पतयत् ऋ० १०.४३.८, अ० २०.१७.८ ।

वृषा पवस्व धारया ऋ० ९.६५.१०, सा० ४६९, ८०३ ।

वृषा पुनान आयूंषि ऋ० ९.१९.३, सा० १००० ।

वृषा मतीनां पवते ऋ० ९.८६.१९, सा० ५५९, ८२१; अ० १८.४.५८ ।

वृषा मद इन्द्रे ऋ० ६.२४.१ ।

वृषा मे रवो नभसा अ० ५.१३.३ ।

वृषा यज्ञो वृषणः ऋ० १०.६६.६ ।

वृषायन्ते महे अत्याय ऋ० ३.७.९ ।

वृषायमाणोऽवृणीत सोमं ऋ० १.३२.३, अ० २.५.७, तै० ब्रा० २.५.२.४.२; पै० सं० १३.६ ३ ।

वृषायमिन्द्र ते रथ ऋ० ८.१३.३१ ।

वृषा यूथेव वन्सगः ऋ० १.७.८, सा० १६२२, अ० २०.७०.१४ ।

वृषा रवाय वदते ऋ० १०.१४६.२, तै० ब्रा० २.५.५.६ ।

वृषा वि जज्ञे जनयन् ऋ० ९.१०८.१२ ।

वृषा वृषन्धि चतुरः ऋ० ४.२२.२ ।

वृषा वृष्णे दुदुहे दोहसा ऋ० १०.११.१, अ० १८.१.१८ ।

वृषा वृष्णे रोरुवद् ऋ० ९.९१.३ ।

वृषा वो अंशुर्न किला ऋ० १०.९४.१० ।

वृषा शोणो अभिकनिक्रदद् ऋ० ६.६७.१३, सा० ८०६।

वृषासि त्रिष्टुप्छन्दा अ० ६.४८.३।

वृषासि दिवो वृषभो ऋ० ६.४४.२१, नि० ६.१७।

वृषा सोता सुनोतु ते ऋ० ८.३३.१२।

वृषा सोम द्युमां असि ऋ० ९.६४.१, सा० ५०४, ७८१, तै० सं० ४.२.११.१६; ३.१३. ६; काठ० सं० २.७१; मै० सं० ४.१०.४६; २२१; ११.७।

वृषा ह्यग्ने अजरो ऋ० ६.४८.३।

वृषा ह्यसि भानुना ऋ० ९.६५.४, सा० ४८०, ७८४।

वृषा ह्यसि राधसे ऋ० ५.३५.४।

वृषेन्द्रस्य वृषा अ० ६.८६.१; पै० सं० १९.६.१०।

वृषेव यूथा परिकोशं ऋ० ९.७६.५।

वृषेव यूथे सहसा अ० ५.२०.३; पै० सं० ९.२४.४।

वृषो अग्निः समिध्यते ऋ० ३.२७.१४, सा० १५३९, अ० २०.१०२.२, तै० ब्रा० ३.५.२.२; ऋ० भा० १.१.१; श० ब्रा० १.४.१.२९।

वृष्टिद्यावा रीत्यापेषः ऋ० ५.६८.५, सा० १४६७।

वृष्टिं दिवः परि स्रव ऋ० ९.८.८, सा० ११८६।

वृष्टिं दिवः शतधारः ऋ० ९.९६.१४।

वृष्टिं नो अर्ष दिव्यां ऋ० ९.९७.१७।

वृष्ण ऊर्मिरसि य० १०.२; श० ब्रा० ५.३.४.५–६।

वृष्णस्ते वृष्ण्यन्शवो ऋ० ९.६४.२, सा० ७८२।

वृष्णः कोशः पवते ऋ० २.१६.५।

वृष्णे यत्ते वृषणो ऋ० ५.३१.५, तै० सं० १.६.१२.६; मै० सं० ४.१२.४८; काठ० सं० ८.५१।

वृष्णे शर्धाय सुमखाय ऋ० १.६४.१; ऐ० ब्रा० ४.५.४।

वृष्णो अस्तोषि भूम्यस्य ऋ० ५.४१.१०।

वेत्था हि निर्ऋतीनां ऋ० ८.२४.२४; सा० ३९६; अ० २०.६६.३।

वेत्था हि वेधो अध्वनः ऋ० ६.१६.३; सा० १४७६; काठ० सं० ६.३६; ऐ० ब्रा० ७.२.७; श० ब्रा० १२.४.४.१।

वेत्यध्वर्युः पथिवी रजिष्ठैः ऋ० ७.१०१.१०; ऐ० ब्रा० ५.२.१।

वेत्युग्रुर्जनिवान्वा ऋ० ५.४४.७।

वेद आस्तरणं ब्रह्म अ० १५.३.७।

वेद तत् ते अमर्त्य अ० १३.१.४४; पै० सं० १८.२९.४।

वेदमासो धृतव्रतो ऋ० १.२५.८।

वेद यस्त्रीणि विदथान्येषां ऋ० ६.५१.२।

वेद वातस्य वर्तनिं ऋ० १.२५.९।

वेदा यो वीनां पदं ऋ० १.२५.७।

वेद वै रात्रि ते नाम अ० १९.४८.६; पै० सं० ६.२१.६।

वेदः स्वस्तिर्द्रुघणः अ० ७.२८.१; पै० सं० २०.३०.४।

वेदाहमस्य भुवनस्य य० २३.६०; का० सं० २५.६५; श० ब्रा० १३.५.२.२०।

वेदाहमेतं पुरुषं य० ३१.१८; का० सं० ३५.१८; ऋ० भू० वेदविषयविचार; प० वि० ९९; आर्याभि० २.८; ल० वेदाङ्ग० २९;

वैश्वानरं कवयो यज्ञियासो ऋ० १०.८८. १३।

वैश्वानरं मनसाग्निं ऋ० ३.२६.१।

वैश्वानरं विश्वहा ऋ० १०.८८.१४।

वैश्वानरः पविता अ० ६.११९.३।

वैश्वानरः प्रत्नथा नाकम् ऋ० ३.२.१२; तां० ब्रा० १.७.६।

वैश्वानराय धिषणाम् ऋ० ३.२.१; ऐ० ब्रा० ५.१.२; ऐ० आ० १.५.३।

वैश्वानराय पृथुपाजसे ऋ० ३.३.१; ऐ०ब्रा० ४.५.२।

वैश्वानराय प्रति वेदयामि अ० ६.११९.२; पै० सं० १६.५०.८।

वैश्वानराय मीळ्हुषे ऋ० ४.५.१।

वैश्वानरीं वर्चस अ० ६.६२.३; पै० सं० १९.३०.७।

वैश्वानरीं सूनृतामा अ० ६.६२.२।

वैश्वानरे हविरिदं अ० १८.४.३५।

वैश्वानरोऽङ्गिरसां अ० ६.३५.३।

वैश्वानरो न आगमद् अ० ६.३५.२।

वैश्वानरो न ऊतये य० १८.७२, २६.८; अ० ६.३५.१; मै० सं० ३.१६.६४, ४.१०.१०; ११.१५; पै० सं० १९.९.४; काठ० सं० ४.१३४, २०.४१, २२.५१, २८.९; तै० सं० १.५.११.१।

वैश्वानरो महिम्ना ऋ० १.५९.७।

वैश्वानरो रश्मिभिः अ० ६.६२.१; पै० सं० १०.९.५; मै० सं० ३.११.९८।

वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं ऋ० ७.२८.५, २९. ५, ३०.५।

व्यकृणोत चमसं चतुर्धा ऋ० ४.३५.३।

व्यक्तून्रुद्रा व्यहानि ऋ० ५.५४.४।

व्यचस्वतिरुर्विया ऋ० १०.११०.५; य० २९.३०; अ० ५.१२.५; मै० सं० ४.१३. १६; तै० ब्रा० ३.६.३.३; नि० ८.१०; काठ० सं० १६.२३३; का० सं० ३१.४३।

व्यञ्जते दिवो अन्तेष्वक्तून् ऋ० ७.७९.२।

व्यञ्जिभिर्दिव आतास्व ऋ० १.११३.१४।

व्यनिनस्य धनिनः ऋ० १.१५०.२।

व्यन्तरिक्षमतिरत् ऋ० ८.१४.७; सा० १६४०; अ० २०.२८.१, ३९.२; ऐ० ब्रा० ६.२.४, ४.७; गो० ब्रा० उ० ५.१३; ६. ५।

व्यन्त्विन्नु येषु मन्दसान ऋ० २.११.१५।

व्यर्य इन्द्र तनुहि श्रवांसि ऋ० १०.११६. ६।

व्यर्यमा वरुणश्चेति पन्थां ऋ० ४.५५.४।

व्यवात् ते ज्योतिः अ० ८.१.२१; पै० सं० १६.२.११।

व्यश्वस्त्वा वसुविदम् ऋ० ८.२३.१६।

व्यस्तभ्नाद्रोदसी मित्रो ऋ० ६.८.३; ऋ० भू० आकर्षणानुकर्षण-विषय।

व्यस्मै अधिशर्म तत् ऋ० ८.४७.३।

व्यस्यै मित्रावरुणौ अ० ३.२५.६।

व्याकरोमि हविषा अ० १२.२.३२; पै० सं० १७.३३.३।

व्याकूतय एषाम् अ० ३.२.४।

व्याघ्रं दत्वतां वयं अ० ४.३.४।

व्याघ्रेऽह्न्यजनिष्ट वीरो अ० ६.११०.३; पै० सं० १९.२०.२।

व्याघ्रो अधि वैयाघ्रे अ० ४.८.४; पै० सं० ४.२.५।

व्यानडिन्द्रः पृतनाः ऋ० १०.२९.८; अ०२०. ७६.८।

१८.४.२६, पैं० सं० ५.४० ८ ।

शतपवित्राः स्वधया ऋ० ७.४७.३, नि० ५.७ ।

शतब्रध्न इषुस्तव ऋ० ८.७७.७ ।

शतभुजिभिस्तमभिह्रुते ऋ० १.१६६.८ ।

शतमश्मन्मयीनां ऋ० ४.३०.२० ।

शतमहं तिरिन्दरे ऋ० ८.६.४६ ।

शतमहं दुर्णाम्नीनां अ० १६.३६.६, पैं०सं० २.२७.५ ।

शतमाश्वा हिरण्ययाः अ० २०.१३१.५ ।

शतमिन्नु शरदो ऋ० १.८६.६, य० २५.२२, मै० सं० ४.१४.२६, का० सं० २७.२६, श० ब्रा० २.३.३.६, कपि० ४८.२ ।

शतयाजं स यजते अ० ६.४.१८, पैं० सं० १६.२५.८ ।

शतवारो अनीनशद् अ० १६.३६.१, पैं० सं० २.२७.१ ।

शतस्य धमनीनां अ० १.१७.३, पैं० सं० १.६४.२, १६.३.१३ ।

शतहस्त समाहर अ० ३.२४.५, पैं०सं० १६.३८.७ ।

शतं कंसाः शतं दोग्धारः अ० १०.१०.५, पैं० सं० १६.१०७.५ ।

शतं च न प्रहरन्तो अ० १६.४६.३, पैं० सं० ४.२३.५ ।

शतं च मे सहस्रं च अ० ५.१५.११, पैं०सं० ८.५.११ ।

शतं जीव शरदो ऋ० १०.१६१.४; अ० ३.११.४, २०.६६.६, नि० १४.३६, पैं० सं० १५.६.३ ।

शतं ते दर्भ वर्माणि अ० १६.३०.२, पैं०सं० १३.११.२०।

शतं तेऽयुतं हायनान् अ० ८.२.२१, पैं० सं० १६.५.१ ।

शतं ते राजन् भिषजः ऋ० १.२४.६, तै० सं० १.४.४५.२, ६.६.३.७ ।

शतं ते शिप्रिन्नूतयः ऋ० ७.२५.३ ।

शतं दासे बल्बूथे ऋ० ८.४६.३२ ।

शतं धारा देवजाताः ऋ० ६.६७.२६ ।

शतं न इन्द ऊतिभिः ऋ० ६.५२.५ ।

शतं मे गर्दभानां ऋ० ८.५६.३ ।

शतं मेषान्वृक्ये चक्षदानं ऋ० १.११६.१६, नि० ५.२१ ।

शतं मेषान्वृक्ये मामहानं ऋ० १.११७.१७।

शतं या भेषजानि अ० ६.४४.२; पैं० सं० २०.३३.७ ।

शतं राज्ञो नाधमानस्य ऋ० १.१२६.२ ।

शतं वा भारती शवः अ० २०.१३१.४ ।

शतं वा यदसुर्य ऋ० १०.१०५.११ ।

शतं वा यस्य ऋ० २.१३.८ ।

शतं वा यः शुचीनां ऋ० १.३०.२ ।

शतं वीरानजनयः अ० १६.३६.४; पैं० सं० २.२७.४ ।

शतं वेणून्छतं शुनः ऋ० ८.५५.३ ।

शतं वो अम्ब ऋ० १०.६७.२, य० १२.७६, तै० सं० ४.२.६.१; मै० सं० २.७.१६७; कपि० २५.४; श० ब्रा० ७.२.४.२७ ।

शतं श्वेतास उक्षणो ऋ० ८.५५.२ ।

शतं सहस्रमयुतं अ० १०.८.२४; पैं० सं० १६.१०३.१ ।

शतानीका हेतयो अस्य ऋ० ८.५०.२, अ० २०.५१.४ ।

शतानीकेव प्र जिगाति ऋ० ८.४६.२, सा० ८१२, अ० २०.५१.२ ।

शतापाष्ठां न गिरति अ० ५.१८.७; पैं० सं० ९.१७.६ ।

शतेन पाशैरभि अ० ४.१६.७; पैं० सं० ५.३२.८ ।

शतेन मा परि पाहि अ० ४.१६.८; पैं० सं० ५.२५.८ ।

शतेना नो अधिष्टिभिः ऋ० ४.४६.२; ऐ० ब्रा० २.४.२ ।

शतैरपद्रन्पणय ऋ० ६.२०.४ ।

शत्रूयन्तो अभि ये नः ऋ० १०.८९.१५ ।

शत्रूषाण्णीषाडभि० अ० ५.२०.११; पैं० सं० ९.२४.११ ।

शनैश्चिद्यन्तो अद्रिवो ऋ० ८.४५.११ ।

शन्तिवा सुरभिः स्योना अ० १२.१.५९ ।

शप्तारमेतु शपथो० अ० २.७.५; पैं० सं० २०.१७.४ ।

शफेन इव ओहते अ० २०.१३१.७ ।

शमग्नयः समिद्धा अ० १८.४.१२ ।

शमग्निरग्निभिः करत् ऋ० ८.१८.९, तै० ब्रा० ३.७.१०.५ ।

शमग्ने पश्चात् तप शं अ० १८.४.११ ।

शमिता नो वनस्पतिः य० २१.२१; काठ० सं० ३८.१२०; मै० सं० ३.११.१२२; का० सं० २३.२२ ।

शमीमश्वत्थ आरूढः अ० ६.११.१; पैं० सं० १९.१२.१; सं० वि० पुंसवन संस्कार ।

शमू षु वां मधूयुवा ऋ० ५.७४.९ ।

शम्या ह नाम दधिषे अ० १९.४९.७; पैं० सं० १४.४.७ ।

शयुः परस्तादध नु ऋ० ३.५५.६ ।

शयो हत इव अ० २०.१३१.१६

शरदे त्वा हेमन्ताय अ० ८.२.२२; पैं० सं० १६.५.२ ।

शरव्या मुखेऽपि० अ० १२.५.२५; पैं० सं० १६.१४३.५ ।

शरस्य चिदार्चत्कस्या ऋ० १.११६.२२ ।

शरासः कुशरासो ऋ० १.१९१.३ ।

शर्कराः सिकता अश्मानः अ० ११.९.२१; पैं० सं० १६.८४.१ ।

शर्धं शर्धं व एषां ऋ० ५.५३.११ ।

शर्धो मारुतमुच्छंस ऋ० ५.५२.८ ।

शर्म च स्थो वर्म च य० ११.३०; काठ० सं० १६.२४; मै० सं० २.७.३२; श० ब्रा० ६.४.१.१०; कपि० ३०.२ ।

शर्म यच्छत्वोषधिः अ० ६.५९.२; पैं० सं० १९.१४.११ ।

शर्म वर्मैतदाहरास्यै अ० १४.२.२१; पैं० सं० १८ ९.२ ।

शर्मास्यवधूतं य० १.१४, १९; श० ब्रा० १.१.४.४–७; २.१.१४–१७; कपि० १.५, ६; ४५.६; ४७.४, ५ ।

शर्यणावति सोमं इन्द्रः ऋ० ९.११३.१; सं० वि० संन्यास संस्कार।

शर्व एनमिष्वास अ० १५.५.५ ।

शर्वः क्रुद्ध पिश्यमाना अ० १२.५.३६; पैं० सं० १६.१४४.८ ।

शल्याद्विषं निरवोचं अ० ४.६.५; पैं० सं० ५.८.४ ।

शवसा ह्यसि श्रुतो ऋ० ८.२४.२, अ० १८.१.३८ ।

शविष्ठं न आ भर ऋ० ६.१९.६ ।

शशमानस्य वा नरः ऋ० १.८६.८, सा० १५९४ ।

शशः क्षुरं प्रत्यञ्चं ऋ० १०.२८.९ ।

शं नो भगः शमु ऋ० ७.३५.२, अ० १९.१०.२; सं० वि० शान्तिकरण, आर्याभि० १.२५ ।

शं नो भव चक्षसा ऋ० १०.३७.१०, तै० ब्रा० २.८.७.३; ऐ० ब्रा० ८.४.६ ।

शं नो भवन्तु वाजिनो ऋ० ७.३८.७, य० ९.१६, २१.१०, तै० सं० १.७.८.२, नि० १२.४३; मै० सं० १.११.१०; काठ० सं० १३.५१; श० ब्रा० ५.१.५.२२; का० सं० २३.१० ।

शं नो भवन्त्वपः अ० २.३.६ ।

शं नो भव हृद ऋ० ८.४८.४ ।

शं नो भूमिर्वेप्यमाना अ० १९.९.८ ।

शं नो मित्रः शं वरुणः ऋ० १.९०.९, य० ३६.९, अ० १९.९.६; सं० वि० शान्तिकरण आर्याभि० १.१५; का० सं० ३६.९ ।

शं नो वातः पवतां य० ३६.१०; का० सं० ३६.१०; सं० वि० शान्तिकरण; आर्याभि० २.२२ ।

शं नो वातो वातु शं अ० ७.६९.१ ।

शं पदं मघं सा० ४४१ ।

शं मे परस्मै गात्राय अ० १.१२.४ ।

शं रुद्राः शं वसवः अ० १९.९.११ ।

शं रोदसी सुबन्धवे ऋ० १०.५९.८ ।

शं वातः शँ हि ते य० ३५.८; का० सं० ३५.४१; श० ब्रा० १३.८.३.५ ।

शंसा महामिन्द्रं ऋ० ३.४९.१; ऐ० ब्रा० ५.३.३ ।

शंसा मित्रस्य वरुणस्य ऋ० ७.६१.४ ।

शंसावाध्वर्यो ऋ० ३.५३.३, नि० ४.१६ ।

शंसेदुक्थं सुदानव ऋ० ७.३१.२, सा० ७१७ ।

शाक्मना शाको अरुणः ऋ० १०.५५.६, सा० १७८३ ।

शाचिगो शाचिपूजना० ऋ० ८.१७.१२, सा० ७२६, अ० २०.५.६, नि० ३.१० ।

शादं दद्भिरवकां य० २५.१; मै० सं० ३.१५.१; श० ब्रा० १३.३.४.१; का० सं० २७.१ ।

शान्ता द्यौः शान्ता पृथिवी अ० १९.९.१ ।

शान्तानि पूर्वरूपाणि अ० १९.९.२ ।

शान्तो अग्निः क्रव्यात् अ० ३.२१.९; पै० सं० ३.१२.९ ।

शारदावेनं मासौ अ० १५.४.१२; काठ० सं० ३८.१२५; मै० सं० ३.११.१२७; का० सं० २३.२७ ।

शारदेन ऋतुना देवा य० २१.२६ ।

शारदौ मासौ गोप्तारौ अ० १५.४.११ ।

शास इत्था महाँ असि ऋ० १०.१५२.१, अ० १.२०.४; ऐ० ब्रा० ८.२.६; पै० सं० २.८८.१ ।

शासद्वह्निर्दुहितुर्नप्त्यङ्गात् ऋ० ३.३१.१, नि० ३.४; ऐ० ब्रा० ६.४.२; ऋ० भू० ग्रन्थप्रामाण्याप्रामाण्यविषय ।

शिक्षा ण इन्द्र राय ऋ० ८.९२.९, सा० १६४४ ।

शिक्षा विभिन्दो अस्मै ऋ० ८.२.४१ ।

शिक्षेयमस्मै दित्सेयं ऋ० ८.१४.२; सा० १८३५, अ० २०.२७.२ ।

शिक्षेयमिन् महयते ऋ० ७.३२.१९, सा० १७६७, अ० २०.८२.२; ऐ० ब्रा० ५.१.१ ।

शिखिभ्यः स्वाहा अ० १९.२२.१५ ।

शितिपदी सं द्यतु अ० ११.१०.६।

शितिपदी सं पततु अ० ११.१०.२०।

शिप्रिन्वाजानां पते ऋ० १.२९.२, अ० २०.७४.२, तै० ब्रा० २.४.४.८; काठ० सं० १०.३१।

शिरो मे श्रीर्यशो य० २०.५; काठ० सं० ३८.४६; मै० सं० ३.११.६४; ऋ० भू० राजधर्मविषय; का० सं० २१.१०२।

शिरो हस्तावथो अ० ११.८.१५; पै० सं० १६.८६.४।

शिला भूमिरश्मा अ० १२.१.२६; पै० सं० १७.३.७।

शिल्पा वैश्वदेव्यो य० २४.५; मै० सं० ३.१३.१०; का० सं० २६.६।

शिवस्त्वष्टरिहा गहि ऋ० ५.५.९, तै० सं० ३.१.११.७।

शिवः कपोत इषितो नो ऋ० १०.१६५.२, अ० ६.२७.२।

शिवानग्नीनप्सुषदो अ० १६.१.१३; पै० सं० १.३३.४।

शिवा नारीयमस्त अ० १४.२.१३; पै० सं० १८.८.४।

शिवा नः शंतमा भव अ० ७.६८.३; पै० सं० २०.५७.४।

शिवा नः सख्या सन्तु ऋ० ४.१०.८।

शिवा भव पुरुषेभ्यो अ० ३.२८.३।

शिवाभिष्टे हृदयं अ० २.२९.६।

शिवास्त एका अशिवास्त अ० ७.४३.१; पै० सं० २०.१.४।

शिवास्ते सन्त्वोषधयः अ० ८.२.१५; पै० सं० १६.१३.१।

शिवां रात्रिमनुसूर्यं अ० १९.४९.५।

शिवे ते स्तां द्यावापृथिवी अ० ८.२.१४; पै० सं० १६.४.४।

शिवेन मा चक्षुषा अ० १.३३.४, १६.१.१२; पै० सं० १.२५.४; ३४.४; तै० सं० ५.६.१.४।

शिवेन वचसा त्वा य० १६.४; काठ० सं० १७.३६; मै० सं० २.९.१७; कपि० २७.१।

शिवो नामासि य० ३.६३; कपि० ४८.१६; सं० वि० चूडाकर्मसंस्कार।

शिवो भव प्रजाभ्यो य० ११.४५; काठ० सं० १६.४२; मै० सं० २.७.५२; श० ब्रा० ६.४.४.४; तै० सं० ४.१.४.७; कपि० ३०.३।

शिवो भूत्वा मह्यमग्ने य० १२.१७; काठ० सं० १६.९८; मै० सं० २.७.१०७; श० ब्रा० ६.७.३.१५।

शिवो वो गोष्ठो भवतु अ० ३.१४.५।

शिवौ ते स्तां व्रीहि० अ० ८.२.१८।

शिशानो वृषभो यथाग्निः ऋ० ८.६०.१३।

शिशुं जज्ञानं हरिं ऋ० ९.१०९.१२, सा० १३३४।

शिशुं जज्ञानं हर्यतं ऋ० ९.९६.१७, सा० ११७५।

शिशुर्न जातोऽव चक्रदत् ऋ० ९.७४.१।

शिशुं न त्वा जेन्यं ऋ० १०.४३.३।

शिशुमारा अजगराः अ० ११.२.२५।

शीतिके शीतिकावति ऋ० १०.१६.१४, अ० १८.३.६०, तै० आ० ६.४.१।

शीरं पावकशोचिषम् ऋ० ८.१०२.११।

शीर्षक्तिं शीर्षामयं अ० ९.८.१; पै० सं० १६.७४.१।

शीर्षण्वती नस्वती अ० १०.१.२; पैं० सं० १६.३५.२ ।

शीर्षलोकं तृतीयकं अ० १९.३९.१०; पैं० स० ७.१०.१० ।

शीर्षामयमुपहत्या० अ० ५.४.१० ।

शीर्ष्णः शीर्ष्णो जगतः ऋ० ७.६६.१५ ।

शुकेषु ते हरिमाणं अ० १.२२.४ ।

शुकेषु मे हरिमाणं ऋ० १.५०.१२, अ० १.२२.४, तै० ब्रा० ३.७.६.२२; पैं० सं० १.२८.४ ।

शुक्रज्योतिश्च चित्र य० १७.८०; काठ० सं० १८.५५; मैं० सं० २.११.१; श० ब्रा० ९.३.१.१६; तै० सं० १.८.१३.१३; ४.६.५.१६; कपि० ६.३; २६.६; २८.६ ।

शुक्रश्च शुचिश्च य० १४.६; काठ० सं० १७.२८; मैं० सं० २.८.२७; श० ब्रा० २.८.१.१६; तै० सं० १.४.१४.३; ४.४.११.३ ।

शुक्रस्याद्य गवाशिर ऋ० २.४१.३ ।

शुक्रं तं अन्यद्यजन्ते ऋ० ६.५८.१, सा० ७५, तै० सं० ४.१.११.१२, काठ० सं० ४ १०९, तै० आ० १.२.४, १०.१, ४.५.६, नि० १२.१७; ऐ० ब्रा० १.४.२ ।

शुक्रं त्वा शुक्रेण य० ४.२६; श० ब्रा० ३.३.३.६—८, तै० सं० ३.३.३.१६; ४.२; कपि० १.१९; ५.१; ३७.७ ।

शुक्रं वहन्ति हरयो अ० १३.३.१६ ।

शुक्रः पवस्व देवेभ्यः ऋ० ९.१०९.५, सा० १२४२ ।

शुक्रः शुशुक्वाँ उषो न ऋ० १.६९.१ ।

शुक्रेभिरङ्गैः रज आ ऋ० ३.१.५ ।

शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि २.११.५, १७.१.२०; पैं० सं० १.५७.५; १८.३२.४; १९.४४.२१ ।

शुचा विद्धा व्योषया अ० ३.२५.४; पैं० सं० ९.२४.४ ।

शुचिमर्कैर्बृहस्पतिं ऋ० ३.६.२.५, तै० ब्रा० २.४.६.३ ।

शुचिरपः सूयवसा ऋ० २.२७.१३, तै० सं० २.१.११.१५; मैं० सं० ४.१४.२०३ ।

शुचिरसि पुरुनिष्ठाः ऋ० ८.२.६; ऐ० ब्रा० ५.१.१ ।

शुचिर्देवेषु अर्पिता ऋ० १.१४२.९ ।

शुचिं न यामन्निषिरं ऋ० ३.२.१४ ।

शुचिं नु स्तोमं नवजातम ऋ० ७ ९३.१, तै० सं० १.१४.४, तै० ब्रा० २.४.८.३, मैं०सं० ४ ११.९, १३.३९, १४.१०३, काठ० सं० १३.६३ ।

शुचिः पावक उच्यते ऋ० ९.२४.७, सा० ९६७ ।

शुचिः पावक वन्द्योग्ने ऋ० २.७.४, तै० सं० १.३.१४.५ ।

शुचिः पावको अद्भुतो ऋ० १.१४२.३ ।

शुचिः पुनानस्तन्वं ऋ० ९.७०.८ ।

शुचिः ष्म यस्या अत्रिवत् ऋ० ५.७.८ ।

शुची ते चक्रे ऋ० १०.८५.१२, अ० १४.१.१२, पैं० सं० १८.२.१ ।

शुची वो हव्या मरुतः ऋ० ७.५६.१२, तै० ब्रा० २.८.५.५, मैं० सं० ४.१४.२६२ ।

शुद्धवालः सर्वशुद्ध य० २४.३, मैं० सं० ३.१३.८, तै० सं० ५.६.१३.३, का० सं० २६.४ ।

शुद्धा न आपस्तन्वे अ० १२.१.३०; पैं० सं० १७.३.११ ।

शृङ्गाणीवेच्छृङ्गिणां ऋ० ३.८.१०, तै०ब्रा० २.४.७.११ ।

शृङ्गाभ्यां रक्ष ऋषति अ० ६.४.१७, पै०सं० १६.२५.७ ।

शृङ्गाभ्यां रक्षो नुदते अ० १६.३६.२; पै० सं० २.२७.२ ।

शृङ्गेव नः प्रथमा ऋ० २.३६.३; ऐ० ब्रा० १.४.४ ।

शृणुतं जरितुर्हवमिन्द्राग्नी ऋ० ७.६४.२; सा० ६१७ ।

शृणुतं जरितुर्हवं ऋ० ८.८५.४ ।

शृणोतु न ऊर्जां पतिर्गिरः ऋ० ५.४१.१२ ।

शृण्वन्तं पूषणं वयं ऋ० ६.५४.८ ।

शृण्वन्तु नो वृषणः ऋ० ३.५४.२० ।

शृण्वन्तु स्तोमं मरुतः ऋ० १.४४.१४ ।

शृण्वे वीर उग्रमुग्रं ऋ० ६.४७.१६, नि० ६. २२ ।

शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः ऋ० ६.४१.३; सा० ८६४ ।

शृतमजं शृतया अ० ४.१४.६ ।

शृतं त्वा हव्यमुप अ० ११.१.२५; पै० सं० १६.६१.५ ।

शृतं यदा करसि ऋ० १०.१६.२; अ० १८. २.५; तै० आ० ६.१.४ ।

शेरभक शेरभ अ० २.२४.१; पै० सं० २. ४२.१ ।

शेवारे वार्या ऋ० ८.१.२२ ।

शेवृधक शेवृध अ० २.२४.२; पै० सं० २. ४२.२ ।

शेषन्नु त इन्द्र सस्मिन्योनौ ऋ० १.१७४.४ ।

शेषे वनेषु मात्रो ऋ० ८.६०.१५, सा० ४६ ।

शैशिरावेनं मासौ अ० १५.४.१८ ।

शैशिरेण ऋतुना देवा य० २१.२८; काठ० सं० ३८.१२७; मै० सं० ३.११.१२६; का० सं० २३.२६ ।

शैशिरो मासौ गोप्तारौ अ० १५.४.१७ ।

शोचयामसि ते हार्दि अ० ६.८६.२ ।

शोचा शोचिष्ठ दीदिहि ऋ० ८.६०.६ ।

श्नथद्वृत्रमुत सनोति ऋ० ६.६०.१; तै०सं० ४.२.११.२, ४.३.१३.२६; तै० ब्रा० ३.५. ७.३ ।

श्याममयोऽस्य अ० ११.३.७; पै० सं० १६. ५३.१२ ।

श्यामश्च त्वा मा शबलः अ० ८.१.६; पै० सं० १६.१.६ ।

श्यामा सरूपं करणी अ० १.२४.६, पै० सं० १.२६.५ ।

श्यावदाता कुनखिनी अ० ७.६५.३, पै०सं० ६.२२.८ ।

श्यावाश्वस्य रेभतस्तथा ऋ० ८.३७.७ ।

श्यावाश्वस्य सुन्वतस्तथा ऋ० ८.३६.७ ।

श्यावाश्वस्य सुन्वतोऽत्रीणां ऋ० ८.३८.८ ।

श्यावाश्वं कृष्णमसितं अ० ११.२.१८ ।

श्येन आसामदितिः ऋ० ५.४४.११ ।

श्येनः क्रोडोऽन्तरिक्षं अ० ६.७.५; पै० सं० १६.१३६.६ ।

श्येनाविव पतथो ऋ० ८.३५.६ ।

श्येनीपती सा० अ० २०.१२६.१६ ।

श्येनो न योनिं सदनं ऋ० ६.७१.६; ऐ०ब्रा० १.४.५, ५.४ ।

श्येनो नृचक्षा दिव्यः अ० ७.४१.२ ।

श्येनोऽसि गायत्रच्छन्दा अ० ६.४८.१; गो० ब्रा० पू० ४.१२; पै० सं० १६. ४४.४ ।

श्रुधी हवमिन्द्र मा रिषण्यः ऋ० २.११.१, ऐ० ब्रा० ५.१.४।

श्रुधी हवमिन्द्र शूर ऋ० १०.१४८.५।

श्रुधी हवं तिरश्च्या ऋ० ८.९५.४, सा० ३४६, ८८३।

श्रुधी हवं विपिपानस्याद्रेः ऋ० ७.२२.४, सा० १७९८।

श्रुष्टीवानो हि दाशुषे ऋ० १.४५.२।

श्रुष्टी वां यज्ञ उद्यतः ऋ० ६.६८.१।

श्रुष्ट्यग्ने नवस्य मे ऋ० ८.२३.१४, सा० १०६, सा० ब्रा० ३.३.४.१०।

श्रूया अग्निश्चित्रभानु ऋ० २.१०.२।

श्रेयः केतो वसुजित् अ० ५.२०.१०।

श्रेयान्समेनमात्मनो अ० १५.१०.२।

श्रेष्ठमसि भेषजानां अ० ६.२१.२, पैं० सं० १.३८.२।

श्रेष्ठमसि श्रोत्रं मे अ० २.१७.५, तै० सं० ७.५.१.९,११।

श्रेष्ठं यविष्ठ भारताग्ने ऋ० २.७.१, तै०सं० १.३.१४.९, मै० सं० ४.११.१०६।

श्रेष्ठं यविष्ठमतिथि ऋ० १.४४.४।

श्रेष्ठं नो अद्य ऋ० १०.३५.७।

श्रेष्ठं वः पेशो ऋ० ४.३६.७।

श्रेष्ठो जातस्य रुद्रा ऋ० २.३३.३।

श्रोणामेक उदकं ऋ० १.१६१.१०।

श्रोत्रमसि श्रोत्रं मे दाः अ० २.१७.५।

श्लक्ष्णायां श्लक्ष्णिकायां अ० २०.१३३.५।

श्वन्तीरप्सरसो अ० ११.९.१५।

श्वसित्यप्सु हन्सो न ऋ० १.६५.९।

श्वात्रा स्थ वृत्रतुरो य० ६.३४, मै० सं० १.३.१२, श० ब्रा० ३.९.४.१६, तै० सं० १.४.१.४, ६.४.४.५, कपि० २.१७।

श्वात्राः पीता भवत य० ४.१२, श० ब्रा० ३.२.२.१८–१९।

श्वित्यञ्चो मा दक्षिणत ऋ० ७.३३.१।

श्वित्र आदित्यानाम् य० २४.३९, का० सं० २६.४०।

श्वेतं रूपं कृणुते यत् ऋ० ९.७४.७।

श्वेवैकः कपिरिवैकः अ० ४.३७.११, पैं० सं० १३.४.१६।

षड् च मे षष्टिश्च मे अ० ५.१५.६, पैं०सं० ८.५.६।

षट्त्रिंशांश्च चतुरः ऋ० १०.११४.६, मै० सं० ३.८.१२।

षट् त्वा पृच्छाम ऋषयः अ० ८.७.९, पैं०सं० १६.१८.७।

षडश्वां अतिथिग्व ऋ० ८.८६.१७।

षडस्य विष्ठाः शतम् य० २३.५८, श० ब्रा० १३.५.२.१९।

षड्भारां एको अचरन् ऋ० ३.५६.२।

षडाहुः शीतान् षडु अ० ८.९.१७, पैं० सं० १६.१९.७।

षड्चेभ्यः स्वाहा अ० १९.२३.३।

षड् जाता भूता अ० ८.९.१६, पैं० सं० १६.१९.६।

षष्टिश्च षट् च रेवती अ० १९.४७.४, पैं० सं० ६.२०.४।

षष्टिं सहस्राश्वस्य ऋ० ८.४६.२२।

षष्ठ्यां शरत्सु अ० १२.३.३४।

षष्ठवाट् च मे प्रष्ठौही य० १८.२७।

षष्ठवाहो विराज य० २४.१३।

षष्ठाय स्वाहा अ० १९.२२.२।

षोडशर्चेभ्यः स्वाहा अ० १९.२३.१३।

षोडशी स्तोम ओजो य० १५.३, श० ब्रा०

८.५.१.१०–१२, तै० सं० ४.३.१३.४, कपि० २६.५, ३२.१७।

स आ गमदिन्द्रो योवसू ऋ० ५.३६.१।

स आ नो योनिं ऋ० ७.९७.४।

स आ वक्षि महि ऋ० १०.३.७, नि० ४.१८।

स आहुतो वि रोचते ऋ० १०.११८.३, ऐ० ब्रा० १.३.५।

स इच्छकं सघाघते अ० २०.१२६.१२।

स इज्जनेन स विशा ऋ० २.२६.३, तै० सं० २.३.१४.१५, तै० ब्रा० २.८.५.३; मै० सं० ४.१४.१३८।

स इत्क्षेति सुधित ऋ० ४.५०.८, तै० ब्रा० २.४.६.४; ऐ० ब्रा० ८.५.३।

स इत् तत् स्योनं हरति अ० १४.१.३०।

स इत्तन्तुं स वि जानात्योतुं ऋ० ६.९.३।

स इत्तमोऽवयुनं ततन्वत् ऋ० ६.२१.३, नि० ५.१३।

स इत्सुदानुः स्ववाँ ऋ० ६.६८.५।

स इत्स्वपा भुवनेष्वास ऋ० ४.५६.३, तै० ब्रा० २.८.४.७; मै० सं० ४.१४.८८।

स इदग्निः कण्वतमः १०.११५.५।

स इदस्तेव प्रतिधाद् ऋ० ६.३.५; मै० सं० ४.१४.२१५।

स इद्दानाय दभ्याय ऋ० १०.६१.२।

स इद्दासं तुवीरवं ऋ० १०.९९.६।

स इद्भोजो यो गृहवे ऋ० १०.११७.३।

स इद्राजा प्रतिजन्यानि ऋ० ४.५०.७; ऐ० ब्रा० ८.५.३।

स इद्वने नमस्युभिर्वचस्यते ऋ० १.५५.४।

स इद् व्याघ्रो भवति अ० ८.५.१२; पै० सं० १६.२८.२।

स इधान उषसो राम्या ऋ० २.२.८।

स इधानो वसुष्कविः ऋ० १.७९.५, य० १५.३६, सा० १५६२, तै० सं० ४.४.४.१७; मै० सं० २.१३.५०।

स इन्नु रायः सुभृतस्य ऋ० १०.१४७.४।

स इन्महानि समिथानि ऋ० १.५५.५।

स इषुहस्तैः सनिषङ्गिभिः ऋ० १०.१०३.३, य० १७.३५, सा० १८५१, अ० १९.१३.४, तै० सं० ४.६.४.३; मै० सं० २.१०.३६; काठ० सं० १८.४७; पै० सं० ७.४.४।

स ईं पाहि य ऋजीषी ऋ० ६.१७.२, तै० ब्रा० २.५.८.१; ऐ० ब्रा० ६.३.३।

स ईं महीं धुनिं ऋ० २.१५.५।

स ईं मृगो अप्यो ऋ० १.१४५.५।

स ईं रथो न भुरिषाड् ऋ० ९.८८.२, सा० १४७२।

स ईं रेभो न प्रति वस्त ऋ० ६.३.६।

स ईं वृषा जनयत्तासु ऋ० २.३५.१३; काठ० सं० ३५.२०।

स ईं वृषा न फेनमस्य ऋ० १०.६१.८।

स ईं सत्येभिः सखिभिः ऋ० १०.६७.७, अ० २०.९१.७, तै० ब्रा० २.८.५.१, नि० ५.४; मै० सं० ४.१४.१३४।

स ईं स्पृधो वनते अप्रतीतः ६.२०.९।

स उत्तमां दिशमनु अ० १५.६.७।

स उत्तिष्ठ प्रेहि अ० ४.१२.६।

स उदतिष्ठत् स अ० १५.२.१, ९, १५, २१।

स उपहूत उपहूतः अ० ९.६.१२।

स उपहूतः पृथिव्यां अ० ९.६.७।

स उपहूतो दिवि अ० ९.६.९; पै० सं० १६.११७.३।

स उपहूतो देवेषु अ० ६.६.१० ।
स उपहूतोऽन्तरिक्षे अ० ६.६.८; पैं० सं० १६.११७.२ ।
स उपहूतो लोकेषु अ० ६.६.११; पैं० सं० १६.११७.५ ।
स ऊर्ध्वां दिशमनु अ० १५.६.४ ।
स एकव्रात्योऽभवत् अ० १५.१.६ ।
स एति सविता अ० १३.४.१; पैं० सं० १८.२७.६ ।
स एव मृत्युः सोऽमृतं अ० १३.४.२५ ।
स एव सं भुवनानि अ० १६.५३.४; पैं० सं० १२.२.४ ।
सकृद्ध द्यौरजायत ऋ० ६.४८.२२ ।
स केतुरध्वराणां ऋ० ३.१०.४ ।
सक्तुमिव तितउना ऋ० १०.७१.२, नि० ४.१०; प० वि० १२८; जी० ले० ६४५ ।
स क्षपः परि षस्वजे ऋ० ८.४१.३ ।
सखाय आ नि षीदत पुनानाय ऋ० ६.१०४.१, सा० ५६८, ११५७; तां ब्रा० १२.५.५; १४.५.४ ।
सखाय आ नि षीदत सविता ऋ० १.२२.८ ।
सखाय आ शिषामहि ऋ० ८.२४.१, सा० ३६०, अ० १८.१.३७ ।
सखायस्त इन्द्र विश्वह स्याम ऋ० ७.२१.६ ।
सखायस्ते विषुरा ऋ० ५.१२.५ ।
सखायस्त्वा ववृमहे ऋ० ३.६.१, सा० ६२ ।
सखायः क्रतुमिच्छत ऋ० ८.७०.१३ ।
सखायः सं वः सम्यञ्च ऋ० ५.७.१, य० १५.२६, तैं० सं० २.६.११.१८; ४.४.४.११; मैं० सं० ४.११.१४; का० सं० २.६३ ।
सखायाविव सचा० अ० ६.४२.२ ।
सखायो ब्रह्मवाहसे ऋ० ६.४५.४ ।
सखा सख्ये अपचत्तूयमग्निः ऋ० ५.२६.७ ।
सखासावस्मभ्यम् अ० १.२६.२ ।
सखा ह यत्र सखिभिर्नवग्वै ऋ० ३.३६.५ ।
सखीयतामविता बोधि ऋ० ४.१७.१८ ।
सखे विष्णो वितरं ऋ० ८.१००.१२ ।
सखे सखायमभ्या ऋ० ४.१.३; काठ० सं० २६.३७; ऐ० ब्रा० १.४.५ ।
सख्ये त इन्द्र वाजिनो ऋ० १.११.२; सा० ८२८ ।
स गृणानो अद्भिर्देववान् ऋ० १०.६१.२६ ।
स गृत्सो अग्निस्तरुणश्चिद् ऋ० ७.४.२ ।
स गोमघा जरित्रे ऋ० ६.३५.४ ।
स गोरश्वस्य वि व्रजं ऋ० ८.३२.५ ।
स ग्रामेभिः सनिता ऋ० १.१००.१० ।
स ग्राह्याः पाशान्मा अ० १६.८.३ ।
सघाघते गोमीद्या अ० २०.१२६.१३ ।
स घा तं वृषणं ऋ० १.८२.४, सा० ४२४, सा० ब्रा० ३.३.६.५ ।
स घा नः सूनुः ऋ० १.२७.२, सा० १६३५ ।
स घा नो देवः सविता ऋ० ७.४५.३, अ० ६.१.३, तैं० ब्रा० २.८.६.१; श० ब्रा० १३.४.२.१०; मैं० सं० ४.१४.८२ पैं० सं० १६.१.३ ।
स घा नो योग ऋ० १.५.३, सा० ७४२, अ० २०.६६.१ ।
स घा यस्ते सा० ३६५ ।
स घा यस्ते ददाशति ऋ० ३.१०.३ ।

१.२.१४.६; मै० सं० ४.११.११५; काठ० सं० ६.४६।

स तेजीयसा मनसा ऋ० ३.१६.३, तै० सं० १.३.१४.१८; मै० सं० ४.२.२१४।

सतो नूनं कवयः सं ऋ० १०.५३.१०।

स तौ प्र वेद स उ तौ अ० ६.१.७।

सत्तो होता न ऋत्वियः ऋ० ३.४१.२, अ० २०.२३.२।

सत्तो होता मनुष्वदा ऋ० १.१०५.१४।

सत्यजितं शपथ० अ० ४.१७.२।

सत्यमहं गभीरः अ० ५.११.३; पै० सं० ५.२३.२।

सत्यमित्तन्न त्वावां ऋ० ६.३०.४, तै० ब्रा० २.६.६.१; मै० सं० ४.१४.२७६; काठ० सं० ३८.८५।

सत्यमित्था महेनदि ऋ० ८.७४.१५।

सत्यमित्था वृषेदसि ऋ० ८.३३.१०, सा० २६३; आ० ब्रा० ६.३.४.७; सा० ब्रा० ३.३.६.७।

सत्यमिद्वा उ अश्विना ऋ० ५.७३.६।

सत्यमिद्वा उ तं वयं ऋ० ८.६२.१२।

सत्यमुग्रस्य बृहतः ऋ० ६.११३.५।

सत्यमूचुर्नर एवा हि चक्रुः ऋ० ४.३३.६।

सत्यं च मे श्रद्धा य० १८.५; काठ० सं० १८.५७; मै० सं० २.११.३; कपि० २८.८।

सत्यं चर्तं च चक्षुषी अ० ६.५.२१।

सत्यं तत्तुर्वशे यदौ ऋ० ८.४५.२७।

सत्यं तदिन्द्रा वरुणा ऋ० ८.५६.३।

सत्यं त्वेषा अमवन्तो ऋ० १.३८.७।

सत्यं बृहदृतमुग्रं अ० १२.१.१; पै० सं० १७.१.१; मै० सं० ४.१४.१५६।

सत्याय च तपसे अ० १२.३.४६; पै० सं० १७.४०.६।

सत्यामाशिषं कृणुता ऋ० १०.६७.११, अ० २०.६१.११।

सत्या सत्येभिर्महती ऋ० ७.७५.७।

सत्ये अन्यः समाहितो अ० १३.१.५०।

सत्येनावृता श्रिया अ० १२.५.२; पै० सं० १६.१४०.२; सं० वि० गृहाश्रमसंस्कार।

सत्येनोत्तभिता भूमिः ऋ० १०.८५.१, अ० १४.१.१; पै० सं० १८.१.१; ऋ० भू० प्रकाश्यप्रकाशकविषय।

सत्येनोर्ध्वस्तपति अ० १०.८.१९; पै० सं० १६.१०२.६।

सत्रस्य ऋद्धिरसि य० ८.५२।

सत्रा ते अनु कृष्टयो ऋ० ४.३०.२।

सत्रा त्वं पुरुष्टुतं ऋ० ८.१५.११।

सत्रा मदासस्तव ऋ० ६.३६.१; ऐ० ब्रा० ५.२.३।

सत्रा यदीं भार्वरस्य ऋ० ४.२१.७।

सत्रासाहं वरेण्यं सहोदां ऋ० ३.३४.८, अ० २०.११.८।

सत्रासाहो जनभक्षो ऋ० २.२१.३।

सत्रा सोमा अभवन् ऋ० ४.१७.६।

सत्राहणं दाधृषिं ऋ० ४.१७.८, सा० ३३५।

स त्रितस्याधिसानवि ऋ० ६.३७.४, सा० १२६५।

सत्रे ह जाताविषिता ऋ० ७.३३.१३।

स त्वमग्ने प्रतीकेन ऋ० १०.११८.८, तै० सं० २.५.१२.२८; काठ० सं० ७.१०४; ऐ० ब्रा० १.३.५।

स त्वमग्ने विभावसुः ऋ० ८.४३.३२।

स त्वमग्ने सौभगत्वस्य ऋ० १.६४.१६।

स त्वमस्मदप द्विषो ऋ० ८.११.३।

सद्योजुवस्ते वाजा ऋ० ८.८१.९ ।

सद्यो ह जातो वृषभः ऋ० ३.४८.१; ऐ० ब्रा० ६.४.२; ४ ।

स द्रुहवणे मनुष ऋ० १०.६६.७ ।

स द्विबन्धुर्वैतरणो ऋ० १०.६१.१७ ।

सधमादो द्युम्निनीराप य० १०.७; काठ० सं० १५.१२; मै० सं० ४.१३.३४; श० ब्रा० ५.३.५.१६; तै० सं० १.८.१२.५ ।

स धाता स विधर्ता अ० १३.४.३ ।

स धारयत्पृथिवीं ऋ० १.१०३.२ ।

सध्रीचीनान् वः संमन अ० ३.३०.७; पै० सं० ५.१६.८; सं० वि० गृहाश्रम संस्कार ।

सध्रीचीः सिन्धुमुशतीरिवा ऋ० १० १११. १० ।

सध्रीमा यन्ति परि ऋ० २.१३.२ ।

स ध्रुवां दिशमनु अ० १५.६.१ ।

स न इन्द्र त्वयताया ऋ० ७.२०.१०, २१.१० ।

स न इन्द्र यज्यवे ऋ० ६.६१.१२, य० २६. १७, सा० ५६२, ६७३ ।

स न इन्द्र शिवः सखा ऋ० ८.९३.३, सा० १४५२ अ० २०.७.३; पै० सं० १६. ४२.५ ।

स न ईडानया सह ऋ० ८.१०२.२ ।

स न ऊर्जे व्यव्ययं ऋ० ९.४९.४, सा० १४३८ ।

सनत्साश्व्यं पशुं ऋ० ५.६१.५ ।

सनद्वाजं विप्रवीरं ऋ० १०.४७.४ ।

स नश्चित्राभिरद्रिवो ऋ० ४.३२.५ ।

स न स्तवान आ भर गायत्रेण ऋ० १. १२.११ ।

स न स्तवान आ भर रयिं ऋ० ८.२४.३ ।

स नः क्षुमन्तं सदने ऋ० १०.३८.२ ।

स नः पप्रिः पारयति ऋ० ८.१६.११, अ० २०.४६.२ ।

स नः पवस्व वाजयुः ऋ० ९.४४.४ ।

स नः पवस्व शं गवे ऋ० ९.११.३, सा० ६५३; ष० ब्रा० २.१.१०; सं० वि० सामान्य प्रकरण ।

स नः पावक दीदिवो ऋ० १.१२.१०, य० १७.९, तै० सं० १.३.१४.२६; ५.५.१०, ४.६.१.१०; कपि० २८.१; का० सं० १८. १०; मै० सं० १.५.१२; काठ० सं० १६. ३२, श० ब्रा० ९.१.२.३० ।

स नः पावक दीदिहि ऋ० ३.१०.८ ।

स नः पिता जनिता अ० २.१.३ ।

स नः पितेव सूनवे ऋ० १.१.९, य० ३.२४, तै० सं० १.५.६.७, नि० ३.२१; का० सं० ३.३२; मै० सं० १.५.२.७; ऐ० ब्रा० १.५. ४; काठ० सं० ७.५; कपि० ५.१.५; सं० वि० स्वस्तिवाचन० ल० वेदाङ्क० १५४; ऋ० भू०अलङ्कारभेदा; श० ब्रा० २.३. ४.३०; आर्याभि० २.१५; सं० वि० स्वस्तिवाचन ।

स नः पुनान आ भर ऋ० ९.६१.६, सा० ७८९ ।

स नः पुनान आ भर रयिं ऋ० ९.४०.५

स नः पृथु श्रवाय्यं ऋ० ६.१६.१२, सा० ६६२, तै० ब्रा० ३.५.२.१ ।

स नः शक्रश्चिदाशकन् ऋ० ८.३२.१२ ।

स नः शर्माणि वीतये ऋ० ३.१३.४; ऐ० ब्रा० २.५.३, ८ ।

स नः सिन्धुमिव नावयाति ऋ० १.९७.८, अ० ४.३३.८, तै० आ० ६.११.२ ।

स नो बोधि सहस्य ऋ० २.२.११।

स नो भगाय वायवे ऋ० ९.६१.९, सा० १०८३।

स नो भगाय वायवे विप्रवीरः ऋ० ९.४५.५।

स नो भवः परि वृणक्तु अ० ११.२.८; पैं० सं० १६.१०४.८।

स नो भुवनस्य य० १८.४४; श० ब्रा० ९.४.१.१६; तैं० सं० ३.४.७.२२; कपि० २९.३।

स नो मदानां पत ऋ० ९.१०४.५।

स नो मन्द्राभिमध्वरे ऋ० ६.१६.२, सा० १४७५।

स नो महां अनिमानो ऋ० १.२७.११, सा० १६६४।

स नो मित्रमहस्त्व ऋ० ८.४४.१४, सा० १७१३।

स नो युवेन्द्रो जोहूत्रः ऋ० २.२०.३।

स नो रक्षतु जङ्गिडो अ० १९.३५.२; पैं० सं० ११.४.२।

स नो राधांस्या भरे० ऋ० ७.१५.११।

स नो रेवत्समिधानः ऋ० २.२.६।

स नो वस्व उप ऋ० ८.७१.९।

स नो वाजाय ऋ० ६.१७.१४।

स नो वाजेष्वविता ऋ० ८.४६.१३।

स नो विभावा ऋ० ६.४.२।

स नो विश्वा दिवो ऋ० ९.५७.४, सा० १७६४।

स नो विश्वान्या भर ऋ० ८.९३.२९।

स नो विश्वाहा सुक्रतुः ऋ० १.२५.१२।

स नो विश्वेभिर्देवेभिः ऋ० ८.७१.३।

स नो वृषन्त्सनिष्ठया ऋ० ८.९२.१५।

स नो वृषन्नमुं चरुं ऋ० १.७.६, सा० १६२१, अ० २०.७०.१२, नि० ६.१६।

स नो वृष्टिं दिवस्परि ऋ० २.६.५।

स नो वेदो अमात्यं ऋ० ७.१५.३, सा० १३८१; ऐ० ब्रा० १.४.८।

स नो हरीणां पत ऋ० ९.१०५.५, सा० १६१२।

सन्ति ह्यर्य आशिष ऋ० ८.५४.७।

सन्धये जारं गेहाय य० ३०.९; का० सं० ३९.९।

सन्नः सिन्धुरवभृथ य० ८.५९।

सन्नुच्छिष्टे असंश्चोभौ अ० ११.७.३।

स पचामि स ददामि अ० ६.१२३.४; गो० ब्रा० पू० ५.२१।

सपत्नऋषीनभ्यावर्ते अ० १०.५.३९।

सपत्नक्षयणमसि अ० २.१८.२; पैं० सं० २.४६.४।

सपत्नक्षयणं दर्भ अ० १९.३०.४; पैं० सं० १३.११.२२।

सपत्नक्षयणो वृषाभि० अ० १ २९.६; पैं० सं० १.११.५।

सपत्नहनमृषभं घृतेन अ० ९.२.१; पैं० सं० १६.७६.१।

सपत्नहा शतकाण्डः अ० १९.३२.१०; पैं० सं० १२.४.१०।

स पत्यत उभयोर्नृम्णमयोः ऋ० ६.२५.६।

स पप्रथानो अभि पञ्च ऋ० ७.६९.२, तै० ब्रा० २.८.७.७।

स परमां दिशमनु अ० १५ ६.१३।

स पर्यगाच्छुक्रम य० ४०.८; का० सं० ४०.८; स० प्र० ७—८ समु०; ऋ० भू० वेदनित्यत्व०; वेदविषयविचार; ग्रन्थप्रामाण्याप्रामाण्यविषय; आर्याभि० २.२; ल० वे०

सभामेति कितवः ऋ० १०.३४.६ ।

सभायाश्च वै स समिते अ० १५.९.३ ।

स भिक्षमाणो अमृतस्य ऋ० ९.७०.२, सा० १४२४ ।

स भूतु यो प्रथमाय ऋ० २.१७.२ ।

सभ्यः सभां मे पाहि अ० १९.५५.६, स० प्र० ६ समु०, सं० वि० गृहाश्रमसंस्कार; ऋ० भू० राजप्रजाधर्मविषय ।

स भ्रातरं वरुणमग्न ऋ० ४.१.२ ।

समह्वे देव्या धिया य० ४.२३, श० ब्रा० ३.३.१.१२, कपि० १.१७ ।

समग्नयो विदुरन्यो अ० १२.३.५०; पै० सं० १७.४.१० ।

समग्निरग्निना य० ३७.१५; मै० सं० ४.९.९६; श० ब्रा० १४.१.४.५,६; का० सं० ३७.१५; कपि० ४८.४ ।

समजैषमिमा अहं ऋ० १०.१५९.६ ।

समज्मना जनिम मानुषाणाम् ऋ० ६.१८.७ ।

समत्रया पर्वत्या वसूनि ऋ० १०.६९.६ ।

समञ्जन्तु विश्वे देवाः ऋ० १०.८५.४७; सं० वि० विवाह-संस्कार ।

समत्र गावोऽभितो ऋ० ५.३०.१० ।

स मत्सरः पृत्सु वन्वन् ऋ० ९.९६.८ ।

समत्सु त्वा शूर सतामुराणं ऋ० १.१७३.७ ।

समत्स्वग्निमवसे ऋ० ८.११.९; सा० ११६८, तै० ब्रा० २.४.४.४ ।

समध्वरायोषसो ऋ० ७.४१.६; य० ३४.३९, अ० ३.१६.६; तै० ब्रा० २.८.९.९; पै०सं० ४.३१.६ ।

समना तूर्णिरुप यासि ऋ० १०.७३.४ ।

समनेव वपुष्यतः ऋ० ८.६२.९ ।

स मन्दस्वा ह्यनु जोषम् ऋ० ६.२३.८ ।

स मन्दस्वा ह्यन्धसो ऋ० ३.४१.६, ६.४५.२७; अ० २०.२३.६ ।

स मन्द्रया च जिह्वया ऋ० ७.१६.९ ।

समन्या यन्त्युप यन्ति ऋ० २.३५.३; सा० ६०७; तै० सं० २.५.१२.१६; काठ० सं० ३५.१६; ऐ० ब्रा० २.३.२, आ० ब्रा० ६.३.३.२; सा० ब्रा० ३.२.३.७ ।

स मन्युमीः समदनस्यक० ऋ० १.१००.६ ।

स मन्युं मर्त्यानां ऋ० ८.७८.६ ।

स मर्तो अग्ने स्वनीकरेवान् ऋ० ७.१.२३ ।

स मर्मृजान आयुभिरिभो ऋ० ९.५७.३; सा० १७६३ ।

स मर्मृजान आयुभिः प्रयस्वान् ऋ० ९.९६.२३ ।

स मर्मृजान इन्द्रियाय ऋ० ९.७०.५ ।

समश्विनोरवसा ऋ० ५.४२.१८, ४३.१७, ७६.५, ७७.;५ ऐ० ब्रा० १.४.४ ।

समस्मिञ्जायमान आसत ऋ० १०.९५.७; नि० १०.४५ ।

समस्मिल्लोके समु अ० १२.३.३; पै० सं० १७.३६.३ ।

समस्य मन्यवे विशो ऋ० ८.६.४, सा० १३७, १६५१, अ० २०.१०७.१ ।

समस्य हरिं हरयो ऋ० ९.९६.२ ।

समहमेषां राष्ट्रं अ० ३.१९.२; पै० सं० ३.१९.२ ।

स महिमा सद्रुर्भूत्वान्तं अ० १५.७.१ ।

स मह्ना विश्वा ऋ० ७.१२.२; सा० १३०५ ।

समं ज्योतिः सूर्येण अ० ४.१८.१; गो० ब्रा० उ० ४.४,१८ ।

समाचिनुस्वानु० अ० ११.१.३६ ।

स मा जीवीत्तं प्राणो अ० १६.७.१३ ।

३.६.१.१; ऐ० ब्रा० २.१.२; मै० सं० ४.१३.४; काठ० सं० १५.५२।

समिद्धाग्निर्वनवत्स्तीर्ण० ५.३७.२।

समिद्धे अग्नावधि य० १७.५५; काठ० सं० १८.२३; मै० सं० २.१०.४६; श० ब्रा० ६.२.३.८,६; कपि० २८.३।

समिद्धे अग्नौ सुत ऋ० ६.४०.३।

समिद्धेष्वाग्निष्वानजाना ऋ० १.१०८.४।

समिद्धो अग्न आ वह ऋ० १.१४२.१।

समिद्धो अग्न आहुत ऋ० ५.२८.५; अ० १२.२.१८; तै० सं० २.५.८.१०; तै० ब्रा० ३.५.२.३; पै० सं० १७.३१.७।

समिद्धो अग्निरश्विना य० २०.५५; अ० ७.७३.२; मै० सं० ३.११.१३; का०सं० २२.४३, ३८.८८; पै० सं० १८.१७.८।

समिद्धो अग्निर्दिवि ऋ० ५.२८.१।

समिद्धो अग्निर्निहितः ऋ० २.३.१।

समिद्धो अग्निर्वृषणा अ० ७.७३.१; पै० सं० २०.११.६,७।

समिद्धो अग्निः समिधा य० २१.१२; काठ० सं० ३८.१११; मै० सं० ३.११.११३; का० सं० २३.१३; पै० सं० १६.८६.४।

समिद्धो अग्निः समिधानो अ० १३.१.२८।

समिद्धो अग्ने समिधा अ० ११.१.४।

समिद्धो अञ्जन्कृदरं य० २६.१; मै० सं० ३.१६.१७; श० ब्रा० १३.२.२.१४; तै० सं० ५.१.११.१; का० सं० ३१.१।

समिद्धो अद्य मनुषो ऋ० १०.११०.१; य० २६.२५; अ० ५.१२.१; तै० ब्रा० ३ ६.३.१; नि० ८.२५; काठ० सं० १६.२२६; मै० सं० ४.१३.११; का० सं० ३१.३७।

समिद्धो अद्य राजसि ऋ० १.१८८.१।

समिद्धो विश्वतस्पतिः ऋ० ६.५.१।

समिधाग्निं दुवस्यत ऋ० ८.४४.१; य० ३.१, १२.३०; तै० सं० ४.२.३.४, ५.२.२.१२; तै० ब्रा० १.२.१.६; मै० सं० २.७.१२१; ऐ० ब्रा० १.३.६; काठ०सं० ७.४२, १६.१४४; श० ब्रा० ६.८.१.६; गो० ब्रा० उ० १.४.३२७, ३.१२.४६६; कपि० ६.२; २५.१, ३२.२; सं० वि० सामान्य प्रकरण; ऋ० भू० पञ्चमहायज्ञविधिः।

समिधा जातवेदसे ऋ० ७.१४.१।

समिधान उ सन्त्य ऋ० ८.४४.६।

समिधानः सहस्रजित् ऋ० ५.२६.६।

समिधा यस्त आहुतिं ऋ० ६.२.५।

समिधा यो निशिती ऋ० ८.१६.१४।

समिध्यमानः प्रथमानु ऋ० ३.१७.१; तै० ब्रा० १.२.१.१०।

समिध्यमानो अध्वरेऽग्निः ऋ० ३.२७.४; तै० ब्रा० ३.५.२.३।

समिध्यमानो अमृतस्य ऋ० ५.२८.२।

समिन्द्र गर्दभं ऋ० १.२६.५; अ० २०.७४.५।

समिन्द्र णो मनसा ऋ० ५.४२.४, य० ८.१५, अ० ७.६७.२, काठ० सं० ४.७२, तै० सं० १.४.४४.२, तै० ब्रा० २.८.८.६, मै० सं० १.३.२०८, श० ब्रा० ४.४.४७, कपि० ३.६।

समिन्द्र राया समिषा ऋ० १.५३.५, अ० २०.२१.५, मै० सं० २.२.२३, काठ० सं० १०.३४।

समिन्द्रेरणोत वायुना ऋ० ६.६१.८; सा० १०८२।

समिन्द्रेरय गामनड्वाहं ऋ० १०.५६.१०।

समिन्द्रो गा अजयत् ऋ० ४.१७.११।

समिन्द्रो रायो बृहती ऋ० ८.५२.१०, सा० १६७८।

समिन्धते अमर्त्यं अ० १८.४.४१।

समिन्धते संकसुकं अ० १२.२.११, पै० सं० १७.३१.१।

समिमां मात्रां मिमीमहे अ० १८.२.४४।

समीक्षयन्तु तविषाः अ० ४.१५.२।

समीक्षयस्व गायतो अ० ४.१५.३।

समीचीना अनूषत ऋ० ९.३९.६, सा०९०३।

समीचीनास आसते ऋ० ९.१०.७, सा० ११२५।

समीचीने अभित्मना ऋ० ९.१०२.७।

समी रथं न भुरिजोः ऋ० ९.७१.५।

समी वत्सं न मातृभिः ऋ० ९.१०४.२, सा० ११५८, ऐ० ब्रा० १.४.५।

समी सखायो अस्वरन् ऋ० ९.४५.५।

समीं पणेजाति ऋ० ५.३४.७।

समीं रेभसो अस्वरन् ऋ० ८.९७.११, सा० ९३२, अ० ३०.५४.२।

समुत्पतन्तु प्रदिशो अ० ४.१५.१, पै० सं० ५.७.१।

समुत्ये महतीरपः ऋ० ८.७.२२, ऐ० ब्रा० १.४.५।

समु त्वा धीभिरस्वरन् ऋ० ९.६६.८।

समुद्र ईशे स्रवतामग्निः अ० ६.८६.२, पै० सं० १९.६.११।

समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य ऋ० ७.४९.१।

समुद्रमासामव तस्थे ऋ० ५.४४.९।

समुद्रस्य त्वाऽवकयाग्ने य० १७.४, काठ०सं० १७.७२, मै० सं० २.१०.२।

समुद्रं गच्छ स्वाहा य० ६.२१, काठ० सं० ३.२६, मै० सं० १.२.११६, ३.१०.२५, श० ब्रा० ३.२.१.३२, ८.४.११–१७, ५.१–५, कपि० २.१५।

समुद्रं व प्र हिणोमि अ० १०.५.२३।

समुद्रः सिन्धूरजो ऋ० १०.६६.११।

समुद्रस्य त्वावकयाग्ने य० १७.४।

समुद्राज्जातो मणिः अ० ४.१०.५।

समुद्रादर्णवादधि ऋ० १०.१९०.२, तै०आ० १०.१.१४, सं० वि० गृहाश्रम संस्कार, ल० प० वि० २१५।

समुद्रादूर्मिर्मधूमाँ ऋ० ४.५८.१, य० १७.८९, तै० आ० १०.१०.२, ऐ० ब्रा० ५.३.१; काठ० सं० ४०.४२, श० ब्रा० ९.१.२.२५, कपि० २८.१।

समुद्रादूर्मिमुदियर्ति ऋ० १०.१२३.२, ऐ० ब्रा० १.४.५, नि० ७.१७।

समुद्राय त्वा वाताय य० ३८.७ का० सं० ३८.७, शा० ब्रा० १४.२.२.२–५।

समुद्राय शिशुमारान् य० २४.२१, मै० सं० ३.१४.२, का० सं० २६.२२।

समुद्रिया अप्सरसो ऋ० ९.७८.३।

समुद्रे अन्तः शयत ऋ० ८.१००.९।

समुद्रेण सिन्धवो ऋ० ३.३६.७।

समुद्रे ते हृदयम् य० ८.२५, २०.१९, काठ० सं० ४.८१, १८.८०, ३८.६१, का० सं० २२.५, श० ब्रा० ४.४.५.२०, १२.९.२.५, ६, मै० सं० १.३.११८, २.१२.१३, कपि० २.१५, ३.११, ४५.४।

समुद्रे त्वा नृमणा ऋ० १०.४५.३, य० १२.२०, तै० सं० ४.२.२.३, मै० सं० २.७.११०, काठ० सं० १६.१०१, श० ब्रा० ६.७.४.५।

स वीरो अप्रतिष्कुत ऋ० ७.३२.६ ।
स वीरो दक्षसाधनो ऋ० ९.१०१.१५, सा० १३८८ ।
स वृत्रहत्ये हव्यः स ऋ० ४.२४.२ ।
स वृत्रहा वृषा सुतो ऋ० ९.३७.५, सा० १२९६ ।
स वृत्रहेन्द्रः ऋभुक्षाः ऋ० ८.९६.२१ ।
स वृत्रहेन्द्रश्चर्षणीधृत् ऋ० ८.९६.२० ।
स वृत्रहेन्द्रः कृष्णयोनीः ऋ० २.२०.७ ।
स वेतसुं दशमायं ऋ० ६.२०.८ ।
स वेद देव आनमं ऋ० ४.८.३; काठ० सं० १२.९२ ।
स वेद पुत्रः पितरं अ० ७.१.२; पै० सं० २०.१.२; तै० सं० २.२.१२.४; ६.११. २१ ।
स वेद सुष्टुतीनां ऋ० १०.२६.३ ।
स वै दिग्भ्योऽजायत अ० १३.४.३४ ।
स वै दिवोऽजायत अ० १३.४.३३ ।
स वै भूमेरजायत अ० १३.४.३५ ।
स वै यज्ञादजायत अ० १३.४.३६ ।
स वै रात्र्या अजायत अ० १३.४.३० ।
स वै वायोरजायत अ० १३.४.३२ ।
सव्यामनु स्फिग्यं ऋ० ८.४.८, सा० १६०६ ।
स व्राधतः शवसानेभिः ऋ० १०.९९.६ ।
स व्राधतो नहुषो ऋ० १.१२२.१० ।
स शुष्मी कलशेष्वा ऋ० ६.१८.७ ।
स शेवृधमधि धा द्युम्नमस्मे ऋ० १.५४. ११, तै० ब्रा० २.६.९.१; मै० सं० ४. १४.१२८ ।
स श्रुधि यः स्मा पृतनासु ऋ० १.१२९.२ ।
स श्वितानस्तन्यतू ऋ० ६.६.२, तै० सं० १. ३.१४.१० ।
स सत्पतिः शवसा ऋ० ६.१३.३ ।
स सत्यसत्वन्महते ऋ० ६.३१.५ ।
स सद्म परिणीयते ऋ० ४.९.३ ।
ससन्तु त्या अरातयो ऋ० १.२९.४, अ० २०.७४.४ ।
स सप्त धीतिभिर्हितो ऋ० ९.९.४ ।
स समुद्रो अपीच्यः ऋ० ८.४१.८ ।
स सर्गेण शवसा ऋ० ६.३२.५ ।
ससर्परीर भरत् ऋ० ३.५३.१६ ।
ससर्परीरमतिं ऋ० ३.५३.१५ ।
स सर्वस्मै वि पश्यति अ० १३.४.१९ ।
स सर्वानन्तर्देशाननु अ० १५.६.२४ ।
स सव्येन यमति ऋ० १.१००.९ ।
ससस्य यद्वियुता ऋ० ४.७.७ ।
स संनयः स विनयः ऋ० २.२४.९ ।
स संवत्सरमूर्ध्वो० अ० १५.३.१ ।
सं संस्तिरो विष्टरः ऋ० १.१४०.७ ।
ससानात्यां उत सूर्यं ऋ० ३.३४.९, अ० २०.११.९ ।
स सुक्रतुर्यो वि दुरः ऋ० ७.९.२ ।
स सुक्रतु रणिता ऋ० ८.९६.१९ ।
स सुक्रतुर्ऋतचिदस्तु ऋ० ७.८५.४ ।
स सुक्रतुः पुरोहितो ऋ० १.१२८.४ ।
स सुतः पीतये वृषा ऋ० ९.३७.१, सा० १२९२ ।
स सुत्रामा स्ववां अ० ७.९२.१, २०. १२५.७ ।
स सुन्वत इन्द्रः सूर्यं ऋ० २.१९.५ ।
स सुन्वे यो वसूनां ऋ० ९.१०८.१३, सा० ५८२, १०९६; तां० ब्रा० १३.११.२; सा० ब्रा० ३.२.१.५ ।
स सुष्टुभा स ऋक्वता ऋ० ४.५०.५,

अ० २०.८८.५, तै० सं० २.३.१४.१६; काठ० सं० १०.४५ ।

स सुष्टुभा स स्तुभा ऋ० १.६२.४; मै० सं० ४.१२.१३ ।

स सूनुभिर्न रुद्रेभिर्ऋभ्वा १.१००.५ ।

स सूनुर्मातरा सुचिः ऋ० ६.६.३, सा० ६३६ ।

स सूर्य प्रतिपुरो ऋ० ७.६२.२ ।

स सूर्यस्य रश्मिभिः ऋ० ६.८६.३२ ।

स सूर्यः पर्युरू ऋ० १०.८६.२ ।

ससूवान्समिवत्मना ऋ० ३.६.५ ।

स सोम आमिश्लतमः ऋ० ६.२६.४ ।

स स्तनयति स वि अ० १३.४.४१ ।

स स्तोम्यः स हव्यः ऋ० ८.१६.८ ।

सस्थावाना यवयसि ऋ० ८.३७.४ ।

सस्निमविन्दच्चरणे ऋ० १०.१३६.६, तै० आ० ४.११.८, नि० ५.१ ।

स स्मा कृणोति ऋ० ५.७.४; काठ० सं० ३५.७५ ।

सस्त्रुषीस्तदपसो अ० ६.२३.१ ।

स स्वर्गमा रोहति अ० १०.६.५; पै० सं० १६.१३६.६ ।

सस्वश्चिद्धि तन्वः ऋ० ७.५६.७ ।

सस्वश्चिद्धि समृतिस्त्वेष्ये ऋ० ७.६०.१० ।

सहदानुं पुरुहूत क्षियन्तं ऋ० ३.३०.८, य० १८.६६, नि० ६.१; श० ब्रा० ६.५.२.४ ।

सहमानेयं प्रथमा अ० २.२५.२ ।

सह रय्या नि वर्तस्व य० १२.१०, ४१, सा० १८३३; काठ० सं० ८.३२; १६.६१; मै० सं० १.७.११, १७; श०ब्रा० ६.७.३.६; ८.२.६; तै० सं० १.५.३.१०; ४.२.१.६; ३.१२; कपि० ८.२, ४; २५.१; ३२.१, २; ३५.६ ।

सहर्षभाः सहवत्साः सा० ६२६; आ० ब्रा० ६.३.७.२ ।

सह वामेन न उषो ऋ० १.४८.१ ।

स हव्यवाडमर्त्यः ऋ० ३.११.२, य० २२.१६, तै० सं० ४.१.११.२०; काठ० सं० १६.३६; मै० सं० ४.१०.२६ ।

सहश्च सहस्यश्च ऋ० १०.१३०.७ य० १४.२७; तै० सं० १.४.१४.६; ४.४.११.६; श० ब्रा० ८.४.२.१२–१४; कपि० ६.३; २६.६ ।

स ह श्रुत इन्द्रो ऋ० २.२०.६ ।

सहसा जातान् प्र णुदा य० १५.२; काठ० सं० १७.१६; मै० सं० २.८.१६; तै० सं० ४.३.१२.२; श० ब्रा० ८.५.१.८; कपि० २६.५; ३२.१७ ।

सहस्तन्न इन्द्र सा० ६२५ ।

सहस्तोमाः सहच्छन्दस ऋ० १०.१३०.७, य० ३४.४६; का० सं० ३३.३७ ।

सहस्रकुणपा शेता० अ० ११.१०.२५ ।

सहस्रणीथः शतधारो ऋ० ६.८५.४ ।

सहस्रणीथाः कवयो ऋ० १०.१५४.५, अ० १८.२.१८ ।

सहस्रदा ग्रामणीः ऋ० १०.६२.११ ।

सहस्रधा पञ्चदशानि ऋ० १०.११४.८, ऐ० आ० १.१६ ।

सहस्रधामन् विशिखान् अ० ४.१८.४ ।

सहस्रधारं शतधारं अ० १८.४.३६ ।

सहस्रधारं वृषभं ऋ० ६.१०८.८, सा० १३६५ ।

सहस्रधारः पवते समुद्रो ऋ० ६.१०१.६, सा० ८७४, अ० २०.१३७.६ ।

स हि द्युभिर्जनानां ऋ० ५.१६.२ ।
स हि द्वरो द्वरिषु ऋ० १.५२.३ ।
स हि धीभिर्हव्यो ऋ० ६.१८.६ ।
स हि पुरू चिदोजसा ऋ० १.१२७.३, सा० १८१५ ।
स हि मानुषा युगा ऋ० ६.१६.२३ ।
स हि रत्नानि दाशुषे ऋ० ५.८२.३; ऐ० ब्रा० ४.५.२ ।
स हि विश्वाति पार्थिवा ऋ० ६.१६.२०; काठ० सं० २०.३२ ।
स हि विश्वानि पार्थिवां एको ऋ० ६.४५.२० ।
स हि वेदा वसुधितिं ऋ० ४.८.२; काठ० सं० १२.५१ ।
स हि शर्धो न मारुतं ऋ० १.१२७.६ ।
स हि शुचिः शतपत्रः ऋ० ७.९७.७, तै० ब्रा० २.५.५.४; मै० सं० ४.१४.४८; काठ० सं० १७.८७ ।
स हि श्रवस्युः सदनानि ऋ० १.५५.६ ।
स हि ष्मा जरितृभ्य सा० ९६९ ।
स हि ष्मा धन्वाक्षितं ऋ० ५.७.७ ।
स हि ष्मा विश्वचर्षणिः ऋ० ५.२३.४ ।
स हि सत्यो यं पूर्वे ऋ० ५.२५.२ ।
स हि स्वसृत्पृषदश्वो ऋ० १.८७.४ ।
सहृदयं सांमनस्यं अ० ३.३०.१; पै० सं० ५.१९.१; सं० वि० गृहाश्रमसंस्कार ।
सहे पिशाचान्त्सह० अ० ४.३६.४ ।
स होता यस्य रोदसी ऋ० ३.६.१० ।
स होता विश्वं परि ऋ० २.२.५ ।
स होता सेदु ऋ० ४.८.४; काठ० सं० १२.५३ ।
सहोभिर्विश्वं परि चक्रमू ऋ० १०.५६.५ ।
सहो षु णो वज्रहस्तैः ऋ० ८.७.३२ ।
सहोऽसि सहो मे अ० २.१७.२; पै० सं० २.४५.४ ।
स आगमदिन्द्रो ऋ० ५.३६.१ ।
संकर्षन्ती करूकरं अ० ११.९.८ ।
संकसुको विकसुको अ० १२.२.१४ ।
सं काशयामि वहतुं अ० १४.२.१२ ।
संक्रन्दनः प्रवदो अ० ५.२०.९ ।
संक्रन्दनेनानिमिषेण ऋ० १०.१०३.२; य० १७.३४; सा० १८५०; अ० १९.१३.३; तै० सं० ४.६.४.२; मै० सं० २.१०.३५; कपि० २८.५ ।
सं क्रामतं मा जहीतं अ० ७.५३.२ ।
सं क्रोशतामेनान् अ० ८.८.२१ ।
संख्याता स्तोकाः पृथिवीं अ० १२.३.२८ ।
सं गच्छध्वं सं वदध्वं ऋ० १०.१९१.२, अ० ६.६४.१, तै० ब्रा० २.४.४.४; मै० सं० २.२.२८, सं० वि० गृहाश्रमसंस्कार; ऋ० भू० वेदोक्तधर्मविषय ।
संगच्छमाने युवति ऋ० १.१८५.५ ।
सं गच्छस्व पितृभिः ऋ० १०.१४.८, अ० १८.३.५८, सं० वि० अन्त्येष्टि संस्कार ।
सं गोभिरङ्गिरसो ऋ० १०.६८.२, अ० २०.१६.२ ।
सं गोमदिन्द्र वाजवद् ऋ० १.९.७, अ० २०.७१.१३ ।
सं घोषः शृण्वे वमैरमित्रैः ऋ० ३.३०.१६ ।
सं च त्वे जग्मुर्गिर इन्द्र ऋ० ६.३४.१; ऐ० ब्रा० ५.४.१ ।
सं चेध्यस्वाग्ने प्र य० २७.२; काठ० सं० १८.८२; मै० सं० २.१२.२६; का० सं० २९.२; कपि० २९.४ ।
सं चेध्यस्वाग्ने प्र च अ० २.६.२ ।
सं चेन्नयाथो अश्विना अ० २.३०.२ ।

पैं० सं० १६.१५.४; काठ० सं० १०.३६; मैं० सं० २.७.१४१।

सं वोऽवन्तु सुदानवः अ० ४.१५.७; मैं० सं० २.२.२५।

संशितं म इदं ब्रह्म अ० ३.१६.१; काठ० सं० १६.८०; मैं० सं० २.७.६१; तै० सं० ४.१.१०.६; कपि० ३०.८; पैं० सं० ३.१६.१।

सं शितं मे ब्रह्म य० ११.८१।

सं शितो रश्मिना रथ य० २३.१४; श० ब्रा० १३.२.७.८–१०।

संसमिद्युवसे वृषन् ऋ० १०.१६१.१, य० १५.३०, अ० ६.६३.४, तै सं० २.६.११.१६; ४.४.४.१२; मैं० सं० २.१३.४०; काठ० सं० २.६२।

सं सं स्रवन्तु नद्यः अ० १६.१.१।

सं सं स्रवन्तु पशवः अ० २.२६.३; गो० ब्रा० उ० ५.८।

सं सं स्रवन्तु सिन्धवः अ० १.१५.१।

सं सिचो नाम ते देवा अ० ११.८.१३।

सं सिञ्चामि गवां अ० २.२६.४; पैं० सं० २.१२.४।

सं सीदस्व महां असि ऋ० १.३६.६, य० ११.३७, तै० सं० ४.१.३.१२, तै० आ० ४.५.२; काठ० सं० १६.३३; श० ब्रा० ६.४.२.६; मैं० सं० २.७.४०; ४६; ५३।

संसृष्टं धनमुभयं ऋ० १०.८४.७, अ० ४.३१.७; पैं० सं० ४.१२.७।

सं सृष्टां वसुभी रुद्रैः य० ११.५५; मैं० सं० २.७.६४; तै० सं० ४.१.५.८; श० ब्रा० ६.५.१.६।

सं स्रवभागा स्थेषा य० २.१८; काठ० सं० १.४६; मैं० सं० १.१.४२; श० ब्रा० १.८.३.२५; तै० सं० १.१.१३.१४; कपि० १.१२; ३६.२; ४७.११।

सँ हितासि विश्वरूप्यूर्जा य० ३.२२; मैं० सं० १.५.२३; तै० सं० १.५.६४.; श० ब्रा० २.३.४.२७; कपि० ५.१, ३, ५; ३५.५।

सँ हितो विश्वसामा य० १८.३६; श० ब्रा० ६.४.१.८; सं० वि० विवाह संस्कार; तै० सं० ३.४.७.३, ४; कपि० २६.३।

सं हि वातेनागतं अ० १०.१०.१४; पैं० सं० १६.१०८.५।

सं हि शीर्षाण्यग्रभं अ० १०.४.१६; पैं० सं० सं० १६.१६.६।

सं हि सूर्येणागत अ० १०.१०.१५; पैं० सं० १६.१०८.३।

सं हि सोमेनागत अ० १०.१०.१३।

संहोत्रं स्म पुरानारीः ऋ० १०.८६.१०, अ० २०.१२६.१०।

साकमुक्षो मर्जयन्त ऋ० ६.६३.१, सा० ५३८, १४१८।

साकं जातः क्रतुना ऋ० २.२२.३, सा० १४८७।

साकं जाताः सुभ्वः ऋ० ५.५५.३।

साकंजानां सप्तथमाहुः ऋ० १.१६४.१५, अ० ६.६.१६, तै० आ० १.३.१, नि० १४.१६; पैं० सं० १६.६७.५।

साकं यक्ष्म प्र पत ऋ० १०.६७.१३; य० १२.८७; तै० सं० ४.२.६.१३; कपि० २५.४; मैं० सं० २.७.१७८; काठ० सं० १६.१६४।

साकं युजा शकुनस्येव ऋ० १०.१०६.३।

साकं वदन्ति बहवो ऋ० ९.७२.२ ।

साकं सजातैः पयसा अ० ११.१.७; पै० सं० १६.५६.७ ।

साकं हि शुचिना शुचिः ऋ० २.५.४; काठ० सं० ३८.१४५ ।

सातिर्न वोऽमवती ऋ० १.१६८.७ ।

सा ते अग्ने शंतमा ऋ० ८.७४.८ ।

सा ते काम दुहिता अ० ९.२.५; पै० सं० १६.७६.४ ।

सा ते जीवातुरुत ऋ० १०.२७.२४, नि० ५.१९ ।

सा द्युम्नैर्द्युम्निनी ऋ० ८.७४.९ ।

साधुर्न गृध्नुरस्तेव ऋ० १.७०.११ ।

साधुं पुत्रं हिरण्ययम् अ० २०.१२९.५ ।

साध्या एकं जालदण्डं अ० ८.८.१२; पै० सं० १६.३०.२ ।

साध्वपांसि सनता ऋ० २.३.६ ।

साध्वर्या अतिथिनीः ऋ० १०.६८.३, अ० २०.१६.३ ।

साध्वीमकर्देववीतिं ऋ० १०.५३.३, तै० सं० १.३.१४.४; ऐ० ब्रा० ७.२.८; मै० सं० ४.११.३०; काठ० सं० २.११४ ।

सा नो अद्य यस्या वयं ऋ० १०.१२७.४ ।

सा नो अद्या भरद्वसुः ऋ० ५.७९.३, सा० १७४२ ।

सा नो भूमिरा दिशतु अ० १२.१.४०; पै० सं० १७.४.८ ।

सा नो विश्वा अति द्विषः ऋ० ६.६१.९ ।

सान्तपना इदं हविः ऋ० ७.५९.९, अ० ७.७७.१, तै० सं० ४.३.१३.१०; १०.११४; काठ० सं० २१.५० ।

सा पश्चात् पाहि सा अ० १९.४८.४; पै० सं० ६.२१.४ ।

सा ब्रह्मज्यं देवपीयुं अ० १२.५.१५; पै० सं० ९.१९.६ ।

साम द्विबर्हा महि ऋ० ४.५.३ ।

सा मन्दसाना मनसा अ० १४.२.६; पै० सं० १८.७.६ ।

सामन्नु राये निधिमन् ऋ० १०.५९.२ ।

सामानि यस्य लोमानि अ० ९.६.२ ।

सा मा सत्योक्तिः ऋ० १०.३७.२; आर्याभि० १.४७ ।

सामासाद् उद्गीथो अ० १५.३.८ ।

सायंसायं गृहपतिः अ० १९.५५.३; पै० सं० १९.४४.२२; स० प्र० ४ समु, ऋ० भू० पञ्चमहायज्ञविषय; ल० प० वि० २३७ ।

सा वसु दधती श्वशुराय ऋ० १०.९५.४ ।

सा वह योक्षाभिः ऋ० ६.६४.५ ।

सा विट् सुवीरा ऋ० ७.५६.५ ।

सा विश्वायुः सा विश्व य० १.४; श० ब्रा० १.७.१.१७; कपि० ४७.२ ।

सावीर्हि देव प्रथमाय अ० ७.१४.३; पै० सं० २०.३.१; काठ० सं० ३७.१२ ।

सास्मा अरं प्रथमं ऋ० २.१८.२ ।

सास्मा अरं बाहुभ्यां ऋ० २.१७.६ ।

सास्माकेभिरेतरी न शूषैः ऋ० ६.१२.४, नि० ६.१५ ।

साहस्तस्त्वेष ऋषभः अ० ९.४.१; पै० सं० १६.२४.१ ।

साहा ये सन्ति मुष्टिहेव ऋ० ८.२०.२० ।

साह्वान्विश्वा अभियुजः ऋ० ३.११.६, सा० १५५८ ।

सिञ्चन्ति परि षिञ्चन्ति य० २०.२८; का० सं० २२.१६ ।

य० २१.६, अ० ७.६.३, तै० सं० १.५.११. १९, ७.१.१८.८, मै० सं० ४.१२.१००, सं० वि० स्वस्तिवाचन, ऐ० ब्रा० १.२.३, काठ० सं० २.११, का० सं० २३.६; कपि० १.१५, पै० सं० २०.१.३ ।

सुदक्षो दक्षै क्रतुना ऋ० १०.६१.३ ।

सुदासे दस्रा वसु बिभ्रता ऋ० १.४७.६ ।

सुदेवस्त्वा महानग्नी० अ० २०.१३६.१२ ।

सुदेवः समहासति ऋ० ५.५३.१५ ।

सुदेवाः स्थ काण्वायुना ऋ० ८.५५.४ ।

सुदेवो अद्य प्रपतेद् ऋ० १०.९५.१४, श० ब्रा० ११.५.१.८, नि० ७.३ ।

सुदेवो असि वरुणः ऋ० ८.६९.१२, अ० २०.९२.९, नि० ५.२७, मै०सं० ४.७.१६ ।

सुनावमा रुहेयाम् य० २१.७, का० सं० २३.७ ।

सुनिर्मथा निर्मथितः ऋ० ३.२९.१२ ।

सुनीतिभिर्नयसि त्रायसे ऋ० २.२३.४ ।

सुनीथो घा स मर्त्यो ऋ० ८.४६.४; सा० २०६; सा० ब्रा० ३.३.१.९ ।

सुनोता मधुमन्तमं सोमं ऋ० ९.३०.६ ।

सुनोता सोमपाव्ने सोमं ऋ० ७.३२.८; सा० २८५, अ० ६.२.३; पै० सं० १९.१.५ ।

सुन्वन्ति सोमं रथिरासो ऋ० १०.७६.७ ।

सुपर्ण इत्था नखमासि ऋ० १०.२८.१० ।

सुपर्णसुवने गिरौ अ० ५.४.२ ।

सुपर्णस्त्वा गरुत्मान् अ० ४.६.३; पै० सं० ५.८.२ ।

सुपर्णस्त्वान्वविन्दत् अ० २.२७.२, ५.१४.१; पै० सं० २.१६.२ ।

सुपर्णं वस्ते मृगो ऋ० ६.७५.११; य० २९.४८; तै० सं० ४.६.६.११; नि० २.५, ९.१८; मै० सं० ३.१६.४४; का० सं० ३१.१९ ।

सुपर्णं विप्राः कवयो ऋ० १०.११४.५ ।

सुपर्णः पार्जन्य आति य० २४.३४; तै० सं० ५.५.२१.१; का० सं० २६.३५ ।

सुपर्णा एत आसते ऋ० १.१०५.११ ।

सुपर्णा वाचमक्रतोप ऋ० १०.९४.५; अ० ६.४९.३; काठ० सं० ३५.७८; पै० स० १९.३१.१६ ।

सुपर्णो जातः प्रथमः अ० १.२४.१; पै० सं० १.२६.१ ।

सुपर्णोऽसि गरुत्मान् य० १२.४, १७.७२; काठ० सं० १६.८५; मै० सं० २.७.६६, ९७.१०.९२; श० ब्रा० ६.७.२.६, ९.२.३.३४; कपि० २८.४,३२.१; सं० वि० पुंसवन संस्कार ।

सुपेशसं माव सृजन्त्यस्तं ऋ० ५.३०.१३ ।

सुपेशसं सुखं रथं ऋ० १.४९.२ ।

सुप्रतीके वयोवृधा ऋ० ५.५.६ ।

सुप्रजाः प्रजाः प्रजनयन् य० ७.१८; श०ब्रा० ४.२.१.१७,२०; कपि० ४३.१ ।

सुप्रमाणा च वेशन्ता अ० २०.१२८.९ ।

सुप्रवाचनं तव वीर ऋ० २.१३.११ ।

सुप्रावर्गं सुवीर्यं ऋ० ८.२२.१८ ।

सुप्रावीरस्तु स क्षयः ऋ० ७.६६.५; सा० १३५२ ।

सुप्राव्यः प्राशुषाड् ऋ० ४.२५.६ ।

सुप्रैतुः सूयवसो ऋ० १.१९०.६ ।

सुबर्हिरग्निः पूषण्वान् य० २१.१५; काठ० सं० ३८.११४; श० ब्रा० २.२.३.२१; मै० सं० ३.११.११६; का० सं० २३.१६ ।

सुब्रह्माणं देववन्तं ऋ० १०.४७.३; तै० ब्रा०

२.५.६१; मैं० सं० ४.१४.१०६ ।

सुभगः स प्रयज्यवो ऋ० १.८६.७ ।

सुभगः स उ ऊतिषु ऋ० ८.२०.१५ ।

सुभगान्नो देवाः कृणुत ऋ० १०.७८.८ ।

सुभूः स्वयम्भूः प्रथमो य० २३.६३; का०सं० २५.६८; श० ब्रा० १३.५.२.२३ ।

सुमङ्गली प्रतरणी अ० १४.२.२६; पैं० सं० १८.६.७ ।

सुमङ्गलीरियं वधूः ऋ० १०.८५.३३; अ० १४.२.२८; सं० वि० विवाह-संस्कार, पैं० सं० १८.६.८, सं० वि० गृहाश्रम-संस्कार ।

सुमन्मा वस्वी सा० १६५४ ।

सुमित्रिया न आप य० ३५.१२, ३६.२३, ३८.२३, काठ० सं० ३.२६, ३८.६५, मै० सं० १.२.११६, श० ब्रा० १३.८.४.५, १४.३.१.२७, का० सं० २२.६, ३५.२४, २६, ४५,३८.२३, कपि० २.१५,४.८, आर्याभि० २.२६, ऋ० भू० वैद्यकशास्त्रमूल, सं० वि० सीमन्तोन्नयन-संस्कार ।

सुयामश्चाक्षुष अ० १६.७.७ ।

सुयुग्भिरश्वैः सुवृता ऋ० ३.५८.३, ऐ०ब्रा० ५.३.३ ।

सुयुग्वहन्ति प्रति ऋ० ३.५८.२, ऐ० ब्रा० ५.३.३ ।

सुरथां अतिथिग्वे ऋ० ८.६८.१६ ।

सुरावन्तं बर्हिषदं य० १६.३२, काठ० सं० ३८.६, मै० सं० ३.११.५७, श० ब्रा० १२.८.१.२, का० सं० २१.३४ ।

सुरुक्मे हि सुपेशसाधि ऋ० १.१८८.३ ।

सुरूपकृत्नुमूतये ऋ० १.४.१, सा० १६०, १०८७, अ० २०.५७.१, ६८.१; ऐ० ब्रा० ३.३.६, ५.२.५, आ० ब्रा० ६.१.४.३, सा० ब्रा० ३.१.४.१५ ।

सुविज्ञानं चिकितुषे ऋ० ७.१०४.१२, अ० ८.४.१२, पैं० सं० १६.१०.२ ।

सुवितस्य मनामहेऽति ऋ० ६.४१.२, सा० ८६३ ।

सुविवृतं सुनिरजं ऋ० १.१०.७ ।

सुवीरस्ते जनिता ऋ० ५.१७.४ ।

सुवीरं रयिमाभर ऋ० ६.१६.२६ ।

सुवीरासो वयं धना ऋ० ६.६१.२३ ।

सुवीरो वीरान् प्रजनयन् य० ७.१३, श०ब्रा० ४.२.१.१६, १६.२१, कपि० ४३.१ ।

सुवीर्यं स्वश्व्यं सुगव्यं ऋ० ८.१२.३३ ।

सुवृद्रथो वर्तते यन् ऋ० १.१८३.२ ।

सुशंसो बोधि गृणते ऋ० १.४४.६ ।

सुशिल्पे बृहती मही ऋ० ६.५.६ ।

सुशेवो नो मृडयाकुः ऋ० ८.७६.७ ।

सुश्रुतिश्च मोपश्रुतिश्च अ० १६.२.५ ।

सुश्रुतौ कर्णौ भद्रश्रुतौ अ० १६.२.४ ।

सुषमिद्धो न आ वह सा० १३४७, तां० ब्रा० १५.८.१, १६.५.२२ ।

सुषहा सोम तानि ऋ० ६.२६.३; सा० १७६७ ।

सुषारथिरश्वानिव० य० ३४.६, स० प्र० ७ समु०; सं० वि० गर्भाधान संस्कार ।

सुषुप्वांस ऋभवस्त० ऋ० १.१६१.१३ ।

सुषुप्वांसं न निर्ऋतेरुपस्थे ऋ० १.११७.५ ।

सुषुमा यातमद्रिभिः ऋ० १.१३७.१, ऐ० ब्रा० ५.२.७ ।

सुषुम्णः सूर्यरश्मिः य० १८.४०; श० ब्रा० ६.४.१.६; तै० सं० ३.४.७.५–६, कपि० २६ ३, सं० वि० विवाह संस्कार ।

सुषूवत मृडत अ० १.२६.४ ।

सुषोमे शर्यणावति ऋ० ८.७.२९।

सुष्टुतिं सुमतीवृधो य० २२.१२।

सुष्टुभो वां वृषण्वसु ऋ० ५.७५.४।

सुष्ठामा रथः सुयमा ऋ० १०.४४.२, अ० २०.९४.२।

सुष्वाणास इन्द्र स्तुमसि ऋ० १०.१४८.१, सा० ३१६, सा० ब्रा० ३.१.४.१९।

सष्वाणासो व्यद्रिभि ऋ० ९.१०१.११, सा० ११०३।

सुसंकाशा मातृमृष्टेव ऋ० १.१२३.११।

सुसन्दृक्ते स्वनीक प्रतीकं ऋ० ७.३.६।

सुसन्दृशं त्वा वयं प्रति ऋ० १०.१५८.५, मै० सं० १.१०.११, काठ० सं० ९.७९, सं० वि० गर्भाधान-संस्कार।

सुसन्दृशं त्वा वयं मघवन् ऋ० १.८२.३, य० ३.५२, तै० सं० १.८.५.६, कपि० ८.१०, मै० सं० ४.१२.११७, काठ० सं० ९.१८; श० ब्रा० २.६.१.३८।

सुसमिद्धाय शोचिषे ऋ० ५.५.१; य० ३.२, गो० ब्रा० उ० १.४.३.२८; सं० वि० सामान्यप्रकरण।

सुसमिद्धो न आ वह ऋ० १.१३.१; सा० १३४७।

सुहवमग्ने कृत्तिका अ० १९.७.२।

सूक्तवाकं प्रथमम् ऋ० १०.८८.८।

सूक्तेभिर्वा वचोभिः ऋ० ५.४५.४।

सूनृतावन्तः सुभगा अ० ७.६०.६; पै० सं० ३.२६.३।

सूनृता संनतिः क्षेमः अ० ११.७.१३; पै०सं० १६.८३.३।

सूनोर्मानेनाश्विना गृणाना ऋ० १.११७.११।

सूपस्था अद्य देवो य० २१.६०; का० सं० २३.६३; तै० सं० १.२.२.१५।

सूयवसाद्भगवतीं ऋ० १.१६४.४०; अ० ७.७३.११, ९.१०.२०; नि० ११.४०; ऐ० ब्रा० १४.५, ५.५.२; पै० सं० २०.११.४।

सूर उपाके तन्वं दधानो ऋ० ४.१६.१४।

सूरश्चक्र प्र वृहत् ऋ० १.१३०.९।

सूरश्चिद्दा हरितो अस्य ऋ० १०.९२.८।

सूरश्चिद्रथं परितक्म्यायां ऋ० ५.३१.११।

सूरिरसि वर्चोधा अ० २.११.४; पै० सं० १.५७.४।

सूरो न यस्य दृशतिररेपाः ऋ० ६.३.३।

सूर्य एकाकी चरति य० २३.१०, ४६; श० ब्रा० १३.५.२.१२; मै० सं० ३.१२.२६; तै० सं० ७.४.१८.४; का० सं० २५.११, ५१; ऋ० भू० प्रकाश्यप्रकाशक विषय।

सूर्य एनं दिवः प्र अ० १२.५.७३।

सूर्यत्वचस स्थ राष्ट्रदा य० १०.४; श० ब्रा० ५.३.४.१२–२१, २७–२८; तै० सं० १.८.११.८।

सूर्य चक्षुषा मा पाहि अ० २.१६.३।

सूर्य नावमारुक्षः अ० १७.१.२६।

सूर्यमृतं तमसो अ० २.१०.८।

सूर्य यत् ते तपस्तेन अ० २.२१.१।

सूर्य यत् ते तेजस्तेन अ० २.२१.५।

सूर्य यत् तेर्ऽचिस्तेन अ० २.२१.३।

सूर्य यत् ते शोचिस्तेन अ० २.२१.४।

सूर्य यत् ते हरस्तेन अ० २.२१.२।

सूर्यरश्मिर्हरिकेशः ऋ० १०.१३९.१; य० १७.५८; तै० सं० ४.६.३.८, ५.४.६.११; कपि० २८.३; श०ब्रा० ९.२.३.१२; कपि० २८.३।

९, पै० सं० १८.१.३।

सोमं राजानमवसे ऋ० १०.१४१.३, य० ९.२६, सा० ९१, अ० ३.२०.४, तै० सं० १.७.१०.३, मै० सं० १.११.२०, श० ब्रा० ५.२.२.८, ष० ब्रा० पू० ६.१.४, ९.३, सा० ब्रा० ३.१.७.१०, पै० सं० ३.३४.६।

सोमः पवते जनिता ऋ० ९.९६.५, सा० ५२७, ९४३, नि० १४.१२, श० ब्रा० ४.२.२.१२–१६, कपि० ३.४, गो० ब्रा० उ० ५.४.५६१, सा० ब्रा० ३.१.४.६।

सोमः पवते सोमः य० ७.२१।

सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यो ऋ० ९.१०६.१०, सा० ५७२, ९४०।

सोमः पुनानो अर्षति ऋ० ९.१३.१, सा० ११८७।

सोमः पूनानो अव्यये ऋ० ९.११०.१०।

सोमः पूषा सा० १५४।

सोमः प्रथमो विविदे ऋ० १०.८५.४०, स० प्र० ४ समु०; ऋ० भू० नियोगविषय।

सोमः सुतो धारयात्यो ऋ० ९.९७.४५।

सोमा असृग्रमाशवो ऋ० ९.२३.१।

सोमा असृग्रमिन्दवः ऋ० ९.१२.१, सा० ११९६।

सोमानां स्वरणं ऋ० १.१८.१, य० ३.२८, सा० १३९, १४९३, तै० सं० १.५.६.१३, तै० आ० १०.१.११, नि० ६.१२, काठ० सं० ७.१२. कपि० ५.२,४, श० ब्रा० २.३.४.३५, कपि० ५.२.४।

सोमापूषणा जनना ऋ० २.४०.१, तै० सं० १.८.२२.१८, मै० सं० ४.११.४२, काठ० सं० ८.७०।

सोमापूषणा रजसो ऋ० २.४०.३, तै० सं० १.८.२२.१८, तै० ब्रा० २.८.१.५, मै०सं० ४.१४.७।

सोमाय कुलङ्ग आरण्यो य० २४.३२, मै० सं० ३.१४.१३, का० सं० २६.३३।

सोमाय पितृमते अ० १८.४.७२, काठ० सं० ९.१७, तै० सं० १.५.८.१।

सोमाय लबानालभते य० २४.२४, मै० सं० ३.१४.५, का० सं० २६.२५।

सोमाय हंसानालभते य० २४.२२, मै०सं० ३.१४.३, का० सं० २६.२३।

सोमारुद्रा धारयेथाम् ऋ० ६.७४.१, मै०सं० ४.११.५५; काठ० सं० ११.४२।

सोमारुद्रा युवमेतान्यस्मे ऋ० ६.७४.३; अ० ७.४२.२, तै० सं० १.८.२२.१७, मै० सं० ४.११.५४, काठ० सं० ११.४१, पै० सं० १.१०९.४।

सोमा रुद्रा वि वृहतं ऋ० ६.७४.२, अ० ७.४२.१, तै० सं० १.८.२२.१६; मै० सं० ४.११.५६, काठ० सं० ११.४०, पै० सं० १.१०९.१।

सोमासो न ये सुताः ऋ० १.१६८.३।

सोमाः पवन्त इन्दवो ऋ० ९.१०१.१०, सा० ५४८, ११०१; तां० ब्रा० १३.११.६।

सोमेन पूर्णं कलशं अ० ९.४.६।

सोमेनादित्या बलिनः ऋ० १०.८५.२, अ० १४.१.२; पै० सं० १८.१.२; ऋ० भू० प्रकाश्यप्रकाशकविषय।

सोमो अर्षति ऋ० ९.२३.५।

सोमो अस्मभ्यं ऋ० ३.६२.१४; ऐ० ब्रा० १.५.४।

सोमो जिगाति ऋ० ३.६२.१३, तै० सं० १.३.४.१; ऐ० ब्रा० १.५.४।

५.१.५.१३; कपि० ३०.३।

स्थिरौ गावौ भवतां ऋ० ३.५३.१७।

स्थूरस्य रायो बृहतो ऋ० ४.२१.४, तै० ब्रा० २.८५.८।

स्थूरं राधः शताश्वं ऋ० ८.४.१९, नि० ६.२२।

स्पर्धन्ते वा उ देवहूये ऋ० ७.८५.२।

स्पार्हा यस्य श्रियो दृशे ऋ० ७.१५.५, तै० ब्रा० २.४८.१।

स्मत्पुरन्धिर्न आ गहि ऋ० ८.३४.६।

स्मदभीशू कशावन्ता ऋ० ८.२५.२४।

स्मदेतया सुकीर्त्या ऋ० ८.२६.१९।

स्याम ते त इन्द्र ऋ० २.११.१३।

स्याम वो मनवो ऋ० १०.६६.१२।

स्यूमना वाच उदियर्ति ऋ० १.११३.१७।

स्योनं ध्रुवं प्रजायै अ० १४.१.४७।

स्योनाद्योनेरधि अ० १४.२.४३; सं० वि० गृहाश्रम संस्कार।

स्योना पृथिवी भवा० ऋ० १.२२.१५, य० ३५.२१, ३६.१३, तै० आ० १०.१.१०, नि० ९.३०; मै० सं० ४.१२.३५; काठ० सं० ३८.१५३; का० सं० ३५.५४; ३६.१४।

स्योना भव श्वशुरेभ्यः अ० १४.२.२७; सं० वि० गृहाश्रम संस्कार।

स्योनाऽसि सुषदाऽसि य० १०.२६; काठ० सं० २५.२२; श० ब्रा० ५.४.४.२–४; मै० सं० २.६.३५; तै० सं० ७.१.७.६।

स्योनास्मै भव पृथिवि अ० १८.२.१९; सं० वि० अन्त्येष्टि संस्कार।

स्रक्त्योऽसि प्रतिसरोऽसि अ० २.११.२।

स्रक्वे द्रप्सस्य धमतः ऋ० ९.७३.१; ऐ० ब्रा० १.४.३।

स्राक्त्येन मणिन अ० ८.५.८।

स्रुग्दर्विर्नेक्षणमाय अ० ९.६.१७; पै० सं० १६.११२.३।

स्रुचश्च मे चमसाश्च य० १८.२१; कपि० २८.११।

स्रुचा हस्तेन प्राणे अ० ९.६.५; सं० वि० संन्यास संस्कार।

स्रुवेव यस्य हरिणी ऋ० १०.९६.९, अ० २०.३१.४।

स्व आ दमे सुदुघा ऋ० २.३५.७।

स्व आ यस्तुभ्यं दम ऋ० १.७१.६।

स्वगा त्वा देवेभ्यः य० २२.४; श० ब्रा० १३.१.२.३, ४।

स्वग्नयो वो अग्निभिः ऋ० ८.१९.७।

स्वग्नयो हि वार्यं ऋ० १.२६.८।

स्वतवाँश्च प्रघासी य० १७.८५।

स्वदस्व हव्या समिषो ऋ० ३.५४.२२; काठ० सं० १३.५९; ऐ० ब्रा० २.२.३।

स्वधया परिहिता अ० १२.५.३; सं० वि० गृहाश्रम संस्कार; ऋ० भू० वेदोक्तधर्म-विषय।

स्वधाकारेण पितृभ्यो अ० १२.४.३२; पै० स० १७.१९.२।

स्वाधाकारेणान्ना० अ० १५.१४.१४।

स्वधा पितृभ्यः पृथिवि० अ० १८.४.७८।

स्वधा पितृभ्यो अन्त० अ० १८.४.७९।

स्वधा पितृभ्यो दिवि० अ० १८.४.८०।

स्वधामनु श्रियं नरो ऋ० ८.२०.७।

स्वधास्तु मित्रावरुणा अ० ६.९७.२; पै० सं० १९.१२.८।

स्वस्तिदा विशां पतिः अ० १.२१.१, ८.५.२२; पैं० सं० २.८८.४।

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः ऋ० १.८९.६, य० २५.१९, सा० १८७५, काठ० सं० ३५.२, तै० आ० १.१.१, २१.३, १०.१.९; मै० सं० ४.९.२५४; सं० वि० स्वस्तिवाचन; का० सं० २७.२३; कपि० २८.२, ४८.२।

स्वस्ति नः पथ्यासु ऋ० १०.६३.१५, सं० वि० स्वस्तिवाचन; ऐ० ब्रा० १.२.३।

स्वस्ति नो अस्त्वभयं अ० १९.८.७।

स्वास्ति नो दिवो अग्ने ऋ० १०.७.१, तै० सं० ४.३.१३.२।

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना ऋ० ५.५१.११, सं० वि० स्वस्तिवाचन।

स्वस्तिपन्थामनुचरेम ऋ० ५.५१.१५; सं० वि० स्वस्तिवाचन।

स्वस्ति मात्र उत पित्रे अ० १.३०.४; पैं० सं० १.२२.४।

स्वस्ति मित्रावरुणा ऋ० ५.५१.१४; सं० वि० स्वस्तिवाचन।

स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा ऋ० १०.६३.१६, नि० ११.४६; सं० वि० स्वस्ति-वाचन।

स्वस्त्यद्योषसो दोषसः अ० १६.४.६।

स्वः स्वाय धायसे ऋ० २.५.७।

स्वाक्तं मे द्यावापृथिवी अ० ७.३१.१।

स्वाङ्कृतोऽसि विश्वेभ्यः य० ७.३.६; श० ब्रा० ४.१.१.२२–२८; २.२१–२४; कपि० ३.१; ४२.१, २; ४५.६।

स्वादवः सोमा आ याहि ऋ० ८.२.२८; ऐ० आ० ५.२.४।

स्वादिष्ठया मदिष्ठया ऋ० ९.१.१, य० २६.२५, सा० ४६८, ६८९, नि० ११.२; ऐ० ब्रा० ८.२.४, ४.६; तां० ब्रा० १५.११.१, आ० ब्रा० ६.१.३.२, दे० ब्रा० ५.१.२, सा० ब्रा० ३.२ ३.५।

स्वादुषसदः पितरो ऋ० ६.७५.९, य० २९.४६, तै० सं० ४.६.६.३, मै० सं० ३.१६.४१।

स्वादुष्किलायं मधुमाँ ऋ० ६.४७.१, अ० १८.१. ४८, ऐ० ब्रा० ३.३.१४।

स्वादुष्टे अस्तु संसुदे ऋ० ८.१७.६, अ० २०.४.३।

स्वादुः पवस्व दिव्याय ऋ० ९.८५.६।

स्वादो पितो मधो ऋ० १.१८७.२; काठ० सं० ४०.५४।

स्वादोरमक्षि वयसः ऋ० ८.४८.१।

स्वादोरित्था विषूवतो ऋ० १.८४.१०, सा० ४०९, १००५, अ० २०.१०९.१; ऐ० ब्रा० ५.२.२; तां० ब्रा० १३.४.१६; आ० ब्रा० ६.१.४.३; ५.१, २.४.३, ४, ५, मै० सं० ४.१४.१९४।

स्वाद्वीं त्वा स्वादुना य० १९.१, मै० सं० २.३.३६; तै० सं० १.८.२१.१, का० सं० २१.१; श० ब्रा० १२.७.३.५–७।

स्वाध्यो दिव आ सप्त ऋ० १.७२.८, तै० ब्रा० २.५.८.१०।

स्वाध्यो वि दुरो ऋ० ७.२.५।

स्वायसा असयः सन्ति अ० १०.१.२०।

स्वायुधं स्ववसं ऋ० १०.४७.२।

स्वायुधः पवते देव ऋ० ९.८७.२; सा० ६७८।

स्वायुधः सोतृभिः ऋ० ९.९६.१६।

स्वायुधस्य ते सतो ऋ० ९.३१.६।

१२.१४, तै० सं० १.८.१५.१८, ४.२.१.१६, तै० आ० १०.१०.२, ऐ० ब्रा० ४.३.६, नि० १.४.२७, काठ० सं० १५.२५, १६.६५, मै० सं० २.६.३८, ७.१४, १३.५७, श० ब्रा० ५.४.३.२२, ६.७.३.११, कपि० ३२.१।

हंसा इव कृणुथ ऋ० ३.५३.१०।

हंसा इव श्रेणिशो ऋ० ३.८.६।

हंसाविव पतथो ऋ० ८.३५.८।

हंसासो ये वां मधुमन्तो ऋ० ४.४५.४।

हंसैरिव सखिभिः ऋ० १०.६७.३, अ० २०.६१.३, तै० सं० ३.४.११.१०, मै० सं० ४.१२.१७२, काठ० सं० २३.३६।

हारिद्रवेव पतथो वनेदुप ऋ० ८.३५.७।

हिङ्कुरिक्रती बृहती अ० ६.१.८।

हिङ्काराय स्वाहा य० २२.७, मै०सं० ३.१२.५, का० सं० २४.१०, श० ब्रा० १३.१.३.५।

हिङ्कृण्वती वसुपत्नी ऋ० १.१६४.२७, अ० ७.७३.८, ६.१०.५, नि० ११.४५, ऐ०ब्रा० १.४.५, पै० सं० १६.६८.५।

हितो न सप्तिरभि ऋ० ६.७०.१०।

हिनोता नो अध्वरं ऋ० १०.३०.११, नि० ६.२२।

हिन्वन्ति सूरमुस्रयः पवमानं ऋ० ६.६७.६।

हिन्वन्ति सूरमुस्रयः स्वरासो ऋ० ६.६५.१, सा० ६०४।

हिन्वानासो रथा इव ऋ० ६.१०.२, सा० ११२०।

हिन्वानो वाचमिष्यसि ऋ० ६.६४.६।

हिन्वानो हेतृभिर्यत ऋ० ६.६४.२६; सा० ६५५।

हिमवतः प्र स्रवन्ति अ० ६.२४.१; पै० सं० ३.१७.६, १६.७.८।

हिमस्य त्वा जरायुणा य० १७.५; अ० ६.१०६.३; मै० सं० २.१०.३; श० ब्रा० ६.१.२.२६; कपि० २८.१; पै०सं० ६.७.१५; तै० सं० ४.६.१.४।

हिमं घ्रंसं चाधाय अ० १३.१.४७; पै० सं० १८.१६.७।

हिमेनाग्निं घ्रंसमवारयेथां ऋ० १.११६.८; नि० ६.३६।

हिमेव पर्णा मुषिता वनानि ऋ० १०.६८.१०; अ० २०.१६.१०।

हिरण्मयेन पात्रेण य० ४०.१७; का० सं० ४०.१५।

हिरण्य इत्येके अब्रवीत् अ० २०.१३२.१४

हिरण्यकर्णं मणिग्रीवं ऋ० १.१२२.१४।

हिरण्यकेशो रजसो ऋ० १.७६.१; तै० सं० ३.१.११४; ऐ० ब्रा० ७.२.८।

हिरण्यगर्भं परमं अ० १०.७.२८; पै० सं० १७.६.६।

हिरण्यगर्भः पन्थानः अ० ५.४.५; काठ० सं० ४.१२८, ३५.६८, तै० सं० २.२.१२.१ ४.१.८.१३, २.८.५, ५.५.१.६।

हिरण्यगर्भः समवर्ततताग्रे ऋ० १०.१२१.१ य० १३.४, २३.१, २५.१०, अ० ४.२.७ तै० सं० ४.१.८.१३, २.८.५, ५.५.१.६ तां० ब्रा० ६.६.१२, नि०१०.२३, मै० सं० ४८.१३, स० प्र० १, ७, ८, समु०, ऋ० भू० वेदविषय, सृष्टिविद्याविषय, श० ब्रा० ७.४.१.१६, १३.५.२.२३, सं०वि० पुंसव संस्कार, ईश्वरस्तुति प्रार्थना०, जी० च भा० २/१२२, द० शा० १०६, १३५

जी० ले० ३२६, ३४५, ३५८, का० सं० २५.१, २७.१४, आर्याभि० २.२०, गो० ब्रा० पू० १.२, पैं० सं० ४.१.१ ।

हिरण्यत्वङ्मधुवर्णो ऋ० ५.७७.३ ।

हिरण्यदन्तं शुचिवर्णं ऋ० ५.२.३ ।

हिरण्यनिर्णिगयो अस्य ऋ० ५.६२.७ ।

हिरण्यपाणिमूतये ऋ० १.२२.५, य० २२.१०, तै० सं० १.४.२५.१, २.२.१२.६, मै० सं० ४.१२.३२ ।

हिरण्यपाणिं सवितारं अ० ३.२१.८ ।

हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणिः ऋ० १.३५.६, य० ३४.२५, ऐ० ब्रा० ५.३.४, का० सं० ३३.१६ ।

हिरण्यपाणिः सविता सुजिह्वः ऋ० ३.५४.११ ।

हिरण्ययाः पन्थानः अ० ५.४.५ ।

हिरण्ययी अरणी ऋ० १०.१८४.३, श०ब्रा० १४.६.४.२१, सं० वि० गर्भाधान संस्कार ।

हिरण्ययी नौरचरद् अ० ५.४.४, ६५.२, १६.३६.७, पैं० सं० ७.१०.७ ।

हिरण्ययी वां रभिः ऋ० ८.५.२६ ।

हिरण्ययेन पुरुभू ऋ० ४.४४.४, अ० २०.१४३.४ ।

हिरण्ययेन रथेन द्रवत् ऋ० ८.५.३५ ।

हिरण्ययेभिः पविभिः ऋ० १.६४.११ ।

हिरण्यरूपमुषसो व्युष्टौ ऋ० ५.६२.८, य० १०.१६, तै० सं० १.८.१२.३०, नि० ३.५ ।

हिरण्यरूपः स हिरण्यसंदृग् ऋ० २.३५.१०, नि० ३.१६ ।

हिरण्यरूपा उषसो ऋ० ५.६२.८, य० १०.१६, तै० सं० १.८.१२.३, नि० ३.५, श० ब्रा० ५.४.१.१५–१६ ।

हिरण्यवर्णाः शुचयः अ० १.३३.१, पैं० सं० १.२५.१, ६.३.१०, १४.१.२, मै० सं० १.२.४, २.१३.३ ।

हिरण्यवर्णाः सुभगा अ० ५.७.१० ।

हिरण्यवर्णे सुभगे अ० ५.५.६, ७ ।

हिरण्यवर्णो अजरः अ० १६.२४.८ ।

हिरण्यशृङ्ग ऋषभः अ० १६.३६.५, पैं० सं० ४.६.१ ।

हिरण्यशृङ्गोऽयो अस्य ऋ० १.१६३.६, य० २६.२०, तै० सं० ४.६.७.६, का० सं० ३१.३२ ।

हिरण्यस्तूपः सवितर्यथा ऋ० १०.१४६.५, नि० १०.३३ ।

हिरण्यस्रगयं मणिः अ० १०.६.४ ।

हिरण्यहस्तमश्विना रराणा ऋ० १.११७.२४ ।

हिरण्यहस्तो असुरः ऋ० १.३५.१०, य० ३४.२६, का० सं० ३३.२० ।

हिरण्यानामेकोऽसि अ० ४.१०.६, पैं० सं० ४.२५.२ ।

हुवे वः सुद्योत्मानं ऋ० २.४.१ ।

हुवे वः सूनुं सहसो ऋ० ६.५.१ ।

हुवे वातस्वनं कविं ऋ० ८.१०२.५, तै० सं० ३.१.११.३५, मै० सं० ४.११.६६ ।

हुवे वो देवीमदितिं ऋ० ६.५०.१ ।

हुवे सोमं सवितारं अ० ३.८.३ ।

हृणीयमानो अप ऋ० ५.२.८ ।

हृत्सु पीतासो युध्यन्ते ऋ० ८.२.१२, नि० १.४ ।

हृदयात् ते परि क्लोम्नो अ० २.३३.३, २०.६६.१६ ।

हृदा तष्टेषु मनसो ऋ० १०.७१.८, नि० १३.१३ ।

हृदा पूतं मनसा अ० ४.३९.१०, पैं० सं० २०.४३.९ ।

हृदि स्पृशस्त आसते ऋ० १०.२५.२, मैं० सं० ४.७.६ ।

हृदे त्वा मनसे त्वा य० ६.२५, ३७.१९, श० ब्रा० ३.६.३.४–५, १४.१.४.१४, मैं०सं० १.३.३,४.६.८८, का०सं० ३७.१८, कपि० २.१६, ४१.३, ४५.४,६ ।

हेडं पशूनां अ० १२.४.२१, पैं० सं० १७. १८.१ ।

हेतिः पक्षिणी ऋ० १०.१६५.३, अ० ६.२७. ३, पैं० सं० १९.१३.१५ ।

हेतिः शफानुत्खिदन्ती अ० १२.५.१९ ।

हेमन्तेन ऋतुना देवा य० २१.२७, काठ०सं० ३८.१२६, मैं० सं० ३.११.१२८, का०सं० २३.२८ ।

हैमनावेनं मासौ अ० १५.४.१५ ।

हैमनौ मासौ गोप्तारौ अ० १५.४.१४ ।

होता जनिष्ट चेतनः ऋ० २.५.१, ऐ० ब्रा० १.१.१ ।

होता देवो अमर्त्यः ऋ० ३.२७.७; सा० १४७७; नि० ६.७; ऐ० ब्रा० १.५.४ ।

होताध्वर्युरावया ऋ० १.१६२.५; य० २५. २८; तैं० सं० ४.६.८.५; मैं० सं० ३.१६. ६, का० सं० २७.३२ ।

होता निषत्तो मनोरपत्ये ऋ० १.६८.७ ।

होता यक्षत्तनूनपातम् य० २८.२,२५, २१. ३०; का० सं० २३.३१, ३०.२,२५ ।

होता यक्षत्तिस्रो देवीः य० २१.३७, २८.८; का० सं० २३.३८, ३०.८ ।

होता यक्षत्पेशस्वतीः य० २८.३१ ।

होता यक्षत्प्रचेतसा य० २८.३०; का० सं० ३०.३० ।

होता यक्षत्प्रजापतिं य० २३.६४; का० सं० २५.३६; श० ब्रा० १३.५.२.२३ ।

होता यक्षत्त्वष्टारम् य० २८.९; का० सं० २३.४१ ।

होता यक्षत्समिधाऽग्निम् य० २१.२९,४५; गो० ब्रा० उ० ३.८.४५४, ६.१०.६३६; मैं० सं० ३.११.१२; का० सं० २३.३० ।

होता यक्षत्समिधानं य० २८.२४; का० सं० ३०.२४ ।

होता यक्षत्समिधेन्द्रम् य० २८.१; का० सं० ३०.१ ।

होता यक्षत्सरस्वतीं य० २१.४४; का० सं० २३.४५ ।

होता यक्षत्सुपेशसा य० २१.३५, २८.२९; का० सं० २३.२६, ३०.२९ ।

होता यक्षत्सुबर्हिषं य० २८.२७ ।

होता यक्षत्सुरेतसम् य० २१.३८, २८.३२; का० सं० २२.३९, ३०.३२ ।

होता यक्षत्स्वाहाकृतीः य० २८.३४; का० सं० ३०.३४ ।

होता यक्षदग्निं स्वाहा य० २१.४०; मैं०सं० ४.१३.३३ ।

होता यक्षदग्निं स्विष्ट य० २१.४७; काठ० सं० १८.१३२; श० ब्रा० १.३.७.१०–१५; मैं० सं० ४.१३.६७; का० सं० २३.५५० ।

होता यक्षदश्विनौ य० २१.४१,४३; मैं० सं० ३.११.३१, ४.१२.११९; का० सं० २३. ४२,४६ ।

होता यक्षदिडाभिः य० २८.३; का० सं० ३०.३ ।

॥ इति चतुर्वेदमन्त्राणां वर्णानुक्रमसूची सम्पूर्तिमगमत् ॥